श्री भगवती सूत्र

।। श्री आगम-गुण-मञ्जूषा ।।

।। શ્રી આગમ-ગુણ-મંજૂષા ।।

।। Sri Agama Guna Manjusa ।।

(સચિત્ર)

प्रेरक-संपादक

अचलगच्छाधिपति प.पू.आ.भ.स्व. श्री गुणसागर सूरीश्वरजी म.सा.

४५ आगमो का संक्षिप्त परिचय

११ अंगसूत्र

१) **श्री आचारांग सूत्र :-** इस सूत्र मे साधु और श्रावक के उत्तम आचारो का सुंदर वर्णन है। इनके दो श्रुतस्कंध और कुल २५ अध्ययन है। द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग और चरणकरणानुयोगोमे से मुख्य चौथा अनुयोग है। उपलब्ध श्लोको कि संख्या २५०० एवं दो चुलिका विद्यमान है।

२) **श्री सूत्रकृतांग सूत्र :-** श्री सुयगडांग नाम से भी प्रसिद्ध इस सूत्र मे दो श्रुतस्कंध और २३ अध्ययन के साथ कुलमिला के २००० श्लोक वर्तमान मे विद्यमान है। १८० क्रियावादी, ८४ अक्रियावादी, ६७ अज्ञानवादी अपरंच द्रव्यानुयोग इस आगम का मुख्य विषय रहा है।

३) **श्री स्थानांग सूत्र :-** इस सूत्र ने मुख्य गणितानुयोग से लेकर चारो अनुयोंगो कि बाते आती है। एक अंक से लेकर दस अंको तक मे कितनी वस्तुएं है इनका रोचक वर्णन है, ऐसे देखा जाय तो यह आगम की शैली विशिष्ट है और लगभग ७६०० श्लोक है।

४) **श्री समवायांग सूत्र :-** यह सूत्र भी ठाणांगसूत्र की भांति कराता है। यह भी संग्रहग्रंथ है। एक से सो तक कौन कौन सी चीजे है उनका उल्लेख है। सो के बाद देढसो, दोसो, तीनसो, चारसो, पांचसो और दोहजार से लेकर कोटाकोटी तक कौनसे कौनसे पदार्थ है उनका वर्णन है। यह आगमग्रंथ लगभग १६०० श्लोक प्रमाण मे उपलब्ध है।

५) **श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र (भगवती सूत्र) :-** यह सबसे बडा सूत्र है, इसमे ४२ शतक है, इनमे भी उपविभाग है, १९२५ उद्देश है। इस आगमग्रंथ मे प्रभु महावीर के प्रथम शिष्य श्री गौतमस्वामी गणधरादि ने पुछे हुए प्रश्नो का प्रभु वीर ने समाधान किया है। प्रश्नोत्तर संकलन से इस ग्रंथ की रचना हुइ है। चारो अनुयोगो कि बाते अलग अलग शतको मे वर्णित है। अगर संक्षेप मे कहना हो तो श्री भगवतीसूत्र रत्नो का खजाना है। यह आगम १५००० से भी अधिक संकलित श्लोको मे उपलब्ध है।

६) **ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र :-** यह सूत्र धर्मकथानुयोग से है। पहले इसमे साडेतीन करोड कथाअे थी अब ६००० श्लोको मे उन्नीस कथाअें उपलब्ध है।

७) **श्री उपासकदशांग सूत्र :-** इसमें बाराह व्रतो का वर्णन आता है और १० महाश्रावको के जीवन चरित्र है, धर्मकथानुंयोग के साथ चरणकरणानुयोग भी इस सूत्र मे सामील है। इसमे ८०० से ज्यादा श्लोक है।

८) **श्री अन्तकृद्दशांग सूत्र :-** यह मुख्यतः धर्मकथानुयोग मे रचित है। इस सूत्र में श्री शत्रुंजयतीर्थ के उपर अनशन की आराधना करके मोक्ष मे जानेवाले उत्तम जीवो के छोटे छोटे चरित्र दिए हुए है। फिलाल ८०० श्लोको मे ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है।

९) **श्री अनुत्तरोपपातिक दशांग सूत्र :-** अंत समय मे चारित्र की आराधना करके अनुत्तर विमानवासी देव बनकर दूसरे भव मे फीर से चारित्र लेकर मुक्तिपद को प्राप्त करने वाले महान् श्रावको के जीवनचरित्र है इसलीए मुख्यतया धर्मकथानुयोगवाला यह ग्रंथ २०० श्लोक प्रमाणका है।

१०) **श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र :-** इस सूत्र मे मुख्यविषय चरणकरणानुयोग है। इस आगम में देव-विद्याघर-साधु-साध्वी श्रावकादि ने पुछे हुए प्रश्नों का उत्तर प्रभु ने कैसे दिया इसका वर्णन है। जो नंदिसूत्र मे आश्रव-संवरद्वार है ठीक उसी तरह का वर्णन इस सूत्र मे भी है। कुलमिला के इसके २०० श्लोक है।

११) **श्री विपाक सूत्र :-** इस अंग मे २ श्रुतस्कंध है पहला दुःखविपाक और दूसरा सुखविपाक, पहेले में १० पापीओं के और दूसरे में १० धर्मीओ के द्रष्टांत है मुख्यतया धर्मकथानुयोग रहा है। १२०० श्लोक प्रमाण का यह अंगसूत्र है।

१२ उपांग सूत्र

१) **श्री औपपातिक सूत्र :-** यह आगम आचारांग सूत्र का उपांग है। इस मे चंपानगरी का वर्णन १२ प्रकार के तपों का विस्तार कोणिक का जुलुस अम्बडपरिव्राजक के ७०० शिष्यो की बाते है। १५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

२) **श्री राजप्रश्नीय सूत्र :-** यह आगम सुयगडांगसूत्र का उपांग है। इसमें प्रदेशीराजा का अधिकार सूर्याभदेव के जरीए जिनप्रतिमाओं की पूजा का वर्णन है। २००० श्लोको से भी अधिक प्रमाण का ग्रंथ है।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३) **श्री जीवाजीवाभिगम सूत्र :-** यह ठाणांगसूत्र का उपांग है। जीव और अजीव के बारे मे अच्छा विश्लेषण किया है। इसके अलावा जम्बुद्विप की जगती एवं विजयदेव ने कि हुइ पूजा की विधि सविस्तर बताइ है। फिलाल जिज्ञासु ४ प्रकरण, क्षेत्रसमासादि जो पढते है वह सभी ग्रंथे जीवाभिगम अपरग्च पन्नवणासूत्र के ही पदार्थ है। यह आगम सूत्र ४७०० श्लोक प्रमाण का है।

४) **श्री प्रज्ञापना सूत्र-** यह आगम समवायांग सूत्र का उपांग है। इसमे ३६ पदो का वर्णन है। प्राय: ८००० श्लोक प्रमाण का यह सूत्र है।

५) **श्री सुर्यप्रज्ञप्ति सूत्र :-**

६) **श्री चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र :-** इस दो आगमो मे गणितानुयोग मुख्य विषय रहा है। सूर्य, चन्द्र, ग्रहादि की गति, दिनमान ऋतु अयनादि का वर्णन है, दोनो आगमो मे २२००, २२०० श्लोक है।

७) **श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र :-** यह आगम भी अगले दो आगमों की तरह गणितानुयोग मे है। यह ग्रंथ नाम के मुताबित जंबूद्विप का सविस्तर वर्णन है। ६ आरे के स्वरूप बताया है। ४५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

८) **श्री निरयावली सूत्र :-** इन आगम ग्रंथो में हाथी और हारादि के कारण नानाजी का दोहित्र के साथ जो भयंकर युद्ध हुआ उस मे श्रेणिक राजा के १० पुत्र मरकर नरक मे गये उसका वर्णन है।

९) **श्री कल्पावतंसक सूत्र :-** इसमें पद्मकुमार और श्रेणिकपुत्र कालकुमार इत्यादि १० भाइओं के १० पुत्रों का जीवन चरित्र है।

१०) **श्री पुष्पिका उपांग सूत्र :-** इसमें १० अध्ययन है। चन्द्र, सूर्य, शुक्र, बहुपुत्रिका देवी, पूर्णभद्र, माणिभद्र, दत्त, शील, जल, अणाढ्य श्रावक के अधिकार है।

११) **श्री पुष्पचुलीका सूत्र :-** इसमें श्रीदेवी आदि १० देवीओ का पूर्वभव का वर्णन है।

१२) **श्री वृष्णिदशा सूत्र :-** यादववंश के राजा अंधकवृष्णि के समुद्रादि १०पुत्र, १० मे पुत्र वासुदेव के पुत्र बलभद्रजी, निषधकुमार इत्यादि १२ कथाएं है। अंतके पांचो उपांगो को निरियावली पग्चक भी कहते है।

दश प्रकीर्णक सूत्र

१) **श्री चतुशरण प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में अरिहन्त, सिद्ध, साधु और गच्छधर्म के आचार के स्वरूप का वर्णन एवं चारों शरण की स्वीकृति है।

२) **श्री आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस आगम का विषय है अंतिम आराधना और मृत्युसुधार

३) **श्री भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में पंडित मृत्यु के तीन प्रकार (१) भक्त परिज्ञा मरण (२) इंगिनी मरण (३) पादोपगमन मरण इत्यादि का वर्णन है।

६) **श्री संस्तारक प्रकीर्णक सूत्र :-** नामानुसार इस पयन्ने में संथारा की महिमा का वर्णन है। इन चारों पयन्ने पठन के अधिकारी श्रावक भी है।

७) **श्री तंदुल वैचारिक प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने को पूर्वाचार्यगण वैराग्य रस के समुद्र के नाम से चीन्हित करते है। १०० वर्षो में जीवात्मा कितना खानपान करे इसकी विस्तृत जानकारी दी गई है। धर्म की आराधना ही मानव मन की सफलता है। ऐसी बातों से गुंफित यह वैराग्यमय कृति है।

८) **श्री चन्दाविजय प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु सुधार हेतु कैसी आराधना हो इसे इस पयन्ने में समजाया गया है।

९) **श्री देवेन्द्र-स्तव प्रकीर्णक सूत्र :-** इन्द्र द्वारा परमात्मा की स्तुति एवं इन्द्र संबधित अन्य बातों का वर्णन है।

१०A) **श्री मरणसमाधि प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु संबधित आठ प्रकरणों के सार एवं अंतिम आराधना का विस्तृत वर्णन इस पयन्ने में है।

१०B) **श्री महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में साधु के अंतिम समय में किए जाने योग्य पयन्ना एवं विविध आत्महितकारी उपयोगी बातों का विस्तृत वर्णन हे।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०C) **श्री गणिविद्या प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में ज्योतिष संबधित बड़े ग्रंथो का सार है।

उपरोक्त दसों पयन्नों का परिमाण लगभग २५०० श्लोकों में बध्य हे। इसके अलावा २२ अन्य पयन्ना भी उपलब्ध हैं। और दस पयन्नों में चंदाविजय पयन्नो के स्थान पर गच्छाचार पयन्ना को गिनते हैं।

छह छेद सूत्र

(१) निशिथ सूत्र (२) महानिशिथ सूत्र (३) व्यवहार सूत्र (४) जीतकल्प सूत्र (५) पंचकल्प सूत्र (६) दशा श्रुतस्कंध सूत्र

इन छेद सूत्र ग्रन्थों में उत्सर्ग, अपवाद और आलोचना की गंभीर चर्चा है। अति गंभीर केवल आत्मार्थ, भवभीरू, संयम में परिणत, जयणावंत, सूक्ष्म दष्टि से द्रव्यक्षेत्रादिक विचार धर्मदष्टि से करने वाले, प्रतिपल छहकाया के जीवों की रक्षा हेतु चिंतन करने वाले, गीतार्थ, परंपरागत उत्तम साधु, समाचारी पालक, सर्वजीवो के सच्चे हित की चिंता करने वाले ऐसे उत्तम मुनिवर जिन्होंने गुरु महाराज की निश्रा में योगद्वहन इत्यादि करके विशेष योग्यता अर्जित की हो ऐसे मुनिवरों को ही इन ग्रन्थों के अध्ययन पठन का अधिकार है।

चार मूल सूत्र

१) **श्री दशवैकालिक सूत्र :-** पंचम काल के साधु साध्वीओं के लिए यह आगमग्रन्थ अमृत सरोवर सरीखा है। इसमें दश अध्ययन हैं तथा अन्त में दो चूलिकाए रतिवाक्या व, विवित्त चरिया नाम से दी हैं। इन चूलिकाओं के बारे में कहा जाता है कि श्री स्थूलभद्रस्वामी की बहन यक्षासाध्वीजी महाविदेहक्षेत्र में से श्री सीमंधर स्वामी से चार चूलिकाए लाइ थी। उनमें से दो चूलिकाएं इस ग्रंथ में दी हैं। यह आगम ७०० श्लोक प्रमाण का है।

२) **श्री उत्तराध्ययन सूत्र :-** परम कृपालु श्री महावीरभगवान के अंतिम समय के उपदेश इस सूत्र में हैं। वैराग्य की बातें और मुनिवरों के उच्च आचारों का वर्णन इस आगम ग्रंथ में ३६ अध्ययनों में लगभग २००० श्लोकों द्वारा प्रस्तुत हें।

३) **श्री निर्युक्ति सूत्र :-** चरण सत्तरी-करण सत्तरी इत्यादि का वर्णन इस आगम ग्रन्थ में है। पिंडनिर्युक्ति भी कई लोग ओघ निर्युक्ति के साथ मानते हैं अन्य कई लोग इसे अलग आगम की मान्यता देते हैं। पिंडनिर्युक्ति में आहार प्राप्ति की रीत बताइ हें। ४२ दोष कैसे दूर हों और आहार करने के छह कारण और आहार न करने के छह कारण इत्यादि बातें हैं।

४) **श्री आवश्यक सूत्र :-** छह अध्ययन के इस सूत्र का उपयोग चतुर्विध संघ में छोट बडे सभी को है। प्रत्येक साधु साध्वी, श्रावक-श्राविका के द्वारा अवश्य प्रतिदिन प्रात: एवं सायं करने योग्य क्रिया (प्रतिक्रमण आवश्यक) इस प्रकार हैं :-

(१) सामायिक (२) चतुर्विंशति (३) वंदन (४) प्रतिक्रमण (५) कार्योत्सर्ग (६) पच्चक्खाण

दो चूलिकाए

१) **श्री नंदी सूत्र :-** ७०० श्लोक के इस आगम ग्रंन्थ में परमात्मा महावीर की स्तुति, संघ की अनेक उपमाए, २४ तीर्थकरों के नाम ग्यारह गणधरों के नाम, स्थविरावली और पांच ज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

२) **श्री अनुयोगद्वार सूत्र :-** २००० श्लोकों के इस ग्रन्थ में निश्चय एवं व्यवहार के आलंबन द्वारा आराधना के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी गइ है। अनुयोग-याने शास्त्र की व्याख्या जिसके चार द्वार है (१) उत्क्रम (२) निक्षेप (३) अनुगम (४) नय

यह आगम सब आगमों की चावी है। आगम पढने वाले को प्रथम इस आगम से शुरुआत करनी पडती है। यह आगम मुखपाठ करने जैसा है।

॥ इति शम् ॥

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Introduction

45 *Āgamas*, a short sketch

I Eleven *Angas* :

(1) **Acārānga-sūtra :** It deals with the religious conduct of the monks and the Jain householders. It consists of 02 Parts of learning, 25 lessons and among the four teachings on entity, calculation, religious discourse and the ways of conduct, the teaching of the ways of conduct is the main topic here. The Āgama is of the size of 2500 *Ślokas*.

(2) **Sūyagadānga-sūtra :** It is also known as Sūtra-Krtānga. It's two parts of learning consist of 23 lessons. It discusses at length views of 363 doctrine-holders. Among them are 180 ritualists, 84 non-ritualists, 67 agnostics and 32 restraint-propounders, though it's main area of discussion is the teaching of entity. It is available in the size of 2000 *Ślokas*.

(3) **Ṭhāṇānga-sūtra :** It begins with the teaching of calculation mainly and discusses other three teachings subordinately. It introduces the topic of one dealing with the single objects and ends with the topic of eight objects. It is of the size of 7600 *Ślokas*.

(4) **Samavāyānga-sūtra :** This is an encompendium, introducing 01 to 100 objects, then 150, 200 to 500 and 2000 to crores and crores of objects. It contains the text of size of 1600 *Ślokas*.

(5) **Vyākhyā-prajñapti-sūtra :** It is also known as Bhagavatī-sūtra. It is the largest of all the *Angas*. It contains 41 centuries with subsections. It consists of 1925 topics. It depicts the questions of Gautama *Gaṇadhara* and answers of Lord Mahāvīra. It discusses the four teachings in the centuries. This *Āgama* is really a treasure of gems. It is of the size of more than 15000 *Ślokas*.

(6) **Jñātādharma-Kathānga-sūtra :** It is of the form of the teaching of the religious discourses. Previously it contained three and a half crores of discourses, but at present there are 19 religious discourses. It is of the size of 6000 *Ślokas*.

(7) **Upāsaka-daśānga-sūtra :** It deals with 12 vows, life-sketches of 10 great Jain householders and of Lord Mahāvīra, too. This deals with the teaching of the religious discourses and the ways of conduct. It is of the size of around 800 *Ślokas*.

(8) **Antagaḍa-daśānga-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the religious discourses. It contains brief life-sketches of the highly spiritual souls who are born to liberate and those who are liberating ones : they are Andhaka Vṛṣṇi, Gautama and other 9 sons of queen Dhāriṇī, 8 princes like Akṣobhakumāra, 6 sons of Devaki, Gajasukumāra, Yādava princes like Jāli, Mayālī, Vasudeva Kṛṣṇa, 8 queens like Rukmiṇī. It is available of the size of 800 *Ślokas*.

(9) **Anuttarovavāyi-daśānga-sūtra :** It deals with the teaching of the religious discourses. It contains the life-sketches of those who practise the path of religious conduct, reach the *Anuttara Vimāna*, from there they drop in this world and attain Liberation in the next birth. Such souls are Abhayakumāra and other 9 princes of king Śrenika, Dīrghasena and other 11 sons, Dhannā *Aṇagāra*, etc. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(10) **Praśna-vyākaraṇa-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the ways of conduct. As per the remark of the Nandī-sūtra, it contained previously Lord Mahāvīra's answers to the questions put by gods, Vidyādharas, monks, nuns and the Jain householders. At present it contains the description of the ways leading to transgression and the self-control. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(11) **Vipāka-sūtrānga-sūtra :** It consists of 2 parts of learning. The first part is called the Fruition of miseries and depicts the life of 10 sinful souls, while the second part called the Fruition of happiness narrates illustrations of 10 meritorious souls. It is available of the size of 1200 *Ślokas*.

II Twelve *Upāngas*

(1) **Uvavāyi-sūtra :** It is a subservient text to the *Ācārānga-sūtra*. It deals with the description of Campā city, 12 types of austerity, procession-arrival of Koṇika's marriage, 700 disciples of the monk Ambaḍa. It is of the size of 1000 *Ślokas*.

(2) **Rāyapaseṇī-sūtra :** It is a subservient text to Sūyagaḍānga-sūtra. It depicts king Pradesī's jurisdiction, god Sūryābha worshipping the Jina idols, etc. It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) **Jīvābhigama-sūtra :** It is a subservient text to Ṭhāṇāṅga-sūtra. It deals with the wisdom regarding the self and the non-self, the Jambū continent and its areas, etc. and the detailed description of the veneration offered by god Vijaya. The four chapters on areas, society, etc. published recently are composed on the line of the topics of this *Sūtra* and of the Pannāvaṇā-sūtra. It is of the size of 4700 *Ślokas.*

(4) **Pannāvaṇā-sūtra :** It is a subservient text to the Samavāyāṅga-sūtra. It describes 36 steps or topics and it is of the size of 8000 *Ślokas.*

(5) **Sūrya-prajñapti-sūtra** and

(6) **Candra-prajñapti-sūtra :** These two falls under the teaching of the calculation. They depict the solar and the lunar transit, the movement of planets, the variations in the length of a day, seasons, northward and the southward solstices, etc. Each one of these *Āgamas* are of the size of 2200 *Ślokas.*

(7) **Jambūdvīpa-prajñapti-sūtra :** It mainly deals with the teaching of the calculations. As it's name indicates, it describes at length the objects of the Jambū continent, the form and nature of 06 corners (*āra*). It is available in the size of 4500 *Ślokas.*

Nirayāvalī-pañcaka :

(8) **Nirayāvalī-sūtra :** It depicts the war between the grandfather and the daughter's son, caused of a necklace and the elephant, the death of king Śreṇika's 10 sons who attained hell after death. This war is designated as the most dreadful war of the Downward (*avasarpiṇī*) age.

(9) **Kalpāvataṁsaka-sūtra :** It deals with the life-sketches of Kālakumara and other 09 princes of king Śreṇika, the life-sketch of Padamakumpra and others.

(10) **Pupphiyā-upāṅga-sūtra :** It consists of 10 lessons that covers the topics of the Moon-god, Sun-god, Venus, queen Bahuputrikā, Pūrṇabhadra, Maṇibhadra, Datta, Śila, Bala and Aṇāḍḍhiya.

(11) **Pupphaculiya-upāṅga-sūtra :** It depicts previous births of the 10 queens like Śrīdevī and others.

(12) **Vahnidaśā-upāṅga sūtra :** It contains 10 stories of Yadu king Andhakavṛṣṇi, his 10 princes named Samudra and others, the tenth one Vāsudeva, his son Balabhadra and his son Niṣadha.

III Ten *Payannā-sūtras* :

(1) **Āurapaccakhāṇa-sūtra :** It deals with the final religious practice and the way of improving (the life so that the) death (may be improved).

(2) **Bhattaparinnā-sūtra :** It describes (1) three types of *Paṇḍita* death, (2) knowledge, (3) Iṅgini devotee (4) *Pādapopagamana*, etc.

(4) **Santhāraga-payannā-sūtra :** It extols the *Saṁstāraka.*

**** These four payannās can also be learnt and recited by the Jain householders. ****

(5) **Tandula-viyāliya-payannā-sūtra :** The ancient preceptors call this Payannā-sūtra as an ocean of the sentiment of detachment. It describes what amount of food an individual soul will eat in his life of 100 years, the human life can be justified by way of practising a religious life.

(6) **Candāvijaya-payannā-sūtra :** It mainly deals with the religious practice that improves one's death.

(7) **Devendrathui-payannā-sūtra :** It presents the hymns to the Lord sung by Indras and also furnishes important details on those Indras.

(8) **Maraṇasamādhi-payannā-sūtra :** It describes at length the final religious practice and gives the summary of the 08 chapters dealing with death.

(9) **Mahāpaccakhāṇa-payannā-sūtra :** It deals specially with what a monk should practise at the time of death and gives various beneficial informations.

(10) **Gaṇivijaya-payannā-sūtra :** It gives the summary of some treatise on astrology.

These 10 Payannās are of the size of 2500 *Ślokas.*

Besides about 22 Payannās are known and even for these above 10 also there is a difference of opinion about their names. The Gacchācāra is taken, by some, in place of the Candāvijaya of the 10 Payannās.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

IV Six *Cheda-sūtras*

(1) Vyavahāra-sūtra, (2) Nisītha-sūtra,
(3) Mahānisītha-sūtra, (4) Pancakalpa-sūtra,
(5) Daśāśruta-skandha-sūtra and (6) Bṛhatkalpa-sūtra.

These Chedasūtras deal with the rules, exceptions and vows.

The study of these is restricted only to those best monks who are (1) serene, (2) introvert, (3) fearing from the worldly existence, (4) exalted in restraint, (5) self-controlled, (6) rightfully descerning the subtlety of entity, territories, etc. (7) pondering over continuously the protection of the six-limbed souls, (8) praiseworthy, (9) exalted in keeping the tradition, (10) observing good religious conduct, (11) beneficial to all the beings and (12) Who have paved the path of Yoga under the guidance of their master.

V Four *Mūlasūtras*

(1) **Daśavaikālika-sūtra :** It is compared with a lake of nectar for the monks and nuns established in the fifth stage. It consists of 10 lessons and ends with 02 Cūlikās called Rativākyā and Vivittacariyā. It is said that monk Sthūlabhadra's sister nun Yakṣā approached Simandhara Svāmī in the Mahāvideha region and received four Cūlikās. Here are incorporated two of them.

(2) **Uttarādhyayana-sūtra :** It incorporates the last sermons of Lord Mahāvīra. In 36 lessons it describes detachment, the conduct of monks and so on. It is available in the size of 2000 *Ślokas*.

(3) **Anuyogadvāra-sūtra :** It discusses 17 topics on conduct, behaviour, etc. Some combine Piṇḍaniryukti with it, while others take it as a separate *Āgama*. Piṇḍaniryukti deals with the method of receiving food (*bhikṣā* or *gocarī*), avoidance of 42 faults and to receive food, 06 reasons of taking food, 06 reasons for avoiding food, etc.

(4) **Āvaśyaka-sūtra :** It is the most useful *Āgama* for all the four groups of the Jain religious constituency. It consists of 06 lessons. It describes 06 obligatory duties of monks, nuns, house-holders and housewives. They are : (1) *Sāmāyika*, (2) *Caturviṁśatistava*, (3) *Vandanā*, (4) *Pratikramaṇa*, (5) Kāyotsarga and (6) *Paccakhāṇa*.

VI Two *Cūlikās*

(1) **Nandī-sūtra :** It contains hymn to Lord Mahāvīra, numerous similies for the religious constituency, name-list of 24 *Tīrthaṅkaras* and 11 *Gaṇadharas*, list of *Sthaviras* and the fivefold knowledge. It is available in the size of around 700 *Ślokas*.

(2) **Anuyogadvāra-sūtra :** Though it comes last in the serial order of the 45 *Āgamas*, the learner needs it first. It is designated as the key to all the *Āgamas*. The term *Anuyoga* means explanatory device which is of four types : (1) Statement of proposition to be proved, (2) logical argument, (3) statement of accordance and (4) conclusion.

It teaches to pave the righteous path with the support of firm resolve and wordly involvements.

It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

આગમ – ૫

સર્વાનુયોગમય ભગવતી સૂત્ર – ૫

અન્યનામ :- વિવાહ પણ્ણત્તિ, વિબાધ પ્રજ્ઞપ્તિ, વ્યાખ્યા પ્રજ્ઞપ્તિ – ''પણ્ણત્તિ''

શ્રુતસ્કંધ	૧
શતક , અવાન્તર શતક	૧૩૮
ઉદ્દેશક	૧,૬૨૭
પ્રશ્નોત્તર	૩૬,૦૦૦
પદ	૨,૮૮,૦૦૦
ગદ્યસૂત્ર	૫,૨૯૩
પદ્યસૂત્ર	૭૨

[ભગવતી સૂત્ર – શતક, ઉદ્દેશક અને સૂત્રસંખ્યા –સૂચક તાલિકા]

શતક		ઉદ્દેશક	સૂત્ર સંખ્યા
૧		૧૦	૩૨૬
૨		૧૦	૭૬
૩		૧૦	૧૫૬
૪		૧૦	૬
૫		૧૦	૧૮૬
૬		૧૦	૧૬૦
૭		૧૦	૧૪૬
૮		૧૦	૪૬૦
૯		૩૪	૧૬૯
૧૦		૩૪	૭૨
૧૧		૧૨	૧૩૪
૧૨		૧૦	૧૭૩
૧૩		૧૦	૧૪૭
૧૪		૧૦	૯૭
૧૫		–	૪૯
૧૬		૧૪	૯૮
૧૭		૧૪	૭૦
૧૮		૧૦	૧૩૩
૧૯		૧૦	૯૯
૨૦		૧૦	૧૦૧
૨૧		૮ વર્ગ	૧૫
૨૨		૬ વર્ગ	૬
૨૩		૫ વર્ગ	૫
૨૪		૨૪	૩૩૯
૨૫		૧૨	૫૮૧
૨૬		૧૨	૪૩
૨૭		૧૧	૧૧
૨૮		૧૧	૧૪
૨૯		૧૧	૧૫
૩૦		૧૧	૫૦
૩૧		૨૮	૪૧
૩૨		૨૮	૩૩
(નીચેનાના અવાન્તર શતકો છે)			
	અ.શ.		
૩૩	૧૨	૧૨૪	૧૩૯
૩૪	૧૨	૧૨૪	૧૫૪
૩૫	૧૨	૧૨૪	૧૨૪
૩૬	૧૨	૧૨૪	૧૨૪
૩૭	૧૨	૧૨૪	૧૨૪
૩૮	૧૨	૧૨૪	૧૨૪
૩૯	૧૨	૧૨૪	૧૨૪
૪૦	૨૧	૧૮૭	૧૮૭
૪૧	–	૧૯૬	૨૨૨

ગણધર યંત્ર (જૈનાગમ - નિર્દેશિકા અનુસાર)

ક્રમ	ગણધર નામ	ગામ	નક્ષત્ર	પિતા	માતા	ગોત્ર	ગૃહવાસ વર્ષ	છદ્મસ્થ	કેવલ	સર્વાયુ	મોક્ષગમન
૧	ઈન્દ્રભૂતિ	ગુબ્બર	જયેષ્ઠા	વસુભૂતિ	પૃથ્વી	ગૌતમ	૫૦	૩૦	૧૨	૯૨	મહાવીર ભગવાનના પછી
૨	અગ્નિભૂતિ	ગુબ્બર	કૃત્તિકા	વસુભૂતિ	પૃથ્વી	ગૌતમ	૪૬	૧૨	૧૬	૭૪	મહાવીર ભગવાનના પહેલાં
૩	વાયુભૂતિ	ગુબ્બર	સ્વાતિ	વસુભૂતિ	પૃથ્વી	ગૌતમ	૪૨	૧૦	૧૮	૭૦	મહાવીર ભગવાનના પહેલાં
૪	વ્યક્ત	કોલ્લાક સંનિવેશ	શ્રવણ	ધનમિત્ર	વારુણી	ભારદ્વાજ	૫૦	૧૨	૧૮	૮૦	મહાવીર ભગવાનના પહેલાં
૫	સુધર્મા	કોલ્લાક સંનિવેશ	હસ્તોત્તરા	ધમ્મિલ	ભદ્દિલા	અગ્નિવૈશ્યાયન	૫૦	૪૨	૮	૧૦૦	મહાવર ભગવાનના પછી
૬	મંડિત	મોરાક સંનિવેશ	મઘા	ધનદેવ	વિજયા	વશિષ્ઠ	૫૩	૧૪	૧૬	૮૩	મહાવીર ભગવાનના પહેલાં
૭	મૌર્યપુત્ર	મોરાક સંનિવેશ	રોહિણી	મૌર્ય	વિજયા	કાશ્યપ	૬૫	૧૫	૧૬	૯૬	મહાવીર ભગવાનના પહેલાં
૮	અકંપિત	મથિલા	ઉત્તરાષાઢા	દેવ	જયંતી	ગૌતમ	૪૮	૯	૨૧	૭૮	મહાવીર ભગવાનના પહેલાં
૯	અચલભ્રાતા	કોશલા	મૃગશીર્ષ	વસુ	નંદા	હારીત	૪૬	૧૨	૧૪	૭૨	મહાવીર ભગવાનના પહેલાં
૧૦	મેતાર્ય	વત્સભૂમિ તુંગિક	અશ્વિની	દત્ત	વરુણદેવા	કૌંડિન્ય	૩૬	૧૦	૧૬	૬૨	મહાવીર ભગવાનના પહેલાં
૧૧	પ્રભાસ	રાજગૃહ	પુષ્ય	બલ	અતિભદ્રા	કૌંડિન્ય	૧૬	૮	૧૬	૪૦	મહાવીર ભગવાનના પહેલાં

અગિયાર ગણધરોનું નિર્વાણસ્થાન :- રાજગૃહી

પહેલું શતક :

આમાં નમસ્કારમંત્ર, બ્રાહ્મી લિપિ તથા શ્રુતને નમસ્કાર, દસ ઉદ્દેશકોના નામ, ભગવાન મહાવીર અને ગૌતમ ગણધરનો સંક્ષિપ્ત પરિચય વગેરે છે.

૧.૧ ચલન ઉદ્દેશક : આમાં ચલમાન, ચલિત વગેરે ૯ પ્રશ્નોના ઉત્તર, ૨૪ દંડકોમાં સ્થિતિ, શ્વાસોચ્છવાસ, આહાર અને કર્મ, પુદ્ગલ અને બંધ વગેરે જણાવી અંતે વ્યંતર, જ્યોતિષી વગેરે દેવોના રમણીસ્થાનો અને સ્થિતિની પ્રશ્નોત્તરી વગેરે છે.

૧.૨ દુઃખ ઉદ્દેશક : એમાં જીવે સ્વયં કરેલા દુઃખોનું વેદન અને એનું કારણ જણાવી અંતે અસંજ્ઞીઓના આયુષ્યની પ્રશ્નોત્તરી છે.

૧.૩ કાંક્ષાપ્રદોષ ઉદ્દેશક : આમાં ક્રિયાનિષ્પાદ્ય કાંક્ષામોહનીય કર્મના પ્રશ્નથી માંડીને અંતે શ્રમણ નિર્ગ્રંથોના કાંક્ષામોહનીય કર્મના વેદનની પ્રશ્નોત્તરી કરવામાં આવી છે.

૧.૪ કર્મપ્રકૃતિ ઉદ્દેશક : આમાં આઠ કર્મપ્રકૃતિની પ્રશ્નોત્તરીથી શરૂઆત કરીને અંતે પ્રશ્નના ઉત્તરમાં ત્રણ કાળના ત્રણ ત્રણ વિકલ્પો જણાવી અંતે કેવળી પૂર્ણ સર્વજ્ઞ છે એમ જણાવ્યું છે.

૧.૫ પૃથ્વી ઉદ્દેશક : ૨૪ દંડકોના આવાસમાં સાત પૃથ્વીથી શરુઆત કરીને અંતે કષાયના ભાંગાઓમાંની વિવિધતાની પ્રશ્નોત્તરી છે.

૧.૬ યાવંત ઉદ્દેશક : આમાં સૂર્ય, લોક-અલોક, દ્વીપ, સમુદ્ર, ક્રિયાવિચાર, લોકસ્થિતિ વગેરેની પ્રશ્નોત્તરી છે.

૧.૭ નૈરયિક ઉદ્દેશક : એમાં ૨૪ દંડકોમાં ઉત્પાત ચતુર્ભંગી, વિગ્રહ-અવિગ્રહ ગતિ, ગર્ભવિચાર વગેરે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૧.૮ બાલ ઉદ્દેશક : એમાં એકાન્ત બાલજીવની ચાર ગતિમાં ઉત્પત્તિ, ક્રિયાવિચાર, વીર્યવિચાર વગેરેની પ્રશ્નોત્તરી છે.

૧.૯ ગુરુત્વ ઉદ્દેશક : એમાં જીવનું ગુરુત્વ અને એનાં કારણ, નિર્ગ્રંથનું જીવન અન્ય તીર્થિકોની માન્યતા, ક્રિયાવિચાર, આહારવિચાર વગેરેની પ્રશ્નોત્તરી પછી અંતે બાલપંડિતની પ્રશ્નોત્તરી છે.

૧.૧૦ ચલન ઉદ્દેશક : આમાં ચલમાન, ચલિત વગેરે પછી અંતે ૨૪ દંડકોમાં ઉપપાત વિરહની પ્રશ્નોત્તરી છે.

બીજુ શતક :

૨.૧ ઉચ્છ્વાસ-સ્કંદક ઉદ્દેશક : આમાં પૃથ્વીકાયથી વનસ્પતિકાય સુધીનાના શ્વાસોચ્છ્વાસના પૌદ્ગલિક રૂપની પ્રશ્નોત્તરી કરીને અંતે ભગવાન મહાવીર દ્વારા પરિવ્રાજક સ્કંદકના સંશયોનું સમાધાન અને એનું પ્રવ્રજ્યાગ્રહણ વગેરે વર્ણન છે.

૨.૨ સમુદ્ઘાત ઉદ્દેશક : એમાં ૨૪ દંડકોમાં સમુદ્ઘાત, અણગારદ્વારા કેવળી સમુદ્ઘાતની પ્રશ્નોત્તરી છે.

૨.૩ પૃથ્વી ઉદ્દેશક : એમાં સાત પૃથ્વીઓ અને સર્વ પ્રાણીઓની સર્વત્ર ઉત્પત્તિનું વર્ણન છે.

૨.૪ ઈન્દ્રિય ઉદ્દેશક : એમાં ઈન્દ્રિયોનું વર્ણન છે.

૨.૫ અન્યતીર્થિક ઉદ્દેશક : આમાં ગર્ભવિચાર, તુંગિકા નગર, કાશ્યપ સ્થવિરના ઉત્તરો, પાણીકુંડ વગેરેનું વર્ણન છે.

૨.૬ ભાષા ઉદ્દેશક : એમાં અવધારિણી ભાષાની વાત છે.

૨.૭ દેવ ઉદ્દેશક : એમાં ચાર પ્રકારના દેવ અને તેમના સ્થાન વગેરેનું વર્ણન છે.

૨.૮ ચમરચંચા ઉદ્દેશક : આમાં ચમરેન્દ્રની ચમરચંચા નગરીમાં સુધર્મા સ્વામીની સભા વગેરેનું વર્ણન છે.

૨.૯ સમયક્ષેત્ર ઉદ્દેશક : એમાં સમયક્ષેત્રનું પરિમાણ આપવામાં આવ્યું છે.

૨.૧૦ અસ્તિકાય ઉદ્દેશક : આમાં પંચાસ્તિકાયથી આરંભીને ધર્માસ્તિકાય અને લોકાકાશનું વર્ણન છે.

ત્રીજું શતક :

૩.૧ ચમરવિકુર્વણા ઉદ્દેશક : આમાં ગાથા છંદમાં દસે દસ ઉદ્દેશકોનો વિષય, મૂકાનગરીમાં ભગવાન મહાવીરનું પદાર્પણ, ચમરેન્દ્રની વિકુર્વણા અને અંતે સનત્કુમારનો મહાવિદેહમાં જન્મ અને નિર્વાણ વગેરે વર્ણન છે.

૩.૨ ચમરોત્પાત ઉદ્દેશક : એમાં રાજગૃહમાં ભગવાન મહાવીર અને ભગવાન ગૌતમ ગણધર, ચમરેન્દ્ર દ્વારા નાટ્યપ્રદર્શન અને અંતે ચમરેન્દ્રની ચિંતાની વાત છે.

૩.૩ ક્રિયા ઉદ્દેશક : આમાં ક્રિયા સંબંધી પંડિત પુત્રની જિજ્ઞાસા, પાંચ પ્રકારની ક્રિયા વગેરેની પ્રશ્નોત્તરી છે.

૩.૪ યાન ઉદ્દેશક : આમાં દેવરૂપ યાનની ચોભંગી, વાયુકાય, મેઘ, લેશ્યાના દ્રવ્ય, અણગાર વિકુર્વણા, વૈભારગિરિ ઉલ્લંઘન વગેરેની પ્રશ્નોત્તરી છે.

૩.૫ સ્ત્રી ઉદ્દેશક : આમાં અણગારની સ્ત્રીરૂપમાં વિકુર્વણા વગેરે છે.

૩.૬ નગર ઉદ્દેશક : એમાં રાજગૃહ નિવાસી મિથ્યાદૃષ્ટિ અણગારની વૈક્રિય દૃષ્ટિથી વારાણસીની વિકુર્વણા અને વિભંગ જ્ઞાનથી વિપરીત દર્શન વગેરેની પ્રશ્નોત્તરી છે.

૩.૭ લોકપાલ ઉદ્દેશક : આમાં શકેન્દ્રના ચાર લોકપાલ વિષયક પ્રશ્નો છે.

૩.૮ દેવાધિપતિ ઉદ્દેશક : આમાં અસુરકુમાર આદિ દસ કુમારોના દસ અધિપતિ વગેરે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૩.૯ ઈન્દ્રિય ઉદ્દેશક : એમાં પાંચ ઈન્દ્રિયવિષયક પ્રશ્નોત્તરી છે.

૩.૧૦ પરિષદ ઉદ્દેશક : આમાં ચમરેન્દ્રની ત્રણ સભાઓથી માંડીને અચ્યુતેન્દ્ર સુધીના ની ત્રણ-ત્રણ સભાનું વર્ણન છે.

ચોથું શતક :

૪.૧-૪ લોકપાલ-વિમાન ઉદ્દેશક : એમાં ઈશાનેન્દ્રના ચાર લોકપાલ વિષયક વર્ણન છે.

૪.૫-૮ લોકપાલ - રાજધાની ઉદ્દેશક : એમાં ચાર લોકપાલોની રાજધાનીઓનું વર્ણન છે.

૪.૯ નૈરયિક ઉદ્દેશક : આમાં નારકીય જીવો નરકમાં તેજ ભવે બીજી વાર ઉત્પન્ન ન થાય છે તે વિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૪.૧૦ લેશ્યા ઉદ્દેશક : એમાં નીલ લેશ્યાનું વર્ણન છે.

પાંચમું શતક :

૫.૧ સૂર્ય ઉદ્દેશક : એમાં ત્રણ ઋતુ, અયન, લવણ સમુદ્ર, ધાતકી ખંડ, કાલોદધિ સમુદ્ર, પુષ્કરાર્ધ દ્વીપ વગેરેમાં સૂર્યોદય આદિ વિષયક પ્રશ્નોત્તરી છે.

૫.૨ વાયુ ઉદ્દેશક : એમાં સમુદ્ર, દ્વીપ વગેરેમાં ચાર પ્રકારના વાયુ વિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૫.૩ જાલગ્રંથિકા ઉદ્દેશક : એમાં જાલગ્રંથિકાનું ઉદાહરણ વગેરે વિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૫.૪ શબ્દ ઉદ્દેશક : આમાં શબ્દો, હરિણગમૈષી દેવ, અતિમુક્તક આર્ય, કેવળી અને છદ્મસ્થ, ચૌદ પૂર્વધારી વગેરે વિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૫.૫ છદ્મસ્થ ઉદ્દેશક : એમાં છદ્મસ્થને સંયમથી સિદ્ધિ, કુલકર વગેરે વિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૫.૬ આયુ ઉદ્દેશક : આમાં અલ્પાયુ, દીર્ઘાયુ, અશુભ-શુભ દીર્ઘાયુ વગેરેના ત્રણ કારણ, ક્રિયાવિચાર, આધાકર્મ આહાર, મૃષાવાદથી કર્મબંધન વગેરે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૫.૭ પુદ્ગલકંપન ઉદ્દેશક : એમાં પરમાણુ પુદ્ગલના કંપન વગેરે વિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૫.૮ નિર્ગ્રંથી પુત્ર ઉદ્દેશક : આમાં ભગવાનના શિષ્ય નારદપુત્ર અને નિર્ગ્રંથીપુત્ર વચ્ચે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૫.૯ રાજગૃહ ઉદ્દેશક : આમાં રાજગૃહ નગરનું વર્ણન, પ્રકાશ-અંધકાર તેમજ સમયજ્ઞાન અને દેવલોક વિષયક પ્રશ્નોત્તરી છે.

૫.૧૦ ચંદ્ર ઉદ્દેશક : આમાં ચંદ્રવિષયક પ્રશ્નોત્તરી છે.

છઠ્ઠું શતક :

૬.૧ વેદના ઉદ્દેશક : આમાં વેદના અને નિર્જરાની સમાનતા વગેરે વિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૬.૨ આહાર ઉદ્દેશક : એમાં રાજગૃહ નગર, આહારનું વર્ણન છે.

૬.૩ મહા આશ્રવ ઉદ્દેશક : આમાં મહા આશ્રવવાળાને મહાબંધ, કર્મોની સ્થિતિ, કર્મોના બંધક વગેરેની પ્રશ્નોત્તરી છે.

૬.૪ સપ્રદેશક ઉદ્દેશક : આમાં સપ્રદેશ - અપ્રદેશનું ચિંતન વગેરે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૬.૫ તમસ્કાય ઉદ્દેશક : આમાં તમસ્કાય સંબંધી વર્ણન, કૃષ્ણરાજિ, લોકાંતિક દેવ વગેરે વિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૬.૬ ભવ્ય ઉદ્દેશક : આમાં નરકની સાત પૃથ્વીઓથી માંડીને પાંચ અનુત્તર વિમાન સુધીનું વર્ણન છે.

૬.૭ શાલી ઉદ્દેશક : એમાં ધાન્યની સ્થિતિ, ગણનીયકાળ અને છેલ્લે પ્રથમ આરાનું વર્ણન છે.

૬.૮ પૃથ્વી ઉદ્દેશક : આમાં આઠ પૃથ્વી વગેરે વિષયક પ્રશ્નોત્તરી છે.

૬.૯ કર્મ ઉદ્દેશક : આમાં જ્ઞાનાવરણીયના સમયે બંધાતી પ્રકૃતિઓ, મહર્ધિક દેવ અને તેની વિકુર્વણા વગેરે વર્ણન છે.

૬.૧૦ અન્યયૂથિક ઉદ્દેશક : આમાં અન્યયૂથિકનું વર્ણન, સમાધાન વગેરે વર્ણન છે.

સાતમું શતક :

૭.૧ આહાર ઉદ્દેશક : એમાં લોકસંખ્યાન, ક્રિયાવિચાર, પ્રત્યાખ્યાન, સાધુને આહાર આપવાનું ફળ વગેરે વર્ણન છે.

૭.૨ વિરતિ ઉદ્દેશક : એમાં પ્રત્યાખ્યાન, સંયત - અસંયત વગેરે તેમજ શાશ્વત - અશાશ્વત જીવ વગેરે વિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૭.૩ સ્થાવર ઉદ્દેશક : આમાં વનસ્પતિકાય, અલ્પાહારી અને મહાહારી, લેશ્યા અને કર્મ વિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૭.૪ જીવ ઉદ્દેશક : આમાં છ પ્રકારના સંસારસ્થિત જીવોનું વર્ણન છે.

૭.૫ પક્ષી ઉદ્દેશક : આમાં ત્રણ પ્રકારે યોનિસંગ્રહનું વર્ણન છે.

૭.૬ આયુ ઉદ્દેશક : એમાં ૨૪ દંડકોમાં જીવ આ ભવે આયુબંધ કરે છે તે, કાલચક્ર વગેરેનું વર્ણન છે.

૭.૭ અણગાર ઉદ્દેશક : આમાં સંવૃત અણગારની ઈરિયાવહી ક્રિયા અને કામભોગનું વિસ્તૃત વર્ણન છે.

૭.૮ છદ્મસ્થ ઉદ્દેશક : એમાં છદ્મસ્થને માત્ર સંયમ વગેરેથી મુક્તિ નથી તેમજ સુખદુ:ખ, સંજ્ઞા, વેદના, ક્રિયાવિચાર વગેરેનું વર્ણન છે.

૭.૯ અસંવૃત ઉદ્દેશક : આમાં બાહ્યપુદ્ગલોનું ગ્રહણ વગેરે તેમજ મહાશિલા કંટક સંગ્રામ અને રથમૂશળ સંગ્રામ વગેરેનું વર્ણન છે.

૭.૧૦ અન્યતીર્થિક ઉદ્દેશક : આમાં કાલોદાયી વગેરે અન્ય તીર્થિકોએ કરેલી પ્રશ્નોત્તરી છે.

આઠમું શતક :

૮.૧ પુદ્ગલ ઉદ્દેશક : આમાં ત્રણ પ્રકારના પુદ્ગલ વગેરેનું વર્ણન છે.

૮.૨ આશિવિષ ઉદ્દેશક : આમાં બે પ્રકારના આશિવિષ તથા છદ્મસ્થ, સર્વજ્ઞ અને જ્ઞાન વગેરેનું વર્ણન છે.

૮.૩ વૃક્ષ ઉદ્દેશક : એમાં ત્રણ પ્રકારના વૃક્ષ, આઠ પૃથ્વી વગેરે વિષયક વર્ણન છે.

૮.૪ ક્રિયા ઉદ્દેશક : આમાં પાંચ પ્રકારની ક્રિયાનું વર્ણન છે.

૮.૫ આજીવિક ઉદ્દેશક : આમાં ૧૨ આજીવન શ્રમણોપાસક વગેરેનું વર્ણન છે.

૮.૬ પ્રાસુક-આહારાદિ ઉદ્દેશક : આમાં ઉત્તમ શ્રમણને શુદ્ધ આહાર આપવાથી એકાંત નિર્જરા, આરાધક નિર્ગ્રંથ, ક્રિયાવિચાર વગેરેનું વર્ણન છે.

૮.૭ અદત્તાદાન ઉદ્દેશક : આમાં અન્ય તીર્થિકો અને સ્થવિરોનો સંવાદ અને સ્થવિરો દ્વારા પાંચ પ્રકારના ગતિ-પ્રપાત અધ્યયનની રચના વગેરે વર્ણન છે.

૮.૮ પ્રત્યનીક ઉદ્દેશક : આમાં ત્રણ પ્રકારના ગુરુપ્રત્યનીક અને વ્યવહાર, કર્મબંધ, કર્મપ્રકૃતિઓ, પરિષહ, સૂર્યદર્શન વગેરે વર્ણન છે.

૮.૯ પ્રયોગબંધ ઉદ્દેશક : આમાં બે પ્રકારના બંધ વગેરેનું વર્ણન છે.

૮.૧૦ આરાધના ઉદ્દેશક : એમાં ત્રણ પ્રકારની આરાધના, આઠ કર્મપ્રકૃતિઓ, જીવવિચાર વગેરેનું વર્ણન કરી છેલ્લે સિદ્ધને પુદ્ગલી કહેવાય કે પુદ્ગલ કહેવાય તેનો નિર્ણય કરવામાં આવ્યો છે.

નવમું શતક :

૯.૧ જંબૂ ઉદ્દેશક : આમાં જંબૂદ્વીપનું સ્થાન વગેરે છે.

૯.૨ જ્યોતિષી દેવ ઉદ્દેશક : એમાં અઢી દ્વીપમાં પ્રકાશતા સૂર્ય-ચંદ્રનું વર્ણન છે.

૯.૩-૩૦ અંતર્દ્વીપ ઉદ્દેશક : એમાં અંતર્દ્વીપનું વર્ણન છે.

૯.૩૧ અસોચ્ચા ઉદ્દેશક : આમાં જ્ઞાની સંબંધી અને કેવળી સંબંધી પ્રશ્નોત્તરી છે.

૯.૩૨ ગાંગેય ઉદ્દેશક : આમાં પાર્શ્વાપત્ય ગાંગેય વગેરેનું વર્ણમ છે.

૯.૩૩ કુંડગ્રામ ઉદ્દેશક : આમાં બ્રાહ્મણકુંડગ્રામ, ઋષભદત્ત બ્રાહ્મણ અને દેવાનંદા બ્રાહ્મણીની વાત છે. તેમજ કુંડગ્રામમાં ભગવાન મહાવીરનું પદાર્પણ, દુગ્ધધારા, પુત્રસ્નેહ વગેરેનું વર્ણન છે. વળી ક્ષત્રિય કુંડગ્રામ, જમાલીનું જીવન અને તેનું કેટલાક ભવ પછી નિર્વાણ વગેરે વર્ણન છે.

૯.૩૪ પુરુષઘાતક ઉદ્દેશક : આમાં પુરુષની હત્યા કરનાર પુરુષથી ભિન્નની પણ હત્યા કરે છે, અશ્વને મારનારો અશ્વથી ભિન્નને પણ મારે છે વગેરે વાતો છે તેમજ શ્વાસોચ્છ્વાસની પ્રશ્નોત્તરી છે.

દસમું શતક :

૧૦.૧ દિશા ઉદ્દેશક :આમાં પૂર્વાદિ દિશાઓનું જીવ-અજીવ રૂપ, દસ દિશાઓના નામ વગેરે વર્ણન છે.

૧૦.૨ સંવૃત અણગાર ઉદ્દેશક : એમાં અણગારને લગતી ક્રિયા, ત્રણ પ્રકારની યોનિઓ, વેદનાઓ અને ભિક્ષુપ્રતિમા વગેરેનું વર્ણન છે.

૧૦.૩ આત્મ-ઋદ્ધિ ઉદ્દેશક : આમાં અલ્પઋદ્ધિક અને મહર્ધિક દેવોની શક્તિ, ઉદરવાયુ, ઘોડાના પેટમાં કર્કટવાયુ, બાર પ્રકારની ભાષા વગેરે વર્ણિત છે.

૧૦.૪ શ્યામહસ્તી અણગાર ઉદ્દેશક : આમાં શ્યામહસ્તી અણગાર અને ગણધર ભગવાનનો સંવાદ છે.

૧૦.૫ દેવ ઉદ્દેશક : આમાં દેવેન્દ્રોની અગ્રમહિષી (પટરાણી)ઓના નામો વગેરે વર્ણન છે.

૧૦.૬ સભા ઉદ્દેશક : એમાં શક્રની સુધર્મા સભા તથા શક્રેન્દ્રના સુખનું વર્ણન છે.

૧૦.૭-૩૪ અન્તર્દ્વીપ ઉદ્દેશક : આમાં ઉત્તર દિશાના એકોરુકથી શુદ્ધદંત સુધીના ૨૮ શતકોમાં અન્તર્દ્વીપોનું વર્ણન છે.

અગિયારમું શતક

૧૧.૧ ઉત્પલ ઉદ્દેશક : આમાં ઉત્પલના જીવોનું વિસ્તૃત વર્ણન છે.

૧૧.૨ શાલૂક ઉદ્દેશક (૩) પલાશ ઉદ્દેશક (૪) કુંભિક ઉદ્દેશક (૫) નાલિક ઉદ્દેશક (૬) પદ્મ ઉદ્દેશક (૭) કર્ણિક ઉદ્દેશક અને (૮) નલિન ઉદ્દેશક આ બધા ઉદ્દેશકોમાં નામ પ્રમાણે જીવનું વર્ણન છે. બાકી બધું વર્ણન ઉત્પલ ઉદ્દેશકના સમાન છે. એમાં કેવળ કુંભિક ઉદ્દેશકમાં સ્થિતિની થોડી વિશેષતા બતાવી છે.

૧૧.૯ શિવ રાજર્ષિ ઉદ્દેશક : એમાં શિવરાજર્ષિનું વર્ણન કરી અઢી દ્વીપના દ્રવ્યની વાત જણાવી છે.

૧૧.૧૦ લોક ઉદ્દેશક : આમાં ચાર પ્રકારના લોકનું વર્ણન છે.

૧૧.૧૧ કાલ ઉદ્દેશક : આમાં વાણિજ્યગ્રામ, દુતિપલાસ ચૈત્ય, ભગવાન મહાવીર સાથે સુદર્શન શ્રેષ્ઠીના પ્રશ્ન, ચાર પ્રકારના કાળ વગેરેનું વર્ણન છે.

૧૧.૧૨ આલભિકા ઉદ્દેશક : આમાં આલભિકા નગરી, ઋષિભદ્ર વગેરે શ્રમણોપાસકોની ચર્ચા વગેરે છે.

બારમું શતક :

૧૨.૧ શંખ ઉદ્દેશક : એમાં શ્રાવસ્તી નગરી, કોષ્ઠક ચૈત્ય, શંખ વગેરે શ્રમણોપાસકોનું વર્ણન છે.

૧૨.૧ જયંતી ઉદ્દેશક : આમાં જયંતી નામની શ્રાવિકાએ ભગવાનને કરેલા પ્રશ્નોના ઉત્તર છે.

૧૨.૩ પૃથ્વી ઉદ્દેશક : આમાં સાત પૃથ્વીઓ અને તેમના ગોત્રનું વર્ણન છે.

૧૨.૪ પુદ્ગલ ઉદ્દેશક : આમાં અનંતાનંત પુદ્ગલ પરિવર્તનું વર્ણન છે.

૧૨.૫ અતિપાત ઉદ્દેશક : આમાં ૧૮ પાપસ્થાનકનું વર્ણન છે.

૧૨.૬ રાહુ ઉદ્દેશક : આમાં રાહુનું વર્ણન અને અંતે સૂર્ય-ચંદ્રના કામભોગની વાત જણાવી છે.

૧૨.૭ લોક ઉદ્દેશક : એમાં લોકના આયામ - વિષ્કંભ વગેરેનું વર્ણન છે.

૧૨.૮ નાગ ઉદ્દેશક : આમા મહર્ધિક દેવની સર્પ, હાથી, મણિ અને વૃક્ષ રૂપે થયેલી ઉત્પત્તિનું અને તેમની પૂજાનું વર્ણન છે.

૧૨.૯ દેવ ઉદ્દેશક : આમાં પાંચ પ્રકારના દેવોની ઉત્પત્તિ વગેરેનું વર્ણન છે.

૧૨.૧૦ આત્મા ઉદ્દેશક : આમાં આઠ પ્રકારના આત્મા, તેમનું સ્વરૂપ વગેરે વર્ણન છે.

તેરમું શતક :

૧૩.૧ પૃથ્વી ઉદ્દેશક : આમાં સાત પ્રકારની પૃથ્વી વગેરેનું વર્ણન છે.

૧૩.૨ દેવ ઉદ્દેશક : આમાં ચાર પ્રકારના દેવોનું વર્ણન છે.

૧૩.૩ નરક ઉદ્દેશક : આમાં નરક તેમજ નારકી વર્ણન છે.

૧૩.૪ પૃથ્વી ઉદ્દેશક : આમા સાત પ્રકારની પૃથ્વી, દિશા, અસ્તિકાય, કૂટાગાર શાળાનું ઉદાહરણ, લોકવર્ણન વગેરે વાતો છે.

૧૩.૫ આહાર ઉદ્દેશક : એમાં નૈરયિકોના અચિત્તાહારી હોવાની વાત છે.

૧૩.૬ ઉપપાત ઉદ્દેશક : આમાં નૈરયિક, અસુરેન્દ્ર વગેરેના વર્ણન પછી રાજા ઉદયનની વાત છે.

૧૩.૭ ભાષા ઉદ્દેશક : આમાં ભાષાનું પૌદ્ગલિક રૂપ, ભાષા રૂપી, અચિત્ત અને અજીવરૂપ છે વગેરે વર્ણન છે.

૧૩.૮ કર્મપ્રકૃતિ ઉદ્દેશક : આમાં આઠ કર્મપ્રકૃતિઓનું વર્ણન છે.

૧૩.૯ અણગાર વૈક્રિય ઉદ્દેશક : આમા વૈક્રિયલબ્ધિથી આકાશગમનનું સામર્થ્ય વગેરેનું વર્ણન છે.

૧૩.૧૦ સમુદ્ઘાત ઉદ્દેશક : એમાં છ છાદ્મસ્થિક સમુદ્ઘાતોનું વર્ણન છે.

ચૌદમું શતક :

૧૪.૧ ચરણ ઉદ્દેશક : આમાં વિગ્રહગતિ અને આયુબંધ વગેરે વર્ણન છે.

૧૪.૨ ઉન્માદ ઉદ્દેશક : આમાં બે પ્રકારના ઉન્માદ, પર્જન્યવિચાર, તમસ્કાય વગેરેનું વર્ણન છે.

૧૪.૩ શરીર ઉદ્દેશક : આમા મધ્યગતિ, વિનયવિચાર વગેરે વર્ણન છે.

૧૪.૪ પુદ્ગલ ઉદ્દેશક : આમાં અતીત, અનાગત અને વર્તમાન પુદ્ગલોના પરિભ્રમણ વગેરેનું વર્ણન છે.

૧૪.૫ અગ્નિ ઉદ્દેશક : આમાં ૨૪ દંડકોમાં જીવ અગ્નિમાંથી પસાર થાય છે વગેરે વર્ણન છે.

૧૪.૬ આહાર ઉદ્દેશક : એમાં ૨૪ દંડકોમાં જીવોના આહાર, પરિમાણ, યોનિ, સ્થિતિ વગેરેના વર્ણન પછી શક્રેન્દ્ર અને ઈશાનેન્દ્રના રતિસુખનું વર્ણન છે.

૧૪.૭ ગૌતમ આશ્વાસન ઉદ્દેશક : આમાં કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ ન થવાથી ખિન્ન થયેલા ગૌતમ સ્વામીને ભગવાન મહાવીર દ્વારા આશ્વાસન, છ પ્રકારના તુલ્ય વગેરેનું વર્ણન છે.

૧૪.૮ અંતર ઉદ્દેશક : આમાં સાત નરકોના અંતર વગેરે વર્ણિત છે.

૧૪.૯ અણગાર ઉદ્દેશક : આમાં અણગારનું જ્ઞાન, શ્રમણ અને દેવ વગેરેનું વર્ણન છે.

૧૪.૧૦ કેવલી ઉદ્દેશક : આમાં કેવળીના કેવળજ્ઞાનની વ્યાપકતા વગેરે વર્ણિત છે.

પંદરમું શતક :

એના એક ઉદ્દેશકમાં ગોશાલક, આઠ પ્રકારના નિમિત્ત, છ પ્રકારના ફળાદેશ, વણિકનું દૃષ્ટાંત, ચોર્યાસી લાખ મહાકલ્પનું પ્રમાણ, સાત શરીરાન્તર પ્રવેશો, જંબૂદ્વીપ વગેરેનું વર્ણન છે.

સોળમું શતક :

૧૬.૧ અધિકરણ ઉદ્દેશક : આમાં વાયુકાયની ઉત્પત્તિ અને મરણ, અધિકરણ હિંસા વગેરે વર્ણન છે.

૧૬.૨ જરા ઉદ્દેશક : આમાં જીવોના વૃદ્ધાવસ્થા અને શોક વગેરેનું વર્ણન છે.

૧૬.૩ કર્મ ઉદ્દેશક : આમાં ૨૪ દંડકોમાં આઠ કર્મ પ્રકૃતિઓ વગેરે વર્ણન છે.

૧૬.૪ જાવંતીય ઉદ્દેશક : આમાં વૃદ્ધ અને તરુણ, કઠિયારો, ઘાસનો પૂળો વગેરે ના ઉદાહરણ છે.

૧૬.૫ ગંગદત્ત ઉદ્દેશક : એમાં ગંગદત્તે ભગવાન મહાવીરને કરેલા પ્રશ્નો અને ઉત્તરો છે.

૧૬.૬ સ્વપ્ન ઉદ્દેશક : આમાં પાંચ પ્રકારના સ્વપ્ન, સ્વપ્નના ૪૨ પ્રકાર, મહા સ્વપ્નના ૩૦ પ્રકાર જણાવી તીર્થંકર, ચક્રવર્તી, વાસુદેવ, બલદેવ, માંડલિક વગેરેની માતાઓને આવેલા સ્વપ્નોનાં વર્ણન છે.

૧૬.૭ ઉપયોગ ઉદ્દેશક : આમાં બે પ્રકારના ઉપયોગનું વર્ણન છે.

૧૬.૮ લોક ઉદ્દેશક : આમાં લોકની મોટાઈ - પરિધિ, તેમજ ક્રિયાવિચાર વગેરેનું વર્ણન છે.

૧૬.૯ બલીન્દ્ર ઉદ્દેશક : આમાં વિરોચનપુત્ર બલીન્દ્રરાજા વિષે વર્ણન છે.

૧૬.૧૦ અવધિજ્ઞાન ઉદ્દેશક : આમાં બે પ્રકારનાં અવધિજ્ઞાનનું વર્ણન છે.

૧૬.૧૧ દ્વીપકુમાર ઉદ્દેશક : આમાં દ્વીપકુમારો વિષે વર્ણન છે.

૧૬.૧૨ ઉદધિકુમાર ઉદ્દેશક : આમાં ઉદધિકુમારો વિષે વર્ણન છે.

૧૬.૧૩ દિક્કુમાર ઉદ્દેશક : આમાં દિક્કુમારો વિષે વર્ણન છે.

સત્તરમું શતક :

૧૭.૧ કુંજર ઉદ્દેશક : આમાં ઉદાયી હાથીનો પૂર્વભવ, ક્રિયાવિચાર, ભાવના છ પ્રકાર વગેરે વર્ણન છે.

૧૭.૨ સંયત ઉદ્દેશક : આમાં સંયત-વિરત વગેરે ધાર્મિક - અધાર્મિક ના વર્ણન પછી અંતે વૈક્રિયશક્તિની વાત જણાવી છે.

૧૭.૩ શૈલેષી ઉદ્દેશક : આમાં શૈલેષી અણગાર પરપ્રયોગ વિના કંપે નહિ તેમજ કંપનના પ્રકાર વગેરે વર્ણિત છે.

૧૭.૪ ક્રિયા ઉદ્દેશક : આમાં પ્રાણાતિપાત ક્રિયા, આત્મભૂત દુ:ખ, વેદના વગેરે વર્ણન છે.

૧૭.૫ સુધર્મા સભા ઉદ્દેશક : આમાં ઈશાનેન્દ્રની સુધર્મા સભા અને સ્થિતિનું વર્ણન છે.

૧૭.૬-૭ પૃથ્વીકાયિક ઉદ્દેશકો : આ બંનેમાં પૃથ્વીકાય જીવોનો ઉત્પત્તિ પહેલાં અને પછીના આહાર ગ્રહણ, સૌધર્મકલ્પ પૃથ્વીથી માંડીને રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં ઉત્પન્ન થનારા જીવો વગેરે વર્ણન છે.

૧૭.૮-૯ અપ્કાયિક ઉદ્દેશક : આમાં અપ્કાયિક જીવોની ઉત્પત્તિ પહેલા અને પછીના આહાર તેમજ સૌધર્મ કલ્પના અપ્કાયિક જીવો વગેરે વર્ણન છે.

૧૭.૧૦-૧૧ વાયુકાયિક ઉદ્દેશક : આમાં રત્નપ્રભા અને સૌધર્મ કલ્પમાં વાયુકાયિક જીવોની ઉત્પત્તિ વગેરે વર્ણન છે.

૧૭.૧૨ એકેન્દ્રિય ઉદ્દેશક : આમાં એકેન્દ્રિયોની લેશ્યા વગેરેનું વર્ણન છે.

૧૭.૧૩ નાગકુમાર (૧૪) સુવર્ણકુમાર (૧૫) વિદ્યુત્કુમાર (૧૬) વાયુકુમાર અને (૧૭) અગ્નિકુમાર ઉદ્દેશકો. : આમા નામ પ્રમાણે તે તે કુમારોના આહારથી માંડીને ઋદ્ધિ-સિદ્ધિ, અલ્પત્વ - બહુત્વ વગેરેનું વર્ણન છે.

અઢારમું શતક :

૧૮.૧ પ્રથમ ઉદ્દેશક : આમાં ૨૪ દંડકોમાં જીવ જીવભાવથી પહેલો નથી, પણ સિદ્ધ સિદ્ધભાવથી પહેલો છે વગેરે વર્ણન છે.

૧૮.૨ વિશાખા ઉદ્દેશક : આમાં વિશાખા નગરી, શકેન્દ્ર આગમનનું નાટ્ય પ્રદર્શન, ગણધર ભગવાન ગૌતમ સ્વામી અને શકેન્દ્રની ઋદ્ધિ, પૂર્વભવની જિજ્ઞાસા અને તેનું ભગવાન મહાવીર દ્વારા સમાધાન વગેરે વર્ણન છે.

૧૮.૩ માકંદિપુત્ર ઉદ્દેશક : આમાં ભગવાન મહાવીર પાસે માકંદિપુત્રના પ્રશ્નો, કેટલી દિશામાં પુદ્ગલોને આહાર મળે, બે પ્રકારના બંધ, ધનુષબાણનું ઉદાહરણ વગેરે વિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૧૮.૪ પ્રાણાતિપાત ઉદ્દેશક : આમાં ૧૮ પાપ, પૃથ્વીકાયથી માંડીને વનસ્પતિકાય, ચાર પ્રકારના કષાય વગેરે વિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૧૮.૫ અસુરકુમાર ઉદ્દેશક : આમાં દર્શનીય અને અદર્શનીય એમ બે પ્રકારના અસુરકુમાર વિષે વર્ણન છે.

૧૮.૬ ગોળ વર્ણાદિ ઉદ્દેશક : આમાં નિશ્ચય અને વ્યવહાર નય દ્વારા ગોળના વર્ણ વગેરે નું વર્ણન છે. તેમજ ભ્રમર વગેરે ૨૦ વિવિધ વસ્તુઓના વર્ણ, ગંધ, રસપ્રદેશ વગેરેવિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૧૮.૭ કેવલી ઉદ્દેશક : આમાં કેવળીની ભાષા, અન્ય તીર્થિકોની માન્યતા અને મહાવીર ભગવાનની માન્યતા વગેરે વિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૧૮.૮ અણગાર ક્રિયા ઉદ્દેશક : આમાં ભાવિત આત્મા અણગારની ઐર્યાપથિકી ક્રિયા વગેરેનું તથા અવધિજ્ઞાનના પરમાણુજ્ઞાન વિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

૧૮.૯ ભવ્યદ્રવ્ય ઉદ્દેશક : આમાં ૨૪ દંડકોના ભવ્યદ્રવ્ય જીવ અને એમની સ્થિતિનું વર્ણન છે.

૧૮.૧૦ સોમિલ ઉદ્દેશક : આમાં ભાવિત આત્મા અણગારની વૈક્રિય લબ્ધિનું સામર્થ્ય, વાયુ અને પુદ્ગલ, યાત્રા, યાપનીય અવ્યાબાધ અને પ્રાસુકવિહાર વિષે પ્રશ્નોત્તરી છે.

ઓગણીસમું શતક :

૧૯:૧ લેશ્યા ઉદ્દેશક : એમાં છ પ્રકારની લેશ્યાનું વર્ણન છે.

૧૯.૨ ગર્ભ ઉદ્દેશક : આમાં કૃષ્ણ લેશ્યાવાળા જીવો જ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ગર્ભની ઉત્પત્તિ કરે છે વગેરે વર્ણન છે.

૧૯.૩ પૃથ્વી ઉદ્દેશક : આમાં પૃથ્વીકાયના જીવોના પ્રત્યેક શરીરના બંધ વગેરે અને અંતે ચક્રવર્તીની દાસી દ્વારા પૃથ્વીપિંડ પીસવાનું ઉદાહરણ છે.

૧૯.૪ મહાશ્રવ ઉદ્દેશક : આમાં ૨૪ દંડકોમાં મહાશ્રવ, મહાક્રિયા, મહાવેદના, મહાનિર્જરા વગેરેનું વર્ણન છે.

૧૯.૫ ચરમ ઉદ્દેશક : એમાં ૨૪ દંડકોમાં અલ્પાયુ તથા ઉત્કૃષ્ટ આયુની સાથે સાથે મહાકર્મ ક્રિયાનું વર્ણન છે.

૧૯.૬ દ્વીપ ઉદ્દેશક : આમાં ૨૪ દંડકોમાં બે પ્રકારની વેદનાનું વર્ણન છે.

૧૯.૭ ભવન ઉદ્દેશક : આમાં ભવનોનો પરિચય તેમજ વ્યંતરાવાસો, જ્યોતિષાવાસ અને અન્ય સર્વે વિમાનાવાસોનો સંક્ષિપ્ત પરિચય છે.

૧૯.૮ નિર્વૃત્તિ ઉદ્દેશક : એમાં ૨૪ દંડકોમાં એકેન્દ્રિયથી માંડીને પંચેન્દ્રિય સુધીનાના કર્મ, શરીર, સર્વ ઈન્દ્રિયો, ભાષા, મન, કષાય, વર્ણ, સંસ્થાન, સંજ્ઞા, લેશ્યા, દૃષ્ટિ, જ્ઞાન-અજ્ઞાન, લોક, ઉપયોગ વગેરેની નિર્વૃત્તિનું વર્ણન છે.

૧૯.૯ કરણ ઉદ્દેશક : આમાં ૨૪ દંડકોમાં પાંચ પ્રકારના કરણ વગેરે વર્ણિત છે.

૧૯.૧૦ વ્યંતર ઉદ્દેશક : આમાં વ્યંતર દેવોના આહાર, ઉચ્છ્વાસ વગેરે વર્ણિત છે.

વીસમું શતક :

૨૦.૧ બે ઈન્દ્રિય ઉદ્દેશક : એમાં બેઈન્દ્રિય જીવોના શરીર બંધાવાના ક્રમ, દૃષ્ટિ, જ્ઞાન, યોગ, આહારમાં ભેદ વગેરે વર્ણન છે.

૨૦.૨ આકાશ ઉદ્દેશક : આમાં બે પ્રકારના આકાશ, અધોલોકની મહાનતા વગેરે વર્ણન છે.

૨૦.૩ પ્રાણવધ ઉદ્દેશક : આમાં ૧૮ પાપ, ચાર બુદ્ધિ, ચાર અવગ્રહ વગેરેનું વિસ્તૃત વર્ણન છે. એ બધા આત્માની સાથે પરિણામ પામે છે.

૨૦.૪ ઉપચય ઉદ્દેશક : આમાં ઈન્દ્રિયોપચયના પાંચ પ્રકારનું વર્ણન છે.

૨૦.૫ પરમાણુ ઉદ્દેશક : આમાં પરમાણુના ૧૬ વિકલ્પો અને તેના પેટા વિકલ્પોનું વર્ણન છે.

૨૦.૬ અંતર ઉદ્દેશક : એમાં રત્નપ્રભાથી માંડીને ઈષત્પ્રાગ્ભારાના અંતરાળોમાં પૃથ્વીકાય વગેરે જીવોની ઉત્પત્તિ અને આહાર વિષયક વર્ણન છે.

૨૦.૭ બંધ ઉદ્દેશક : આમાં ૨૪ દંડકોમાં જ્ઞાનાવરણીય કર્મો વગેરેના ત્રણ પ્રકારના બંધનું વર્ણન છે.

૨૦.૮ ભૂમિ ઉદ્દેશક : આમાં ૧૫ કર્મભૂમિ, ૩૦ અકર્મભૂમિ વગેરેનું વર્ણન છે.

૨૦.૯ ચારણ ઉદ્દેશક : આમાં વિદ્યાચારણ અને જંઘાચારણની શીઘ્રગતિ, ત્રાંસી ગતિ, ઊર્ધ્વગતિ વગેરે વર્ણનો છે.

એકવીસમું શતક :

પ્રથમ વર્ગ :

૨૧.૧ શાલી ઉદ્દેશક : આમાં ડાંગર (શાલી) વગેરે વર્ગમાં ઉત્પન્ન થનારા જીવોની લેશ્યા, સ્થિતિ, જઘન્ય-ઉત્કૃષ્ટ કાલ અને પ્રાણિમાત્રનું ડાંગર વગેરે વર્ગમાં ઉત્પન્ન થવું વગેરે વર્ણન છે.

૨૧.૨ કંદ ઉદ્દેશક, (૩) સ્કંધ ઉદ્દેશક (૪) ત્વચા ઉદ્દેશક (૫) સાલ ઉદ્દેશક (૬) પ્રવાલ ઉદ્દેશક (૭) પત્ર ઉદ્દેશક (૮) પુષ્પ ઉદ્દેશક (૯) ફૂલ ઉદ્દેશક અને (૧૦) બીજ ઉદ્દેશક

આ બધામાં પ્રાણિમાત્રનું તે તે અનુસાર વર્ગમાં ઉત્પન્ન થવું તેનું વર્ણન છે.

દ્વિતીય વર્ગ : ૧-૧૦ મૂલ, કંદ આદિ ઉદ્દેશક

તૃતીય વર્ગ : ૧-૧૦ અલસીવર્ગ ઉદ્દેશક

ચતુર્થ વર્ગ : ૧-૧૦ વંશવર્ગ ઉદ્દેશક

પંચમ વર્ગ : ૧-૧૦ ઈક્ષુવર્ગ ઉદ્દેશક

ષષ્ઠ વર્ગ : ૧-૧૦ સેડિયવર્ગ ઉદ્દેશક

સપ્તમ વર્ગ : ૧-૧૦ અભ્રુહવર્ગ ઉદ્દેશક

અષ્ટમ વર્ગ : ૧-૧૦ તુલસીવર્ગ ઉદ્દેશક

આ આઠેય વર્ગોમાં જીવોની લેશ્યા વગેરેનો વર્ણનક્રમ પ્રથમ વર્ગના દસ ઉદ્દેશકોના જેવો છે.

બાવીસમું શતક :

પ્રથમ વર્ગ : ૧-૧૦ તાડ ઉદ્દેશક

દ્વિતીય વર્ગ : ૧-૧૦ નિંબ ઉદ્દેશક

તૃતીય વર્ગ : ૧-૧૦ અગસ્તિક ઉદ્દેશક

ચતુર્થ વર્ગ : ૧-૧૦ રીંગણ ઉદ્દેશક

પંચમ વર્ગ : ૧-૧૦ સિરિયક ઉદ્દેશક

આ બધા વર્ગોના ઉદ્દેશકોમાં જીવોની લેશ્યા વગેરેનો વર્ણન ક્રમમાં વિશેષતા એ છે કે તેમનું વર્ણન ઓગણીસમા શતક અનુસાર છે.

ષષ્ઠવર્ગ : ૧-૧૦ પૂષ્ફલિકા ઉદ્દેશક

આમાં પૂષ્ફલિકા વર્ગના જીવાને લેશ્યા વગેરે વિષે વર્ણન છે.

તેવીસમું શતક :

પ્રથમ વર્ગ : ૧-૧૦ બટાટા ઉદ્દેશક

દ્વિતીય વર્ગ : ૧-૧૦ લોહી ઉદ્દેશક

તૃતીય વર્ગ : ૧-૧૦ આય ઉદ્દેશક

ચતુર્થ વર્ગ : ૧-૧૦ પાઠુ ઉદ્દેશક

આ બધા વર્ગોના ઉદ્દેશકોમાં પણ જીવોની લેશ્યા વગેરેનો વર્ણનક્રમ ઓગણીસમા શતક અનુસાર છે.

ચોવીસમું શતક :

૨૪.૧ નૈરયિક ઉદ્દેશક : આમાં તિર્યંચો અને મનુષ્યોનો નારકી જીવોમાં ઉપપાત વગેરેનું વર્ણન છે.

૨૪.૨ પરિમાણ ઉદ્દેશક : આમાં તિર્યંચો અને મનુષ્યોનો અસુરકુમારોમાં ઉપપાત વર્ણવ્યો છે.

૨૪.૩-૧૧ નાગકુમારાદિ ઉદ્દેશક : આ ઉદ્દેશકોમાં તિર્યંચો અને મનુષ્યોના નાગકુમારથી શરુ કરીને સ્તનિતકુમાર સુધીના નવ કુમારોમાં ઉપપાત વર્ણવ્યો છે.

૨૪.૧૨ પૃથ્વીકાય ઉદ્દેશક : આમાં તિર્યંચો અને મનુષ્યોના પૃથ્વીકાયિક જીવોમાં ઉપપાતનું વિસ્તૃત વર્ણન છે.

૨૪.૧૩ અપ્કાય ઉદ્દેશક : આમાં તિર્યંચો અને મનુષ્યોના અપ્કાયિક જીવોમાં ઉપપાતનું વર્ણન છે.

૨૪.૧૪ તેઉકાય ઉદ્દેશક : આમાં તિર્યંચો અને મનુષ્યોના તેઉકાયિક જીવોમાં ઉપપાતનું વર્ણન છે.

૨૪.૧૫ વાયુકાય ઉદ્દેશક : આમાં તિર્યંચો અને મનુષ્યોના વાયુકાયિક જીવોમાં ઉપપાતનું વર્ણન છે.

૨૪.૧૬ વનસ્પતિકાય ઉદ્દેશક : આમાં તિર્યંચો, મનુષ્યો અને દેવોના વનસ્પતિકાયિક જીવોમાં ઉપપાતનું વર્ણન છે.

૨૪.૧૭ બેઈન્દ્રિય ઉદ્દેશક : આમાં તિર્યંચો અને મનુષ્યોના બેઈન્દ્રિયધારી જીવોમાં ઉપપાતનું વર્ણન છે.

૨૪.૧૮ ત્રણ ઈન્દ્રિય ઉદ્દેશક : આમાં તિર્યંચો અને મનુષ્યોના ત્રણ ઈન્દ્રિયધારી જીવોમાં ઉપપાતનું વર્ણન છે.

૨૪.૧૯ ચતુરિન્દ્રિય ઉદ્દેશક : આમાં તિર્યંચો અને મનુષ્યોના ચતુરિન્દ્રિય જીવોમાં ઉપપાતનું વર્ણન છે.

૨૪.૨૦ તિર્યંચ પંચેન્દ્રિય ઉદ્દેશક : આમાં ૨૪ દંડકોના નારકીયો, તિર્યંચો, મનુષ્યો અને દેવોના તિર્યંચ પંચેન્દ્રિયમાં ઉપપાત વર્ણવ્યો છે.

૨૪.૨૧ મનુષ્ય ઉદ્દેશક : આમાં ૨૪ દંડકોના નારકીયો, તિર્યંચો, મનુષ્યો અને દેવોનો મનુષ્યોમાં ઉપપાત વર્ણવ્યો છે.

૨૪.૨૨ વ્યંતર ઉદ્દેશક : આમાં તિર્યંચો અને મનુષ્યોનો વ્યંતર દેવોમાં ઉપપાત વર્ણવ્યો છે.

૨૪.૨૩ જ્યોતિષ્ક ઉદ્દેશક :
આમાં તિર્યંચો અને મનુષ્યોનો જ્યોતિષ્ક દેવોમાં ઉપપાત વર્ણવ્યો છે.

૨૪.૨૪ વૈમાનિક ઉદ્દેશક :
આમાં તિર્યંચો અને મનુયોનો વૈમાનિક દેવોમાં ઉપપાત વર્ણવ્યો છે.

પચ્ચીસમું શતક :

૨૫.૧ લેશ્યા ઉદ્દેશક : એમાં ૧૬ પ્રકારની લેશ્યા, ૧૪ પ્રકારના સંસારી જીવો, ૧૫ પ્રકારના યોગ વગેરેનું વર્ણન છે.

૨૫.૨ દ્રવ્ય ઉદ્દેશક : આમાં બે પ્રકારના દ્રવ્ય, બે પ્રકારના અજીવ-દ્રવ્ય વગેરે વર્ણન છે.

૨૫.૩ સંસ્થાન ઉદ્દેશક : આમાં છ પ્રકારના સંસ્થાનોનું વર્ણન છે.

૨૫.૪ યુગ્મ ઉદ્દેશક : આમાં ૨૪ દંડકોમાં કૃતયુગ્મ વગેરે ચાર પ્રકારના જોડકાંઓનું વર્ણન છે.

૨૫.૫ પર્યવ ઉદ્દેશક : આમાં બે પ્રકારના પર્યવ, કાલદ્રવ્ય, આવલિકા, શ્વાસોચ્છ્વાસ, પલ્યોપમ, સાગરોપમ, ઉત્સર્પિણી - અવસર્પિણી, પુદ્ગલાવર્ત વગેરેનું વર્ણન છે.

૨૫.૬ નિર્ગ્રંથ ઉદ્દેશક : આમાં (૧) પ્રજ્ઞાપન દ્વારમાં પાંચ પ્રકારના નિર્ગ્રંથ વગેરે, (૨) વેદદ્વારમાં નિર્ગ્રંથ વગેરેના વેદ, (૩) રાગદ્વારમાં સરાગ-વીતરાગ, (૪) કલ્પદ્વાર (૫) ચારિત્રદ્વાર (૬) પ્રતિસેવના દ્વારમાં પ્રતિસેવક અને અપ્રતિસેવક (૭) જ્ઞાનદ્વાર (૮) તીર્થદ્વારમાં તીર્થ-અતીર્થ (૯) લિંગદ્વાર (૧૦) શરીરદ્વાર (૧૧) ક્ષેત્રદ્વાર (૧૨) કાલદ્વાર (૧૩) ગતિદ્વાર (૧૪) સંયમદ્વાર (૧૫) સંનિકર્ષદ્વાર (૧૬) યોગદ્વાર (૧૭) ઉપયોગ દ્વાર (૧૮) કષાયદ્વાર (૧૯) લેશ્યાદ્વાર (૨૦) પરિણામદ્વાર (૨૧) બંધદ્વારમાં કર્મપ્રકૃતિઓનાં બંધ (૨૨) વેદદ્વારમાં વેદન (૨૩) ઉદીરણાદ્વાર (૨૪) ઉપસંપદ-હાનિદ્વારમાં નિર્ગ્રંથ જીવનનો સ્વીકાર અને ત્યાગ (૨૫) સંજ્ઞાદ્વાર (૨૬) આહારદ્વાર (૨૭) ભવદ્વાર (૨૮) આકર્ષદ્વાર (૨૯) કાલદ્વારમાં નિર્ગ્રંથોની સ્થિતિ (૩૦) અંતરદ્વાર (૩૧) સમુદ્દ્ઘાતદ્વાર ૩૨) ક્ષેત્રદ્વાર (૩૩) સ્પર્શનાદ્વાર (૩૪) ભાવદ્વાર (૩૫) પરિમાણદ્વાર અને (૩૬) અલ્પબહુત્વદ્વાર - એ બધામાં નામ પ્રમાણે વિષયો વર્ણવવામાં આવ્યા છે.

૨૫.૭ સંયત ઉદ્દેશક : આમાં પાંચ પ્રકારના ચારિત્રના સંદર્ભમાં વેદ, રાગ, કલ્પ, પ્રતિસેવના વગેરે ઉપર મુજબના ઉદ્દેશક પ્રમાણે વર્ણવ્યા છે અને અંતે બે પ્રકારના તપ વર્ણવ્યાં છે.

૨૫.૮ ઓઘ ઉદ્દેશક : એમાં મંડૂક (દેડકા)ના અનુવર્તન જેવા અધ્યવસાયોથી નારકીય જીવોની ઉત્પત્તિ વગેરે વર્ણન છે.

૨૫.૯ ભવ્ય ઉદ્દેશક : આમાં દેડકાના અનુવર્તન જેવા અધ્યવસાયોથી ભવસિદ્ધિક નારકીયોની ઉત્પત્તિ વગેરે વર્ણન છે.

૨૫.૧૦ અભવ્ય ઉદ્દેશક : એમાં દેડકાના અનુવર્તન જેવા અધ્યવસાયોથી અભવસિદ્ધિક નારકીયોની ઉત્પત્તિ વગેરે વર્ણન છે.

૨૫.૧૧ સમ્યગ્દષ્ટિ ઉદ્દેશક : આમાં દેડકાની અનુવૃત્તિ જેવા અધ્યવસાયોથી સમ્યગ્દષ્ટિ નારકીયોની ઉત્પત્તિ વગેરે વર્ણન છે.

૨૫.૧૨ મિથ્યાદષ્ટિ ઉદ્દેશક : આમાં દેડકાની અનુવૃત્તિ જેવા અધ્યવસાયોથી મિથ્યાદષ્ટિ નારકીયોની ઉત્પત્તિ વગેરે વર્ણન છે.

છવીસમું શતક :

૨૬.૧ જીવ ઉદ્દેશક : એમાં જીવના પાપકર્મોના બંધ તેના ભાંગા વગેરે વર્ણન છે.

૨૬.૨ ઉદ્દેશકમાં અનન્તરોપપન્ન ૨૪ દંડકોમાં લેશ્યાથી માંડીને ઉપયોગ સુધીના પાપ કર્મો તથા આઠ કર્મબંધ વગેરે વર્ણન છે.

૨૬.૩ ઉદ્દેશકમાં પરંપરોપપન્ન ૨૪ દંડકોમાં જીવોના પાપકર્મો તથા આઠ કર્મબંધનું વર્ણન છે.

૨૬.૪ ઉદ્દેશકમાં અનન્તરાવગાહ ૨૪ દંડકોમાં જીવોના પાપકર્મો તથા આઠ કર્મબંધનું વર્ણન છે.

૨૬.૫ ઉદ્દેશકમાં પરંપરાવગાઢ ૨૪ દંડકોમાં જીવોના પાપકર્મો તથા આઠ કર્મબંધનું વર્ણન છે.

૨૬.૬ ઉદ્દેશકમાં અનંતરાહારક ૨૪ દંડકોમાં જીવોના પાપકર્મો તથા આઠ કર્મબંધનું વર્ણન છે.

૨૬.૭ ઉદ્દેશકમાં પરંપરાહારક ૨૪ દંડકોમાં જીવોના પાપકર્મો તથા આઠ કર્મબંધનું વર્ણન છે.

૨૬.૮ ઉદ્દેશકમાં અનંતરપર્યાપ્ત ૨૪ દંડકોમાં જીવોના પાપકર્મો તથા આઠ કર્મબંધનું વર્ણન છે.

૨૬.૯ ઉદ્દેશકમાં પરંપરપર્યાપ્ત ૨૪ દંડકોમાં જીવોના પાપકર્મો તથા આઠ કર્મબંધનું વર્ણન છે.

૨૬.૧૦ ઉદ્દેશકમાં ૨૪ દંડકોમાં ચરમજીવોના પાપકર્મો તથા આઠ કર્મબંધનું વર્ણન છે.

૨૬.૧૧ ઉદ્દેશકમાં ૨૪ દંડકોમાં અચરમજીવોના પાપકર્મો તથા આઠ કર્મબંધનું વર્ણન છે.

સત્તાવીસમા શતકથી એકતાલીસમું શતક :

શતક - ૨૭ ઉદ્દેશક ૧૧, સૂત્ર ૧૧. શતક - ૨૮ઉદ્દેશક ૧૧, સૂત્ર ૧૪.

શતક - ૨૯ ઉદ્દેશક ૧૧, સૂત્ર ૧૫. શતક - ૩૦ ઉદ્દેશક ૧૧, સૂત્ર ૫૦.

શતક - ૩૧ ઉદ્દેશક ૨૮, સૂત્ર ૪૧. શતક - ૩૨ ઉદ્દેશક ૨૮, સૂત્ર ૩૩

શતક - ૩૩ અવાંતર શતક - ૧૨, ઉદ્દેશક ૧૨૪, સૂત્રો ૧૩૯.

શતક - ૩૪ અવાંતર શતક - ૧૨, ઉદ્દેશક ૧૨૪, સૂત્રો ૧૫૨.

શતક - ૩૫ થી ૩૯ અવાંતર શતક દરેકના - ૧૨, ઉદ્દેશક દરેકના - ૧૨૪, સૂત્રો દરેકના ૧૨૪

શતક - ૪૦ અવાંતર શતક ૨૧, ઉદ્દેશક ૧૧૮૧, સૂત્રો ૧૮૧.

શતક - ૪૧, ઉદ્દેશક ૧૯૬, સૂત્રો ૨૨૨.

ઉપર્યુક્ત ૧૪ શતકોમાં ૨૪ દંડકોમાં જીવોના પાપકર્મ, લેશ્યા, પંચેન્દ્રિય સુધીના જીવો, ૧૬ પ્રકારના મહાયુગ્મો, રાશિયુગ્મો વિગેરે વિશે પ્રશ્નોત્તરી છે.

सिरि उसहदेव सामिस्स णमो। सिरि गोडी - जिराउला - सव्वोदयपासणाहाणं णमो। नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स। सिरि गोयम - सोहम्माइ सव्व गणहराणं णमो। सिरि सुगुरु - देवाणं णमो। पंचमगण अज्जसुहुम्मथेर - **भगवं परंपरासंकलिअवायणाणुगयं भगवतीसुत्तं ति पसिद्धनामगं पंचमं अंगं 卐卐卐 वियाहपण्णत्तिसुत्तं 卐卐卐** [सुत्तं १. समग्गसुत्तमंगलं] १. नमो अरहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो सव्वसाहूणं। नमोबंभीए लिवीए। [सुत्ताइं २-३. पढमसतगस्स विसयसूची मंगलं च] २. रायगिह चलण १ दुक्खे २ कंखपओसे य ३ पगति ४ पुढवीओ ५। जावंते ६ नेरइए ७ बाले ८ गुरुए य ९ चलणाओ १० ॥१॥ ३. नमो सुयस्स। [सुत्तं ४. पढमुद्देसगउवुग्घाओ] ४. १ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था। वण्णओ। तस्स णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे गुणसिलए नामं चेइए होत्था। २ ते णं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे पुरिसुत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी लोगणाहे लोगप्पदीवे लोगपज्जोयगरे अभयदये चक्खुदये मग्गदये सरणदये धम्मदेसए धम्मसारही धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहयवरनाण-दंसणधरे वियट्टछउमे जिणे जावए बुद्धे बोहए मुत्ते मोयए सव्वण्णू सव्वदरिसी सिवमयलमरुजमणंतमक्खयमव्वाबाहं 'सिद्धिगति'नामधेयं ठाणं संपाविउकामे जाव समोसरणं। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया। ३ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं अणगारे गोयमसगोत्ते णं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसभनारायसंघयणे कणगपुलगणिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविपुलतेयलेसे चउदसपुव्वी चउनाणोवगए सव्वक्खरसन्निवाती समणस्स भगवतो महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढं जाणू अहोसिरे झाणकोट्ठेवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। ४ तए णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे जायसंसए जायकोऊहल्ले, उप्पन्नसड्ढे उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोऊहल्ले, संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोऊहल्ले, समुप्पन्नसड्ढे समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोऊहल्ले उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठाए उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेत्ता वंदति, नमंसति, नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे पज्जुवासमाणे एवं वदासी [☆☆☆पढमो उद्देसो 'चलणं'] [सुत्तं ५. 'चलमाणे चलिए' इच्चाईणं पदाणं एगट्ठ-नाणट्ठाइपरूवणा] ५. १ से नूणं भंते ! चलमाणे चलिते १ ? उदीरिज्जमाणे उदीरिते २ ? वेइज्जमाणे वेइए ३ ? पहिज्जमाणे पहीणे ४ ? छिज्जमाणे छिन्ने ५ ? भिज्जमाणे भिन्ने ६ ? डज्झमाणे डड्ढे७ ? मिज्जमाणे मडे ८ ? निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे ९ ? हंता गोयमा ! चलमाणे चलिए जाव निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे। २ एए णं भंते ! नव पदा किं एगट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा उदाहु नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा ? गोयमा ! चलमाणे चलिते १, उदीरिज्जमाणे उदीरिते २ ? वेइज्जमाणे वेइए ३ ? पहिज्जमाणे पहीणे ४, एए णं चत्तारि पदा एगट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा उप्पन्नपक्खस्स। छिज्जमाणे छिन्ने १, भिज्जमाणे भिन्ने २, डज्झमाणे डड्ढे, मिज्जमाणे मडे, निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, एए णं पंच पदा नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा विगतपक्खस्स। [सुत्तं ६. चउवीसदंडके ठिइपभुइविसये वियारो] ६. (१.१) नेरइयाणं भंते ! केवइकालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। (१.२) नेरइया णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ? जहा ऊसासपदे। (१.३) नेरइया णं भंते ! आहारट्ठी जहा पण्णवणाए पढमए आहारउद्देसए तथा भाणियव्वं। ठिति उस्सासाहारे किं वा ऽऽहारेंति सव्वओ वा वि। कतिभागं सव्वाणि व कीस व भुज्जो परिणमंति ? ॥२॥ (१.४) नेरतियाणं भंते ! पुव्वाहारिता पोग्गला परिणता १ ? आहारिता आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणता २ ? अणाहारिता आहारिज्जिस्समाणा पोग्गला परिणया ३ ? अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोग्गला परिणया ४ ? गोयमा ! नेरतियाणं पुव्वाहारिता पोग्गला परिणता १, आहारिता आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणता परिणमंति य २, अणाहारिता आहारिज्जिस्समाणा पोग्गला नो परिणता, परिणमिस्संति ३, अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोग्गला नो परिणता, नो परिणमिस्संति४। (१.५) नेरइयाणं भंते ! पुव्वाहारिया पोग्गला चिता० पुच्छा। जहा

સૌજન્ય :- માતૃશ્રી રતનબેન કાનજી ખીમજી શાહ પરિવારહ. બીકેશકુમાર, બીન્દુબેન, શાંતિલાલ, સુકેશીબેન અંકુર અને રીષભ-રાયણ(કચ્છ)

परिणया तहा चिया वि। एवं उवचिता, उदीरिता, वदिता, निज्जिण्णा। गाहा-- परिणत चिता उवचिता उदीरिता वेदिया य निज्जिण्णा। एक्केक्कम्मि पदम्मी चउव्विहा पोग्गला होंति ॥३॥ (१.६) नेरइयाणं भंते ! कतिविहा पोग्गला भिज्जंति ? गोयमा ! कम्मदव्ववग्गणंअहिकिच्च दुविहा पोग्गला भिज्जंति। तं जहा अणू चेव, बादरा चेव १। नेरइयाणं भंते ! कतिविहा पोग्गला चिज्जंति ? गोयमा ! आहारदव्ववग्गणं अहिकिच्च दुविहा पोग्गला चिज्जंति। तं जहा अणू चेव बादरा चेव २। एवं उवचिज्जंति ३। नेरइया णं भंते ! कतिविहे पोग्गले उदीरेंति ? गोयमा ! कम्मदव्ववग्गणं अहिकिच्च दुविहे पोग्गले उदीरेंति। तं जहा अणू चेव बादरे चेव ४। एवं वेदेंति ५। निज्जरेंति ६। ओयट्टिंसु ७। ओयट्टेंति ८। ओयट्टिस्संति ९। संकामिंसु १०। संकामेंति ११। संकामिस्संति १२। निहत्तिसु १३। निहत्तेंति १४। निहत्तिस्संति १५। निकायंसु १६। निकाएंति १७। निकाइस्संति १८। सव्वेसु वि कम्मदव्वग्गणमहिकिच्च। गाहा भेदित चिता उवचिता उदीरिता वेदिया य निज्जिण्णा। ओयट्टण -संकामण -निहत्तण -निकायणे तिविहे कालो ॥४॥ (१.७) नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले तेयाकम्मत्ताए गेण्हंति ते किं तीतकालसमए गेण्हंति ? पडुप्पन्नकालसमए गेण्हंति ? अणागतकालसमए गेण्हंति ? गोयमा ! नो तीतकालसमए गेण्हंति, पडुप्पन्नकालसमए गेण्हंति, नो अणागतकालसमए गेण्हंति १। (१.८) नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले तेयाकम्मत्ताए गहिए उदीरेंति ते किं तीतकालसमयगहिते पोग्गले उदीरेंति ? पडुप्पन्नकालसमयघेप्पमाणे पोग्गले उदीरेंति ? गहणसमयपुरेक्खडे पोग्गले उदीरेंति ? गोयमा ! तीयकालसमयगहिए पोग्गले उदरेंति, नो पडुप्पन्नकालसमयघेप्पमाणे पोग्गले उदीरेंति, नो गहणसमयपुरेक्खडे पोग्गले उदीरेंति २। एवं वेदेंति ३, निज्जरेंति ४। (१.९) नेरइया णं भंते ! जीवातो किं चलियं कम्मं बंधंति ? अचलियं कम्मं बंधंति ? गोयमा ! नो चलियं कम्मं बंधंति, अचलितं कम्मं बंधंति १। एवं उदीरेंति २ वेदेंति ३ ओयट्टेंति ४ संकामेंति ५ निहत्तेंति ६ निकाएंति ७। सव्वेसु णो चलियं, अचलियं। (१.१०) नेरइयाणं भंते ! जीवातो किं चलियं कम्मं निज्जरेंति अचलियं कम्मं निज्जरेंति ? गोयमा ! चलियं कम्मं निज्जरेंति, नो अचलियं कम्मं निज्जरेंति ८। गाहा बंधोदय-वेदोव्वट्ट-संकमे तह निहत्तण -निकाए। अचलियं कम्मं तु भवे चलितं जीवाउ निज्जरए ॥५॥ (२.१) असुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं। (२.२) असुरकुमारा णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा ४ ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्तण्हं थोवाणं उक्कोसेणं साइरेगस्स पक्खस्स आणमंति वा ४। (२.३) असुरकुमाराणं भंते ! आहारट्ठी ? हंता, आहारट्ठी ? (२.४) असुरकुमाराणं भंते ! केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! असुरकुमाराणं दुविहे आहारे पण्णत्ते। तं जहा आभोगनिव्वत्तिए य, अणाभोगनिव्वत्तिए य। तत्थ णं जे से अणाभोगनिव्वत्तिए से अणुसमयं अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ। तत्थ णं जे से आभोगनिव्वत्तिए से जहन्नेणं चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेणं साइरेगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ। (२.५) असुरकुमारा णं भंते ! किं आहारं आहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणंतपएसियाइं दव्वाइं, खित्त-काल-भावा पण्णवणागमेणं। सेसं जहा नेरइयाणं जाव ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! सोइंदियत्ताए ५ सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए इट्ठत्ताए इच्छियत्ताए अभिज्झियत्ताए, उड्ढत्ताए, णो अहत्ताए, सुहत्ताए, णो दुहत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति। (२.६) असुरकुमाराणं पुव्वाहारिया पुग्गला परिणया ? असुरकुमाराभिलावेणं जहा नेरइयाणं जाव चलियं कम्मं निज्जरंति। (३.१) नागकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं। (३.२) नागकुमारा णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा ४ ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं मुहुत्तपुहत्तस्स आणमंति वा ४। (३.३) नागकुमारा णं भंते ! आहारट्ठी ? हंता, गोयमा ! आहारट्ठी। (३.४) नागकुमाराणं भंते ! केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! नागकुमाराणं दुविहे आहारे पण्णत्ते। तं जहा आभोगनिव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए य। तत्थ णं जे से अणाभोगनिव्वत्तिए से अणुसमयं अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ, तत्थ णं जे से आभोगनिव्वत्तिए से जहन्नेणं चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेणं दिवसपुहत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ। सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव चलियं कम्मं निज्जरेंति, नो अचलियं कम्मं निज्जरेंति। (४-११) एवं सुवण्णकुमाराण वि जाव थणियकुमाराणं ति। (१२.१) पुढविक्काइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणंअंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं

Jain Education International 2010_02 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बावीसं वाससहस्साइं। (१२.२) पुढविक्काइया केवइकालस्स आणमंति वा ४ ? गोयमा ! वेमायाए आणमंति वा ४। (१२.३) पुढविक्काइया आहारट्ठी ? हंता, आहारट्ठी। (१२.४) पुढविक्काइयाणं केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! अणुसमयं अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ। (१२.५) पुढविक्काइया किं आहारं आहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ जहा नेरइयाणं जाव निव्वाघाएणं छद्दिसिं; वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउद्दिसिं सिय पंचदिसिं। वण्णओ काल-नील-लोहित-हालिद्द-सुक्किलाणि। गंधओ सुब्भिगंध २, रसओ तित्त ५, फासओ कक्खड ८। सेसं तहेव। नाणत्तंकतिभागं आहारेंति ? कइभागं फासादेंति ? गोयमा ! असंखिज्जइभागं आहारेंति, अणंतभागं फासादेंति जाव ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणामंति ? गोयमा ! फासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति। सेसं जहा नेरइयाणं जाव चलियं कम्मं निज्जरेंति, नो अचलियं कम्मं निज्जरेंति। (१३-१६) एवं जाव वणस्सइकाइयाणं। नवरं ठिती वण्णेयव्वा जा जस्स, उस्सासो वेमायाए। (१७.१) बेइंदियाणं ठिई भाणियव्वा। ऊसासो वेमायाए। (१७.२) बेइंदियाणं आहारे पुच्छा। अणाभोगनिव्वत्तिओ तहेव। तत्थ णं जे से आभोगनिव्वत्तिए से णं असंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारट्ठे समुप्पइ। सेसं तहेव जाव अणंतभागं आसायंति। (१७.३) बेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते किं सव्वे आहारेंति ? नो सव्वे आहारेंति गोयमा ! बेइंदियाणं दुविहे आहारे पण्णत्ते। तं जहा लोमाहारे पक्खेवाहारे य। जे पोग्गले लोमाहारत्ताए गिण्हंति ते सव्वे अपरिसेसिए आहारेंति जे पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हंति तेसिं णं पोग्गलाणं असंखिज्जभागं आहारेंति, अणेगाइं चणं भागसहस्साइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमागच्छंति। (१७.४) एतिसिं णं भंते ! पोग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला अणासाइज्जमाणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा। (१७.५) बेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गिण्हंति ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंती ? गोयमा ! जिब्भिंदिय-फासिंदिय- वेमायत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति। (१७.६) बेइंदियाणं भंते ! पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया तहेव जाव चलियं कम्मं निज्जरंति। (१८-१९.१) तेइंदिय-चउरिंदियाणं णाणत्तं ठितीए जाव णेगाइं च णं भागसहस्साइं अणाघाइज्जमाणाइं अणासाइज्जमाणाइं अफासज्जमाणाइं विद्धंसमागच्छंति। (१८-१९.२) एतेसिं णं भंते ! पोग्गलाणं अणाघाइज्जमाणाणं ३, ० पुच्छा। गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला अणाघाइज्जमाणा, अणासाइज्जमाणा अणंतगुणा, अफासाइज्जमाणं अणंतगुणा। (१८.३) तेइंदियाणं घाणिंदिय -जिब्भिंदिय -फासिंदियत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति। (१९.३) चउरिंदियाणं चक्खिंदिय - घाणिंदिय - जिब्भिंदिय - फासिंदियत्ताअे भुज्जो भुज्जो परिणयंति। (२०) पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं ठितिं भाणिऊण ऊसासो वेमायाए। आहारो अणाभोगनिव्वत्तिओ अणुसमयं अविरहिओ। आभोगनिव्वत्तिओ जहन्नेणं अंतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स। सेसं जहा चउरिंदियाणं जाव चलियं कम्मं निज्जरेंति। (२१) एवं मणुस्साण वि। नवरं आभोगनिव्वत्तिए जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स। सोइंदिय ५ वेमायत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति। सेसं तहेव जाव निज्जरेंति। (२२) वाणमंतराणं ठिईए नाणत्तं। अवसेसं जहा नागकुमाराणं (सु. ६ (३)। (२३) एवं जोइसियाण वि। नवरं उस्सासो जहन्नेणं मुहुत्तपुहत्तस्स, उक्कोसेण वि मुहुत्तपुहत्तस्स। आहारो जहन्नेणं दिवसपुहत्तस्स, उक्कोसेणं वि दिवसपुहत्तस्स। सेसं तहेव। (२४) वेमाणियाणं ठिती भाणियव्वा ओहिया। ऊसासो मुहुत्तपुहत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं। आहारो आभोगनिव्वत्तिओ जहन्नेणं दिवसापुहत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए वाससहस्साणं। सेसं तहेव जाव निज्जरेंति। [सु. ७ जीवेसु आरंभपरूवणा] ७ (१) जीवा णं भंते ! किं आयारंभा ? परारंभा ? तदुभयारंभा ? अणारंभा ? गोयमा ! अत्थेगइया जीवा आतारंभा वि, परारंभा वि, तदुभयारंभा वि, नो अणारंभा। अत्थेगइया जीवा नो आयारंभा, नो परारंभा, नो तदुभयारंभा, अणारंभा। २ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति- अत्थेगइया जीवा आयारंभा वि ? एवं पडिउच्चरितव्वं। गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता। तं जहा संसारसमावन्नगा य असंसारसमावन्नगा य। तत्थ णं जे ते असंसारसमावन्नगा ते णं सिद्धा, सिद्धा णं नो आयारंभा जाव अणारंभा। तत्थ णं जे ते संसारसमावन्ना ते दुविहा पण्णत्ता। तं जहा संजता य, असंजता य। तत्थ णं जे ते (२) संजता ते दुविहा पण्णता। तं जहा-पमत्तसंजताय, अपमत्तसंजताय। तत्थ णं जे ते अप्पमत्तसंजता ते णं नो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आयारंभा, नो परारंभा, जाव अणारंभा। तत्थ णं जे ते पमत्तसंजया ते सुभं जोगं पडुच्च नो आयारंभा जाव अणारंभा। (३) असुभं जोगं पडुच्च आयारंभा वि जाव नो अणारंभा तत्थ णं जे ते असंजता ते अविरतिं पडुच्च आयारंभा वि जाव नो अणारंभा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-अत्थेगइया जीवा जाव अणारंभा। [सु. ८ चउवीसदंडकेसु आरंभपरूवणा] ८. (१) नेरइया णं भंते ! किं आयारंभा ? परारंभा ? तदुभयारंभा ? अणारंभा ? गोयमा ! नेरइया आयारंभा वि जाव नो अणारंभा। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेणं जाव नो अणारंभा। (२-२०) एवं जाव असुरकुमारा वि, जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया। (२१) मणुस्सा जधा जीवा। नवरं सिद्धविरहिता भाणियव्वा। (२२-२४) वाणमंतरा जाव वेमाणिया जधा नेरतिया। [सु. ९ सलेसेसु जीवेसु आरंभपरूवणा] ९. (१) सलेसा जधा ओहिया (सु.७)। (२) किण्हलेस- नीललेस -काउलेसा जहा ओहिया जीवा, नवरं पमत्तअप्पमत्ता न भाणियव्वा। तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा जधा ओहिया जीवा (सु.७), नवरं सिद्धा न भाणितव्वा। [सु. १०. भवं पडूच्च णाणाइपरूवणा] १०. (१) इहभविए भंते ! नाणे ? परभविए नाणे ? तदुभयभविए नाणे ? गोयमा ! इहभविए वि नाणे, परभविए वि नाणे, तदुभयभविए वि नाणे। (२) दंसणं पि एवमेव। ३ इहभविए भंते ! चरित्ते ? परभविए चरित्ते ? तदुभयभविए जरित्ते ? गोयमा ! इहभविए चरित्ते, नो परभविए चरित्ते, नो तदुभयभविए चरित्ते। (४) एवं तवे, संजमे। [सु. ११. असंवुड-संवुडसिज्झणावियारो] ११. (१) असंवुडे णं भंते ! अणगारे किं सिज्झति ? बुज्झिति ? मुच्चति ? परिनिव्वाति ? सव्वदुक्खाणमंतं करेति ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं जाव नो अंतं करेइ ? गोयमा ! असंवुडे अणागारे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ (४) सिढिलबंधणबद्धाओ घणियबंधणबद्धाओ पकरेंति ह्वस्सकालट्ठितायाओ दीहकालट्ठितीयाओ पकरेति, मंदाणुभागाओ तिव्वाणुभागाओ पकरेति, अप्पपदेसग्गाओ बहुप्पदेसग्गाओ पकरेति, आउगं च णं कम्मं सिय बंधति, सिय नो बंधति, अस्सातावेदणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो भुज्जो उवचिणाति, अणादीयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! असंवुडे अणागारे नो सिज्झति ५। (२) संवुडे णं भंते ! अणागारे सिज्झति ५ ? हंता, सिज्झति जाव अंतं करेति। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! संवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेति, दीहकालट्ठितीयाओ ह्वस्सकालट्ठितीयाओ पकरेति, तिव्वाणुभागाओ मंदाणुभागाओ पकरेति, बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेति, आउयं च णं कम्मं न बंधति, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाति, अणाईयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीतीवयति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ -संवुडे अणगारे सिज्झति जाव अंतं करेति। [सु. १२. असंजतजीवदेवगइवियारो, वाणमंतरदेवलोगसरूवं च] १२. (१) जीवे णं भंते ! असंजते अविरते अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे इतो चुए पेच्चा देवे सिया ? गोयमा ! अत्थेगइए देवे सिया। अन्थेगइए नो देवे सिया से केणट्ठेणं जाव इतो चुए पेच्चा अत्थेगइए देवे सिया, अत्थेगइए नो देवे सिया ? गोयमा ! जे इमे जीवा गामाऽऽगर-नगर-निगम -रायहाणि-खेड -कब्बड -मंडब -दोणमुह -पट्टणाऽऽसम -सन्निवेसेसु अकामतण्हाए अकामछुहाए अकामबंभचेरवासेणं अकामअण्हाणगसेय -जल्ल -मल -पंकपरिदाहेणं अप्पतरो वा भुज्जतरो वा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति, अप्पाणं परिकिलेसइत्ता कालमासे कालंकिच्चा अन्नतरेसु वाणमंतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। (२) केरिसा णं भंते ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहानामए इहं असोगवणे इ वा, सत्तवण्णवणे इ वा, चंपगवणे इ वा, चूतवणे इ वा, तिलगवणे इ वा, लउयवणे ति वा, णिग्गोहवणे इ वा, छत्तोववणे इ वा, असणवणे इ वा, सणवणे इ वा, अयसिवणे इ वा, कुसुभंवणे इ वा, सिद्धत्थवणे इ वा, बंधुजीवगवणे इ वा णिच्चं कुसुमितमाइतलवइतथइयगुलुइतगुच्छितजमलितजुवलितविणमित-पणमितसुविभत्तपिंडिमंजरिवडेंसगधरे सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठति, एवामेव तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएहिं उक्कोसेणं पलिओवमट्ठित्तीएहिं बहूहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं य देवीहि य आइण्णा वितिकिण्णा उवत्थडा संथाडा फुडा अवगाढगाढसिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणा चिट्ठंति। एरिसगा णं गोतमा ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता। से तेणट्ठेणं गोतमा ! एवं वुच्चति -जीवे णं अस्संजए जाव देवे सिया। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोतमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहरति। ☆ ☆ ☆ ॥ पढमे सते पढमो उद्देसो ॥ ☆ ☆ ☆ बितिओ उद्देसो 'दुक्खे' ☆ ☆ ☆ [सु. १. उवक्कमो] १. रायगिहे नगरे समोसरणं। परिसा निग्गता जाव एवं वंदासी [सु. २-३. जीवं पडुच्च एगत्त-पुहत्तेणं दुक्खवेदणपरूवणं] २. जीवे णं भंते ! सयंकडं दुक्खं वेदेति ? गोयमा ! अत्थेगइयं वेदेति, अत्थेगइयं नो वेदेति ? गोयमा ! उदिण्णं वेदेति, अणुदिण्णं नो वेदेति, से तेणट्ठेणं एवं वुच्चति अत्थेगइयं वेदेति, अत्थेगइयं नो वेदेति। एवं चउव्वीसदंडएणं जाव वेमाणिए। (३). जीवा णं भंते सयंकडं दुक्खं वेदेंति ? गोयमा ! अत्थेगइयं वेदेंति, अत्थेगइयं णो वेदेंति। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! उदिण्णं वेदेंति, नो अणुदिण्णं वेदेंति, से तेणट्ठणं एवं जाव वेमाणिया। [सु. ४. जीवं पडुच्च एगत्त-पुडुत्तेणं आउयवेदेणपरूवणं] ४. जीवे णं भंते ! सयंकडं आउयं वेदेति ? गोयमा ! अत्थेगइयं वेदेति० जधा दुक्खेणं दो दंडगा तहा आउएण वि दो दंडगा एगत्त-पोहत्तिया; एगत्तेणं जाव वेमाणिया, पुहत्तेण वि तहेव। [सु. ५-११. चउवीसदंडएसु समाहाराइसत्तदारपरूवणं] ५. (१) नेरइयाण भंते ! सव्वे समाहारा, सव्वे समसरीरा, सव्वे समुस्सा-नीसासा ? गोयमा ! नो इमट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति -नेरइया नो सव्वे समाहारा, नो सव्वे समसरीरा, नो सव्वे समुस्सास -निस्सासा ? गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता। तं जहा महासरीरा य अप्पसरीरा य। तत्थ णं जे ते महासरीरा ते (१) बहुतराए पोग्गले आहारेति बहुतराए पोग्गले परिणामेंति बहुतराए पोग्गले उस्ससंति बहुतराए पोग्गले नीससंति, अभिक्खणं आहारेंति, अभिक्खणं परिणामेंति, अभिक्खणं ऊससंति, अभिक्खणं निस्ससंति। तत्थ णं जे ते अप्पसरीरा ते णं अप्पतराए पोग्गले (२) आहारेंति अप्पतराए पुग्गले परिणामेंति अप्पराए पोग्गले उस्ससंति अप्पतराए पोग्गले। नीससंति, आहच्च आहारेंति, आहच्च परिणामेंति, आहच्च उस्ससंति, आहच्च नीससंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ- नेरइया नो सव्वे समाहारा जाव नो सव्वे समुस्सास -निस्सासा ॥१। २ नेरइया णं भंते ! सव्वे समकम्मा ? गोयमा ! णो इमट्ठे समट्ठे। से केणट्ठणं ? गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता। तं जहा पुव्वोववन्नगा य पच्छोववन्नगा य। तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं अप्पकम्मतरागा। तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं महाकम्मतरागा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! ० ।२। ३ नेरइया णं भंते ! सव्वे समवण्णा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं तहा चेव ? गोयमा ! जे ते पुव्ववन्नगा ते णं विसुद्धवण्णतरागा तहेव से तेणट्ठणं ० ।३। ४ नेरइया णं भंते ! सव्वे समलेसा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं जाव नोसव्वे समलेसा ? गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता। तं जहा पुव्वोववन्नगा य पच्छोववन्नगा य। तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं विसुद्धलेसतरागा। (३) तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं अविसुद्धलेसतरागा। से तेणट्ठेणं ० ।४। ५ नेरइया णं भंते ! सव्वे समवेदणा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता। तं जहा सण्णिभूया य असण्णभूया य। तत्थ णं जे ते सण्णिभूया ते णं महावेयणा, तत्थ णं जे ते असण्णिभूया ते णं अप्पवेयणतरागा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! ० ।५। ६ नेरइया णं भंते ! सव्वे समकिरिया ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! नेरइया तिविहा पण्णत्ता। तं जहा सम्मद्दिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छद्दिट्ठी। तत्थ णं जे ते सम्मादिट्ठी तेसि णं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा आरंभिया १ पारिग्गहिया २ मायावत्तिया ३ अपच्चक्खाणकिरिया ४। तत्थ णं जे ते मिच्छादिट्ठी तेसि णं पंच किरियाओ कज्जंति, तं जहा आरंभिया जाव मिच्छादंसणवतिया एवंसम्मामिच्छादिट्ठिणं पि। से तेणट्ठेणं गोयमा ! ० ।६। ७ नेरइया णं भंते ! सव्वे समाउया ? सव्वे समोववन्नगा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! नेरइया चउव्विहा पण्णत्ता तं जहा अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा १, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा २, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा ३, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा४। से तेणट्ठेणं गोयमा ! ० ।७। ६. (१) असुरकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समसरीरा ? जधा नेरइया तधा भाणियव्वा। नवरं कम्म -वण्ण -लेसाओ परित्थिल्लेयव्वाओ -पुव्वोववन्नगा महाकम्मतरागा, अविसुद्धवण्णतरागा, अविसुद्धलेसतरागा। पच्छोववन्नगा पसत्था। सेसं तहेव। (२) एवं जाव थणियकुमारा। ७. (१) पुढविक्काइयाणं आहार -कम्म -वण्ण -लेस्सा जहा नेरइयाणं। (२) पुढविक्काइया णं भंते ! सव्वे समवेदणा ? हंता, समवेयणा। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे असण्णी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असण्णिभूतं अणिदाए वेयणं वेदेंति । से तेणट्ठेणं ०। (३) पुढविक्काइया णं भंते ! समकिरिया ? हंता, समकिरिया । से केणट्ठेणं गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे माईमिच्छदिट्ठी, ताणं नेयतियाओ पंच किरियाओ कज्जंति, तं जहा आरंभिया १ जाव मिच्छदंसणवत्तिया ५ । से तेणट्ठेणं० समकिरिया । (४) समाउया, समोववन्नगा जधा नेरइया तधा भाणियव्वा । ८. जधा पुढविक्काइया तधा जाव चउरिंदिया । ९. (१) पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया । नाणत्तं किरियासु २ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! सव्वे समकिरिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिय तिविधा पण्णत्ता । तं जहा सम्मद्दिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठि ! तत्थ णं जे ते सम्मद्दिट्ठी ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा अस्संजता य, संजताऽसंजता य । तत्थ णं जे ते संजताऽसंजता तेसि णं तिन्नि किरियाओ कज्जंति, तं जहा आरंभिया १ पारिग्गहिया २ मायावत्तिया ३ । असंजताणं चत्तारि । मिच्छादिट्ठीणं पंच । सम्मामिच्छादिट्ठीणं पंच । १०. (१) मणुस्सा जहा नेरइया (सु.५) नाणत्तं- जे महासरीरा ते आहच्च आहारेंति । जे अप्पसरीरा ते अभिक्खणं आहारेंति ४ । सेसं जहा नेरइयाणं जाव वेयणा । (२) मणुस्सा णं भंते ! सव्वे समकिरिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता । तं जहा सम्मद्दिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी । तत्थ णं जे ते सम्मद्दिट्ठी ते तिविधा पण्णत्ता, तं जहा संजता अस्संजता संजतासंजता य । तत्थ णं जे ते संजता ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा सरागसंजता य वीतरागसंजता य । तत्थ णं जे ते वीतरागसंजता ते णं अकिरिया । तत्थ णं जे ते सरागसंजता ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा पमत्तसंजता य अपमत्तसंजता य । तत्थ णं जे ते पमत्तसंजता तेसि णं एगा मायावत्तिया किरिया कज्जति । तत्थ णं जे ते पमत्तसंजता तेसि णं दो किरियाओ कज्जंति, तं० आरंभिया य १ मायावत्तिया य२ । तत्थ णं जे ते संजतासंजता तेसि णं आइल्लाओ तिन्नि किरियाओ कज्जंति । अस्संजताणं चत्तारि किरियाओ कज्जंति आरं० ४ । मिच्छादिट्ठिणं पंच । सम्मामिच्छादिट्ठीणं पंच ५ । ११. वाणमंतर -जोतिस -वेमाणिया जहा असुरकुमारा (सु. ६) । नवरं वेयणाए नाणत्तं-मायामिच्छादिट्ठीउववन्नगा य अप्पवेदणतरा, अमायिसम्मद्दिट्ठीउववन्नगा य महावेयणतरागा भाणिय जोतिस-वेमाणिया । [सु. १२. चउवीसदंडएसु लेसं पडुच्च समाहाराइसत्तदारपरूवणं] १२. सलेसा णं भंते ! नेरइया सव्वे समाहारगा ? ओहियाणं, सलेसाणं, सुक्कलेसाणं, एएसि णं तिण्हं एक्को गमो । कण्हलेस-नीललेसाणं पि एक्को गमो, नवरं वेदणाए - मायिमिच्छादिट्ठीउववन्नगा य, अमायिसम्मद्दिट्ठीउववण्णगा य भाणियव्वा । मणुस्सा किरियासु सराग-वीयराग -पमत्तापमत्ता ण भाणियव्वा । काउलेसाण वि एसेव गमो, नवरं नेरइए जहा ओहिए दंडए तहा भाणियव्वा । तेउलेसा पम्हलेसा जस्स अत्थि जहा ओहिओ दंडओ तहा भाणियव्वा, नवरं मणुस्सा सरागा वीयरागा य न भाणियव्वा । गाहा दुक्खाऽऽउए उदिण्णे, आहारे, कम्म-वण्ण-लेस्सा य । समवेदण समकिरिया समाउए चेव बोद्धव्व ॥१॥ [सु. १३. लेसाभेयपरूवणं] १३. कति णं भंते ! लेसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा छल्लेसाओ पण्णत्ताओ । तं जहा लेसाणं बीओ उद्देसओ भाणियव्वो जाव इड्ढी [सु. १४-१७. जीवाईणं संसारसंचिट्ठणकालस्स भेय -पभेया अप्पाबहुयं च] १४. जीवस्स णं भंते ! तीतद्धाए आदिट्ठस्स कइविहे संसारसंचिट्ठणकाले पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे संसारसंचिट्ठणकाले पण्णत्ते । तं जहा णेरइयासंसारसंचिट्ठणकाले, तिरिक्खजोणियसंसारसंचिट्ठणकाले, मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले, देवसंसारसंचिट्ठणकाले य पण्णत्ते । १५. (१) नेरइयसंसारसंचिट्ठणकाले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते । तं जहा सुन्नकाले, असुन्नकाले मिस्सकाले । २ तिरिक्खजोणियसंसारसंचिट्ठणकाले पुच्छा । गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते । तं जहा असुन्नकाले य मिस्सकाले य । ३ मणुस्साण य, देवाण य जहा नेरइयाणं । १६. (१) एयस्स णं भंते ! नेरइयसंसारसंचिट्ठणकालस्स सुन्नकालस्स असुन्नकालस्स मीसकालस्स य कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा, बहुए वा तुल्ले वा, विसेसाहिए वा, गोयमा ! सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणंतगुणे, सुन्नकाले अणंतगुणे । २ तिरिक्खजोणियाणं सव्वत्थोवे असुन्नकाले मिस्सकाले अणंतगुणे । ३ मणुस्स-देवाण य जहा नेरइयाणं । १७. एयस्स णं भंते ! नेरइयसंसारसंचिट्ठणकालस्स जाव देवसंसारसंचिट्ठण जाव विसेसाधिए वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले नेरइयसंसारसंचिट्ठणकाले असंखेज्जगुणे, देवसंसारसंचिट्ठणकाले असंखेज्जगुणे तिरिक्खजोणियसंसारसंचिट्ठणकाले अणंतगुणे ।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[सु. १८. अंतकिरियाकारगरिइनिरूवणं] १८. जीवे णं भंते ! अंतकिरियं करेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए करेज्जा, अत्थेगतिए नो करेज्जा। अंतकिरियापदं नेयव्वं। [सु. १९. असंजयभवियदव्वदेवपभिइ-दंसणवावन्नगपज्जंताणं पिहप्पिहदेवलोगपरूवणं] १९. अह भंते ! असंजयभवियदव्वदेवाणं १, अविराहियसंजमाणं २, विराहियसंजमाणं ३, अविराहियसंजमासंजमाणं ४, विराहियसंजमासंजमाणं ५, असण्णीणं ६, तावसाणं ७, कंदप्पियाणं ८, चरगपरिव्वयगाणं ९, किव्विसियाणं १०, तेरिच्छियाणं ११, आजीवियाणं १२, आभिओगियाणं १३, सलिंगीणं दंसणवावन्नगाणं १४, एएसि णं देवलोगेसु उववज्जमाणाणं कस्स कहिं उववाए पण्णत्ते ? गोयमा ! अस्संजतभवियदव्वदेवाणं जहन्नेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं उवरिमगेविज्जएसु १। अविराहियऽसंजमाणं जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धेविमाणे २। विराहियसंजमाणं जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं सोधम्मे कप्पे ३। अविराहिय संजमाऽसंजमाणं जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे ४। विराहियसंजमाणं जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं जोतिसिएसु ५। असण्णीणं जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं वाणमंतरेसु ६। अवसेसा सव्वे जहन्नेणं भवणवासीसु; उक्कोसग वोच्छामि- तावसाणं जोतिसिएसु ७। कंदप्पियाणं सोहम्मे कप्प। चरग-परिव्वायगाणं बंभलोए कप्पे ९। किव्विसियाणं लंतगे कप्पे १०। तेरिच्छियाणं सहस्सारे कप्पे ११। आजीवियाणं अच्चुए कप्पे १२। आभिओगियाणं अच्चुए कप्पे १३। सलिंगीणं दंसणवावन्नगाणं उवरिमगेवेज्जएसु १४। [सु. २०-२२. असण्णिआउस्स भेया, असण्णिजीवस्साउयबंधवियारो, असण्णिआउयस्स अप्पाबहुयं च] २०. कतिविहे णं भंते ! असण्णियाउए पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे असण्णिआउए पण्णत्ते। तं जहा नेरइय-असण्णियाउए १, तिरिक्खजोणियअसण्णियाउए २, मणुस्सअसण्णियाउए ३, देवअसण्णियाउए ४। २१. असण्णी णं भंते ! जीवे किं नेरइयाउयं पकरेति, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेइ, मणुस्साउयं पकरेइ, देवाउयं पकरेइ ? हंता, गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेइ, मणुस्साउयं पि पकरेइ, देवाउयं पि पकरेइ। नेरइयाउयं पकरेमाणे जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेइ। मणुस्साउए वि एवं चेव। देवाउयं पकरेमाणे जहा नेरइया। २२. एयस्स णं भंते ! नेरइयअसण्णियाउयस्स तिरिक्खजोणियअसण्णिआउयस्स मणुस्सअसण्णिआउयस्स देवअसण्णिआउयस्स य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिए वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे देवअसण्णिआउए, मणुस्सअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे, तिरियजोणियअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे, नेरइयअसण्णिमाउये असंखेज्जगुणे। सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति॥ ☆ ☆ ☆ ॥ **बितिओ उद्देसओ समत्तो** ॥ ☆ ☆ ☆ **तइओ उद्देसो 'कंखपओसे'** ☆☆☆ [सु. १-२. जीव-चउवीसदंडएसु कंखामोहणिज्जकम्मस्स किरियानिप्फन्नत्तपरूवणं] १. (१) जीवाणं भंते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ? हंता कडे। २ से भंते ! किं देसेणं देसे कडे १ ?, देसेणं सव्वे कडे २ ?, सव्वेणं देसे कडे ३ ?, सव्वेणं सव्वे कडे ४ ?। गोयमा ! नो देसेणं देसे कडे १, नो देसेणं सव्वे कडे २, नो सव्वेणं देसे कडे ३, सव्वेणं सव्वे कडे ४। २. (१) नेरइयाणं भंते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ? हंता कडे जाव सव्वेणं सव्वे कडे ४। २ एवं जाव वेमाणियाणं दंडओ भाणियव्वो। [सु. ३ कंखामोहणिज्जकम्मस्स करण- चयणाइरूवो तिकालविसयो वियारो] ३. १ जीवा णं भंते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं करिंसु ? हंता, करिंसु। २ तं भंते ! किं देसेणं देसं करिंसु ? एतेणं अभिलावेणं दंडओ जाव वेमाणियाणं। ३ एवं करेंति। एत्थ वि दंडओ जाव वेमिणियाणं। ४ एवं करेस्संति। एत्थ वि दंडओ जाव वेमाणियाणं। ५ एवं चिते - चिणिंसु, चिणंति, चिणिस्संति। उवचिते-उवचिणिंसु, उवचिणंति, उवचिणिस्संति। उदीरेंसु, उदीरेंति, उदीरिस्संति। वेदिंसु, वेदेंति, वेदिस्संति। निज्जरेंसु, निज्जरेंति, निज्जरिस्संति। गाधा कड चित, उवचित, उदीरिया, वेदिया य, निज्जण्णा। आदितिए चउभेदा पच्छिमा तिण्णि ॥१॥ [सु. ४-५. कंखामोहणिज्जकम्मवेदणकारणाणि] ४. जीवा णं भंते ! जीवा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ? हंता, वेदेंति। ५. कहं णं भंते ! जीवा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ? गोयमा ! तेहिं तेहिं कारणेहिं संकिगा कंखिगा वितिकिंछिता भेदसमावन्ना कलुससमावन्ना, एवं खलु जीवा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति। [सु. ६. आहारगसरूवं] ६. (१) से नूणं भंते ! तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेदितं ? हंता, गोयमा ! तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेदितं। २ से नूणं भंते ! एवं मणं धारेमाणे, एवं पकरेमाणे एवं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिट्ठेमाणे, एवं सवरेमाणे आणाए आराहए भवति ? हंता, गोयमा ! एवं मण धारेमाणे जाव भवति। [सु. ७. अत्थित्तनत्थित्तपरिणामो] ७. (१) से नूणं भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमति ? हंता, गोयमा ! जाव परिणमति। (२) जं तं भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमति तं किं पयोगसा वीससा ? गोयमा ! पयोगसा वि तं, वीससा वि तं। (३) जहा ते भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ तधा ते नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमति ? जहा ते नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमति तहा ते अत्थित्तं अत्थित्तेपरिणमति ? हंता, गोयमा ! जहा मे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमति तहा मे नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमति, जहा मे नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमति तहा मे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमति। (४) से णूणं भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं ? जधा परिणमइ दो आलावगा तधा गमणिज्जेण वि दो आलावगा भाणितव्वा जाव तधा मे अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं। (५) जहा ते भंते ! एत्थं गमणिज्जं तधा ते इहं गमणिज्जं ? जधा ते इहं गमणिज्जं तधा ते एत्थं गमणिज्जं ? हंता, गोयमा ! जहा मे एत्थं गमणिज्जं जाव तहा मे एत्थं गमणिज्जं। [सु. ८-९. कंखामोहणिज्जकम्मबंधहेउपरूवणं] ८. जीवा णं भंते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं बंधंति ? हंता, बंधंति। ९. (१) कहं णं भंते ! जीवा कंखामोहणिज्जं कम्मं बंधंति ? गोयमा ! पमादपच्चया जोगनिमित्तं च। (२) से णं भंते ! पमादे किंपवहे ? गोयमा ! जोगप्पवहे। (३) से णं भंते ! जोगे किंपवहे ? गोयमा ! वीरियप्पवहे। (४) से णं भंते ! वीरिए किंपवहे ? गोयमा ! सरीरप्पवहे। (५) से णं भंते ! सरीरे किंपवहे ? गोयमा ! जीवप्पवहे। एवं सति अत्थि उट्ठाणे ति वा, कम्मे ति वा बले ति वा, वीरए ति वा, पुरिसक्कारपरक्कमे ति वा। [सु. १०-११. कंखामोहणिज्जस्स उदीरणा-उवसामणाइ] १०. (१) से णूणं भंते ! अप्पणा चेव उदीरेइ, अप्पणा चेव गरहइ, अप्पणा चेव संवरेइ ? हंता, गोयमा ! चेव तं चेव उच्चारेयव्वं ३। (२) जं तं भंते ! अप्पणा चेव उदीरेइ अप्पणा चेव गरहेइ, अप्पणा चेव संवरेइ तं किं उदिण्णं उदीरेइ १ अणुदिण्णं उदीरेइ २ अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेइ ३ उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं उदीरेइ ४ ? गोयमा ! नो उदिण्णं उदीरेइ १, नो अणुदिण्णं उदीरेइ २, अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेइ ३, णो उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं उदीरेइ ४। (३) जं तं भंते ! अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेइ तं किं उट्ठाण;णं कम्मेणं बलेण वीरिएणं पुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिण्णं उदीरिणाभवियं कम्मं उदीरेइ ? उदाहु तं अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं अपुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेइ ? गोयमा ! तं उट्ठाणेण वि कम्मेण वि बलेण वि वीरिएण वि पुरिसक्कारपरक्कमेण वि अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेइ, णो तं अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं अपुरिसक्कारपरक्केणं अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेइ। एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा कम्मेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा। ११. (१) से नूणं भंते ! अप्पणा चेव उवसामेइ, अप्पणा चेव गरहइ, अप्पणा चेव संवरेइ ? हंता, गोयमा ! एत्थ वि तं चेव भाणियव्वं, नवरं अणुदिणं उवसामेइ, सेसा पडिसेहेयव्वा तिण्णि। (२) जं तं भंते ! अणुदिण्णं उवसामेइ तं किं उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कारपरक्कमेण वा। [सु. १२-१३. कंखामोहणिज्जस्स वेयण-णिज्जरणाइं] १२. से नूणं भंते ! अप्पणा चेव वेदेइ अप्पणा चेव गरहइ ? एत्थ वि व च्चेव परिवाडी। नवरं उदिण्णं वेएइ, नो अणुदिण्णं वेएइ। एवं जाव पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा। १३. से नूणं भंते ! अप्पणा चेव निज्जरेति अप्पणा चेव गरहइ ? एत्थ वि स च्चेव परिवाडी। नवरं उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेइ, एवं जाव परक्कमेइ वा। [सु. १४. चउवीसदंडएसु कंखामोहणिज्जकम्मवेदेण-निज्जरणाइं] १४. (१) नेरइया णं भंते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं वेएंति ? जधा ओहिया जीवा तधा नेरइया जाव थणितकुमारा। (२) पुढविक्काइया णं भंते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ? हंता, वेदेंति। (३) कहं णं भंते ! पुढविक्काइया कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ? गोयमा ! तेसिं णं जीवाणं णो एवं तक्का इ वा सण्णा इ वा पण्णा इ वा मणे इ वा वई ति वा 'अम्हे णं कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेमो' वेदेंति पुण ते। (४) से णूणं भंते ! तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहिं पवेदियं। सेसं तं चेव जाव पुरिसक्कारपरक्केणं ति वा। (५) एवं जाव चउरिंदिया। (६) पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जाव वेमाणिया जधा ओहिया जीवा। [सु. १५. निग्गंथे पडुच्च कंखामोहणिज्जवेदणवियारो] १५. (१) अत्थि णं भंते ! समणा वि निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ? हंता, अत्थि। (२) कहं णं भंते ! समणावि निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ? गोयमा ! तेहिं तेहिं नाणंतरेहिं दंसणंतरेहिं चरितंतरेहिं लिंगंतरेहिं पवयणंतरेहिं पावयणंतरेहिं कप्पंतरेहिं चरितंतरेहि

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य भग्गंतरेहि भंगंतरेहिं नयंतरेहिं नियमंतरेहिं पमाणंतरेहिं संकिया कंखिया वितिकिंछिता भेदसमावन्ना, कलुससमावन्ना, एवं खलु समणा निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति। (३) से नूणं भंते तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं ? हंता, गोयमा ! तमेव सच्चं नीसंकं जाव पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! ०। ततिओ ॥१-३॥ ☆☆☆ **चउत्थो उद्देसओ 'पगई'** ☆☆☆ [सु. १ कतिपगडी' आइपंचदारपरूवणं] १. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ। कम्मपगडीए पढमो उद्देसो नेतव्वो जाव अणुभागो सम्मत्तो। कति पगडी ? १ कह बंधइ ? २ कतिहि व ठाणेहिं बंधती पगडी ? ३। कति वेदेति व पगडी ? ४ अणुभागो कतिविहो कस्स ? ५ ॥१॥ [सु. २-५. उदिण्ण-उवसंतमोहणिजजस्स जीवस्स उवट्ठावण -अवक्कमणाइपरूवणं] २. (१) जीवे णं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मणे उदिण्णेणं उवट्ठाएज्जा ? हंता, उवट्ठाएज्जा। (२) से भंते ! किं वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? गोतमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, नो अवीरियत्तशए उवट्ठाएज्जा। (३) जदि वीरियत्ताए किं बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? पंडितवीरित्ताए उवट्ठाएज्जा ? बाल-पंडितवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? गोयमा ! बालवीरियत्तराए उवट्ठाएज्जा, णो पंडितविरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, नो बाल-पंडित-वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा। ३. (१) जीवे णं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिण्णेणं अवक्कमेज्जा ? हंता, अवक्कमेज्जा। (२) से भंते ! बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ३ ? गोयमा ! बालवीरियताए बुज्झिसु अवक्कमेज्जा, नो पंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, सिय बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा। ४. जधा उदिण्णेणं दो आलावगा तधा उवसंतेण वि दो आलावगा भाणियव्वा। नवरं उवट्ठाएज्जा पंडियवीरियत्ताए, अवक्कमेज्जा बाल-पंडियवीरियत्ताए। ५. (१) से भंते ! किं आताए अवक्कमइ ? अणाताए अवक्कमइ ? गोयमा ! आताए अवक्कमइ, णो अणाताए अवक्कमइ; मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे। (२) से कहमेयं भंते ! एवं गोतमा ! पुव्विं से एतं एवं रोयति इदाणिं से एयं एवं नो रोयइ, एवं खलु एतं एवं। [सु. ६. कम्मवेदेणं पडुच्च मोक्खपरूवणं] ६. से नूणं भंते ! नेरइयस्स वा, तिरिक्खजोणिस्स वा, मणूसस्स वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि णं तस्स अवेदइत्ता मोक्खो ? हंता, गोतमा ! नेरइयस्स वा तिरिक्खजोणियस्स वा, मणुस्सस्स वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि तस्स अवेदइत्ता मोक्खो। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति नेरइयस्स वा जाव मोक्खो ? एवं खलु मए गोयमा ! दुविहे कम्मे पण्णत्ते। तं जहा पदेसकम्मे य, अणुभागकम्मे य। तत्थ णं जं तं पदेसकम्मं तं नियमा वेदेति, तत्थ णं जं तं अणुभागकम्मे य। तत्थ णं जं तं पदेसकम्मं तं नियमा वेदेति, तत्थ णं जं तं अणुभागकम्मं तं अत्थेगइयं नो वेएइ। णायमेतं अरहता, सुतमेतं अरहता, विण्णायमेतं अरहता-''इमं कम्मं अयं जीवे अब्भोवगमियाए वेदणाए वेइस्सइ, इमं कम्मं अयं जीवे उवक्कमियाए वेदणाए वेइस्सइ। अहाकम्मं अधानिकरणं जधा जधा तं भगवता दिट्ठं तधा तधा तं विप्परिणमिस्सतीति। से तेणट्ठेणं गोतमा ! नेरइयस्स वा ४ जाव मोक्खो। [सु. ७-११. पोग्गल-जीवाणं तिकालसासयत्तपरूवणं] ७. एस णं भंते ! पोग्गले तीतमणंतं सासयं समयं 'भुवि' इति वत्तव्वं सिया ? हंता, गोयमा ! एस णं पोग्गले तीतमणंतं सासयं समयं 'भुवि' इति वत्तव्वं सिया। ८. एस णं भंते ! पोग्गले पडुप्पन्नं सासयं समयं भवति' इति वत्तव्वं सिया ? हंता, गोयमा ! तं चेव उच्चारेतव्वं। ९. एस णं भंते ! पोग्गले अणागतमणंतं सासतं समयं 'भविस्सति' इति वत्तव्वं सिया ? हंता, गोयमा ! तं चेव उच्चारेतव्वं। १०. एवं खंधेण वि तिण्णि आलावगा। ११. एवं जीवेण वि तिण्णि आलावगा भाणितव्वा। [सु. १२-१५. छउमत्थ केवलीणं कमसो असिज्झणाइ-सिज्झणाइपरूवणं] १२. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तीतमणंतं सासतं समयं केवलेणं सजमेणं केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलाहिं पवयणमाताहिं सिज्झिंसु जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिंसु ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तं चेव जाव अंतं करेंसु ? गोतमा ! जे केइ अंतकरा वा, अंतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाणमंतं करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा सव्वे ते उप्पन्ननाण-दंसणधरा अरहा जिणे केवली मवित्ता ततो पच्छा सिज्झंति वुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा से तेणट्ठेणं गोतमा ! जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेंसु। १३. पडुप्पन्ने वि एवं चेव, नवरं 'सिज्झंति' भाणितव्वं। १४. अणागते वि एवं चेव, नवरं 'सिज्झिस्संति' भाणियव्वं। १५. जहा छउमत्थो तधा आघोहिओ वि, तहा परमाहोहिओ वि। तिण्णि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा। [सु. १६-१८. केवलिस्स मोक्खो संपुण्णणाणित्तं च] १६.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ત્રણ લોકના નાથ તીર્થંકર પરમાત્મા પોતાના વિશિષ્ટ પુણ્યના પ્રભાવે આ જગતમાં આવે છે ત્યારે ૧૪ રાજલોકના જીવો ક્ષણવાર માટે શાતા પામે છે. તેમના પાંચ પ્રસંગો કલ્યાણ કરનારા હોવાથી તે **પંચકલ્યાણક** કહેવાય છે.

પ્રથમ ચ્યવન કલ્યાણક : અવધિજ્ઞાન સાથે તીર્થંકર પરમાત્માનો જીવ માતાની કુક્ષિમાં પધારે છે ત્યારે માતાને ૧૪ સ્વપ્નો દેખાય છે.

દ્વિતીય જન્મ કલ્યાણક : દશે દિશાઓમાંથી ૫૬ દિક્કુમારિકાઓએ સૂતિકર્મ કર્યા પછી ૬૪ ઈન્દ્રો પ્રભુને મેરુ પર્વતપર લઈ જઈ ને ધામધૂમથી સ્નાત્ર મહોત્સવ ઉજવે છે.

તૃતીય દીક્ષા કલ્યાણક : રાજપાટનો ત્યાગ કરી પ્રભુ દીક્ષા લે છે ત્યારે સ્વહસ્તે પંચમુષ્ટિ કેશલુંચન કરે છે તે વાળને ઈન્દ્રમહારાજા થાળમાં ઝીલે છે, **કરેમિભંતે** નું વ્રત લે છે ત્યારે ચોથું મન:પર્યવ જ્ઞાન ઉત્પન્ન થાય છે અને પ્રભુ કેવળી ન થાય ત્યાં સુધી મૌન વ્રત ધારણ કરે છે.

ચતુર્થ કેવલજ્ઞાન કલ્યાણક : ચાર ઘાતિકર્મો ખપાવી પ્રભુ કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત કરે છે ત્યાર પછી પ્રભુથી કોઈપણ ચીજ અજાણી નથી. સંપૂર્ણ એવું કેવળજ્ઞાન મેળવી લીધા પછીજ સમવસરણમાં બેસી દેશના આપે છે.

પંચમ નિર્વાણ કલ્યાણક : બાકી રહેલા ચાર અઘાતિકર્મોને ખપાવી પ્રભુ નશ્વર દેહને છોડી મોક્ષે સિધાવે છે જ્યાં જન્મ, જરા, મૃત્યુ વગેરેના કોઈ દુ:ખ નથી.

तीनों लोक के नाथ तीर्थंकर परमात्मा अपने विशिष्ट पुण्यों के प्रभाव से इस जगत में आते हैं तब १४ लोक के प्राणियों को अनन्य शांति मिलती है। उस परमात्मा के पाँच प्रसंगों को **पंचकल्याणक** कहते हैं। क्यों कि वे पाँच कल्याणकारी हैं।

प्रथम च्यवन कल्याणक : अवधिज्ञान के साथ तीर्थंकर परमात्मा का जीव माता के उदर में पधारता है तब माता १४ स्वप्न देखती है।

द्वितीय जन्म कल्याणक : दश दिशाओं से ५६ दिक्कुमारिका द्वारा सूतिकर्म के बाद ६४ इन्द्र प्रभुको मेरु पर्वतपर ले जाते हैं और धामधूम से स्नात्र महोत्सव मनाते हैं।

तृतीय दीक्षा कल्याणक : राजपाट को त्याग कर प्रभु दीक्षा ग्रहण करते हैं तब अपने हाथ से पंचमुष्टि केशलुंचन करते हैं। उन केशों को इन्द्र महाराज थार में लेते हैं और जब **करेमिभंते** का व्रत ग्रहण करते हैं तब चतुर्थ मन:पर्यव ज्ञान होता है। जब तक खुद केवली न बनें तब तक प्रभु मौन-व्रत धारण करते हैं।

चतुर्थ केवलज्ञान कल्याणक : चार घातिकर्मों का क्षय करने के बाद प्रभु को केवलज्ञान की प्राप्ति होती है। तब प्रभुसे कोई भी चीज़ अज्ञात नहीं है। पूर्ण केवलज्ञान प्राप्ति के अनंतर ही प्रभु समवसरण में बैठकर देशना प्रदान करते हैं।

पंचम निर्वाण कल्याणक : शेष चार अघाति कर्मों का क्षय करने के बाद प्रभु इस नश्वर देह का त्याग कर मोक्ष प्राप्त करते हैं जहाँ जन्म-जरा-मृत्यु इत्यादि के कोई भी दुःख नहीं।

When the Lord of the three worlds descends on this earth by the power of his special merits, the beings of the 14 worlds feel relief for the moment. There are five events called **Benefactors**, because they confer beneficence.

The first benefactor called **Descent** : When Tīrthaṅkara Lord enters into the mother's womb, she sees 14 objects in the dream.

The second benefactor called **Birth :** After the maternity service by 56 maidens from all the 10 directions, 64 Indras carry the Lord on the Mt. Meru and celebrate the Birthday pompously.

The third benefactor called **Initiation :** When the Lord abandons royal pleasures and takes initiation, he plucks five fist ful hair himself and king Indra receives them in a plate. When the Lord takes up the vow of *kare mibhante* (whatever received unsought), he attains the knowledge called *manah-paryava* and takes up the vow of keeping silence till the Absolute Knowledge.

The fourth benefactor called **Absolute Knowledge :** After the destruction of the four types of killing *Karmas*, the Lord receives the Absolute Knowledge and becomes an all-knowing person. After the Absolute knowledge only, he sits to preach in the *Samavasaraṇa*.

The fifth benefactor called **Absolution :** After the destruction of the remaining four types of non-killing *Karmas*, the Lord attains the Absolution or Salvation where there are no miseries of birth, old age, death, etc.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवली णं भंते ! मणूसे तीतमणंतं सासयं समयं जाव अंतं करेंसु ? हंता, सिज्झिंसु जाव अंतं करेंसु । एते तिण्णि आलावगा भाणियव्वा छउमत्थस्स जधा, नवरं सिज्झिंसु, सिज्झिस्संति । १७. से नूणं भंते ! तीतमणंतं सासयं समयं, पडुप्पन्नं वा सासयं समयं, अणागतमणंतं वा सासयं समयं जे केइ अंतकरा वा अंतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाणमंतं करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा सव्वे ते उप्पन्ननाण-दंसणधरा अरहा जिणे केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झंति जाव अंतं करेस्संति वा हंता, गोयमा ! तीतमणंतं सासतं समयं जाव अंतं करेस्संति वा । १८. से नूणं भंते ! उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली 'अलमत्थु' त्ति वत्तव्वं सिया ? हंता, गोयमा ! उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली 'अलमत्थु' त्ति वत्तव्वं सिया । सेवं मंते ! सेवं भंते ! त्ति० । **॥ चउत्थो ॥ ☆ ☆ ☆ पंचमो उद्देसो 'पुढवी' ☆☆☆** [सु. १-५. चउवीसदंडयाणं आवाववंखापरूवणं] १. कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ । तं जहा रयणप्पभा जाव तमतमा । २. इमीसे णं भंते ! रतणप्पभाए पुढवीए कति निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गाधा तीसा य पण्णवीसा पण्णरस दसेव या सयसहस्सा। तिण्णेगं पंचूणं पंचेव अणुत्तरा निरया ॥१॥ ३. केवतिया णं भंते ! असुरकुमारावाससतसहस्सा पण्णत्ता ? एवं चोयट्ठी चउरासती य होति नागाणं । बावत्तरी सुवण्णाण, वाउकुमाराण छण्णउती ॥२॥ दीव-दिसा -उदहीणं विज्जुकुमारिंद-थणिय -मग्गीणं । छण्हं पि जुयलगाणं छावत्तरिमो सत्तसहस्सा ॥३॥ ४. केवतिया णं भंते ! पुढविक्काइयावाससतसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा पुढविक्काइयावाससयसहस्सा पण्णत्ता जाव असंखेज्जा जोदिसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता । ५. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे कति विमाणावाससतसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससतसहस्सा पण्णत्ता ? एवं बत्तीसऽट्ठावीसा बारस अट्ठ चउरो सतसहस्सा । पण्णा चत्तालीसा उच्च सहस्सा सहस्सारे ॥४॥ आणय-पाणयकप्पे चत्तारि सताऽऽरणऽ-च्चुए तिण्णि । सत्त विमाणसत्ताइं चउसु वि एएसु कप्पेसुं ॥५॥ एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमेसु सत्तुत्तरं च मज्झिमए । सतमेगं उवरिमए पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥६॥ [सु. ६. पंचमुद्देसगस्स अत्थाहिगारदारगाहा] ६. पुढवि ट्ठिति १ ओगाहण २ सरीर ३ संघयणमेव ४ संठाणे ५ । लेस्सा ६ दिट्ठी ६ णाणे ८ जोगुवओगे ९-१० य दस ठाणा ॥१४॥ [सु. ७-९. नेरइयाणं कोहोवउत्ताइवत्तव्वयापुव्वं पढमं ठितिट्ठाणपरूवणदारं] ७. इमीसे णं भंते ! रतणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावासतसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि नेरतियाणं केवतिया ठितिठाणा पण्णत्ता? गोयमा ! असंखेज्जा ठितिठाणा पण्णत्ता । तं जहा जहन्निया ठिती, समयाहिया जहन्निया ठिई, दुसमयाहिया जहन्निया ठिती जाव असंखेज्जसमयाहिया जहन्निया ठिती, तप्पाउग्गुक्कोसिया ठिती । ८. इमीसे णं भंते । रतणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससतसहसकसेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहन्नियाए ठितीए वट्टमाणा नेरइया किं कोधोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्तश ? गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा कोहोवउत्ता १, अहवा कोहोवउत्ता, यमाणोवउत्तो य २, अहवा कोहोवउत्ता य माणोवउत्ता य ३, अहवा कोहोवउत्ता य मयोवउत्ते य ४, अहवा कोहोवउत्ता मायोवउत्ता य ५, अहवा कोहोवउत्ता य लोभोवउत्ता य ६, अहवा कोहोवउत्ता य लोभोवउत्ता य ७ । अहवा कोहोवउत्ता य मणोवउत्ते य मायोवउत्ते य १, कोहोवउत्ता य माणोवउत्ते य मायोवउत्ता य २, कोहोत्तउत्ता य माणोवउत्ता य मयोवउत्ते य ३, कोहोवउत्ता य माणोवउत्ता य मायाउवउत्ता य ४ । एवं कोह-माण -लोभेण वि चउ ४ । एवं कोह- माया -लोभेण वि चउ ४, एवं १२ । पच्छा माणेण मायाए लोभेण य कोहो भइयव्वो, ते कोहं अमुंचता ८ । एवं सत्तावीसं भंगा णेयव्वा । ९. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि समयाधियाए जहन्नट्ठितीए वट्टमाणा नेरइया किं कोधोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ता ? गोयमा ! कोहोत्तउत्ते य माणोवउत्ते य माणोवउत्ते य लोभोवउत्ते य ४ । कोहोवउत्ता य माणोवउत्ता य मायोत्तउत्ता य लोभोवउत्ता य ८ । अधवा कोहोवउत्ते य माणोवउत्ते य १०, अधवा कोहोत्तउत्ते य माणोवयुत्ता य १२, एवं असीति भंगा नेयव्वा, एवं जाव संखिज्जसमयाधिया ठिई । असंखेज्जसमयाहियाए ठिईए तप्पाउग्गुक्कोसियाए ठिईए सत्तावीसं भंगा भाणियव्वा । [सु. १०-११. नेरइयाणं कोहोवउत्ताइवत्तव्वपुव्वं बीयं ओगाहणठाणदारं] १०. इमीसे णं भंते ! रतणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाणं केवतिया ओगाहणाठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा ओगाहणाठाणा पण्णत्ता । तं जहा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जघन्निया ओगाहणा, पदेसाहिया जहन्निया ओगाहणा, दुप्पदेसाहिया जहन्निया ओगाहणा जाव असंखेज्जपदेसाहिया जहन्निया ओगाहणा, तप्पाउग्गुक्कोसिया ओगाहणा। ११. इमीसे णं भंते ! रतणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहन्नियाए ओगाहणाए वट्टमाणा नेरतिया किं कोहोवउत्ता० ? असीति भंगा भाणियव्वा जाव संखिज्जपदेसाधिया जहन्निया ओगाहणा। असंखेज्जपदेसाहियाए जहन्नियाए ओगाहणाए वट्टमाणाणं तप्पाउग्गुक्कोसियाए ओगाहणाए वट्टमाणाणं नेरइयाणं दोसु वि सत्तावीसं भंगा। [सु. १२-१३. नेरइयाणं कोहोवउत्ताइवत्तव्वयापुव्वं तइयं सरीरदारं] १२. इमीसे णं भंते ! रयण० जाव एगमेगंसि निरयावासंसि नेरतियाणं कति सरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! तिण्णि सरीरया पण्णत्ता। तं जहा वेउव्विए तेयए कम्मए। १३. (१) इमीसे णं भंते ! जाव वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा नेरतिया किं कोहोवयुत्ता० ।? सत्तावीसं भंगा। २ एतेणं गमेणं तिण्णि सरीरा भाणियव्वा। [सु. १४-१५. नेरइयाणं कोहोवउत्ताइवत्तव्वयापुव्वं चउत्थं संघयणदारं] १४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवाह जाव नेरइयाणं सरीरगा किं संघयणा पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणा, नेवऽट्ठी, नेव छिरा, नेव ण्हारूणि। जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया असुभा अमुणुण्णा अमणामा ते तेसिं सरीरसंघातत्ताए परिणमंति। १५. इमीसे णं भंते ! जाव छण्हं संघयणाणं असंघयणे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता० ? सत्तावीसं भंगा। [सु. १६-१७. नेरइयाणं कोहोवउत्ताइवत्तव्वयापुव्वं पंचमं संठाणदारं] १६. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभा जाव सरीरया किंसंठिता पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविधा पण्णत्ता। तं जहा भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जे ते भवधारिणिज्जा ते हुंडसंठिया पण्णत्ता। तत्थ णं उत्तरवेउव्विया ते वि हुंडसंठिया पण्णत्ता। १७. इमीसे णं जाव हुंडसंठाणे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता० ? सत्तावीसं भंगा। [सु. १८-१९. नेरइयाणं कोहोवउत्ताइवत्तव्वयापुव्वं छट्ठं लेसादारं] १८. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं कति लेसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! एक्का काउलेसा पण्णत्ता। १९. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव काउलेस्साए वट्टमाणा० ? सत्तावीसं भंगा। [सु. २०-२१. नेरइयाणं कोहोवउत्ताइवत्तव्वयापुव्वं सत्तमं दिट्ठिदारं] २०. इमीसे णं जाव किं सम्मद्दिट्ठी मिच्छद्दिट्ठी सम्मामिच्छद्दिट्ठी ? तिण्णि वि। २१. (१) इमीसे णं जाव सम्मद्दंसणे वट्टमाणा नेरइया० ? सत्तावीसं भंगा। (२) एवं मिच्छद्दसंणे वि। (३) सम्मामिच्छद्दसंणे असीति भंगा। [सु. २२-२३. नेरइयाणं कोहोउत्ताइवत्तव्वयापुव्वं अट्ठमं नाणदारं] २२. इमीसे णं भंते ! जाव किं णाणी, अण्णाणी ? गोयमा ! णाणी वि, अण्णाणी वि। तिण्णि नाणाणि नियमा, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। २३. (१) इमीसे णं भंते ! जाव आभिणिबोहियणाणे वट्टमाणा० ? सत्तावीसं भंगा। (२) एवं तिण्णि णाणाइं, तिण्णि य अण्णाणाइं भाणियव्वइं। [सु. २४-२५. नेरइया णं कोहोवउत्ताइवत्तव्वयापुव्वं नवमं जोगदारं] २४. इमीसे णं जाव किं मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी ? तिण्णि वि। २५. (१) इमीसे णं जाव मणजोए वट्टमाणा किं कोहोवउत्ता० ? सत्तावीसं भंगा। (२) एवं वइजोए। एवं कायाजोए। [सु.२६-२७. नेरइयाणं कोहोवउत्ताइवत्तव्वयापुव्वं दसमं उवओगदारं] २६. इमीसे णं जाव नेरइया किं सागरोवयुता, अणागारोवयुत्ता ? गोयमा ! सागरोवउत्ता वि, अणागारोवयुत्ता वि। २७. (१) इमीसे णं जाव सागरोवओगे वट्टमाणा किं कोहोवउत्ता० ? सत्तावीसं भंगा। (२) एवं अणागारोवउत्ते वि सत्तावीसं भंगा। [सु. २८. सत्तविहनेरइयाणं छट्ठे लेसादारे णाणत्तं] २८. एवं सत्त वि पुढवीओ नेतव्वाओ। णाणत्तं लेस्सासु, गाधा काऊ य दोसु, ततियाए मीसिया, नीलिया चउत्थीए। पंचमियाए मीसा, कण्हा, त्तो परमकण्हा ॥७॥ [सु. २९. भवणवासीणं कोहोवउत्ताइत्तव्वयापुव्वं ठिति -ओगाहणाइदसदारपरूवणं] २९. चउसट्ठीए णं भंते ! असुरकुमारावाससतसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमाराणं केवतिया ठिइठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा ठितिठाणा पण्णत्ता। तं जहा जहन्निया ठिई जहा नेरतिया तहा, नवरं पडिलोभा भंगा भाणियव्वा सव्वे वि ताव होज्ज लोभोवयुत्ता, अधवा लोभोवयुत्ता य मायोवउत्ते य, अहवा लोभोवयुत्ता य मायोवयुत्ता य। एतेणं गमेणं नेतव्वं जाव थणियकुमारा, नवरं णाणत्तं जाणितव्वं। [सु. ३०-३२. एगिंदियाणं कोहोवउत्ताइवत्तव्वयापुव्वं ठितिओगाहणाइदसदापरूवणं] ३०. असंखेज्जेसु णं भंते ! पुढविकाइयावाससतसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविकाइयावासंसिस पुढविक्काइयाणं केवतिया ठितिठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा ठितिठाणा पण्णत्ता। तं जहा जहन्निया ठिई जाव तप्पाउग्गुक्कोसिया

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठिती। ३१. असंखेज्जेसु णं भंते ! पुढविक्काइयावास सतसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविक्काइयावासंसि जहन्नठितीए वट्टमाणा पुढविक्काइया किं कोधोवउत्ता, माणोवयुत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ता ? गोयमा ! कोहोवउत्ता वि माणोवउत्ता वि मायोवयुत्ता वि लोभोवउत्ता वि। एवं पुढविक्काइयाणं सव्वेसु वि ठाणेसु अभंगयं, नवरं तेउलेस्साए असीति भंगा। ३२. (१) एवं आउक्काइया वि। (२) तेउक्कइया -वाउक्कइयाणं सव्वेसु वि ठाणेसु अभंगयं। (३) वणप्फतिकाइया जधा पुढविक्काइया। [सु. ३३. विगलिंदियाणं कोहोवउत्ताइवत्तव्वयापुव्वं ठिति -ओगाहणाइदसदारपरूवणं] ३३. बेइंदिय- तेइदिय -चउरिंदियाणं जेहिं ठाणेहिं नेरतियाणं असीइ भंगा तेहिं ठाणेहिं असीइं चेव। नवरं अब्भहिया सम्मत्ते, आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे य, एएहि असीइ भंगा; जेहिं ठाणेहिं नेरतियाणं सत्तावीसं भंगा तेसु ठाणेसु सव्वेसु अभगयं। [सु. ३४. पंचिंदियतिरिक्खाणं कोहोवउत्ताइवत्तव्वयापुव्वं ठितिओगाहणाइदसदारपरूवणं] ३४. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जधा नेरइया तधा भाणियव्वा, नवरं जेहिं सत्तावीसं भंगा तेहिं अभंगयं कायव्वं। जत्थ असीति तत्थ असीतिं चेव। [सु. ३५. मणुस्साणं कोहोवउत्तव्वयापुव्वं ठिति-गाहणाइदसदारपरूवणं] ३५. मणुस्सा वि। जेहिं ठाणेहिं नेरइयाणं असीति भंगा तेहिं ठाणेहिं मणुस्साण वि असीति भंगा भाणियव्वा। जेसु ठाणेसु सत्तावीसा तेसु अभंगयं, नवरं मणुस्साणं अब्भहियं- जहन्नियाए ठिईए आहारए य असीतिं भंगा। [सु. ३६. वाणुमंतराईणं कोहोवउत्ताइवत्तव्वयापुव्वं ठिति -ओगाहणाइदसदारपरूवणं] ३६. वाणमंतर -जोदिस-वेमाणिया जहा भवणवासी (सु.२९), नवरं णाणत्तं जाणियव्वं जं जस्स; जाव अणुतरा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ☆ ☆ ☆। **पंचमोउद्देसो समत्तो ॥५॥** ☆ ☆ ☆ **छट्ठो उद्देसो 'जावंते'** ☆ ☆ ☆ [सु.१-४. सूरिअस्स उदयऽत्थमणाइं पडुच्च अंतर-पगासखेत्ताइपरूवणं] १. जावतियातो णं भंते ! ओवासंतरातो उदयंते सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, अत्थमंते वि य णं सूरिए तावतियाओ चेव ओवासंतराओ चक्खुफासं हव्वमागच्छति ? हंता, गोयमा ! जावतियाओ णं ओवासंतराओ उदयंते सूरिए हव्वमागच्छति अत्थमंते वि सूरिए जाव हव्वमागच्छति। (२). जावतियं णं भंते ! खेत्तं उदयंते सूरिए आतवेणं सव्वतो समंता ओभासेति उज्जोएति तवेति पभासेति अत्थमंते वि य णं सूरिए तावइयं चेव खेत्तं आतवेणं सव्वतोसमंता ओभासेति उज्जोएति तवेति पभासेति ? हंता, गोयमा ! जावतियं णं खेत्तं जाव पभासेति। ३ (१) तं भंते ! किं पुट्ठं ओभासेति अपुट्ठं ओभासेति ? जाव छद्दिसिं ओभासेति। (२) एवं उज्जोवेदि ? तवेति पभासेति ? जाव नियमा छद्दिसिं। ४. (१) से नूणं भंते ! सव्वंति सव्वावंति फुसमाणकालसमयंसि जावतियं खेत्तं फुसइ तावतियं फुसमाणे पुट्ठे त्ति वत्तव्वं सिया ? हंता, गोयमा ! सव्वति जाव वत्तव्वं सिया। (२) तं भंते ! किं पुट्ठं फुसति अपुट्ठं फुसइ ? जाव नियमा छद्दिसिं। [सु. ५-६. लोयंत-अलोयंताईणं फुसणापरूवणं] ५. (१) लोअंते भंते ! अलोअंतं फुसति ? अलोअंते वि लोअंतं फुसति ? हंता, गोयमा ! लोगंते अलोगंतं फुसति, अलोगंते वि लोगंतं फुसति। (२) तं भंते ! किं पुट्ठं फुसति ? जाव नियमा छद्दिसिं फुसति। ६. (१) दीवंते भंते ! सागरंतं फुसति ? सागरंते वि दीवंतं फुसति ? हंता, जाव नियमा छद्दिसिं फुसति। (२) एवं एतेणं अभिलावेणं उदयंते पोदंतं, छिद्दंते दूसंतं, छायंते आतवंतं ? जाव नियमा छद्दिसिं फुसति। [सु. ७-११. जीव-चउवीसदंडगेसु पाणाइवायाइपावट्ठाणपभवकम्मफुस्सणापरूवणं] ७. (१) अत्थि णं भंते ! जीवाणं पाणातिवातेणं किरिया कज्जति ? हंता, अत्थि। (२) सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जति ? अपचट्ठा कज्जति ? जाव निव्वाघातेणं छद्दिसिं, वाघातं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं। (३) सा भंते ! किं कडा कज्जति ? अकडा कज्जति ? गोयमा ! कडा कज्जति, नो अकडा कज्जति। (४) सा भंते ! किं अत्तकडा कज्जति ? परकडा कज्जति ? तदुभयकडा कज्जति ? गोयमा ! अत्तकडा कज्जति, णो परकडा कज्जति, णो तदुभयकडा कज्जति। (५) सा भंते ! किं आणुपुव्विकडा कज्जति ? अणाणुपुव्विकडा कज्जति ? गोयमा ! आणुपुव्विकडा कज्जति, नो अणाणुपुव्विकडा कज्जति। जा य कडा, जा य कज्जति, जा य कज्जिस्सति सव्वा सा आणुपुव्विकडा; नो अणाणुपुव्विकड त्ति वत्तव्वं सिया। ८. (१) अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं पाणातिवायकिरिया कज्जति ? हंता, अत्थि। (२) सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जति ? अपुट्ठा कज्जति ? जाव नियमा छद्दिसिं कज्जति। (३) सा भंते ! किं कडा कज्जति ? अकडा कज्जति ? तं चेव जाव नो अणाणुपुव्विकड

For Private & Personal Use Only

त्ति वत्तव्वं सिया। ९. जधा नेरइया (सु. ८) तहा एगिंदियवज्जा भाणितव्वा जाव वेमाणिया। १०. एकिंदिया जधा जीवा (सु. ७) तहा भाणियव्वा। ११. जहा पाणादिवाते (सु. ७-१०) तधा मुसावादे तधा अदिन्नादाणे मेहुणे परिग्गहे कोहे जाव मिच्छादंसणसल्ले एवं एते अट्ठारस, चउवीसं दंडगा भाणियव्वा। सेवं भंते ! त्ति भगवं गोतमे समणं भगवं जाव विहरति। [सु. १२. रोहस्स अणगारस्स वण्णओ] १२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतेवासी रोहे नामं अणगारे पगतिभद्दए पगतिभउए पगतिविणीते पगतिउवसंते पगतिपतणुकोह -माण -माय -लोभे मिदुमद्दवसंपन्ने अल्लीणे भद्दए विणीए समणस्स भगवतो महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगते संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। तए णं से रोहे नामं अणगारे जातसड्ढे जाव पज्जुवासमाणे एवं वदासी [सु. १३-२४. रोहाणगारपण्हत्तरे लोयालोय- जीवाजीवाइ अणेगभावाणं सासयत्त -अणाणुपुव्वीपरूवणं] १३. पुव्विं भंते ! लोए ? पच्छा अलोए ? पुव्विं अलोए ? पच्छा लोए ? रोहा ! लोए य अलोए य पुव्विं पेते, पच्छा पेते, दो वि ते सासता भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !। १४. पुव्विं भंते ! जीवा ? पच्छा अजीवा ? पुव्विं अजीवा ? पच्छा जीवा ? जहेव लोए य अलोए य तहेव जीवा य अजीवा य। १५. एवं भवसिद्धिया, अन्नवसिद्धिया य सिद्धी असिद्धी सिद्धा असिद्धा। १६. पुव्विं भंते ! अंडए ? पच्छा कुक्कुडी ? पुव्विं कुक्कुडी ? पच्छा अंडए ? रोहा ! से णं अंडए कतो ? भगवं ! तं कुक्कुडीतो, सा णं कुक्कुडी कतो ? भंते ! अंडगातो। एवामेव रोहा ! से य अंडए सा य कुक्कुडी, पुव्विं पेते, पच्छा पेते, दो वेते सासता भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !। १७. पुव्विं भंते ! लोअंते ? पच्छा अलोयंते ? पुव्वं अलोअंते ? पच्छा लोअंते ? रोहा लोअंते य अलोअंते य जाव अणाणुपुव्वी एसा रोहा !। १८. पुव्विं भंते ! लोअंते ? पच्छा सत्तमे ओवासंतरे ? पच्छा। रोहा ! लोअंते य सत्तमे य ओवासंतरे पुव्विं पेते जाव अणाणुपुव्वी एसा रोहा !। १९. एवं लोअंते य सत्तमे य तणुवाते। एवं घणवाते, घणोदही, सत्तमा पुढवी। २०. एवं लोअंते एक्केक्केणं संजोएतव्वे इमेहिं ठाणेहिं, तं जहा ओवासा वात घण उदही पुढवी दीवा य सागरा वासा। नेरइयादी अत्थिय समया कम्माइं लेस्साओ ॥१॥ दिट्ठी दंसण णाणा सण्ण सरीरा य जोग उवओगे। दव्व पदेसा पज्जव अद्धा, किं पुव्वि लोयंते ? ॥२॥ पुव्विं भंते ! लोयंते पच्छा सव्वद्धा ?०। २१. जहा लोयंतेणं संजोइया सव्वे ठाणा एते, एवं अलोयंतेण वि संजोएतव्वा सव्वे। २२. पुव्विं भंते ! सत्तमे ओवारे ? पच्छा सत्तमे तणुवाते ? एवं सत्तमं ओवासंतरं सव्वेहिं समं संजोएतव्वं जाव सव्वद्धाए। २३. पुव्विं भंते ! सत्तमे तणुवाते ? पच्छा सत्तमे घणवाते ? एयं पि तहेव नेतव्वं जाव सव्वद्धा। २४. एवं उवरिल्लं एक्केक्कं संजोयंतेणं जो जो हेट्ठिल्लो तं तं छड्डेंतेणं नेयव्वं जाव अतीत-अणागतद्धा पच्छा सव्वद्धा जाव अणाणुपुव्वी एसा रोहा !। सेवं भंते त्ति ! जाव विहरति। [सु. २५. गोयमपण्हूत्तरे वत्थिउदाहरणजुयं लोगट्ठिइभेयपरूवणं] २५. (१) भंते त्ति भगवं गोतमे समणं जाव एवं वदासि कतिविहा णं भंते ! लोयट्ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठविहा लोयट्ठिती पण्णत्ता। तं जहा आगासपतिट्ठिते वाते, १, वातपतिट्ठिते उदही २, उदहिपतिट्ठिता पुढवी ३, पुढविपतिट्ठिता तस -थावरा पाणा ४, अजीवा जीवपतिट्ठिता ५, जीवा कम्मपतिट्ठिता ६, अजीवा जीवसंगहिता ७, जीवा कम्मसंगहिता ८। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चिति अट्ठविहा जाव जीवा कम्मसंगहिता ? गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेति, वत्थिमाडोविता उप्पिं सितं बंधति, बंधिता मज्झे णं गंठिं बंधति, मज्झे गंठिं बंधित्ता उवरिल्लं गंठिं मुयति, मुइत्ता उवरिल्लं देसं वामेति, उवलिल्लं देसं वामेत्ता उवरिल्लं देसं आउयास्स पूरेति, पूरित्ता उप्पिं सितं बंधति बंधित्ता मज्झिल्लं गंठिं मुयति। से नूणं गोयमा ! से आउयाए तस्स वउयस्स उप्पिं उवरितले चिट्ठति ? हंता, चिट्ठति। से तेणिट्ठेणं जाव जीवा कम्मसंगहिता। (३) से जहा वा केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेति, आडोवित्ता कडीए बंधति, बंधित्ता अत्थाहमतारमपोरुसियंसि उदगंसि ओगाहेज्जा। से नूणं गोयमा ! से पुरिसे तस्स आउयायस्स उवरिमतले चिट्ठति ? हंता, चिट्ठति। एवं वा अट्ठविहा लोयट्ठिती पण्णत्ता जाव जीवा कम्मसंगहिता। [सु. २६. हरदगयनावादिट्ठंतजुयं जीव-पोग्गलाणमन्नोन्नबद्धत्ताइपरूवणं] २६. (१) अत्थि णं भंते ! जीवा य पोग्गला य अन्नमन्नबद्धा अन्न-मन्नपुट्ठा अन्नमन्नपोगाठा अन्नमन्नसिणहेपडिबद्धा अन्न मन्नछडताए चिट्ठंति १ हंता अत्थि। (२) से फेणट्ठेणं भंते ! जाव चिट्ठंति ? गोयमा ! से जहानामए हरदे सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताए चिट्ठंति, अहे णं केइ पुरिसे तंसि हरदंसि एगं महं नावं सदासवं सतछिड्डं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओगाहेज्जा। से नूणं गोयमा ! सा णावा तेहिं आसवद्दारेहिं आपूरमाणी आपूरमाणी पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठति ? हंता, चिट्ठति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! अत्थि णं जीवा य जाव चिट्ठंति। [सु. २७. सुहुमआउकायस्स पवडणपरूवणं कालट्ठिई य] २७. (१) अत्थि णं भंते ! सदा समितं सुहुमे सिणेहकाये पवडति ? हंता, अत्थि। (२) से भंते ! किं उड्ढे पवडति, अहे पवडति तिरिए पवडति ? गोयमा ! उड्ढे वि पवडति, अहे वि पवडति, तिरिए वि पवडति। (३) जहा से बादरे आउकाए अन्नमन्नसमाउत्ते चिरं पि दीहकालं चिट्ठति तहा णं से वि ? नो इणट्ठे समट्ठे, से णं खिप्पामेव विद्धंसमागच्छति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति !०।

☆☆☆ छट्ठो उद्देसो समत्तो ॥६॥ ☆ ☆ ☆ सत्तमो उद्देसो 'नेरइए' ☆ ☆ ☆ [सु. १-२. उवज्जमाणेसु चउवीसदंडएसु देस-सव्वेहिं उवज्जणाआहाराहियारो] १. (१) नेरइए णं भंते !.नेरइएसू उववज्जमाणे किं देसेणंदेसं उववज्जति १, देसेणंसव्वं उववज्जति २, सव्वेणंदेसं उववज्जति ३, सव्वेणंसव्वं उववज्जति ४ ? गोयमा ! नो देसेणंदेसं उववज्जति, नो देसेणंसव्वं उववज्जति, नो सव्वणंदेसं उववज्जति, सव्वेणंसव्वं उववज्जति। (२) जहा नेरइए एवं जाव वेमाणिए।१। २. (१) नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं देसेणंदेसं आहारेति १, देसेणंसव्वं आहारेति २, सव्वेणंदेसं आहारेति ३, सव्वेणंसव्वं आहारेति ४ ? गोयमा ! नो देसेणंदेसं आहारेति, नो देसेणंसव्वं आहारेति, सव्वेण वा देसं आहारेति, सव्वेण वा सव्वं आहारेति। (२) एवं जाव वेमाणिए।२। [सु. ३-४. उव्वट्टमाणेसु चउवीसदंडएसु देस-सव्वेहिं उव्वट्टणाआहाराहियारो] ३. नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे किं देसेणंदेसं उव्वट्टति ? जहा उववज्जमाणे (सु. १) तहेव उव्वट्टमाणे वि दंडगो भाणितव्वो।३। ४. (१) नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे किं देसेणंदेसं आहारेति ? तहेव जाव (सु.२ १), सव्वेण वा देसं आहारेति, सव्वेण वा सव्वं आहारेति। २ एवं जाव वेमाणिए।४। [सु. ५. उववन्न-उव्वट्टेसु चउवीसदंडएसु देस-सव्वेहिं उववन्न-उव्वट्टतत्तयौराहियारो] ५. (१) नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववन्ने किं देसेणंदेसं उववन्ने ? एसोवि तहेव जाव सव्वेणंसव्वं उववन्ने। (२) जहा उववट्टमाणे उववज्जमाणे य चत्तारि दंडगा तहा उववन्नेणं उव्वट्टेण वि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा। सव्वेणंसव्वं उववन्ने; सव्वेण वा देसं आहारेति, सव्वेण वा सव्वं आहारेति, एएणं अभिलावेणं उववन्ने वि, उववट्टे वि नेयव्वं।८। [सु. ६. उववज्जमाणाईसु चउवीसदंडएसु अद्ध-सव्वेहिं उववज्जणाइतत्तयाहाराहियारो] ६. नेरइए णं भंते ! नेरइएसू उववज्जमाणे किं अद्धेणंअद्धं उववज्जति १, अद्धेण सव्वं उववज्जति २ ? सव्वेणंअद्धं उववज्जइ ३ ? सव्वेणंसव्वं उववज्जति ४ ? जहा पढमिल्लेणं अट्ठ दंडगा तहा अद्धेण वि अट्ठ दंडगा भाणितव्वा। नवरं जहिं देसेणंदेसं उववज्जति तहिं अद्धेणंअद्धं उववज्जावेयव्वं, एयं णाणत्तं। एते सव्वे वि सोलस दंडगा भाणियव्वा।[सु. ७-८. जीव-चउवीसदंडएसु एगत्त-पुहत्तेणं विग्गइपरूवणं] ७. (१) जीव णं भंते ! किं विग्गहगतिसमावन्नए ? अविग्गहगतिसमावन्नए ? गोयमा ! सिय विग्गहगतिसमावन्नए, सिय अविग्गहगतिसमावन्नगे। (२) एवं जाव वेमाणिए। ८ (१) जीवा णं भंते ! किं विग्गहगतिसमावन्नगा ? अविग्गहगतिसमावन्नगा ? गोयमा ! विग्गहगतिसमावन्नगा वि, अविग्गहगतिसमावन्नगा वि। (२) नेरइया णं भंते ! किं विग्गहगतिसमावन्नगा ? अविग्गहगतिसमावन्नगा ? गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा अविग्गहगतिसमावन्नगा १, अहवा अविग्गहगतिसमावन्नगा य विग्गहगतिसमावन्नगे य २, अहवा अविग्गहगतिसमावन्नगा य विग्गहगतिसमावन्नगा य ३। एवं जीव- एगिंदियवज्जो तियभंगो। [सु. ९. देवस्स चवणाणंतरभवाउयपडिसंवेदणाहियारो] ९. देवे णं भंते ! महिड्ढिए महज्जुतीए महब्बले महायसे महेसक्खे महाणुभावे अविउक्कंतियं चयमाणे किंचि वि कालं हिरिवत्तियं दुगुंछावत्तियं परिस्सहवत्तियं आहारं नो आहारेति; अहे णं आहारेति, आहारिज्जमाणे आहारिए, परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणे य आउए भवइ, जत्थ उववज्जति तमाउयं पडिसंवेदेति, तं जहा तिरिक्खजोणियाउयं वा मणुस्साउयं वा ? हंता, गोयमा ! देवे णं महिड्ढीए जाव मणुस्साउगं वा। [सु. १०-१२. गब्भं वक्कममाणस्स जीवस्स सइंदियत्त-ससरीरत्त-आहाराहियारो] १०. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सइंदिए वक्कमति, अणिंदिए वक्कमति ? गोयमा ! सिय सइंसिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमति, भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमति, से तेणट्ठेणं०। ११. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं ससरीरी वक्कमइ ? असरीरी वक्कमइ ? गोयमा ! सिय ससरीरी वक्कमति, सिय असरीरी वक्कमति। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! ओरालिय

-वेउव्वियं -आहारयाइं पडुच्च असरीरी वक्कमति, तेया -कम्माइं पडुच्च ससरीरी वक्कमति; से तेणट्ठेणं गोयमा ! ०। १२. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे तप्पढमताए किमाहारमाहारेति ? गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभयसंसिट्ठं कलुसं किव्बिसं तप्पढताए आहारमाहारेति। [सु. १३-१५. गब्भगयजीवस्स आहार-उच्चार-कवलाहाराहियारा] १३. जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे किमाहारमाहारेति ? गोयमा ! जं से माता नाणाविहाओ रसविगतीओ आहारमाहारेति तदेक्कदेसेणं ओयमाहारेति। १४. जीवस्स णं भंते ! गब्भगतस्स समाणस्स अत्थि उच्चारेइ वा पासवणेइ वा खेलेइ वा सिंघाणेइ वा वंते इ वा पित्ते इ वा ? णो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवे णं गब्भगए समाणे जमाहारेति तं चिणाइ तं सोतिंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए अट्ठि-अट्ठिमिंज-केस -मंसु -रोम -नहत्ताए, से तेणट्ठेणं०। १५. जीवे णं भंते ! गब्भगते समाणे पभू मुहेणं कावलियं आहारं आहारित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवे णं गब्भगते समाणे सव्वतो आहारेति, सव्वतो परिणामेति, सव्वतो उस्ससति, सव्वतो निस्ससति, अभिक्खणं आहारेति, अभिक्खणं परिणामेति, अभिक्खणं उस्ससति, अभिक्खणं निस्ससति, आहच्च आहारेति, आहच्च परिणामेति, आहच्च उस्ससति, आहच्च नीससति। मातुजीवरसहरणी पुत्तजीवरसहरणी मातुजीवपडिबद्धा पुत्तजीवं फुडा तम्हा आहारेइ, तम्हा चिणाति, तम्हा परिणामेति, अवरा वि य णं पुत्तजीवपडिबद्धा माउजीवफुडा तम्हा चिणाति, तम्हा उवचिणाति; से तेणट्ठेणं० जाव नोपभू मुहेणं कावलिकं आहारं आहारित्तए। [सु. १६-१८. गब्भयसरीरस्स माइ-पिइअंगविभागा माइ-पिइसरीरकालट्ठिई य] १६. कति णं भंते ! मातिअंगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ मातियंगा पण्णत्ता। तं जहा मंसे सोणिते मत्थुलुंगे। १७. कति णं भंते ! पितियंगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पेतियंगा पण्णत्ता। तं जहा अट्ठि अट्ठिमिंजा केस -मसु -रोम -नहे। १८. अम्मापेतिए णं भंते ! सरीरए केवइयं कालं संचिट्ठति ? गोयमा ! जावतियं से कालं भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावन्ने भवति एवतियं कालं संचिट्ठति, अहे णं समए समए वोक्कसिज्जमाणे २ चरमकालसमयंसि वोच्छिन्ने भवइ। [सु. १९-२०. गब्भम्मि मियस्स जीवस्स नरय -देवलोगुववायाहियारो] १९. (१) जीवे णं भंते ! गब्भगते समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा। (२) से केणट्ठेणं ? गोयमा ! से णं सन्नी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए पराणीयं आगयं सोच्चा निसम्म पदेसे निच्छुभति, २ वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णित्ता चाउरंगिणिं सेणं विउव्वइ, चाउरंगिणिं सेणं विउव्वेत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिं संगामं संगामेइ, से णं जीवे अत्थकामए रज्जकामए भोगकामए कामकामए अत्थकंखिए रज्जकंखिए भोगकंखिए कामकंखिए, अत्थपिवासिते रज्जपिवासिते भोगपिवासिए कामपिवासिते, तुच्चते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोउत्ते तदप्पितकरणे तब्भावणाभाविते एतंसि णं अंतरंसि कालं करेज्ज नेरतिएसु उववज्जइ; से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा। २०. जीवे णं भंते ! गब्भगते समाणे देवलोगेसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! से णं सन्नी पंचिदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतीए एगमवि आरियं धम्मयं सुवयणं सोच्चा विसम्म ततो भवति संवेगजातसड्ढे तिव्विधम्माणुरागरते, से णं जीवे धम्मकामए पुण्णकामए सग्गकामए मोक्खकामए, धम्मकंखिए पुण्णकंखिए सग्गकंखिए मोक्खकंखिए, धम्मपिवासिए पुण्णपिवासिए सग्गपिवासिए मोक्खपिवासिए, तच्चिते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिते तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पितकरणे तब्भावणाभाविते एयंसि णं अंतरंसि कालं करेज्ज देवलोएसु उववज्जति; से तेणट्ठेणं गोयमा ! ०। [सु. २१. गब्भट्ठियस्स जीवस्स आगार-किरियापरूवणं] २१. जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे उत्ताणए वा पासिल्लए वा अंबखुज्जए वा अच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा निसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा, मातूए सुवमाणीए सुवति, जागरमाणीए जागरति, सुहयाए सुहिते भवइ, दुहिताए दुहिए भवति ? हंता, गोयमा ! जीवे णं गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवति। [सु. २२ पसवणसमए तयणंतरं च जीवावत्थानिरूवणाइ] २२. अहे णं पसवणकालसमयंसि सीसेण वा पाएहिं वा आगच्छति सममागच्छइ तिरियमागच्छति विणिहायमावज्जति।

पण्णवज्झाणि य से कम्माइं बद्धाइं पुट्ठाइं निहत्ताइं कडाइं पुट्ठविताइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमन्नागयाइं उदिण्णाइं, नो उवसंताइं भवंति; तओ भवइ दुरूवे दुव्वण्णे दुग्गंधे दूरसे दुप्फास; अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे अकंतस्सरे अप्पियस्सरे असुभस्सरे अमणुण्णस्सरे अमणामस्सरे अणादेज्जवयणे पच्चायाए याऽवि भवति। वण्णवज्झाणि य से कम्माइं नो बद्धाइं० पसत्थं नेतव्वं जाव आदेज्जवयणे पच्चायाए याऽवि भवति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ☆☆☆॥ **सत्तमो उद्देसोसमत्तो** ॥ ☆☆☆ **अट्ठमो उद्देसो 'बाले'** ☆☆☆ [सु. १-३. एगंतबाल-पंडित -बालपंडितमणुस्साणं आउयबंधपरूवणाइ] १. एगंतबाले णं भंते! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेति? तिरिक्खाउयं पकरेति? मणुस्साउयं पकरेति? देवाउयं पकरेति? नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जति? तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जइ? मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जइ? देवाउयं किच्चा देवलोगेसु उववज्जति? गोयमा! एगंतबाले णं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरियाउयं पि पकरेइ, मणुयाउयं पि पकरेइ, देवाउयं पि पकरेइ; णेरइयाउयं पि किच्चा नेरइएसु उववज्जति, तिरियाउयं पि किच्चा तिरिएसु उववज्जति, मणुस्साउयं पि किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति, देवाउयं पि किच्चा देवेसु उववज्जति। २. एगंतपंडिए णं भंते! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ? जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जति? गोयमा! एगंतपंडिए णं मणुस्से आउयं सिय पकरेति, सिय नो पकरेति। जइ पकरेइ नो नेरइयाउयं पकरेइ, नो तिरियाउयं पकरेइ, नो मणुस्साउयं पकरेइ, देवाउयं पकरेइ। नो नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, णो तिरि०, णो मणुस्सा०, देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति। से केणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति? गोयमा! एगंतपंडितस्स णं मणुस्सस्स केवलमेव दो गतीओ पन्नायंति, तं जहा-अंतकिरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव। से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति। ३. बालपंडिते णं भंते! मणुस्से किं नेरइताउदं पकरेति जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति? गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेति जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति। से केणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति? गोयमा! बालपंडिए णं मणुस्से तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म देसं उवरमति, देसं नो उवरमइ, देसं पच्चक्खाति, देसं णो पच्चक्खाति; से णं तेणं देसोवरम-देसपच्चक्खाणेणं नो नेरइयाउयं पकरेति जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति। से तेणट्ठेणं जाव देवेसु उववज्जइ। [सु. ४-८. मियकूडपासकारग-तिणदाहगाइपुरिसाणं काइयाइकिरियापरूवणं] ४ पुरिसे णं भंते! कच्छंसि वा १ दहंसि वा २ उदगंसि वा ३ दवियंसि वा ४ वलयंसि वा ५ नूमंसि वा ६ गहणंसि वा ७ गहणविदुग्गंसि वा ८ पव्वतंसिवा ९ पव्वतविदुग्गंसि वा १० वणंसि वा ११ वणविदुग्गंसि वा १२ मियवित्तीए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गंता 'एते मिए' त्ति काउं अन्नयरस्स मियस्स वहाए कूड-पासं उदाइ; ततो णं भंते! से पुरिसे कतिकिरिए? गोयमा! जावं च णं से पुरिसे कच्छंसि वा १२ जाव कूड-पासं उद्दाइ तावं च णं से पुरिसे सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति 'सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए'? गोयमा! जे भविए उद्दवणयाए, णो बंधणयाए, णो मारणयाए, तावं च णं से पुरिसे काइयाए अहिगरणियाए पादोसियाए तीहिं किरियाहिं पुट्ठे। जे भविए उद्दवणयाए वि बंधणयाए वि, णो मारणयाए तावं च णं से पुरिसे काइयाए अहिगरणियाए पाओसियाए पारियावणियाए चउहिं किरियाहिं पुट्ठे। जे भविए उद्दवणयाए वि बंधणयाए वि मारणयाए वि तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पाणातिवातकिरियाए पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे। से तेणट्ठेणं जाव पंचकिरिए। ५. पुरिसे णं भंते! कच्छंसि वा जाव वणविदुग्गंसि वा तणाइं ऊसविय ऊसविय अगणिकायं निसिरइ तावं च णं भंते! से पुरिसे कतिकिरिए? गोयमा! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए। से केणट्ठेणं? गोयमा! जे भविए उस्सवणयाए तिहिं; उस्सवणयाए वि निसिरणयाए वि, नो दहणयाए चउहिं; जे भविए उस्सवणयाए वि निसिरणयाए वि दहणयाए वि तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहि किरियाहिं पुट्ठे। से तेणट्ठेणं गोयमा! ०। ६. पुरिसे णं भंते! कच्छंसि वा जाव वणविदुग्गंसि वा मियवित्तीए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गंता 'एए मिये' त्ति काउं अन्नयरस्स मियस्स वहाए उसुं निसिरइ, ततो णं भंते! से पुरिसे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जे भविए निसिरणयाए तिहिं; जे भविए निसिरणयाए वि विद्धंसणयाए वि, नो मारणयाए चउहिं; जे भविए निसिरणयाए वि विद्धंसणयाए वि मारणयाए वि तावं च णं से पुरिसे जाव पंचहि किरियाहिं पुट्ठे। से तेणट्ठेणं गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए। ७. पुरिसे णं भंते ! कच्छंसि वा जाव अन्नयरस्स मियस्स वहाए आयातकण्णायतं उसुं आयामेत्ता चिट्ठिज्जा, अन्ने य से पुरिसे मग्गतो आगम्म सयपाणिणा असिणा सीसं छिंदेज्जा, से य उसू ताए चेव पुव्वायामणयाए तं मियं विंधेज्जा, से णं भंते ! पुरिसे किं मियवेरेणं पुट्ठे ? पुरिसवेरेणं पुट्ठे ? गोयमा ! जे मियं मारेति से मियवेरेणं पुट्ठे, जे पुरिसं मारेइ से पुरिसवेरेणं पुट्ठे। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव से पुरिसरेरेणं पुट्ठे ? से नूणं गोयमा ! कज्जमाणे कडे, संधिज्जमाणे संधिते, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए, निसिरिज्जमाणे निसट्ठे त्ति वत्तव्वं सिया ? हंता, भगवं ! कज्जमाणे कडे जाव निसट्ठे त्ति वत्तव्वं सिया। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जे मियं मारेति से मियवेरेणं पुट्ठे, जे पुरिसं मारेइ से पुरिसवेरेणं पुट्ठे। अंतो छण्हं मासाणं मरइ काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, बाहिं छण्हं मासाणं मरति काइयाए जाव पारितावणियाए चउहिं किरियाहिं पुट्ठे। ८. पुरिसे णं भंते ! पुरिसं सत्तीए समभिधंसेज्जा, सयपाणिणा वा से असिणा सीसं छिंदेज्जा, ततो णं भंते ! से पुरिसे कतकिरिए ? गोयमा ! जाव च णं से पुरिसे तं पुरिसं सत्तीए समभिधंसेइ सयपाणिणा वा से असिणा सीसं छिंदइ तावं च णं से पुरिसे काइयाए अहिगरणि० जाव पाणातिवायकिरियाए पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, आसन्नवहएण य अणवकंखणवत्तिएणं पुरिसवेरेणं पुट्ठे। [सु. ९. जुज्झमाणाणं जय-पराजयहेउनिरूवणं] ९. दो भंते ! पुरिसा सरिसया सरित्तया सरिव्वया सरिसभंडमत्तोवगरणा अन्नमन्नेणं सद्धिं संगामं संगामेंति, तत्थ णं एगे पुरिसे पराइणइ एगे पुरिसे पराइज्जइ, से कहमेयं भंते ! एवं गोयमा ! सवीरिए परायिणति, अवीरिए पराइज्जति। से केणट्ठेणं जाव पराइज्जति ? गोयमा ! जस्स णं वीरियवज्झाइं कम्माइं बद्धाइं नो पुट्ठाइं जाव नो अभिसमन्नागताइं, नो उदिण्णाइं, उवसंताइ भवंति से णं परायिणति; जस्स णं वीरियवज्झाइं, कम्माइं बद्धाइं जाव नो उदिण्णाइं, कम्माइं नो उवसंताइं भवंति से णं पुरिसे परायिज्जति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ सवीरिए पराजिणइ, अवीरिए पराइज्जति ! [सु. १०-११. जीव-चउवीसदंडएसु सवीरियत्त-अवीरियत्तपरूवणं] १०. जीवा णं भंते ! किं सवीरिया ? अवीरिया गोयमा ! सवीरिया वि, अवीरिया वि। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता; तं जहा संसारसमावन्नगा य, असंसारसमावन्नगा य। तत्थ णं जे ते असंसारसमावन्नगा ते णं सिद्धा, सिद्धा णं अवीरिया। तत्थ णं जे ते संसारसमावन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता; तं जहा सेलेसिपडिवन्नगा य, असेलेसिपडिवन्नगा य। तत्थ णं जे ते सेलेसिपडिवन्नगा ते णं लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं अवीरिया। तत्थ णं जे ते असेलेसिपडिवन्नगा ते णं लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरिया वि अवीरिया वि। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति जीवा दुविहा पण्णत्ता; तं जहा सवीरिया वि। अवीरिया वि ११. (१) नेरइया णं भंते ! किं सवीरिया ! अवीरिया ? गोयमा ! नेरइया लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरिया वि अवीरिया वि। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जेसि णं नेरइयाणं अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे ते णं नेरइया लद्धिवीरिएण वि सवीरिया, करणवीरिएण वि सवीरिया, जेसि णं नेरइयाणं नत्थि उट्ठाणे जाव परक्कमे ते णं नेरइया लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं अवीरिया। से तेणट्ठेणं०। (२) जहा नेरइया एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया। (३) मणुस्सा जहा ओहिया जीवा। नवरं सिद्धवज्जा भाणियव्वा। ४ वाणमंतर-जोतिस-वेमाणिया जहा नेरइया। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆ ☆ ☆ ॥ **पढमसए अट्ठमो उद्देसो समत्तो** ॥ ☆ ☆ ☆ **नवमो उद्देसो 'गरुए'** ☆ ☆ ☆ [सु. १-३. जीवेसु गरुयत्त -लहुयत्ताईणं हेउपरूवणं] १. कहं णं भंते ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! पाणातिवातेणं मुसावादेणं अदिण्णा० मेहुण० परिग्ग० कोह० माण० माया० लोभ० पेज्ज० दोस० कलह० अब्भक्खाण० पेसुन्न० रति-अरति० परपरिवाय० मायामोस० मिच्छादंसणसल्लेणं, एवं खलु गोयमा ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति। २. कहं णं भंते ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! पाणातिवातवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं, एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति। ३. एवं आकुलीकरेंति,

एवं परित्तीकरेंति। एवं दीहीकरेंति, एवं ह्रस्सीकरेंति। एवं अणुपरियट्टंति, एवं वीतीवयंति। पसत्था चत्तारि। अप्पसत्था चत्तारि। [सु. ४-५. सत्तमओवासंतर-तणुवायाईसु गरुयत्त-लहुयत्ताइपरूवणं] ४. सत्तमे णं भंते! ओवासंतरे किं गरुए, लहुए, गरुयलहुए, अगरुयलहुए? गोयमा! नो गरुए, नो लहुए, नो गरुयलहुए, अगरुयलहुए। ५. (१) सत्तमे णं भंते! तणुवाते किं गरुए, लहुए, गरुयलहुए, अगरुयलहुए? गोयमा! नो गरुए, नो लहुए, गरुयलहुए, नो अगरुयलहुए। (२) एवं सत्तमे घणवाए, सत्तमे घणोदही, सत्तमा पुढवी। (३) ओवासंतराइ सव्वाइं जहा सत्तमे ओवासंतरे (सु. ४)। (४) सेसा जहा तणुवाए। एवं-ओवास वाय घणउदहि पुढवी दीवा य सागरा वासा। [सु. ६. चउवीसदंडएसु गरुयत्त-लहुयत्ताइपरूवणं] ६. (१) नेरइयाणं भंते! किं गरुया जाव अगरुयलहुया? गोयमा! नो गरुया, नो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि। से केणट्ठेणं? गोयमा! वेउव्विय-तेयाइं पडुच्च नो गरुया, नो लहुया, गरुयलहुया, नो अगरुयलहुया। जीवं च कम्मणं च पडुच्च नो गरुया, नो लहुया, नो गरुयलहुया, अगरुयलहुया। से तेणट्ठेणं०। (२) एवं जाव वेमाणिया। नवरं णाणत्तं जाणियव्वं सरीरेहिं। [सु.७-१६. अत्थिकाय-समय-कम्म-लेस्सा-दिट्ठिआईसु गरुयत्त-लहुयत्तपरूवणं] ७. धम्मत्थिकाये जाव जीवत्थिकाये चउत्थपदेणं। ८. पोग्गलत्थिकाए णं भंते! किं गरुए, लहुए, गरुयलहुए, अगुरुयलहुए? गोयमा! णो गरुए, नो लहुए, गरुयलहुए वि, अगरुयलहुए वि। से केणट्ठेणं? गोयमा! गरुयलहुयदव्वाइं पडुच्च नो गरुए, नो लहुए, गरुयलहुए, नो अगरुयलहुए। अगरुयलहुयदव्वाइं पडुच्च नो गरुए, नो लहुए, नो गरुयलहुए, अगरुयलहुए। ९. समया कम्माणि य चउत्थपदेणं। १०. (१) कण्हलेस्सा णं भंते! किं गरुया, जाव अगरुयलहुया? गोयमा! नो गरुया, नो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि। से केणट्ठेणं? गोयमा! दव्वलेसं पडुच्च ततियपदेणं, भावलेसं पडुच्च चउत्थपदेणं। (२) एवं जाव सुक्कलेसा। ११. दिट्ठी-दंसण-नाण-अण्णाण-सण्णओ चउत्थपदेणं णेतव्वाओ। १२. हेट्ठिल्ला चत्तारि सरीरा नेयव्वा ततियएणं पदेणं। कम्मयं चउत्थएणं पदेणं। १३. मणजोगो वइजोगो चउत्थएणं पदेणं। कायजोगो ततिएणं पदेणं। १४. सागरोवओगो अणागारोवओगो चउत्थएणं पदेणं। १५. सव्वदव्वा सव्वपदेसा सव्वपज्जवा जहा पोग्गलत्थिकाओ (सु.८)। १६. तीतद्धा अणागतद्धा सव्वद्धा चउत्थेणं पदेणं। [सु. १७-१८. लाघवियाइजुएसु अकसाईसु य पसत्थत्तपरूवणं] १७. से नूणं भंते! लाघवियं अप्पिच्छा अमुच्छा अगेही अपडिबद्धता समणाणं णिग्गंथाणं पसत्थं? हंता, गोयमा! लाघवियं जाव पसत्थं। १८. से नूणं भंते! अकोहत्तं अमाणत्तं अमायत्तं अलोभत्तं समणाणं निग्गंथाणं पसत्थं? हंता, गोयमा! अकोहत्तं जाव पसत्थं। [सु. १९. सिज्झणाए कंखा-पदोसखयस्स पाहण्णपरूवणं] १९. से नूणं भंते! कंखा-पदोसे खीणे समणे निग्गंथे अंतकरे भवति, अंतिमसरीरिए वा, बहुमोहे वि य णं पुव्विं विहरित्ता अह पच्छा संवुडे कालं करेति तओ पच्छा सिज्झति ३ जाव अंतं करेइ? हंता गोयमा! कंखा-पदोसे खीणे जाव अंतं करेति। [सु. २०. एगं जीवं पडुच्च इहअपरभवियाउयाणं एगसमयबंधणिसेहो] २०. अन्नउत्थिया णं भंते! एवमाइक्खंति एवं भासेंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति-"एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पगरेति, तं जहा-इहभवियाउयं च, परभवियाउगं च। जं समयं इहभवियाउगं पकरेति तं समयं परभवियाउगं पकरेति, जं समयं परभवियाउगं पकरेति तं समयं इहभवियाउगं पकरेइ; इहभवियाउगस्स पकरणयाए परभवियाउगं पकरेइ, परभवियाउगस्स पगरणताए इहभवियाउयं पकरेति। एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पकरेति, तं०- इहभवियाउयं च, परभवियाउयं च।" से कहमेतं भंते! एवं? गोयमा! जं णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव परभवियाउयं च। जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं आउगं पकरेति, तं जहा इहभवियाउयं वा, परभवियाउयं वा; जं समयं इहभवियाउयं पकरेति णो तं समयं परभवियाउयं पकरेति, जं समयं परभवियाउयं पकरेइ णो तं समयं इहभवियाउयं पकरेइ; इहभवियाउयस्स पकरणताए णो परभवियाउयं पकरेति, परभवियाउस्स पकरणताए णो इहभवियाउयं पकरेति। एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पकरेति, तं० इहभवियाउयं वा, परभवियाउयं वा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं गोयमे जाव विहरति। [सु. २१-२४. पासावच्चिज्जस्स कालासवेसियपुत्तस्स सामाइयाइविसया पुच्छा थेरकयसमाहणं पंचजामधम्मपडिवज्जणं निव्वाणं च] २१. (१) तेणं कालेणं समएणं पासावच्चिज्जे कालासवेसियपुत्ते

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णामं अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते एवं वयासी थेरा सामाइयं ण जाणंति, थेरा सामाइयस्स अट्ठं ण याणंति, थेरा पच्चक्खाणं ण याणंति, थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठं ण याणंति, थेरा संजमं ण याणंति, थेरा संजमस्स अट्ठं ण याणंति, थेरा संवरं ण याणंति, थेरा संवरस्स अट्ठं ण याणंति, थेरा विवेगं याणंति, थेरा विवेगस्स अट्ठं ण याणंति, थेरा विउस्सग्गं ण याणंति, थेरा विउस्सग्गस्स अट्ठं ण याणंति। (२) तए णं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी जाणामो णं अज्झो ! सामाइयं, जाणामो णं अज्झो ! सामाइयस्स अट्ठं जाव जाणमो णं अज्झो ! विउस्सग्गस्स अट्ठं। (३) तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे ते थेरे भगवंते एवं वयासी जति णं अज्झो ! तुब्भे जाणह सामाइयं, जाणह सामाइयस्स अट्ठं जाव जाणह विउस्सग्गस्स अट्ठं, किं भे अज्जो सामाइए ? किं भे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे ? जाव किं भे विउस्सग्गस्स अट्ठे ? (४) तए णं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी आया णे अज्जो ! सामाइए, आया णे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे जाव विउस्सग्गस्स अट्ठे। (५) तए णं से कालासवेसियपुत्तं अणगारं थेरे भगवंते एवं वयासी जति भे अज्जो ! आया सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे एवं जाव आया विउस्सग्गस्स अट्ठे, अवहट्टु कोह -माण- माया -लोभे किमट्ठं अज्जो ! गरहह ? कालासाह संजमट्ठयाए। (६) से भंते ! किं गरहा संजमे ? अगरहा संजमे ? कालास० ! गरहा संजमे, नो अगरहा संजमे, गरहा वि य णं सव्वं दोसं पविणेति, सव्वं बालियं परिण्णाए एवं खु णे आया संजमे उवहिते भवति, एवं खू णे आया संजमे उवचिते भवति, एवं खु णे आया संजमे उवट्ठिते भवति। २२. (१) एत्थ णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे संबुद्धे थेरे भगवंते वंदति णमंसति, २ एवं वयासी एतेसि णं भंते ! पदाणं पुव्विं अण्णाणयाए असवणयाए अबोहीए अणभिगमेणं अदिट्ठाणं अस्सुताणं अमुताणं अविण्णायाणं अवोगडाणं अव्वोच्छिन्नाण अणिज्जूढाणं अणुवधारिताणं एतमट्ठे णो सद्दहिते, णो पत्तिए, णो रोइए। इदाणिं भंते ! एतेसिं पदाणं जाणताए सवणताए बोहीए अभिगमेणं दिट्ठाणं सुताणं मुयाणं विण्णाताणं वोगडाणं वोच्छिन्नाणं णिज्जूढाणं उवधारिताणं एतमट्ठं सद्दहामि, पत्तियामि, रोएमि। एवमेतं से जहेयं तुब्भे वदह। (२) तए णं ते थेरा भगवंतो कालसवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी सद्दहाहि अज्जो ! पत्तियाहि अज्जो ! से जहेतं अम्हे वदामो। २३. (१) तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, २ एवं वदासी इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह। (२) तए णं से कालसवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। २४. तए णं से कालसवेसियपुत्ते अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, २ जस्सट्ठाए कीरति नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणयं अदंतधुवणयं अच्छत्तयं अणोवाहणयं भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बंभचेरवासो परघरपवेसो लद्धावलद्धी, उच्चावया गामकंटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहियासिज्जंति तमट्ठं आराहेइ, २ चरमेहिं उस्सासे-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे। [सु. २५. गोयमपुच्छाए सेट्ठिपभिइं पडुच्च अपच्चक्खाणमिरियापरूवणं] २५. 'भंते !' त्ति भगवं गोयमा ! समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, २ एवं वदासी से नूणं भंते ! सेट्ठिस्स य तणुयस्स य किविणस्स य खत्तियस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ? हंता, गोयमा ! सेट्ठिस्स य जाव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ। से केणट्ठेणं भंते ! ० ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च; से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ सेट्ठिस्स य तणु० जाव कज्जइ। [सु. २६. आहाकम्मभोइणो गुरुकम्मयापरूवणं] २६. आहाकम्मं णं भुजमाणे समणे निग्गंथे किं बंधति ? किं पकरेति ? किं चिणाति ? किं उवचिणाति ? गोयमा ! आहाकम्मं णं भुंजमाणे आउयवज्जओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव अणुपरियट्टइ। से केणट्ठेणं जाव अणुपरियट्टइ ? गोयमा ! आहाकम्मं णं भुंजमाणे आयाए धम्मं अतिक्कमति, आयाए धम्मं अतिक्कममाणे पुढविक्कायं णावकंखति जाव तसकायं णावकंखति, जेसिं पि य णं जीवाणं सरीराइं आहारमाहारेइ ते वि जीवे नावकंखति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ आहाकम्मं णं भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ जाव अणुपरियट्टति। [सु. २७. फासएसणिज्जभोइणो लहुकम्मयापरूवणं] २७. फासुएसणिज्जं णं भंते ! भुंजमाणे किं बंधइ जाव उवचिणाइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्जं णं भुंजमाणे आउयवाज्जओ

For Private & Personal Use Only

सत्त कम्मपयडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ जहा संवुडे णं (स० १ उ० १ सु.११ २), नवरं आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ। सेसं तहेव जाव वीतीयति। से केणट्ठेणं जाव वीतीवयति ? गोयमा ! फासुएसणिज्जं भुंजमाणे समणे निग्गंथे आताए धम्मं णाइक्कमति, आताए धम्मं अणतिक्कममाणे पुढविक्कायं अवकंखति जाव तसकायं अवकंखति, जेसिं पि य णं जीवाणं सरीराइं आहारेति ते वि जीवे अवकंखति, से तेणट्टेणं जाव वीतीवयति। [सु. २८. अथिर-थिर -बालाईणं परिवट्टणा -अपरिवट्टणा -सासयाइपरूवणं] २८. से नूणं भंते ! अथिरे पलोट्टति, नो थिरे पलोट्टति; अथिरे भज्जति, नो थिरे भज्जति; सासए बालए, बालियत्तं असासयं; सासते पंडिते, पंडितत्तं असासतं ? हंता, गोयमा ! अथिरे पलोट्टति जाव पंडितत्तं असासतं। सेवं भंते ! सेवं भंतेत्ति जाव विहरति। ☆☆☆॥ **नवमो उद्देसो समत्तो ॥ ☆☆☆ दसमो उद्देसो 'चलणाओ'☆☆☆** [सु. १. चलमाणचलिताचलित- परमाणुपोग्गलसंहननासंहनन -भासाऽभासा-किरियादुक्खाईसु अन्नउत्थियपरूवणा तप्पडिसेहो य] १. अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव एवं परूवेंति "एवं खलु चलमाणे अचलिते जाव निज्जरिज्जमाणे अणिज्जिण्णे। दो परमाणुपोग्गला एगयओ न साहन्नंति। कम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयतो न साहन्नंति ? दोण्हं परमाणुपोग्गलाणं नत्थि सिणेहकाए तम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ न साहन्नंति। तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, कम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति ? तिण्हं परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति। ते भिज्जमाणा दुहा वि तहा वि कज्जंति, दुहा कज्जमाणा एगयओ दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवति, एगयओ वि दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवति; तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति, एवं जाव चत्तारि, पंच परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, एगयओ साहन्नित्ता दुक्खत्ताए कज्जंति, दुक्खे वि य णं से सासते सया समितं चिज्जति य अवचिज्जति य। पुव्विं भासा भासा, भासिज्जमणी भासा अभासा, भासासमयवीतिक्कंतं च णं भासिया भासा भासा; सा किं भासओ भासा ? अभासओ भासा ? अभासओ णं सा भासा, नो खलु सा भासओ भासा। पुव्विं किरिया दुक्खा; कज्जमाणी किरिया अदुक्खा; किरियासमवीतिक्कंतं च णं कडा किरियादुक्खा जा सा पुव्विं किरिया दुक्खा, कज्जमाणी किरिया अदुक्खा, किरियासमयवीइक्कंतं च णं कडा किरिया दुक्खा, सा कि करणतो दुक्खा अकरणतो दुक्खा ? अकरणओ णं सा दुक्खा, णो खलु सा करणतो दुक्खा, सेवं वत्तव्वं सिया। अकिच्चं दुक्खं, अफुसं दुक्खं, अकज्जमाणकडं दुक्खं अकट्टु २. पाण-भूत-जीव-सत्ता वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया। से कहमेयं भंते ! एवं गोयमा ! जं णं ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया, जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि एवं खलु चलमाणे चलिते जाव निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे। दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति। कम्हा दो परमाणुपोग्गल एगयओ साहन्नंति ? दोण्हं परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, ते भिज्जमाणा दुहा कज्जंति, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ परमाणुपोग्गले भवति। तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, कम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति ? तिण्हं परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति; ते भिज्जमाणा दुहा वि तिहा वि कज्जंति, दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपदेसिए खंधे भवति, तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति १ एवं जाव चत्तारि पंच परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, साहन्नित्ता खंधत्ताए कज्जंति, खंधे वि य णं से असासते सया समियं उवचिज्जइ य अवचिज्जइ य। पुव्विं भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासमयवीतिक्कंतं च णं भासिता भासा अभासा; जा सा पुव्विं भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासमयवीतिक्कंतं च णं भासिता भासा अभासा, सा किं भासतो भासा अभासओ भासा ? भासओ णं सा भासा, नो खलु सा अभासओ भासा। पुव्विं किरिया अदुक्खा जहा भासा तहा भाणितव्वा किरिया वि जाव करणतो णं सा दुक्खा, नो खलु सा अकरणओ दुक्खा, सेवं वत्तव्वं सिया। किच्चं दुक्खं, फुसं दुक्खं, कज्जमाणकडं दुक्खं कट्टु कट्टु पाण-भूत-जीव-सत्ता वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया। [सु. २. एगं जीवं पडुच्च अण्णउत्थियाणं एगसमयकिरियादुयपरूवणाए पडिसेहो] २. अन्नउत्थिया णं भंते !

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवमाइक्खंति जाव एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो किरियाओ पकरेति, तं जहा इरियावहियं च संपराइयं च। जं समयं इरियावहियं पकरेइ तं समयं संपराइयं पकरेइ०, परउत्थियवत्तव्वं नेयव्वं। ससमयवत्तव्वयाए नेयव्वं जाव इरियावहियं वा संपराइयं वा। [सु. ३. निरयगईए उववातस्स विरहकालो] ३. निरयगती णं भंते ! केवतियं कालं विरहिता उववातेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता। एवं वक्कंतीपदं भाणितव्वं निरवसेसं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति। ☆☆☆ ।दसमो ॥ पढमं सत्तं समत्तं ॥ 卐卐卐 बीअं सयं [सु. १. बीयसयदसुद्देसनामपरूवणं] 卐卐卐 १: आणमति १ समुग्घाया २ पुढवी ३ इंदिय ४ णियंठ ५ भासाय ६। देव ७ सभ ८ दीव ९ अत्थिय १० बीयम्मि सदे दसुद्देसा ॥१॥ ☆ ☆ ☆ पढमो उद्देसो 'आणमति' ☆☆☆ [सु. २. पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ सु. २. पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ] २. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था। वण्णओ। सामी समोसढे। परिसा निग्गता। धम्मो कहितो। पडिगता परिसा। तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे अंतेवासी जाव पज्जुवासमाणे एवं वदासी [सु. ३. एगिंदिएसु ऊसासाइपरूवणं] ३. जे इमे भंते ! बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया जीवा एएसि णं आणामं वा पाणामं वा उस्सासं वा नीसासं वा जाणामो पासामो। जे इमे पुढविक्काइया जाव वणस्सतिकाइया एगिंदिया जीवा एएसि णं आणामं वा पाणामं वा उस्सासं वा निस्सासं वा ण याणामो ण पासामो, एए वि य णं भंते ! जीवा आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा ? हंता, गोयमा ! एए वि य णं जीवा आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। [सु. ४-७. जीव -चउवीसदंडएसु ऊसासाइदव्वसरूवपरूवणाइ] ४. (१) किं णं भंते ! एते जीवा आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा ? गोयमा ! दव्वतो णं अणंतपएसियाइं दव्वाइं, खेत्तओ णं असंखिज्जपएसोगाढाइं, कालओ अन्नयरट्ठितीयाइं, भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइ रसमंताइं फासमंताइ आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। (२) जाइं भावओ वण्णमंताइं आण० पाण० ऊस० नीस० ताइं किं एगवण्णाइं आणमंति पाणमंति ऊस० नीस० ? आहारगमो नेयव्वो जाव ति-चउ -पंचदिसिं। (५). किं णं भंते ! नेरइया आ० पा० उ० नी० ? तं चेव जाव नियमा आ० पा० उ० नी०। जीवा एगिंदिया वाघाय-निव्वाघाय भाणियव्वा। सेसा नियमा छद्दिसिं। (६). वाउयाए णं भंते ! वाउयाए चेव आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ? हंता, गोयमा ! वाउयाए णं वाउयाए जाव नीससंति वा। ७. (१) वाउयाए णं भंते ! वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता उदाइत्ता तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायाति ? हंता, गोयमा ! जाव पच्चायाति। (२) से भंते ! किं पुट्ठे उद्दाति ? अपुट्ठे उद्दाति ? गोयमा ! पुट्ठे उद्दाइ, नो अपुट्ठे उद्दाइ। (३) से भंते ! किं ससरीरी निक्खमइ, असरीरी निक्खमइ ? गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ? गोयमा ! वाउयायस्स णं चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए। ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेय-कम्मएहिं निक्खमति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-सिय ससरीरी सिय असरीरी निक्खमइ। [सु. ८-९. उवसंत-खीणकसाईण निग्गंथाणं संसारभमण- सिद्धिगमणपरूवणं] ८. (१) मडाई णं भंते ! नियंठे नो निरुद्धभवे, नो निरुद्धभवपवंचे, नो पहीणसंसारे, णो पहीणसंसारवेदणिज्जे, णो वोच्छिण्णसंसारे णो वोच्छिण्णसंसारवेदणिज्जे, नो निट्ठियट्ठे, नो निट्ठियट्ठकरणिज्जे पुणरवि इत्तत्थं हव्वमागच्छत्ति ? हंता, गोयमा ! मडाई णं नियंठे जाव पुणरवि इत्तत्थं हव्वमागच्छइ। (२) से णं भंते ! किं ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! पाणे त्ति वत्तव्वं सिया, भूते त्ति वत्तव्वं सिया, जीवे त्ति वत्तव्वं सिया, सत्ते त्ति वत्तव्वं सिया, विण्णू वि वत्तव्वं सिया, वेदा ति वत्तव्वं सिया पाणे भूए जीवे सत्ते विण्णू वेदा ति वत्तव्वं सिया। से केणट्ठेणं भंते ! पाणे त्ति वत्तव्वं सिया जाव वेदा ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! जम्हा आणमइ वा पाणमइ वा उस्ससइ वा नीससइ वा तम्हा पाणे त्ति वत्तव्वं सिया। जम्हा भूते भवति भविस्सति य तम्हा भूए त्ति वत्तव्वं सिया। जम्हा जीवे जीवइ जीवत्तं आउयं च कम्मं उवजीवइ तम्हा जीवे त्ति वत्तव्वं सिया। जम्हा सत्ते सुभासुभेहिं कम्मेहिं तम्हा सत्ते त्ति वत्तव्वं सिया। जम्हा-तित्त-वकडुय कसायंबिल-महुरे रसे जाणइ तम्हा विण्णू त्ति क्तव्यं सिया। जम्हा वेदेइ य सुह -दुक्खं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तम्हा वेदा ति वत्तव्वं सिया। से तेणट्ठेणं जाव पाणे त्ति वत्तव्वं सिया जाव वेदा ति वत्तव्वं सिया। ९. (१) मडाई णं भंते! नियंठे निरुद्धभवे निरुद्धभवपवंचे जाव निट्ठियट्ठकरणिज्जे णो पुणरवि इत्तत्थं हव्वमागच्छति? हंता, गोयमा! मडाई णं नियंठे जाव नो पुणरवि इत्तत्थं हव्वमागच्छति। (२) से णं भंते! किं ति वत्तव्वं सिया? गोयमा सिद्धे त्ति वत्तव्वं सिया, बुद्धे त्ति वत्तव्वं सिया, मुते त्ति वत्तव्वं०, पारगए त्ति व परंपरगए त्ति व०, सिद्धे बुद्धे मुते परिनिव्वुडे अंतकडे सव्वदुक्खप्पहीणे त्ति वत्तव्वं सिया। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, २ संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। [सु. १०. भगवओ महावीरस्स रायगिहाओ विहारो] १०. तए णं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारे विहरइ। [सु. ११-५४. खंदयपरिव्वायगवुत्तंतो सु. ११. भगवओ महावीरस्स कयंगलानयरीए समोसरणं] ११. तेणं कालेणं तेणं समएणं कयंगला नामं नगरी होत्था। वण्णओ। तीसे णं कयंगलाए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे छत्तपलासए नामं चेइए होत्था। वण्णओ। तए णं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णनाण-दंसणधरे जाव समोसरणं। परिसा निग्गच्छति। [सु. १२. सावत्थीवत्थव्वखंदयपरिव्वायगपरिचओ] १२. तीसे णं कयंगलाए नगरीए अदूरसामंते सावत्थी नामं नयरी होत्था। वण्णओ। तत्थ णं सावत्थीए नयरीए गद्दभालस्स अंतेवासी खंदए नामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायगे परिवसइ, रिउव्वेद- जजुव्वेद- सामवेद - अथव्वणवेद इतिहासपंचमाणं निघंटछट्ठाणं चउण्हं वेदाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं सारए वारए पारए सडंगवी सट्ठितंतविसारए संखाणे सिक्खा कप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोतिसामयणे अन्नेसु य बहूसु बंभण्णएसु पारिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था। [सु. १३-१६. खंदयपरिव्वाययं पइ पिंगलयनियंठस्स सअंत-अणंतलोगाइविसए पुच्छा खंदयस्स तुसिणीयत्तं च] १३. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पिंगलए नामं नियंठे वेसालियसावए परिवसइ। तए णं से पिंगलए णामं णियंठे वेसालियसावए अण्णदा कयाइं जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, २ खंदगं कच्चायणसगोत्तं इणमक्खेवं पुच्छे-मागहा! किं सअंते लोके, अणंते लोके १, सअंते जीवे अणंते जीवे २, सअंता सिद्धी अणंता सिद्धी ३, सअंते सिद्धे अणंते सिद्धे ४, केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढति वा हायति वा ५? एतावं ताव आयक्खाहि वुच्चमाणे एवं। १४. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते पिंगलएणं णियंठेणं वेसाली-सावएणं इणमक्खेवं पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिंछिए भेदसमावन्ने कलुसमावन्ने णो संचाएइ पिंगलयस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचि वि पमोक्खमक्खाइउं, तुसिणीए संचिट्ठइ। १५. तए णं से पिंगलए नियंठे वेसालीसावए खंदयं कच्चायणसगोत्तं दोच्चं पि तच्चं पि इणमक्खेवं पुच्छे मागहा! किं सअंते लोए जाव केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढइ वा हायति वा? एतावं ताव आइक्खाहि वुच्चमाणे एवं। १६. तए णं से खंदए कच्चायणसगोथे पिंगलएणं नियंठेणं वेसालीसावएणं दोच्चं पि तच्चं पि इणमक्खेवं पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावण्णे कलुसमावन्ने नो संचाएइ पिंगलयस्स नियंठस्स वेसालिसावयस्स किंचि वि पमोक्खमक्खाइउं, तुसिणीए संचिट्ठइ। [सु. १७-१९. कयंगलानयरीसमोसरियस्स भगवतो महावीरस्संतिए सावत्थीनयरीओ खंदयस्स आगमणं] १७. तए णं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग जाव महापहेसु महया जणसम्मद्दे इ वा जणवूहे इ वा परिसा निग्गच्छइ। तए णं तस्स खंदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था- 'एवं खलु समणे भगवं महावीरे, कयंगलाए नयरीए बहिया छत्तपलासए चेइए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं गच्छामि णं, समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसा मि सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता णमंसिता सक्कारेत्ता सम्माणित्ता कल्लाणं मंगलं देवतं चेतियं पज्जुवासिता इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, २ जेणेव परिव्वायावसहे तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता तिदंडं च कुंडियं च कंचणियं च करोडियं च भिसियं च केसरियं च छन्नालयं च अंकुसयं च पवित्तयं च गणेत्तियं च छत्तयं च वाहणाओ य पाउयाओ य धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हइत्ता परिव्वायावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तिदंड-कुंडिय-कंचणिय-करोडिय-मिसिय-केसरिय-छन्नालय-अंकुसय-पवित्तय-गणेत्तियहत्थगए छत्तोवाहणसंजुते धाउरत्तवत्थपरिहिए सावत्थीए नगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कयंगला नगरी जेणेव छत्तपलासए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। १८. (१) 'गोयमा !' इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी दच्छिहिसि णं गोयमा ! पुव्वसंगतियं। (२) कं भंते ! ? खंदयं नामं। (३) से काहे वा ? किह वा केवच्चिरेण वा ? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ सावत्थी नामं नगरी होत्था। वण्णओ। तत्थ णं सावत्थीए नगरीए गद्दभालस्स अंतेवासी खंदए णामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायए परिवसइ, तं चेव जाव जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए। से य अदूराइते बहुसंपत्ते अद्धाणपडिवन्ने अंतरापहे वट्टइ। अज्जेव णं दच्छिहिसि गोयमा !। (४) 'भंते !' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं वंदइ नमंसइ, २ एवं वदासी-पहू णं भंते ! खंदए कच्चायणसगोत्ते देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? हंता, पभू। १९. जावं च णं समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेइ तावं च से खंदए कच्चायणसगोत्ते तं देसं हव्वमागते। [सु. २०-२२ खंदय -गोयमपण्हुत्तरे भगवओ महावीरस्स परिचओ, खंदयकयं महावीरस्स वंदणाइ] २०. (१) तए णं भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं अदूरआगयं जाणित्ता खिप्पामेव अब्भुट्ठेति, खिप्पामेव पच्चुवगच्छइ, २ जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी 'हे खंदया !, सागयं खंदया !, सुसागयं खंदया !, अणुरागयं खंदया !, सागयमणुरागयं खंदया !। से नूणं तुमं खंदया ! सावत्थीए नयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं इणमक्खेवं पुच्छिए 'मागहा ! किं सअंते लोगे अणंते लोगे ? एवं तंचेव' जेणेव इहं तेणेव हव्वमागए। से नूणं खंदया ! अत्थे समत्थे ? हंता, अत्थि। (२) तए णं से खंदए कच्चायणसगोते भगवं गोयमं एवं वयासी से केस णं गोयमा ! तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा जेणं तव एस अट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ णं तुमं जाणसि ?। तए णं से भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी एवं खलु खंदया ! मम धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे उप्पन्नणाणं-दंसणधरे अरहा जिणे केवली तीय-पच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी जेणं ममं एस अट्ठे तव ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ णं अहं जाणामि खंदया !। (३) तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी गच्छामो णं गोयमा ! तव धम्मायरियं धम्मोवदेसयं समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो जाव पज्जुवासामो। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं०। (४) तए णं से भगवं गोयमे खंदएणं कच्चायणसगोत्तेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणयाए। २१. तेणं कालेणं २ समणे भगवं महावीरे वियडभोई याऽवि होत्था। तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स वियडभोगिस्स सरीरयं ओरालं सिंगारं कल्लाणं सिवं धण्णं मंगल्लं सस्सिरीयं अणलंकियविभुसियं लक्खण-वंजणगुणोववेयं सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणं चिट्ठइ। २२. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स वियडभोगिस्स सरीरयं ओरालं जाव अतीव २ उवसोभेमाणं पासइ, २ त्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए नंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणप्पयाहिणं करेइ जाव पज्जुवासइ। [सु. २३-२४. लोग -जीव-सिद्धि-सिद्धे पडुच्च सअंत -अणंतविसयाए खंदयपुच्छाए समाहाणं] २३. 'खंदया !' ति समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चाय० एवं वयासी से नूणं तुमं खंदया ! सावत्थीए नयरीए पिंगलएणं णियंठेणं वेसालियसावएणं इणमक्खेवं पुच्छिए 'मागहा ! किं सअंते लोए अणंते लोए ?' एवं तं चेव जाव जेणेव ममं अंतिए तेणेव हव्वमागए। से नूणं खंदया ! अयमट्ठे समट्ठे ? हंता, अत्थि। २४. (१) जे वि य ते खंदया ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था किं सअंते लोए, अणंते लोए ? तस्स वि य णं अयमट्ठे एवं खलु मए खंदया ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते, तं जहा दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ णं एगे लोए सअंते। खेत्तओ णं लोए असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खंभेणं, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं प०, अत्थि पुण से अंते। कालओ णं लोए ण कयावि न आसी न कयावि न भवति न कयावि न भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सइ य, धुवे णियए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे, णत्थि पुण से अंते। भावओ णं लोए अणंता वण्णपज्जवा गंध० रस० फासपज्जवा, अणंता संठाणपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अंते। से त्तं खंदगा ! दव्वओ लोए सअंते, खेत्तओ लोए सअंते, कालतो लोए अणंते, भावओ लोए अणंते। (२) जे वि य ते खंदया ! जाव सअंते जीवे, अणंते जीवे ? तस्स वि यं णं अयमट्ठे एवं खलु जाव दव्वओ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं एगे जीवे सअंते। खेत्तओ णं जीवे असंखेज्जपएसिए असंखेज्जपदेसोगाढे, अत्थि पुण से अंते। कालओ णं जीवे न कयावि न आसि जाव निच्चे, नत्थि पुणार से अंते ! भावओ णं जीवे अणंता णाणपज्जवा अणंता दंसणपज्जवा अणंता चरित्तपज्जवा अणंता गरुयलहुयपज्जवा अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अंते। से त्तं दव्वओ जीवे सअंते, खेत्तओ जीवे सअंते, कालओ जीवे अणंते, भावओ जीवे अणंते। (३) जे वि य ते खंदया ! पुच्छा। दव्वओ णं एगा सिद्धी सअंता; खेत्तओ णं सिद्धी पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च जोयणसयसहस्साइं तीसं च जोयणसहस्साइं दोन्नि य अउणापन्ने जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं प०, अत्थि पुण से अंते; कालओ णं सिद्धी न कयावि न आसि०; भावओ य जहा लोयस्स तहा भाणियव्वा। तत्थ दव्वओ सिद्धी सअंता, खेत्तओ सिद्धी सअंता, कालओ सिद्धी अणंता, भावओ सिद्धी अणंता। (४) जे वि य ते खंदया ! जाव किं अणंते सिद्धे ? तं चेव जाव दव्वओ णं एगे सिद्धे सअंते; खेत्तओ णं सिद्धे असंखेज्जपएसिए असंखेज्जपदेसोगाढे, अत्थि पुण से अंते; कालओ णं सिद्धे सादीए अपज्जवसिए, नत्थि पुण से अंते; भावओ सिद्धे अणंता णाणपज्जवा, अणंता दंसणपज्जवा जाव अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अंते। से त्तं दव्वओ सिद्धे सअंते, खेत्तओ सिद्धे सअंते, कालओ सिद्धे अणंते, भावओ सिद्धे अणंते। [सु. २५-३१. मरणं पडुच्च संसारवड्ढि -हाणिविसयाए खंदयपुच्छाए बाल- पंडियमरणपरूवणापुव्वयं समाहाणं] २५. जे वि य ते खंदया ! इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढति वा हायति वा ? तस्स वि य णं अयमट्ठे -एवं खलु खंदया ! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते। तं जहा　बालमरणे पंडियमरणे य। २६. से किं तं बालमरणे ? बालमरणे दुवालसविहे प०, तं -वलयमरणे १ वसट्टमरणे २ अंतोसल्लमरणे ३ तब्भमरणे ४ गिरिपडणे ५ तरुपडणे ६ जलप्पवेसे ७ जलणप्पवेसे ८ विसभक्खणे ९ सत्थोवाडणे १० वेहाणसे ११ गद्धपट्ठे १२। इच्चेतेणं खंदया ! दुवालसविहेणं बालमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ, तिरिय० मणुय० देव०, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टइ, से त्तं मरमाणे वड्ढइ वड्ढइ। से त्तं बालमरणे। २७. से किं तं पंडियमरणे ? पंडियमरणे दुविहे प०, तं०　पाओवगमणे य भत्तपच्चक्खाणे य। २८. से किं तं पाओवगमणे ? पाओवगमणे दुविहे प०, तं०　नीहारिमे य अनीहारिमे य, नियमा अप्पडिकम्मे। से त्तं पाओवगमणे। २९. से किं तं भत्तपच्चक्खाणे ? भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पं०, तं०　नीहारिमे य अनीहारिमे य, नियमा सपडिकम्मे। से त्तं भत्तपच्चक्खाणे। ३०. इच्चेतेणं खंदया ! दुविहेणं पंडियमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं अप्पाणं विसंजोएइ जाव वीईवयति। से त्तं मरमाणे हायइ हायइ। से त्तं पंडियमरणे। ३१. इच्चेएणं खंदया ! दुविहेणं मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढइ वा हायति वा। [सु. ३२-३८. खंदयस्स पडिबोहो पव्वज्जागहणं विहरणं च, भगवओ वि विहरणं] ३२. (१) एत्थ णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते संबुद्धे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, २ एवं वदासी　इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामेत्तए। (२) अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं। ३३. तए णं समणे भगवं महावीरे खंदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ। धम्मकहा भाणियव्वा। ३४. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे जाव हियए उट्ठाए उट्ठेइ, २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, २ एवं वदासी-सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं भंते !, तहमेयं भंते !, अवितहमेयं भंते !, असंदिद्धमेयं भंते !, इच्छियमेयं भंते !, पडिच्छियमेयं भंते !, इच्छियपडिच्छियमेयं भंते !, से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, २ उत्तरपुरत्थिमं दिसीभायं अवक्कमइ, २ तिदंडं च कुंडियं च जाव धातुरत्ताओ य एगंते एडेइ, २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता जाव नमंसित्ता एवं वदासी-आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्तपलित्ते णं भंते ! लोए जराए मरणेण य। से जहानामए केइ गाहावती अगारंसि झियायमाणंसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पसारे मोल्लगरुए तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ, एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ। एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे

भंडे इट्ठे कंते पिए मणुन्ने मणमे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे, मा णं सीतं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं चोरा, मा णं वाला, मा णं दंसा, मा णं मसगा, मा णं वाइय -पित्तिय -सिंभिय-सन्निवाइय विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु, एस मे नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुंडावियं, सयमेव सेहादियं सयमेव सिक्खावियं, सयमेव आयार-गोयरं विणयवेयाणिय-चरण-करण-जाया-मायावत्तियं धम्ममाइक्खिअं। ३५. तए णं समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्तं सयमेव पव्वावेइ जाव धम्ममाइक्खइ एवं देवाणुप्पिया! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं, एवं निसीतियव्वं, एवं तुयट्टियव्वं, एवं भुंजियव्वं, एवं भासियव्वं, एवं उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भुएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेण संजमियव्वं, अस्सिं च णं अट्ठे णो किंचि वि पमाइयव्वं। ३६. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं संपडिवज्जति, तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ, तह निसीयति, तह तुयट्टइ, तह भुंजइ, तह भासइ, तह उट्ठाय २ पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमइ, अस्सिं च णं अट्ठे णो पमायइ। ३७. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते अणगारे जाते इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिएमणसमिए वयसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभचारी चाइ लज्जू धण्णे खंतिखमे जितिंदिए सोहिए अणियाणे अप्पुस्सुए अबहिल्लेस्से सुसामण्णरए दंते इणमेव णिग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरइ। ३८. तए णं समणे भगवं महावीरे कयंगलाओ नयरीओ छत्तपलासाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, २ बहिया जणवयविहारं विहरति। [सु. ३९-४६. खंदयस्स एक्कारसंगऽज्झयणं भिक्खुपडिमाऽऽराहणा गुणरयणतवोकम्माणुट्ठाणं च] ३९. तए णं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, २ एवं वयासी इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह। ४०. तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ जाव नमंसित्ता मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। ४१. (१) तए णं से खंदए अणगारे मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं अहासम्मं काएण फासेति पालेति सोहेति तीरेति पूरेति किट्टेति अणुपालेइ आणाए आराहेइ, काएण फासित्ता जाव आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २ समणं भगवं जाव नमंसित्ता एवं वयासी इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं०। (२) तं चेव। ४२. एवं तेमासियं चाउम्मासियं पंच- छ-सत्तमा०। पढमं सत्तराइंदियं, दोच्चं सत्तराइंदियं, तच्चं सतरातिंदियं, रातिंदियं, एगराइयं। ४३. तए णं से खंदए अणगारे एगराइयं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, २ समणं भगवं महावीरं जाव नमंसित्ता एवं वदासी- इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं०। ४४. तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे जाव नमंसित्ता गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति। तं जहा पढमं मासं चउत्थं चउत्थेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेण य। दोच्चं मासं छट्ठं छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं० दिया ठाणुक्कुडुए सुराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेण य। एवं तच्चं मासं अट्ठमं अट्ठमेणं, चउत्थं मासं दसमं दसमेणं, पंचमं मासं बारसमबारसमेणं, छट्ठं मासं चोद्दसमं चोद्दसमेणं, सत्तमं मासं सोलसमं २, अट्ठमं मासं अट्ठारसमं २, नवमं मासं वीसतिमं २, दसमं मासं बावीसतिमं २, एक्कारसमं मासं चउव्वीसतियं (२) बारसमं मासं छव्वीससतिमं २. तेरसमं मासं अट्ठावीसतिमं २, चोद्दसमं मासं तीसतिमं २, पन्नरसमं मासं बत्तीसतिमं २, सोलसमं मासं चोत्तीसतिमं २ अनिक्खिवेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए, आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणं। ४५. तए णं से खंदए अणगारे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं अहासुत्तं अहाकप्पं जाव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, २ बहूहिं चउत्थ -छट्ठऽट्ठम- दसम -दुवालसेहिं मासऽद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरति। ४६. तए णं से खंदए अणगारे तेणं ओरालेणं विपुलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धण्णेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएणं उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं उदारेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाते यावि होत्था, जीवंजीवेण गच्छइ जीवंजीवेण चिट्ठइ, भासं भासित्ता वि गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाति, भासं भासिस्सामीति गिलाति; से जहा नाम ए कट्ठसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा पत्ततिलभंडगसगडिया इ वा एरंडकट्ठसगडिया इ वा इंगालसगडिया इ वा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, एवामेव खंदए वि अणगारे ससद्दं गच्छइ, ससद्द चिट्ठइ, उवचिते तवेणं, अवचिए मंस -सोणितेणं, हुयासणे विव भासरासिपडिच्छन्ने तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अतीव २ उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ। [सु. ४७-५१. खंदयस्स संलेहणाभावणा संलेहणा कालगमणं च] ४७. तेणं कालेणं २ रायगिहे नगरे जाव समोसरणं जाव परिसा पडिगया। ४८. तए णं तस्स खंदयस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव (सु. १७) समुप्पज्जित्था "एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं जाव (सु. ४६) किसे धमणिसंतए जाते जीवंजीवेणं गच्छामि, जीवंजीवेणं चिट्ठामि, जाव गिलामि, जाव (सु.४६) एवामेव अहं पि ससद्दं गच्छामि, ससद्दं चिट्ठामि, तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमलकोमलुम्मिल्लियम्मि अहपंडरे पभाए रत्तासोयप्पकासकिंसुयसुयमुह- गुंजऽद्धरागसरिसे कमलागरसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासित्ता, समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाणि आरोवेत्ता, समणा य समणीओ य खामेत्ता, तहारूवेहिं थेरेहिं कडाऽऽईहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहित्ता, मेघघणसन्निगासं देवसन्निवातं पुढवीसिलावट्टयं पडिलेहित्ता, दब्भसंथारयं, दब्भसंथारोवगयस्स संलेहणाझूसणाझसियस्स भत्त-पाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, २ त्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते जेणेव समणे भगवं महावीरे जाव पज्जुवासति। ४९. 'खंदया! इ समणे भगवं महावीरे खंदयं अणगारं एवं वयासी से नूणं तव खंदया! पुव्वरत्तावरत्त० जाव (सु.४८) जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव (सु.१७) समुप्पज्जित्था 'एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विपुलेणं तं चेव जाव (सु. ४८) कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु' एवं संपेहेसि, २ कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते जेणेव मम अंतिए तेणेव हव्वमागए। से नूणं खंदया! अट्ठे समट्ठे? हंता, अत्थि। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह। ५०. तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठ० जाव हयहियए उट्ठाए उट्ठेइ, २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ जाव नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेइ, २ त्ता समणे य समणीओ य खामेइ, २ त्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाऽऽईहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं २ दुरूहेइ, २ मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलावट्टयं पडिलेहेइ, २ उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, २ दब्भसंथारयं संथरेइ, २ दब्भसंथारयं दुरूहेइ, २ दब्भसंथारोवगते पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वदासि नमोऽत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं, नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगते, पासउ मे भयवं तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ नमंसति, २ एवं वदासी "पुव्विं पि मए समणस्स भगवओ महावीस्स अंतिए सव्वे पाणातिवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाए जावज्जीवाए, इयाणिं पि य णं समणस्स भगवओमहावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि। एवं सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए। जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं जाव फुसंतु त्ति कट्टु एयं पि णं चरिमेहिं उस्सास-नीसासेहिं वोसिरामि" त्ति कट्टु संलेहणाझूसणाझूसिए भत्त-

पाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरति। ५१. तए णं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमादियाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए। [सु. ५२. भगवओ पुरओ थेरकयं खंदयपत्त-चीवरसमाणयणं] ५२. तए णं ते थेरा भगवंतो खंदयं अणगारं कालगयं जाणित्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति, २ पत्त-चीवराणि गिण्हंति, २ विपुलाओ पव्वयाओ सणियं २ पच्चोरुहंति, २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, २ समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, २ एवं वदासी एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदए नामं अणगारे पगइभद्दए पगतिविणीए पगतिउवसंते पगतिपयणुकोह- माण -माया -लोभे मिउ -मद्दवसंपन्ने अल्लीणे भद्दए विणीए। से णं देवाणुप्पिए हिं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाणि आरोवित्ता समणे य समणीओ य खामेत्ता, अम्हेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं तं चेव निरवसेसं जाव (सु. ५०) अहाणुपुव्वीए कालगए। इमे य से आयारभंडए। [सु. ५३-५४. खदयभवंतरविसयगोयमपुच्छासमाहाणे भगवओ अच्चुयकप्पोववाय -तयणंतरसिज्झणापरूवणा] ५३. 'भंते!' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, २ एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदए नामं अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववण्णे ? 'गोयमा!' इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी- एवं खलु गोयमा! ममं अंतेवासी खंदए नामं अणगारे पगतिभद्दए जाव से णं मए अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाइं आरोवित्ता तं चेव सव्वं अविसेसियं नेयव्वं जाव (सु. ५०-५१) आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं एगइयाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती प०। तत्थ णं खंदयस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ५४. से णं भंते! खंदए देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठितीखएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति। ॥ खंदओ समत्तो ☆ ☆ ☆। **बितीयसयस्स पढमो ॥२.१॥** ☆ ☆ ☆ **बीओ उद्देसो 'समुग्घाया'** [सु. १. सत्तसमुग्घायनामाइजाणणत्थं पण्णवणासुत्तसमुग्घायपदावलोयणनिद्देसो] १. कति णं भंते! समुग्घाता पण्णत्ता ? गोयमा! सत्त समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा छाउमत्थियसमुग्घायवज्जं समुग्घायपदं णेयव्वं।☆ ☆ ☆ ॥ **बितीयसए बितीयोद्देसो ॥२.२॥**☆ ☆ ☆ **तइओ उद्देसो 'पुढवी'** ☆ ☆ ☆ [सु. १. सत्तनिरयनामाइजाणणत्थं जीवाभिगसुत्तावलोयणनिद्देसो] १. कति णं भंते! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? जीवाभिगमे नेरइयाणं जो बितिओ उद्देसो सो नेयव्वो। पुढविं ओगाहित्ता निरया संठाणमेव बाहल्ल। जाव किं सव्वे पाणा उववन्नपुव्वा ? हंता, गोयमा! असइं अदुवा अणंतखुत्तो।☆ ☆ ☆ ॥ **पुढवी उद्देसो ॥२.३॥** ☆ ☆ ☆ **चउत्थो उद्देसो 'इंदिय'**☆ ☆ ☆ [सु. १. इंदियवत्तव्वयाए पन्नवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] १. कति णं भंते! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा! पंच इंदिया पण्णत्ता, तं जहा पढमिल्लो इंदियउद्देसओ नेयव्वो, 'संठाणं बाहल्लं पोहत्तं जाव अलोगो'।☆ ☆ ☆ **इंदियउद्देसो ॥२.४॥**☆ ☆ ☆ **पंचमो उद्देसो 'नियंठ** ☆ ☆ ☆ सु. १. नियंठदेवपरियारणाए अन्नउत्थियमतपरिहारपुव्वयं भगवओ परूवणं १. अण्णउत्थिया णं भंते! एवमाइक्खंति भासंति पण्णवेंति परूवेंति एवं खलु नियंठे कालगते समाणे देवब्भूएणं अप्पाणेणं से णं तत्थ अन्ने देवे, नो अन्नेसिं देवाणं देवीओ अहिजुंजिय २ परियारेइ १, णो अप्पणच्चियाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ २, अप्पणा मेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेइ ३; एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं दो वेदे वेदेइ, तं जहा इत्थिवेदं च पुरिसवेदं च। एवं परउत्थियवत्तव्वया नेयव्वा जाव इत्थिवेदं च पुरिसवेदं च। से कहमेयं भंते! एवं ? गोयमा! जं णं ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव इत्थिवेदं च पुरिसवेदं च। जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि भा० प० परू० एवं खलु निअंठे कालगए समाणे अन्नयरेसु देवकोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति महिड्ढिएसु जाव महाणुभागेसु दूरगतीसु चिरट्ठितीएसु। से णं तत्थ देवे भवति महिड्ढीए जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे जाव पडिरूवे। से णं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ अन्ने देवे, अन्नेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ १, अप्पणच्चियाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ २, नो अप्पणामेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेइ ३; एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं एगं वेदं वेदेइ, तं जहा इत्थिवेदं वा पुरिसवेदं वा, जं समयं इत्थिवेदं वेदेइ णो तं समयं पुरिसवेयं वेएइ, जं समयं पुरिसवेयं वेएइ णो तं समयं इत्थिवेयं वेदेइ। (१) इत्थिवेयस्स उदएणं नो पुरिसवेदं वेएइ पुरिसवेयस्स उदएणं नो इत्थिवेयं वेएइ। एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं वेदं वेदेइ, तं जहा इत्थिवेयं वा पुरिसवेयं वा। इत्थी इत्थिवेएणं उदिण्णेणं पुरिसं पत्थेइ, पुरिसो पुरिसवेएणं उदिण्णेणं इत्थिं पत्थेइ। दो वि ते अन्नमन्नं पत्थेंति, तं जहा इत्थी वा पुरिसं, पुरिसे वा इत्थिं। [सु. २-६. उदगगब्भ-तिरिक्खजोणियगब्भ- मणुस्सीगब्भ- कायभवत्थ- जोणिब्भूयबीयाणं कालट्ठितीपरूवणं] २. उदगगब्भे णं भंते ! 'उदगगब्भ' त्ति कालतो केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा। ३. तिरिक्खजोणियगब्भे णं भंते ! 'तिरिक्खजोणियगब्भे' त्ति कालओ केवच्चिरं होति ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अट्ठ संवच्छराइं। ४. मणुस्सीगब्भे णं भंते ! 'मणुस्सीगब्भे' त्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं। ५. कायभवत्थे णं भंते ! 'कायभवत्थे' त्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं चउव्वीसं संवच्छराइं। ६. मणुस्स-पंचेंदियतिरिक्खजोणियबीए णं भंते ! जोणिब्भूए केवतियं कालं संचिट्ठइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता। [सु. ७-८. एगभवग्गहणं पडुच्च एगजीवस्स जणय-पुत्तसंखापरूवणं] ७. एगजीवे णं भंते ! एगभवग्गहणेणं केवतियाणं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! जहन्नेणं इक्कस्स वा दोण्हं वा तिण्हं वा, उक्कोसेणं सयपुहुत्तस्स जीवाणं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति। ८. (१) एगजीवस्स णं भंते ! एगभवग्गहणेणं केवइया जीवा पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! जहन्नेणं इक्को वा दो वा तिण्णिवा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति। २ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ- जाव हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! इत्थीए य पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणीए मेहुणवत्तिए नामं संजोए समुप्पज्जइ। ते दुहओ सिणेहं संचिणंति, २ तत्थ णं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति। से तेणट्ठेणं जाव हव्वमागच्छंति। [सु. ९. मेहुणसेवणाअसंजमस्सोदाहरण] ९. मेहुणं भंते ! सेवमाणस्स केरिसिए असंजमे कज्जइ ? गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे रूयनालियं वा बूरनालियं वा तत्तेणं कणएणं समभिधंसेज्जा। एरिसए णं गोयमा ! मेहुणं सेवमाणस्स असंजमे कज्जइ। सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरति। [सु. १०. भगवओ जणवयविहारो] १०. तए णं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, २ बहिया जणवयविहारं विहरति। [सु. ११. तुंगियानगरीसमणोवासयाणं वण्णओ] ११. तेणं कालेणं २ तुंगिया नामं नगरी होत्था। वण्णओ। तीसे णं तुंगियाए नगरीए बहिया उत्तरपुरित्थिमे दिसीभाए पुप्फवतीए नामं चेतिए होत्था। वण्णओ। तत्थ णं तुंगियाए नगरीए बहवे समणोवासया परिवसंति अड्ढा दित्ता वित्थिण्णविपुलभवण-सयणाऽऽसण- जाण-वाहणाइण्णा बहुधण-बहुजायरूव-रयया आयोग-पयोगसंपउत्ता विच्छड्डियविपुलभत्त-पाणा बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेल-यप्पभूता बहुजणस्स अपरिभूता अभिगतजीवाजीवा उवलद्धपुण्ण-पावा आसव-संवर-निज्जर-किरयाहिकरण-बंधमोक्खकुसला असहेज्जदेवासुर-नाग-सुवण्ण-जक्खरक्खस-किन्नर-किंपुरिस-गरुल -गंधव्व-महोरगादिएहिं देवगणेहिं निग्गंथातो पावयणात्तो अणतिक्कमणिज्जा, णिग्गंथे पावयणे निस्संकिया निक्कंखिता निव्वितिगिंच्छा लद्धट्ठा गहितट्ठा पुच्छिंतट्ठा अभिगतट्ठा विणिच्छियट्ठा, अट्ठि-मिंजपेम्माणुरागरत्ता 'अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे,' ऊसियफलिहा अवंगुतदुवारा चियत्तंतेउर-घरप्पवेसा, बहूहिं सीलव्वत-गुण वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं चाउद्दसऽट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमाणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा, समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगेणं ओसह-भेसज्जेण य पडिलाभेमाणा, अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति। [सु. १२. पासावच्चिज्जथेराणं वण्णोओ] १२. तेणं कालेणं २ पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना बलसंपन्ना रूवसंपन्ना विणयसंपन्ना णाणसंपन्ना दंसणसंपन्ना चरित्तसंपन्ना लज्जासंपन्ना लाघवसंपन्ना ओयंसी तेयंसी वचतचंसी जसंसी जितकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा जितिंदिया

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जितपरीसहा जीवियासा-मरणभयविप्पमुक्का जाव कुत्तयावणभूता बहुस्सुया बहुपरिवारा, पंचहिं अणगारसतेहिं सद्धिं संपरिवुडा, अहाणुपुव्विं चरमाणा, गामाणुगामं दूइज्जमाणा, सुहंसुहेणं विहरमाणा जेणेव तुंगिया नगरी, जेणेव पुप्फवतीए चेतिए तेणेव उवागच्छंति, २ अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ताणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति। [१३-१५. तुंगियानगरीसमणोवासयकयं पासावच्चिज्जथेराणं अभिगम-वंदण-पज्जुवासणाइयं, थेरकया धम्मदेसणा य] १३. तए णं तुंगियाए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-महापह-पहेसु जाव एगदिसाभिमुहा णिज्जायंति। १४. तए णं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठा जाव सद्दावेंति, २ एवं वदासी एवं खलु देवाणुप्पिया! पासावच्चेज्जा थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना जाव अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ताणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरंति। तं महाफलं खलु देवाणुप्पिया! तहारूवाणं थेराणं भगवंताणं णाम-गोत्तस्स वि सवणयाए किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए? जाव गहणयाए? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! थेरे भगवंते वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो, एयं णं इहभवे वा परभवे वा जाव अणुगामियत्ताए भविस्सतीति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, २ जेणेव सयाइं सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, २ ण्हाया कयबलिकम्मा कतकोउयमंगलपायच्छित्ता, सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवराइं परिहिया, अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहिं २ गेहेहिंतो पडिनिक्खमंति, २ त्ता एगतओमेलायंति, २ पायविहारचारेणं तुंगियाए नगरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छंति, २ जेणेव पुप्फवतीए चेतिए तेणेव उवागच्छंति, २ थेरे भगवंते पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति, तं जहा सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणताए १ अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणताए २ एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं ३ चक्खुप्फासे अंजलिप्पग्गहेणं ४ मणसो एगत्तीकरणेणं ५; जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, २ तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति, २ जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासेंति, तं जहा काइ० वाइ० माण०। तत्थ काइयाए - संकु-चियपाणि-पाए सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएण पंजलिउडे पज्जुवासंति। वाइयाए जं जं भगवं वागरेति 'एवमेयं भंते!, तहमेय भं०!, अवितहमेयं भं०!, असंदिद्धमेयं भं०!, इच्छियमेयं भं०!, पडिच्छियमेयं भं०!, इच्छियपडिच्छियमेयं भं०!, वायाए अपडिकूलेमाणा विणएणं पज्जुवासंति। माणसियाए संवेगं जणयंता तिव्वधम्माणुरागरत्ता विगह-विसोत्तियपरिवज्जियमई अन्नत्थ कत्थइ मणं अकुव्वमाणा विणएणं पज्जुवासंति। १५. तए णं ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं तीसे य महतिमहालियाए परिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेंति, जहा केसिसामिस्स जाव समणोवासयत्ताए आणाए आराहगे भवति जाव धम्मो कहिओ। [सु. १६-१९. पासावच्चिज्जथेराणं देसाणए तव-संजमफलपरूवणापुव्वयं देवलोओववाहेउपरूवणा, थेराणं जणवयविहारा य] १६. तए णं ते समणोवासया थेराणं भगवंताणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हयहिदया तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति, २ जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति, २ एवं वदासी संजमे णं भंते! किंफले? तवे णं भंते! किंफले? तए णं ते थेरा भगवंतो ते समणोवासए एवं वदासी संजमे णं अज्जो! अणण्हखले तवे वोदाणफले। १७. (१) तए णं ते समणोवासया थेरे भगवंते एवं वदासी जइ णं भंते! संजमे अणण्हयफले, तवे वोदाणफले किंपत्तियं णं भंते! देवा देवलोएसु उववज्जंति? (२) तत्थ णं कालियपुत्ते नामं थेरे ते समणोवासए एवं वदासी पुव्वतवेणं अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति। (३) तत्थ णं मेहिले नामं थेरे ते समणोवासए एवं वदासी पुव्वसंजमेणं अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति। (४) तत्थ णं आणंदरक्खिए णामं थेरे ते समणोवासए एवं वदासी कंगियाए अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति, (५) तत्थ णं कासवे णागं थेरे ते समणोवासए एवं वदासी संगियाए अज्जो देवा देवलोएसुं उववज्जंति पुव्वतवेणं पुव्वसंजमेणं कम्मियाए संगियाए अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति। सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आतभाववत्तव्वयाए। १८. तए णं ते समणोवासया थेरेहिं भगवंतेहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठा थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, २ पसिणाइं पुच्छंति, २ अट्ठाइं उवादियंति, २ उट्ठाए उट्ठेंति, २ थेरे भगवंते तिक्खुत्तो वंदंति णमंसंति, २ थेराणं भगवंताणं अंतियाओ पुप्फवतियाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, २ जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। १९. तए णं ते थेरा अन्नया कयाइ तुंगियाओ पुप्फवतिचेइयाओ पडिनिग्गच्छंति, २ बहिया जणवयविहारं विहरंति। [सु. २०-२५ रायगिहे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिक्खायरियागयस्स गोयमास्स तुंगियानगरित्थपासावच्चिज्जथेरपरूवणानिसमणं, भगवओ पुरओ पुच्छा, पासावच्चिज्जथेरपरूवणाए भगवओ अविरोहनिद्देसो य] २०. तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नगरे जाव परिसा पडिगया। २१. तेणं कालेणं २ समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदीभूतीनामं अणगारे जाव संखित्तविउलतेयलेस्से छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे जाव विहरति। २२. तए णं से भगवं गोतमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरसीए झाणं झियायइ, ततियाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेति, २ भायणाइं वत्थाइं पडिलेहेइ, २ भायणाइं पमज्जति, २ भायणाइं उग्गाहेति, २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, २ समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, २ एवं वदासी इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भुणुण्णाए उट्ठक्खमणपारगंसि रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह। २३. तए णं भगवं गोतमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ गुणसिलाओ चेतियाओ पडिनिक्खमइ, २ अतुरितमचवलसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरतो रियं सोहेमाणे २ जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छइ, २ रायगिहे नगरे उच्चनीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडति। २४. तए णं से भगवं गोतमे रायगिहे नगरे जाव (सु.२३) अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेति "एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुंगियाए नगरीए बहिया पुप्फवतीए चेतिए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणावासएहिं इमाइं एतारूवइं वागरणाइं पुच्छिया संजमे णं भंते ! किंफले, तवे णं भंते ! किंफले ? । तए णं ते थेरा भगवंतो ते समणोवासए एवं वदासी संजमे णं अज्जो ! अणण्हयफले, तवे वीदाणफले तं चेव जाव (सु. १७) पुव्वतवेणं पुव्वसंजमेणं कम्मियाए संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति, सच्चे णं एस मट्ठे, णो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए'' से कहमेतं मन्ने एवं ?। २५. (१) तए णं से भगवं गोयमे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जायसड्ढे जाव समुप्पन्नकोतुहल्ले अहापज्जत्तं समुदाणं गेण्हति, २ रायगिहातो नगरातो पडिनिक्खमति, २ अतुरियं जाव सोहमाणे जेणेव गुणसिलाए चेतिए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवा०, २ सम० भ० महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमति, एसणमणेसणं आलोएति, २ भत्तपाणं पडिदंसेति, २ समणं भ० महावीरं जाव एवं वदासी "एवं खलु भंते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाते समाणे रायगिहे नगरे उच्च-नीय- मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि एवं खलु देवा० ! तुंगियाए नगरीए बहिया पुप्फवईए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एतारूवाइं वागरणाइं पुच्छिता संजमे णं भंते ! किंफले ? तवे किंफले ? तं चेव जाव (सु. १७) सच्चे णं एस मट्ठे, णो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए'। (२) "तं पभू णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एतारूवाइं वागरणाइं वागरित्तए ? उदाहु अप्पभू ?, समिया णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासगाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरित्तए ? उदाहु असमिया ?, आउज्जिया णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरित्तए ? उदाहु अणाउज्जिया पलिउज्जिया णं भंते ! ते थेरा भगवंतो पुव्वतवेणं तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरित्तए ? उदाहु अपलिउज्जिया ?, पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलाएसु उववज्जंति, पुव्वसंजमेणं०, कम्मियाए०, संगियाए०, पुव्वतवेणं पुव्वसंजमेणं कम्मियाए संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति। सच्चे णं एस मट्ठे णो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए ?''। (३) पभू णं गोतमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तएणो चेव णं अप्पभू, तह चेव नेयव्वं अविसेसियं जाव पभू समिया आउज्जिया पलिउज्जिया जाव सच्चे णं एस मट्ठे, णो चेव णं आयभाववइव्वयाए। (४) अहं पि य णं गोयमा ! एवमाइक्खामि भासेमि पण्णवेमि परूवेमि पुव्वतवेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसंजमेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति, कम्मियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति, संगियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वतवेणं पुव्वसंजमेणं कम्मियाए संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति; सच्चे णं एस मट्ठे, णो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए। [सु. २६. समण-माहणपज्जुवासणाए अणंतर-परंपरफलपरूवणा] २६. (१) तहारूवं णं भंते ! समणं वा माहणं वा पज्जूवासमाणस्स किंफला पज्जुवासणा ? गोयमा ! सवणफला। (२) से णं भंते ! सवणे किंफले ? णाणफले। (३) से णं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भंते ! नाणे किंफले ? विण्णाणफले। (४) से णं भंते ! विण्णाणे किंफले ? पच्चक्खाणफले। (५) से णं भंते ! पच्चक्खाणे किंफले ? संजमफले (६) से णं भंते ! संजमे किंफले ? संजमफले (६) से णं भंते ! संजमे किंफले ? अणण्हयफले। (७) एवं अणण्हये तवफले। तवे वोदाणफले। वोदाणे अकिरियाफले। (८) से णं भंते ! अकिरिया किंफला ? सिद्धिपज्जवसाणफला पण्णत्ता गोयमा !। गाहा सवणे णाणे य विण्णाणे पच्चक्खाणे य संजमे। अणण्हये तवे चेव वोदाणे अकिरिया सिद्धी ॥१॥ [सु. २७. वेभारपव्वयाहोभागगय 'महातवोवतीर' नामगहरयविसए अण्णउत्थियपरूवणापडिसेहपुव्वयं भगवओ परूवणा] २७. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति भासेंति पण्णवेंति परूवेंति एवं खलु रायगिहस्स नगरस्स बहिया वेभारस्स पव्वयस्स अहे एत्थ णं महं एगे हरए अघे पण्णत्ते अणेगाइं जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं नाणादुमसंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए जाव पडिरूवे। तत्थ णं बहवे ओराला बलाहया संसेयंति सम्मुच्छंति वासंति तव्वतिरित्ते य णं सया समियं उसिणे २ आउकाए अभिनिस्सवइ। से कहमेतं भंते ! एवं ? गोयमा ! जं णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव जे ते एवं परूवेंति मिच्छं ते एवमाइक्खंति जाव सव्वं नेयव्वं। अहं पुण गोतमा ! एवमाइक्खामि भा० पं० प० एवं खलु रायगिहस्स नगरस्स बहिया वेभारस्स पव्वतस्स अदूरसामंते एत्थ णं महातवोवतीरप्पभवे नामं पासवणे पण्णत्ते, पंच धणुसताणि आयाम- विक्खंभेणं नाणादुमसंउमडिउद्देसे सस्सिरीए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे। तत्थ णं बहवे उसिणजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति तव्वतिरित्ते वि य णं सया समितं उसिणे २ आउयाए अभिनिस्सवति एस णं गोतमा ! महातवोवतीरप्पभवे पासवणे, एस णं गोतमा ! महातवोसतीरभवस्स पासवणस्स अट्ठे पण्णत्ते। सेवं भंते ! २ त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति ॥ ॥२.५॥ ☆☆☆ **छट्ठो उद्देसो 'भासा'** ☆☆☆ [सु. १. भासासरूवाइजाणणत्थं पण्णवणासुत्तस्स भासापदावलोयणनिद्देसो] १. से णूणं भंते ! 'मन्नामी'ति ओधारिणी भासा ? एवं भासापदं भाणियव्वं। ॥२.६॥ ☆ ☆ ☆ **सत्तमो उद्देसो 'देव'** ☆☆☆ [सु. १. देवाणं भेयपरूवणा] १. कइ णं भंते ! देवा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता, तं जहा भवणवति -वाणमंतर -जोतिस -वेमाणिया। [सु. २. चउव्विहदेवठाण-कप्पपइट्ठाणाइजाणणत्थं पण्णवणासुत्त - जीवाभिगमसुत्तावलोयणनिद्देसो] २. कहि णं भंते ! भवणवासीणं देवाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जहा ठाणपदे देवाणं वत्तव्वया सा भाणियव्वा। उववादेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। एवं सव्वं भाणियव्वं जाव (पण्णवणासुत्तं सु. १७७ त: २११) सिद्धगंडिया समत्ता। "कप्पाण पतिट्ठाणं बाहल्लुच्चत्तमेव संठाणं।" जीवाभिगमे जो वेमाणियुद्देसो सो भाणियव्वो सव्वो। ॥२.७॥☆☆☆ **अट्ठमो उद्देसो 'सभा'**☆☆☆ [सु. १. चमरस्स असुरिंदस्स सभाए परूवणा] १. कहि णं भंते ! चमरस्स असुररण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तिरियमसंखेज्जे दीव-समुद्दे वीईवइत्ता अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लातो वेइयंतातो अरुणोदयं समुद्दं बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं चमरस्स असुररण्णो तिगिंछिकूडे नामं उप्पायपव्वते पण्णत्ते, सत्तरसएएक्कवीसे जोयणसते उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारितीसे जोयणसते कोसं च उव्वेहेणं; गोत्थुभस्स आवापव्वयस्स पमाणेणं नेयव्वं, नवरं उवरिल्लं पमाणं मज्झे भाणियव्वं जाव भूले वित्थडे, मज्झे संखित्ते, उप्पिं विसाले, वरवइरविग्गहिए महामउंदसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेणं वणसंडेण य सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते। पउमवरवेइयाए वणसंडस्स य वण्णओ। तस्स णं तिगिंछिकूडस्स उप्पायव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते। वण्णओ। तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे। एत्थ णं महं एगे पासातवडिंसए पण्णत्ते अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चंत्तेणं, पणवीसं जोयणसयं विक्खंभेणं। पासायवण्णओ। उल्लोयभूमिवण्णओ। अट्ठ जोयणाइं मणिपेढिया। चमरस्स सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं। तस्स णं तिगिंछिकूडस्स दाहिणेणं छक्कोडिसए पणपन्नं च कोडीओ पणतीसं सतसहस्साइं पण्णासं च सहस्साइं अरुणोदए समुद्दे तिरियं वीइवइत्ता, अहे य रतणप्पभाए पुढवीए चत्तालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं चमरस्स असुरिंसद्द असुररण्णो चमरचंपा नामं रायहाणी पण्णत्ता, एगं जोयणसतसहस्सं आयाम-विक्खभे णं जंबुद्दीवपमाणा। ओवारियलेणं सोलसं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, पन्नासं जोयणसहस्साइं पंच य सत्ताणउए जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, सव्वप्पमाण

वेमाणियप्पमाणस्स अद्धं नेयव्वं। सभा सुहम्मा उत्तरपुरत्थिमेणं, जिणघरं, ततो उववायसभा हरओ अभिसेय० अलंकारो जहा विजयस्स। उववाओ संकप्पो अभिसेय विभूसणा य ववसाओ। अच्चणिय सुहगमो वि य चमर परिवार इड्ढत्तं ॥१॥☆☆☆ **॥ बीयसए अट्ठमो ॥२.८॥☆☆☆ नवमो उद्देसो 'दीव'☆☆☆** [सु. १. समयखेत्तपरूवणाजाणणत्थं जीवाभिगमसुत्तावलोयणनिद्देसो] १. किमिदं भंते ! 'समयखेत्ते' त्ति पवुच्चति ? गोयमा ! अड्ढाइज्जा दीवा दो य समुद्दा एस णं एवतिए 'समयखेत्ते' त्ति पवुच्चति। 'तत्थ ण अयं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतरए' (जीवाजीवाभि० सु. १२४, पत्र १७७) एवं जीवाभिगमवत्तव्वया नेयव्वा जाव अब्भिंतरं पुक्खरद्धं जोइसविहूणं। ☆☆☆ **॥ बितीयस्स नवमो उद्देसो ॥२.९॥ ☆☆☆ दसमो उद्देसो 'अत्थिकाय' ☆☆☆** [सु. १-६. अत्थिकायाणं भेय-पभेयाइपरूवणं] १. कति णं भंते ! अत्थिकाया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच अत्थिकाया पण्णत्ता, तं जहा धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए। २. धम्मत्थिकाए णं भंते ! कतिवण्णे कतिगंधे कतिरसे कतिफासे ? गोयमा ! अवण्णे अगंधे अरसे अफासे अरूवी सासते अवट्ठिते लोगदव्वे। से समासतो पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो गुणतो। दव्वतो णं धम्मत्थिकाए एगे दव्वे। खेत्ततो णं लोगप्पमाणमेत्ते। कालतो न कदायि न आसि, न कयाइ नत्थि, जाव निच्चे। भावतो अवण्णे अगंधे अरसे अफासे। गुणतो गमणगुणे। ३. अधम्मत्थिकाए वि एवं चेव। नवरं गुणतो ठाणगुणे। ४. आगासत्थिकाए वि एवं चेव। नवरं खेत्तओ णं आगासत्थिकाए लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणंते चेव जाव (सु. २) गुणओ अवगाहणागुणे। ५. जीवत्थिकाए णं भंते ! कतिवण्णे कतिगंधे कतिरसे कइफासे ? गोयमा ! अवण्णे जाव (सु. २) अरूवी जीवे सासते अवट्ठिते लोगदव्वे। से समासओ पंचविहे पण्णत्ते; तं जहा दव्वतो जाव गुणतो। दव्वतो णं जीवत्थिकाए अणंताइं जीवदव्वाइं। खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते। कालतो न कयाइ न आसि जाव (सु.२) निच्चे। भावतो पुण अवण्णे अगंधे अरसे अफासे। गुणतो उवयोगगुणे। ६. पोग्गलत्थिकाए णं भंते ! कतिवण्णे कतिगंधे० रसे० फासे ? गोयमा ! पंचवण्णे पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासते अवट्ठिते लोगदव्वे। से समासओ पंचविहे पण्णत्ते; तं जहा दव्वतो खेत्तओ कालतो भावतो गुणतो। दव्वतो णं पोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं। खेत्ततो लोगप्पमाणमेते। कालतो न कयाइ न आसि जाव (सु. २) निच्चे। भावतो वण्णमंते गंध० रस० फासमंते। गुणतो गहणगुणे। [सु. ७-८. पंचण्हमत्थिकायाणं सरूवं] ७. (१) एगे भंते ! धम्मत्थिकायपदेसे 'धम्मत्थिकाए' त्ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। (२) एवं दोण्णि तिण्णि चत्तारि पंच छ सत्त अट्ठ नव दस संखेज्जा असंखेज्जा भंते ! धम्मत्थिकायप्पदेसा 'धम्मत्थिकाए' त्ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। (३) एगपदेसूणे वि य णं भंते ! धम्मत्थिकाए 'धम्मत्थिकाए' त्ति वत्तव्वं सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे। (४) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'एगे धम्मत्थिकायपदेसे नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया जाव (सु. ७ २) एगपदेसूणे वि य णं धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया ?'। से नूणं गोयमा ! खंडे चक्के ? सगले चक्के ? भगवं ! नो खंडे चक्के, सगले चक्के। एवं छत्ते चम्मे दंडे दूसे आयुहे मोयए। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ 'एगे धम्मत्थिकायपदेसे नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया जाव एगपदेसूणे वि य णं धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया'। ८. (१) से किं खाइं णं भंते ! 'धम्मत्थिकाए' त्ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! असंखेज्जा धम्मत्थिकायपदेसा ते सव्वे कसिणा पडिपुण्णा निरवसेसा एगग्गहणगहिया, एस णं गोयमा ! 'धम्मत्थिकाए' त्ति वत्तव्वं सिया। (२) एवं अहम्मत्थिकाए वि। (३) आगासत्थिकाय -जीवत्थिकाय -पोग्गलत्थिकाया वि एवं चेव। नवरं पदेसा अणंता भाणियव्वा। सेसं तं चेव। [सु. ९. अमुत्तजीवलक्खणवत्तव्वया)] ९. (१) जीव णं भंते ! सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कारपरक्कमे आयभावेणं जीवभावं उवदंसेतीति वत्तव्वं सिया ? हंता, गोयमा ! जीवं णं सउट्ठाणे जाव उवदंसेतीति वत्तव्वं सिया। (२) से केणट्ठेणं जाव वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! जीवे णं अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं एवं सुलनाणपज्जवाणं ओहिनाणपज्जवाणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं केवलनाणपज्जवाणं मतिअण्णाणपज्जवाणं सुतअण्णाणपज्जवाणं विभंगणाणपज्जवाणं चक्खुदंसणपज्जवाणं अचक्खुदंसणपज्जवाणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओहिदंसणपज्जवाणं केवलदंसणपज्जवाणं उवओगं गच्छति, उवयोगलक्खणेणं जीवे। से तेणट्ठेणं एवं वुच्चइ **गोयमा ! जीवे णं सउट्ठाणे जाव वत्तव्वं सिया। [सु.** १०-१२. आगासत्थिकायस्स भेया सरूवं च] १०. कतिविहे णं भंते ! आकासे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे आगासे पण्णत्ते, तं जहा **लोयाकासे य अलोयागासे** य। ११. लोयाकासे णं भंते ! किं जीवा जीवदेसा जीवपदेसा, अजीवा अजीवदेसा अजीवपएसा ? गोयमा ! जीवा वि जीवदेसा वि जीवपदेसा वि, **अजीवा वि** अजीवदेसा वि अजीवपदेसा वि। जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अणिंदिया। जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा। जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा। जे अजीवा ते दुविधा पण्णत्ता, तं जहा रूवी य अरूवी य। जे रूवी ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा खंधा खंधदेसा संघपदेस्त परमाणुपोग्गला। जे अरूवी ते पंचविधा पण्णत्ता, तं जहा धम्मत्थिकाए, नोधम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए, नोअधम्मत्थिकायस्स देसे अधम्मत्थिकायस्स पदेसा अद्धासमए। १२. अलोगागासे णं भंते ! किं जीवा ? पुच्छा तध चेव (सु. ११)। गोयमा ! नो जीवा जाव नो अजीवप्पएसा। एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुयलहुए अणंतेहिं अगुरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे। [सु. १३. पंचण्हमत्थिकायाणं पमाणं] १३. (१ धम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ? गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ताणं चिट्ठइ। (२) एवं अधम्मत्थिकाए, लोयाकासे, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए। पंच वि एक्काभिलावा। [सु. १४-२२. अहोलोयाईणं ओघ-विभागेहिं धम्मत्थिकायाइफुसणावत्तव्वया] १४. अहेलोए णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवतियं फुसति ? गोयमा ! सातिरेगं अद्धं फुसति। १५. तिरियलोए णं भंते !० पुच्छा। गोयमा ! असंखेज्जइभागं फुसइ। १६. उड्ढलोए णं भंते !० पुच्छा। गोयमा ! देसाणं अद्धं फुसइ। १७. इमा णं भंते ! रतणप्पभा पुढवी धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति, ? असंखेखिज्जइभागं फुसइ, (१) संखिज्जे मागे फुसति असं खेज्जे भागे फुसंति १ सव्वं फुसति १ गोयमा णो संखेज्जइ भागं फुसति असंखेज्जइ भागं फुसइ णो संखेज्ज०, णो असंखेज्जे, नो सव्वं फुसति। १८ इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए धणादहीं धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ?०। जधा रतणप्पभा (सु १७) तहा धणोदहि-घणवात-तणुवाया वि। १९ (१) इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए ओवासंतरे धम्मत्थिकायस्स किं संखिज्जइभागं फुसति, असंखेज्जइभागं फुसइ जाव (सु. १७) सव्वं फुसइ ? गोयमा ! संखिज्जइभागं फुसइ, णो असंखेज्जइभागं फूसइ, नो संखेज्जेइ, नो असंखेज्जे० नो सव्वं फसइ। (२) ओवासंतराइं सव्वाइं जहा रयणप्पभाए। २०. जधा रयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया एवं जाव अहेसत्तमाए। २१. एवं सोहम्मे कप्पे जाव ईसिपब्भारापुढवीए। एते सव्वे वि असंखेज्जइभागं फुसति, सेसा पडिसेहेतव्वा। २२. एवं अधम्मत्थिकाए। एवं लोयागासे वि। गाहा पुढवोदही घण तणू कप्पा गेवेज्जऽणुत्तरा सिद्धी। संखिज्जइभागं अंतरेसु सेसा असंखेज्जा ॥१॥ ॥२.१०॥ ☆☆☆॥ **बितियं सयं समत्तं ॥२॥ 卐卐卐 तइयं सयं 卐卐卐** [सु. १. तइयसयदसुद्देसऽत्थाहिगारगाहा] १. केरिस विउव्वणा १ चमर २ किरिय ३ जाणित्थि ४-५ नगर ६ पाला य ७। अहिवति ८ इंदिय ९ परिसा १० ततियम्मि सते दसुद्देसा ॥१॥ **☆ ☆ ☆ पढमो उद्देसो 'मोया-केरिस विउव्वणा' ☆ ☆ ☆** [सु. २. पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ] २. तेणं कालेणं तेणं समएणं मोया नामं नगरी होत्था। वण्णओ। तीसे णं मोयाए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे णं नंदणे नामं चेतिए होत्था। वण्णओ। तेणं कालेणं २ सामी समोसढे। परिसा निग्गच्छति। पडिगता परिसा। [सु. ३-६. अग्गिभूइपुच्छाए भगवओ चमर-तस्सामाणिय- तायत्तीसग- लोगपाल -अग्गमहिसीणं इड्ढि -जुति -बल -जस -सोक्ख -अणुभाग -विउव्वणापरूवणा] ३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवतो महावीरस्स दोच्चे अंतेवासी अग्गिभूती नामं अणगारे गोतमे गोत्तेणं सुत्तस्सेहे जाव पज्जुवासमाणे एवं वदासी चमरे णं भंते ! असुरिंदे असुरराया केमहिड्ढीए ? केमहज्जुतीए ? केमहाबले ? केमहायसे ? केमहासोक्खे ? केमहाणुमाणे ? केवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! असुररण्णो एगमेगे सामाणिय देवे तिरिमसंखेज्जे दीवसमुद्दे बहूहिंल्ले चमरे णं असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए जाव महाणुभागे। से णं तत्थ चोत्तीसाए भवणावाससतसहस्साणं,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं जाव विहरति। एमहिड्डीए जाव एमहाणुभागे। एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए से जहानामए जुवती जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिता, एवामेव गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया वेउव्वियसमुग्घातेणं समोहण्णति, २ संखिज्जाइं जोअणाइं दंडं निसिरति, तं जहा रतणाणं जाव रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडेति, २ अहासुहुमे पोग्गले परियाइयति, २ दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णति, २ पभू णं गोतमा! चमरे असुरिंदे असुरराया केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अवगाढावगाढं करेत्तए। अदुत्तरं च णं गोतमा! पभू चमरे असुरिंदे असुरराया तिरियमसंखेज्जे दीव-समुद्दे बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे संथडे फुडे अवगाढेवगाढे करेत्तए। एस णं गोतमा! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अयमेतारूवे विसए विसयमेते वुइए, णो चेव णं संपत्तीए विकुव्विंसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा। (४) जति णं भंते! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्डीए जाव एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिया देवा केमाहड्ढीया जाव केवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए? गोयमा! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिया देवा महिड्डीया जाव महाणुभागा। ते णं तत्थ साणं साणं भवणाणं, साणं साणं सामाणियाणं, साणं साणं अग्गमहिसीणं, जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति। एमहिड्डीया जाव एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए से जहानामए जुवति जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरयाउत्ता सिया, एवामेव गोतमा! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणिए देवे वेउव्वियसमुग्घातेणं समोहण्णइ, २ जाव दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, २ पभू णं गोतमा! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगेसामाणिए देवे केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अवगाढावगाढं करेत्तए। अदुत्तरं च णं गोतमा! पभु चमरस्स असुरिंदस्स (४) असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे संथडे फुडे अवगाढावगाढे करेत्तए। एस णं गोतमा! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगस्स सामाणियदेवस्स अयमेतारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए, णो चेव णं संपत्तीए विकुव्विंसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा। ५. (१) जइ णं भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिया देवा एमहिड्डीया जाव एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुररण्णो तायत्तीसिया देवा केमहिड्डीया? तायत्तीसिया देवा जहा सामाणिया तहा नेयव्वा। (२) लोयपाला तहेव। नवरं संखेज्जा दीव-समुद्दा भाणियव्वा। ६. जति णं भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो लोगपाला असुररण्णो एगमेगे सायाणियदेवे तिरियमसंखेज्जे दीव-समुद्दे बहुहिं देवा एमहिड्डीया जाव एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ केमहिड्डीयाओ जाव केवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए? गोयमा! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ महिड्डीयाओ जाव महाणुभागाओ। ताओ णं तत्थ साणं साणं भवणाणं, साणं साणं सामाणियसाहस्सीणं, साणं साणं महत्तरियाणं, साणं साणं परिसाणं जाव एमहिड्डीयाओ, अन्नं जहा लोगपालाणं (सु. ५ २) अपरिसेसं। [सु. ७-१०. अग्गिभूइपरूवियचमराइवत्तव्वयं असद्दहंतस्स वाउभूइस्स संकाए भगवओ समाहाणं, अग्गिभूइं पइ वाउभूइकयं खामणाइ य] ७. सेवं भंते! २ त्ति भगवं दोच्चे गोतमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, २ जेणेव तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे तेणेव उवागच्छति, २ तच्चं गोयमं वायुभूतिं अणगारं एवं वदासि-एवं खलु गोतमा! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्डीए तं चेव एवं सव्वं अपुट्ठवागरणं नेयव्वं अपरिसेसियं जाव अग्गमहिसीणं वत्तव्वया समत्ता। ८. तए णं से तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे दोच्चस्स गोतमस्स अग्गिभूतिस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स भा० पं० परू० एतमट्ठं नो सद्दहति, नो पत्तियति, नो रोयति; एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे उट्ठाए उट्ठेति, २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-एवं खलु भंते! मम दोच्चे गोतमे अग्गिभूती अणगारे एवमाइक्खति भासइ पण्णवेइ परूवेइ-एवं खलु गोतमा! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्डीए जाव महाणुभावे से णं तत्थ चोत्तीसाए भवणावाससयसहस्साणं एवं तं चेव सव्वं अपरिसेसं भाणियव्वं जाव (सु. ३-६) अग्गमहिसीणं वत्तव्वता समत्ता। से कहमेतं भंते! एवं? 'गोतमा' दि समणे भगवं महावीरे तच्चं गोतमं

वायुभूतिं अणगारं एवं वदासि जं णं गोतमा ! तव दोच्चे गोयमे अग्गिभूती अणगारे एवमाइक्खइ ४ " एवं खलु गोयमा ! चमरे ३ महिड्ढीए एवं तं चेव सव्वं जाव अग्गमहिसीणं वत्तव्वया समत्ता ", सच्चे णं एस मट्ठे, अहं पि णं गोयमा ! एवमाइक्खामि भा० प० परू० । एवं खलु गोयमा ! चमरे ३ जाव महिड्ढीए सो चेव बितिओ गमो भाणियव्वो जाव अग्गमहिसीओ, सच्चे णं एस मट्ठे । ९. सेवं भंते २ ० तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमसंइ, २ जेणेव दोच्चे गोयमे अग्गिभूती अणगारे तेणेव उवागच्छइ, २ दोच्चं गोयमं अग्गिभूतिं अणगारं वंदइ नमंसति, २ एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामेति । १०. तए णं से दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अण० तच्चेणं गो० वायुभूइणा अण० एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामिए समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, २ तच्चेणं गो० वायुभूइणा अण० सद्धिं जेणेव समणे भगवं० महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २ समणं भगवं० वंदइ०, २ जाव पज्जुवासइ । [सु. ११-१२. वाउभूइपुच्छाए भगवओ बतिल-तस्सामाणियादीणं इड्ढि-विउव्वणाइपरूवणा] ११. तए णं से तच्चे गो० वायुभूती अण० समणं भगवं० वंदइ नमंसइ, २ एवं वदासी जति णं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए जाव (सु.३) एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, बली णं भंते ! वइरोयणिंदे वइरोयणराया केमहिड्ढीए जाव (सु. ३) केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! बली णं वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्ढीए जाव (सु. ३) महाणुभागे । से णं तत्थ तीसाए भवणावाससयसहस्साणं, सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं सेसं जहा चमरस्स, नवरं चउण्हं सट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च जाव भुंजमाणे विहरति । से जहानामए एवं जहा चमरस्स; णवरं सातिरेगं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं ति भाणियव्वं । सेसं तहेव जाव विउव्विस्सति वा (सु.३) । १२. जइ णं भंते ! बली वइरोयणिंदे वैरोयणराया एमहिड्ढीए जाव (सु. ३) एवइयं च णं पभू विउव्वित्तए बलिस्स णं वइरोयणस्स सामाणियदेवा केमहिड्ढीया ? एवं सामाणियदेवा तावत्तीसा लोकपालऽग्गमहिसीओ य जहा चमरस्स (सु. ४-६), नवरं साइरेगं जंबुद्दीवं जाव एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए, इमे वुइए विसए जाव विउव्विस्संति वा । सेवं भंते ! २ तच्चे गो० वायुभूती अण० समणं भगवं महा० वंदइ ण०, २ नऽच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ । [सु. १३. अग्गिभूइपुच्छाए भगवओ धरणिंद-तस्सामाणियाईणं इड्ढिविउव्वणाइपरूवणा] १३. तए णं से दोच्चे गो० अग्गिभूती अण० समणं भगवं वंदइ०, २ एवं वदासि-जति णं भंते ! बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया एमहिड्ढीए जाव एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए धरणे णं भंते ! नागकुमारिंदे नागकुमारराया केमहिड्ढीए जाव केवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! धरणे णं नागकुमारिंदे नागकुमारराया एमहिड्ढीए जाव से णं तत्थ चोयालीसाए भवणावाससयसहस्साणं, छण्हं सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, छण्हं अग्गमहिसीण सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवतीणं, चउवीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसिं च जाव विहरइ । एवतियं च णं पभू विउव्वित्तए से जहानामए जुवति जुवाणे जाव (सु.३) पभू केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं जाव तिरियमसंखेज्जे दीव-समुद्दे बहूहिं नागकुमारेहिं नागकुमारीहिं जाव विउव्विस्सति वा । सामाणिय-तायत्तीस-लोगपालऽग्गमहिसीओ य तहेव जहा चरमस्स (सु. ४-६) । नवरं संखेज्जे दीव -समुद्दे भाणियव्वं । [सु. १४. दाहिणिल्ल-उत्तरिल्लाणठ सुवण्णकुमाराइथणियकुमार-वाणमंतर -जोइसियाणं तस्सामाणियाईणं च इड्ढि -विउव्वणाइविसयाए कमसो अग्गिभूइ- वाउभूइपुच्छाए भगवओ परूवणा १४. एवं जाव थणियकुमारा, वाणमंतर-जोतिसिया वि । नवरं दाहिणिल्ले सव्वे अग्गिभूती पुच्छति, उत्तरिल्ले सव्वे वाउभूती पुच्छइ । [सु. १५-१८.सक्कदेविंद -तीसयदेव -सक्कसामाणियाइणं इड्ढि -विउव्वणाइविसयाए अग्गिभूइपुच्छाए भगवओ परूवणा] १५. 'भंते !' त्ति भगवं दोच्चे गोयमे अग्गिभूती अणगारे समणं भगवं म० वंदति नमंसति, २ एवं वयासी जति णं भंते ! जोतिसिंदे जोतिसराया एमहिड्ढीए जाव एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए ? सक्के णं भंते ! देविंद्दे देवराया केमहिड्ढीए जाव केवतियं च णं पभू विकुव्वितए १ गोयमा ! सक्के णं देविंदे देवराया महिड्ढीए जाव महाणुभागे । से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं (२) जाव चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च जाव विहरइ । एगहिड्ढीए जाव एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए । एवं जहेव चमरस्स तहेव भाणियव्वं, नवरं दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अवसेसं तं चेव । एस णं गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते णं वुइए,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नो चेव णं संपत्तीए विकुव्विंसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा। १६. जइ णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया एमहिड्ढीए जाव एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए एवं खलु देवाणप्पियाणं अंतेवासी तीसए णामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विणीए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अपरं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं अट्ठ संवच्छराइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए सल्लेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सयंसि विमाणंसि उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणियदेवत्ताए उववन्ने। तए णं तीसए देवे अहुणोववन्नमेत्ते समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ, तं जहा आहारपज्जत्तीए सरीर० इंदिय० आणापाणुपज्जतीए भासामणपज्जत्तीए। तए णं तं तीसयं देवं पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गयं समाणं सामाणियपरिसोववन्नया देवा करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धाविंति, २ एवं वदासी अहो ! णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी, दिव्वा देवजुती, दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागते, जारिसिया णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी (३) दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभावे लद्धं पत्ते अभिसमन्नागते तारिसिया णं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागता जारिसिया णं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा दिव्वा देविट्ढी जाव अभिसमन्नागता तारिसिया णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविडढी, जाव अभिसमन्नागता। से णं भंते ! तीसए देवे केमहिड्ढीए जाव केवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे, से णं तत्थ सयस्स विमाणस्स, चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं, चउण्हं अग्गमहितीणं, (४) सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवतीणं सोलण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य जाव विहरति। एमहिड्ढीए जाव एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए से जहाणामए जुवति जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा जहेव सक्कस्स तहेव जाव एस णं गोयमा ! तीसयस्स देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए, नो चेव णं संपत्तीए विउव्विंसु वा ३। १७. जति णं भंते ! तीसए देवे एमहिड्ढीए जाव एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए, सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो अवसेसा सामाणिया देवा केमहिड्ढीया तहेव सव्वं जाव एस णं गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एगमेगस्स सामाणियस्स देवस्स इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए, नो चेव णं संपत्तीए विउव्विंसु वा विकुव्वंति वा विकुव्विस्संति वा। १८. तायात्तीसय - लोगपाल -अग्गमहिसीणं जहेव -चमरस्स। नवरं दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अन्नं तं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति दोच्चे गोयमे जाव विहरति। [सु. १९-२१. ईसाणदेविंद-ईसाणोववन्नकुरुदत्तपुत्त-ईसाणसा माणियाईणं इड्ढि-विउव्वणाइविसयाए वाउभूइपुच्छाए भगवओ परूवणा] १९. 'भंते' त्ति भगवं तच्चे गोयमे वाउभूती अणगारे समणं भगवं जाव एवं वदासी जति णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया एमहिड्ढीए जाव एवइयं च णं पभू विउव्वित्तए, ईसाणे णं भंते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढीए ? एवं तहेव, नवरं साहिए दो केवलकप्पे जंबुद्दीवदीवे, अवसेसं तहेव। २०. जति णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया एमहिड्ढीए जाव एवतियं च णं पभू विउव्वित्तए, एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुरुदत्तपुत्ते नामं पगतिभद्दए जाव विणीए अट्ठमंअट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं पारणए आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहे आयावणभूमीए आतावेमाणे बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामण्णपरियागं पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे सयंसि विमाणंसि जा चेव तीसए वत्तव्वया स च्चेव अपरिसेसा कुरुदत्तपुत्ते वि। नवरं सातिरेगे दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अवसेसं तं चेव। २१. एवं सामाणिय-तायत्तीस -लोगपाल -अग्गमहिसीणं जाव एस णं गोयमा ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो एवं एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए, नो चेव णं संपत्तीए विउव्विंसु वा विकुव्वंति वा विकुव्विस्संति वा। [सु. २२-३०. सणंकुमाराइअच्चुयपज्जंताणं ससामाणियाईणं इड्ढि-विउव्वणाइपरूवणा] २२. (१) एवं सणंकुमारे वि, नवरं चत्तारि केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अदुत्तरं च णं तिरियमसंखेज्जे। (२) एवं सामाणिय-तायत्तीस -लोगपाल-अग्गमहिसीणं असंखेज्जे दीव -समुद्दे सव्वे विउव्वंति। २३. सणंकुमाराओ आरद्धा उवरिल्ला लोगपाला सव्वे वि असंखेज्जे दीव -समुद्दे विउव्वंति। २४. एवं माहिंदे वि। नवरं साइरेगे चत्तारि केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे। २५. एवं बंभलोए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि, नवरं अट्ठ केवलकप्पे० । २६. एवं लंतए वि, नवरं सातिरेगे अट्ठ केवलकप्पे० । २७. महासुक्के सोलस केवलकप्पे० । २८. सहस्सारे सातिरेगे सोलस० । २९. एवं पाणए वि, नवरं बत्तीसं केवल० । ३०. एवं अच्चुए वि, नवरं सातिरेगे बत्तीसं केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे । अन्नं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूती समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसति जाव विहरति । [सु. ३१. भगवओ मोयानगरीओ जणवयविहारो] ३१. तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाई मोयाओ नगरीओ नंदणाओ चेतियाओ पडिनिक्खमइ, २ बहिया जणवयविहारं विहरइ । [सु. ३२-३३. ईसाणदेविंदस्स भगवतो वंदणत्थं रायगिहे आगमणं तओ पडिगमणं च] ३२. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था । वण्णओ । जाव परिसा पज्जुवासइ । ३३. तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया सूलपाणी वसभवाहणे उत्तरड्ढलोगाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयंबरवत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचलकुंडलविलिहिज्जमाणगंडे जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणे पभासमाणे ईसाणे कप्पे ईसाणवडिंसए विमाणे जहेव रायप्पसेणइज्जे जाव (राज० पत्र ४४-५४) दिव्वं देविड्ढिं जाव जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए । [सु. ३४. कूडागारसालादिट्ठंतपुव्वयं ईसाणिंददेविड्ढीए ईसाणिंदसरीराणुप्पवेसपरूवणा] ३४. (१) 'भंते !' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति, २ एवं वदासी अहो णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया महिड्ढीए । ईसाणस्स णं भंते ! सा दिव्वा देविड्ढी कहिं गता ? कहिं अणुपविट्ठा ? गोयमा ! सरीरं गता, सरीरं अणुपविट्ठा । (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति सरीरं गता, सरीरं अणुपविट्ठा ? गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्तो गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगंभीरा, तीसे णं कूडागार० जाव (राज० पत्र ५६) कूडागारसालादिट्ठंतो भाणियव्वो । [सु. ३५-५२. ईसाणदेविंदस्स पुव्वभववुत्तंतो सु. ३५-३७. तामलिगाहावतिस्स धम्मजागरियाए पाणामापव्वज्जागहणअभिग्गहगहणसंकप्पो पव्वज्जाइगहणं च] ३५. ईसाणेणं भंते ! देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुती दिव्वे देवाणुभागे किणा लद्धे ? किणा पत्ते ? किणा अभिसमन्नागए ? के वा एस आसि पुव्वभवे ? किंणामए वा ? किंगोत्ते वा ? कतरंसि वा गामंसि वा नगरंसि वा जाव सन्निवेसंसि वा ? किं वा दच्चा ? किं वा भोच्चा ? किं वा किच्चा ? किं वा समायरित्ता ? कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म जं णं ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागया ? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तामलित्ती नामं नगरी होत्था । वण्णओ । तत्थ णं तामलित्तीए नगरीए तामली नामं मोरियपुत्ते गाहावती होत्था । अड्ढे दित्ते जाव बहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था । ३६. तए णं तस्स मोरियपुत्तस्स तामलिस्स गाहावतिस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था "अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणे फलवितिविसेसे जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि, सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धन्नेणं वड्ढामि, पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वड्ढामि, विउलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसारसावतेज्जेणं अतीव २ अभिवड्ढामि, तं किं णं अहं पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं जाव कडाणं कम्माणं एगंतसोक्खयं उवेहेमाणे विहरामि ?, तं जाव ताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि, जाव अतीव २, अभिवड्ढामि, जाव च णं मे मित्त-नाति-नियग-संबंधिपरियणो आढाति परियाणइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासइ तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभाताए रयणीए जाव जलंते सयमेव दारुमयं पडिग्गहयं करेत्ता विउलं असण-पाण-खातिम-सातिमं उवक्खडावेत्ता मित्त-नाति-नियग-संबंधिपरियणं आमंतेत्ता तं मित्त-नाइ-नियग - संबंधिपरियणं विउलेणं असण-पाण-खातिम-सातिमेणं वत्थ-गंध-मल्लाऽलंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-संबंधि-परियणस्स पुरतो जेट्ठं पुत्तं कुटुंबे ठावेत्ता तं मित-नाति-णियग-संबंधिपरियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता सयमेव दारुमयं पडिग्गहं गहाय मुंडे भवित्ता पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइत्तए । पव्वइते वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि 'कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिब्भिय पगिब्भिय सूराभिमुहस्स आतावणभूमीति आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं पारणयंसि आयावणभूमीतो पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमयं पडिग्गहयं गहाय

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तामलित्तीए नगरीए उच्च -नीय -मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्ता सुद्धोदणं पडिग्गाहेत्ता, तं तिसत्तखुत्तो उदएणं पक्खालेत्ता, तओ पच्छा आहारं आहारित्तए' त्ति कट्टु'' एवं संपेहेइ, २ कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते सयमेव दारुमयं पडिग्गहयं करेइ, २ विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, २ तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाऽऽभरणालंकियसरीरे भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगते। तए णं मित्त-नाइ-नियग-संबंधिपरिजणेणं सद्धिं तं विउलं असण-पाण-खातिम-साइमं आसादेमाणे वीसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ। ३७. जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्त जाव परियणं विउलेणं असणपाण० ४ पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लाऽलंकारेण य सक्कारेइ, २ तस्सेव मित्त -नाइ जाव परियणस्स पुरओ जेट्ठं पुत्तं कुटुंबे ठावेइ, २ त्ता तं मित्त-नाइ-णियग-संबंधिपरिजणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छइ, २ मुंडे भवित्ता पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए। पव्वइए वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ 'कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव आहारित्तए' त्ति कट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, २ त्ता जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिब्भिय २ सुराभिमुहे आतावणभूमीए आतावेमाणे विहरइ। छट्ठस्स वि य णं पारणयंसि आतावणभूमीओ पच्चोरुभइ, २ सयमेव दारुमयं पडिग्गहं गहाय तामलित्तीए नगरीए उच्च-नीय-मज्जिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडइ, २ सुद्धोयणं पडिग्गाहेइ, २ तिसत्तखुत्तो उदएणं पक्खालेइ, तओ पच्छा आहारं आहारेइ। [सु. ३८. गोतमपुच्छियस्स भगवओ पाणामापव्वज्जासरूवपण्णवणा] ३८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ पाणामा पव्वज्जा ? गोयमा ! पाणामाए णं पव्वज्जाइ पव्वइए समाणे जं जत्थ पासइ इंदं वा खंदं वा रुद्दं वा सिवं वा वेसमणं वा अज्जं वा कोट्टकिरियं वा राजं वा जाव सत्थवाहं वा कागं वा साणं वा पाणं वा उच्चं पासइ उच्चं पणामं करेति, नीयं पासइ नीयं पणामं करेइ, जं जहा पासति तस्स तहा पणामं करेइ। से तेणट्ठेणं जाव पव्वज्जा। [सु. ३९-४०. तामलिस्स बालवोणुट्ठाणाणंतरं अणसणपडिवज्जणं] ३९. तए णं से तामली मोरियपुत्ते तेणं ओरालेणं विपुलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बालतवोकम्मेणं सुक्के भुक्खे जाव धमणिसंतते जाए यावि होत्था। ४०. तए णं तस्स तामलिस्स बालतवस्सिस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स इमेयारुवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था 'एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं विपुलेणं जाव उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्के भुक्खे जाव धमणिसंतते जाते, तं अत्थि जा मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे तावता मे सेयं कल्लं जाव जलंते तामलित्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसंगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छित्ता तामलित्तीए नगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छित्ता पाउग्गं कुंडियमादीयं उवकरणं दारुमयं च पडिग्गहयं एगंते एडित्ता तामलित्तीए नगरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए णियत्तणियमंडलं आलिहित्ता संलेहणाझूसणाझूसियस्स भत्त-पाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ। एवं संपेहेत्ता कल्लं जाव जलंते जाव आपुच्छइ, २ तामलित्तीए एगंते एडेइ जाव भत्त -पाणपडियाइक्खिए पाओवगमणं निवन्ने। [सु. ४१-४४. तामलितवस्सिं पइ बलिचंचारायहाणीवत्थव्वदेव -देवीकया निप्फला बलिचंचारायहाणिइंदत्तलंभनियाणकरणविन्नत्ती)] ४१. तेणं कालेणं तेणं समएणं बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुराहिया यावि होत्था। तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं बालतवस्सिं ओहिणा आभोयंति, २ अन्नमन्नं सद्दावेंति, २ एवं वयासी ''एवं खलु देवाणुप्पिया ! बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! इंदाधीणा इंदाधिट्ठिया इंदाहीणकज्जा। अयं च णं देवाणुप्पिया ! तामली बालतवस्सी तामलित्तीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए नियत्तणियमंडलं आलिहित्ता संलेहणाझूसणाझूसिए भत्त -पाणपडियाइक्खिए पाओवगमणं निवन्ने। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं तामलिं बालतवस्सिं बलिचंचाए रायहाणीए ठितिपकप्पं पकरावेत्तए'' त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेति, २ बलिचंचाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, २ जेणेव रुयगिंदे उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छंति, २ वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विकुव्वंति, २ ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए दिव्वाए उद्धुयाए देवगतीए तिरियमसंखिज्जाणं

दीव-समचद्दाणं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलित्ती नगरी जेणेव तामली मोरियपुत्ते तेणेव उवागच्छंति, २ त्ता तामलिस्स बालतवस्सिस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं ठिच्चा दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेंति, २ तामलिं बालतवस्सिं तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेंति वंदंति नमंसंति, २ एवं वदासी "एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे बलिचंचारायहाणीवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पियं वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो। अम्हं णं देवाणुप्पिया ! बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुराहिया, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा इंदाहिट्ठिया इंदाहीणकज्जा, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! बलिचंचं रायहाणिं आढाह परियाणह सुमरह, अट्ठं बंधह, णिदाणं पकरेह, ठितिपकप्पं पकरेह। तए णं तुब्भे कालमासे कालं किच्चा बलिचंचारायहाणीए उववज्जिस्सह तए णं तुब्भे अम्हं इंदा भविस्सह, तए णं तुब्भे अम्हेहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरिस्सह"। ४२. तए णं से तामली बालतवस्सी तेहिं बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं य देवीहि य एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणेइ, तुसिणीए संचिट्ठइ। ४३. तए णं ते बलिचंचारायधाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं मोरियपुत्तं दोच्चं पि तिक्खुत्तो आदाहिणप्पदाहिणं करेंति, २ जाव अम्हं च णं देवाणुप्पिया ! बलिचंचा रायहाणी अणिंदा जाव ठितिकप्पं पकरेह, जाव दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे जाव तुसिणीए संचिट्ठइ। ४४. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिणा बालतवस्सिणा अणाढाइज्जमाणा अपरियाणिज्जमाणा जामेव दिसिं पादुब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। [सु. ४५. तामलितवस्सिस्स ईसाणदेविंदत्तेण उववाओ] ४५. तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे कप्पे अणिंदे अपुरोहिते यावि होत्था। तए णं से तामली बालतवस्सी रिसी बहुपडिपुण्णाइं सट्ठिं वाससहस्साइं परियागं पाउणित्ता दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेदित्ता कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे ईसाणवडिंसए विमाणे उववातसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिते अंगुलस्स असंखेज्जभागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणदेविंदविरहकालसमयंसि ईसाणदेविंदत्ताए उववन्ने। तए णं से ईसाणे देविंदे देवराया अहुणोववन्ने पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गच्छति, तंजहा आहारपज्जत्तीए जाव भासा-मणपज्जत्तीए। [सु.४६-४९. बलिचंचावत्थव्वासुरकयतामलितावसमडयावहीलणवुत्तं -तसवणाणंतरं ईसाणिंदकओ बलिचंचादेवपरितावो] ४६. तए णं बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं बालतवस्सिं कालगयं जाणित्ता ईसाणे य कप्पे देविंदत्ताए उववन्नं पासित्ता आसुरुत्ता कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणा बलिचंचाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, २ ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलित्ती नयरी जेणेव तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरए तेणेव उवागच्छंति, २ वामे पाए सुंबेणं बंधंति, २ तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुहंति, २ तामलित्तीए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु आकड्ढविकडिंढ करेमाणा महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वदासि 'केस णं भो ! से तामली बालतवस्सी सयंगहियलिंगे पाणामाए पव्वज्जाइ पव्वइए ! केस णं से ईसाणे कप्पे ईसाणे देविंदे देवराया' इति कट्टु तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरयं हीलंति निंदंति खिंसंति गरिहंति अवमन्नंति तज्जंति तालेंति परिवहेंति पव्वहेंति आकड्ढविकड्ढिं करेंति, हीलेत्ता जाव आकड्ढविकड्ढिं करेत्ता एगंते एडेंति, २ जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। ४७. तए णं ईसाणकप्पवासी बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरयं हीलिज्जमाणं निंदिज्जमाणं जाव आकड्ढविकड्ढिं कीरमाणं पासंति, २ आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव ईसाणे देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छंति, २ करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, २ एवं वदासी -एवं खलु देवाणुप्पिया ! बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पिए कालगए जाणित्ता ईसाणे य कप्पे इंदत्ताए उववन्ने पासेत्ता आसुरुत्ता जाव एगंते एडेंति, २ जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। ४८. तए णं से ईसाणे देविंदे देवराया तेसिं ईसाणकप्पवासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तत्थेव सयणिज्जवरगए तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु बलिचंचं रायहाणिं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोएइ, तए णं सा बलिचंचा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रायहाणी ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा अहे सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोइया समाणी तेणं दिव्वप्पभावेणं इंगालब्भूया मुम्मुरब्भूया छारिब्भूया तत्तकवेल्लकब्भूया तत्ता समजोइब्भूया जाया यावि होत्था। ४९. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तं बलिचंचं रायहाणिं इंगालब्भूयं जाव समजोतिब्भूयं पासंति, २ भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समंता आधावेंति परिधावेंति, २ अन्नमन्नस्स कायं समतुरंगेमाणा २ चिट्ठंति। [सु. ५०-५१. ईसाणिंदं पइ बलिचंचादेवाणं अवराहखामणं आणावसवट्टित्तं च] ५०. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाणं देविंदं देवरायं परिकुवियं जाणित्ता ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं तेयलेस्सं असहमाणा सव्वे सपक्खि सपडिदिसिं ठिच्चा करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजयेणं वद्धाविंति, २ एवं वयासी अहो णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागता, तं दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं दिव्वा देविड्ढी जाव लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया। तं खामेमो णं देवाणुप्पिया !, खमंतु णं देवाणुप्पिया !, खंतुमरिहंति णं देवाणुप्पिया !, णाइ भुज्जो एवंकरणयाए त्ति कट्टु एयमट्ठं सम्मं विणयेणं भुज्जो २ खामेंति। ५१. तते णं से ईसाणे देविंदे देवराया तेहिं बलिचंचारायहाणीवत्थव्वएहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामिए समाणे तं दिव्वं देविड्ढिं जाव तेयलेस्सं पडिसाहरइ। तप्पभितिं च णं गोयमा ! ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाणं देविंदं देवरायं आढंति जाव पज्जुवासंति, ईसाणस्स य देविंदस्स देवरण्णो आणा -उववाय -वयण -निद्देसे चिट्ठंति। [सु. ५२. ईसाणदेविंददेविड्ढिवत्तव्वयाए उवसंहारो] ५२. एवं खलु गोयमा ! ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागया। [सु. ५३-५४. ईसाणिंदस्स ठिति -अणंतरभवपरूवणा] ५३. ईसाणस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता। ५४. ईसाणे; णं भंते ! देविंदे देवराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति। [सु. ५५-६१. सक्कीसाणाणं परोप्परं विमाणउच्चत्ताइ -पाउब्भव -पेच्छणा -संलाव -किच्चकरण -विवादनिवारणपरूवणा] ५५. (१) सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं उच्चयरा चेव ईसिं उन्नयतरा चेव ? ईसाणस्स वा देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं नीययरा चेव ईसिं निण्णयरा चेव ? हंता, गोतमा ! सक्कस्स तं चेव सव्वं नेयव्वं। (२) से केणट्ठेणं ? गोयमा ! से जहानामए करतले सिया देसे उच्चे देसे उन्नये, देसे णीए देसे निण्णे, से तेणट्ठेणं०। ५६. (१) पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ? हंता पभू। (२) से णं भंते ! किं आढामीणे पभू, अणाढामीणे पभू ? गोयमा ! आढामीणे पभू, नो अणाढामीणे पभू। ५७. (१) पभू णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ? हंता, पभू। (२) से भंते ! किं आढामीणे पभू, अणाढामीणे पभू ? गोयमा ! आढामीणे वि पभू, अणाढामीणे वि पभू। ५८. पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणं देविंदं देवरायं सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोएत्तए ? जहा पादुब्भवणा तहा दो वि आलवगा नेयव्वा। ५९. पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सद्धिं आलावं वा संलावं वा करेत्तए ? हंता, पभू। जहा पादुब्भवणा। ६०. (१) अत्थि णं भंते ! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं किच्चाइं करणिज्जाइं समुप्पज्जंति ? हंता, अत्थि। (२) से कहमिदाणिं पकरेंति ? गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवति, ईसाणे णं देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवइ 'इति भो ! सक्का ! देविंदा ! देवराया ! दाहिणड्ढलोगाहिवती !'; 'इति भो ! ईसाणा ! देविंदा ! देवराया ! उत्तरड्ढलोगाहिवती ! । 'इति भो !, इति भो'त्ति ते अन्नमन्नस्स किंच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति। ६१. (१) अत्थि णं भंते ! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं विवादा समुप्पज्जंति ? हंता, अत्थि। (२) से कहमिदाणिं पकरेंति ? गोयमा ! ताहे चेव णं ते सक्कीसाणा देविंदा देवरायाणो सणंकुमारं देविंदं देवरायं मणसीकरेंति। तए णं से सणंकुमारे देविंदे देवराया तेहिं सक्कसाणेहिं देविंदेहिं देवराईहिं मणसीकए समाणे खिप्पामेव सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं अंतियं पादुब्भवति। जं से वदइ तस्स आणाउववाय -वयण -निद्देसे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिट्ठंति। [सु. ६२-६४. सणंकुमारदेविंदस्स भवसिद्धियत्ताइ- ठिति -अणंतरभवपरूवणा] ६२. (१) सणंकुमारे णं भंते ! देविंदे देवराया किं भवसिद्धिए, अभवसिद्धिए ? सम्मदिट्ठी. मिच्छदिट्ठी ? परित्तसंसारए, अणंतसंसारए ? सुलभबोहिए, दुलभबोहिए ? आराहए, विराहए ? चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सणंकुमारे णं देविंदे देवराया भवसिद्धीए नो अभवसिद्धीए, एवं सम्मद्दिट्ठी परित्तसंसारए सुलभबोहिए आराहए चरिमे, पसत्थं नेयव्वं। (२) से केणट्ठेणं भंते ! ? गोयमा ! सणंकुमारे देविंदे देवराया बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं साविगाणं हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेयसिए हिय -सुह -निस्सेसकामए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! सणंकुमारे णं भवसिद्धिए जाव नो अचरिमे। ६३. सणंकुमारस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्त सागरोवमाणि ठिती पण्णत्ता। ६४. से णं भंते ! ताओ देवलोगातो आउक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति। सेवं भंते ! २०। [सु. ६५. तइयसयपढमुद्देसस्स १६-६४ सुत्ताणं संगहणिगाहाओ] ६५. गाहाओ छट्ठऽट्ठम मासो अद्धमासो वासाइं अट्ठ छम्मासा। तीसग-कुरुदत्ताणं तव भत्तपरिण्ण परियाओ ॥१॥ उच्चत्त विमाणाणं पादुब्भव पेच्छणा य संलावे। किच्च विवादुप्पत्ती सणंकुमारे य भवियत्तं ॥२ ☆☆☆ **मोया समत्ता।**

तइयसए पढमो उद्देसो समत्तो ॥३.१॥☆ ☆ ☆ बिइओ उद्देसओ 'चमरो' ☆☆☆[सु. १-२. उवुग्घाओ] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था जाव परिसा पज्जुवासइ। २. तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव नट्टविहिं उवदंसेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। [सु. ३-४. असुरकुमारठाणपरूवणा] ३. (१) भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, (२) एवं वदासी अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। (२) एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए, सोहम्मस्स कप्पस्स अहे जाव अत्थि णं भंते ! ईसिपब्भाराए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसंति ? णो इणट्ठे समट्ठे। ४. से कहिं खाइं णं भंते ! असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसतसहस्सबाहल्लाए, एवं असुरकुमारदेववत्तव्वया जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति। [सु. ५-७. असुरकुमाराणं अहोगइविसयपरूवणा] ५. अत्थि णं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गतिविसए प० ? हंता, अत्थि। ६. केवतिए च णं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं अहेगतिविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! जाव अहेसत्तमाए पुढवीए, तच्चं पुण पुढविं गता य, गमिस्संति य। ७. किंपत्तियं णं भंते ! असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गता य, गमिस्संति य ? गोयमा ! पुव्ववेरयस्स वा वेदणउदीरणयाए, पुव्वसंगतियस्स वा वेदणउवसामणयाए। एवं खलु असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गता य, गमिस्संति य। [सु. ८-१०. असुरकुमाराणं तिरियगइविसयपरूवणा] ८. अत्थि णं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं तिरियं गतिविसए पण्णत्ते ? हंता, अत्थि। ९. केवतियं ज णं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं तिरियं गतिविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! जाव असंखेज्जा दीव -समुद्दा, नंदिस्सरवरं पुण दीवं गता य, गमिस्संति य। १०. किंपत्तियं णं भंते ! असुरकुमारा देवा नंदीसरवरदीवं गता य, गमिस्संति य ? गोयमा ! जे इमे अरिहंता भगवंता एतेसिं णं जम्मणमहेसु वा निक्खमणमहेसु वा णाणुप्पत्तिमहिमासु वा परिनिव्वाणमहिमासु वा एवं खलु असुरकुमारा देवा नंदीसरवरं दीवं गत्ता य, गमिस्संति य। [सु. ११-१३. असुरकुमाराणं उड्ढगइविसयपरूवणा] ११. अत्थि णं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं उड्ढं गतिविसए प० ? हंता, अत्थि। १२. केवतियं च णं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं उड्ढं गतिविसए ? गोयमा ! जाव अच्चुतो कप्पो। सोहम्मं पुण कप्पं गता य, गमिस्संति य। १३. (१) किं पतियं णं भंते ! असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्पं गता य, गमिस्संति य ? गोयमा ! तेसिं णं देवाणं भवपच्चइयवेराणुबंधे। ते णं देवा विकुव्वेमाणा परियारेमाणा वा आयरक्खे देवे वित्तासेंति। अहालहुस्सगाइं रयणाइं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमंति। (२) अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं अहालहुस्सगाइं रयणाइं ? हंता, अत्थि। (३) से कहमिदाणिं पकरेंति ? तओ से पच्छा कायं पव्वहंति। (४) पभू णं भंते ! ते असुरकुमारा देवा तत्थगया चेव समाणा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भुंजमाणा विहरित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं तओ पडिनियत्तंति, तओ पडिनियत्तित्ता इहमागच्छंति, २ जति णं ताओ अच्छराओ आढायंति परियाणंति, पभू णं ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए, अह णं ताओ अच्छराओ नो आढायंति नो परियाणंति णो णं पभू ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए। (५) एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्पं गता य, गमिस्संति य। [सु. १४-१६. असुरकुमाराणं सोहम्मकप्पगमणकालंतर -निस्साइपरूवणा] १४. केवतिकालस्स णं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मं कप्पं गया य, गमिस्संति य ? गोयमा ! अणंताहिं ओसप्पिणीहिं अणंताहिं उस्सप्पिणीहिं समतिक्कंताहिं, अत्थि णं एस भावे लोयच्छेरयभूए समुप्पज्जइ जं णं असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो। १५. किंनिस्साए णं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ? से जहानामए इह सबरा इ वा बब्बरा इ वा टंकणा इ वा चुच्चुया इ वा पल्हया इ वा पुलिंदा इ वा एगं महं गड्डं वा दुग्गं वा दरिं वा विसमं वा पव्वतं वा णीसाए सुमहल्लमवि आसबलं वा हत्थिबलं वा जोहबलं वा धणुबलं वा आगलेति, एवामेव असुरकुमारा वि देवा, णऽन्नत्थ अरहंते वा, अरहंतचेइयाणि वा, अणगारे वा भावियप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो। १६. सव्वे वि णं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, महिड्ढिया णं असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो। [सु. १७-१८. चमरस्स उड्ढाहोगमणपरूवणा] १७. एस वि य णं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारया उड्ढं उप्पतियपुव्वे जाव सोहम्मो कप्पो ? हंता, गोयमा ! एस वि य णं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पतियपुव्वे जाव सोहम्मो कप्पो। १८. अहे णं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया महिड्ढीए महज्जुतीए जाव कहिं पविट्ठा ? कूडागारसालादिट्ठंतो भाणियव्वो। [सु. १९-४३. चमरिंदस्स पुव्वभववुत्तंतो] १९-२१. पूरणस्स तवस्सिस्स दाणामापव्वज्जागहणं अणसणं च १९. चमरेणं भंते ! असुरिंदेणं असुररण्णा सा दिव्वा देविड्ढी तं चेव किणा लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया ? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे विंझगिरिपायमूले बेभेले नामं सन्निवेसे होत्था। वण्णओ। तत्थ णं बेभेले सन्निवेसे पूरणे नामं गाहावती परिवसति अड्ढे दित्ते जहा तामलिस्स (उ. १. सु. ३५-३७) वत्तव्वया तहा नेतव्वा, नवरं चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहं करेत्ता जाव विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं जाव सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहयं गहाय मुंडे भवित्ता दाणामाए पव्वज्जाए पव्वइत्तए। २०. पव्वइए वि य णं समाणे तं चेव, जाव आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ पच्चोरुभित्ता सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहयं गहाय बेभेले सन्निवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडेत्ता 'जं मे पढमे पुडये पडइ कप्पइ मे तं पंथियपहियाणं दलइत्तए, जं मे दोच्चे पुडए पडए कप्पइ मे तं काक-सुणयाणं दलइत्तए, जं मे तच्चे पुडए पडइ कप्पइ मे तं मच्छ-कच्छभाणं दलइत्तए, जं मे चउत्थे पुडए पडइ कप्पइ मे तं अप्पणा आहारं आहारित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, २ कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए तं चेव निरवसेसं जाव जं से चउत्थे पुडए पडइ तं अप्पणा आहारं आहारेइ। २१. तए णं से पूरणे बालतवस्सी तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बालतवोकम्मेणं तं चेव जाव बेभेलस्स सन्निवेसस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, २ पाउय-कुंडियमादीयं उवकरणं चउप्पुडयं च दारुमयं पडिग्गहयं एगंतमंते एडेइ, २ बेभेलस्स सन्निवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अद्धनियत्तणियमंडलं आलिहित्ता संलेहणाझूसणाझूसिए भत्त-पाणपडियाइक्खिए पाओवगमणं निवण्णे। [सु. २२. भगवओ महावीरस्स सुंसुमारपुरावत्थाणं] २२. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! छउमत्थकालियाए एक्कारसवासपरियाए छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सुसुमारपुरे नगरे जेणेव असोगवणसंडे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे जेणेव पुढविसिलावट्टए तेणेव उवागच्छामि, २ असोगवरपायवस्स हेट्ठा पुढविसिलावट्टयंसि अट्ठमभत्तं पगिण्हामि, दो वि पाए साहट्टु वग्घारियपाणी एगपोग्गलनिविट्ठदिट्ठी अणिमिसनयणे ईसिपब्भारगएणं काएणं अहापणिहिएहिं गत्तेहिं सव्विंदिएहिं गुत्तेहिं एगरातियं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। [सु. २३-२७. पूरणस्स तवस्सिस्स चमरिंदत्तेण उववायाणंतरं सोहम्मिंदं पइ कोवो] २३. तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया याऽवि होत्था। तए णं से पूरणे बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं परियागं पाउणित्ता

For Private & Personal Use Only

२१

मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए उववायसभाए जाव इंदत्ताए उववन्ने। २४. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया अहुणोववन्ने पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गच्छइ, तं जहा आहारपज्जत्तीए जाव भास-मणपज्जत्तीए। २५. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गए समाणे उड्ढं वीससाए ओहिणा आभोएइ जाव सोहम्मो कप्पो। पासइ य तत्थ सक्कं देविंदं देवरायं मघवं पागसासणं सत्तक्कतु सहस्सक्खं वज्जपाणिं पुरंदरं जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणं पभासेमाणं। सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, २ इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था केस णं एस अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे हिरि-सिरिपरिवज्जिए हीणपुण्णचाउद्दसे जे णं ममं इमाए एयारूवाए दिव्वाए देविड्ढीए जाव दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते जाव अभिसमन्नागए उप्पिं अप्पुस्सुए दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ? एवं संपेहेइ, २ सामाणियपरिसोववन्नए देवे सद्दावेइ, २ एवं वयासी केस णं एस देवाणुप्पिया ! अपत्थियपत्थए जाव भुंजमाणे विहरइ ? २६. तए णं ते सामाणियपरिसोववन्नगा देवा चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा० जाव हयहियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जयेणं विजयेणं वद्धावेंति, २ एवं वयासी एस णं देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया जाव विहरइ। २७. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया तेसिं सामाणियपरिसोववन्नगाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरूत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे ते सामाणियपरिसोववन्नए देवे एवं वयासी 'अन्ने खलु भो ! से सक्के देविंदे देवराया, अन्ने खलु भो ! से चमरे असुरिंदे असुरराया, महिड्ढीए खलु से सक्के देविंदे देवराया, अप्पिड्ढीए खलु भो ! से चमरे असुरिंदे असुरराया। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासादेत्तए' त्ति कट्टु उसिणे उसिणब्भूए याऽवि होत्था। [सु. २८. भगवओ नीसाए चमरकयं सोहम्मिंदावमाणणं] २८. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया ओहिं पउंजइ, २ ममं ओहिणा आभोएइ, २ इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था 'एवं खलु समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सुंसुमारपुरे नगरे असोगवणसंडे उज्जाणे असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयंसि अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति। तं सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं नीसाए सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासादेत्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, २ सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, २ त्ता देवदूसं परिहेइ, २ उववायसभाए पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं णिग्गच्छइ, २ जेणेव सभा सुहम्मा, जेणेव चोप्पाले पहरणकोसे तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता फलिहरयणं परामुसइ, २ एगे अबिइए फलिहरयणमायाए महया अमरिसं वहमाणे चमरचंचाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, २ जेणेव तिगिंछिकूडे उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, २ त्ता संखेज्जाइं जोयणाइं जाव उत्तरवेउव्वियं रूवं विकुव्वइ, २ त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव पुढविसिलावट्टए जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छति, २ ममं तिक्खुत्तो आदाहिणपदाहिणं करेति, २ जाव नमंसित्ता एवं वयासी 'इच्छामि णं भंते ! तुब्भं नीसाए सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासादित्तए' त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमइ, २ वेउव्वियसमुग्घातेणं समोहण्णइ, २ जाव दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घातेणं समोहण्णइ, २ एगं महं घोरं घोरागारं भीमं भीमागारं भासरं भयाणीयं गंभीरं उत्तासणयं कालड्ढरत्त- मासरासिसंकासं जोयणसयसाहस्सीयं महाबोंदिं विउव्वइ, २ अप्फोडेइ, २ वग्गइ, २ गज्जइ, २ हयहेसियं करेइ, २ हत्थिगुलुगुलाइयं करेइ, २ रहघणघणाइयं करेइ, २ पायदद्दरगं करेइ, २ भूमिचवेडयं दलयइ, २ सीहाणादं नदइ, २ उच्छोलेति, २ पच्छोलेति, २ तिवइं छिंदइ, २ वामं भुयं ऊसवेइ, २ दाहिणहत्थपदेसिणीए य अंगुट्ठनहेणं य वितिरिच्छं मुहं विडंबेइ, २महया २ सद्देणं कलकलरवं करेइ, एगे अब्बितिए फलिहरयणमायाए उड्ढं वेहासं उप्पतिए, खोभंते चेव अहेलोयं, कंपेमाणे व मेइणितलं, साकड्ढंते व तिरियलोयं, फोडेमाणे व अंबरतलं, कत्थइ गज्जंते, कत्थइ विज्जुयायंते, कत्थइ वासं वासमाणे, कत्थइ रयुग्घायं पकरेमाणे, कत्थइ तमुक्कायं पकरेमाणे, वाणमंतरे देवे वित्तासेमाणे २, जोइसिए देवे दुहा विभयमाणे २, आयरक्खे देवे विपलायमाणे २, फलिहरयणं अंबरतलंसि वियड्ढमाणे २, विउब्भावेमाणे २ ताए उक्किट्ठाए जाव तिरियमसंखेज्जाणं दीव- समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीयीवयमाणे २, जेणेव सोहम्मे कप्पे, जेणेव सोहम्मवडेंसए विमाणे, जेणेव सभा सुधम्मा तेणेव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छइ, २ एगं पायं पउमवरवेइयाए करेइ, एगं पायं सभाए सुहम्माए करेइ, फलिहरयणेणं महया २ सद्देणं तिक्खुत्तो (१) इंदकीलं आउडेति, २ एवं वयासी- 'कहिं णं भो ! सक्के देविंदे देवराया ? असुरिंदस्स असुररण्णो वहाए वज्जे निसट्ठे। तए णं मे इमेयारूवे अज्झत्थिए कहिं णं ताओ चउरासीइं सामाणियसाहस्सीओ ? जाव कहिं णं ताओ चत्तारि चउरासीईओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ ? कहिं णं ताओ अणेगाओ अच्छराकोडीओ ? अज्ज हणामि, अज्ज महेमि, अज्ज वहेमि, अज्ज ममं अवसाओ अच्छराओ वसमुवणमंतु' त्ति कट्टु तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं फरुसं गिरं निसिरइ। [२९-३०. सोहग्गिंदनिसट्ठवज्जभीयस्स चमरस्स भगवओ पायावलंबणं] २९. तए णं से सक्के देविंदे देवराया तं अणिट्ठं जाव अमणामं अस्सुयपुव्वं फरुसं गिरं सोच्चा निसम्म आसुरुते जाव मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु चमरं असुरिंदं असुररायं एवं वदासी 'हं भो ! चमरा ! असुरिंदा ! असुरराया ! अपत्थियपत्थया ! जाव हीणपुण्णचाउद्दसा ! अज्जं न भवसि, नाहि ते सुहमत्थि' त्ति कट्टु तत्थेव सीहासणवरगते वज्जं परामुसइ, २ तं जलंतं फुडंतं तडतडंतं उक्कासहस्साइं विणिम्मुयमाणं २, जालासहस्साइं पमुंचमाणं २, इंगालसहस्साइं पविक्खिरमाणं २, फुलिंगजालामालासहस्सेहिं चक्खुविक्खेव- दिट्ठिपडिघातं पि पकरेमाणं हुतवहअतिरेगतेयदिप्पंतं जइणवेगं फुल्लकिंसुयसमाणं महब्भयं भयकरं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो वहाए वज्जं निसिरइ। ३०. तते णं से चमरे असुरिंदे असुरराया त जलतं जाव भयकरं वज्जमभिमुहं आवयमाणं पासइ, पासित्ता झियाति पिहाइ, पिहाइ झियाइ, झियायित्ता पिहायित्ता तहेव संभग्गमउडविडवे सालंबहत्थाभरणे उड्ढंपाए अहोसिरे कक्खागयसेयं पिवं विणिम्मुयमाणे २ ताए उक्किट्ठाए जाव तिरियमसंखेज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीतीवयमाणे २ जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जाव जेणेव असोगवरपायवे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता भीए भयगग्गरसरे 'भगवं सरणं' इति बुयमाणे ममं दोण्ह वि पायाणं अंतरंसि झति वेगेणं समोवतिते। [सु. ३१-३२. भगवओ पसायाओ सक्ककोवोवसमो चमरनिब्भयत्तं च] ३१. तए णं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था 'नो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पतित्ता जाव सोहम्मो कप्पो, णऽन्नत्थ अरहंते वा, अरहंतचेइयाणि वा, अणगारे वा भावियप्पणो नीसाए उड्ढं उप्पयति जाव सोहम्मो कप्पो। तं महादुक्खं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं अणगाराण य अच्चासायणाए' त्ति कट्टु ओहिं पजुंजति, २ ममं ओहिणा आभोएति, २ 'हा ! हा ! अहो ! हतो अहमंसि' त्ति कट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव दिव्वाए देवगतीए वज्जस्स वीहिं अणुगच्छमाणे २ तिरियमसंखेज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं जाव जेणेव असोगवरपादवे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, २ ममं चउरंगुलसंपत्तं वज्जं पडिसाहरइ। अवियाऽऽइं मे गोतमा ! मुट्ठिवातेणं केसग्गे वीइत्था। ३२. तए णं से सक्के देविंदे देवराया वज्जं पडिसाहरति, पडिसाहरित्ता ममं तिक्खुत्तो आदाहिणपदाहिणं करेइ, २ वंदइ नमंसइ, २ एवं वयासी ''एवं खलु भंते ! अहं तुब्भं नीसाए चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णा सयमेव अच्चासाइए। तए णं मए परिकुविएणं समाणेणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो वहाए वज्जे निसट्ठे। तए णं मे इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-नो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया तहेव जाव ओहिं पउंजामि, देवाणुप्पिए ओहिणा आभोएमि, 'हा ! हा ! अहो ! हतो मी' ति कट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, देवाणुप्पियाणं चउरंगुलमसंपत्तं वज्जं पडिसाहरामि, वज्जपडिसाहरणट्ठताए णं इहमागए, इह समोसढे, इह संपत्ते, इहेव अज्ज उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। तं खामेमि णं देवाणुप्पिया !, खमंतु णं देवाणुप्पिया !, खमितुमरहंति णं देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो एवं पकरणताए'' त्ति कट्टु ममं वंदइ नमंसइ, २ उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, २ वामेणं पादेणं तिक्खुत्तो भूमिं दलेइ, २ चमरं असुरिंदं असुररायं एवं वदासी'मुक्को सि णं भो ! चमरा ! असुरिंदा ! असुरराया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेणं, नहि ते दाणिं ममाओ भयमत्थि' त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। [सु. ३३. महिड्ढियदेवखित्तपोग्गलगहणपरूवणा] ३३. (१) भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति०, २ एवं वदासि देवे णं भंते ! महिड्ढीए महज्जुतीए जाव महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ताणं गिण्हित्तए ? हंता, पभू। २ से केणट्ठेणं भंते ! जाव गिण्हित्तए ? गोयमा ! पोग्गले णं खित्ते समाणे पुव्वामेव सिग्घगती

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवित्ता ततो पच्छा मंदगती भवति, देवे णं महिड्डीए पुव्विं पि य पच्छा वि सीहे सीहगती चेव, तुरिते तुरितगती चेव। से तेणट्ठेणं जाव पभू गेण्हित्तए। [सु. ३४. सक्क - वज्ज -असुरकुमारदेवाणं उड्ढाहोगइवेगपरूवणा] ३४. जति णं भंते ! देवे महिड्डीए जाव अणुपरियट्टित्ताणं गेण्हित्तए। कम्हा णं भंते ! सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा चमरे असुरिंदे असुरराया नो संचाइए साहत्थिं गेण्हित्तए ? गोयमा ! असुरकुमाराणं देवाणं अहेगतिविसए सीहे सीहे चेव, तुरिते तुरिते चेव। उड्ढंगतिविसए अप्पे अप्पे चेव, मंदे मंदे चेव। वेमाणियाणं देवाणं उड्ढंगतिविसए सीहे सीहे चेव, तुरिते तुरिते चेव। अहेगतिविसए अप्पे अप्पे चेव, मंदे मंदे चेव। जावतियं खेत्तं सक्के देविंदे देवराया उड्ढं उप्पतति एक्केणं समएणं तं वज्जे दोहिं, जं वज्जे दोहिं तं चमरे तीहिं; सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उड्ढलोयकंडए, अहेलोयकंडए संखेज्जगुणे। जावतियं खेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया अहे ओवयति एक्केणं समएणं तं सक्के दोहिं, जं सक्के दोहिं तं वज्जे तीहिं, सव्वत्थोवे चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अहेलोयकंडए, उड्ढलोयकंडए संखेज्जगुणे। एवं खलु गोयमा ! सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा चमरे असुरिंदे असुरराया नो संचाइए साहत्थिं गेण्हित्तए। [सु. ३५-३७. सक्क-चमर-वज्जदेवाणं गइखेत्तऽप्पाबहुयं] ३५. सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो उड्ढं अहे तिरियं च गतिविसयस्स कतरे कतरेहिंतो अप्पे वा, बहुए वा, तुल्ले वा, विसेसाहिए वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवं खेत्तं सक्के देविंदे देवराया अहे ओवयइ एक्केणं समएणं, तिरियं संखेज्जे भागे गच्छइ, उड्ढं संखेज्जे भागे गच्छइ। ३६. चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो उड्ढं अहे तिरियं च गतिविसयस्स कतरे कतरेहिंतो अप्पे वा, बहुए वा, तुल्ले वा, विसेसाहिए वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवं खेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पयति एक्केणं समएणं, तिरियं संखेज्जे भागे गच्छइ, अहे संखेज्जे भागे गच्छइ। ३७. वज्जं जहा सक्कस्स देविंदस्स तहेव, नवरं विसेसाहियं कायव्वं। [सु. ३८-४०. सक्क-चमर -वज्जदेवाणं गइकालऽप्पाबहुयं] ३८. सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो ओवयणकालस्स य उप्पयणकालस्स य कतरे कतरेहिंतो अप्पे वा, बहुए वा, तुल्ले वा, विसेसाहिए वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उप्पयणकाले, ओवयणकाले संखेज्जगुणे। ३९. चमरस्स वि जहा सक्कस्स, णवरं सव्वत्थोवे ओवयणकाले, उप्पयणकाले संखेज्जगुणे। ४०. वज्जस्स पुच्छा। गोयमा ! सव्वत्थोवे उप्पयणकाले, ओवयणकाले विसेसाहिए। [सु. ४१. सक्क -चमर- वज्जदेवाणं परोप्परं गइकालऽप्पाबहुयं] ४१. एयस्स णं भंते ! वज्जस्स, वज्जाहिवतिस्स, चमरस्स य असुरिंदस्स असुररण्णो ओवयणकालस्स य उप्पयणकालस्स य कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ४ ? गोयमा ! सक्कस्स य उप्पयणकाले चमरस्स य ओवणकाले, एते णं बिण्णि वि तुल्ला सव्वत्थोवा। सक्कस्स य ओवयणकाले वज्जस्स य उप्पयणकाले, एस णं दोण्ह वि तुल्ले संखेज्जगुणे। चमरस्स य उप्पयणकाले वज्जस्स य ओवयणकाले, एस णं दोण्ह वि तुल्ले विसेसाहिए। [सु. ४२-४३. सक्कयावमाणणापच्चइयखेयकहणाणंतरं णियसामाणियदेवेहिं सद्धिं चमरकयं भगवओ वंदणा-पज्जुवासणाइ] ४२. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया वज्जभयविप्पमुक्के सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा महया अवमाणेणं अवमाणिते समाणे चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि ओहतमणसंकप्पे चिंतासोकसागरसंपविट्ठे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगते भूमिगतदिट्ठीए झियाति। ४३. तते णं तं चमरं असुरिंदं असुररायं सामाणियपरिसोववन्नया देवा ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासंति, २ करतल जाव एवं वयासि किं णं देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियायंति ? तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया ते सामाणियपरिसोववन्नए देवे एवं वयासी 'एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए समणं भगवं महावीरं नीसाए कट्टु सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासादिए। तए णं तेणं परिकुवितेणं समाणेणं ममं वहाए वज्जे निसिट्ठे। तं भद्दं णं भवतु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स जस्स म्हि पभावेण अकिट्ठेअव्वहिए अपरिताविए इहमागते, इह समोसढे, इह संपत्ते, इहेव अज्जं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो जाव पज्जुवासामो' त्ति कट्टु चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव सव्विड्डीए जाव जेणेव असोगवरपादवे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, २ ममं तिखुत्ते आदाहिणपदाहिणं जाव नमंसिता एवं वदासि 'एवं खलु भंते ! मए तुब्भं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासादिए जाव तं भद्दं णं भवतु देवाणुप्पियाणं जस्स म्हि पभावेणं अकिट्ठे जाव विहरामि। तं खामेमि णं देवाणुप्पिया !' जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, २ त्ता जाव बत्तीसइबद्धं नट्टविहिं उवदंसेइ, २ जामेव

दिसिं पादुब्भूए तामेव दिसिं पडिगते। [सु. ४४. चमरस्स ठिति-भवंतरसिद्धिपरूवणं] ४४. एवं खलु गोयमा ! चमरेणं असुरिंदेण असुररण्णा सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता जाव अभिसमन्नागया। ठिती सागरोवमं। महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति। [सु. ४५. असुराणं सोहम्मदेवलोयगमणविसए कारणंतरपरूवणं] ४५. किं पत्तियं णं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ? गोयमा ! तेसिं णं देवाणं अहुणोववन्नगाण वा चरिमभवत्थाण वा इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जति अहो ! णं अम्हेहिं दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता जाव अभिसमन्नागया। जारिसिया णं अम्हेहिं दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागया तारिसिया णं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा देव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागया, जारिसिया णं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा जाव अभिसमन्नागया तारिसिया णं अम्हेहिं वि जाव अभिसमन्नागया। तं गच्छामो णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पातुब्भवामो, पासामो ता सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो दिव्वं देविड्ढि जाव अभिसमन्नागयं, पासतु ताव अम्ह वि सक्के देविंदे देवराया दिव्वं देविड्ढिं जाव अभिसमण्णागयं, तं जाणामो ताव सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो दिव्वं देविड्ढिं जाव अभिसमन्नागयं, जाणउ ताव अम्ह वि सक्के देविंदे देवराया दिव्वं देविड्ढिं जाव अभिसमण्णागयं। एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆चमरो समत्तो॥३.२॥ ☆☆☆ तइओ उद्देसओ 'किरिया' ☆☆☆ [सु. १-७. मंडियपुत्तपण्हुत्तरे काइयाइपंचविहकिरियाभेय-पभेयपरूवणं] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था जाव परिसा पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव अंतेवासी मंडियपुत्ते णामं अणगारे पगतिभद्दए जाव पज्जुवासमाणे एवं वदासी २. कति णं भंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ? मंडियपुत्ता ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा काइया अहिगरणिया पाओसिया पारियावणिया पाणातिवातकिरिया। ३. काइया णं भंते ! किरिया कतिविहा पण्णत्ता ? मंडियपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा अणुवरयकायकिरिया य दुप्पउत्तकायकिरिया य। ४. अधिगरणिया णं भंते ! किरिया कतिविहा पण्णत्ता ? मंडियपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा संजोयणाहिगरणकिरिया य निव्वत्तणाहिगरणकिरिया य। ५. पादोसिया णं भंते ! किरिया कतिविहा पण्णत्ता ? मंडियपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा जीवपादोसिया य अजीवापदोसिया य। ६. पारित्तावणिया णं भंते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ? मंडियपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा सहत्थपारितावणिगा य परहत्थपारितावणिगा य। ७. पाणातिवातकिरिया णं भंते !० पुच्छा। मंडियपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा सहत्थपाणातिवातकिरिया य परहत्थपाणातिवातकिरिया य। [सु. ८. कम्म-वेयणाणं पुव्व-पच्छाभावित्तपरूवणा] ८. पुव्विं भंते ! किरिया पच्छा वेदणा ? पुव्विं वेदणा पच्छा किरिया ? मंडियपुत्ता ! पुव्विं किरिया, पच्छा वेदणा; णो पुव्विं वेदणा, पच्छा किरिया। [सु. ९-१०. समणं पडुच्च किरियासामित्तपरूवणं] ९. अत्थि णं भंते ! समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ? हंता, अत्थि। १०. कहं णं भंते ! समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ? मंडियपुत्ता ! पमायपच्चया जोगनिमित्तं च, एवं खलु समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जति। [सु. ११-१४. सकिरिय-अकिरियजीवाणं अंतकिरियानत्थित्त-अत्थित्तपरूवणं अकिरियजीवंतकिरियासमत्थगा तणहत्थय-उदगबिंदु-नावादिट्ठंता य ११. जीवे णं भंते ! सया समियं एयति वेयति चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरति तं तं भावं परिणमति ? हंता, मंडियपुत्ता ! जीवे णं सया समितं एयति जाव तं तं भाव परिणमति। १२. (१) जाव च णं भंते ! से जीवे सया समितं जाव परिणमति तावं च णं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया भवति ? णो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जावं च णं जीवे सदा समितं जाव अंते अंतकिरिया न भवति ? मंडियपुत्ता ! जावं च णं से जीवे सया समितं जाव परिणमति तावं च णं से जीवे आरभति सारभति समारभति, आरंभे वट्टति, सारंभे वट्टति, समारंभे वट्टति, आरभमाणे सारभमाणे समारभमाणे आरंभे वट्टमाणे, सारंभे वट्टमाणे, समारंभे वट्टमाणे बहूणं पाणाणं भूताणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खावणताए सोयावणताए जूरावणताए तिप्पावणताए पिट्टावणताए परिताणवताए वट्टति, से तेणट्ठेणं मंडियपुत्ता ! एवं वुच्चति-जावं च णं से जीवे सया समितं एयति जाव परिणमति तावं च णं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया न भवति। १३. जीवे णं भंते ! सया समियं नो एयति जाव नो तं तं भावं परिणमति ? हंता, मंडियपुत्ता ! जीवे णं सया समियं जाव नो परिणमति। १४. (१) जावं च णं भंते ! से जीवे नो एयति जाव नो तं तं भावं परिणमति तावं च णं तस्स जीवस्स अंते

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतकिरिया भवति ? हंता, जाव भवति। (२ से केणट्ठेणं भंते ! जाव भवति ? मंडियपुत्ता ! जावं च णं से जीवे सया समियं णो एयति जाव णो परिणमइ तावं च णं से जीवे नो आरभति, नो सारभति, नो समारभति, नो आरंभे वट्टइ, णो सारंभे वट्टइ, णो समारंभे वट्टइ, अणारभमाणे असारभमाणे असमारभमाणे, आरंभे अवट्टमाणे, सारंभे अवट्टमाणे, समारंभे अवट्टमाणे बहूणं पाणाणं ४ अदुक्खावणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टइ। (३) से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं तणहत्थयं जाततेयंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं मंडियपुत्ता ! से सुक्के तणहत्थए जायतेयंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जइ ? हंता, मसमसाविज्जइ। (४) से जहानामए केइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लंसि उदयबिंदु पक्खिवेज्जा, से नूणं मंडियपुत्ता ! से उदयबिंदू तत्तंसि अयकवल्लंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ ? हंता, विद्धंसमागच्छइ। ५ से जहानामए हरए सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताए चिट्ठति ? हंता चिट्ठति। अहे णं केइ पुरिसे तंसि हरयंसि एगं महं नावं सतासवं सयच्छिद्दं ओगाहेज्जा, से नूणं मंडियपुत्ता ! सा नावा तेहिं आसवद्दारेहिं आपूरेमाणी २ पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठति १ हंता, चिट्ठति। अहे णं केइ पुरिसे तीसे नावाए सव्वतो समंता आसवद्दाराइं पिहेइ, २ नावाउस्सिंचणएणं उदयं उस्सिंचिज्जा, से नूणं मंडियपुत्ता ! सा नावा तंसि उदयंसि उस्सित्तंसि समाणंसि खिप्पामेव उड्ढं उद्दाति ? हंता, उद्दाति। एवामेव मंडियपुत्ता ! अत्तत्तासंवुडस्स अणगारस्स, इरियासमियस्स जाव गुत्तबंभयारिस्स, आउत्तं गच्छमाणस्स चिट्ठमाणस्स निसीयमाणस्स तुयट्टमाणस्स, आउत्तं वत्थ-पडिग्गह -कंबल-पादपुंछणं गेण्हमाणस्स निक्खिवमाणस्स जाव चक्खुपम्हनिवायमवि वेमाया सुहुमा इरियावहिया किरिया कज्जइ। सा पढमसमयबद्धपुट्ठा बितियसमयवेतिता ततियसमयनिज्जरिया, सा बद्धा पुट्ठा उदीरिया वेदिया निज्जिण्णा सेयकाले अकम्मं चावि भवति। से तेणट्ठेणं मंडियपुत्ता ! एवं वुच्चति- जावं च णं से जीवे सया समितं नो एयति जाव अंते अंतकिरिया भवति। [सु. १५. पमत्तसंजयपमत्तसंजमकालपरूवणं] १५. पमत्तसंजयस्स णं भंते ! पमत्तसंजमे वट्टमाणस्स सव्वा वि य णं पमत्तद्धा कालतो केवच्चिरं होति ? मंडियपुत्ता ! एगजीवं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा। [सु. १६. अप्पमत्तसंजयअप्पमत्तसंजमकालपरूवणं] १६. अप्पमत्तसंजयस्स णं भंते ! अप्पमत्तसंजमे वट्टमाणस्स सव्वा वि य णं अप्पमत्तद्धा कालतो केवच्चिरं होति ? मंडियपुत्ता ! एगजीवं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी देसूणा। णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धं। सेवं भंते ! २ त्ति भगवं मंडियपचत्ते अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, २ संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। [सु. १७. गोयमपण्हुत्तरे सव्वद्धाभाविभावंतरपरूवणाए लवणसमुद्दत्तव्वयानिद्देसो] १७. 'भंते !' त्ति भगवं गोतमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, २ त्ता एवं वदासि कम्हा णं भंते ! लवणसमुद्दे चाउद्दस -ऽट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु अतिरेयं वड्ढति वा हायति वा ? लवणसमुद्दवत्तव्वया नेयव्वा जाव लोयट्ठिती। जाव लोयाणुभावे। सेवं भंते ! एवं भंते ! त्ति जाव विहरति। ☆☆☆ **किरिया समत्ता॥ ततियस्स सयस्स तइओ ॥३.३॥** ☆ ☆ ☆**चउत्थो उद्देसओ 'जाणं'** ☆ ☆ ☆ [सु. १-५. भावियप्पमणगारं पडुच्च कयउत्तरवेउव्वियसरीरदेव-देवी-जाणा-इजाणण-पासणपरूवणं, रुक्ख-मूलाइअंतो-बाहिपासणपरूवणं च] १. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा देवं वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेणं जायमाणं जाणइ पासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए देवं पासइ, णो जाणं पासइ १, अत्थेगइए जाणं पासइ, नो देवं पासइ २; अत्थेगइए देवं पि पासइ, जाणं पि पासइ ३; अत्थेगइए नो देवं पासइ, नो जाणं पासइ ४। २. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा देविं वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेणं जायमाणिं जाणइ पासइ ? गोयमा ! एवं चेव। ३. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा देवं सदेवीयं वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेणं जायमाणं जाणइ पासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए देवं सदेवीयं पासइ, नो जाणं पासइ। एएणं अभिलावेणं चत्तारि भंगा। ४. (१) अणगारे णं भंते ! भावियप्पा रुक्खस्स किं अंतो पासइ, बाहिं पासइ ? चउभंगो। २ एवं किं मूलं पासइ, कंदं पा० ? चउभंगो। मूलं पा० खंधं पा० ? चउभंगो। (३) एवं मूलेणं बीजं संजोएयव्वं। एवं कंदेण वि समं संजोएयव्वं जाव बीयं। एवं जाव पुप्फेण समं बीयं संजोएयव्वं। ५. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा रुक्खस्स किं फलं पा० बीयं पा० ? चउभंगो। [सु. ६-७. वाउकायस्स इत्थि -पुरिसाइरूवविउव्वणापडिसेहपुव्वयं पडागासंठियरूवविउव्वणापरूवणाइ] ६. पभू णं भंते !

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाउकाए एगं महं इत्थिरूवं वा पुरिसरूवं वा हत्थिरूवं वा जाणरूवं वा एवं जुग्ग-गिल्लि -थिल्लि -सीय -संदमाणियरूवं वा विउव्वित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। वाउकाए णं विकुव्वमाणे एगं महं पडागासंठियं रूवं विकुव्वइ। ७. (१) पभू णं भंते ! वाउकाए एगं महं पडागासंठियं रूवं विउव्वित्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता, पभू। (२) से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ, परिड्ढीए गच्छइ ? गोयमा ! आतड्ढीए गच्छइ, णो परिड्ढीए गच्छइ। (३) जहा आयड्ढीए एवं चेव आयकम्मुणा वि, आयप्पओगेण वि भाणियव्वं। (४) से भंते ! किं ऊसिओदयं गच्छइ, पतोदयं गुच्छई ? गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ। (५) से भंते ! किं एगओपडागं गच्छइ, दुहओपडागं गच्छइ ? गोयमा ! एगओपडागं गच्छइ, नो दुहओपडागं गच्छइ। (६) से णं भंते ! किं वाउकाए पडागा ? गोयमा ! वाउकाए णं से, नो खलु सा पडागा। सु. ८-११. बलाहगस्स इत्थिपभिइपरिणामणाइपण्णवणं ८. पभू णं भंते ! बलाहगे एगं महं इत्थिरूवं वा जाव संदमाणियरूवं वा परिणामेत्तए ? हंता पभू। ९. (१) पभू णं भंते ! बलाहए एगं महं इत्थिरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता, पभू। (२) से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ, परिड्ढीए गच्छइ ? गोयमा ! नो आतिड्ढीए गच्छति, परिड्ढीए गच्छइ। (३) एवं नो आयकम्मुणा, परकम्मुणा। नो आयपयोगेणं, परप्पयोगेणं। (४) ऊसितोदयं वा गच्छइ पतोदयं वा गच्छइ। १०. से भंते ! किं बलाहए इत्थी ? गोयमा ! बलाहए णं से, णो खलु सा इत्थी। एवं पुरिसे, आसे, हत्थी। ११. (१) पभू णं भंते ! बलाहए एगं महं जाणरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए जहा इत्थिरूवं तहा भाणियव्वं। णवरं एगओचक्कवालं पि, दुहओचक्कवालं पि भाणियव्वं।(२) जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीया संदमाणियाणं तहेव। [सु. १२-१४. चउवीसदंडयउववज्जमाणजीवलेसापरूवणा] १२. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किंलेसेसु उववज्जति ? गोयमा ! जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उववज्जइ, तं० कण्हलेसेसु वा नीललेसेसु वा काउलेसेसु वा। १३. एवं जस्स जा लेस्सा सा तस्स भाणियव्वा जाव जीवे णं भंते ! जे भविए जोतिसिएसु उववज्जित्तए० पुच्छा। गोयमा ! जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उववज्जइ, तं० तेउलेस्सेसु। १४. जीवे णं भंते ! जे भविए वेमाणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किंलेस्सेसु उववज्जइ ? गोयमा ! जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उववज्जइ, तं० तेउलेस्सेसु वा पम्हलेसेसु वा। [सु. १५-१९. भावियप्पमणगारं पडुच्च वेभारपव्वयाणुल्लंघण-उल्लंघण-परूवणा रूवविउव्वणपरूवणाइ य] १५. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू वेभारं पव्वयं उल्लंघेत्तए पलंघेत्तए वा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। १६. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू वेभारं पव्वयं उल्लंघेत्तए वा ? हंता, पभू। १७. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता जावइयाइं रायगिहे नगरे रूवाइं एवइयाइं विकुव्वित्ता वेभारं पव्वयं अंतो अणुप्पविसित्ता पभू समं वा विसमं करेत्तए, विसमं वा समं करेत्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। १८. एवं चेव बितिओ वि आलावगो ; णवरं परियातित्ता पभू। १९. (१) से भंते ! किं मायी विकुव्वति, अमायी विकुव्वइ ? गोयमा ! मायी विकुव्वइ, नो अमाई विकुव्वति। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव नो अमायी विकुव्वइ ? गोयमा ! मायी णं पणीयं पाण-भोयणं भोच्चा वामेति, तस्स णं तेणं पणीएणं पाणभोयणेणं अट्ठि-अट्ठिमिंजा बहलीभवंति, पयणुए मंस -सोणिए भवति, जे वि य से अहाबादरा पोग्गला ते वि य से परिणमंति, तं जहा सोतिंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए, अट्ठि-अट्ठिमिंज-केस-मंसु-रोम-नहत्ताए सुक्कत्ताए सोणियत्ताए। अमायी णं लूहं पाण-भोयणं भोच्चा भोच्चा णो वामेइ, तस्स णं तेणं लहेणं पाण-भोयणेणं अट्ठि-अट्ठिमिंजा० पतणूभवति, बहले मंस-सोणिए, जे वि य से अहाबादरा पोग्गला ते वि य से परिणमंति; तं जहा उच्चारत्ताए पासवणत्ताए जाव सोणियत्ताए। से तेणट्ठेणं जाव नो अमायी विकुव्वइ। (३) मायी णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा। (४) अमायी णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆ ☆ ☆ **तइयसए चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥३.४॥** ☆ ☆ ☆

पंचमो उद्देसओ 'इत्थी' अहवा 'अणगारविकुव्वणा' ☆☆☆ [सु. १-१५. भावियप्पमणगारं पडुच्च इत्थिरूव-असि-पडागा -जण्णोवइत-पल्हत्थिय -

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पलियंक -आसइरूवविउव्वणापण्णवणादि] १. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले **अपरियाइत्ता** पभू एगं महं इत्थिरूवं वा जाव संदमाणियरूवं वा विकुव्वित्तए ? णो इ० । २. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं इत्थिरूवं वा जाव संदमाणियरूवं वा विकुव्वित्तए ? हंता, पभू । ३. (१) अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवतियाइं पभू इत्थिरूवाइं विकुव्वित्तए ? गोयमा ! से जहानामए जुवइ जुवाणे हत्थेणं हत्थंसि गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया एवामेव अणगारे वि भावियप्पा वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ जाव पभू णं गोयमा ! अणगारे णं भावियप्पा केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं बहूहिं इत्थीरूवेहिं आइण्णं वितिकिण्णं जाव एस णं गोयमा ! अणगारस्स भावियप्पणो अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, नो चेव णं संपत्तीए विकुव्विंसु वा ३ । (२) एवं परिवाडीए नेयव्वं जाव संदमाणिया । ४. से जहानामए केइ पुरिसे असिचम्मपायं गहाय गच्छेज्जा एवामेव अणगारे णं भावियप्पा असिचम्मपायहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पइज्जा ? हंता, उप्पइज्जा । ५. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवतियाइं पभू असिचम्मपायहत्थकिच्चगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए ? गोयमा ! से जहानामए जुवति जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा तं चेव जाव विउव्विंसु वा ३ । ६. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपडागं काउं गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा एगओपडागहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पतेज्जा ? हंता, गोयमा ! उप्पतेज्जा । ७. (१) अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवतियाइं पभू एगओपडागहत्थकिच्चगयाइं रूवाइं विकुव्वित्तए ? एवं चेव जाव विकुव्विंसु वा ३ । (२) एवं दुहओपडागं पि । ८. से जहानामए केइ पुरिसे एगओजण्णोवइतं काउं गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भा० एगओजण्णोवइतकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पतेज्जा ? हंता, उप्पतेज्जा । ९. (१) अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवतियाइं पभू एगतोजण्णोवतितकिच्चगयाइं रूवाइं विकुव्वित्तए ? तं चेव जाव विकुव्विंसु वा ३ । (२) एवं दुहओजण्णोवइयं पि । १०. (१) से जहानामए केइ पुरिसे एगओपल्हत्थियं काउं चिट्ठेज्जा एवामेव अणगारे वि भावियप्पा ? तं चेव जाव विकुव्विंसु वा ३ । (२) एवं दुहओपल्हत्थियं पि । ११. (१) से जहानामए केयि पुरिसे एगओपलियंकं काउं चिट्ठेज्जा० ? तं चेव जाव विकुव्विंसु वा ३ । (२) एवं दुहओपलियंकं पि । १२. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं आसरूवं वा हत्थिरूवं वा सीह-वग्घ-वग-दीविय-अच्छ-तरच्छ-परासररूवं वा अभिजुंजित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे, अणगारे णं एवं बाहिरए पोग्गले परियादित्ता पभू । १३. (१) अणगारे णं भंते ! भावियप्पा एगं महं आसरूवं वा अभिजुंजित्ता ?पभू अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता, पभू । (२) से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छति, परिड्ढीए गच्छति ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ, नो परिड्ढीए गच्छइ । (३) एवं आयकम्मुणा, नो परकम्मुणा । आयप्पयोगेणं, नो परप्पयोगेणं । (४) उस्सिओदगं वा गच्छइ पतोदगं वा गच्छइ । १४. (१) से णं भंते ! किं अणगारे आसे ? गोयमा ! अणगारे णं से, नो खलु से आसे । (२) एवं जाव परासररूवं वा । १५. (१) से भंते ! किं मायी विकुव्वति ? अमायी विकुव्वति गोयमा ! मायी विकुव्वति, नो अमायी विकुव्वति । (२) माई णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ अन्नयरेसु आभिओगिएसु देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ । (३) अमाई णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अन्नयरेसु अणाभिओगिएसु देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ । सेवं भंते २ त्ति० । [सु. १६. पंचमुद्देसऽत्थाहिगारसंगहणीगाहा] १६. गाहा इत्थी असी पडागा जण्णोवइते य होइ बोद्धव्वे । पल्हत्थिय पलियंके अभियोगविकुव्वणा मायी ॥१॥ **☆☆☆ तइए सए पंचमो उद्देसो समत्तो ॥३.५॥ ☆☆☆ छट्ठो उद्देसओ 'नगर' अहवा 'अणगारवीरियलद्धी' ☆☆☆** [सु. १-५. भावियप्पणो मिच्छद्दिट्ठिस्सऽणगारस्स वीरियाइलद्धिप्पभावओ नगरंतररूवजाणणा-पासणापरूवणा] १. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छद्दिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणति पासति ? हंता, जाणइ पासइ । २. (१) से भंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ ? अन्नहाभावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो तहाभावं जाणइ पासइ, अण्णहाभावं जाणइ पासइ । (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'नो तहाभावं जाणइ पासइ, अन्नहाभावं जाणइ पासइ ?' । गोयमा ! तस्स णं एवं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवति एवं खलु अहं रायगिहे नगरे समोहए, समोहण्णित्ता वाणारसीए नगरीए रूवाइं जाणामि पासामि, से से दंसणे विवच्चासे भवति, से तेणट्ठेणं जाव पासति। ३. अणगारे णं भंते! भावियप्पा मायी मिच्छद्दिट्ठी जाव रायगिहे नगरे समोहए, समोहण्णित्ता वाणारसीए नगरीए रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता, जाणइ पासइ। तं चेव जाव तस्स णं एवं होइ एवं खलु अहं वाणारसीए नगरीए समोहए, २ रायगिहे नगरे रूवाइं जाणामि पासामि, से से दंसणे विवच्चासे भवति, से तेणट्ठेणं जाव अन्नहाभावं जाणइ पासइ। ४. अणगारे णं भंते! भावियप्पा मायी मिच्छद्दिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंगणाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं रायगिहं च नगरं अंतरा य एगं महं जणवयवग्गं समोहए, २ वाणारसिं नगरिं रायगिहं च नगरं तं च अंतरा एगं महं जणवयवग्गं जाणति पासति ? हंता, जाणति पासति। ५. (१) से भंते! किं तहाभावं जाणइ पासइ ? अन्नहाभावं जाणइ पासइ ? गोयमा! णो तहाभावं जाणति पासइ, अन्नहाभावं जाणइ पासइ। (२) से केणट्ठेणं जाव पासइ ? गोयमा! तस्स खलु एवं भवति -एस खलु वाणारसी नगरी, एस खलु रायगिहे नगरे, एस खलु अंतरा एगे महं जणवयवग्गे, नो खलु एस महं वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी विभंगनाणलद्धी इड्ढी जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए, से से दंसणे विवच्चासे भवति, से तेणट्ठेणं जाव पासति। [सु. ६-१०. भावियप्पणो सम्मद्दिट्ठिस्सऽणगारस्स वीरियाइलद्धिप्पभावओ नगरंतररूवजाणणा -पासणापरूवणा] ६. अणगारे णं भंते! भावियप्पा अमायी सम्मद्दिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिहे नगरे समोहए, २ वाणरसीए नगरीए रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता। ७. (१) से भंते! किं तहाभावं जाणइ पासइ ? अन्नहाभावं जाणति पासति ? गोयमा! तहाभावं जाणति पासति, नो अन्नहाभावं जाणति पासति। (२) से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ ? गोयमा! तस्स णं एवं भवति एवं खलु अहं रायगिहे नगरे समोहए, समोहण्णित्ता वाणारसीए नगरीए रूवाइं जाणमि पासामि, से से दंसणे अविवच्चासे भवति, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति। ८. बीओ वि आलावगो एवं चेव, नवरं वाणारसीए नगरीए समोहणावेयव्वो, रायगिहे नगरे रूवाइं जाणइ पासइ। ९. अणगारे णं भंते! भावियप्पा अमायी सम्मद्दिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिहं नगरं वाणारसिं च नगरिं अंतरा य एगं महं जणवयवग्गं समोहए, (२) रायगिहं नगरं वाणारसिं च नगरिं तं च अंतरा एगं महं जणवयवग्गं जाणइ पासइ ? हंता, जाणइ पासइ। १०. (१) से भंते! किं तहाभावं जाणइ पासइ ? अन्नहाभावं जाणइ पासइ ? गोयमा! तहाभावं जाणइ पासइ, णो अन्नहाभावं जाणइ पासइ। (२) से केणट्ठेणं ? गोयमा! तस्स णं एवं भवति नो खलु एस रायगिहे णगरे, णो खलु एस वाणारसी नगरी, नो खलु एस अंतरा एगे जणवयवग्गे, एस खलु ममं वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिणाणलद्धी इड्ढी जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए, से से दंसणे अविवच्चासे भवति, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति तहाभावं जाणति पासति, नो अन्नहाभावं जाणति पासति। [सु. ११-१३. भावियप्पमणगारं पडुच्च नगराइरूवविउव्वणापरूवणा] ११. अणगारे णं भंते! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं गामरूवं वा नगररूवं वा जाव सन्निवेसरूवं वा विकुव्वित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे। १२. एवं बितिओ वि आलावगो, णवरं बाहिरए पोग्गले परियादित्ता पभू। १३. अणगारे णं भंते! भावियप्पा केवतियाइं पभू गामरूवाइं विकुव्वित्तए ? गोयमा! से जहानामए जुवति जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा तं चेव जाव विकुव्विंसु वा ३। एवं जाव सन्निवेसरूवं वा। [सु. १४-१५. चमराईणं इंदाणं आयरक्खदेवसंखापरूवणा] १४. चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुररण्णो कति आयरक्खदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा! चत्तारि चउसट्ठीओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। ते णं आयरक्खा० वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे। १५. एवं सव्वेसिं इंदाणं जस्स जत्तिया आयरक्खा ते भाणियव्वा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०।। ☆☆☆ तइयसए छट्ठो उद्देसो समत्तो ॥३.६॥ ☆☆☆ सत्तमो उद्देसओ 'लोगपाला' ☆☆☆ [सु. १. सत्तमुद्देसुवुग्घाओ] १. रायगिहे नगरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी सु. २-३. सक्कस्स लोगपाल-तव्विमाणनामाइं २. सक्कस्स णं भंते! देविंदस्स देवरण्णो कति लोगपाला पण्णत्ता ? गोयमा! चत्तारि

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोगपाला पण्णत्ता, तं जहा सोमे जमे वरुणे वेसमणे। ३. एतेसि णं भंते ! चउण्हं लोगपालाणं कति विमाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता, तं जहा संझप्पमे वरसिट्ठे सतंजले वग्गू। [सु. ४. सोमलोगपालसंबंधितविमाणठाणं -पमाण-रायहाणी-आणा-वत्तिदेव-तदायत्तकज्ज-अवच्चीभूयदेव-ठिइपरूवणा] ४. (१) कहिं णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो संझप्पभे णामं महाविमाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम -सूरिय -गहगण -नक्खत्त -तारारूवाणं बहूइं जोयणाइं जाव पंच वडिंसया पण्णत्ता, तं जहा असोयवडेंसए सत्तवण्णवडिंसए चंपयवडिंसए चूयवडिंसए मज्झे सोहम्मवडिंसए। तस्स णं सोहम्मवडेंयस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमेणं सोहम्मे कप्पे असंखेज्जाइं जोयणाइं वीतीवइत्ता एत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो संझप्पभे नामं महाविमाणे पण्णत्ते अद्धतेरसं जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, ऊयालीसं जोयणसयसहस्साइं बावण्णं च सहस्साइं अट्ठ य अडयाले जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं प०। जा सूरियाभविमाणस्स वत्तव्वया सा अपरिसेसा भाणियव्वा जाव अभिसेयो नवरं सोमे देवे। (२) संझप्पभस्स णं महाविमाणस्स अहे सपक्खिं सपडिदिसिं असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सोमा नामं रायहाणी पण्णत्ता, एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं जंबुद्दीवपमाणा। (३) वेमाणियाणं पमाणस्स अद्धं नेयव्वं जाव उवरियलेणं सोलस जोयणसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, पण्णासं जोयणसहस्साइं पंच य सत्ताणउए जोयणसते किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं पण्णत्ते। पासायाणं चत्तारि परिवाडीओ नेयव्वाओ, सेसा नत्थि। (४) सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा आणाउववायं -वयण -निद्देसे चिट्ठंति, तं जहा सोमकाइया ति वा, सोमदेवयकाइया ति वा, विज्जुकुमारा विज्जुकुमारीओ, अग्गिकुमारा अग्गिकुमारीओ, वायुकुमारा वाउकुमारीओ, चंदा सूरा गहा नक्खत्ता तारारूवा, जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया तप्पक्खिया तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो आणा -उववाय -वयण -निद्देसे चिट्ठंति। (५) जंबुदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा गहदंडा ति वा, गहमुसला ति वा, गहगज्जिया ति वा, एवं गहजुद्धा ति वा, गहसिंघाडगा ति वा, गहावसव्वा इ वा, अब्भा ति वा, अब्भरुक्खा ति वा, संझा इ वा, गंधव्वनगरा ति वा, उक्कापाया ति वा, दिसीदाहा ति वा, गज्जिया ति वा, विज्जुया ति वा, पंसुवुट्ठी ति वा, जूवेति वा जक्खालित्त त्ति वा, धूमिया इ वा, महिया इ वा, रयुग्गाया इ वा,, चंदोवरागा ति वा, सूरोवरागा ति वा, चंदपरिवेसा ति वा, सूरपरिवेसा ति वा, पडिचंदा इ वा, पडिसूरा ति वा, इंदधूण ति वा, उदगमच्छ-कपिहसिय -अमोह -पाईणवाया ति वा, पडीणवाता ति वा, जाव संवट्टयवाता ति वा, गामदाहा इ वा, जाव सन्निवेसदाहा ति वा पाणक्खया जणक्खया धणक्खया कुलक्खया वसणब्भूया अणारिया जे यावन्ने तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा असुया अमुया अविण्णाया, तेसिं वा सोमकाइयाणं देवाणं। (६) सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तं जहा इंगालए वियालए लोहियक्खे सणिच्छरे चंदे सूरे सुक्के बुहे बहस्सती राहू। (७) सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सत्तिभागं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता। अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता। एमहिड्ढीए जाव एमहाणुभागे सोमेमहाराया। [सु. ५. जमलोगपालसंबंधितविमाणठाण -पमाण -रायहाणीआईणं परूवणा] ५. (१) कहि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठे णामं महाविमाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोहम्मवडिंसयस्स महाविमाणस्स दाहिणेणं सोहम्मे कप्पे असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं वीईवइत्ता एत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठे णामं महाविमाणे पण्णत्ते अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइं जहा सोमस्स विमाणं तहा जाव अभिसेओ। रायहाणी तहेव जाव पासायपंतीओ। (२) सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा आणा० जाव चिट्ठंति, तं जहा जमकाइया ति वा, जमदेवयकाइया इ वा, पेयकाइया इ वा, पेयदेवयकाइया ति वा, असुरकुमारा असुरकुमारीओ, कंदप्पा निरयवाला आभिओगा जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिगा, तप्पक्खिता तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो आणा जाव चिट्ठंति। (३) जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा डिंबा ति वा, डमरा ति वा, कलहा ति वा, बोला ति वा, खारा ति वा, महाजुद्धा ति वा, महासंगामा ति वा, महासत्थनिवडणा ति वा, एवं महापुरिसनिवडणा ति वा, महारुधिरनिवडणा इ वा, दुब्भूया ति वा, कुलरोगा ति वा, गामरोगा ति वा, मंडलरोगा ति वा, नगररोगा ति वा, सीसवेयणा इ वा, अच्छिवेयणा इ वा, कण्ण-नह-दंतवेयणा इ वा, इंदग्गहा इ वा, खंदग्गहा इ वा, कुमारग्गहा०, जक्खग्ग०, भूयग्ग०, एगाहिया ति वा, बेहिया ति वा, तेहिया ति वा, चाउत्थया ति वा, उव्वेयगा ति वा, कासा०, खासा इ वा, सासा ति वा, सोसा ति वा, जरा इ वा, दाहा०, कच्छकोहा ति वा, अजीरया, पंडुरोया, अरिसा इ वा, भगंदला इ वा, हितयसूला ति वा, मत्थयसूय०, जोणिसू०, पाससू०, कुच्छिसू०, गाममारीति वा, नगर०, खेड०, कब्बड०, दोणमुह०, मडंब०, पट्टण०, आसम०, संवाह० सन्निवेसमारीति वा, पाणक्खया, धणक्खया, जणक्खया, कुलक्खया, वसणब्भूया अणारिया जे यावन्ने तहप्पगारा न ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो अण्णाया० ५, तसिं वा जमकाइयाणं देवाणं। (४) सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तं जहा अंबे १ अंबरिसे चेव २ सामे ३ सबले त्ति यावरे ४। रुद्दोवरुद्दे ५-६ काले य ७ महाकाले त्ति यावरे ॥१॥ असी य ९ असिपत्ते १० कुंभे ११ वालू १२ वेतरणी ति य १३। खरस्सरे १४ महाघोसे १५ एए पन्नरसाऽऽहिया ॥२॥ (५) सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो सत्तिभागं पलिओवं ठिती पण्णत्ता। अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता। एमहिड्ढिए जाव जमे महाराया। [सु. ६. वरुणलोगपालसंबंधितविमाणठाण -पमाण-रायहाणीआईणं परूवणा] ६. (१) कहि णं भंते! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो सयंजले नामं महाविमाणे पण्णत्ते? गोयमा! तस्स णं सोहम्मवडिंसयस्स महाविमाणस्स पच्चत्थिमेणं सोहम्मे कप्पे असंखेज्जाइं जहा सोमस्स तहा विमाणरयहाणीओ भाणियव्वा जाव पासायवडिंसया, नवरं नामनाणत्तं। (२) सक्कस्स णं० वरुणस्स महारण्णो इमे देवा आणा० जाव चिट्ठंति, तं० वरुणकाइया ति वा, वरुणदेवयकाइया इ वा, नागकुमारा नागकुमारीओ, उदहिकुमारा उदहिकुमारीओ, थणियकुमारा थणियकुमारीओ, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया जाव चिट्ठंति। (३) जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा अंतिवासा ति वा, मंदवासा ति वा, सुवुट्ठी ति वा, दुव्वुट्ठी ति वा, उदब्भेया ति वा, उदप्पीला इ वा, उदवाहा ति वा, पवाहा ति वा, गामवाहा ति वा, जाव सन्निवेसवाहा ति वा, पाणक्खया जाव तेसिं वा वरुणकाइयाणं देवाणं। (४) सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो जाव अहावच्चाभिण्णाया होत्था, तं जहा कक्कोडए कद्दमए अंजणे संखवालए पुंडे पलासे मोएज्जए दहिमुहे अयंपुले कायरिए। (५) सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता। एमहिड्ढीए जाव वरुणे महाराया। [सु. ७. वेसमणलोगपालसंबंधितविमाणठाण -पमाण -रायहाणीईणं परूवणा] ७. (१) कहि णं भंते! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो वग्गूणामं महाविमाणे पण्णत्ते? गोयमा! तस्स णं सोहम्मवडिंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरेणं जहा सोमस्स विमाण-रायहाणिवत्तव्वया तहा नेयव्वा जाव पासायवडिंसया। (२) सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो इमे देवा आणा-उववाय -वयण-निद्देसे चिट्ठंति, तं जहा वेसमणकाइया ति वा, वेसमणदेवकाइया ति वा, सुवण्णकुमारा सुवण्णकुमारीओ, दीवकुमारा दीवकूमारीओ, दिसाकुमारा दिसाकुमारीओ, वाणमंतरा वाणमंतरीओ, जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया जाव चिट्ठंति। (३) जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा अयागरा इ वा, तउयागरा इ वा तंबयागरा इ वा, एवं सीसागरा इ वा, हिरण्ण०, सुवण्ण०, रयण०, वयरागरा इ वा, वसुधारा ति वा, हिरण्णवासा ति वा, सुवण्णवासा ति वा, रयण०, वइर०, आभरण०, पत्त०, पुप्फ०, फल०, बीय०, मल्ल०, वण्ण०, चुण्ण०, गंध०, वत्थवासा इ वा, हिरण्णवुट्ठी इ वा, सु०, र०, व०, आ०, प०, पु०, फ०, बी०, म०, ॰०, चुण्ण०, गंधवुट्ठी०, वत्थवुट्ठी ति वा, भायणवुट्ठी ति वा, खीरवुट्ठी ति वा, सुकाला ति वा, दुक्काला ति वा, अप्पग्घा ति वा, महग्घा ति वा, सुभिक्खा ति वा, ॰क्खा ति वा, कयविक्कया ति वा, सन्निहि त्ति वा, सन्निचया ति वा, निही ति वा, णिहाणा ति वा, चिरपोराणाइ वा, पहीणसामियाति वा पहीणसेतुयाति वा,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पहीणमग्गाणि वा, पहीणगोत्तागाराइ वा उच्छन्नसामियाति वा उच्छन्नसेतुयाति वा, उच्छन्नगोत्तागाराति वा सिंघाडग-तिग-चउक्क चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु नगरविद्धमणेसु सुसाण -गिरि -कंदर -संति -सेलोवट्ठाण -भवणगिहेसु सन्निक्खित्ताइं चिट्ठंति, ण ताइं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो अण्णायाइं अदिट्ठाइं असुयाइं अविन्नयाइं, तेसिं वा वेसमणकाइयाणं देवाणं। (४) सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चाभिण्णाया होत्था, तं जहा पुण्णभद्दे माणिभद्दे सालिभद्दे सुमणभद्दे चक्करक्खे पुण्णरक्खे सव्वाणे सव्वजसे सव्वकामसमिद्धे अमोहे असंगे। (५) सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो दो पलिओवमाणि ठिती पण्णत्ता। अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता। एमहिड्ढीए जाव वेसमणे महाराया। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ☆☆☆**तइयसते सत्तमो उद्देसओ समत्तो ॥३.७॥ ☆☆☆अट्ठमो उद्देसओ 'अहिवइ'☆☆☆** [सु. १-३. भवणवासिदेवाहिवइपरूवणं] १. रायगिहे नगरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वदासी असुरकुमाराणं भंते! देवाणं कति देवा आहेवच्चं जाव विहरंति? गोयमा! दस देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तं जहा चमरे असुरिंदे असुरराया, सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे, बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया, सोमे, जमे, वरुणे वेसमणे। २. नागकुमाराणं भंते! पुच्छा। गोयमा! दस देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तं जहा धरणे नागकुमारिंदे नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले सेलवाले, संखवाले, भूयाणंदे नागकुमारिंदे णागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले, संखवाले, सेलवाले। ३. जहा नागकुमारिंदाणं एताए वत्तव्वताए णीयं एवं इमाणं नेयव्वं सुवण्णकुमाराणं वेणुदेवे, वेणुदाली, चित्ते, विचित्ते, चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे। विज्जुकुमाराणं हरिक्कंत, हरिस्सह, पभ, सुप्पभ, पभकंत, सुप्पभकंत। अग्गिकुमाराणं अग्गिसीहे, अग्गिमाणव, तेउ, तेउसीहे, तेउकंते, तेउप्पभे। दीवकुमाराणं पुण्ण, विसिट्ठ, रूय, सुरूय, रूयकंत, रूयप्पभ। उदहिकुमाराणं जलकंते जलप्पभ, जल, जलरूय, जलकंत, जलप्पभ। दिसाकुमाराणं असियगति, अमियवाहण, तुरियगति, खिप्पगति, सीहगति, सीहविक्कमगति। वाउकुमाराणं वेलंब, पभंजण, काल महाकाला अंजण रिट्ठा। थणियकुमाराणं घोस, महाघोस, आवत्त, वियावत्त, नंदियावत्त, महानंदियावत्त। एवं भाणियव्वं जहा असुरकुमारा। सो० १ का० र चि० ३ प० ४ ते० ५ रू० ६ ज० ७ तु० ८ का० ९ आ० १०। [सु. ४-६. वाणमंतर-जोतिस-वेमाणियदेवाहिवइपरूवणा] ४. पिसायकुमाराणं पुच्छा। गोयमा! दो देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तं जहा काले य महाकाले सुरूव पडिरूव पुन्नभद्दे य। अमरवइ माणिभद्दे भीमे य तहा महाभीमे ॥१॥ किन्नर किंपुरिसे खलु सप्पुरिसे खलु तहा महापुरिसे। अतिकाय महाकाए गीरतती चेव गीयजसे ॥२॥ एते वाणमंतराणं देवाणं। ५. जोतिसियाणं देवाणं दो देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तं जहा चंदे य सूरे य। ६. सोहम्मीसाणेसु णं भंते! कप्पेसु कति देवा आहेवच्चं जाव विहरंति? गोयमा! दस देवा जाव विहरंति, तं जहा सक्के देविंदे देवराया, सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे। ईसाणे देविंदे देवराया, सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे। एसा वत्तव्वया सव्वेसु वि कप्पेसु, एते चेव भाणियव्वा। जे य इंदा ते य भाणियव्वा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ☆☆☆ **॥ तइयसते अट्ठमो उद्देसओ समत्तो ।३.८॥ नवमो उद्देसओ 'इंदिय'☆☆☆** [सु. १. इंदियविसयभेयपरूवणा] १. रायगिहे जाव एवं वदासी कतिविहे णं भंते! इंदियविसए पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे इंदियविसए पण्णत्ते, तं० सोतिंदियविसए, जीवाभिगमे जोतिसियउद्देसो नेयव्वो अपरिसेसो। ☆☆☆ **॥तइयसए नवमो उद्देसओ समत्तो ॥३.९॥ दसमो उद्देसओ 'परिसा'☆☆☆** [१. भवणवइआइअच्चुयकप्पज्जंतदेवपरिसापरूवणा] १. (१) रायगिहे जाव एवं वयासी चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुररण्णो कति परिसाओ पण्णत्ताओ? गोयमा! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा समिता चंडा जाता। (२) एवं जहाणुपुव्वीए जाव अच्चुओ कप्पो। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ॥ तइयसए दसमोद्देसो। ३.१० ॥☆ ☆ ☆ **॥ ततियं सयं समत्तं ॥ 卐卐卐 चउत्थं सयं 卐卐卐** [सु १. चउत्थसयस्स उद्देसत्थाहिगारसंगहणीगाहा] १. चत्तारि विमाणेहिं १-४, चत्तारि य होंति रायहाणीहिं ५-८। नेरइए ९ लेस्साहि १० य दस उद्देसा चउत्थसते ॥१॥ [पढम-बिइय-तइय-चउत्था उद्देसा ईसाणलोगपालविमाणाणं सु. २-५. चउण्हं ईसाणलोगपालाणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विमाणट्ठाणाइपरूवणा] २. रायगिहे नगरे जाव एवं वयासी ईसाणस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कति लेगपाला पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि लोगपाले पण्णत्ता, तं जहा सोमे जमे वेसमणे वरुणे। ३. एतेसि णं भंते ! लोगपालाणं कति विमाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता, तं जहा सुमणे सव्वतोभद्दे वग्गू सुवग्गू। ४. कहि णं भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणे नामं महाविमाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव ईसाणे णामं कप्पे पण्णत्ते। तत्थ णं जाव पंच वडेंसया पण्णत्ता, तं जहा अंकवडेंसए फलिहवडिंसए रयणवडेंसए जायरूववडिंसए, मज्झे यऽत्थ ईसाणवडेंसए। तस्स णं ईसाणवडेंसयस्स महाविमाणस्स पुरित्थिमेणं तिरियमसंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं वीतिवतित्ता तत्थ णं ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स २ सुमणे नामं महाविमाणे पण्णत्ते, अद्धतेरसजोयण० जहा सक्कस्स वत्तव्वता ततियसते तहा ईसाणस्स वि जाव अच्चणिया समत्ता। ५. चउण्ह वि लोगपालाणं विमाणे विमाणे उद्देसओ। चउसु विमाणेसु चत्तारि उद्देसा अपरिसेसा। नवरं ठितीए नाणतं आदि दुय तिभागूणा पलिया धणयस्स होंति दो चेव। दो सतिभागा वरुणे पलियमहावच्चदेवाणं ॥१॥ [चउत्थे सए पढम-बिइय-तइय-चउत्थाउद्देसा समत्ता ॥४.१-४॥ पंचम-छट्ठ-सत्तम-अट्ठमा उद्देसा ईसाणलोगपालरायहाणीणं] १. रायहाणीसु वि चत्तारि उद्देसा भाणियव्वा जाव एमहिड्ढीए जाव वरुणे महाराया। [चउत्थे सए पंचम -छट्ठ -सत्तम -अट्ठमा उद्देसा समत्ता ॥४.५-८॥ नवमो उद्देसो 'नेरइअ' (सु. १. नेरइयाणं उववायाइपरूवणा] १. नेरइए णं भंते ! नेरतिएसु उववज्जइ ? अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ ? पण्णवणाए लेस्सापदे ततिओ उद्देसओ भाणिव्वो जाव नाणाइं। चउत्थसए नवमो उद्देसो समत्तो ॥४.९॥ दसमो उद्देसो 'लेस्सा' [सु. १. लेसाणं परिणामाइपंचदसाहिगारपरूवणा] १. से नूणं भंते ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए० ? एवं चउत्थो उद्देसओ पण्णवणाए चेव लेस्सापदे नेयव्वो जाव परिणाम-वण्ण-रस-गंध-सुद्ध-अपसत्थ -संकिलिट्ठुण्हा। गति-परिणाम-पदेसोगाह-वग्गणा-ठाणमप्पबहुं ॥१॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति०। [चउत्थसए दसमो उद्दसो समत्तो ॥४.१०॥] ☆ ☆ ☆ ॥ **चउत्थं सयं समत्तं ॥४॥** 卐卐卐 **पंचमं सयं** 卐卐卐 [सु. १. पंचमसतस्स दसुद्देसगाणमत्थाहिगारा] १. चंप रवि १ अनिल २ गंठिय ३ सद्दे ४ छउमायु ५-६ एयण ७ णियंठे ८। रायगिहं ९ चंपाचंदिमा १० य दस पंचमम्मि सते ॥१॥ ☆ ☆ ☆ **पढमो उद्देसो 'रवि'** ☆ ☆ ☆ [सु. २-३. पढमुद्देसस्स उवुग्घाओ] २. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नगरी होत्था। वण्णओ। तीसे णं चंपाए नगरीए पुण्णभद्दे नामे चेतिए होत्था। वण्णओ। सामी समोसढे जाव परिसा पडिगता। ३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवतो महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती णामं अणगारे गोतमे गोत्तेणं जाव एवं वदासी [सु. ४-६. जंबुद्दीवे सूरियउदयऽत्थमण-दिवस-राइपरूवणा] ४. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उदीण-पादीणमुग्गच्छ पादीणदाहिणमागच्छंति ? पादीण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिण-पादीणमागच्छंति ? दाहिणपादीणमुग्गच्छ पादीण-उदीणमागच्छंति ? पादीण-उदीणमुग्गच्छ उदीचिपादीणमागच्छतिं ? हंता, गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उदीण-पादीण-मुग्गच्छ जाव उदीचि-पादीणमागच्छंति। ५. जदा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवति तदा णं उत्तरड्ढे दिवसे भवति ? जदा णं उत्तरड्ढे दिवसे भवति तदा णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं राती भवति ? हंता, गोयमा ! जदाणं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे जाव राती भवती। ६. जदा णं भंते ! जंबु० मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं दिवसे भवति तदा णं पच्चत्थिमेण वि दिवसे भवति ? जदा णं पच्चत्थिमेणं दिवसे भवति तदाणं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं राती भवति ? हंता, गोयमा ! जदा णं जंबु० मंदर० पुरत्थिमेणं दिवसे जाव राती भवति। [सु. ७-१३. जंबुद्दीवे दिवस-राइकालमाणपरूवणा] ७. जदा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं उत्तरड्ढे वि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति ? जदा णं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती भवति ? हंता, गोयमा ! जदा णं जंबु० जाव दुवालसमुहुत्ता राती भवति। ८. जदा णं जंबु० मंदरस्स

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरत्थिमेणं उक्कोसए अट्ठारस जाव तदा णं जंबुद्दीवे दीवे पच्चत्थिमेण वि उक्को० अट्ठारस्समुहुत्ते दिवसे भवति ? जया णं पच्चत्थिमेणं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे उत्तर० दुवालसमुहुत्ता जाव राती भवति ? हंता, गोयमा ! जाव भवति। ९. जदा णं भंते ! जंबु० दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं उत्तरे अट्ठरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति ? जदा णं उत्तरे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं जंबु० मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं सातिरेगा दुवालसमुहुत्ता राती भवति ? हंता, गोयमा ! जदा णं जंबु० जाव राती भवति। १०. जदा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं पच्चत्थिमेणं अट्ठरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति ? जदा णं पच्चत्थिमेणं अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं साइरेगा दुवालसमुहुत्ता राती भवति ? हंता, गोयमा ! जाव भवति। ११. एवं एतेणं कमेणं ओसारेयव्व सत्तरसमुहुत्ते दिवसे, तेरसमुहुत्ता राती। सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, सातिरेगा तेरसमुहुत्ता राती। सोलसमुहुत्ते दिवसे, चोद्दसमुहुत्ता राती। सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे सातिरेगा चोद्दसमुहुत्ता राती। पन्नरसमुहुत्ते दिवसे, पन्नरसमुहुत्ता राती। पन्नरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, सातिरेगा पन्नरसमुहुत्ता राती। चोद्दसमुहुत्ते दिवसे, सोलसमुहुत्ता राती। चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, सातिरेगा सोलसमुहुत्ता राती। तेरसमुहुत्ते दिवसे, सत्तरसमुहुत्ता राती। तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, सातिरेगा सत्तरसमुहुत्ता राती। १२. जदा णं जंबु० दाहिणड्ढे जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति तया णं उत्तरड्ढे वि ? जया णं उत्तरड्ढे तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति ? हंता, गोयमा ! एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव राती भवति। १३. जदा णं भंते ! जंबु० मंदरस्स पव्वयस्स पुरित्थमेणं जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं पच्चत्थिमेण वि० ? जया णं पच्चत्थिमेण वि तदा णं जंबु० मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति ? हंता, गोयमा ! जाव राती भवति। [सु. १४-२१. जंबुद्दीवेदाहिणड्ढ-उत्तरड्ढ-पुरत्थिम-पच्चत्थिमाईसु वासाहेमंत-गिम्ह-अयणाइ-ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीपरूवणा] १४. जया णं भंते ! जंबु० दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तया णं उत्तरड्ढे वि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ ? जया णं उत्तरड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं अणंतरपुरक्खडसमयंसि वासाणं पढमे समए पडिवज्जति ? हंता, गोयमा ! जदा णं जंबु० २ दाहिणड्ढे वासाणं प० स० पडिवज्जति तह चेव जाव पडिवज्जति। १५. जदा णं भंते ! जंबु० मंदरस्स० पुरत्थिमेणं वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तया णं पच्चत्थिमेण वि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ ? जया णं पच्चत्थिमेण वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं जाव मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं अणंतरपच्छाकडसमयंसि वासाणं प० स० पडिवन्ने भवति ? हंता. गोयमा ! जदा णं जंबु० मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव पडिवन्ने भवति। १६. एवं जहा समएणं अभिलावो भणिओ वासाणं तहा आवलियाए वि भाणियव्वो २, आणापाणूण वि ३, थोवेण वि ४, लवेण वि ५, मुहुत्तेण वि ६, अहोरत्तेण वि ७, पक्खेण वि ८, मासेण वि ९, उउणा वि १०। एतेसिं सव्वेसिं जहा समयस्स अभिलावो तहा भाणियव्वो। १७. जदा णं भंते ! जंबु० दाहिणड्ढे हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जति ? जहेव वासाणं अभिलावो तहेव हेमंताण वि २०, गिम्हाण वि ३० भाणियव्वो जाव उऊ। एवं एते तिन्नि वि। एतेसिं तीसं आलावगा भाणियव्वा। १८. जया णं भंते ! जंबु० मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जति तदा णं उत्तरड्ढे वि पढमे अयणे पडिवज्जइ ? जहा समएणं अभिलावो तहेव अयणेण वि भाणियव्वो जाव अणंतरपच्छाकडसमयंसि पढमे अयणे पडिवन्ने भवति। १९. जहा अयणेणं अभिलावो तहा संवच्छरेण वि भाणियव्वो, जुएण वि, वाससतेण वि, वाससहस्सेण वि, वाससतसहस्सेण वि, पुव्वंगेण वि, पुव्वेण वि, तुडियंगेण दि, तुडिएण वि, एवं पुव्वे २, तुडिए २, अडडे २, अववे २, हूहूए२, उप्पले २, पउमे २, नलिणे २, अत्थणिउरे २, अउए २, णउए २, पउए २, चूलिया २, सीसपहेलिया २, पलिओवमेण वि, सागरोवमेण वि, भाणितव्वो। २०. जदा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जति तदा णं उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ ? जता णं उत्तरड्ढे वि पडिवज्जइ तदा णं जंबुद्दीवे दीव मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं णेवत्थि ओसप्पिणी णेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिते णं तत्थ काले पन्नते समणाउसो ! ? हंता, गोयमा ! तं चेव उच्चारेयव्वं जाव खमणाउसो ? । २१. जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणितो एवं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उस्सप्पिणीए वि भाणितव्वो। [सु. २२-२७. लवणसमुद्द- धायइसंड -कालोयसमुद्द -पुक्खरद्धेसु सूरियउदयऽत्थमणपभिउस्सप्पिणीपज्जवसाणा परूवणा] २२. लवणे णं भंते ! समुद्दे सूरिया उदीचि -पाईणमुग्गच्छ ज चेव जंबुद्दीवस्स वत्तव्वता भणिता स च्चेव सव्वा अपरिसेसिता लवणसमुद्दस्स वि भाणितव्वा, नवरं अभिलावो इमो जाणितव्वो 'जता णं भंते ! लवणे समुद्दे दाहिणड्ढे दिवसे भवति तदा णं लवणे समुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं राती भवति ?' एतेणं अभिलावेणं नेतव्वं जदा णं भंते ! लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे दिवसे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जति तदा णं उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ ? जदा णं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ तदा णं लवणसमुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं नेवत्थि ओसप्पिणी, णेवत्थि उस्सप्पिणी समणाउसो ! ? हंता गोयमा ! जाव समणाउसो ! ? २३. धायतिसंडे णं भंते ! दीव सूरिया उदीचि-पादीणमुग्गच्छ जहेव जंबुद्दीवस्स वत्तव्वता भाणिता स च्चेव धायइसंडस्स वि भाणितव्वा, नवरं इमेणं अभिलावेणं सव्वे. आलावगा भाणितव्वा-जता णं भंते ! धायतिसंडे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवति तदा णं उत्तरड्ढे वि ? जदा णं उत्तरड्ढे वि तदा णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वताणं पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं राती भवति ? हंता, गोयमा ! एवं जाव राती भवति। २४. जदा णं भंते ! धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वताणं पुरत्थिमेणं दिवसे भवति तदा णं पच्चत्थिमेण वि ? जदा णं पच्चत्थिमेण वि तदा णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं उत्तरदाहिणेणं राती भवति ? हंता, गोयमा ! जाव भवंति। २५. एवं एतेणं अभिलावेणं नेयव्वं जाव जदा णं भंते ! दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी तदा णं उत्तरड्ढे, जदा णं उत्तरड्ढे तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं णेवत्थि ओसप्पिणी जाव समणाउसो ! ? हंता, गोयमा ! जाव समणाउसो !। २६. जहा लवणसमुद्दस्स वत्तव्वता तहा कालोदस्स वि भाणितव्वा, नवरं कालोदस्स नामं भाणितव्वं। २७. अब्भिंतरपुक्खरद्धे णं भंते ! सूरिया उदीचि-पाईणमुग्गच्छ जहेव धायइसंडस्स वत्तव्वता तहेव अब्भिंतरपुक्खरद्धस्स वि भाणितव्वा। नवरं अभिलावो जाणेयव्वो जाव तदा णं अब्भिंतरपचक्खरद्धे मंदराणं पुरित्थमपच्चत्थिमेणं नेवत्थि ओसप्पिणी नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिते णं तत्थ काले पन्नत्ते समणाउसो !। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति। ☆ ☆ ☆**पंचमसतस्स पढमओ उद्देसओ ॥५.१॥ बिइओ उद्देसओ 'अणिल'** ☆ ☆ ☆ [सु. १. बितिओद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे नगरे जाव एवं वदासी [सु. २-४. दिसा-विदिसासु पुरेवातादिचउव्विहवाउपरूवणा] २. अत्थि णं भंते ! ईसि पुरेवाता, पत्था वाता, मंदा वाता, महावाता वायंति ? हंता, अत्थि। ३. अत्थि णं भंते ! पुरत्थिमेणं ईसिं पुरेवाता, पत्था वाता, मंदा वाता, महावाता वायंति ? हंता, अत्थि। ४. एवं पच्चत्थिमेणं, दाहिणेणं, उत्तरेणं, उत्तर-पुरत्थिमेणं, पुरत्थिमदाहिणेणं, दाहिण-पच्चत्थिमेणं, पच्छिम-उत्तरेणं। [सु. ५-६. दिसाणं परोप्परोवनिबंधेण वाउपरूवणा] ५. जदा णं भंते ! पुरत्थिमेणं ईसिं पुरेवाता पत्था वाता मंदा वाता महावाता वायंति तदा णं पच्चत्थिमेण वि इसिं पुरेवाता० ? जया णं पच्चत्थिमेणं ईसिं पुरेवाता० तदा णं पुरत्थिमेण वि ? हंता, गोयमा जदा णं पुरत्थिमेणं तदा णं पच्चत्थिमेण वि ईसिं, जया णं पच्चत्थिमेणं तदा णं पुरत्थिमेण वि ईसिं। एवं दिसासु। ६. एवं विदिसासु वि। [सु. ७-९. दीविच्चय-सामुद्दयवाताणं ईसिंवातादिपरूवणा] ७. अत्थि णं भंते ! दीविच्चया ईसिं ? हंता, अत्थि। ८. अत्थि णं भंते ! सामुद्दया ईसिं ? हंता, अत्थि। ९. (१) जया णं भंते ! दीविच्चया ईसिं तदा णं सामुद्दया वि ईसिं, जदा णं सामुद्दया ईसिं तदा णं दीविच्चया वि ईसिं ? णो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'जदा णं दीविच्चया ईसिं णो णं तया सामुद्दया ईसिं, जया णं सामुद्दया ईसिं णो णं तदा दीविच्चया ईसिं ? गोयमा ! तेसि णं वाताणं अन्नमन्नस्स विवच्चासेणं लवणे समुद्दे वेलं नातिक्कमति से तेणट्ठेणं जाव वाता वायंति। [सु. १०-१२. पयारंतरेण वातसरूवतिगपरूवणा] १०. (१) अत्थि णं भंते ! ईसिं पुरेवाता पत्था वाता मंदा वाता महावाता वायंति ? हंता, अत्थि। (२) कया णं भंते ! ईसिं जाव वायंति ? गोयमा ! जया णं वाउयाए अहारियं रियति तदा णं ईसिं जाव वायंति। ११. (१) अत्थि णं भंते ! ईसिं ? हंता, अत्थि। (२) कया णं भंते ! ईसिं ? गोयमा ! जया णं वाउयाए उत्तरकिरियं रियइ तया णं ईसिं। १२. (१) अत्थि णं भंते ! ईसिं ? हंता, अत्थि। (२) कया णं भंते ईसिं पुरेवाता पत्था वाता० ? गोयमा ! जया णं वाउकुमारा वाउकुमारीओ वा अप्पणो वा परस्स वा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तदुभयस्स वा अद्वाए वाउकायं उदीरेंति तया णं ईसिं पुरेवाया जाव वायंति। [सु. १३. वाउकायस्स सासुच्छासादिपरूवणा] १३. वाउकाए णं भंते! वाउकायं चेव आणमति वा पाणमति वा ? जहा खंदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा-अणेगसतसहस्स०। पुट्ठे उद्दाति वा। ससरीरी निक्खमति। [सु. १४. ओदण-कुम्मास-सुराणं वणप्फति-अगणिजीवसरीरत्तपरूवणा] १४. अह भंते! ओदणे कुम्मासे सुरा एते णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा! ओदणे कुम्मासे सुराए य जे घणे दव्वे एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च वणस्सति जीवसरीरा, तओ पच्छा सत्थातीता सत्थपरिणामिता अगणिज्झामिता अगणिज्झूसिता अगणिपरिणामिता अगतणजीवसरीरा इ वत्तव्वं सिया। सुरए य जे दवे दव्वे एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च आउजीवसरीरा, ततो पच्छा सत्थातीता जाव अगणिसरीरा ति वत्तव्वं सिया। [सु. १५. अय-तंब-तउयाइदव्वाणं पुढवि-अगणिजीवसरीरत्तपरूवणा] १५. अह णं भंते! अये तंबे तउए सीसए उवले कसट्टिया, एए णं किंसरीरा इ वत्तव्वं सिया ? गोयमा! अए तंबे तउए सीसए उवले कसट्टिया, एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च पुढविजीवसरीरा, तओ पच्छा सत्थातीता जाव अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया। [सु. १६. अट्ठि-चम्म-रोम-नाइदव्वाणं तसजीवसरीरत्तपरूवणा, अट्ठिज्झाम-चम्मज्झाम-रोमज्झाम-नहज्झामाइदव्वाणं तस-अगणिजीवसरीरत्तपरूवणा य] १६. अह भंते! अट्ठी अट्ठिज्झामे, चम्मे चम्मज्झामे, रोमे रोमज्झामे, सिंगे सिंगज्झामे, खुरे खुरज्झामे, नखे नखज्झामे, एते णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा! अट्ठी चम्मे रोमे सिंगे खुरे नहे, एए णं तसपाणजीवसरीरा। अट्ठिज्झामे चम्मज्झामे रोमज्झामे सिंगज्झामे खुरज्झामे णहज्झामे, एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च तसपाणजीवसरीरा, ततो पच्छा सत्थातीता जाव अगणि० जाव सिया। [सु. १७. इंगाल-छार-भुस-गोमयाणं एगिंदियाइपंचिंदियजीव-अगणिजीवसरीरत्तपरूवणा] १७. अह भंते! इंगाले छारिए, भुसे गोमए एए णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा! इंगाले छारिए भुसे गोमए एए णं पुव्वभावपण्णवणाए एगिंदियजीवसरीरप्पओगपरिणामिया वि जाव पंचिंदियजीवसरीरप्पओगपरिणामिया वि, तओ पच्छा सत्थातीया जाव अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया। [सु. १८. लवणोदहिसरूवपरूवणा] १८. लवणे णं भंते! समुद्दे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं पन्नत्ते ? एवं नेयव्वं जाव लोगट्ठिती लोगाणुभावे। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं जाव विहरति। ☆☆☆ **पंचमसए बिइओ ।५.२॥ तइओ उद्देसओ 'गंठिय'** ☆☆☆ [सु. १. एगं जीवं पडुच्च एगंसि समए इह-परभवियाउयवेदणविसए अण्णउत्थियमयनिरासपुव्वयं भगवओ समाधाणं] १. अण्णउत्थिया णं भंते! एवमाइक्खंति भा० प० एवं परूवेंति से जहानामए जालगंठिया सिया आणुपुव्विगढिया अणंतरगढिया परंपरगढिता अन्नमन्नगढिता अन्नमन्नगुरुयत्ताए अन्नमन्नभारियत्ताए अन्नमन्नगुरुयसंभारियत्ताए अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठति, एवामेव बहूणं जीवाणं बहूसु आजातिसहस्सेसु बहूइं आउयसहस्साइं आणुपुव्विगढियाइं जाव चिट्ठंति। एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पडिसंवेदयति, तं जहा-इहभवियाउयं च परभवियाउयं च; जं समयं इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ तं समयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ, जाव से कहमेयं भंते! एवं ? गोयमा! जं णं ते अन्नउत्थिया तं चेव जाव परभवियाउयं च; जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि-जहानामए जालगंठिया सिया जाव अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठति, एवामेव एगमेगस्स जीवस्स बहूहिं आजातिसहस्सेहिं बहूइं आउयसहस्साइं आणुपुव्विगढियाइं जाव चिट्ठंति। एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पडिसंवेदेइ, तं जहा-इमभवियाउयं वा परभवियाउयं वा, जं समयं इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ नो तं समयं पर० पडिसंवेदेति, जं समयं प० नो समयं इहभवियाउयं प०, इहभवियाउयस्स पडिसंवेयणाए नो परभवियाउयं पडिसंवेदेइ, परभवियाउयस्स पडिसंवेयणाए नो इहभवियाउयं पडिसंवेदेति। एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं प०, तं जहा-इहभवियाउयं वा, परभवियाउयं वा। [सु. २-४. जीव-चउवीसदंडगेसु आउवियारो] २. जीवे णं भंते! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते! किं साउए संकमति, निराउए संकमति ? गोयमा! साउए संकमति, नो निराउए संकमति। ३. से णं भंते! आउए कहिं कडे ? कहिं समाइण्णे ? गोयमा! पुरिभे भवे कडे, पुरिभे भवे समाइण्णे। ४. एवं जाव वेमाणियाणं दंडओ।

Jain Education International 2010_03

For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

[सु. ५. चउव्विहं जोणिं पडुच्च आउबंधवियारो] ५. से नूणं भंते ! जे जं भविए जोणिं उववज्जित्तए से तमाउयं पकरेइ, तं जहा-नेरतियाउयं वा जाव देवाउयं वा ? हंता, गोयमा ! जे जं भविए जोणिं उववज्जित्तए से तमाउयं पकरेइ, तं जहा-नेरइयाउयं वा, तिरि०, मणु०, देवाउयं वा। नेरइयाउयं पकरेमाणे सत्तविहं पकरेइ, तं जहा-रयणप्पभापुढविनेरइयाउयं वा जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयाउयं वा। तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे पंचविहं पकरेइ, तं जहा-एगिंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा, भेदो सव्वो भाणियव्वो। मणुस्साउयं दुविहं। देवाउयं चउव्विहं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆॥ पंचमस्सए तइओ उद्देसओ ॥५.३॥☆☆☆

चउत्थो उद्देसओ 'सद्द' ☆☆☆ [सु. १-४. छउमत्थ-केवलीणं संख-सिंगाइसद्दसवणवियारो] १. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा-संखसद्दाणि वा, सिंगसद्दाणि वा, संखियसद्दाणि वा, खरमुहिसद्दाणि वा, पोयासद्दाणि वा, परिपिरियासद्दाणि वा, पणवसद्दाणि वा, पडहसद्दाणि वा, भंभासद्दाणि वा, होरंभसद्दाणि वा भेरिसद्दाणि वा, झल्लरिसद्दाणि वा, दुंदुभिसद्दाणि वा, तताणि वा, वितताणि वा, घणाणि वा, झुसिराणि वा ? हंता ? गोयमा ! छउमत्थे णं मणूसे आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा-संखसद्दाणि वा जाव झुसिराणि वा। (२) ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं सुणेति ? अपुट्ठाइं सुणेति ? गोयमा ! पुट्ठाइं सुणेति, नो अपुट्ठाइं सुणेति जाव णियमा छद्दिसिं सुणेति। (३) छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से किं आरगताइं सद्दाइं सुणेइ ? पारगताइं सद्दाइं सुणेइ ? गोयमा ! आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ। ४ (१) जहा णं भंते ! छउमत्थे मणुस्से आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ तहा णं भंते ! केवली किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? गोयमा ! केवली णं आरगयं वा पारगयं वा सव्वदूरमूलमणंतियं सद्दं जाणइ पासइ। (२) से केणट्ठेणं तं चेव केवली णं आरगयं वा जाव पास ? गोयमा ! केवली णं पुरत्थिमेणं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ; एवं दाहिणेणं, पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं, उड्ढं, अहे मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ, सव्वं जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली, सव्वतो जाणइ पासइ, सव्वकालं जा० पा०, सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली, अणंते नाणे केवलिस्स, अणंते दंसणे केवलिस्स, निव्वुडे नाणे केवलिस्स, निव्वुडे दंसणे केवलिस्स। से तेणट्ठेणं जाव पासइ। [सु. ५-६. छउमत्थ-केवलीण हास-उस्सुआवणवियारो] ५. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से हसेज्ज वा ? उस्सुआएज्ज वा ? हंता, हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा। ६. (१) जहा णं भंते ! छउमत्थे मणुस्से हसेज्ज वा उस्सु तहा णं केवली वि हसेज्ज वा, गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते ! जाव नो णं तहा केवली हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा ? गोयमा ! जं णं जीवा चरित्तमोहणिज्जकम्मस्स उदएणं हसंति वा उस्सुयायंति वा, से णं केवलिस्स नत्थि, से तेणट्ठेणं जाव नो णं तहा केवली हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा। [सु. ७-९. हसमाण -उस्सुयमाणेसु जीव -चउवीसदंडएसु एगत्त -पुहत्तेणं सत्तऽट्ठकम्मबंधपरूवणा] ७. जीवे णं भंते ! हसमाणे वा उस्सयमाणे वा कति कम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा। ८. एवं जाव वेमाणिए। ९. पोहत्तिएहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। [सु. १०-११. छउमत्थ-केवलीणं निद्दावियारो] १०. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्ज वा ? हंता, निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा। ११. जहा हसेज्ज वा तहा, नवरं दरिसणावरणिज्जस्स कंम्मस्स उदएणं निद्दायंति वा, पयलायंति वा। से णं केवलिस्स नत्थि। अन्नं तं चेव। [सु. १२-१४. निद्दायमाण-पयलायमाणेसु जीव-चउवीसदंडएसु एगत्त-पुहत्तेणं सत्तऽट्ठकम्मबंधपरूवणा] १२. जीवे णं भंते ! निद्दायमाणे वा पयलायमाणे वा कति कम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहविहबंधए वा। १३. एवं जाव वेमाणिए। १४. पोहत्तिएसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। [सु. १५-१६. गब्भावहारविसए हरिणेगमेसिदेववत्तव्वया] १५. हरी णं भंते ! नेगमेसी सक्कदूते इत्थीगब्भं साहरमाणे किं गब्भाओ गब्भं साहरति ? गब्भाओ जोणिं साहरइ ? जोणीतो गब्भं साहरति ? जोणीतो जोणिं साहरइ ? गोयमा ! नो गब्भातो गब्भं साहरति, नो गब्भाओ जोणिं साहरति, नो जोणीतो जोणिं साहरति, परामसिय परामसिय अव्वाबाहेणं अव्वाबाहं जोणीओ गब्भं साहरइ। १६. पभू णं भंते ! हरिणेगमेसी सक्कस्स दूते इत्थीगब्भं नहसिरंसि वा रोमकूवंसि वा साहरित्तए वा नीहरित्तए वा ? हंता, पभू, नो चेव णं तस्स गब्भस्स किंचि वि आबाहं वा विबाहं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा उप्पाएज्जा, छविच्छेदं पुण करेज्जा, एसुहुमं च णं साहरिज्ज वा, नीहरिज्ज वा। [सु. १७. पडिग्गहरूवनावाए उदगंसि अभिरममाणं अइमुत्तयमुणिं पेच्छिय संजायसंसयाणं थेराणं अणुसट्ठिपुव्वयं भगवया परूविया अइमुत्तयमुणिसिज्झणावत्तव्वया] १७. (१) तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतेवासी अतिमुत्ते णामं कुमारसमणे पगतिभद्दए जाव विणीए। (२) तए णं से अतिमुत्ते कुमारसमणे अन्नया कयाइ महावुट्ठिकायंसि निवयमाणंसि कक्खपडिग्गह-रयहरणमायाए बहिया संपट्ठिते विहाराए। (३) तए णं से अतिमुत्ते कुमारसमणे वाहयं वहमाणं पासति, २ मट्टियापालिं बंधति, २ 'नाविया मे २' णाविओ विव णावमयं पडिग्गहकं, उदगंसि कट्टु पव्वाहमाणे पव्वाहमाणे अभिरमति। (४) तं च थेरा अद्दक्खु। जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, २ एवं वदासी एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी अतिमुत्ते णामं कुमारसमणे, से णं भंते! अतिमुत्ते कुमारसमणे कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति ? 'अज्जो !' ति समणे भगवं महावीरे ते थेरे एवं वदासी एवं खलु अज्जो ! ममं अंतेवासी अतिमुत्ते णामं कुमारसमणे पगतिभद्दए जाव विणीए, से णं अतिमुत्ते कुमारसमणे इमेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति। तं मा णं अज्जो ! तुब्भे अतिमुत्तं कुमारसमणं हीलेह निंदह खिंसह गरहह अवमन्नह। तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! अतिमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हह, अगिलाए उवगिण्हह, अगिलाए भत्तेणं पाणेणं विणयेणं वेयावडियं करेह। अतिमुत्ते णं कुमारसमणे अंतकरे चेव, अंतिमसरीरिए चेव। (५) तए णं ते थेरा भगवंतो समणेणं भगवता महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति, अतिमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हंति जाव वेयावडियं करेंति। [सु. १८. महासुक्कदेवजुयलपुच्छाए भगवओ सत्तसयाणं सिस्साणं सिज्झणावत्तव्वया] १८. (१) तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्कातो कप्पातो महासामाणातो विमाणातो दो देवा महिड्ढीया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूता। (२) तए णं ते देवा समणं भगवं महावीरं वंदंति, नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता मणसा चेव इमं एतारूवं वागरणं पुच्छंति कति णं भंते ! देवाणुप्पियाणं अंतेवासिसयाइं सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति ? तए णं समणे भगवं महावीरे तेहिं देवेहिं मणसा पुट्ठे, तेसिं देवाणं मणसा चेवं इमं एतारूवं वागरणं वागरेति एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम सत्त अंतेवासिसताइं सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति। (३) तए णं ते देवा समणेणं भगवया महावीरेणं मणसा पुट्ठेणं मणसा चेव इमं एतारूवं वागरणं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठा जाव हयहियया समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति, २ त्ता मणसा चेव सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा जाव पज्जुवासंति। [सु. १९. सिस्ससिज्झणापुच्छयदेवसंबंधियाए गोयमपुच्छाए भगवओ निद्देसाणुसारेण गोयमस्स देवेहिंतो सब्भावावगमो] १९. (१) तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती णामं अणगारे जाव अदूरसामंते उड्ढंजाणू जाव विहरती। (२) तए णं तस्स भगवतो गोतमस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था 'एवं खलु दो देवा महिड्ढीया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया, तं नो खलु अहं ते देवे जाणामि कयरातो कप्पातो वा सग्गातो वा विमाणातो वा कस्स वा अत्थस्स अट्ठाए इहं हव्वमागता ?' तं गच्छामि णं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि जाव पज्जुवासामि, इमाइं च णं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामि त्ति कट्टु एवं संपेहेति, २ उट्ठाए उट्ठेति, २ जेणेव समणे भगवं महावीरे जाव पज्जुवासति। (३) 'गोयमा !' इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वदासी से नूणं तव गोयमा ! झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेतारूवे अज्झत्थिए जाव जेणेव मम अंतिए तेणेव हव्वमागए। से नूणं गोतमा ! अट्ठे समट्ठे ? हंता, अत्थि। तं गच्छाहि णं गोतमा ! एते चेव देवा इमाइं एतारूवाइं वागरणाइं वागरेहिंति। (४) तए णं भगवं गोतमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति, २ जेणेव ते देवा तेणेव पहारेत्थ गमणाए। (५) तए णं ते देवा भगवं गोतमं एज्जमाणं पासंति, २ हट्ठा जाव हयहिदया खिप्पामेव अब्भुट्ठेंति, २ खिप्पामेव पच्चूवगच्छंति, २ जेणेव भगवं गोतमे तेणेव उवागच्छंति, २ त्ता जाव णमंसित्ता एवं वदासी एवं खलु भंते ! अम्हे महासुक्कातो कप्पातो महासामाणातो विमाणातो दो देवा महिड्ढिया जाव पादुब्भूता, तए णं अम्हे समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो, २ मणसा चेव इमाइं एतारूवाइं वागरणाइं पुच्छामो कति णं भंते ! देवाणुप्पियाणं अंतेवासिसयाइं सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति ? तए णं समणे

भगवं महावीरे अम्हेहिं मणसा पुट्ठे अम्हं मणसा चेव इमं एतारूवं वागरणं वागरेति एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम सत्त अंतेवासि० जाव अंतं करेहिंति। तए णं अम्हे समणेणं भगवया महावीरेणं मणसा पुट्ठेणं मणसा चेव इमं एतारूवं वागरणं वागरिया समाणा मसणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो, २ जाव पज्जुवासामो त्ति कट्टु भगव गोतमं वंदंति नमंसंति, २ जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया। [सु. २०-२३. गोयमस्स देवपच्चइयाए संजय -असंजय- संजयासंजयत्तपुच्छाए भगवओ समाहाणं] २०. 'भंते' त्ति भगवं गोतमे समणं जाव एवं वदासी देवा णं भंते ! 'संजया' ति वत्तव्वं सिया ? गोतमा ! णो इमट्ठे समट्ठे। अब्भक्खाणमेयं देवाणं। २१. भंते ! 'असंजता' ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! णो इमट्ठे समट्ठे। णिट्ठुरवयणमेयं देवाणं। २२ भंते ! 'संजयासंजया' ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! णो इमट्ठे समट्ठे। असब्भूयमेयं देवाणं। २३. से किं खाति णं भंते ! देवा ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! देवा णं 'नो संजया' ति वत्तव्वं सिया। [सु. २४. देवाणं अद्धमागइभासाभासित्तं] २४. देवा णं भंते ! कयराए भासाए भासंति ? कतरा वा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ? गोयमा ! देवा णं अद्धमागहाए भासाए भासंति, सा वि य णं अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति। [सु. २५-२८. केवलि- छउमत्थे पडुच्च अंतकरजाणणा -चरमकम्मचरमनिज्जरजाणणावत्तव्वया] २५. केवली णं भंते ! अंतकरं वा अंतिमसरीरियं वा जाणति पासइ ? हंता, गोयमा ! जाणति पासति। २६. (१) जहा णं भंते ! केवली अंतकरं वा अंतिमसरीरियं वा जाणति पासति तधा णं छउमत्थे वि अंतकरं वा अंतिमसरीरियं वा जाणति पासति ? गोयमा ! णो इमट्ठे समट्ठे, सोच्चा जाणति पासति पमाणतो वा। (२) से किं तं सोच्चा ? सोच्चा णं केवलिस्स वा, केवलिसावयस्स वा, केवलिउवासियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा, तप्पक्खियउवासगस्स वा तप्पक्खियउवासियाए वा। से तं सोच्चा। (३) से किं तं पमाणे ? पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा पच्चक्खे, अणुमाणे, ओवम्मे, आगमे। जहा अणुयोगद्दारे तहा णेयव्वं पमाणं जाव तेणं परं नो अत्तागमे, नो अणंतरागमे, परंपरागमे। २७. केवली णं भंते ! चरमकम्मं वा चरमनिज्जरं वा जाणति, पासति ? हंता, गोयमा ! जाणति, पासति। २८. जहा णं भंते ! केवली चरमकम्मं वा०, जहा णं अंतकरेणं आलावगो तहा चरमकम्मेण वि अपरिसेसितो णेयव्वो। [सु. २९-३०. केवलि-वेमाणियदेवे पडुच्च पणीयमण-वइधारणवत्तव्वया] २९. केवली णं भंते ! पणीतं मणं वा, वइं वा धारेज्जा ? हंता, धारेज्जा। ३०. (१) जे णं भंते ! केवली पणीयं मणं वा वइं वा धारेज्जा तं णं वेमाणिया देवा जाणंति, पासंति ? गोयमा ! अत्थेगइया जाणंति पासंति, अत्थेगइया न जाणंति न पासंति। (२) से केणट्ठेणं जाव न जाणंति न पासंति ? गोयमा ! वेमाणिया देवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा मायिमिच्छादिट्ठिउववन्नगा य, अमायिसम्मद्दिट्ठिउववन्नगा य। एवं अणंतर-परंपर-पज्जत्ताऽपज्जत्ता य उवउत्ता अणुवउत्ता। तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते जाणंति पासंति। से तेणट्ठेणं०, तं चेव। [सु. ३१-३२. सट्ठाणट्ठियअणुत्तरदेवाणं केवलिणा सह आलावाइवत्तव्वया] ३१. (१) पभू णं भंते ! अणुत्तरोववातिया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगतेणं केवलिणा सद्धिं आलावं वा संलावं वा करेत्तए ? हंता, पभू। (२) से केणट्ठेणं जाव पभू णं अणुत्तरोववातिया देवा जाव करेत्तए ? गोयमा ! जं णं अणुत्तरोववातिया देवा तत्थगता चेव समाणा अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा पुच्छंति, तं णं इहगते केवलि अट्ठं वा जाव वागरणं वा वागरेति। से तेणट्ठेणं०। ३२. (१) जं णं भंते ! इहगए चेव केवली अट्ठं वा जाव वागरेति तं णं अणुत्तरोववातिया देवा तत्थगता चेव समाणा जाणंति, पासंति ? हंता, जाणंति पासंति। (२) से केणट्ठेणं जाव पासंति ? गोतमा ! तेसिं णं देवाणं अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमन्नागताओ भवंति। से तेणट्ठेणं जं णं इहगते केवली जाव पा०। [सु. ३३. अणुत्तरदेवाणमुवसंतमोहणीयत्तं] ३३. अणुत्तरोववातिया णं भंते ! देवा किं उदिण्णमोहा उवसंतमोहा खीणमोहा ? गोयमा ! नो उदिण्णमोहा, उवसंतमोहा, नो खीणमोहा। [सु. ३४. केवलिस्स इंदियपच्चइयजाणणा-पासणाणं पडिसेहो] ३४. (१) केवली णं भंते ! आयाणेहिं जाणइ, पासइ ? गोयमा ! णो इमट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं जाव केवली णं आयाणेहिं न जाणति, न पासति ? गोयमा ! केवली णं पुरत्थिमेणं मियं पि जाणति, अमियं पि जाणइ जाव निव्वुडे दंसणे केवलिस्स। से तेणट्ठेणं०। [सु. ३५. केवलिस्स हत्थ-पायाईणं आगासपएसावगाहणं पडुच्च वट्टमाणकाल-एस्सकालवत्तव्वया] ३५.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१) केवली णं भंते ! अस्सिं समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा पादं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहित्ताणं चिट्ठति, पभू णं भंते ! केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा जाव ओगाहित्ताणं चिट्ठित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते ! जाव केवली णं अस्सिं समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा जाव चिट्ठति नो णं पभू केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा जाव चिट्ठित्तए ? गोयमा ! केवलिस्स णं वीरियसजोगसद्दव्वताए चलाइं उवगरणाइं भवंति, चलोवगरणट्ठयाए य णं केवली अस्सिं समयंसि जेसु आगासपदेसु हत्थं वा जाव चिट्ठति णो णं पभू केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव जाव चिट्ठित्तए। से तेणट्ठेणं जाव वुच्चइ-केवली णं अस्सिं समयंसि जाव चिट्ठित्तए। [सु. ३६. चोद्दसपुव्विं पडुच्च घड -कड -रहाइदव्वाणं सहस्सगुणकरणसामत्थपरूवणं] ३६. (१) पभू णं भंते ! चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्सं, पडाओ पडसहस्सं, कडाओ कडसहस्सं, रहाओ रहसहस्सं, छत्ताओ छत्तसहस्सं, दंडाओ दंडसहस्सं अभिनिव्वत्तित्ता उवदंसेत्तए ? हंता, पभू। (२) से केणट्ठेणं पभू चोद्दसपुव्वी जाव उवदंसेत्तए ? गोयमा ! चउद्दसपुव्विस्स णं अणंताइं दव्वाइं उक्करियाभेदेणं भिज्जमाणाइं लद्धाइं पत्ताइं अभिसमन्नागताइं भवंति। से तेणट्ठेणं जाव उवदंसित्तए। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।॥५.४॥ **☆☆☆पंचमो उद्देसओ 'छउम'☆☆☆** [सु. १. छउमत्थं पडुच्च केवलेणं संजमेणं असिज्झणावत्तव्वया] १. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तीयमणंतं सासतं समयं केवलेणं संजमेणं० जहा पढमसए चउत्थुद्देसे आलावगा तहा नेयव्वं जाव 'अलमत्थु' त्ति वत्तव्वं सिया। [सु. २-४. जीव-चउवीसदंडएसु एवंभूय-अणेवंभूयवेयणावत्तव्वया] २. (१) अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता एवंभूयं वेदणं वेदेंति, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जं णं ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव वेदेंति, जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि-अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेदणं वेदेंति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवंभूयं वेदणं वेदेंति। (२) से केणट्ठेणं अत्थेगइया० तं चेव उच्चारेयव्वं। गोयमा ! जे णं पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा तहा वेदणं वेदेंति ते णं पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेदणं वेदेंति। जे णं पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा नो तहा वेदणं वेदेंति ते णं पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवंभूयं वेदणं वेदेंति। से तेणट्ठेणं० तहेव। ३. (१) नेरतिया णं भंते ! किं एवंभूतं वेदणं वेदेंति ? अणेवंभूयं वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! नेरइया णं एवंभूयं पि वेदणं वेदेंति, अणेवंभूयं पि वेदेणं वेदेंति। (२) से केणट्ठेणं० ? तं चेव। गोयमा ! जे णं नेरइया जहा कडा कम्मा तहा वेयणं वेदेंति ते णं नेरइया एवंभूयं वेदणं वेदेंति। जे णं नेरतिया जहा कडा कम्मा णो तहा वेदणं वेदेंति ते णं नेरइया अणेवंभूयं वेदणं वेदेंति। से तेणट्ठेणं०। (४) एवं जाव वेमाणिया। संसारमंडलं नेयव्वं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ॥ **☆☆☆॥ पंचमसए पंचमो उद्देसओ समत्तो ॥ ५.५ ॥ छट्ठो उद्देसओ 'आउ' ☆☆☆** [सु. १-४. अप्पाउय-दीहाउय-असुभदीहाउय-सुभदीहाउयकम्मबंधहेउपरूवणा] १. कहं णं भंते ! जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ? गोतमा ! तिहिं ठाणेहिं, तं जहा-पाणे अइवाएत्ता, मुसं वइत्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता, एवं खलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेंति। २. कहं णं भंते ! जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ? गोयमा ! तिहिं ठाणेहिं नो पाणे अतिवाइत्ता, नो मुसं वदित्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता, एवं खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति। ३. कहं णं भंते ! जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ? गोयमा ! पाणे अतिवाइत्ता, मुसं वइत्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा हीलित्ता निंदित्ता खिंसित्ता गरहित्ता अवमन्नित्ता, अन्नतरेणं अमणुण्णेणं अपीतिकारएणं असण-पाण-खाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता, एवं खलु जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति। ४. कहं णं भंते ! जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ? गोयमा ! नो पाणे अतिवातित्ता, नो मुसं वइत्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासित्ता, अन्नतरेणं मणुण्णेणं पीतिकारएणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता, एवं खलु जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति। [सु. ५-८. भंडविक्किणमाणगाहावइ-काययाणं भंडावहारं पडुच्च आरंभियाइपंचकिरियावत्तव्वया] ५. गाहावतिस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केइ भंडं अवहरेज्जा, तस्स णं भंते ! तं भंडं अणुगवेसमाणस्स किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? पारिग्गहिया०, मायावत्तिया०, अपच्चक्खा०, मिच्छादंसण० ? गोयमा ! आरंभिया किरिया कज्जइ, पारि०, माया०, अपच्च०; मिच्छादंसणकिरिया सिय कज्जति, सिय नो कज्जति। अह से भंडे अभिसमन्नागते भवति ततो से पच्छा सव्वाओ ताओ पयणुईभवंति। ६. गाहावतिस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स कइए भंडं सातिज्जेज्जा, भंडे य से अणुवणीए सिया, गाहावतिस्स णं भंते ! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जइ ? कइयस्स वा ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! गाहावतिस्स ताओ भंडाओ आरंभिया किरिया कज्जइ जाव अपच्चक्खाणिया; मिच्छादंसणवत्तिया किरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ। कइयस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति। ७. गाहावतिस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स जाव भंडे से उवणीए सिया, कइयस्स णं भंते ! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जति० ? गाहावतिस्स वा ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जति० ? गोयमा ! कइयस्स ताओ भंडाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जंति, मिच्छादंसणकिरिया भयणाए। गाहावतिस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति। ८ (१) गाहावतिस्स णं भंते ! भंडं जाव धणे य से अणुवणीए सिया० ? एयं पि जहा 'भंडे उवणीते' तहा नेयव्वं। (२) चउत्थो आलावगो-धणे य से उवणीए सिया जहा पढमो आलावगो 'भंडे य से अणुवणीए सिया' तहा नेयव्वो। पढम-चउत्थाणं एक्को गमो। बितिय-ततियाणं एक्को गमो। [सु. ९. पलित्त-वोकसिज्जमाणे अगणिकाए अप्पकम्म-किरियासव-वेदणतरत्तपरूवणा ९. अगणिकाए णं भंते ! अहुणोज्जलिते समाणे महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव, महासवतराए चेव, महावेदणतराए चेव भवति। अहे णं समए समए वोक्कसिज्जमाणे वोक्कसिज्जमाणे वोच्छिज्जमाणे चरिमकालसमयंसि इंगालभूते मुम्मुरभूते छारियभूते, तओ पच्छा अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव, अप्पवेदणतराए चेव भवति ? हंता, गोयमा ! अगणिकाए णं अहुणुज्जलिते समाणे० तं चेव। [सु. १०-११. धणुपक्खेघगपुरिस-धणुनिव्वत्तणनिमित्तजीव-धणुअवयवाणं काइयादियाओ पंच किरियाओ] १०. (१) पुरिसे णं भंते ! धणुं परामुसति, धणुं परामुसित्ता उसुं परामुसति, उसुं परामुसित्ता ठाणं ठाति, ठाणं ठिच्चा आयतकण्णाययं उसुं करेति, आययकण्णाययं उसुं करेत्ता उड्ढं वेहासं उसुं उव्विहति, २ ततो णं से उसुं उड्ढं वेहासं उव्विहिए समाणे जाइं तत्थ पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणति वत्तेति लेस्सेति संघाएति संघट्टेति परितावेति किलामेति, ठाणाओ ठाणं संकामेति, जीविताओ ववरोवेति, तए णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ? गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे धणुं परामुसति जाव उव्विहति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पाणातिवातकिरियाए, पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे। (२) जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो धणू निव्वत्तिए ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे। ११. एवं धणुपुट्ठे पंचहिं किरियाहिं। जीवा पंचहिं। ण्हारू पंचहिं। उसू पंचहिं। सरे पत्तणे फले ण्हारू पंचहिं। [सु. १२. धणुपक्खेवगपुरिस-धणुनिव्वत्तणनिमित्तजीवाणं कहंचिनिमित्ता-भावपसंगे काइयादियाओ चउरो किरियाओ, धणुअवयव-धणूवग्गह-चिट्ठमाणजीवाणं च पंच किरियाओ] १२. अहे णं से उसू अप्पणो गरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुसंभारियत्ताए अहे वीससाए पच्चोवयमाणे जाइं तत्थ पाणाइं जाव जीविताओ ववरोवेति, एवं च णं से पुरिसे कतिकिरिए ? गोयमा ! जावं च णं से उसू अप्पणो गरुययाए जाव ववरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे। जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए ते वि जीवा चउहिं किरियाहिं। धणुपुट्ठे चउहिं। जीवा चउहिं। ण्हारू चउहिं। उसू पंचहिं। सरे, पत्तणे, फले, ण्हारू पंचहिं। जे वि य से जीवा अहे पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे चिट्ठंति ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा। [सु. १३. अन्नउत्थियाणं चउ-पंचजोयणसयमणुस्सबहुसमाइण्ण - मणुस्सलोयपरूवणाए परिहारपुव्वयं चउ-पंचजोयणसयनेरइयबहुस - माइण्णनिरयलोयपरूवणा] १३. अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति-से जहानामए जुवतिं जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया एवामेव जाव चत्तारि पंच जोयणसताइं बहुसमाइण्णे मणुयलोए मणुस्सेहिं। से कहमेतं भंते ! एवं ? गोयमा ! जं णं ते अन्नउत्थिया जाव मणुस्सेहिं, जे ते एवमाहंसु मिच्छा०। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव एवामेव चत्तारिपंच जोयणसताइं बहुसमाइण्णे निरइलोए नेरइएहिं। [सु. १४ नेरइयविकुव्वणावत्तव्वया]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. नेरइया णं भंते ! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए ? पुहत्तं पभू विकुव्वित्तए ? जहा जीवाभिगमे आलावगो तहा नेयव्वो जाव दुरहियासं। [सु. १५-१८. आहाकम्मादिरायपिंडताणं अणवज्जत्तं] पहारगाणं बहुजणमज्झभासग-पन्नवगाणं, आहाकम्माइपिंडे अणवज्जरूवेण भुंजंताणं अन्नसाहूणं समप्पयाणं अणालोयगाणं आराहणाऽभाववत्तव्वया, आलोयगाणं च आराहणासब्भाववत्तव्वया १५. (१) 'आहाकम्मं णं अणवज्जे'त्ति मणं पहारेत्ता भवति, से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेति नत्थि तस्स आराहणा। (२) से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेति अत्थि तस्स आराहणा। (३) एतेणं गमेणं नेयव्वं-कीयकडं ठवियगं रइयगं कंतारभत्तं दुब्भिक्खभत्तं वद्दलियाभत्तं गिलाणभत्तं सिज्जातरपिंडं रायपिंडं। १६. (१) 'आहाकम्मं णं अणवज्जे' त्ति बहुजणमज्झे भासित्ता सयमेव परिभुंजित्ता भवति, से णं तस्स ठाणस्स जाव अत्थि तस्स आराहणा। (२) एयं पि तह चेव जाव रायपिंडं। १७. 'आहाकम्मं णं अणवज्जे' त्ति सयं अन्नमन्नस्स अणुप्पदावेत्ता भवति, से णं तस्स० एयं तह चेव जाव रायपिंडं। १८. 'आहाकम्मं णं अणवज्जे' त्ति बहुजणमज्झे पन्नवइत्ता भवति, से णं तस्स जाव अत्थि आराहणा जाव रायपिंडं। [सु. १९. गणसारक्खणे अगिलायमाणाणं आयरिय-उवज्झायाणं तब्भवाइतिभवग्गहणेहिं सिज्झाणा १९. आयरिय-उवज्झाए णं भंते ! सविसयंसि गणं अगिलाए संगिण्हमाणे अगिलाए उवगिण्हमाणे कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव अंतं करेति ? गोतमा ! अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति, अत्थेगइए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति, तच्चं पुण भवग्गहणं नातिक्कमति। [सु. २०. अब्भक्खाणपच्चइयकम्मबंधवत्तव्वय] २०. जे णं भंते ! परं अलिएणं असंतएणं अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाति तस्स णं कहप्पगारा कम्मा कज्जंति ? गोयमा ! जे णं परं अलिएणं असंतएणं अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाति तस्स णं तहप्पगारा चेव कज्जंति, जत्थेव णं अभिसमागच्छति तत्थेव णं पडिसंवेदेति, ततो से पच्छा वेदेति। सेवं भंते ! २ त्ति०। ☆☆☆॥ **पंचमसए छट्ठो उद्देसओ ॥ ५.६ ॥ सत्तमो उद्देसो 'एयण'**☆☆☆[सु. १-२. परमाणुपुग्गल-दुपदेसियाइखंधाणं एयणादिवत्तव्वया] १. परमाणुपोग्गले णं भंते ! एयति वेयति जाव तं तं भावं परिणमति ? गोयमा ! सिय एयति वेयति जाव परिणमति, सिय णो एयति जाव णो परिणमति। २. (१) दुपदेसिए णं भंते ! खंधे एयति जाव परिणमइ ? गोयमा ! सिय एयति जाव परिणमति, सिय णो एयति जाव णो परिणमति; सिय देसे एयति, देसे नो एयति। (२) तिपदेसिए णं भंते ! खंधे एयति० ? गोयमा ! सिय एयति १, सिय नो एयति २, सिय देसे एयति, नो देसे एयति ३, सिए देसे एयति, नो देसा एयंति ४, सिय देसा एयंति, नो देसे एयति ५। (३) चउप्पएसिए णं भंते ! खंधे एयति० ? गोयमा ! सिय एयति १, सिय नो एयति २, सिय देसे एयति, णो देसे एयति ३, सिय देसे एयति, णो देसा एयंति ४, सिय देसा एयंति, नो देसे एयति ५, सिय देसा एयंति, नो देसा एयंति ६। (४) जहा चउप्पदेसिओ तहा पंचपदेसिओ, तहा जाव अणंतपदेसिओ। [सु. ३-८. परमाणुपोग्गल-दुपएसियाइखंधाणं असिधाराओगाहण-अगणि कायमज्झझाडण-पुक्खलसंवट्टगमेहोल्लीभवण-गंगापडिसोयागमणवत्तव्वया] ३. (१) परमाणुपोग्गले णं भंते ! असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ? हंता, ओगाहेज्जा। (२) से णं भंते ! तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ? गोतमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमति। ४. एवं जाव असंखेज्जपएसिओ। ५. (१) अणंतपदेसिए णं भंते ! खंधे असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ? हंता, ओगाहेज्जा। (२) से णं तत्थ छिज्जेज्जा वा भिज्जेज्ज वा ? गोयमा ! अत्थेगइए छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा, अत्थेगइए नो छिज्जेज्ज वा नो भिज्जेज्ज वा। ६. एवं अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं। तहिं णवरं 'झियाएज्जा' भाणितव्वं। ७. एवं पुक्खलसंवट्टगस्स महामेहस्स मज्झंमज्झेणं। तहिं 'उल्ले सिया'। ८. एवं गंगाए महाणदीए पडिसोतं हव्वमागच्छेज्जा। तहिं 'विणिघायमावज्जेज्जा, उदगावत्तं वा उदगबिंदुं वा ओगाहेज्जा, से णं तत्थ परियावज्जेज्जा'। [सु. ९-१०. परमाणुपोग्गल-दुपदेसियाइखंधाणं सअड्ढ-समज्झ-सपदेसियाइवत्तव्वया] ९. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं सअड्ढे समज्झे सपदेसे ? उदाहु अणड्ढे अमज्झे अपदेसे ? गोतमा ! अणड्ढे अमज्झे अपदेसे, नो सअड्ढे नो समज्झे नो सपदेसे। १०. (१) दुपदेसिए णं भंते ! खंधे किं सअड्ढे समज्झे सपदेसे ? उदाहु अणड्ढे अमज्झे अपदेसे ? गोयमा ! सअड्ढे समज्झे सपदेसे, णो अणड्ढे णो समज्झे णो अपदेसे। (२) तिपदेसिए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं भंते ! खंधे० पुच्छा। गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सपदेसे, नो सअड्ढे णो अमज्झे णो अपदेसे। (३) जहा दुपदेसिओ तहा जे समा ते भाणियव्वा। जे विसमा ते जहा तिपएसिओ तहा भाणियव्वा। (४) संखेज्जपदेसिए णं भंते ! खंधे किं सअड्ढे ६, पुच्छा। गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे सपदेसे, सिय अणड्ढे समज्झे सपदेसे। (५) जहा संखेज्जपदेसिओ तहा असंखेज्जपदेसिओ वि, अणंतपदेसिओ वि। [सु. ११-१३. परमाणुपोग्गल-दुपएसियाइखंधाणं परोप्परं फुसणावत्तव्वया] ११. (१) परमाणुपोग्गले णं भंते ! परमाणुपोग्गलं फुसमाणे किं देसेणं देसं फुसति १ ? देसेणं देसे फुसति २ ? देसेणं सव्वं फुसति ३ ? देसेहिं देसं फुसति ४ ? देसेहिं देसे फुसति ५ ? देसेहिं सव्वं फुसति ६ ? सव्वेणं देसं फुसति ७ ? सव्वेणं देसे फुसति ८ ? सव्वेणं सव्वं फुसति ९ ? गोयमा ! नो देसेणं देसं फुसति, नो देसेणं देसे फुसति, नो देसेणं सव्वं फुसति णो देसेहिं देसं फुसति, नो देसेहिं देसे फुसति, नो देसेहिं सव्वं फुसति, णो सव्वेणं देसं फुसति, णो सव्वेणं देसे फुसति, सव्वेणं सव्वं फुसति। (२) एवं परमाणुपोग्गले दुपदेसियं फुसमाणे सत्तम-णवमेहिं फुसति। (३) परमाणुपोग्गले तिपदेसियं फुसमाणे निप्पच्छिमएहिं तिहिं फुसति। (४) जहा परमाणुपोग्गलो तिपदेसियं फुसाविओ एवं फुसावेयव्वो जाव अणंतपदेसिओ। १२. (१) दुपदेसिए णं भंते ! खंधे परमाणुपोग्गलं फुसमाणे० पुच्छा ? ततिय-नवमेहिं फुसति। (२) दुपएसिओ दुपदेसियं फुसमाणो पढम-तइय-सत्तम-णवमेहिं फुसति। (३) दुपएसिओ तिपदेसियं फुसमाणो आदिल्लएहि य पच्छिल्लएहि य तिहिं फुसति, मज्झिमएहिं तिहिं वि पडिसेहेयव्वं। (४) दुपदेसिओ जहा तिपदेसियं फुसावितो एवं फुसावेयव्वो जाव अणंतपदेसियं। १३. (१) तिपदेसिए णं भंते ! खंधे परमाणुपोग्गलं फुसमाणे० पुच्छा। ततिय-छट्ठ-नवमेहिं फुसति। (२) तिपदेसिओ दुपदेसियं फुसमाणो पढमएणं ततियएणं चउत्थ-छट्ठ-सत्तम-णवमेहिं फुसति। (३) तिपदेसिओ तिपदेसियं फुसमाणो सव्वेसु वि ठाणेसु फुसति। (४) जहा तिपदेसिओ तिपदेसियं फुसावितो एवं तिपदेसिओ जाव अणंतपएसिएणं संजोएयव्वो। ५ जहा तिपदेसिओ एवं जाव अणंतपएसिओ भाणियव्वो। [सु. १४-२८ परमाणुपुग्गल-दुपदेसियाइखंधसंबंधिदव्व-खेत्त-भावाणं कालओ वत्तव्वया] १४. (१) परमाणुपोग्गले णं भंते ! कालतो केवच्चिरं होति ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। (२) एवं जाव अणंतपदेसिओ। १५. (१) एगपदेसोगाढे णं भंते ! पोग्गले सेए तम्मि वा ठाणे अन्नम्मि वा ठाणे कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखिज्जइभागं। (२) एवं जाव असंखेज्जपदेसोगाढे। (३) एगपदेसोगाढे णं भंते ! पोग्गले निरेए कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। (४) एवं जाव असंखेज्जपदेसोगाढे। १६. (१) एगगुणकालए णं भंते ! पोग्गले कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। (२) एवं जाव अणंतगुणकालए। १७. एवं वण्ण-गंध-रस -फास० जाव अणंतगुणलुक्खे। १८. एवं सुहुमपरिणए पोग्गले। १९. एवं बादरपरिणए पोग्गले। २०. सद्दपरिणते णं भंते ! पुग्गले कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं। २१. असद्दपरिणते जहा एगगुणकालए। २२. परमाणुपोग्गलस्स णं भंते ! अंतरं कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखिज्जं कालं। २३. (१) दुप्पदेसियस्स णं भंते ! खंधस्स अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं। (२) एवं जाव अणंतपदेसिओ। २४. (१) एगपदेसोगाढस्स णं भंते ! पोग्गलस्स सेयस्स अंतरं कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। (२) एवं जाव असंखेज्जपदेसोगाढे। २५. (१) एगपदेसोगाढस्स णं भंते ! पोग्गलस्स निरेयस्स अंतरं कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं। (२) एवं जाव असंखेज्जपएसोगाढे। २६. वण्ण -गंध -रस -फास -सुहुमपरिणय -बादरपरिणयाणं एतेसिं ज च्चेव संचिट्ठणा तं चेव अंतरं पि भाणियव्वं। २७. सद्दपरिणयस्स णं भंते ! पोग्गलस्स अंतरं कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। २८. असद्दपरिणयस्स णं भंते ! पोग्गलस्स अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं। [सु. २९. दव्वट्ठाणाउय-खेत्तट्ठाणाउय-ओगाहणट्ठाणाउय-भावट्ठाणाउयाणं अप्पाबहुयं] २९. एयस्स णं भंते ! दव्वट्ठाणाउयस्स खेत्तट्ठाणाउयस्स ओगाहणट्ठाणाउयस्स भावट्ठाणाउयस्स कयरे कयरेहिंतो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्तट्ठाणाउए, ओगाहणट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे, दव्वट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे, भावट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे। खेत्तोगाहण-दव्वे भावट्ठाणाउयं च अप्पबहुं। खेत्ते सव्वत्थोवे सेसा ठाणा असंखगुणा ॥१॥ [सु. ३०-३६. चउव्वीसइदंडगेसु सारंभाइवत्तव्वया] ३०. (१) नेरइया णं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारंभा अपरिग्गहा ? गोयमा ! नेरइया सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा णो अपरिग्गहा। (२) से केणट्ठेणं जाव अपरिग्गहा ? गोयमा ! नेरइया णं पुढविकायं समारंभंति जाव तसकायं समारंभंति, सरीरा परिग्गहिया भवंति, कम्मा परिग्गहिया भवंति, सचित -अचित-मीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति; से तेणट्ठेणं तं चेव। ३१. (१) असुरकुमारा णं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारंभा अपरिग्गहा ? गोयमा ! असुरकुमारा सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा। (२) से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! असुरकुमारा णं पुढविकायं समारंभंति जाव तसकायं समारंभंति, सरीरा परिग्गहिया भवंति, कम्मा परिग्गहिया भवंति, भवणा परि० भवंति, देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ परिग्गहियाओ भवंति, आसण -सयण-भंडमत्तोवगरणा परिग्गहिया भवंति, सचित-अचित्त-मीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति; से तेणट्ठेणं तहेव। (३) एवं जाव थणियकुमारा। ३२. एगिंदिया जहा नेरइया। ३३. (१) बेइंदिया णं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा ?० तं चेव जाव सरीरा परिग्गहिया भवंति, बाहिरया भंडमत्तोवगरणा परि० भवंति, सचित्त-अचित्त० जाव भवंति। (२) एवं जाव चउरिंदिया। ३४. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! तं चेव जाव कम्मा परिग्गहिया भवंति, टंका कूडा सेला सिहरी पब्भारा परिग्गहिया भवंति, जल-थल-बिल-गुड-लेणा परिग्गहिया भवंति, उज्झर-निज्झर-चिल्लल-पल्लल-वप्पिणा परिग्गहिया भवंति, अगड-तडाग-दह-नदीओ वावि-पुक्खरिणी -दीहिया गुंजालिया सरा सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ बिलपंतियाओ परिग्गहियाओ भवंति, आराम-उज्जाणा काणणा वणाइं वणसंडाइं वणराईओ परिग्गहियाओ भवंति, देवउल-सभा-पवा-थूभा खातिय-परिखाओ परिग्गहियाओ भवंति, पागारऽट्टालग-चरिया-दार-गोपुरा परिग्गहिया भवंति, पासाद-घर-सरण-लेण-आवणा परिग्गहिता भवंति, सिंघाडगतिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहा परिग्गहिया भवंति, सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय संदमाणियाओ परिग्गहियाओ भवंति, लोही-लोहकडाह-कडच्छुया परिग्गहिया भवंति, भवणा परिग्गहिया भवंति, देवा देवीओ मणुस्स मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ आसण-सयण -खंभ-भंड-सचित्ता अचित्त-मीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति; से तेणट्ठेणं०। ३५. जहा तिरिक्खजोणिया तहा मणुस्सा वि भाणियव्वा। ३६. वाणमंतर-जोतिस -वेमाणिया जहा भवणवासी तहा नेयव्वा। [सु. ३७-४४. पंचप्पयारहेउ-अहेऊणं वत्तव्वया] ३७. पंच हेतू पण्णत्ता, तं जहा हेतुं जाणति, हेतुं पासति, हेतुं बुज्झति, हेतुं अभिसमागच्छति, हेतुं छउमत्थमरणं मरति। ३८. पंचेव हेतू पण्णत्ता, तं जहा हेतुणा जाणति जाव हेतुणा छउमत्थमरणं मरति। ३९. पंच हेतू पण्णत्ता, तं जहा हेतुं न जाणइ जाव हेतुं अण्णाणमरणं मरति। ४०. पंच हेतू पण्णत्ता, तं जहा हेतुणा ण जाणति जाव हेतुणा अण्णाणमरणं मरति। ४१. पंच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा अहेउं जाणइ जाव अहेउं केवलिमरणं मरति। ४२. पंच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा अहेउणा जाणइ जाव अहेउणा केवलिमरणं मरइ। ४३. पंच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा अहेउं न जाणइ जाव अहेउं छउमत्थमरणं मरइ। ४४. पंच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा अहेउणा न जाणइ जाव अहेउणा छउमत्थमरणं मरइ। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆ ☆ ☆॥ **पंचमसए सत्तमो उद्देसओ समत्तो ॥५.७॥** ☆ ☆ ☆

अट्ठमो उद्देसो 'नियंठ' ☆ ☆ ☆ [सु. १-२. भगवओ सिस्साणं नारयपुत्त-नियंठिपुत्ताणं एगत्थविहरणं १. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव परिसा पडिगता। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी नारयपुत्ते नामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विहरति। २. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी नियंठिपुत्ते णामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विहरति। [सु. ३-४. पुग्गलपच्चइयसअद्ध-समज्झ-सपदेसादिविसयाए नियंठिपुत्तपुच्छाए नारयपुत्तस्स पच्चुत्तरं] ३. तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे जेणामेव नारयपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता नारयपुत्तं अणगारं एवं वदासी सव्वपोग्गला

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते अज्जो ! किं सअड्ढा समज्झा सपदेसा ? उदाहु अणड्ढा अमज्झा अपएसा ? 'अज्जो' त्ति नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वदासी सव्वपोग्गला मे अज्जो ! सअड्ढा समज्झा सपदेसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा। ४. (१) तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारदपुत्तं अणगारं एवं वदासी जति णं ते अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपदेसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा; किं दव्वादेसेणं अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपदेसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा ? खेत्तादेसेणं अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपदेसा ? तह चेव। कालादेसेणं० ? तं चेव। भावादेसेणं अज्जो !० ? तं चेव। (२) तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वदासी दव्वादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपदेसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा; खेत्ताएसेण वि सव्वपोग्गला सअड्ढा०; तह चेव कालादेसेण वि; तं चेव भावादेसेण वि। [सु. ५-९. दव्वदिआदेसेहिं सव्वपोग्गलाणं नारयपुत्तपरूवणाए नियंठिपुत्तकयनिसेहाणंतरं नारयपुत्तस्स नियंठिपुत्तं पइ सब्भावपरूवणत्थं विन्नत्ती, नियंठिपुत्तकयं दव्वादिआदेसेहिं पुग्गलमप्पाबहुयपुव्वयं समाहाणं च] (५). तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी -जति णं अज्जो ! दव्वादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा; एवं ते परमाणुपोग्गले वि सअड्ढे समज्झे सपएसे, णो अणड्ढे अमज्झे अपएसे; जति णं अज्जो ! खेत्तादेसेण वि सव्वपोग्गला सअ० ३, जाव एवं ते एगपदेसोगाढे वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपदेसे; जति णं अज्जो ! कालादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एवं ते एगसमयठितीए वि पोग्गले ३ तं चेव; जति णं अज्जो ! भावादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा ३, एवं ते एगगुणकालए वि पोग्गले सअड्ढे ३ तं चेव; अह ते एवं न भवति, तो जं वदसि दव्वादेसेण वि सव्वपोग्गला सअ० ३, नो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा, एवं खेत्तादेसेण वि, काला०, भावादेसेण वि तं णं मिच्छा। ६. तए णं नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वदासी नो खलु वयं देवाणुप्पिया ! एतमट्ठं जाणामो पासामो, जति णं देवाणुप्पिया ! नो गिलायंति परिकहित्तए तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए एतमट्ठं सोच्चा निसम्म जाणित्तए। ७. तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वदासी दव्वादेसेण वि मे अज्जो सव्वपोग्गला सपदेसा वि अपदेसा वि अणंता। खेत्तादेसेण वि एवं चेव। कालादेसेण वि भावादेसेण वि एवं चेव। जे दव्वतो अपदेसे से खेत्तओ नियमा अपदेसे, कालतो सिय सपदेसे सिय अपदेसे, भावओ सिय सपदेसे सिय अपदेसे। जे खेत्तओ अपदेसे से दव्वतो सिय सपदेसे सिय अपदेसे, कालतो भयणाए, भावतो भयणाए। जहा खेत्तओ एवं कालतो। भावतो जे दव्वतोसपदेसे से खेत्ततो सिय सपदेसे सिय अपदेसे, एवं कालतो भावतो वि। जे खेत्ततो सपदेसे से दव्वतो नियमा सपदेसे, कालओ भयणाए, भावतो भयणाए। जहा दव्वतो तहा कालतो भावतो वि। ८. एतेसि णं भंते ! पोग्गलाणं दव्वादेसेणं खेत्तादेसेणं कालादेसेणं भावादेसेणं सपदेसाण य अपदेसाण य कतरे कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? नारयपुत्ता ! सव्वत्थोवा पोग्गला भावादेसेणं अपदेसा, कालादेसेणं अपदेसा असंखेज्जगुणा, दव्वादेसेणं अपदेसा असंखेज्जगुणा, खेत्तादेसेणं अपदेसा असंखेज्जगुणा, खेत्तादेसेणं चेव सपदेसा असंखेज्जगुणा, दव्वादेसेणं सपदेसा विसेसाहिया, कालादेसेणं सपदेसा विसेसाहिया, भावादेसेणं सपदेसा विसेसाहिया। ९. तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं वंदइ नमंसइ, नियंठिपुत्तं अणगारं वंदित्ता नमंसित्ता एतमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेति, २ त्ता सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। [सु. १०-१३. जीव -चउव्वीसइदंडग-सिद्धेसु वड्ढी -हाणी-अवट्ठितत्तवत्तव्वया] १०. 'भंते !' त्ति भगवं गोतमे समणं जाव एवं वदासी जीवा णं भंते ! किं वड्ढंति, हायंति, अवट्ठिया ? गोयमा ! जीवा णो वड्ढंति, नो हायंति, अवट्ठिता। ११. नेरतिया णं भंते ! किं वड्ढंति, हायंति, अवट्ठिता ? गोयमा ! नेरइया वड्ढंति वि, हायति वि, अवट्ठिया वि। १२. जहा नेरइया एवं जाव वेमाणिया। १३. सिद्धा णं भंते ! ० पुच्छा। गोयमा ! सिद्धा वड्ढंति, नो हायंति, अवट्ठिता वि। सु. १४. जीवेसु सव्वद्धाअवट्ठितत्तपरूवणा] १४. जीवा णं भंते ! केवतियं कालं अवट्ठिता गोयमा ! सव्वद्धं। [सु. १५-१९. चउवीसदंडगेसु वड्ढी-हाणी अवट्ठितकालमाणपरूवणा] १५. (१) नेरतिया णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं। (२) एवं हायंति। (३) नेरइया णं भंते ! केवतियं कालं अवट्ठिया ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता। (४) एवं सत्तसु वि पुढवीसु 'वड्ढंति, हायंति'

भाणियव्वं। नवरं अवट्ठितेसु इमं नाणत्तं, तं जहा रयणप्पभाए पुढवीए अडतालीसं मुहुत्ता, सक्करप्पभाए चोद्दस राइंदियाइं, वालुयप्पभाए मासं, पंकप्पभाए दो मासा, धूमप्पभाए चत्तारि मासा, तमाए अट्ठमासा, तमतमाए बारस मासा। १६. (१) असुरकुमारा वि वड्ढंति हायंति, जहा नेरइया। अवट्ठिता जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अट्ठचत्तालीसं मुहुत्ता। (२) एवं दसविहा वि। १७. एगिंदिया वड्ढंति वि, हायंति वि, अवट्ठिया वि। एतेहिं तिहि वि जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं। १८. (१) बेइंदिया वड्ढंति हायंति तहेव। अवट्ठिता जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो अंतोमुहुत्ता। (२) एवं जाव चतुरिंदिया। १९. अवसेसा सव्वे वड्ढंति, हायंति तहेव। अवट्ठियाणं णाणत्तं इमं, तं जहा सम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दो अंतोमुहुत्ता। गब्भवक्कंतियाणं चउव्वीसं मुहुत्ता। सम्मुच्छिममणुस्साणं अट्ठचत्तालीसं मुहुत्ता। गब्भवक्कंतियमणुस्साणं चउव्वीसं मुहुत्ता। वाणमंतर-जोतिस-सोहम्मीसाणेसु अट्ठचत्तालीसं मुहुत्ता। सणंकुमारे अट्ठारस रातिंदियाइं चत्तालीसं य मुहुत्ता। माहिंदे चउवीसं रातिंदियाइं, वीस य मुहुत्ता। बंभलोए पंच चत्तालीसं रातिंदियाइं। लंतए नउतिं रातिंदियाइं। महासुक्के सट्ठं रातिंदियसतं। सहस्सारे दो रातिंदियसताइं। आणय-पाणयाणं संखेज्जा मासा। आरणऽच्चुयाणं संखेज्जाइं वासाइं। एवं गेवेज्जगदेवाणं। विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियाणं असंखिज्जाइ वाससहस्साइं। सव्वट्ठसिद्धे य पलिओवमस्स संखेज्जतिभागो। एवं भाणियव्वं-वड्ढंति हायंति जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जतिभागं; अवट्ठियाणं जं भणियं। [सु. २०. सिद्धेसु वड्ढी-अवट्ठितकालमाणपरूवणा] २०. (१) सिद्धा णं भंते! केवतियं कालं वड्ढंति? गोयमा! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अट्ठसमया। (२) केवतियं कालं अवट्ठिया? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा। [सु. २१-२८. जीव-चउव्वीसइदंडग-सिद्धेसु सोवचयाइचउभंगीवत्तव्वया] २१. जीवा णं भंते! किं सोवचया, सावचया, सोवचयसावचया, निरुवचयनिरवचया? गोयमा! जीवा णो सोवचया, नो सावचया, णो सोवचयसावचया, निरुवचयनिरवचया। २२. एगिंदिया ततियपदे, सेसा जीवा चउहि वि पदेहिं भाणियव्वा। २३. सिद्धा णं भंते! ०पुच्छा। गोयमा! सिद्धा सोवचया, णो सावचया, णो सोवचयसावचया, निरुवचयनिरवचया। २४. जीवा णं भंते! केवतियं कालं निरुवचयनिरवचया? गोयमा! सव्वद्धं। २५. (१) नेरतिया णं भंते! केवतियं कालं सोवचया? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं। (२) केवतियं कालं सावचया? एवं चेव। (३) केवतियं कालं सोवचयसावचया? एवं चेव। (४) केवतियं कालं निरुवचयनिरवचया? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता। २६. एगिंदिया सव्वे सोवचयसावचया सव्वद्धं। २७. सेसा सव्वे सोवचया वि, सावचया वि, सोवचयसावचया वि, निरुवचयनिरवचया वि जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जतिभागं अवट्ठिएहिं वक्कंतिकालो भाणियव्वो। २८. (१) सिद्धा णं भंते! केवतियं कालं सोवचया? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अट्ठ समया। (२) केवतियं कालं निरुवचयनिरवचया? जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ०। ☆ ☆ ☆॥ **पंचमसए अट्ठमो उद्देसो ॥५.८॥** **नवमो उद्देसओ 'रायगिह'** ☆ ☆ ☆ [सु. १. नवमुद्देसगस्स उवुग्घाओ] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी [सु. २. अंगभूय-अंतट्ठियवत्थुसमवाएण रायगिहनगरपच्चभिण्णावत्तव्वया] २. (१) किमिदं भंते! 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति? किं पुढवी 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति? आऊ 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति? जाव वणस्सती? जहा एयणुद्देसए पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वता तहा भाणियव्वं जाव सचित-अचित-मीसयाइं दव्वाइं 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति? गोतमा! पुढवी वि 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति जाव सचित-अचित-मीसयाइं दव्वाइं 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति। (२) से केणट्ठेणं०? गोयमा! पुढवी जीवा ति य अजीवा ति य 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति जाव सचित्त-अचित्त-मीसयाइं दव्वाइं जीवा ति य अजीवा ति य 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति, से तेणट्ठेणं तं चेव। [सु. ३. उज्जोय-अंधयारवत्तव्वया] ३. (१) से नूणं भंते! दिया उज्जोते, रातिं अंधकारे? हंता, गोयमा! जाव अंधकारे। (२) से केणट्ठेणं०? गोतमा! दिया सुभा पोग्गला, सुभे पोग्गलपरिणामे, रत्तिं असुभा पोग्गला, असुभे पोग्गलपरिणामे, से तेणट्ठेणं०। [सु. ४-९.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउव्वीसइदंडगेसु उज्जोय -अंधयारवत्तव्वया ४. (१) नेरइयाणं भंते ! किं उज्जोए, अंधकारे ? गोयमा ! नेरइयाणं नो उज्जोए, अंधयारे। (२) से केणट्ठेणं० ? गोतमा ! नेरइयाणं असुभा पोग्गला, असुभे पोग्गलपरिणामे, से तेणट्ठेणं०। ५. (१) असुरकुमाराणं भंते ! किं उज्जोते, अंधकारे ? गोयमा ! असुरकुमाराणं उज्जोते, नो अंधकारे। (२) से केणट्ठेणं० ? गोतमा ! असुरकुमाराणं सुभा पोग्गला, सुभे पोग्गलपरिणामे, से तेणट्ठेणं एवं वुच्चति०। (३) एवं जाव थणियाणं। ६. पुढविकाइया जाव तेइंदिया जहा नेरइया। ७. (१) चउरिंदियाणं भंते ! किं उज्जोते, अंधकारे ? गोतमा ! उज्जोते वि, अंधकारे वि। (२) से केणट्ठेणं० ? गोतमा ! चतुरिंदियाणं सुभाऽसुभा पोग्गला, सुभाऽसुभे पोग्गलपरिणामे, से तेणट्ठेणं०। ८. एवं जाव मणुस्साणं। ९. वाणमंतर -जोतिस-वेमाणिया जहा असुरकुमारा। [सु. १० -१३. चउव्वीसइदंडगेसु समयादिकालनाणवत्तव्वया] १०. (१) अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं तत्थगयाणं एवं पण्णायति, तं जहा समया ति वा आवलिया ति वा जाव ओसप्पिणी ति वा उस्सप्पिणी ति वा ? णो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं जाव समया ति वा आवलिया ति वा जाव ओसप्पिणी ति वा उस्सप्पिणी ति वा ? गोयमा ! इहं तेसिं पमाणं, इहं तेसिं एवं पण्णायति, तं जहा समया ति वा जाव उस्सप्पिणी ति वा। से तेणट्ठेणं जाव नो एवं पण्णायति, तं जहा समया ति वा जाव उस्सप्पिणी ति वा। ११. एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं। १२. (१) अत्थि णं भंते ! मणुस्साणं इहगताणं एवं पण्णायति, तं जहा समया ति वा जाव उस्सप्पिणी ति वा ? हंता, अत्थि। (२) से केणट्ठेणं० ? गोतमा ! इहं तेसिं माणं, इहं तेसिं पमाणं, इहं चेव तेसिं एवं पण्णायति, तं जहा समया ति वा जाव उस्सप्पिणी ति वा। से तेणट्ठेणं०। १३. वाणमंतर-जोतिस -वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं। [सु. १४-१६. असंखेज्जलोयाइपुच्छाए समाहाणाणंतरं पासावच्चिज्जथेराणं पंचजामधम्मपडिपालणापुव्वं सिद्धि-देवलोगगमणवत्तव्वया] १४. (१) तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वदासी से नूणं भंते ! असंखेज्जे लोए, अणंता रातिंदिया उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ?, विगच्छिंसु वा विगच्छंति वा विगच्छिंस्संति वा ?, परित्ता रातिंदिया उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ? विगच्छिंसु वा ३ ? हंता, अज्जो ! असंखेज्जे लोए, अणंता रातिंदिया० तं चेव। (२) से केणट्ठेणं जाव विगच्छिस्संति वा ? से नूणं भे अज्जो ! पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं "सासते लोए वुइते अणादीए अणवदग्गे परित्ते परिवुडे; हेट्ठा वित्थिण्णे, मज्झे संखित्ते, उप्पिं विसाले, अहे पलियंकसंठिते, मज्झे वरवइरविग्गहिते, उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठिते। ते (?तं) सिं च णं सासयंसि लोगंसि अणादियंसि अणवदग्गंसि, परित्तंसि परिवुडंसि हेट्ठा वित्थिण्णंसि, मज्झे संखित्तंसि, उप्पिं विसालंसि, अहे पलियंकसंठियंसि, मज्झे वरवइरविग्गहियंसि, उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठियंसि अणंता जीवघणा उप्पज्जित्ता उप्पज्जित्ता निलीयंति। परित्ता जीवघणा उप्पज्जित्ता उप्पज्जित्ता निलीयंति। से भूए उप्पन्ने विगते परिणए अजीवेहिं लोक्कति, पलोक्कइ। जे लोक्कइ से लोए ? 'हंता, भगवं !। से तेणट्ठेणं अज्जो ! एवं वुच्चति असंखेज्जे तं चेव। (३) तप्पभितिं च णं ते पासावच्चेज्जा थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं पच्चभिजाणंति 'सव्वण्णु सव्वदरिसिं'। १५. तए णं थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, २ एवं वदासि इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सप्पडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध करेह। १६. तए णं ते पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जाव चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिद्धा जाव सव्वदुक्खप्पहीणा, अत्थेगइया देवा देवलोगेसु उववन्ना। [सु. १७. देवलोगचउभेदपरूवणा] १७. कतिविहा णं भंते ! देवलोगा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा भवणवासी-वाणमंतर-जोतिसियं-वेमाणियभेदेण। भवणवासी दसविहा। वाणमंतरा अट्ठविहा। जोतिसिया पंचविहा। वेमाणिया दुविहा। [सु. १८. नवमुद्देसऽत्थाहिगारगाहा] १८. गाहा किमिदं रायगिहं ति य, उज्जोते अंधमारे समए य। पासंतिवासिपुच्छा रातिंदिय, देवलोगा य ॥१॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०

☆☆☆। **पंचमे सए नवमो उद्देसो समत्तो ॥५.९॥ दसमो उद्देसओ 'चंपाचंदिमा'** ☆☆☆ [सु. १. जंबुद्दीवे चंदउदय-अत्थमणाइवत्तव्वया] १. तेणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालेणं तेणं समएणं चंपानामं नगरी। जहा पढमिल्लो उद्देसओ तहा नेयव्वो एसो वि। नवरं चंदिमा भाणियव्वा। ☆ ☆☆॥ **पंचमे सए दसमो उद्देसो समत्तो ॥५.१०॥ पंचमं सयं समत्तं ॥५॥** 卐卐卐 **छट्ठं सयं** 卐卐卐 [सु. १. छट्ठस्स सयस्स दसुद्देसऽत्थाहिगारसंगहणीगाहा] १. वेयण १ आहार २ महस्सवे य ३ सपदेस ४ तमुयए ५ भविए ६। साली ७ पुढवी ८ कम्मऽन्नउत्थि ९-१० दस छट्ठगम्मि सते ॥१॥ ☆ ☆ ☆ **पढमो उद्देसओ 'वेयण'** ☆ ☆ ☆ [सु. २-४. वत्थदुय-अहिगरणी-सुक्कतणहत्थय-उदगबिंदुउदाहरणेहिं महावेयणाणं जीवाणं महानिज्जरावत्तव्वया] २. से नूणं भंते! जे महावेदणे से महानिज्जरे? जे महानिज्जरे से महावेदणे? महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थनिज्जराए? हंता, गोयमा! जे महावेदणे एवं चेव। ३. (१) छट्ठी -सत्तमासु णं भंते! पुढवीसु नेरइया महावेदणा? हंता, महावेदणा। २ ते णं भंते! समणेहिंतो निग्गंथे हिंतो महानिज्जरतरा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे। ४. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति जे महावेदणे जाव पसत्थनिज्जराए (सु. २)? गोयमा! से जहानामए दुवे वत्थे सिया, एगे वत्थे कद्दमरागरत्ते, एगे वत्थे खंजणरागरत्ते। एतेसि णं गोयमा! दोण्हं वत्थाणं कतरे वत्थेदुधोयतराए चेव, दुवामतराए चेव, दुपरिकम्मतराए चेव, कयरे वा वत्थे सुधोयतराए चेव, सुवामतराए चेव, सुपरिकम्मतराए चेव, जे वा से वत्थे कद्दमरागरत्ते? जे वा से वत्थे खंजणरागरत्ते? भगवं! तत्थ णं जे से वत्थे कद्दमरागरत्ते से णं वत्थे दुधोयतराए चेव दुवामतराए चेव दुप्परिकम्मतराए चेव। एवामेव गोतमा! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकताइं चिक्कणीकताइं सिलिट्ठीकताइं खिलीभूताइं भवंति; संपगाढं पि य णं ते वेदणं वेदेमाणा नो महानिज्जरा, णो महापज्जवसाणा भवंति। से जहा वा केइ पुरिसे अहिगरणीं आउडेमाणे महता महता सद्देणं महता महता घोसेणं महता महता परंपराघातेणं नो संचाएति तीसे अहिगरणीए अहाबायरे वि पोग्गले परिसाडित्तए। एवामेव गोयमा! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं जाव नो महापज्जवसाणा भवंति। भगवं! तत्थ जे से वत्थे खंजणरागरत्ते से णं वत्थे सुधोयतराए चेव सुवामतराए चेव सुपरिकम्मतराए चेव। एवामेव गोयमा! समणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं सिढिलीकताइं निट्ठिताइं कडाइं विप्परिणामिताइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवंति जावतियं तावतियं पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा महापज्जवसाणा भवंति। से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं तणहत्थयं जायतेयंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा! से सुक्के तणहत्थए जायतेयंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पमेव मसमसाविज्जति? हंता, मसमसाविज्जति। एवामेव गोयमा! समणाणं निग्गंथाणं अहाबादराइं कम्माइं जाव महापज्जवसाणा भवंति। से जहानामए केइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लंसि उदगाबिंदू जाव हंता, विद्धसमागच्छति। एवामेव गोयमा! समणाणं निग्गंथाणं जाव महापज्जवसाणा भवंति। से तेणट्ठेणं जे महावेदणे से महानिज्जरे जाव निज्जराए। [सु. ५. करणभेयपरूवणा] ५. कतिविहे णं भंते! करणे पण्णत्ते? गोतमा! चउव्विहे करणे पण्णत्ते, तं जहा मणकरणे वइकरणे कायकरणे कम्मकरणे। [सु. ६. चउवीसइदंडएसु करणभेयपरूवणा] ६. णेरइयाणं भंते! कतिविहे करणे पण्णत्ते? गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा मणकरणे वइकरणे कायकरणे कम्मकरणे। एवं पंचेंदियाणं सव्वेसिं चउव्विहे करणे पण्णत्ते। एगिंदियाणं दुविहे- कायकरणे य कम्मकरणे य। विगलेंदियाणं वइकरणे कायकरणे कम्मकरणे। [सु. ७-१२. चउवीसइदंडएसु करणं पडुच्च वेयणावेयणवत्तव्वया] ७. (१) नेरइया णं भंते! किं करणतो वेदणं वेदेंति? अकरणतो वेदणं वेदेंति? गोयमा! नेरइया णं करणओ वेदणं वेदेंति, नो अकरणओ वेदणं वेदेंति। (२) से केणट्ठेणं०? गोयमा! नेरइयाणं चउव्विहे करणे पण्णत्ते, तं जहा मणकरणे वइकरणे कायकरणे कम्मकरणे। इच्चेएणं चउव्विहेणं असुभेणं करणेणं नेरइया करणतो असायं वेदणं वेदेंति, नो अकरणतो, से तेणट्ठेणं०। ८. (१) असुरकुमारा णं किं करणतो, अकरणतो? गोयमा! करणतो, नो अकरणतो। (२) से केणट्ठेणं०? गोयमा! असुरकुमाराणं चउव्विहे करणे पण्णत्ते, तं जहा- मणकरणे वइकरणे कायकरणे कम्मकरणे। इच्चेएणं सुभेणं करणेणं असुरकुमारा णं करणतो सायं वेदणं वेदेंति, नो अकरणतो। ९. एवं जाव थणियकुमारा। १०. पुढविकाइयाणं एस चेव पुच्छा। नवरं इच्चेएणं सुभासुभेणं करणेणं पुढविकाइया करणतो वेमायाए वेदणं वेदेंति, नो अकरणतो। ११. ओरालियसरीरा सव्वे सुभासुभेणं वेमायाए। १२. देवा सुभेणं सातं। [सु. १३. जीवेसु महावेयणा-

महानिज्जराइवत्तव्वया] १३. (१) जीवा णं भंते ! किं महावेदणा महानिज्जरा ? महावेदणा अप्पनिज्जरा ? अप्पवेदणा महानिज्जरा ? अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा ? गोयमा ! अत्थेगइया जीवा महावेदणा महानिज्जरा, अत्थेगइया जीवा महावेयणा अप्पनिज्जरा, अत्थेगइया जीवा अप्पवेदणा महानिज्जरा, अत्थेगइया जीवा अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा। (२) से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! पडिमापडिवन्नए अणगारे महावेदणे महानिज्जरे। छट्ठ-सत्तमासु पुढवीसु नेरइया महावेदणा अप्पनिज्जरा। सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे अप्पवेदणे महानिज्जरे। अणुत्तरोववाइया देवा अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। [सु. १४. पढमुद्देसस्सऽत्थाहिगारसंगहगाहा] १४. महवेदणे य वत्थे कद्दम-खंजणमए य अधिकरणी। तणहत्थेऽयकवल्ले करण महावेदणा जीवा ॥१॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆ ☆ ☆ **छट्ठसयस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥६.१॥ बीओ उद्देसओ 'आहार'** ☆ ☆ ☆ [सु. १. आहारवत्तव्वयाए पण्णवणासुत्तदट्ठव्वयानिद्देसो] १. रायगिहं नगरं जाव एवं वदासी - आहारुद्देसो जो पण्णवणाए सो सव्वो निरवसेसो नेयव्वो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆ ☆ ☆ **छट्ठे सए बीओ उद्देसो समत्तो ॥६.२॥ तइओ उद्देसओ 'महस्सव'** ☆ ☆ ☆ [सु. १.तइउद्देसऽत्थाहिगारदारगाहा] १. बहुकम्म १ वत्थपोग्गल पयोगसा वीससा य २ सादीए ३। कम्मट्ठिति-त्थि ४-५ संजय ६ सम्मद्दिट्ठी ७ य सण्णी ८ य ॥१॥ भविए ९ दंसण १० पज्जत्त ११ भासय १२ परित्त १३ नाण १४ जोगे १५ य। उवओगा-ऽऽहारग १६-१७ सुहुम १८ चरिम १९ बंधे य, अप्पबहुं २० ॥२॥ [सु. २-३. पढमं दारं-अहयाइ-जल्लियाइवत्थुदाहरणपुव्वं महासव-अप्पासवाणं पुग्गलबंध-भेयवत्तव्वया] २. (१) से नूणं भंते ! महाकम्मस्स महाकिरियस्स महासवस्स महावेदणस्स सव्वतो पोग्गला बज्झंति, सव्वओ पोग्गला चिज्जंति, सव्वओ पोग्गला उवचिज्जंति, सया समितं च णं पोग्गलाबज्झंति, सया समितं पोग्गला चिज्जंति, सया समितं पोग्गला उवचिज्जंति, सया समितं च णं तस्स आया दुरूवत्ताए दुवण्णत्ताए दुगंधत्ताए दुरसत्ताए दुफासत्ताए अणिट्ठत्ताए अकंतत्ताए अप्पियत्ताए असुभत्ताए अमणुण्णत्ताए अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अभिज्झियत्ताए; अहत्ताए, नो उड्ढत्ताए, दुक्खत्ताए, नो सुहत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ ? हंता, गोयमा ! महाकम्मस्स तं चेव। (२) से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! से जहानामए वत्थस्स अहतस्स वा धोतस्स वा तंतुग्गतस्स वा आणुपुव्वीए परिभुज्जमाणस्स सव्वओ पोग्गला बज्झंति, सव्वओ पोग्गला चिज्जंति जाव परिणमंति, से तेणट्ठेणं०। ३. (१) से नूणं भंते ! अप्पकम्मस्स अप्पकिरियस्स अप्पासवस्स अप्पवेदणस्स सव्वओ पोग्गला भिज्जंति, सव्वओ पोग्गला छिज्जंति, सव्वओ पोग्गला विद्धंसंति, सव्वओ पोग्गला परिविद्धंसंति, सया समितं पोग्गला भिज्जंति छिज्जंति विद्धंसंति परिविद्धंसंति, सया समितं च णं तस्स आया सुरूवत्ताए पसत्थं नेयव्वं जाव सुहत्ताए, नो दुक्खत्ताए भुज्जो २ परिणमंति ? हंता, गोयमा ! जाव परिणमंति। (२) से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! से जहानामए वत्थस्स जल्लियस्स वा पंकितस्स वा मइलियस्स वा रइल्लियस्स वा आणुपुव्वीए परिकम्मिज्जमाणस्स सुद्धेणं वारिणा धोव्वमाणस्स सव्वतो पोग्गला भिज्जंति जाव परिणमंति, से तेणट्ठेणं०। [सु. ४. बिइयदारे वत्थं पडुच्च पुरिसवावार-सभावेहिं पुग्गलोवचयवत्तव्वया] ४. वत्थस्स णं भंते ! पोग्गलोवचए किं पयोगसा, वीससा ? गोयमा ! पयोगसा वि, वीससा वि। [सु. ५. बिइयदारे जीव-चउवीसदंडएसु पुरिसवावार-सभावेहिं कम्मोवचयवत्तव्वया] ५. (१) जहा णं भंते ! वत्थस्स णं पोग्गलोवचए पयोगसा वि, वीससा वि तहा णं जीवाणं कम्मोवचए किं पयोगसा, वीससा ? गोयमा ! पयोगसा, नो वीससा। (२) से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! जीवाणं तिविहे पयोगे पण्णत्ते, तं जहा-मणप्पयोगे वइप्पयोगे कायप्पयोगे य। इच्चेतेणं तिविहेणं पयोगेणं जीवाणं कम्मोवचए पयोगसा, नो वीससा। एवं सव्वेसिं पंचेंदियाणं तिविहे पयोगे भाणियव्वे। पुढविक्काइयाणं एगविहेणं पयोगेणं, एवं जाव वणस्सतिकाइयाणं। विगलिंदियाणं दुविहे पयोगे पण्णत्ते। तं जहा वइप्पयोगे य, कायप्पयोगे य। इच्चेतेणं दुविहेणं पयोगेणं कम्मोवचए पयोगसा, नो वीससा। से एएणट्ठेणं जाव नो वीससा। एवं जस्स जो पयोगो जाव वेमाणियाणं। [सु. ६-७. तइयदारे वत्थपोग्गलोवचयस्स जीवकम्मोवचयस्स य सादि-सपज्जवसियाइवत्तव्वया] ६. वत्थस्स णं भंते ! पोग्गलोवचए किं सादीए सपज्जवसिते ? सादीए अपज्जवसिते ? अणादीए सपज्जवसिते ? अणा०

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपज्जवसिते ? गोयमा ! वत्थस्स णं पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिते, नो सादीए अपज्जवसिते, नो अणादीए सपज्जवसिते, नो अणादीए अपज्जवसिते। ७. (१) जहा णं भंते ! वत्थस्स पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिते, नो सादीए अपज्जवसिते, नो अणादीए सपज्जवसिते, नो अणादीए अपज्जवसिते तहा णं जीवाणं कम्मोवचए पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगइयाणं जीवाणं कम्मोवचए साईए सपज्जवसिते, अत्थे० अणाईए सपज्जवसिए, अत्थे० अणाईए अपज्जवसिए, नो चेव णं जीवाणं कम्मोवचए सादीए अपज्जवसिते। (२) से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! इरियावहियाबंधयस्स कम्मोवचए साईए सप०। भवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणादीए सपज्जवसिते। अभवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणाईए अपज्जवसिते। से तेणट्ठेणं०। [सु. ८-९. तइयदारे वत्थस्स जीवाण य सादि-सपज्जवसियाइवत्तव्वया] ८. वत्थे णं भंते ! किं सादीए सपज्जवसिते ? चतुभंगो। गोयमा ! वत्थे सादीए सपज्जवसिते, अवसेसा तिण्णि वि पडिसेहेयव्वा। ९. (१) जहा णं भंते ! वत्थे सादीए सपज्जवसिए० तहा णं जीवा किं सादीया सपज्जवसिया ? चतुभंगो, पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिया सादीया सप०, चत्तारि वि भाणियव्वा। (२) से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! नेरतिया तिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा गतिरागतिं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया। सिद्धा गतिं पडुच्च सादीया अपज्जवसिया। भवसिद्धिया लद्धिं पडुच्च अणादीया सपज्जवसिया। अभवसिद्धिया संसारं पडुच्च अणादीया अपज्जवसिया भवंति। से तेणट्ठेणं०। [सु. १०-११. चउत्थं दारं-कम्मपगडिभेय-ठिइबंधपरूवणा] १०. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ तं जहा णाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं जाव अंतराइयं। ११. (१) नाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालं बंधठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जह० अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती कम्मनिसेओ। (२) एवं दरिसणावरणिज्जं पि। (३) वेदणिज्जं जह० दो समया, उक्कोसेणं जहा नाणावरणिज्जं। (४) मोहणिज्जं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तरि सागरोवमकोडाकोडीओ सत्त य वाससहस्साणि अबाधा, अबाहूणिया कम्मठिई कम्मनिसेगो। (५) आउगं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाणि पुव्वकोडितिभागमब्भहियाणि, कम्मट्ठिती कम्मनिसेओ। (६) नाम-गोयाणं जह० अट्ठमुहुत्ता, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, दोण्णि य वाससहस्साणि अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती कम्मनिसेओ। (७) अंतराइयं जहा नाणावरणिज्जं। [सु. १२-१३. पंचमं दारं-इत्थी-पुं-नपुंसए पडुच्च अट्ठण्हं कम्मपगडीणं बंधपरूवणा] १२. (१) नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधति, पुरिसो बंधति, नपुंसओ बंधति, णोइत्थीनोपुरिसोनोनपुंसओ बंधइ ? गोयमा ! इत्थी वि बंधइ, पुरिसो वि बंधइ, नपुंसओ वि बंधइ, नोइत्थीनोपुरिसोनोनपुंसओ सिय बंधइ, सिय नो बंधइ। (२) एवं आउगवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ। १३. आउगं णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधइ, पुरिसो बंधइ, नपुंसओ बंधइ ?० पुच्छा। गोयमा ! इत्थी सिय बंधइ सिय नो बंधइ, एवं तिण्णि वि भाणियव्वा। नोइत्थीनोपुरिसोनोनपुंसओ न बंधइ। [सु. १४. छट्ठं दारं-संजय-असंजयाइ पडुच्च अट्ठण्हं कम्मपगडीणं बंधपरूवणा] १४. (१) णाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं संजते बंधइ, असंजमे०, संजयासंजए बंधइ, नोसंजएनोअसंजएनोसंजयासंजए बंधति ? गोयमा ! संजए सिय बंधति सिय नो बंधति, असंजए बंधइ, संजयासंजए वि बंधइ, नोसंजएनोअसंजएनोसंजयासंजए न बंधति। (२) एवं आउगवज्जाओ सत्त वि। (३) आउगे हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, उवरिल्ले ण बंधइ। [सु. १५. सत्तमं दारं-सम्मद्दिट्ठिआइ पडुच्च अट्ठण्हं कम्मपगडीणं बंधपरूवणा] १५. (१) णाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं सम्मद्दिट्ठी बंधइ, मिच्छदिट्ठी बंधइ, सम्मामिच्छद्दिट्ठी बंधइ ? गोयमा ! सम्मद्दिट्ठी सिय बंधइ सिय नो बंधइ, मिच्छद्दिट्ठी बंधइ, सम्मामिच्छद्दिट्ठी बंधइ। (२) एवं आउगवज्जाओ सत्त वि। (३) आउए हेट्ठिल्ला दो भयणाए, सम्मामिच्छद्दिट्ठी न बंधइ। [सु. १६. अट्ठमं दारं-सण्णि-असण्णिआइ पडुच्च अट्ठण्हं कम्मपगडीणं बंधपरूवणा] १६. (१) णाणावरणिज्जं किं सण्णी बंधइ, असण्णी बंधइ, नोसण्णीनोअसण्णी बंधइ ? गोयमा ! सण्णी सिय बंधइ सिय नो बंधइ, असण्णी बंधइ, नोसण्णीनोअसण्णी न बंधइ। (२) एवं वेदणिज्जाऽऽउगवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ। (३) वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला दो बंधंति, उवरिल्ले भयणाए। आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले न बंधइ। [सु. १७. नवमं दारं-भवसिद्धियाइ पडुच्च अट्ठण्हं कम्मपगडीणं बंधपरूवणा १७. (१) णाणावरणिज्जं कम्मं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किं भवसिद्धीए बंधइ, अभवसिद्धीए बंधइ, नोभवसिद्धीएनोअभवसिद्धीए बंधति ? गोयमा ! भवसिद्धीए भयणाए, अभवसिद्धीए बंधति, नोभवसिद्धीएनोअभवसिद्दीए न बंधइ। २ (२) एवं आउगवज्जाओ सत्त वि। (३) आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्लो न बंधइ। [सु. १८. दसमं दारं-चक्खुदंसणिआइ पडुच्च अट्ठण्हं कम्मपगडीणं बंधपरूवणा] १८. (१) णाणावरणिज्जं किं चक्खुदंसणी बंधति, अचक्खुदंस०, ओहिदंस०, केवलदं० ? गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, उवरिल्ले ण बंधइ। (२) एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। (३) वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला तिण्णि बंधंति, केवलदंसणी भयणाए। [सु. १९. एक्कारसमं दारं-पज्जत्तापज्जत्ताइ पडुच्च अट्ठण्हं कम्मपगडीणं बंधपरूवणा] १९. (१) णाणावरणिज्जं कम्मं किं पज्जत्तओ बंधइ, अपज्जत्तओ बंधइ, नोपज्जत्तएनोअपज्जत्तए बंधइ ? गोयमा ! पज्जत्तए भयणाए, अपज्जत्तए बंधइ, नोपज्जत्तएनोअपज्जत्तए न बंधइ। (२) एवं आउगवज्जाओ। (३) आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले ण बंधइ। [सु. २०. दुवालसमं दारं-भासयाभासए पडुच्च अट्ठण्हं कम्मपगडीणं बंधपरूवणा] २०. (१) नाणावरणिज्जं किं भासए बंधइ, अभासए० ? गोयमा ! दो वि भयणाए। (२) एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्त। (३) वेदणिज्जं भासए बंधइ, अभासए भयणाए। [सु. २१. तेरसमं दारं-परित्तापरित्ताइ पडुच्च अट्ठण्हं कम्मपगडीणं बंधपरूवणा] २१. (१) णाणावरणिज्जं किं परित्ते बंधइ, अपरित्ते बंधइ, नोपरित्तेनोअपरित्ते बंधइ ? गोयमा ! परित्ते भयणाए, अपरित्ते बंधइ, नोपरित्तेनोअपरित्ते न बंधइ। (२) एवं आउगवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ। (३) आउए परित्तो वि, अपरित्तो वि भयणाए। नोपरित्तोनोअपरित्तो न बंधइ। [सु. २२-२३. चोद्दसमं दारं-णाणि-अण्णाणिणो पडुच्च अट्ठण्हं कम्मपगडीणं बंधपरूवणा] २२. (१) णाणावरणिज्जं कम्मं किं आभिणिबोहियनाणी बंधइ, सुयनाणी०, ओहिनाणी०, मणपज्जवनाणी०, केवलनाणी बं० ? गोयमा ! हेट्ठिल्ला चत्तारि भयणाए, केवलनाणी न बंधइ। (२) एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। (३) वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला चत्तारि बंधंति, केवलनाणी भयणाए। २३. णाणावरणिज्जं किं मतिअण्णाणी बंधइ, सुय०, विभंग० ? गोयमा ! आउगवज्जाओ सत्त वि बंधति। आउगं भयणाए। [सु. २४. पनरसमं दारं-मणजोगिआइ पडुच्च अट्ठण्हं कम्मपगडीणं बंधपरूवणा] २४. (१) णाणावरणिज्जं किं मणजोगी बंधइ, वय०, काय०, अजोगी बंधइ ? गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णिभयणाए, अजोगी न बंधइ। (२) एवं वेदणिज्जवज्जाओ। (३) वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला बंधंति, अजोगी न बंधइ। [सु. २५. सोलसमं दारं-सागार-अणागारोवउत्ते पडुच्च अट्ठण्हं कम्मपगडीणं बंधपरूवणा] २५. णाणावरणिज्जं किं सागारोवउत्ते बंधइ, अणागारोवउत्ते बंधइ ? गोयमा ! अट्ठसु वि भयणाए। [सु. २६. सत्तरसमं दारं - आहारय - अणाहारए पडुच्च अट्ठण्हं कम्मपगडीणं बंधपरूवणा] २६. (१) णाणावरणिज्जं किं आहारए बंधइ, अणाहारए बंधइ ? गोयमा ! दो वि भयणाए। (२) एवं वेदणिज्ज-आउगवज्जाणं छण्हं। (३) वेदणिज्जं आहारए बंधति, अणाहारए भयणाए। आउगं आहारए भयणाए, अणाहारए न बंधति। [सु. २७. अट्ठारसमं दारं-सुहुम-बायराइ पडुच्च अट्ठण्हं कम्मपगडीणं बंधपरूवणा] २७. (१) णाणावरणिज्जं किं सुहुमे बंधइ, बादरे बंधइ, नोसुहुमेनोबादरे बंधइ ? गोयमा ! सुहुमे बंधइ, बादरे भयणाए, नोसुहुमेनोबादरे न बंधइ। (२) एवं आउगवज्जाओ सत्त वि। (३) आउए सुहुमे बादरे भयणाए, नोसुहुमेनोबादरे ण बंधइ। [सु. २८. एगूणवीसइमं दारं-चरिमाचरिमे पडुच्च अट्ठण्हं कम्मपगडीणं बंधपरूवणा] २८. णाणावरणिज्जं किं चरिमे बंधति, अचरिमे बं० ? गोयमा ! अट्ठ वि भयणाए। [सु. २९. दारं २०-छट्ठाइ-एगूणवीसइमपज्जंतदारंतग्गयपदाणमप्पाबहुयं] २९. (१) एएसि णं भंते ! जीवाणं इत्थिवेदगाणं पुरिसवेदगाणं नपुंसगवेदगाणं अवेदगाण य कयरे २ अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेदगा, इत्थिवेदगा संखेज्जगुणा, अवेदगा अणंतगुणा, नपुंसगवेदगा अणंतगुणा। (२) एतेसिं सव्वेसिं पदाणं अप्पबहुगाइं उच्चारेयव्वाइं जाव सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा, चरिमा अणंतगुणा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।॥☆ ☆ ☆ **छट्ठसए तइओ उद्देसो समत्तो ॥६.३॥**

चउत्थो उद्देसो 'सपएस' ☆ ☆ ☆ [सु. १-६. कालादेसेणं जीव-चउवीसदंडगेसु एगत्त-पुहत्तेणं सपदेस-अपदेसवत्तव्वया] १. जीवे णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसे, अपदेसे ? गोयमा ! नियमा सपदेसे। २. (१) नेरतिए णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसे, अपदेसे ? गोयमा ! सिय सपदेसे, सिय

अपदेसे। (२) एवं जाव सिद्धे। ३. जीवा णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसा, अपदेसा ? गोयमा ! नियमा सपदेसा। ४. (१) नेरइया णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसा, अपदेसा ? गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्ज सपदेसा, अहवा सपदेसा य अपदेसे य, अहवा सपदेसा य अपदेसा य। (२) एवं जाव थणियकुमारा। ५. (१) पुढविकाइया णं भंते ! किं सपदेसा, अपदेसा ? गोयमा ! सपदेसा वि, अपदेसा वि। (२) एवं जाव वणप्फतिकाइया। ६. सेसा जहा नेरइया तहा जाव सिद्धा। [सु.७-१९.आहारगाइ-भवसिद्धियाइ-सण्णिआइ-सलेसाइ-सम्मद्दि-ट्ठिआइ-संजताइ-सकसायाइ-णाणाइ-सजोगिआइ-सागारोवउत्ताइ-सवेयगाइ-ससरीरिआइ-पज्जत्तयाईसु सपदेस-अपदेसवत्तव्वया] ७. (१) आहारगाणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। (२) अणाहारगाणं जीवेगिंदियवज्जा छब्भंगा एवं भाणियव्वा-सपदेसा वा, अपदेसा वा, अहवा सपदेसे य अपदेसे य, अहवा सपदेसे य अपदेसा य, अहवा सपदेसा य अपदेसे य, अहवा सपदेसा य अपदेसा य। सिद्धेहिं तियभंगो। ८. (१) भवसिद्धीया अभवसिद्धीया जहा ओहिया। (२) नोभवसिद्धियनोअभवसिद्धिया जीवा-सिद्धेहिं तियभंगो। ९. (१) सण्णीहिं जीवादिओ तियभंगो। (२) असण्णीहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो। नेरइय-देव-मणुएहिं छब्भंगा। (३) नोसण्णिनोअसण्णिणो जीव-मणुय-सिद्धेहिं तियभंगो। १०. (१) सलेसा जहा ओहिया। कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा जहा आहारओ, नवरं जस्स अत्थि एयाओ। तेउलेस्साए जीवादिओ तियभंगो, नवरं पुढविकाइएसु आउ-वणप्फतीसु छब्भंगा। पम्हलेस-सुक्कलेस्साए जीवइओ तियभंगो। मणुस्से छब्भंगा। (२) अलेसेहिं जीव-सिद्धेहिं तियभंगो। ११. (१) सम्मद्दिट्ठीहिं जीवाइओ तियभंगो। विगलिंदिएसु छब्भंगा। (२) मिच्छद्दिट्ठीहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो। (३) सम्मामिच्छद्दिट्ठीहिं छब्भंगा। १२. (१) संजतेहिं जीवाइओ तियभंगो। (२) असंजतेहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो। (३) संजतासंजतेहिं तियभंगो जीवादिओ। (४) नोसंजयनोअसंजयनोसंजतासंजत जीव-सिद्धेहिं तियभंगो। १३. (१) सकसाईहिं जीवादिओ तियभंगो। एगिंदिएसु अभंगकं। कोहकसाईहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। देवेहिं छब्भंगा। माणकसाई मायाकसाई जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। नेरतिय-देवेहिं छब्भंगा। लोभकसायीहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। नेरतिएसु छब्भंगा। (२) अकसाई जीव-मणुएहिं सिद्धेहिं तियभंगो। १४. (१) ओहियनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे जीवादिओ तियभंगो। विगलिंदिएहिं छब्भंगा। ओहिनाणे मणपज्जवणाणे केवलनाणे जीवादिओ तियभंगो। (२) ओहिए अण्णाणे मतिअण्णाणे सुयअण्णाणे एगिंदियवज्जो तियभंगो। विभंगणाणे जीवादिओ तियभंगो। १५. (१) सजोगी जहा ओहिओ। मणजोगी वयजोगी कायजोगी जीवादिओ तियभंगो, नवरं कायजोगी एगिंदिया तेसु अभंगकं। (२) अजोगी जहा अलेसा। १६. सागारोवउत्त-अणागारोवउत्तेहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। १७. (१) सवेयगा य जहा सकसाई। इत्थिवेयग-पुरिसवेदग-नपुंसग-वेदगेसु जीवादिओ तियभंगो, नवरं नपुंसगवेदे एगिंदिएसु अभंगयं। (२) अवेयगा जहा अकसाई। १८. (१) ससरीरी जहा ओहिओ। ओरालिय-वेउव्वियसरीरीणं जीवएगिंदियवज्जो तियभंगो। आहारगसरीरे जीव-मणुएसु छब्भंगा। तेयग-कम्मगाणं जहा ओहिया। (२) असरीरेहिं जीव-सिद्धेहिं तियभंगो। १९. (१) आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणापाणपज्जत्तीए जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। भासामणपज्जत्तीए जहा सण्णी। (२) आहारअपज्जत्तीए जहा अणाहारगा। सरीरअपज्जत्तीए इंदियअपज्जत्तीए आणापाणअपज्जत्तीए जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, नेरइय-देव-मणुएहिं छब्भंगा। भासामणअपज्जत्तीए जीवादिओ तियभंगो, णेरइय-देव-मणुएहिं छब्भंगा। [सु. २०. पढमाइएगूणवीसइमपज्जंतसुत्तविसयसंगहणीगाहा] २०. गाहा- सपदेसाऽऽहारग भविय सण्णि लेस्सा दि संजय कसाए। णाणे जोगुवओगे वेदे य सरीर पज्जत्ती ॥१॥ [सु. २१. जीव -चउवीसदंडगेसु पच्चक्खाण - अपच्चक्खाणाइवत्तव्वया] २१. (१) जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी ? गोयमा ! जीवा पच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणाऽपच्चक्खाणी वि। (२) सव्वजीवाणं एवं पुच्छा। गोयमा ! नेरइया अपच्चक्खाणी जाव चउरिंदिया, सेसा दो पडिसेहेयव्वा। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो पच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी वि। मणुस्सा तिण्णि वि। सेसा जहा नेरतिया। [सु. २२-२३. जीवाईसु पच्चक्खाणजाणणा-कुव्वणावत्तव्वया] २२. जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणं जाणंति, अपच्चक्खाणं

जाणंति, पच्चक्खाणापच्चक्खाणं जाणंति ? गोयमा ! जे पंचेंदिया ते तिण्णि वि जाणंति, अवसेसा पच्चक्खाणं न जाणंति । २३. जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणं कुव्वंति अपच्चक्खाणं कुव्वंति, पच्चक्खाणापच्चक्खाणं कुव्वंति ? जहा ओहिया तहा कुव्वणा । [सु. २४. जीवाईसु पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउयाइवत्तव्वया] २४. २४. जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया, अपच्चक्खाणनि०, पच्चक्खाणापच्चक्खाणनि० ? गोयमा ! जीवा य वेमाणिया य पच्चक्खाणणिव्वत्तियाउया तिण्णि वि । अवसेसा अपच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया । [सु. २५. एगवीसइमाइचउवीसइमपज्जंतसुत्तविसयसंगहणीगाहा] २५. गाथा पच्चक्खाणं १ जाणइ २ कुव्वति ३ तेणेव आउनिव्वत्ती ४ । सपदेसुद्देसम्मि य एमेए दंडगा चउरो ॥२॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥☆ ☆ ☆ **छट्ठे सए चउत्थो उद्देसो ॥६.४॥**

☆☆☆ पंचमो उद्देसो 'तमुए' ☆☆☆ [सु. १. तमुक्कायसरूवं] १. १ किमियं भंते ! तमुक्काए त्ति पवुच्चइ ? किं पुढवी तमुक्काए त्ति पवुच्चति, आऊ तमुक्काए त्ति पवुच्चति ? गोयमा ! नो पुढवी तमुक्काए त्ति पवुच्चति, आऊ तमुक्काए त्ति पवुच्चति । २ से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! पुढविकाए णं अत्थेगइए सुभे देसं पकासेति, अत्थेगइए देसं नो पकासेइ, से तेणट्ठेणं० । [सु. २-५. तमुक्कायस्स समुट्ठाण -संठाण-विक्खंभ-परिक्खेवपमाणवत्तव्वया] २. तमुक्काए णं भंते ! कहिं समुट्ठिए ? कहिं सन्निट्ठिते ? गोयमा ! जंबुद्दीवंस्स दीवस्स बहिया तिरियमसंखेज्जे दीव-समुद्दे वीतिवइत्ता अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेतियंताओ अरुणोदयं समुद्दं बायालीसं जोयणसहस्साणि ओगाहित्ता उवरिल्लाओ जलंताओ एकपदेसियाए सेढीए इत्थ णं तुमुक्काए समुट्ठिए, सत्तरस एक्कवीसे जोयणसते उड्ढं उप्पतित्ता तओ पच्छा तिरियं पवित्थरमाणे पवित्थरमाणे सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंदे चत्तारि वि कप्पे आवरित्ताणं उड्ढं पि य णं जाव बंभलोगे कप्पे रिट्ठविमाणपत्थडं संपत्ते, एत्थ णं तमुक्काए सन्निट्ठिते । ३. तमुक्काए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! अहे मल्लगमूलसंठिते, उप्पिं कुक्कुडगपंजरगसंठिए पण्णत्ते । ४. तमुक्काए णं भंते ! केवतियं विक्खंभेणं ? केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते । तं जहा संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडे य । तत्थ णं जे से संखेज्जवित्थडे से णं संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं प० । तत्थ णं जे से असंखेज्जवित्थडे से असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं । ५. तमुक्काए णं भंते ! केमहालए प० ? गोयमा ! अयं णं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ते । देवे णं महिड्ढीए जाव 'इणामेव इणामेव' त्ति कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छिज्जा । से णं देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए जाव देवगईए वीईवयमाणे वीईवयमाणे जाव एकाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं छम्मासे वीतीवएज्जा, अत्थेगइयं तमुकायं वीतीवएज्जा, अत्थेगइयं तमुकायं नो वीतीवएज्जा । एमहालए णं गोतमा ! तमुक्काए पन्नत्ते । [सु. ६-७. तमुक्काए गिह-गामाइअभावपरूवणा] ६. अत्थि णं भंते ! तमुकाए गेहा ति वा, गेहावणा ति वा ? णो इणट्ठे समट्ठे । ७. अत्थि णं भंते ! तमुकाए गामा ति वा जाव सन्निवेसा ति वा ? णो इणट्ठे समट्ठे । [सु.८-९. बलाहय-थणियसद्द-बादरविज्जूणं तमुक्काए अत्थित्तं देवाइकारियत्तं च] ८. (१) अत्थि णं भंते ! तमुक्काए ओराला बलाहया संसेयंति, सम्मुच्छंति, वासं वासंति ? हंता, अत्थि । (२) तं भंते ! किं देवो पकरेति, असुरो पकरेति ! नागो पकरेति ? गोयमा ! देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, णागो वि पकरेति । ९. (१) अत्थि णं भंते ! तमुकाए बादरे थणियसद्दे, बायरे विज्जुए ? हंता, अत्थि । (२) तं भंते ! किं देवो पकरेति ३ ? तिण्णि वि पकरेंति । [सु. १०-११. तमुक्काए बादरपुढविकाय-अगणिकायाणं चंद-सूरियाईणं च अभावपरूवणा] १०. अत्थि णं भंते ! तमुकाए बादरे पुढविकाए, बादरे अगणिकाए ? णो तिणट्ठे समट्ठे, णन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं । ११. अत्थि णं भंते ! तमुकाए चंदिम-सूरिय-गहगण णक्खत्त-तारा-रूवा ? णो तिणट्ठे समट्ठे, पलिपस्सतो पुण अत्थि । [सु. १२. तमुक्काए चंदाभा-सूराभाणं णत्थित्तपरूवणा] १२. अत्थि णं भंते ! तमुकाए चंदाभा ति वा, सूराभा ति वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे, कादूसणिया पुण सा । [सु. १३. तमुक्कायस्स वण्णपरूवणा] १३. तमुक्काए णं भंते ! केरिसए वण्णेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! काले कालोभासे गंभीरलोमहरिसजणणे भीमे उत्तासणए परमकिण्हे वण्णेणं पण्णत्ते । देवे वि णं अत्थेगतिए जे णं तप्पढमताए पासित्ता

For Private & Personal Use Only

णं खभाएज्जा, अहे णं अभिसमागच्छेज्जा, ततो पच्छा सीहं सीहं तुरियं तुरियं खिप्पामेव वीतीवएज्जा। [सु. १४. तमुक्कायस्स नामधेज्जाणि] १४. तमुकायस्स णं भंते ! कति नामधेज्जा पण्णत्ता ? गोयमा ! तेरस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा तमे ति वा, तमुकाए ति वा, अंधकारे इ वा, महंधकारे इ वा, लोगंधकारे इ वा, लोगतमिस्से इ वा, देवंधकारे ति वा, देवतमिस्से ति वा, देवारण्णे ति वा, देववूहे ति वा, देवफलिहे ति वा, देवपडिक्खोभे ति वा, अरुणादए ति वा समुद्दे। [सु. १५. तमुक्कायस्स आउ -जीव -पुग्गलपरिणामत्तपरूवणा] १५. तमुकाए णं भंते ! किं पुढविपरिणामे आउपरिणामे जीवपरिणामे पोग्गलपरिणामे ? गोयमा ! नो पुढविपरिणामे, आउपरिणामे वि, जीवपरिणामे वि, पोग्गलपरिणामे वि। [सु. १६. सव्वेसिं पाणाईणं तमुक्काए अणंतसो उववन्नपुव्वत्तवत्तव्वया] १६. तमुकाए णं भंते ! सव्वे पाणा भूता जीवा सत्ता पुढविकाइयत्ताए जाव तसकाइयत्ताए उववन्नपुव्वा ? हंता, गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो, णो चेव णं बादरपुढविकाइयत्ताए वा, बादरअगणिकाइयत्ताए वा। [सु. १७-१८. कण्हराईणं संखा -ठाणाइपरूवणा] १७. कति णं भंते ! कण्हराईओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कण्हराईओ पण्णत्ताओ। १८. कहि णं भंते ! एयाओ अट्ठ कण्हराईओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! उप्पिं सणंकुमार-माहिंदाणं कप्पाणं, हव्विं बंभलोगे कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे, एत्थ णं अक्खाडग -समचउरंससंठाणसंठियाओ अट्ठ कण्हराईओ पण्णत्ताओ, तं जहा पुरत्थिमेणं दो, पच्चत्थिमेणं दो, दाहिणेणं दो, उत्तरेणं दो। पुरत्थिमब्भंतरा कण्हराई दाहिणबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, दाहिणब्भंतरा कण्हराई पच्चत्थिमबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, पच्चत्थिमब्भंतरा कण्हराई उत्तरबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, उत्तरऽब्भंतरा कण्हराई पुरत्थिमबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा। दो पुरत्थिमपच्चत्थिमाओ बाहिराओ कण्हराईओ छलंसाओ, दो उत्तरदाहिणबाहिराओ कण्हराईओ तंसाओ, दो पुरत्थिमपच्चत्थिमाओ अब्भिंतराओ कण्हराईओ चउरंसाओ, दो उत्तरदाहिणाओ अब्भिंतराओ कण्हराईओ चउरंसाओ। "पुव्वावरा छलंसा, तंसा पुण दाहिणुत्तरा बज्झा। अब्भंतर चउरंसा सव्वा वि य कण्हराईओ" ॥१॥ [सु. १९. कण्हराईणं आयाम- -विक्खंभपरूवणा] १९. कण्हराईओ णं भंते ! केवतियं आयामेणं, केवतियं विक्खंभेणं, केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ताओ ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ताओ। [सु. २०. कण्हराईणं पमाणपरूवणा] २०. कण्हराईओ णं भंते ! केमहालियाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अयं णं जंबुद्दीवे दीवे जाव अद्धमासं वीतीवएज्जा। अत्थेगतियं कण्हराइं वीतीवएज्जा, अत्थेगइयं कण्हराइं णो वीतीवएज्जा। एमहालियाओ णं गोयमा ! कण्हराईओ पण्णत्ताओ। [सु. २१-२२. कण्हराईसु गेह -गेहावण -गामाइअभावपरूवणा] २१. अत्थि णं भंते ! कण्हराईसु गेहा ति वा, गेहावणा ति वा ? नो इणट्ठे समट्ठे। २२. अत्थि णं भंते ! कण्हराईसु गामा ति वा० ? णो इणट्ठे समट्ठे। [सु. २३-२४. ओरालबलाहय-बादरथणियसद्दाणं कण्हराईसु अत्थित्तं देवकारियत्तं च] २३. (१) अत्थि णं भंते ! कण्ह० ओराला बलाहया सम्मुच्छंति ३ ? हंता, अत्थि। (२) तं भंते ! किं देवो प० ३ ? गोयमा ! देवो पकरेति, नो असुरो, नो नागो य। २४. अत्थि णं भंते ! कण्हराईसु बादरे थणियसद्दे ? जहा ओराला (सु. २३) तहा। [सु. २५-२७. कण्हराईसु बादरआउ-अगणि-वणस्सतिकायाणं चंद-सूरिय-चंदाभाईणं च अभावपरूवणा] २५. अत्थि णं भंते ! कण्हराईसु बादरे आउकाए बादरे अगणिकाए बायरे वणप्फतिकाए ? णो इणट्ठे समट्ठे, णऽण्णत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं। २६. अत्थि णं भंते ! ० चंदिमसूरिय० ४ प० ? णो इणट्ठे समट्ठे। २७. अत्थि णं कण्ह० चंदाभा ति वा २ ? णो इणट्ठे समट्ठे। [सु. २८. कण्हराईणं वण्णपरूवणा] २८. कण्हराईओ णं भंते ! केरिसियाओ वण्णेणं पन्नत्ताओ ? गोयमा ! कालाओ जाव खिप्पामेव वीतीवएज्जा। [सु. २९. कण्हराईणं नामधेज्जाण] २९. कण्हराईणं भंते ! कति नामधेज्जा पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा कण्हराई ति वा, मेहराई ति वा, मघा इ वा, माघवती ति वा, वातफलिहे ति वा, वातपलिक्खोमे इ वा, देवफलिहे इ वा, देवपलिक्खोभे ति वा। [सु. ३०. कण्हराईणं पुढवी-जीव-पुग्गलपरिणामत्तपरूवणा] ३०. कण्हराईओ णं भंते ! किं पुढविपरिणामाओ, आउपरिणामाओ, जीवपरिणामाओ, पुग्गलपरिणामाओ ? गोयमा ! पुढविपरिणामाओ, नो आउपरिणामाओ, जीवपरिणामाओ वि, पुग्गलपरिणामाओ वि। [सु. ३१. सव्वेसिं पाणाईणं कण्हराईसु अणंतसो उववन्नपुव्वत्तवत्तव्वया] ३१. कण्हराईसु णं भंते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता उववन्नपुव्वा ? हंता, गोयमा ! असइं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अदुवा अणंतखुत्तो, नो चेव णं बादरआउकाइयत्ताए, बादरअगिणकाइयत्ताए, बादरवणस्सतिकाइयत्ताए वा। [सु. ३२-३५. कण्हराइओवासंतरगयलोगंतियविमाणाणं णामाइं ठाणाइं च] ३२. एयासि णं अट्ठण्हं कण्हराईणं अट्ठसु ओवासंतरेसु अट्ठ लोगंतियविमाणा पण्णत्ता, तं जहा अच्ची अच्चिमाली वइरोयणे पभंकरे चंदाभे सूराभे सुक्काभे सुपतिट्ठाभे, मज्झे रिट्ठाभे। ३३. कहि णं भंते! अच्ची विमाणे प० ? गोयमा! उत्तरपुरत्थिमेणं। ३४. कहि णं भंते! अच्चिमाली विमाणे प० ? गोयमा! पुरत्थिमेणं। ३५. एवं परिवाडीए नेयव्वयं जाव कहिं णं भंते! रिट्ठे विमाणे पण्णत्ते ? गोयमा! बहुमज्झदेसभागे। [सु. ३६-४०. लोगंतियदेवाणं नामाइं विमाणनामाइं परिवारदेवसंखा य] ३६. एतेसु णं अट्ठसु लोगंतियविमाणेसु अट्ठविहा लोगंतिया देवा परिवसंति, तं जहा "सारस्सयमातिच्चा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य। तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य" ॥२॥ ३७. कहि णं भंते! सारस्सता देवा परिवसंति ? गोयमा! अच्चिम्मि विमाणे परिवसंति। ३८. कहि णं भंते! आदिच्चा देवा परिवसंति ? गोयमा! अच्चिमालिम्मि विमाणे०। ३९. एवं नेयव्वं जहाणुपुव्वीए जाव कहि णं भंते! रिट्ठा देवा परिवसंति ? गोयमा! रिट्ठम्मि विमाणे। ४०. (१) सारस्सय-मादिच्चाणं भंते! देवाणं कति देवा, कति देवसता पण्णत्ता ? गोयमा! सत्त देवा, सत्त देवसया परिवारो पण्णत्तो। (२) वण्ही-वरुणाणं देवाणं चउद्दस देवा, चउद्दस देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो। (३) गद्दतोय-तुसियाणं देवाणं सत्त देवा, सत्त देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो। (४) अवसेसाणं नव देवा, नव देवसया परिवारो पण्णत्तो। "पढमजुगलम्मि सत्त उ सयाणि बीयम्मि चोद्दस सहस्सा। ततिए सत्त सहस्सा नव चेव सयाणि सेसेसु" ॥३॥ [सु. ४१. लोगंतियविमाणाण पतिट्ठाण-बाहल्ल-उच्चत्त-संठाणाइवत्तव्वया] ४१. (१) लोगंतिगविमाणा णं भंते! किंपतिट्ठिता पण्णत्ता ? गोयमा! वाउपतिट्ठिया पण्णत्ता। (२) एवं नेयव्वं 'विमाणाणं पतिट्ठाणं बाहल्लुच्चत्तमेव संठाणं'। बंभलोयवत्तव्वया नेयव्वा जाव हंता गोयमा! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो, नो चेव णं देवित्ताए। [सु. ४२. लोगंतियदेवाणं ठितिपरूवणा] ४२. लोगंतिगविमाणेसु लोगंतियदेवाणं भंते! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता! गोयमा! अट्ठ सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। [सु. ४३. लोगंतियविमाण -लोगंताणं अंतरपरूवणा] ४३. लोगंतिगविमाणेहिं णं भंते! केवतियं अबाहाए लोगंते पण्णत्ते ? गोयमा! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अबाहाए लोगंते पण्णत्ते। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ☆☆☆ ॥ **छट्ठसयस्स उद्देसओ पंचमओ ॥६.५॥** ☆☆☆ **छट्ठो उद्देसो 'भविए'** ☆☆☆ [सु. १-२. चउवीसदंडयाणं आवासाइवत्तव्वयानिद्देसो] १. (१) कति णं भंते! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा-रयणप्पभा जाव तमतमा। (२) रयणप्पभादीणं आवासा भाणियव्वा जाव अहेसत्तमाए। २. एवं जे जतिया आवासा ते भाणियव्वा जाव कति णं भंते! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ? गोयमा! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता, तं जहा-विजए जाव सव्वट्ठसिद्धे। [सु. ३-८. मारणंतियसमुग्घायसमोहयजीवस्स चउवीसदंडएसु आहाराइवत्तव्वया] ३. (१) जीवे णं भंते! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहते, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अन्नतरंसि निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! तत्थगते चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्जा ? गोयमा! अत्थेगइए तत्थगते चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्ज, अत्थेगइए ततो पडिनियत्तति, इहमागच्छति, आगच्छित्ता दोच्चं पि मारणंतियसमुग्घाएणं समोहणति, समोहणित्ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अन्नयरंसि निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जित्ता ततो पच्छा आहारेज्ज वा परिणामेज्ज वा सरीरं वा बंधेज्जा। (२) एवं जाव अहेसत्तमा पुढवी। (४) जीवे णं भंते! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए, २ जे भविए चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु अन्नतरंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारत्ताए उववज्जित्तए० जहा नेरइया तहा भाणियव्वा जाव थणियकुमारा। ५. (१) जीवे णं भंते! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए, २ जे भविए असंखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु अन्नयरंसि पुढविकाइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं केवतियं गच्छेज्जा, केवतियं पाउणेज्जा ? गोयमा! लोयंतं गच्छेज्जा, लोयंतं पाउणिज्जा। (२) से णं भंते! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए तत्थगते चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्ज, अत्थेगइए ततो पडिनियत्तति, २ त्ता इहमागच्छइ, २ त्ता दोच्चं पि मारणंतियसमुग्घाएणं समोहणति, २ त्ता मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागमेत्तं वा संखेज्जतिभागमेत्तं वा, वालग्गं वा, वालग्गपुहुत्तं वा एवं लिक्खं जूयं जवं अंगुलं जाव जोयणकोडिं वा, जोयणकोडाकोडिं वा संखेज्जेसु वा असंखेज्जेसु वा जोयणसहस्सेसु, लोगंते वा एगपदेसियं सेढिं मोत्तूण असंखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु अन्नयरंसि पुढविकाइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए उववज्जेत्ता तओ पच्छा आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा सरीरं वा बंधेज्जा। (३) जहा पुरत्थिमेणं मंदरस्स पव्वयस्स आलावगो भणिओ एवं दाहिणेणं, पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं, उड्ढे, अहे।६. जहा पुढविकाइया तहा एगिंदियाणं सव्वेसिं एक्केक्कस्स छ आलावगा भाणियव्वा। ७. जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घातेणं समोहते, २ त्ता जे भविए असंखेज्जेसु बेंदियावाससयसहस्सेसु अन्नतरंसि बेंदियावासंसि बेइंदियत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! तत्थगते चेव० जहा नेरइया। एवं जाव अणुत्तरोववातिया। ८. जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घातेणं समोहते, २ जे भविए एवं पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महाविमाणेसु अन्नयरंसि अनुत्तरविमाणंसि अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! तत्थगते चेव जाव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्जा। सेवं भंते सेवं भंते ! त्ति० ॥ **☆☆☆ छट्ठो पुढवि उद्देसो समत्तो ॥६.६॥☆☆☆ सत्तमो उद्देसो 'साली' ☆☆☆**

[सु. १-३. कोट्ठाइआगुत्ताणं सालिआइ-कलायाइ-अयसिआईणं धण्णाणं जोणिकालपरूवणा] १. अह णं भंते ! सालीणं वीहीणं गोधूमाणं जवाणं जवजवाणं एतेसि णं धन्नाणं कोट्ठउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लित्ताणं पिहिताणं मुद्दियाणं लंछियाणं केवतियं कालं जोणी संचिट्ठति ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि संवच्छराइं, तेण परं जोणी पमिलाति, तेण परं जोणी पविद्धंसति, तेण परं बीए अबीए भवति, तेण परं जोणिवोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो !। २. अह भंते ! कलाय-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-निप्फाव-कुलत्थ-आलिसंदग-सईण-पलिमंथगमादीणं एतेसि णं धन्नाणं० ? जहा सालीणं तहा एयाण वि, नवरं पंच संवच्छराइं। सेसं तं चेव। ३. अह भंते ! अयसि-कुसुंभग-कोद्दव-कंगु-वरग-रालग-कोदूसग-सण-सरिसव-मूलगबीयमादीणं एतेसि णं धन्नाणं० ? एताणि वि तहेव, नवरं सत्त संवच्छराइं। सेसं तं चेव। [सु. ४-५. मुहुत्ताइ-सीसपहेलियापज्जंतस्स गणियकालमाणस्स वित्थरओ परूवणा] ४. एगमेगस्स णं भंते ! मुहुत्तस्स केवतिया ऊसासद्धा वियाहिया ? गोयमा ! असंखेज्जाणं समयाणं समुदयसमितिसमागमेणं सा एगा आवलिय त्ति पवुच्चइ, संखेज्जा आवलिया ऊसासो, संखेज्जा आवलिया निस्सासो। "हट्ठस्स अणवगल्लस्स निरुवकिट्ठस्स जंतुणो। एगे ऊसासनीसासे, एस पाणु त्ति वुच्चति" ॥१॥ "सत्त पाणूणि से थोवे, सत्त थोवाइं से लवे। लवाणं सत्तहत्तरिए एस मुहुत्ते वियाहिते" ॥२॥ "तिण्णि सहस्सा सत्त य सयाइं तेवत्तरिं च ऊसासा। एस मुहुत्तो दिट्ठो सव्वेहिं अणंतनाणीहिं"॥३॥ ५. एतेणं मुहुत्तपमाणेणं तीसमुहुत्तो अहोरत्तो, पण्णरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खा मासो, दो मासा उऊ, तिण्ण उऊ अयणे, दो अयणा संवच्छरे, पंचसंवच्छरिए जुगे, वीसं जुगाइं वाससयं, दस वाससयाइं वाससहस्सं, सयं वाससहस्साइं वाससतसहस्सं, चउरासीतिं वाससतसहस्साणि से एगे पुव्वंगे, चउरासीतिं पुव्वंगसयसहस्साइं से एगे पुव्वे, एवं तुडिअंगे तुडिए, अडडंगे अडडे, अववंगे अववे, हूहूअंगे हूहूए, उप्पलंगे उप्पले, पउमंगे पउमे, नलिणंगे नलिणे, अत्थनिउरंगे अत्थनिउरे, अउअंगे अउए, पउअंगे पउए य, नउअंगे नउए य, चूलिअंगे चूलिआ य, सीसपहेलिअंगे सीसपहेलिया। एताव ताव गणिए। एताव ता गणियस्स विसए। तेण परं ओवमिए। [सु. ६-८. पलिओवमाइ-उस्सप्पिणिपज्जंतस्स ओवमियकालमाणस्स वित्थरओ परूवणा] ६. से किं तं ओवमिए ? ओवमिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा पलिओवमे य, सागरोवमे य। ७. से किं तं पलिओवमे ? से किं तं सागरोवमे ? "सत्थेण सुतिक्खेण वि छेत्तुं भेत्तुं च जं किर न सक्का। तं परमाणुं सिद्धा वदंति आदिं पमाणाणं" ॥४॥ अणंताणं परमाणुपोग्गलाणं समुदयसमितिसमागमेणं सा एगा उस्सण्हसण्हिया ति वा, सण्हसण्हिया ति वा, उड्ढरेणू ति वा, तसरेणू ति वा, रहरेणू ति वा, वालग्गे ति वा, लिक्खा ति वा, जूया ति वा, जवमज्झे ति वा, अंगुले ति वा। अट्ठ उस्सण्हसण्हियाओ सा एगा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सण्हसण्हिया, अट्ठ सण्हसण्हियाओ सा एगा उड्ढरेणू, अट्ठ उड्ढरेणूओ सा एगा तसरेणू, अट्ठ तसरेणूओ सा एगा रहरेणू अट्ठ रहरेणूओ से एगे देवकुरु-उत्तरकुरुगाणं मणूसाणं वालग्गे, एवं हरिवासरम्मग -हेमवत-एरण्णवताणं पुव्वविदेहाणं मणूसाणं अट्ठ वालग्गा सा एगा लिक्खा, अट्ठ लिक्खाओ सा एगा जूया, अट्ठ जूयाओ से एगे जवमज्झे, अट्ठ जवमज्झा से एगे अंगुले, एतेणं अंगुलपमाणेणं छ अंगुलाणि पादो, बारस अंगुलाइं विहत्थी, चउव्वीसं अंगुलाणि रयणी, अडयालीसं अंगुलाइं कुच्छी, छण्णउतिं अंगुलाणि से एगे दंडे ति वा, धणू ति वा, जूए ति वा, नालिया ति वा, अक्खे ति वा, मुसले ति वा, एतेणं धणुप्पमाणेणं दो धणुसहस्साइं गाउयं, चत्तारि गाउयाइं जोयणं, एतेणं जोयणप्पमाणेणं जे पल्ले जोयणं आयामविक्खंभेणं, जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं तं तिउणं सविसेसं परिरएणं। से णं एगाहिय-बेयाहिय-तेयाहिय उक्कोसं सत्तरत्तप्परूढाणं संसट्ठे सन्निचिते भरिते वालग्गकोडीणं, ते णं वालग्गे नो अग्गी दहेज्जा, नो वातो हरेज्जा, नो कुत्थेज्जा, नो परिविद्धंसेज्जा, नो पूतित्ताए हव्वमागच्छेज्जा। ततो णं वाससते वाससते गते एगमेगं वालग्गं अवहाय जावतिएणं कालेणं से पल्ले खीणे नीरए निम्मले निट्ठिते निल्लेवे अवहडे विसुद्धे भवति। से तं पलिओवमे। गाहा "एतेसिं पल्लाणं कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया। तं सागरोवमस्स तु एक्कस्स भवे परीमाणं" ॥५॥ ८. एएणं सागरोवमपमाणेणं चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमसुसमा १, तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा २, दो सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमदूसमा ३, एगा सागरोवमकोडाकोडी बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दूसमसुसमा ४, एक्कवीसं वासहस्साइं कालो दूसमा ५, एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दूसमदूसमा ६। पुणरवि उस्सप्पिणीए एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दूसमदूसमा १। एक्कवीसं वाससहस्साइं जाव चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमसुसमा ६। दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी। दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणी। वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी य उस्सप्पिणी य। [सु. ९. इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए भरहवासस्स आगारभावपडोयारपरूवणं] ९. जंबुद्दीवे णं भंते! दीवे इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए उत्तमट्ठपत्ताए भरहरस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोगारे होत्था? गोतमा! बहुसमरमणिज्जे भू-मिभागे होत्था, से जहानामए आलिंगपुक्खरे ति वा, एवं उत्तरकुरुवत्तव्वया नेयव्वा जाव आसयंति सयंति। तीसे णं समाए भारहे वासे तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे उद्दाला कुद्दाला जाव कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला जाव छव्विहा मणूसा अणुसज्जित्था, तं० पम्हगंधा १ मियगंधा २ अममा ३ तेयली ४ सहा ५ सणिंचारी ६। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ☆☆☆ **सत्तमो सालिउद्देसो समत्तो ॥६.७॥** ☆☆☆ **अट्ठमो उद्दसो 'पुढवी'** ☆☆☆ [सु. १. अट्ठपुढविपरूवणा] १. कइ णं भंते! पुढवीओ पण्णत्ताओ? गोयमा! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा रयणप्पभा जाव ईसीपब्भारा। [सु. २-३. रयणप्पभाए पुढवीए गेहाइ -गामाईणं अभावपरूवणा] २. अत्थि णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे गेहा ति वा गेहावणा ति वा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे। ३. अत्थि णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए अहे गामा ति वा जाव सन्निवेसा ति वा? नो इणट्ठे समट्ठे। [सु. ४-७. रयणप्पभाए पुढवीए उरालबलाहय-बादरथणियसद्दाणं अत्थित्तं देव-असुर-नागकारियत्तं च] ४. अत्थि णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे उराला बलाहया संसेयंति, सम्मुच्छंति, वासं वासंति? हंता, अत्थि। ५. तिण्णि वि पकरिंति -देवो वि पकरेति, असुरो वि प०, नागो वि प०। ६. अत्थि णं भंते! इमीसे रयण० बादरे थणियसद्दे? हंता, अत्थि। ७. तिण्णि वि पकरेंति। [सु. ८-१०. रयणप्पभाए पुढवीए बादरअगणिकाय -चंदाइ-चंदाभाईणं अभाव -परूवणा] ८. अत्थि णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए अहे बादरे अगणिकाए? गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे, नऽन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं। ९. अत्थि णं भंते! इमीसे रयण० अहे चंदिम जाव तारारूवा? नो इणट्ठे समट्ठे। १०. अत्थि णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए चंदाभा ति वा २? णो इणट्ठे समट्ठे। [सु. ११-१४. सक्करप्पभाइ-तमतमापज्जंताणं बितियाइदसमसुत्त - पज्जंतवत्तव्वयानिद्देसपुव्वयं विसेसवत्तव्वया] ११. एवं दोच्चाए वि पुढवीए भाणियव्वं। १२. एवं तच्चाए वि भाणियव्वं, नवरं देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, णो णागो पकरेति। १३. चउत्थीए वि एवं, नवरं देवो एक्को पकरेति, नो असुरो०, नो नागो पकरेति। १४. एवं हेट्ठिल्लासु सव्वासु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवो एक्को पकरेति। [सु. १५. सोहम्मीसाणेसु गेहाइअभावपरूवणा] १५. अत्थि णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं अहे गेहा इ वा २ ? नो इणट्ठे समट्ठे। [सु. १६-१८. सोहम्मीसाणेसु बलाहय-थणियसद्दाणं अत्थित्तं देव-असुर-कारियत्तं च] १६. अत्थि णं भंते !० उराला बलाहया ? हंता, अत्थि। १७. देवो पकरेति, असुरो वि पकरेइ, नो नाओ पकरेइ। १८. एवं थणियसद्दे वि। [सु. १९-२२. सोहम्मीसाणेसु बादरपुढविकाय-अगणिकाय-चंदाइ-गामाइ-चंदाभाईणं अभावपरूवणा] १९. अत्थि णं भंते !० बादरे पुढविकाए, बादरे अगणिकाए ? नो इणट्ठे समट्ठे नऽन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं। २०. अत्थि णं भंते ! चंदिम० ? णो इणट्ठे समट्ठे। २१. अत्थि णं भंते ! गामाइ वा० ? णो इणट्ठे स०। २२. अत्थि णं भंते ! चंदाभा ति वा २ ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। [सु. २३-२५. सणंकुमाराईसु देवलोएसु पणरसमाइबावीसइम - सुत्तवत्तव्वयापुव्वयं विसेसवत्तव्वया] २३. एवं सणंकुमार-माहिंदेसु, नवरं देवो एगो पकरेति। २४. एवं बंभलोए वि। २५. एवं बंभलोगस्स उवरिं सव्वहिं देवो पकरेति। [सु. २६. तमुक्काय-विविहदेवलोय-रयणप्पभाइपुढवीसु बादरपुढविकायाईणं पंचण्हं पिहप्पिहं अभाववत्तव्वया २६. पुच्छियव्वे य बादरे आउकाए, बादरे तेउकाए, बायरे वणस्सतिकाए। अन्नं तं चेव। गाहा "तमुकाए कप्पपणए अगणी पुढवी य, अगणिं पुढवीसु। आऊ-तेउ-वणस्सति कप्पुवरिम-कण्हराईसु" ॥१॥ [सु. २७-२८. आउयबंधस्स भेयछक्कं चउवीसदंडएसु छव्विहाउयबंधपरूवणा य] २७. कतिविहे णं भंते ! आउयबंधे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहेआउयबंधे पण्णत्ते, तं जहा जातिनामनिहत्ताउए गतिनामनिहत्ताउए ठितिनामनिहत्ताउए ओगाहणानामनिहत्ताउए पदेसनामनिहत्ताउए अणुभागनामनिहत्ताउए। २८. एवं दंडओ जाव वेमाणियाणं। [सु. २९-३४. जातिनामनिहत्ताईणं दुवालसण्हं दंडगाणं जीव-चउवीसदंडगसु वत्तव्वया २९. जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिहत्ता गतिनामनिहत्ता जाव अणुभागनामनिहत्ता ? गोतमा ! जातिनामनिहत्ता वि जाव अणुभागनामनिहत्ता वि। ३०. दंडओ जाव वेमाणियाणं। ३१. जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिहत्ताउया जाव अणुभागनामनिहत्ताउया ? गोयमा ! जातिनामनिहत्ताउया वि जाव अणुभागनामनिहत्ताउया वि। ३२. दंडओ जाव वेमाणियाणं। ३३. एवमेए दुवालस दंडगा भाणियव्वा जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिहत्ता १, जातिनामनिहत्ताउया० २, जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिउत्ता ३, जातिनामनिउत्ताउया० ४, जातिगोयनिहत्ता ५, जातिगोयनिहत्ताउया ६, जातिगोत्तनिउत्ता ७, जातिगोत्तनिउत्ताउया ८, जातिणामगोत्तनिहत्ता ९, जातिणामगोयनिहत्ताउया १०, जातिणामगोयनिउत्ता ११, जीवा णं भंते ! किं जातिनामगोत्तनिउत्ताउया जाव अणुभागनामगोत्तनिउत्ताउया १२ ? गोतमा ! जातिनामगोयनिउत्ताउया वि जाव अणुभागनामगोत्तनिउत्ताउया वि। ३४. दंडओ जाव वेमाणियाणं। [सु. ३५. लवणसमुद्दाइसयंभूरमणसमुद्दपज्जवसाणाण सरूववण्णणा] ३५. लवणे णं भंते ! समुद्दे किं उस्सिओदए, पत्थडोदए, खुभियजले, अखुभियजले ? गोयमा ! लवणे णं समुद्दे उस्सिओदए, नो पत्थडोदए, खुभियजले, नो अखुभियजले। एत्तो आढत्तं जहा जीवाभिगमे जाव से तेण० गोयमा ! बाहिरया णं दीवा-समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति, संठाणतो एगविहिविहाणा, वित्थरओ अणेगविहिहाणा, दुगुणा दुगुणप्पमाणतो जाव अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जा दीव-समुद्दा सयंभुरमणपज्जवसाणा पण्णत्ता समणाउसो !। [सु. ३६. दीव -समुद्दाणं नामधेज्जा] ३६. दीव -समुद्दा णं भंते ! केवतिया नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ? गोयमा ! जावतिया लोए सुभा नामा, सुभा रूवा, सुभा गंधा, सुभा रसा, सुभा फासा एवतिया णं दीव -समुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता। एवं नेयव्वा सुभा नामा, उद्धारो परिणामो सव्वजीवाणं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆ **छट्ठसयस्स अट्ठमो ॥६.८॥ ☆☆☆ नवमो उद्देसो 'कम्म' ☆☆☆** सु. १. नाणावरणाइबंधयजीवाईणं कम्मपयडिबंधजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो १. जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कति कम्मप्पगडीओ बंधइ ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा छव्विहबंधए वा। बंधुद्देसो पण्णवणाए नेयव्वो। [सु. २-५. देवं पडुच्च एगवण्ण-एगरूवाइविउव्वणाए बाहिरयपोग्गलपरिआदाणपरूवणा] २. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियादिइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ? गोयमा ! नो इणट्ठे०। ३. देवे णं भंते ! बाहिरए पोग्गले

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परियादिइत्ता पभू ? हंता, पभू । ४. से णं भंते ! किं इहगए पोग्गले परियादिइत्ता विउव्वति, तत्थगए पोग्गले परियादिइत्ता विकुव्वति, **अन्नत्थगए पोग्गले परियादिइत्ता** विउव्वति ? गोयमा ! नो इहगते पोग्गले परियादिइत्ता विउव्वति, तत्थगते पोग्गले परियादिइत्ता विकुव्वति, नो अन्नत्थगए पोग्गले परियादिइत्ता विउव्वति । ५. एवं एतेणं गमेणं जाव एगवण्णं एगरूवं, एगवण्णं अणेगरूवं, अणेगवण्णं एगरूवं, अणेगवण्णं अणेगरूवं, चउण्हं चउभंगो । [सु. ६-१२. देवं पडुच्च पुग्गलाणं वण्ण-गंध-रस-फासविपरिणामणाए बाहिरयपोग्गलपरिआदाणपरूवणा] ६. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियादिइत्ता पभू कालगं पोग्गलं नीलगपोग्गलत्ताए परिणामित्तए ? नीलगं पोग्गलं वा कालगपोग्गलत्ताए परिणामित्तए ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, परियादितित्ता पभू । ७. से णं भंते ! ! किं इहगए पोग्गले० तं चेव, नवरं परिणामेति त्ति भाणियव्वं । ८. (१) एवं कालगपोग्गलं लोहियपोग्गलत्ताए । (२) एवं कालएण जाव सुक्किलं । ९. एवं णीलएणं जाव सुक्किलं । १०. एवं लोहिएणं जाव सुक्किलं । ११. एवं हालिद्दएणं जाव सुक्किलं । १२. एवं एताए परिवाडीए गंध रस-फास० कक्खडफासपोग्गलं मउयफासपोग्गलत्ताए । एवं दो दो गरुय-लहुय २, सीय -उसिण २, णिद्धलुक्ख २, वण्णाइ सव्वत्थ परिणामेइ । आलावगा य दो दो-पोग्गले अपरियादिइत्ता, परियादिइत्ता । [सु. १३. अविसुद्ध-विसुद्धलेस्सदेवस्स अविसुद्ध-विसुद्धलेस्स -देवाइजाणणा-पासणापरूवणा] १३. (१) अविसुद्धलेसे णं भंते ! देवे असमोहतेणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं देविं अन्नयरं जाणति पासति ? णो इणट्ठे समट्ठे १ । (२) एवं अविसुद्धलेसे० असमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं० ? णो इणट्ठे समट्ठे २ । अविसुद्धलेसे० समोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं० ? णो इणट्ठे समट्ठे ३ । अविसुद्धलेसे० देवे समोहतेणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं० ? णो इणट्ठे समट्ठे ४ । अविसुद्धलेसे० समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं० ? णो इणट्ठे समट्ठे ५ । अविसुद्धलेसे० समोहयासमोहतेणं विसुद्धलेसं देवं० ? णो इणट्ठे समट्ठे ६ । विसुद्धलेसे० असमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं० ? णो इणट्ठे समट्ठे ७ । विसुद्धलेसे० असमोहएणं विसुद्धलेसं देवं० ? नो इणट्ठे समट्ठे ८ । विसुद्धलेसे णं भंते ! देवे समोहएणं० अविसुद्धलेसं देवं० जाणइ० ? हंता, जाणइ० ९ । एवं विसुद्धलेसे० समोहएणं० विसुद्धलेसं देवं० जाणइ० ? हंता, जाणइ० १० । विसुद्धलेसे० समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं जाणइ २ ? हंता, जाणइ० ११ । विसुद्धलेसे० समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं० ? हंता, जाणइ० १२ । एवं हेट्ठिल्लएहिं अट्ठहिं न जाणइ न पासइ, उवरिल्लएहिं चउहिं जाणइ पासइ । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । **☆☆☆ छट्ठसए नवमो उद्देसो ॥६.९॥ ☆☆☆ दसमो उद्देसो 'अन्नउत्थी' ☆☆☆** [सु. १. सव्वलोयजीवाणं अन्नजीवाओ सुह-दुहाभिनिवट्टणविसए अन्नउत्थियमतनिरासपुव्वयं सोदाहरणा निसेहपरूवणा] १. (१) अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति जावतिया रायगिहे नयरे जीवा एवतियाणं जीवाणं नो चक्किया केइ सुहं वा दुहं वा जाव कोलट्ठिगमातमवि निप्फावमातमवि कलममायमवि मासमायमवि मुग्गमातमवि जूयामायमवि लिक्खमायमवि अभिनिवट्टत्ता उवदंसित्तए, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जं णं ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोतमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि सव्वलोए वि य णं सव्वजीवाणं णो चक्किया केइ सुहं वा तं चेव जाव उवदंसित्तए । (२) से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! अयं णं जंबुद्दीवे २ जाव विसेसाहिए परिक्खेवेणं पन्नत्ते । देवे णं महिड्ढीए जाव महाणुभागे एगं महं सविलेवणं गंधसमुग्गगं गहाय तं अवदालेति, तं अवदालित्ता जाव इणामेव कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं २ तिहिं अच्छरानिवातेहिं तिसत्तहुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा, से नूणं गोतमा ! से केवलकप्पे जंबुद्दीवे २ तेहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे ? हंता, फुडे । चक्किया णं गोतमा ! केइ तेसिं घाणपोग्गलाणं कोलट्ठियमायमवि जाव उवदंसित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे । से तेणट्ठेणं जाव उवदंसेत्तए । [सु. २-५. चेयण्णस्स जीव-चउवीसदंडएसु परूवणा] २, जीव णं भंते ! जीवे ? जीवे जीवे ? गोयमा ! जीवे ताव नियमा जीवे, जीवे वि नियमा जीवे । ३. जीवे णं भंते ! नेरइए ? नेरइच जीवे ? गोयमा ! नेरइच ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय नेरइए, सिय अनेरइए । ४. जीवे णं भंते ! असुरकुमारे ? असुरकुमारे जीवे ? गोतमा ! असुरकुमारे ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय असुरकुमारा, सिय णो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असुरकुमारे। ५. एवं दंडओ णेयव्वो जाव वेमाणियाणं। [सु. ६-८. 'जीवति' पदस्स जीव-चउवीसदंडएसु परूवणा] ६. जीवति भंते ! जीवे ? जीवे जीवति ? गोयमा ! जीवति ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय जीवति, सिय नो जीवति। ७. जीवति भंते ! नेरतिए ? नेरतिच जीवति ? गोयमा ! नेरतिए ताव नियमा जीवति, जीवति पुण सिय नेरतिए, सिय अनेरइ,। ८. एवं दंडओ नेयव्वो जाव वेमाणियाणं। [सु. ९-१०. भवसिद्धियस्स चउवीसदंडएसु परूवणा] ९. भवसिद्धीए णं भंते ! नेरइच ? नेरइए भवसिद्धीए ? गोयमा ! भवसिद्धीए नेरइए, सिय अनेरइए। नेरतिए वि य सिय भवसिद्धीए, सिय अभवसिद्धीए। १०. एवं दंडओ जाव वेमाणियाणं। [सु. ११. अन्नउत्थियमतनिरासपुव्वयं सव्वेसिं पाणाईणं एगंतसायासायवेयणाविचारपरूवणा] ११. (१) अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति "एवं खलु सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता एगंतदुक्खं वेदणं वेदेंति से कहमेतं भंते ! एवं गोतमा ! जं णं ते अन्नउत्थिया जाव मिच्छं ते एवमाहंसु। अहं पुण गोतमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतदुक्खं वेदणं वेदेंति, आहच्च सातं। अत्थिगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतसातं वेदणं वेदेंति, आहच्च असायं वेयणं वेदेंति। अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता वेमाताए वेयणं वेयंति, आहच्च सायमसायं। (२) से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! नेरइया एगंतदुक्खं वेयणं वेयंति, आहच्च सातं। भवणवति-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया एगंतसातं वेदणं वेदेंति, आहच्च असायं। पुढविक्काइया जाव मणुस्सा वेमाताए वेदणं वेदेंति, आहच्च सातमसातं। से तेणट्ठेणं०। [सु. १२-१३. चउवीसदंडएसु आयसरीरखेत्तोगाढपोग्गलाहारपरूवणा] १२. नेरतिया णं भंते ! जे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ते किं आयसरीरक्खत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ? अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ? परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ? गोतमा ! आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति, नो अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति, नो परंपरखेत्तोगाढे। १३. जहा नेरइया तहा जाव वेमाणियाणं दंडओ। [सु. १४. केवलिस्स इंदियजाणणा-पासणानिसेहपरूवणा] १४. (१) केवली णं भंते ! आयाणेहिं जाणति पासति ? गोतमा ! नो इणट्ठे०। (२) से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! केवली णं पुरत्थिमेणं मितं पि जाणति अमितं पि जाणति जाव निव्वुडे दंसणे केवलिस्स, से तेणट्ठेणं०। [सु. १५. दसमुद्देसत्थसंगहणीगाहा] १५. गाहा जीवाण सुहं दुक्खं जीवे जीवति तहेव भवियाय। एगंतदुक्खवेदण अत्तमायाय केवली ॥१॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥ ६.१० ॥☆☆☆ **छट्ठं सत्तं समत्तं ॥६॥** 卐卐卐 **सत्तमं सतं** 卐卐卐 [सु. १. सत्तमसयस्स उद्देसगाणमत्थाहिगारा] १. आहार १ विरति २ थावर ३ जीवा ४ पक्खी ५ य आउ ६ अणगारे। छउमत्थ ८ असंवुड ९ अन्नउत्थि १० दस सत्तमम्मि सते ॥१॥ **☆☆☆ पढमो उद्देसो 'आहार' ☆☆☆** [सु. २ पढमुद्देसस्स उवुग्घाओ] २. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वदासी [सु. ३-४. जीव -चउवीसदंडएसु अणाहार -सव्वप्पाहारवत्तव्वया] ३. (१) जीवे णं भंते ! कं समयमणाहारए भवति ? गोयमा ! पढमे समए सिय आहारए, सिय अणाहारए। बितिए समए सिय आहारए, सिय अणाहारए। ततिए समए सिय आहारए, सिय अणाहारए। चउत्थे समए नियमा आहारए। (२) एवं दंडओ। जीवा य एगिंदिया य चउत्थे समए। सेसा ततिए समए। ४. (१) जीवे णं भंते ! कं समयं सव्वप्पाहारए भवति ? गोयमा ! पढमसमयोववन्नए वा, चरमसमयभवत्थे वा, एत्थ णं जीवे सव्वप्पाहारए भवति। (२) दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाणं। [सु. ५. लोगसंठाणपरूवणो] ५. किंसंठिते णं भंते ! लोए पण्णत्ते ? गोयमा ! सुपतिट्ठगसंठिते लोए पण्णत्ते, हेट्ठा वित्थिण्णे जाव उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठिते। तंसि च णं सासयंसि लोगंसि हेट्ठा वित्थिण्णंसि जाव उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठितंसि उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणति पासति, अजीवे वि जाणति पासति। ततो पच्छा सिज्झति जाव अंतं करेति। [सु. ६. कडसामाइयस्स समणोवासयस्स किरियावत्तव्वया] ६. (१) समणोवासगस्स णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स तस्स णं भंते ! किं ईरियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जति ? गोतमा ! नो इरियावहिया किरिया कज्जति, संपराइया किरिया कज्जति। (२) से केणट्ठेणं जाव संपराइया० ? गोयमा ! समणोवासयस्स णं सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स आया अहिकरणी भवति।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आयाहिगरणवत्तियं च णं तस्स नो ईरियावहिया किरिया कज्जति, संपराइया किरिया कज्जति। से तेणट्ठेणं जाव संपराइया०। [सु. ७-८. **समणोवासगस्स** वताऽणतिचारवत्तव्वया] ७. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव तसपाणसमारंभे पच्चक्खाते भवति, पुढविसमारंभे अपच्चक्खाते भवति, से य पुढविं खणमाणे अन्नयरं तसं पाणं विहिंसेज्जा, से णं भंते ! तं वतं अतिचरति ? णो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अतिवाताए आउट्टति। ८. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव वणस्सतिसमारंभे पच्चक्खाते, से य पुढविं खणमाणे अन्नयरस्स रुक्खस्स मूलं छिंदेज्जा, से णं भंते ! तं वतं अतिचरति ? णो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अतिवाताए आउट्टति। [सु. ९-१०. तहारूवसमण-माहणपडिलाभगस्स समणोवासयस्स लाभचयणापरूवणा] ९. समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुएणं एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेमाणे किं लभति ? गोयमा ! समणोवासए णं तहारूवं समणं वा माहणं वा जाव पडिलाभेमाणे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पाएति, समाहिकारए णं तमेव समाहिं पडिलभति। १०. समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा जाव पडिलाभेमाणे किं चयति ? गोयमा ! जीवियं चयति, दुच्चयं चयति, दुक्करं करेति, दुल्लभं लभति, बोहिं बुज्झति ततो पच्छा सिज्झति जाव अंतं करेति। [सु. ११-१३. अकम्मस्स गतिपरिण्णाणहेऊणं निस्संगताईणं छण्हं सोदाहरणा परूवणा] ११. अत्थि णं भंते ! अकम्मस्स गती पण्णायति ? हंता, अत्थि। १२. कहं णं भंते ! अकम्मस्स गती पण्णायति ? गोयमा ! निस्संगताए १ निरंगणताए २ गतिपरिणामेणं ३ बंधणछेयणताए ४ निरिंधणताए ५ पुव्वपओगेणं ६ अकम्मस्स गती पण्णायति। १३. (१) कहं णं भंते ! निस्संगताए १ निरंगणताए २ गतिपरिणामेणं ३ बंधणछेयणताए ४ निरिंधणताए ५ पुव्वप्पओगेणं ६ अकम्मस्स गती पण्णायति ? गो० ! से जहानामए केयि पुरिसे सुक्कं तुंबं निच्छिड्डं निरुवहतं आणुपुव्वीए परिकम्मेमाणे परिकम्मेमाणे दब्भेहि य कुसेहि य वेढेति, वेढित्ता अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं लिंपति, २ उण्हे दलयति, भूइं भूइं सुक्कं समाणं अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए सलिलतलमतिवतित्ता अहे धरणितलपतिट्ठाणे भवति ? हंता, भवति। अहे णं से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं परिक्खएणं धरणितलमतिवतित्ता उप्पिं सलिलतलपतिट्ठाणे भवति ? हंता, भवति। एवं खलु गोयमा ! निस्संगताए निरंगणताए गतिपरिणामेणं अकम्मस्स गती पण्णायति। (२) कहं णं भंते ! बंधणछेदणत्ताए अकम्मस्स गती पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहानामए कलसिंबलिया ति वा, मुग्गसिंबलिया ति वा, माससिंबलिया ति वा, सिंबलिसिंबलिया ति वा, एरंडमिंजिया ति वा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी फुडित्ताणं एगंतमंतं गच्छइ एवं खलु गोयमा ! ०। (३) कहं णं भंते ! निरिंधणताए अकम्मस्स गती० ? गोयमा ! से जहानामए धूमस्स इंधणविप्पमुक्कस्स उड्ढं वीससाए निव्वाघातेणं गती पवत्तति एवं खलु गोतमा !०। (४) कहं णं भंते ! पुव्वप्पयोगेणं अकम्मस्स गती पण्णत्ता ? गोतमा ! से जहानामए कंडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुही निव्वाघातेणं गती पवत्तति एवं खलु गोयमा ! नीसंगयाए निरंगणयाए पुव्वप्पयोगेणं अकम्मस्स गती पण्णत्ता। [सु. १४-१५. जीव-चउवीसदंडएसु दुक्खफुसणाइवत्तव्वया] १४. दुक्खी भंते ! दुक्खेणं फुडे ? अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ? गोयमा ! दुक्खी दुक्खेणं फुडे, नो अदुक्खी दुक्खेणं फुडे। १५. (१) दुक्खी भंते ! नेरतिए दुक्खेणं फुडे ? अदुक्खी नेरतिए दुक्खेणं फुडे ? गोयमा ! दुक्खी नेरतिए दुक्खेणं फुडे, नो अदुक्खी नेरतिए दुक्खेणं फुडे। (२) एवं दंडओ जाव वेमाणियाणं। (३) एवं पंच दंडगा नेयव्वा-दुक्खी दुक्खेणं फुडे १ दुक्खी दुक्खं परियादियति २ दुक्खी दुक्खं उदरेति ३ दुक्खी दुक्खं वेदेति ४ दुक्खी दुक्खं निज्जरेति ५। [सु. १६. अणाउत्तस्स अणगारस्स गमण-तुयट्टण-वत्थाइगहणनिक्खिवणेसु किरियावत्तव्वया] १६. (१) अणगारस्स णं भंते ! अणाउत्तं गच्छमाणस्स वा, चिट्ठमाणस्स वा, निसीयमाणस्स वा, तुयट्टमाणस्स वा; अणाउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पादपुंछणं गेण्हमाणस्स वा, निक्खिवमाणस्स वा, तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जति ? संपराइया किरिया कज्जति ? गोयमा ! नो ईरियावहिया किरिया कज्जति, संपराइया किरिया कज्जति। (२) से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिन्ना भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जति, नो संपराइया किरिया कज्जति। जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिन्ना भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जति, नो इरियावहिया। अहासुत्तं रियं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जति। उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जति, से णं उस्सुत्तमेव रियति। से तेणट्ठेणं०। [सु. १७-२०. सइंगालादि-वीतिंगालादि-खेत्तातिक्कंतादि-सत्थातीतादिपाण-भोयणस्स अत्थपरूवणा] १७. अह भंते! सइंगालस्स सधूमस्स संजोयणादोसदुट्ठस्स पाणभोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते? गोयमा! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासुएसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिगाहित्ता मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववन्ने आहारं अहारेति एस णं गोयमा! सइंगाले पाण-भोयणे। जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासुएसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिगाहित्ता महयाअप्पत्तियं कोहकिलामं करेमाणे आहारमाहारेति एस णं गोयमा! सधूमे पाण-भोयणे। जे णं निग्गंथे वा २ जाव पडिग्गाहित्ता गुणुप्पायणहेतुं अन्नदव्वेणं सद्धिं संजोएत्ता आहारमाहारेति एस णं गोयमा! संजोयणादोसदुट्ठे पाण-भोयणे। एस णं गोतमा! सइंगालस्स सधूमस्स संजोयणादोसदुट्ठस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते। १८. अह भंते! वीतिंगालस्स वीयधूमस्स संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते? गोयमा! जे णं णिग्गंथे वा २ जाव पडिगाहेत्ता अमुच्छिते जाव आहारेति एस णं गोयमा! वीतिंगाले पाण-भोयणे। जे णं निग्गंथे वा २ जाव पडिगाहेत्ता णो महताअप्पत्तियं जाव आहारेति, एस णं गोयमा! वीतधूमे पाण-भोयणे। जे णं निग्गंथे वा २ जाव पडिगाहेत्ता जहा लद्धं तहा आहारं आहारेति एस णं गोतमा! संजोयणादोसविप्पमुक्के पाण -भोयणे। एस णं गोतमा! वीतिंगालस्स वीतधूमस्स संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण -भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते। १९. अह भंते! खेत्तातिक्कंतस्स कालातिक्कंतस्स मग्गातिक्कंतस्स पमाणातिक्कंतस्स पाण -भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते? गोयमा! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासुएसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं अणुग्गते सूरिए पडिग्गाहित्ता उग्गते सूरिए आहारं आहारेति एस णं गोतमा! खेत्तातिक्कंते पाण-भोयणे। जे णं निग्गंथे वा २ जाव० साइमं पढमाए पोरिसीए पडिगाहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवायणावेत्ता आहारं आहारेति एस णं गोयमा! कालातिक्कंते पाण-भोयणे। जे णं निग्गंथे वा २ जाव० सातिमं पडिगाहित्ता परं अद्धजोयणमेराए वीतिक्कमावेत्ता आहारमाहारेति एस णं गोयमा! मग्गातिक्कंते पाण-भोयणे। जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासुएसणिज्जं जाव सातिमं पडिगाहित्ता परं बत्तीसाए कुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ताणं कवलाणं आहारमाहारेति एस णं गोतमा! पमाणातिक्कंते पाण-भोयणे। अट्ठकुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अप्पाहारे, दुवालसकुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोयरिया, सोलसकुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे दुभागप्पत्ते, चउव्वीसं कुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते जाव आहारमाहारेमाणे ओमोदरिया, बत्तीसं कुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते समणे निग्गंथे नो पकामरसभोई इति वत्तव्वं सिया। एस णं गोयमा! खेत्तादिक्कंतस्स कालातिक्कंतस्स मग्गातिक्कंतस्स पमाणातिक्कंतस्स पाणभोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते। २०. अह भंते! सत्थातीतस्स सत्थपरिणामितस्स एसियस्स वेसियस्स सामुदाणियस्स पाण -भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते? गोयमा! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा निक्खित्तसत्थमुसले ववगतमाला-वण्णगविलेवणे ववगतचुय-चइयचत्तदेहं जीवविप्पजढं अकयमकारियमसंकप्पियमणाहूतमकीतकडमणुद्दिट्ठं नवकोडीपरिसुद्धं दसदोसविप्पमुक्कं उग्गम-उप्पायणेसणासुपरिसुद्धं वीतिंगालं वीतधूमं संजोयणादोसविप्पमुक्कं असुरसुरं अचवचवं अदुतमविलंबितं अपरिसाडिं अक्खोवंजण -वणाणुलेवणभूतं संयमजातामायावत्तियं संजमभारवहणट्ठयाए बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं आहारमाहारेति; एस णं गोतमा! सत्थातीतस्स सत्थपरिणामितस्स जाव पाण -भोयणस्स अट्ठे पन्नत्ते। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। **☆☆☆ सत्तमसए पढमो उद्देसो समत्तो ॥७.१॥ ☆☆☆ बीओ उद्देसो 'विरति' ☆☆☆** [सु. १. सुपच्चक्खाय-दुपच्चक्खायसरूवं] १. (१) से नूणं भंते! सव्वपाणेहिं सव्वभूतेहिं सव्वजीवेहिं सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खायं' इति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवति? दुपच्चक्खायं भवति? गोतमा! सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खायं' इति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खातं भवति, सिय दुपच्चक्खातं भवति। (२) से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ 'सव्वपाणेहिं जाव सिय दुपच्चक्खातं भवति?' गोतमा! जस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खायं' इति वदमाणस्स णो एवं अभिसमन्नागतं भवति 'इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा' तस्स णं सव्वपाणेहिं

जाव सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खायं' इति वदमाणस्स नो सुपच्चक्खायं भवति, दुपच्चक्खायं भवति। एवं खलु से दुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खायं' इति वदमाणो नो सच्चं भासं भासति, मोसं भासं भासइ, एवं खलु से मुसावाती सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं अस्संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले यावि भवति। जस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खायं' इति वदमाणस्स एवं अभिसमन्नागतं भवति 'इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा' तस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खायं' इति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवति, नो दुपच्चक्खायं भवति। एवं खलु से सुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खायं' इति वयमाणे सच्चं भासं भासति, नो मोसं भासं भासति, एवं खलु से सच्चवादी सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे अकिरिए संवुडे एगंतअदंडे एगंतपंडिते यावि भवति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव सिय दुपच्चक्खायं भवति। [सु. २-८. पच्चक्खाणभेय -पभेयपरूवणा] २. कतिविहे णं भंते ! पच्चक्खाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा मूलगुणपच्चक्खाणे य उत्तरगुणपच्चक्खाणे य। ३. मूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे य देसमूलगुणपच्चक्खाणे य। ४. सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा सव्वातो पाणातिवातातो वेरमणं जाव सव्वातो परिग्गहातो वेरमणं। ५. देसमूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा थूलातो पाणातिवातातो वेरमणं जाव थूलातो परिग्गहातो वेरमणं। ६. उत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे य, देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे य। ७. सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दसविहे पण्णत्ते, तं जहा "अणागतं १ अतिक्कंतं २ कोडीसहितं ३ नियंटियं ४ चेव। सागारमणागारं ५-६ परिमाणकडं ७ निरवसेसं ८" ॥१॥ साकेयं ९ चेव अद्धाए १०, पच्चक्खाणं भवे दसहा। ८. देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा दिसिव्वयं १ उवभोग -परीभोगपरिमाणं २ अणत्थदंडवेरमाणं ३ सामाइयं ४ देसावगासियं ५ पोसहोववासो ६ अतिहिसंविभागो ७, अपच्छिममारणंतियसंलेहणा झूसणाऽऽराहणता। [सु. ९-१३. जीव-चउवीसदंडयाणं मूलुत्तरगुणपच्चक्खाणिअपच्चक्खाणीहिं वत्तव्वया] ९. जीवा णं भंते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी ? गोयमा ! जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी वि, उत्तरगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि। १०. नेरइया णं भंते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी० ? पुच्छा। गोतमा ! नेरइया नो मूलगुणपच्चक्खाणी, नो उत्तरगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी। ११. एवं जाव चउरिंदिया। १२. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य जहा जीवा (सु. ९)। १३. वाणमंतर -जोतिसिय -वेमाणिया जहा नेरइया (सु. १०)। [सु. १४-१६. मूलुत्तरगुणपच्चक्खाणि -अपच्चक्खाणीणं जीवपंचिंदियतिरिक्ख-मणुयाणं अप्पाबहुयं] १४. एतेसि णं भंते ! जीवाणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं जाव अपच्चक्खाणीण य कतरे कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा। १५. एतेसि णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं० पुच्छा। गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखिज्जगुणा। १६. एतेसि णं भंते ! मणुस्साणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं० पुच्छा। गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा। [सु. १७-२२. जीव-चउवीसदंडयाणं सव्व-देसमूलगुणपच्चक्खाणि अपच्चक्खाणीहिं वत्तव्वया] १७. जीवा णं भंते ! किं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी ? देसमूलगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ? गोयमा ! जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी वि। १८. नेरइयाणं पुच्छा। गोयमा ! नेरतिया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, नो देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी। १९. एवं जाव चउरिंदिया। २०. पंचेंदियतिरिक्खपुच्छा। गोयमा ! पंचेंदियतिरिक्खा नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि। २१. मणुस्सा जहा जीवा। २२. वाणमंतर -जोतिस -वेमाणिया

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा नेरइया। [सु. २३. सव्व-देसमूलगुणपच्चक्खाणि-अपच्चक्खाणीणं जीव पंचिंदियतिरिक्ख-मणुयाणं अप्पाबहुयं] २३. एतेसि णं भंते ! जीवाणं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीणं देसेमूलगुणपच्चक्खाणीणं अपच्चक्खाणीण य कतरे कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी। एवं अप्पाबहुगाणि तिण्णि वि जहा पढमिल्लाए दंडए (सु. १४-१६), नवरं सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा। [सु. २४-२६. जीव-चउवीसदंडयाणं सव्व-देसुत्तरगुणपच्चक्खाणि-अपच्चक्खाणीहिं वत्तव्वया] २४. जीवा णं भंते ! किं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी ? देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ? गोतमा ! जीवा सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी वि, तिण्णि वि। २५. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य एवं चेव। २६. सेसा अपच्चक्खाणी जाव वेमाणिया। [सु. २७. सव्व-देसुत्तरगुणपच्चक्खाणि- अपच्चक्खाणीणं जीव-पंचिंदियतिरिक्ख-मणुयाणं अप्पाबहुयं] २७. एतेसि णं भंते ! जीवाणं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी०, अप्पाबहुगाणि तिण्णि वि जहा पढमे दंडए (सु. १४-१६) जाव मणूसाणं। [सु. २८. जीव-चउवीसदंडयाणं संजत-असंजत-संजतासंजतेहिं वत्तव्वया अप्पाबहुयं च] २८. जीवा णं भंते ! किं संजता ? असंजता ? संजतासंजता ? गोयमा ! जीवा संजया वि ०, तिण्णि वि, एवं जहेव पण्णवणाए तहेव भाणियव्वं जाव वेमाणिया। अप्पाबहुगं तहेव (सु. १४-१६) तिण्ह वि भाणियव्वं। [सु. २९-३२. जीव-चउवीसदंडयाणं पच्चक्खाणि अपच्चक्खाणि -पच्चक्खाणापच्चक्खाणीहिं वत्तव्वया] २९. जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणी ? गोतमा ! जीवा पच्चक्खाणी वि, एवं तिण्णि वि। ३०. एवं मणुस्साण वि। ३१. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया आदिल्लविरहिया। ३२. सेसा सव्वे अपच्चक्खाणी जाव वेमाणिया। [सु. ३३-३५. पच्चक्खाणि-अपच्चक्खाणि-पच्चक्खाणापच्चक्खाणीणं जीवाईणं अप्पाबहुयं] ३३. एतेसि णं भंते ! जीवाणं पच्चक्खाणीणं जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा। ३४. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया सव्वत्थोवा पच्चक्खाणापच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा। ३५. मणुस्सा सव्वत्थोवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा। [सु. ३६-३८. जीव-चउवीसदंडयाणं सासतासासतपरूवणा] ३६. (१) जीवा णं भंते ! किं सासता ? असासता ? गोयमा ! जीवा सिय सासता, सिय असासता। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'जीवा सिय सासता, सिय असासता' ? गोतमा ! दव्वट्ठताए सासता, भावट्ठयाए असासता। से तेणट्ठेणं गोतमा ! एवं वुच्चइ जाव सिय असासता। ३७. नेरइया णं भंते ! किं सासता ? असासता ? एवं जहा जीवा तहा नेरइया वि। ३८. एवं जाव वेमाणिया जाव सिय असासता। सेवं भंते ! सेवं भंते। त्ति०। **☆☆☆ सत्तमस्स बितिओ उद्देसो समत्तो ॥७.२॥ ☆☆☆ तइआ उद्देसो 'थावर' ☆☆☆** [सु. १-२. वणस्सतिकाइयाणं हेउपुव्वयं सव्वप्पाहार -सव्वमहाहारकालवत्तव्वया] १. वणस्सतिकाइया णं भंते ! किं कालं सव्वप्पाहारगा वा सव्वमहाहारगा वा भवंति ? गोयमा ! पाउस-वरिसारत्तेसु णं एत्थ णं वणस्सतिकाइया सव्वमहाहारगा भवंति, तदाणंतरं च णं सरदे, तयाणंतरं च णं हेमंते, तदाणंतरं च णं वसंते, तदाणंतरं च णं गिम्हे। गिम्हासु णं वणस्सतिकाइया सव्वप्पाहारगा भवंति। २. जति णं भंते ! गिम्हासु वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवंति, कम्हा णं भंते ! गिम्हासु बहवे वणस्सतिकाइया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरितगरेरिज्जमाणा सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति ? गोयमा ! गिम्हासु णं बहवे उसिणजोणिया जीवा य पुग्गला य वणस्सतिकाइयत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति, एवं खलु गोयमा ! गिम्हासु बहवे वणस्सतिकाइया पत्तिया पुप्फिया जाव चिट्ठंति। [सु. ३-४. मूलजीवाइपुट्ठाणं मूलाईणं आहारगहणवत्तव्वया] ३. से नूणं भंते ! मूला मूलजीवफुडा, कंदा कंदजीवफुडा जाव बीया बीयजीवफुडा ? हंता, गोतमा ! मूला मूलजीवफुडा जाव बीया बीयजीवफुडा। ४. जति णं भंते ! मूला मूलजीवफुडा जाव बीया बीयजीवफुडा, कम्हा णं भंते ! वणस्सतिकाइया आहारेंति ? कम्हा परिणामेंति ? गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा पुढविजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेंति, तम्हा परिणामेंति। कंदा कंदजीवफुडा मूलजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेंति, तम्हा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिणामेंति। एवं जाव बीया बीयजीवफुडा फलजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेंति, तम्हा परिणामेंति। [सु. ५. आलुयाइवणस्सताणं अणंतजीवत्तपरूवणा] ५. अह भंते ! आलुए मूलए सिंगबेरे हिरिली सिरिली सिस्सिरिली किट्ठिया छिरिया छीरविरालिया कण्हकंदे वज्जकंदे सूरणकंदे खिलूडे भद्दमुत्था पिंडहलिद्दा लोही णीहू थिभगा मुग्गकण्णी अस्सकण्णी सीहकण्णी सीहंढी मुसुंढी, जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते अणंतजीवा विविहसत्ता ? हंता, गोयमा ! आलुए मूलए जाव अणंतजीवा विविहसत्ता। [सु. ६-९. चउवीसदंडयाणं लेस्सं पडुच्च अप्पकम्मतरत्त-महाकम्मतरत्तपरूवणा] ६. (१) सिय भंते ! कण्हलेसे नेरतिए अप्पकम्मतराए, नीललेसे नेरतिए महाकम्मतराए ? हंता, गोयमा ! सिया। (२) से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चति 'कण्हलेसे नेरतिए अप्पकम्मतराए, नीललेसे नेरतिए महाकम्मतराए' ? गोयमा ! ठितिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराए। ७. (१) सिय भंते ! नीललेसे नेरतिए अप्पकम्मतराए, काउलेसे नेरतिए महाकम्मतराए ? हंता, सिया। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'नीललेसे अप्पकम्मतराए, काउलेसे नेरतिए महाकम्मतराए ?' गोयमा ! ठितिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं गोयमा जाव महाकम्मतराए। ८. एवं असुरकुमारे वि, नवरं तेउलेसा अब्भहिया। ९. एवं जाव वेमाणिया, जस्स जति लेसाओ तस्स तति भाणियव्वाओ। जोतिसियस्स न भण्णति। जाव सिय भंते ! पम्हलेसे वेमाणिए अप्पकम्मतराए, सुक्कलेसे वेमाणिए महाकम्मतराए ? हंता, सिया। से केणट्ठेणं० सेसं जहा नेरइयस्स जाव महाकम्मतराए। [सु. १०. कम्म-णोकम्माणं कमेण वेदणा-णिज्जराभावपरूवणा] १०. (१) से नूणं भंते ! जा वेदणा सा निज्जरा ? जा निज्जरा सा वेदणा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'जा वेयणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा न सा वेयणा' ? गोयमा ! कम्मं वेदणा, णोकम्मं निज्जरा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव न सा वेदणा। [सु. ११-१२. चउवीसदंडएसु कम्म-णोकम्माणं कमेण वेदणा-निज्जराभावपरूवणा] ११. (१) नेरतियाणं भंते ! जा वेदणा सा निज्जरा ? जा निज्जरा सा वेदणा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति नेरइयाणं जा वेदणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा न सा वेयणा ? गोतमा ! नेरइयाणं कम्मं वेदणा, णोकम्मं निज्जरा। से तेणट्ठेणं गोतमा ! जाव न सा वेयणा। १२. एवं जाव वेमाणियाणं। [सु. १३-१५. वेदित-निज्जरिताणं ओह-विभागओ पुहत्तपरूवणा] १३. (१) से नूणं भंते ! जं वेदेंसु तं निज्जरिंसु ? जं निज्जरिंसु तं वेदेंसु ? णो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'जं वेदेंसु नो तं निज्जरेंसु, जं निज्जरेंसु नो तं वेदेंसु' ? गोयमा ! कम्मं वेदेंसु, नोकम्मं निज्जरिंसु, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेंसु। १४. नेरतिया णं भंते ! जं वेदेंसु तं निज्जरिंसु ? एवं नेरइया वि। १५. एवं जाव वेमाणिया। [सु. १६-१९. वेदिज्जमाण-निज्जरिज्जमाणाण वेदिस्समाण-निज्जरिस्समाणाण य ओह-विभागओ पुहत्तपरूवणा] १६. (१) से नूणं भंते ! जं वेदेंति तं निज्जरेंति, जं निज्जरेंति तं वेदेंति ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति जाव 'नो तं वेदेंति' ? गोयमा ! कम्मं वेदेंति, नोकम्मं निज्जरेंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेंति। १७. एवं नेरइया वि जाव वेमाणिया। १८. (१) से नूणं भंते ! जं वेदिस्संति तं निज्जरिस्संति ? जं निज्जरिस्संति तं वेदिस्संति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं जाव 'णो तं वेदिस्संति' ? गोयमा ! कम्मं वेदिस्संति, नोकम्मं निज्जरिस्संति। से तेणट्ठेणं जाव नो तं निज्जरि(वेदि)स्संति। १९. एवं नेरतिया वि जाव वेमाणिया। [सु. २०-२२. वेदणासमय-निज्जरासमयाणं ओह-विभागओ पुहत्तपरूवणा] २०. (१) से णूणं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए, जे निज्जरासमए से वेदणासमए ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'जे वेदणासमए न से णिज्जरासमए, जे निज्जरासमए न से वेदणासमए' ? गोयमा ! जं समयं वेदेंति नो तं समयं निज्जरेंति, जं समयं निज्जरेंति नो तं समयं वेदेंति; अन्नम्मि समए वेदेंति, अन्नम्मि समए निज्जरेंति; अन्ने से वेदणासमए, अन्ने से निज्जरासमए। से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए। २१. १ नेरतियाणं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए से वेदणासमए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'नेरइयाणं जे वेदणासमए न से निज्जरासमए, जे निज्जरासमए न से वेदणासमए ?' गोयमा ! नेरइया णं जं समयं वेदेंति णो तं समयं निज्जरेंति, जं समयं निज्जरेंति नो तं समयं वेदेंति; अन्नम्मि समए वेदेंति, अन्नम्मि समए निज्जरेंति; अन्ने से वेदणासमए, अन्ने से निज्जरासमए। से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए। २२. एवं जाव वेमाणियाणं। [सु. २३-२४. चउवीसदंडएसु सासयत्त-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असासयत्तपरूवणा] २३. (१) नेरतिया भंते ! किं सासया, असासया ? गोयमा ! सिय सासया, सिय असासया। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'नेरतिया सिय सासया, सिय असासया' ? गोयमा ! अव्वोच्छित्तिनयट्ठताए सासया, वोच्छित्तिणयट्ठयाए असासया। से तेणट्ठेणं जाव सिय असासया। २४. एवं जाव वेमाणियाणं जाव सिय असासया। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ।☆☆☆ **सत्तमसतस्स ततिउद्देसो ॥७.३॥ चउत्थो उद्देसो 'जीवा'** ☆☆☆ [सु. १. चउत्थुद्देसस्स उवुग्घाओ] १. रायगिहे नगरे जाव एवं वदासी [सु. २. छव्विहसंसारसमावन्नजीववत्तव्वयाजाणणत्थं जीवाभिगमसुत्तनिद्देसो] २. कतिविहा णं भंते ! संसारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! छव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा-पुढविकाइया एवं जहा जीवाभिगमे जाव सम्मत्तकिरियं वा मिच्छत्तकिरियं वा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥☆☆☆ **सत्तमसयस्स चउत्थो ॥७.४॥ पंचमो उद्देसो 'पक्खी'**☆☆☆ [सु. १. पंचमुद्देसस्स उवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वदासी [सु. २. खहयरपंचेंदियजोणीसंगहवत्तव्वयाजाणणत्थं जीवाभिगमसुत्तनिद्देसो] २. खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! कतिविहे जोणीसंगहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोणीसंगहे पण्णत्ते, तं जहा-अंडया पोयया सम्मुच्छिमा। एवं जहा जीवाभिगमे जाव नो चेव णं ते विमाणे वीतीवएज्जा। एमहालया णं गोयमा ! ते विमाणा पण्णत्ता। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ।☆☆☆ **सत्तमसतस्स पंचमोद्देसो ॥७.५॥ छट्ठो उद्देसो 'आउ'** ☆☆☆ [सु. १. छट्ठुद्देसस्स उवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वदासी [सु. २-४. चउवीसदंडएसु भवियं जीवं पडुच्च इहगत-उववज्जमाण-उववन्नविवक्खाए आउयबंधवत्तव्वया] २. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगते नेरतियाउयं पकरेति ? उववज्जमाणे नेरतियाउयं पकरेति ? उववन्ने नेरइयाउयं पकरेति ? गोयमा ! इहगते नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ। ३. एवं असुरकुमारेसु वि। ४. एवं जाव वेमाणिएसु। [सु. ५-६. चउवीसदंडएसु भवियं जीवं पडुच्च इहगत-उववज्जमाण-उववन्नविवक्खाए आउयपडिसंवेदणावत्तव्वया] ५. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरतिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगते नेरतियाउयं पडिसंवेदेति ? उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेति ? उववन्ने नेरइयाउयं पडिसंवेदेति ? गोयमा ! णो इहगते नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेति, उववन्ने वि नेरइयाउयं पडिसंवेदेति। ६. एवं जाव वेमाणिएसु। [सु. ७-११. चउवीसदंडएसु भवियं जीवं पडुच्च इहगत-उववज्जमाण-उववन्न-विवक्खाए महावेदणाइवत्तव्वया] ७. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरतिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगते महावेदणे ? उववज्जमाणे महावेदणे ? उववन्ने महावेदणे ? गोयमा ! इहगते सिय महावेयणे, सिय अप्पवेदणे; उववज्जमाणे सिय महावेदणे, सिय अप्पवेदणे; अहे णं उववन्ने भवति ततो पच्छा एगंतदुक्खं वेदणं वेदेति, आहच्च सातं। ८. (१) जीवे णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए पुच्छा। गोयमा ! इहगते सिय महावेदणे, सिय अप्पवेदणे; उववज्जमाणे सिय महावेदणे, सिय अप्पवेदणे; अहे णं उववन्ने भवति ततो पच्छा एगंतसातं वेदणं वेदेति, आहच्च असातं। (२) एवं जाव थणियकुमारेसु। ९. जीवे णं भंते ! जे भविए पुढविकाएसु उववज्जित्तए पुच्छा। गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे, सिय अप्पवेदणे; एवं उववज्जमाणे वि; अहे णं उववन्ने भवति ततो पच्छा वेमाताए वेदणं वेदेति। १०. एवं जाव मणुस्सेसु। ११. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिएसु जहा असुरकुमारेसु (सु.८ १)। [सु. १२-१४. जीव-चउवीसदंडएसु अणाभोगनिव्वत्तियाउयत्तपरूवणा] १२. जीवा णं भंते ! किं आभोगनिव्वत्तियाउया ? अणाभोगनिव्वत्तिताउया ? गोयमा ! नो आभोगनिव्वत्तिताउया, अणाभोगनिव्वत्तिताउया। १३. एवं नेरइया वि। १४. एवं जाव वेमाणिया। [सु. १५-१८. जीव-चउवीसदंडएसु बंधहेउपुव्वयं कक्कसवेयणीयकम्मबंधपरूवणा] १५. अत्थि णं भंते ! जीवाणं कक्कसवेदणिज्जा कम्मा कज्जंति ? हंता, अत्थि। १६. कहं णं भंते ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? गोयमा ! पाणातिवातेणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं, एवं खलु गोयमा ! जीवाणं कक्कसवेदणिज्जा कम्मा कज्जंति। १७. अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? एवं चेव। १८. एवं जाव वेमाणियाणं। [सु. १९-२२. जीव-चउवीसदंडएसु जीव-मणुस्साणं बंधहेउपुव्वयं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकक्कसवेयणीयकम्मबंधपरूवणा] १९. अत्थि णं भंते ! जीवाणं अकक्कसवेदणिज्जा कम्मा कज्जंति ? हंता, अत्थि । २०. कहं णं भंते ! **जीवाणं अकक्कसवेदणिज्जा** कम्मा कज्जंति ? गोयमा ! पाणातिवातवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं कोहविवेगेणं जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगेणं, एवं खलु गोयमा ! **जीवाणं अकक्कसवेदणिज्जा** कम्मा कज्जंति । २१. अत्थि णं भंते ! नेरतियाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । २२. एवं जाव वेमाणिया । नवरं मणुस्साणं जहा जीवाणं (सु. १९) । [सु. २३-२६. जीव-चउवीसदंडएसु बंधहेउपुव्वयं सातावेदणिज्जकम्मबंधपरूवणा] २३. अत्थि णं भंते ! जीवाणं सातावेदणिज्जा कम्मा कज्जंति ? हंता, अत्थि । २४. कहं णं भंते ! जीवाणं सातावेदणिज्जा कम्मा कज्जंति ? गोयमा ! पाणाणुकंपाए भूयाणुकंपाए जीवाणुकंपाए सत्ताणुकंपाए, बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए अपरितावणयाए; एवं खलु गोयमा ! जीवाणं सातावेदणिज्जा कम्मा कज्जंति । २५. एवं नेरतियाण वि । २६. एवं जाव वेमाणियाणं । [सु. २७-३०. जीव-चउवीसदंडएसु बंधहेउपुव्वयं असातावेदणिज्जकम्मबंधपरूवणा] २७. अत्थि णं भंते ! जीवाणं असातावेदणिज्जा कम्मा कज्जंति ? हंता, अत्थि । २८. कहं णं भंते ! जीवाणं अस्सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? गोयमा ! परदुक्खणयाए परसोयणयाए परजूरणयाए परतिप्पणयाए परपिट्टणयाए परपरितावणयाए, बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं दुक्खणताए सोयणयाए जाव परितावणयाए, एवं खलु गोयमा ! जीवाणं असातावेदणिज्जा कम्मा कज्जंति । २९. एवं नेरतियाण वि । ३०. एवं जाव वेमाणियाणं । [सु. ३१-३३. दूसमदूसमाए समाए भरहवासस्स भरहवासभूमीए भरहवासमणुयाण य आगारभावपडोयारपरूवणा] ३१. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए दुस्समदुस्समाए समाए उत्तमकट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आकारभावपडोयारे भविस्सति ? गोयमा ! काले भविस्सति हाहाभूते भंभाभूए कोलाहलभूते, समयाणुभावेण य णं खरफरुसधूलिमइला दुव्विसहा वाउला भयंकरा वाता संवट्टगा य वाइंति, इह अभिक्खं धूमाहिंति य दिसा समंता रयस्सला रेणुकलुसतमपडलनिरालोगा, समयलुक्खयाए य णं अहियं चंदा सीतं मोच्छंति, अहियं सूरिया तवइस्संति, अदुत्तरं च णं अभिक्खणं बहवे अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा खत्तमेहा अग्गिमेहा विज्जुमेहा असणिमेहा अपिबणिज्जोदगा वाहिरोगवेदणोदीरणापरिणामसलिला अमणुण्णपाणियगा चंडानिलपहयतिक्खधारानिवायपउरं वासं वासिहिंति । जेणं भारहे वासे गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणाऽऽसमगतं जणवयं, चउप्पयगवेलए खहयरे य पक्खिसंघे, गामाऽरण्णपयारनिरए तसे य पाणे बहुप्पगारे, रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वग-हरितोसहि-पवालंकुरमादीए य तणवणस्सतिकाइए विद्धंसेहिंति । पव्वय-गिरि-डोंगरुत्थल-भट्टिमादीए य वेयड्ढगिरिवज्जे विरावेहिंति । सलिलबिल-गड्ड-दुग्ग-विसमनिण्णुन्नताइं गंगा-सिंधू-वज्जाइं समीकरेहिंति । ३२. तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स भूमीए केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सति ? गोयमा ! भूमी भविस्सति इंगालभूता मुम्मुरभूता छारियभूता तत्तकवेल्लयभूया तत्तसमजोतिभूया धूलिबहुला रेणुबहुला पंकबहुला पणगबहुला चलणिबहुला, बहूणं धरणिगोयराणं सत्ताणं दुनिक्कमा यावि भविस्सति । ३३. तीसे णं भंते ! समाए भारहे वासे मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सति ? गोयमा ! मणुया भविस्संतिं दुरूवा दुव्वण्णा दुगंधा दूरसा दूफासा, अणिट्ठा अकंता जाव अमणामा, हीणस्सरा दीणस्सरा अणिट्ठस्सरा जाव अमणामस्सरा, अणादिज्जवयण-पच्चायाता निल्लज्जा कूड-कवड-कलह -वह बंध -वेर -निरया मज्जादातिक्कमप्पहाणा अकज्जनिच्चुज्जता गरुनियोगविणयरहिता य विकलरूवा परूढनह -केस -मंसुरोमा काला खरफरुसझामवण्णा फुट्टसिरा कविलपलियकेसा बहुण्हारुसंपिणद्धदुद्दंसणिज्जरूवा संकुडियवलीतरंगपरि वेढियंगमंगा जरापरिणत व्व थेरागनरा पविरलपरिसडियदंतसेढी उब्भडघडमुहा विसमनयणा वंकनासा वंकवलीविगतभेसणमुहा कच्छूकसराभिभूता खरतिक्खनक्खकंडूइयविक्खयतणू दद्द-किडिभ-सिज्झफुडियफरूसच्छवी चित्तलंगा टोलगति -विसमसंधिबंधणउक्कुडु अट्ठिगविभत्तदुब्बलकुसंघयणकुप्पमाणकुसंठिता कुरूवा कुट्ठाणासणकुसेज्जकुभोइणो असुइणो अणेगवाहिपरिपीलियंगमंगा खलंतविब्भलगती निरुच्छाहा सत्तपरिवज्जिया विगतचेट्ठनट्ठतेया अभिक्खणं सीय -उण्ह -खर -फरुस -वातविज्झडियमलिणपंसुरउग्गुंडितंगमंगा बहुकोह -माण -माया बहुलोभा असुहदुक्खभागी ओसन्नं धम्मसण्णा -सम्मत्तपरिब्भट्ठा उक्कोसेणं रयणिपमाणमेत्ता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोलसवीसतिवासपरमाउसा पुत्त -णत्तुपरियालपणयबहुला गंगा -सिंधूओ महानदीओ वेयड्ढं च पव्वयं निस्साए बहुत्तरि णिगोदा बीयं बीयामेत्ता बिलवासिणो भविस्संति। [सु. ३४. दूसमदूसमाए भरहवासमणुयाणं आहारपरूवणा] ३४. ते णं भंते ! मणुया कमाहारमाहारेहिंति ? गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं गंगा -सिंधूओ महानदीओ रहपहवित्थाराओ अक्खसोतप्पमाणमित्तं जलं वोज्झिहिंति, से वि य णं जले बहुमच्छ-कच्छभाइण्णे च्चेव णं आउबहुले भविस्सति। तए णं ते मणुया सूरोग्गमणमुहुत्तंसि य सूरत्थमणमुहुत्तंसि य बिलेहिंतो निद्धाहिंति, बिलेहिंतो निद्धाइत्ता मच्छ-कच्छभे थलाइं गाहेहिंति, मच्छ-कच्छभे थलाइं गाहेत्ता सीतातवतत्तएहिं मच्छ-कच्छएहिं एक्कवीसं वाससहस्साइं वित्तिं कप्पेमाणा विहरिस्संति। [सु. ३५-३७. दूसमदूसमाए समाए भरहवासमणुय -सीहादि -ढंकादीणं जम्मंतरगइपरूवणा] ३५. ते णं भंते ! मणुया निस्सीला णिग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा उस्सन्नं मंसाहारा मच्छहारा खोद्दाहारा कुणिमाहारा कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिंति ? कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा ! ओसन्नं नरग -तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति। ३६. ते णं भंते ! सीहा वग्घा विगा दीविया अच्छा तरच्छा परस्सरा णिस्सीला तहेव जाव कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा ! ओसन्नं नरग -तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति। ३७. ते णं भंते ! ढंका कंका विलका मद्दुगा सिही णिस्सीला तहेव जाव ओसन्नं नरग- तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆॥ **सत्तमसतस्स छट्ठो उद्देसो ॥७.६॥ सत्तमो उद्देसो 'अणगार'☆☆☆** [सु. १. संवुडस्स अणगारस्स किरियापरूवणा] १. (१) संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स जाव आउत्तं तुयट्टमाणस्स, आउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गिण्हमाणस्स वा निक्खिवमाणस्स वा, तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जति ? संपराइया किरिया कज्जति ? गोतमा ! संवुडस्स णं अणगारस्स जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जति, णो संपराइया किरिया कज्जति। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'संवुडस्स णं जाव नो संपराइया किरिया कज्जति' ? गोयमा ! जस्स णं कोह -माण -माया -लोभा वोच्छिन्ना भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जति तहेव जाव उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जति, से णं अहासुत्तमेव रीयति; से तेणट्ठेणं गोतमा ! जाव नो संपराइया किरिया कज्जति। [सु. २-११. कामभोगाणं रूवित्त-सचित्ताचित्तत्त-जीवाजीवत्तपरूवणा जीवनिस्सियत्तं भेयपरूवणा य।] २. रूवी भंते ! कामा ? अरूवी कामा ? गोयमा ! रूवी कामा समणा उसो !, नो अरूवी कामा। ३. सचित्ता भंते ! कामा ? अचित्ता कामा ? गोयमा ! सचित्ता वि कामा, अचित्ता वि कामा। ४. जीवा भंते ! कामा ? अजीवा कामा ? गोतमा ! जीवा वि कामा, अजीवा वि कामा। ५. जीवाणं भंते ! कामा अजीवाणं कामा ? गोयमा ! जीवाणं कामा, नो अजीवाणं कामा। ६. कतिविहा णं भंते ! कामा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा कामा पण्णत्ता, तं जहा सद्दा य, रूवा य। ७. रूवी भंते ! भोगा ? अरूवी भोगा ? गोयमा ! रूवी भोगा, नो अरूवी भोगा। ८. सचित्ता भंते ! भोगा ? अचित्ता भोगा ? गोयमा ! सचित्ता वि भोगा, अचित्ता वि भोगा। ९. जीवा भंते ! भोगा ?० पुच्छा। गोयमा ! जीवा वि भोगा, अजीवा वि भोगा। १०. जीवाणं भंते ! भोगा ? अजीवाणं भोगा ? गोयमा ! जीवाणं भोगा, नो अजीवाणं भोगा। ११. कतिविहा णं भंते ! भोगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा भोगा पण्णत्ता, तं जहा गंधा, रसा, फासा। [सु. १२. कामभोगाणं पंचभेयपरूवणं] १२. कतिविहा णं भंते ! कामभोगा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा कामभोगा पण्णत्ता, तं जहा सद्दा रूवा गंधा रसा फासा। [सु. १३-१८. जीव -चउवीसदंडएसु कामित्त -भोगित्तवत्तव्वया] १३. (१) जीवा णं भंते ! किं कामी ? भोगी ? गोयमा ! जीवा कामी वि, भोगी वि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'जीवा कामी वि, भोगी वि' ? गोयमा ! सोइंदिय -चक्खिंदियाइं पडुच्च कामी, घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासंदियाइं पडुच्च भोगी। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव भोगी वि। १४. नेरइया णं भंते ! किं कामी ? भोगी ? एवं चेव। १५. एवं जाव थणियकुमारा। १६. (१) पुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! पुढविकाइया नो कामी, भोगी। (२) से केणट्ठेणं जाव भोगी ? गोयमा ! फासिंदियं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव भोगी। (३) एवं जाव वणस्सतिकाइया। १७. (१) बेइंदिया एवं चेव। नवरं जिब्भिंदिय -फासिंदियाइं पडुच्च। (२) तेइंदिया वि एवं चेव। नवरं घाणिंदिय -जिब्भिंदिय -फासिंदियाइं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडुच्च। (३) चउरिंदियाणं पुच्छा। गोयमा ! चउरिंदिया कामी वि भोगी वि। से केणट्ठेणं जाव भोगा वि ? गोयमा ! चक्खिंदियं पडुच्च कामी, घाणिंदियजिब्भिंदिय-फासिंदियाइं पडुच्च भोगी। से तेणट्ठेणं जाव भोगी वि। १८. अवसेसा जहा जीवा जाव वेमाणिया। [सु. १९. कामभोगि-नोकामि-नोभोगि-भोगीणं जीवाणमप्पाबहुयं] १९. एतेसि णं भंते ! जीवाणं कामभोगीणं, नोकामीणं, नोभोगीणं, भोगीण य कतरे कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा कामभोगी, नोकामी नोभोगी अणंतगुणा, भोगी अणंतगुणा। [सु. २०-२३. भवियदेव-भवियआहोहिय-भवियपरमाहोहिय-भवियकेवलीणं खीणदेहाणं मणुस्साणं भोगित्तपरूवणा] २० छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से जे भविए अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जित्तए, से नूणं भंते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेणं कम्मेणं बलेणं वीरिएणं पुरिसक्कारपरक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, से नूणं भंते ! एयमट्ठं एवं वयह ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, पभू णं से उट्ठाणेण वि कम्मेण वि बलेण वि वीरिएण वि पुरिसक्कारपरक्कमेण वि अन्नयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति। २१. आहोहिए णं भंते ! मणुस्से जे भविए अन्नयरेसु देवलोएसु०, एवं चेव जहा छउमत्थे जाव महापज्जवसाणे भवति। २२. परमाहोहिए णं भंते ! मणुस्से जे भविए तेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्झित्तए जाव अंतं करेत्तए, से नूणं भंते ! से खीणभोगी० सेसं जहा छउमत्थस्स। २३. केवली णं भंते ! मणूसे जे भविए तेणं चेव भवग्गहणेणं० एवं चेव जहा परमाहोहिए जाव महापज्जवसाणे भवति। [सु. २४. असण्णीणं अकामनिकरणवेदणापरूवणा] २४. जे इमे भंते ! असण्णिणो पाणा, तं जहा पुढविकाइया जाव वणस्सतिकाइया छट्ठा य एगइया तसा, एते णं अंधा मूढा तमं पविट्ठा तमपडलमोहजालपलिच्छन्ना अकामनिकरणं वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया ? हंता, गोयमा ! जे इमे असण्णिणो पाणा जाव वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया। [सु. २५-२६. रूवाइदंसणसमत्थस्स वि हेउनिद्देसपुव्वयं अकामनिकरणवेदणापरूवणा] २५. अत्थि णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति ? हंता, गोयमा ! अत्थी। २६. कहं णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति ? गोतमा ! जे णं णोपभू विणा पदीवेणं अंधकारंसि रूवाइं पासित्तए, जे णं नोपभू पुरतो रूवाइं अणिज्झाइत्ताणं पासित्तए, जे णं नोपभू मग्गतो रूवाइं अणवयक्खित्ताणं पासित्तए, जे णं नोपभू पासतो रूवाइं अणवलोएत्ताणं पासित्तए, जे णं नोपभू उड्ढंरूवाइं अणालोएत्ताणं पसित्तए, जे णं नोपभू अहे रूवाइं अणालोएत्ताणं पसित्तए, एस णं गोतमा ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति। [सु. २७-२८. रूवाइदंसणसमत्थस्स वि हेउनिद्देसपुव्वयं पकामनिकरणवेदणपरूवणा] २७. अत्थि णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेति ? हंता, अत्थि। २८. कहं णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेति ? गोयमा ! जे णं नोपभू समुद्दस्स पारं गमित्तए, जे णं नो पभू समुद्दस्स पारगताइं रूवाइं पासित्तए, जे णं नोपभू देवलोगं गमित्तए, जे णं नो पभू देवलोगगताइं रूवाइं पासित्तए एस णं गोयमा ! पभू वि पकामनिकारणं वेदणं वेदेति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆ **॥ सत्तमस्स सत्तमो उद्देसओ समत्तो ॥७.७॥ अट्ठमो उद्देसो 'छउमत्थ'** ☆☆☆

[सु. १. छउमत्थाइ-केवलीणं कमसो असिज्झणाइ-सिज्झणाइपरूवणनिद्देसो] १. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तीयमणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं एवं जहा पढमसते चउत्थे उद्देसए (सु. १२-१८) तहा भाणियव्वं जाव अलमत्थु। [सु. २. हत्थि-कुंथूणं समजीवत्तपरूवणे रायपसेणइज्जसुत्तनिद्देसो] २. से णूणं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे ? हंता, गोयमा ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य एवं जहा रायपसेणइज्जे जाव खुडियं वा, महालियं वा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव समे चेव जीवे। [सु. ३-४. चउवीसदंडएसु पावकम्मकरण-निज्जिणणाइं पडुच्च कमसो दुह-सुहपरूवणं] ३. नेरइयाणं भंते ! पावे कम्मे जे य कडे, जे य कज्जति, जे य कज्जिस्सति सव्वे से दुक्खे ? जे निज्जिण्णे से णं सुहे ? हंता, गोयमा ! नेरइयाणं पावे कम्मे जाव सुहे। ४. एवं जाव वेमाणियाणं। [सु. ५-६. चउवीसदंडएसु दसविहसण्णापरूवणा] ५. कति णं भंते ! सण्णाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा आहारसण्णा १ भयसण्णा २ मेहुणसण्णा ३ परिग्गहसण्णा ४ कोहसण्णा ५ माणसण्णा ६ मायासण्णा ७ लोभसण्णा ८ ओहसण्णा ९ लोगसण्णा १०। ६. एवं जाव वेमाणियाणं। [सु. ७. नेरइएसु दसविहवेयणापरूवणा] ७. नेरइया दसविहं वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा सीतं उसिणं खुहं पिवासं कंडुं परज्झं जरं दाहं भयं सोगं। [सु. ८.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हत्थिकुंथूणं अपच्चक्खाणकिरियाए समाणत्तपरूवणं] ८. (१) से नूण भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समा चेव अप्पक्खाण किरिया कज्जति ? हंता, गोयमा ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य जाव कज्जति । (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव कज्जति ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च । से तेणट्ठेणं जाव कज्जति । [सु. ९. आहाकम्मभोइणो बंधादिपरूवणनिद्देसो] ९. आहाकम्मं णं भंते ! भुंजमाणे किं बंधति ? किं पकरेति ? किं चिणाति ? किं उवचिणाति ? एवं जहा पढमे जहा पढमे सते नवमे उद्देसए (सु. २६) तहा भाणियव्वं जाव सासते पंडिते, पंडितत्तं असासयं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ☆☆☆॥सत्तमसयस्स अट्ठमो उद्देसो ॥७.८॥ ☆☆☆ नवमो उद्देसो 'असंवुड' ☆☆☆ [सु. १-४. असंवुड-संवुडाणं अणगाराणं एगवण्ण-एगरूवाइविकुव्वणावत्तव्वया] १. असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियादिइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे । २. असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले परियादिइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं जाव हंता, पभू। ३. से भंते ! किं इहगते पोग्गले परियादिइत्ता विउव्वइ ? तत्थगए पोग्गले परियादिइत्ता विउव्वइ ? अन्नत्थगए पोग्गले परियादिइत्ता विउव्वइ ? गोयमा ! इहगए पोग्गले परियादिइत्ता विकुव्वइ, नो तत्थगए पोग्गले परियादिइत्ता विकुव्वइ, नो अन्नत्थगए पोग्गले जाव विकुव्वइ। ४. (१) एवं एगवण्णं अणेगरूवं चउभंगो जहा छट्ठसए नवमे उद्देसए (सु. ५) तहा इहावि भाणियव्वं। नवरं अणगारे इहगए इहगए चेव पोग्गले परियादिइत्ता विकुव्वइ। सेसं तं चेव जाव लुक्खपोग्गलं निद्धपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ? हंता, पभू। (२) से भंते ! किं इहगए पोग्गले परियादिइत्ता जाव (सु. ३.)नो अन्नत्थगए पोग्गले परियादिइत्ता विकुव्वइ। [सु. ५. महासिलाकंटयसंगामे कोणियस्स जयो] ५. णायमेतं अरहता, सुयमेतं अरहया, विण्णायमेतं अरहया, महासिलाकंटए संगामे महासिलाकंटए संगामे। महासिलाकंटए णं भंते ! संगामे वट्टमाणे के जयित्था ? के पराजइत्था ? गोयमा ! वज्जी विदेहपुत्ते जइत्था, नव मल्लई नव लेच्छई कासी-कोसलगा-अट्ठारस वि गणरायाणो पराजइत्था। [सु. ६-१३. महासिलाकंटगसंगामस्स सवित्थरं वण्णणं] ६. तए णं कूणिए राया महासिलाकंटगं संगामं उवट्ठितं जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उदाइं हत्थिरायं परिकप्पेह, हय-गय-रह-जोहकलियं चातुरंगिणिं सेणं सन्नाहेह, सन्नाहेत्ता जाव मम एतमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह। ७. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कूणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव अंजलिं कट्टु 'एवं सामी ! तह'त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव छेयायरियोवएसमतिकप्पणाविकप्पेहिं सुनिउणेहिं एवं जहा उववातिए जाव भीमं संगामियं अउज्झं उदाइं हत्थिरायं परिकप्पेंति हय-गय जाव सन्नाहेंति, सन्नाहित्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवा०, तेणेव २ करयल० कूणियस्स रण्णो तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति। ८. तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवा०, २ चा मज्जणघरं अणुप्पविसति, मज्जण०२ ण्हाते कतबलिकम्मे कयकोतुयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सन्नद्धबद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टिए पिणद्धगेवेज्जविमलवरबद्धचिंधपट्टे गहियायुहप्पहरणे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीइतंगे मंगलजयसद्दकतालोए एवं जहा उववातिए जाव उवागच्छित्ता उदाइं हत्थिरायं दुरूढे। ९. तए णं से कूणिए नरिंदे हारोत्थयसुकयरतियवच्छे जहा उववातिए जाव सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं उद्धुव्वामाणीहिं हय-गय-रह-पवरजोहकलिताए चातुरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महया भडचडगरवंदपरिक्खित्ते जेणेव महासिलाकंटए संगामे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता महासिलाकंटयं संगामं ओयाए, पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एगं महं अभेज्जकवयं वइरपडिरूवगं विउव्वित्ताणं चिट्ठति। एवं खलु दो इंदा संगामं संगामेंति, तं जहा देविंदे य मणुइंदे य, एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया पराजिणित्तए। १०. तए णं से कूणिए राया महासिलाकंटकं संगामं संगामेमाणे नव मल्लई, नव लेच्छई, कासी कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो हयमहियपवरवीर - घातियविवडियचिंधधय-पडागे किच्छप्पाणगते दिसो दिसिं पडिसेहेत्था। [सु. ११. महासिलाकंटगसंगामसरूवं] ११. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'महासिलाकंटए संगामे महासिलाकंटए संगामे' ? गोयमा ! महासिलाकंटए णं संगामेवट्टमाणे जे तत्थ आसे वा हत्थी वा जोहे वा सारही वा तणेण वा कट्ठेण वा पत्तेण वा सक्कराए वा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिहम्मति सव्वे से जाणति 'महासिलाए अहं अभिहते महासिलाए अहं अभिहते'; से तेणट्ठेणं गोयमा ! महासिलाकंटए संगामे महासिलाकंटए संगामे। [सु. १२-१३. महासिलाकंटगसंगामहताणं मणुस्साणं संखा मरणुत्तरगई य] १२. महासिलाकंटए णं भंते ! संगामे वट्टमाणे कति जणसतसाहस्सीओ वहियाओ ? गोयमा ! चउरासीतिं जणसतसाहस्सीओ वहियाओ। १३. ते णं भंते ! मणुया निस्सीला जाव निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा सारुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसंता कालमासे कालं किच्चा कहिं गता ? कहिं उववन्ना ? गोयमा ! ओसन्नं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववन्ना। [सु. १४. रहमुसलसंगामे कोणियस्स जयो] १४. णायमेतं अरहया, सुतमेतं अरहता, विण्णयमेतं अरहता रहमुसले संगामे रहमुसले संगामे। रहमुसले णं भंते ! संगामे वट्टमाणे के जइत्था ? के पराजइत्था ? गोयमा ! वज्जी विदेहपुत्ते चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया जइत्था, नव मल्लई नव लेच्छई पराजइत्था। [सु. १५-१८. रहमुसलसंगामवण्णणं] १५. तए णं से कूणिए राया रहमुसलं संगामं उवट्ठितं०, सेसं जहा महासिलाकंटए, नवरं भूताणंदे हत्थिराया जाव रहमुसलं संगामं ओयाए, पुरतो य से सक्के देविंदे देवराया। एवं तहेव जाव चिट्ठति, मग्गतो य से चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया एगं महं आयसं किढिणपडिरूवगं विउव्वित्ताणं चिट्ठति, एवं खलु तओ इंदा संगामं संगामेंति, तं जहा-देविंदे मणुइंदे असुरिंदे य। एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया जइत्तए तहेव जाव दिसो दिसिं पडिसेहेत्था। [सु. १६. रहमुसलसंगामसरूवं] १६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'रहमुसले संगामे रहमुसले संगामे' ? गोयमा ! रहमुसले णं संगामे वट्टमाणे एगे रहे अणासए असारहिए अणारोहए समुसले महताजणक्खयं जणवहं जणप्पमद्दं जणसंवट्टकप्पं रुहिरकद्दमं करेमाणे सव्वतो समंता परिधावित्था; से तेणट्ठेणं जाव रहमुसले संगामे। [सु. १७-१८. रहमुसलसंगामहताणं मणुस्साणं संखा मरणुत्तरगई य] १७. रहमुसले णं भंते ! संगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ? गोयमा ! छण्णउतिं जणसयसाहस्सीओ वहियाओ। १८. ते णं भंते ! मणुया निस्सीला जाव (सु. १३) उववन्ना ? गोयमा ! तत्थ णं दस साहस्सीओ एगाए मच्छियाए कुच्छिंसि उववन्नाओ, एगे देवलोगेसु उववन्ने, एगे सुकुले पच्चायाते, अवसेसा ओसन्नं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववन्ना। [सु. १९ सक्कदेविंद-चमरकए कोणियसाहिज्जे हेउपरूवणं] १९. कम्हा णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रण्णो साहज्जं दलइत्था ? गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया पुव्वसंगतिए, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया परियायसंगतिए, एवं खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रण्णो साहज्जं दलइत्था। [सु. २०. संगामहतमणुस्ससग्गगमणनिरूवगजणमतनिरासपरूवणे रहमुसलसंगामनिओइयनागनत्तुयवरुणस्स तप्पियवयंसस्स य सवित्थरं जुज्झ-धम्माराहणाइपरूवणं] २०. (१) बहुजणे णं भंते ! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति जाव परूवेतिएवं खलु बहवे मणुस्सा अन्नतरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। से कहमेतं भंते ! एवं ? गोयमा ! जं णं से बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति जाव उववत्तारो भवंति, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि (२) एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वेसाली नामं नगरी होत्था। वण्णओ। तत्थ णं वेसालीए णगरीए वरुणे नामं णागनत्तुएपरिवसति अड्ढे जाव अपरिभूते समणोवासए अभिगतजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति। (३) तए णं से वरुणे णागनत्तुए अन्नया कयाई रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं रहमुसले संगामे आणत्ते समाणे छट्ठभत्तिए, अट्ठमभत्तं अणुवट्टेति, अट्ठमभत्तं अणुवट्टेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वदासी-खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! चातुग्घंट आसरहं जुत्तामेव उवट्ठावेह हय-गय-रहपवर जाव सन्नाहेत्ता मम एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह। (४) तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सच्छत्तं सज्झयं जाव उवट्ठावेंति, हय-गया-रह जाव सन्नाहेंति, सन्नाहित्ता जेणेव वरुणे नागनत्तुए जाव पच्चप्पिणंति। (५) तए णं से वरुणे नागनत्तुए जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति जहा कूणिओ (सु. ८) जाव पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिते सन्नद्धबद्ध० सकोरेंटमल्लदामेणं जाव धरिज्जमाणेणं अणेगगणनायग जाव दूयसंधिवाल० सद्धिं संपरिवुडे मज्जणघरातो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चातुघंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चातुघंटं आसरहं

Jain Education International 2010_03

For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

दुरूहइ, दुरूहित्ता हय -गय -रह जाव संपरिवुडे महता भडचडगर० जाव परिक्खित्ते जेणेव रहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहमुसलं संगामं ओयाते। (६) तए णं से वरुणे णागनत्तुए रहमुसलं संगामं ओयाते समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ-कप्पति मे रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स जे पुव्विं पहणति से पडिहणित्तए, अवसेसे नो कप्पतीति। अयमेतारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता रहमुसलं संगामं संगामेति। (७) तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स एगे पुरिसे सरिसए सरित्तए सरिव्वए सरिसभंडमत्तोवगरणे रहेणं पडिरहं हव्वमागते। (८) तए णं से पुरिसे वरुणं णागणत्तुयं एवं वयासी-पहण भो ! वरुणा ! णागणत्तुया ! पहण भो ! वरुणा ! णागणत्तुया ! । तए णं से वरुणे णागणत्तुए तं पुरिसं एवं वदासि नो खलु मे कप्पति देवाणुप्पिया ! पुव्विं अहयस्स पहणित्तए, तुमं चेव पुव्वं पहणाहि। (९) तए णं से पुरिसे वरुणेणं णागणत्तुएणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसति, परामुसित्ता उसुं परामुसति, उसुं परामुसित्ता ठाणं ठाति, ठाणं ठिच्चा आयतकण्णायतं उसुं करेति, आयतकण्णायतं उसुं करेत्ता वरुणं णागणत्तुयं गाढप्पहारीकरेति। (१०) तए णं से वरुणे णागणत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसति, धणुं परामुसित्ता उसुं परामुसति, उसुं परामुसित्ता, आयतकण्णायतं उसुं करेति, आयतकण्णायतं उसुं करेत्ता तं पुरिसं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियातो ववरोवेति। (११) तए णं से वरुणे नागणत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकते समाणे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु तुरए निगिण्हति, तुरए निगिण्हित्ता रहं परावत्तेइ, २ त्ता रहमुसलातो संगामातो पडिनिक्खमति, रहमुसलाओ संगामातो पडिणिक्खमेत्ता एगंतमंतं अवक्कमति, एगंतमंतं अवक्कमित्ता तुरए निगिण्हति, निगिण्हित्ता रहं ठवेति, २ त्ता रहातो पच्चोरुहति, रहातो पच्चोरुहित्ता रहाओ तुरए मोएति, २ तुरए विसज्जेति, [ग्रं० ४०००] विसज्जित्ता दब्भसंथारगं संथरेति, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरूहति, दब्भसं० दुरूहित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयल जाव कट्टु एवं वयासी नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं। नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आइगरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स। वंदामि णं भगवंतं तत्थगतं इहगते, पासउ मे से भगवं तत्थगते; जाव वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी पुव्विं पि णं मए समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतियं थूलए पाणातिवाते पच्चक्खाए जावज्जीवाए एवं जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाते जावज्जीवाए, इयाणिं पि णं अहं तस्सेव भगवतो महावीरस्स अंतियं सव्वं पाणातिवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, एवं जहा खंदओ (स० २ उ० १ सु० ५०) जाव एतं पि णं चरिमेहिं उस्सास -णिस्सासेहिं 'वोसिरिस्सामि' त्ति कट्टु सन्नाहपट्टं मुयति, सन्नाहपट्टं मुइत्ता सल्लुद्धरणं करेति, सल्लुद्धरणं करेत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगते। (१२) तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स एगे पियबालवयंसए रहमुसलं संगामं संगामेमाणे एगेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे अबले जाव अधारणिज्जमिति कट्टु वरुणं नागनत्तुयं रहमुसलातो संगामातो पडिनिक्खममाणं पासति, तुरए निगिण्हति, तुरए निगिण्हित्ता जहा वरुणे नागनत्तुए जाव तुरए विसज्जेति, विसज्जित्ता दब्भसंथारगं दुरुहति, दब्भसंथारगं दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे जाव अंजलिं कट्टु एवं वदासी जाइं णं भंते ! मम पियबालवयंसस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स सीलाइं वताइं गुणाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणपोसहोववासाइं ताइं णं ममं पि भवंतु त्ति कट्टु सन्नाहपट्टं मुयइ, सन्नाहपट्टं मुइत्ता सल्लुद्धरणं करेति, सल्लुद्धरणं करेत्ता आणुपुव्वीए कालगते। (१३) तए णं तं वरुणं नागणत्तुयं कालगयं जाणित्ता अहासन्निहितेहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं दिव्वे सुरभिगंधोदगवासे वुट्ठे, दसद्धवण्णे कुसुमे निवाडिए, दिव्वे य गीयगंधव्वनिनादे कते यावि होत्था। (१४) तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभागं सुणित्ता य पासित्ता य बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेति. एवं खलु देवाणुप्पिया ! बहवे मणुस्सा जाव उववत्तारो भवंति''। [सु. २१-२२. सोहम्मकप्पोववन्नस्स नागनत्तुयवरुणस्स चवणाणंतरं महाविदेहे सिज्झणा] २१. वरुणे णं भंते ! नागनत्तुए कालमासे कालं किच्चा कहिं गते ? कहिं उववन्ने ? गोयमा ! सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं वरुणस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। २२. से णं भंते ! वरुणे देवे ताओ देवलोगातो आउक्खएणं

भवक्खएणं ठितिक्खएणं० ? जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति। [सु. २३-२४. वरुणपियवयंसस्स सुकुलुप्पत्तिकमेण सिज्झणापरूवणा] २३. वरुणस्स णं भंते ! णागणत्तुयस्स पियबालवयंसए कालमासे कालं किच्चा कहिं गते ? कहिं उववन्ने ? गोयमा ! सुकुले पच्चायाते। २४. से णं भंते ! ततोहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ! ☆☆☆ **सत्तमस्स नवमो उद्देसो ॥७.९॥** **दसमो उद्देसो 'अन्नउत्थि'** ☆☆☆ [सु. १-६. कालोदाइपमुहअन्नउत्थियमिहोकहागए णातपुत्तपरूवियपंचत्थिकायसरूवसंदेहे गोयमकयं समाहाणं] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था। वण्णओ। गुणसिलए चेइए। वण्णओ। जाव पुढविसिलापट्टए। वण्णओ। २. तस्स णं गुणसिलयस्स चेतियस्स अदूरसामंते बहवे अन्नउत्थिया परिवसंति; तं जहा कालोदाई सेलोदाई सेवालोदाई उदए णामुदए नम्मुदए अन्नवालए सेलबालए सुहत्थी गाहावई। ३. तए णं तेसिं अन्नउत्थियाणं अन्नया कयाई एगयओ सहियाणं समुवागताणं सन्निविट्ठाणं सन्निसण्णाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था "एवं खलु समणे णातपुत्ते पंच अत्थिकाए पण्णवेति, तं जहा धम्मत्थिकायं जाव आगासत्थिकायं। तत्थ णं समणे णातपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पण्णवेति, तं० धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं पोग्गलत्थिकायं। एगं च समणे णायपुत्ते जीवत्थिकायं अरूविकायं जीवकायं पन्नवेति। तत्थ णं समणे णायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पन्नवेति, तं जहा धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं जीवत्थिकायं। एगं च णं समणे णायपुत्ते पोग्गलत्थिकायं रूविकायं अजीवकायं पन्नवेति। से कहमेतं मन्ने एवं ?। ४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणेभगवं महावीरे जाव गुणसिलए समोसढे जाव परिसा पडिगता। ५, तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवतो महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती णामं अणगारे गोतमगोत्ते णं एवं जहा बितियसते नियंठुद्देसए (स० २ उ० ५ सु० २१-२३) जाव भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्त-पाणं पडिग्गहित्ता रायगिहातो जाव अतुरियमचवलमसंभंते जाव रियं सोहेमाणे सोहेमाणे तेसिं अन्नउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीइवयति। ६. (१) तए णं ते अन्नउत्थिया भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं पासंति, पासेत्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति, अन्नमन्नं सद्दावेत्ता एवं वयासी "एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमा कहा अविप्पकडा, अयं च णं गोतमे अम्हं अदूरसामंतेणं वीतीवयति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं गोतमं एयमट्ठं पुच्छित्तए" त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जेणेव भगवं गोतमे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता भगवं गोतमं एवं वदासी एवं खलु गोयमा ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे णायपुत्ते पंच अत्थिकाए पण्णवेति, तं जहा धम्मत्थिकायं जाव आगासत्थिकायं, तं चेव जाव रूविकायं अजीवकायं पण्णवेति, से कहमेयं भंते ! गोयमा ! एवं ? (२) तए णं से भगवं गोतमे ते अन्नउत्थिए एवं वयासी "नो खलु वयं देवाणुप्पिया ! अत्थिभावं 'नत्थि' त्ति वदामो, नत्थिभावं 'अत्थि'त्ति वदामो। अम्हे णं देवाणुप्पिया ! सव्वं अत्थिभावं 'अत्थी'ति वदामो, सव्वं नत्थिभावं 'नत्थी'ति वदामो। तं चेदसा खलु तुब्भे देवाणुप्पिया ! एतमट्ठं सयमेव पच्चुविक्खह" त्ति कट्टु ते अन्नउत्थिए एवं वदति। एवं वदित्ता जेणेव गुणसिलए चेतिए जेणेव समणे० एवं जहा नियंठुद्देसए (स० २ उ० ५ सु० २५ १) जाव भत्त-पाणं पडिदंसेति, भत्त-पाणं पडिदंसेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने जाव पज्जुवासति। [सु. ७-११. कालोदाइकयाए पंचत्थिकायसंबंधियविविहपुच्छाए णातपुत्तकयं समाहाणं] ७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे महाकहापडिवन्ने यावि होत्था, कालोदाई य तं देसं हव्वमागए। ८. 'कालोदाई'ति समणे भगवं महावीरे कालोदाइं एवं वदासी "से नूणं ते कालोदाई ! अन्नया कयाई एगयओ सहियाणं समुवागताणं सन्निविट्ठाणं तहेव (सु. ३) जाव से कहमेतं मन्ने एवं ? से नूणं कालोदाई ! अत्थे समट्ठे ? हंता, अत्थि। तं सच्चे णं एसमट्ठे कालोदाई !, अहं पंच अत्थिकाए पण्णवेमि, तं जहा धम्मत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकायं। तत्थ णं अहं चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पण्णवेमि तहेव जाव एगं च णं अहं पोग्गलत्थिकायं रूविकायं पण्णवेमि"। ९. तए णं से कालोदाई समणं भगवं महावीरं एवं

Jain Education International 2010_03 For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वदासी एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकायंसि अधम्मत्थिकायंसि आगासत्थिकायंसि अरूविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीदित्तए वा तुयट्टित्तए वा ? णो इणट्ठे समट्ठे कालोदाई ! । एगंसि णं पोग्गलत्थिकायंसि रूविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा सइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा । १०. एयंसि णं भंते ! पोग्गलत्थिकायंसि रूविकायंसि अजीवकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? णो इणट्ठे समट्ठे कालोदाई ! । ११. एयंसि णं जीवत्थिकायंसि अरूविकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? हंता, कज्जंति । [सु. १२. कालोदाइस्स निग्गंथपव्वज्जागहणं विहरणं च] १२. एत्थ णं से कालोदाई संबुद्धे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए धम्मं निसामित्तए एवं जहा खंदए (स० २ उ० १ सु० ३२-४५) तहेव पव्वइए, तहेव एक्कारस अंगाइं जाव विहरति । [सु. १३. भगवओ महावीरस्स जणवयविहारो] १३. तए णं समणे भगवं महवीरे अन्नया कयाइं रायगिहातो णगरातो गुणसिल० पडिनिक्खमति, २ बहिया जणवयविहारं विहरइ । [सु. १४-१८. कालोदाइकयाए पावकम्म-कल्लाणकम्मफलविवागपुच्छाए भगवओ समाहाणं] १४. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे, गुणसिलए चेइए ।.तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ जाव समोसढे, परिसा जाव पडिगता । १५. तए णं से कालोदाई अणगारे अन्नया कयाई जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासि अत्थि णं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? हंता, अत्थि । १६. कहं णं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्णं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाकुलं विससंमिस्सं भोयणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाते भद्दए भवति, ततो पच्छा परिणममाणे परिणममाणे दुरूवत्ताए दुग्गंधत्ताए जहा महस्सवए (सु. ६ उ० ३ सु० २ १)जाव भुज्जो भुज्जो परिणमति, एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, तस्स णं आवाते भद्दए भवइ, ततो पच्छा परिणममाणे परिणममाणे दुरूवत्ताए जाव भुज्जोभुज्जो परिणमति, एवं खलु कालोदाई ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवाग० जाव कज्जंति । १७. अत्थि णं भंते ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा कल्लाणफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? हंता, कज्जंति । १८. कहं णं भंते ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा जाव कज्जंति ? कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्णं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाकुलं ओसहसम्मिस्सं भोयणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाते णो भद्दए भवति, तओ पच्छा परिणममाणे परिणममाणे सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए जाव सुहत्ताए, नो दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमति । एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणातिवातवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे तस्स णं आवाए नो भद्दए भवइ, ततो पच्छा परिणममाणे परिणममाणे सुरूवत्ताए जाव सुहत्ताए, नो दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ; एवं खलु कालोदाई ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा जाव कज्जंति । [सु. १९. कालोदाइकयाए अगणिकायसमारभण-निव्वावण-संबंधियकम्मबंधपुच्छाए भगवओ समाहाणं] १९. (१) दो भंते ! पुरिसा सरिसया जाव सरिसभंडमत्तोवगरणा अन्नमन्नेणं सद्धिं अगणिकायं समारभंति, तत्थ णं एगे पुरिसे अगणिकायं उज्जालेति, एगे पुरिसे अगणिकायं निव्वावेति । एतेसि णं भंते ! दोण्हं पुरिसाणं कतरे पुरिसे महाकम्मतराए चेव, महाकिरियतराए चेव, महासवतराए चेव, महावेदणतराए चेव ? कतरे वा पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेदणतराए चेव ? जे वा से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेति, जे वा से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेति ? कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेति से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव जाव महावेदणतराए चेव । तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेति से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव । (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'तत्थ णं जे से पुरिसे जाव अप्पवेयणतराए चेव' ? कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेति से णं पुरिसे बहुतरागं पुढविकायं समारभति, बहुतरागं आउक्कायं समारभति, अप्पतरागं तेउकायं समारभति, बहुतरागं वाउकायं समारभति, बहुतरागं वण्णस्सतिकायं समारभति, बहुतरागं तसकायं समारभति । तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेति से णं पुरिसे अप्पतरागं पुढविक्कायं समारभति, अप्प० आउ०, बहुतरागं तेउक्कायं समारभति, अप्पतरागं वाउकायं समारभइ, अप्पतरागं वणस्सतिकायं समारभइ, अप्पतरागं तसकायं समारभइ । से तेणट्ठेणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालोदाई ! जाव अप्पवेदणतराए चेव। [सु. २०-२१. कालोदाइकयाए अचित्तपोग्गलावभासण-उज्जोवणसंबंधिय-पुच्छाए भगवओ समाहाणं] २०. अत्थि णं भंते ! अचित्ता वि पोग्गला ओभासेंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति ? हंता, अत्थि। २१. कतरे णं भंते ! ते अचित्ता पोग्गला ओभासंति जाव पभासंति ? कालोदाई ! कुद्धस्स अणगारस्स तेयलेस्सा निसट्ठा समाणी दूरं गंता दूरं निपतति, देसं गंता देसं निपतति, जहिं जहिं च णं सा निपतति तहिं तहिं च णं ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासेंति जाव पभासेंति। एते णं कालोदायी ! ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासेंति जाव पभासेंति। [सु. २२. कालोदाइस्स निव्वाणपरूवणा] २२. तए णं से कालोदाई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठऽट्ठम जाव अप्पाणं भावे माणे जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते (स० १ उ० ९ सु० २४) जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। सत्तमस्स सतस्स दसमो उद्देसो ॥७.१०☆☆☆॥ **सत्तमं सतं समत्तं ॥卐卐卐 अट्ठमं सतं 卐卐卐** [सु. १. अट्ठमस्स सयस्स उद्देसनामपरूवणा] १. पोग्गल १ आसीविस २ रुक्ख ३ किरिय ४ आजीव ५ फासुगमदत्ते ६-७। पडिणीय ८ बंध ९ आराहणा य १० दस अट्ठमम्मि सते ॥१॥ **☆☆☆ पढमो उद्देसो 'पोग्गल'☆☆☆** [सु. २ पढमुद्देसस्स उवुग्घाओ] २. रायगिहे जाव एवं वदासि [सु. ३. पयोग-मीससा-वीससापरिणतभेएहिं पोग्गलाणं भेदत्तयं] ३. कतिविहा णं भंते ! पोग्गला पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा पयोगपरिणता मीससापरिणता वीससापरिणता। [सु. ४-४६. पयोगपरिणताणं पोग्गलाणं इंदियभेयाइअणेगपगारेहिं वित्थरओ णवदंडगमया भेय-पभेयपरूवणा] ४. पयोगपरिणता णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा एगिंदियपयोगपरिणता बेइंदियपयोगपरिणता जाव पंचिंदियपयोगपरिणता। ५. एगिंदियपयोगपरिणता णं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा, तं जहा पुढविक्काइयएगिंदियपयोगपरिणता जाव वणस्सतिकाइयएगिंदियपयोगपरिणता। ६. (१) पुढविक्काइयएगिंदियपयोगपरिणता णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा सुहुमपुढविक्काइयएगिंदियपयोगपरिणता य बादरपुढविक्काइयएगिंदियपयोगपरिणता य। (२) आउक्काइयएगिंदियपयोगपरिणता एवं चेव। (३) एवं दुयओ भेदो जाव वणस्सतिकाइया य। ७. (१) बेइंदियपयोगपरिणताणं पुच्छा। गोयमा ! अणेगविहा पण्णत्ता। (२) एवं तेइंदिय -चउरिंदियपयोगपरिणता वि। ८. पंचिंदियपयोगपरिणताणं पुच्छा। गोयमा ! चतुव्विहा पण्णत्ता, तं जहा नेरत्तियपंचिंदियपयोगपरिणता, तिरिक्ख०, एवं मणुस्स०, देवपंचिंदिय०। ९. नेरइयपंचिंदियपयोग० पुच्छा। गोयमा ! सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा रतणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणता वि जाव अहेसत्तमपुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणता वि। १०. (१) तिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणताणं पुच्छा। गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा जलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिय० थलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदिय० खहचरतिरिक्खपंचिंदिय०। (२) जलचरतिरिक्खजोणियपओग० पुच्छा। गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा सम्मुच्छिमजलचर०, गब्भवक्कंतियजलचर०। (३) थलचरतिरिक्ख० पुच्छा। गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा चउप्पदथलचर० परिसप्पथलचर०। (४) चउप्पदथचर० पुच्छा। गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा सम्मुच्छिमचउप्पदथलचर०, गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयर०। (५) एवं एतेणं अभिलावेणं परिसप्पा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा उरपरिसप्पा य, भुयपरिसप्पा य। (६) उरपरिसप्पा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा सम्मुच्छिमा य, गब्भवक्कंतिया य। (७) एवं भुयपरिसप्पा वि। (८) एवं खहचरा वि। ११. मणुस्सपंचिंदियपयोग० पुच्छा। गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा सम्मुच्छिममणुस्स० गब्भवक्कंतियमणुस्स०। १२. देवपंचिंदियपयोग० पुच्छा। गोयमा ! चउव्विहा पन्नत्ता, तं जहा भवणवासिदेवपंचिंदियपयोग० एवं जाव वेमाणिया। १३. भवणवासिदेवपंचिंदिय० पुच्छा। गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तं जहा असुरकुमार० जाव थणियकुमार०। १४. एवं एतेणं अभिलावेणं अट्ठविहा वाणमंतरा पिसाया जाव गंधव्वा। १५. जोइसिया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा चंदविमाणजोतिसिय० जाव ताराविमाणजोतिसियदेव०। १६. (१) वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा कप्पोवग० कप्पातीतगवेमाणिय०। (२) कप्पोवगा दुवालसविहा पण्णत्ता, तं जहा सोहम्मकप्पोवग० जाव अच्चुयकप्पोवगवेमाणिया।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३) कप्पातीत० दुविहा पण्णत्ता, तं जहा गेवेज्जगकप्पातीतवे० अणुत्तरोववाइयकप्पातीतवे०। (४) गेवेज्जगकप्पातीतगा नवविहा पण्णत्ता, तं जहा हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगकप्पातीतगा जाव उवरिमउवरिमगेविज्जगकप्पातीतया। (५) अणुत्तरोववाइयकप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिंदियपयोगपरिणया णं भंते! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता? गोयमा! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा विजय-अणुत्तरोववाइय० जाव परिणया जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिंदिय जाव परिणता। १७. (१) सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया णं भंते! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता । केई अपज्जत्तगं पढमं भणंति, पच्छा पज्जत्तगं। पज्जत्तगसुहुमपुढविकाइय जाव परिणया य अपज्जत्तग सुहुमपुढविकाइय जाव परिणया य। (२) बादरपुढविकाइयएगिंदिय०? एवं चेव। १८. एवं जाव वणस्सइकाइया। एक्केक्का दुविहा सुहुमा य बादरा य, पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणियव्वा। १९. (१) बेंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा। गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा पज्जत्तबेंदियपयोगपरिणया य, अपज्जत्तग जाव परिणया य। (२) एवं तेइंदिया वि। (३) एवं चउरिंदिया वि। २०. (१) रयणप्पभापुढविनेरइय० पुच्छा। गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा पज्जत्तगरयणप्पभापुढवि जाव परिणया य, अपज्जत्तग जाव परिणया य। (२) एवं जाव अहेसत्तमा। २१. (१) सम्मुच्छिमजलचरतिरिक्ख० पुच्छा। गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा पज्जत्तग० अपज्जत्तग०। एवं गब्भवक्कंतिया वि। (२) सम्मुच्छिमचउप्पदथलचर०। एवं चेव। एवं गब्भवक्कंतिया य। (३) एवं जाव सम्मुच्छिमखहयर० गब्भवक्कंतिया य एक्केक्के पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य भाणियव्वा। २२. (१) सम्मुच्छिममणुस्सपंचिंदिय० पुच्छा। गोयमा! एगविहा पन्नत्ता अपज्जत्तगा चेव। (२) गब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदिय० पुच्छा। गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा पज्जत्तगगब्भवक्कंतिया वि, अपज्जत्तगगब्भवक्कंतिया वि। २३. (१) असुरकुमारभवणवासिदेवाणं पुच्छा। गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा पज्जत्तगअसुरकुमार० अपज्जत्तगअसुर०। (२) एवं जाव थणियकुमारा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य। २४. एवं एतेणं अभिलावेणं दुयएणं भेदेणं पिसाया य जाव गंधव्वा, चंदा जाव ताराविमाणा, सोहम्मकप्पोवगा जाव अच्चुओ, हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जकप्पातीत जाव उवरिमउवरिमगेविज्ज०, विजयअणुत्तरो० जाव अपराजिय०। २५. सव्वट्ठसिद्धकप्पातीय० पुच्छा। गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा पज्जत्तगसव्वसिद्धअणुत्तरो० अपज्जत्तगसव्वट्ठ जाव परिणया वि। २ दंडगा। २६. जे अपज्जत्तासुहुमपुढवीकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ते ओरालियतेया-कम्मगसरीरप्पयोगपरिणया, जे पज्जत्तासुहुम० जाव परिणया ते ओरालियतेया-कम्मगसरीरप्पयोगपरिणया। एवं जाव चउरिंदिया पज्जत्ता। नवरं जे पज्जत्तगबादरवाउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ते ओरालिय-वेउव्विय-तेयाकम्मसरीर जाव परिणता। सेसं तं चेव। २७. (१) जे अपज्जत्तरयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते वेउव्विय-तेया-कम्मसरीरपयोगपरिणया। एवं पज्जत्तया वि। (२) एवं जाव अहेसत्तमा। २८. (१) जे अपज्जत्तगसम्मुच्छिमजलचर जाव परिणया ते ओरालियतेया -कम्मासरीर जाव परिणया। एवं पज्जत्तगा वि। (२) गब्भवक्कंतिया अपज्जत्तया एवं चेव। (३) पज्जत्तयाणं एवं चेव, नवरं सरीरगाणि चत्तारि जहा बादरवाउक्काइयाणं पज्जत्तगाणं। (४) एवं जहा जलचरेसु चत्तारि आलावगा भणिया एवं चउप्पदउरपरिसप्प-भुयपरिसप्प-खहयरेसु वि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा। २९. (१) जे सम्मुच्छिममणुस्सपंचिंदियपयोगपरिणया ते ओरालियतेया -कम्मासरीर जाव परिणया। २ एवं गब्भवक्कंतिया वि अप्पज्जत्तगा वि। ३ पज्जत्तगा वि एवं चेव, नवरं सरीरगाणि पंच भाणियव्वाणि। ३०. (१) जे अपज्जत्तगा असुरकुमारभवणवासि जहा नेरइया तहेव। एवं पज्जत्तगा वि। २ एवं दुयएणं भेदेणं जाव थणियकुमारा। ३१. एवं पिसाया जाव गंधव्वा, चंदा जाव ताराविमाणा, सोहम्मो कप्पो जाव अच्चुओ, हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्ज जाव उवरिमउवरिमगेवेज्ज०, विजयअणुत्तरोववाइए जाव सव्वट्ठसिद्धअणु०, एक्केक्केणं दुयओ भेदो भाणियव्वो जाव जे पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइया जाव परिणया ते वेउव्विय-तेया-कम्मासरीरपयोगपरिणया। दंडगा ३। ३२. (१) जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणता ते फासिंदियपयोगपरिणया। (२) जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइया० एवं चेव। (३) जे अपज्जत्ताबादरपुढविक्काइया० एवं चेव। (४) एवं पज्जत्तगा वि। (५) एवं चउक्कएणं भेदेणं जाव वणस्सइकाइया। ३३. (१) जे अपज्जत्ताबेइंदियपयोगपरिणया ते जिब्भिंदिय-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फासिंदियपयोगपरिणया। (२) जे पज्जत्ताबेइंदिया एवं चेव। (३) एवं जाव चउरिंदिया, नवरं एक्केक्कं इंदियं वड्ढेयव्वं। ३४. (१) जे अपज्जतारयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते सोइंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय -जिब्भिंदिय -फासिंदियपयोगपरिणया। (२) एवं पज्जत्तगा वि। ३५. एवं सव्वे भाणियव्वा तिरिक्खजोणिय -मणुस्स -देवा, जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणया ते सोइंदिय -चक्खिंदिय जाव परिणया। [दंडगा] ४। ३६. (१) जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालि-तेय-कम्मास-रीरप्पयोगपरिणया ते फासिंदियपयोगपरिणया। जे पज्जत्तासुहुम० एवं चेव। (२) बादर० अपज्जत्ता एवं चेव। एवं पज्जत्तगा वि। ३७. एवं एएणं अभिलावेणं जस्स जति इंदियाणि सरीराणि य ताणि भाणियव्वाणि जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियवेउव्विय-तेया-कम्मासरीरपयोगपरिणया ते सोइंदिय-चक्खिंदिय जाव फासिंदियपयोगपरिणया। [दंडगा] ५। ३८. (१) जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ते वण्णतो कालवण्णपरिणया वि, नील०, लोहिय०, हालिद्द० सुक्किल। गंधतो सुब्भिगंधपरिणया वि, दुब्भिगंधपरिणया वि। रसतो तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसप०, अंबिलरसप०, महुररससप०। फासतो कक्खडफासपरि० जाव लुक्खफासपरि०। संठाणतो परिमंडलसंठाणपरिणया वि वट्ट० तंस० चउरंस० आयतसंठाणपरिणया वि। २ जे पज्जत्तासुहुमपुढवि० एवं चेव। ३९. एवं जहाऽऽणुपुव्वीए नेयव्वं जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणता ते वण्णतो कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि। [दंडगा] ६। ४०. (१) जे अपज्जत्तासुहुमपुढवि०एगिंदियओरालिय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरि० जाव आययसंठाणपरि० वि। (२) जे पज्जत्तासुहुमपुढवि० एवं चेव। ४१. एवं जहाऽऽणुपुव्वीए नेयव्वं जस्स जति सरीराणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचेंदियवेउव्विय-तेया कम्मासरीर जाव परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि [दंडगा] ७। ४२. (१) जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियफासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया जाव आययसंठाणपरिणया वि। (२) जे पज्जत्तासुहुमपुढवि० एवं चेव। ४३. एवं जहाऽऽणुपुव्वीए जस्स जति इंदियाणि तस्स तति भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तर जाव देवपंचिंदियसोइंदिय जाव फासिंदियपयोगपरिणया वि ते वण्णओ कालवण्णपरिणया जाव आययसंठाणपरिणया वि। [दंडगा] ८। ४४. (१) जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालिय-तेया-कम्मा-सरीरफासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणप० वि। (२) जे पज्जत्तासुहुमपुढवि० एवं चेव। ४५. एवं जहाऽऽणुपुव्वीए जस्स जति सरीराणि इंदियाणि य तस्स तति भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइया जाव देवपंचिंदियवेउव्विय -तेया -कम्मासोइंदिय जाव फासिंदियपयोगपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० जाव आययसंठाणपरिणया वि। एवं एए नव दंडगा ९। [सु. ४६-४७. पयोगपरिणतपोग्गलभेयाइवत्तव्वयाणुसारेण मीससापरिणतपोग्गलभेय-पभेयत्तव्वयानिद्देसो] ४६. मीसापरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा एगिंदियमीसापरिणया जाव पंचिंदियमीसापरिणया। ४७. एगिंदियमीसापरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एवं जहा पओगपरिणएहिं नव दंडगा भणिया एवं मीसापरिणएहि वि नव दंडगा भाणियव्वा, तहेव सव्वं निरवसेसं, नवरं अभिलावो 'मीसापरिणया' भाणियव्वं, सेसं तं चेव, जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरो० जाव आययसंठाणपरिणया वि। [सु. ४८. वीससापरिणतपोग्गलभेय-पभेयपरूवणत्थं पण्णवणासुत्तनिद्देसो] ४८. वीससापरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा वण्णपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया संठाणपरिणया। जे वण्णपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा कालवण्णपरिणया जाव सुक्किलवण्णपरिणया। जे गंधपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा सुब्भिगंधपरिणया वि, दुब्भिगंधपरिणया वि। एवं जहा पण्णवणाए तहेव निरवसेसं जाव जे संठाणओ आयतसंठाणपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव लुक्खफासपरिणया वि। [सु. ४९-७९. विविहभेय-पभेयविभागपुव्वयं एगस्स दव्वस्स पयोग-मीस-वीससापरिणतत्तपरूवणा] ४९. एगे भंते ! दव्वे किं पयोगपरिणए ? मीसापरिणए ? वीससापरिणए ? गोयमा ! पयोगपरिणए वा, मीसापरिणए वा,

वीससापरिणए वा। ५०. जदि पयोगपरिणए किं मणप्पयोगपरिणए ? वइप्पयोगपरिणए ? कायप्पयोगपरिणए ? गोयमा ! मणप्पयोगपरिणए वा, वइप्पयोगपरिणए वा, कायप्पयोगपरिणए वा। ५१. जदि मणप्पओगपरिणए किं सच्चमणप्पओगपरिणए ? मोसमणप्पयोग० ? सच्चामोसमणप्पयो० ? असच्चामोसमणप्पयो० ? गोयमा ! सच्चमणप्पयोगपरिणए वा, मोसमणप्पयोग० वा, सच्चामोसमणप्प०, असच्चामोसमणप्प० वा। ५२. जदि सच्चमणप्पओगप० किं आरंभसच्चमणप्पयो० ? अणारंभसच्चमणप्पयोगपरि० ? सारंभसच्चमणप्पयोग० ? असारंभसच्चमण० ? समारंभसच्चमणप्पयोगपरि० ? असमारंभसच्चमणप्पयोगपरिणए ? गोयमा ! आरंभसच्चमणप्पओगपरिणए वा जाव असमारंभसच्चमणप्पयोगपरिणए वा। ५३. (१) जदि मोसमणप्पयोगपरिणए किं आरंभमोसमणप्पयोगपरिणए वा ? एवं जहा सच्चेणं तहा मोसेण वि। (२) एवं सच्चामोसमणप्पयोगपरिणए वि। एवं असच्चामोसमणप्पयोगेण वि। ५४. जदि वइप्पयोगपरिणए किं सच्चवइप्पयोगपरिणए मोसपप्पयोगपरिणए ? एवं जहा मणप्पयोगपरिणए तहा वयप्पयोगपरिणए वि जाव असमारंभवयप्पयोगपरिणए वा। ५५. जदि कायप्पयोगपरिणए किं ओरालियसरीरकायप्पयोगपरिणए १ ? ओरालियमीसासरीरकायप्पयो० २ ? वेउव्वियसरीरकायप्प० ३ ? वेउव्वियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए ४ ? आहारगसरीरकायप्पओगपरिणए ५ ? आहारकमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए ६ ? कम्मासरीरकायप्पओगपरिणए ७ ? गोयमा ! ओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए वा जाव कम्मासरीरकायप्पओगपरिणए वा। ५६. जदि ओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए किं एगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए एवं जाव पंचिंदियओरालिय जाव परि० ? गोयमा ! एगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए वा बेंदिय जाव परिणए वा जाव पंचिंदिय जाव परिणए वा। ५७. जदि एगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए किं पुढविक्काइयएगिंदिय जाव परिणए जाव वणस्सइकाइयएगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए वा ? गोयमा ! पुढविक्काइयएगिंदिय जाव पयोगपरिणए वा जाव वणस्सइकाइयएगिंदिय जाव परिणए वा। ५८. जदि पुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीर जाव परिणए किं सुहुमपुढविकाइय जाव परिणए ? बादरपुढविक्काइयएगिंदिय जाव परिणए ? गोयमा ! सुहुमपुढविक्काइयएगिंदिय जाव परिणए वा, बादरपुढविक्काइय जाव परिणए वा। ५९. (१) जदि सुहुमपुढविकाइय जाव परिणए किं पज्जत्तसुहुमपुढवि जाव परिणए ? अपज्जत्तसुहुमपुढवी जाव परिणए ? गोयमा ! पज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणए वा, अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणए वा। (२) एवं बादरा वि। (३) एवं जाव वणस्सइकाइयाणं चउक्कओ भेदो। ६०. बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं दुयओ भेदो पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य। ६१. जदि पंचिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए किं तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए ? मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ? गोयमा ! तिरिक्खजोणिय जाव परिणए वा, मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए वा। ६२. जइ तिरिक्खजोणिय जाव परिणए किं जलचरतिरिक्खजोणिय जाव परिणए वा ? थलचर० ? खहचर० ? एवं चउक्कओ भेदो जाव खहचराणं। ६३. जदि मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए किं सम्मुच्छिममणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ? गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए ? गोयमा ! दोसुं वि। ६४. जदि गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए किं पज्जत्तगब्भवक्कंतिय जाव परिणए ? अपज्जत्तगब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरकायप्पयोगपरिणए ? गोयमा ! पज्जत्तगब्भवक्कंतिय जाव परिणए वा, अपज्जत्तगब्भवक्कंतिय जाव परिणए। १। ६५. जदि ओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए किं एगिंदियओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए ? बेइंदिय जाव परिणए जाव पंचेंदियओरालिय जाव परिणए ? गोयमा ! एगिंदियओरालियं एवं जहा ओरालियसरीरकायप्पयोगपरिणएणं आलावगो भणिओ तहा ओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणएण वि आलावगो भाणियव्वो, नवरं बायरवाउक्काइय - गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिय-गब्भवक्कंतियमणुस्साण य एएसि णं पज्जत्तापज्जत्तगाणं, सेसाणं अपज्जत्तगाणं।२। ६६. जदि वेउव्वियसरीरकायप्पयोगपरिणए किं एगिंदियवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए जाव पंचिंदियवेउव्वियसरीर जाव परिणए ? गोयमा ! एगिंदिय जाव परिणए वा पंचिंदिय जाव परिणए। ६७. जइ एगिंदिय जाव परिणए किं वाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणए ? अवाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणते ? गोयमा ! वाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणए, नो अवाउक्काइय जाव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिणते । एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे वेउव्वियसरीरं भणियं तहा इह वि भाणियव्वं जाव पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए वा, अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्ध जाव कायप्पयोगपरिणए वा ।३। ६८. जदि वेउव्वियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए किं एगिंदियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए वा जाव पंचिंदियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए ? एवं जहा वेउव्वियं तहा मीसगं पि, नवरं देव-नेरइयाणं अपज्जत्तगाणं, सेसाणं पज्जत्तगाणं तहेव, जाव नो पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरो जाव प०, अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियदेवपंचिंदियवेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए । ४। ६९. जदि आहारगसरीरकायप्पओगपरिणए किं मणुस्साहारगसरीरकायप्पओगपरिणए ? अमणुस्साहारग जाव प० ? एवं जहा ओगाहणसंठाणे जाव इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउय जाव परिणए, नो अणिड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउय जाव प० । ५ । ७०. जदि आहारगमीसासरीरकायप्पयोगप० किं मणुस्साहारगमीसासरीर० ? एवं जहा आहारगं तहेव मीसगं पि निरवसेसं भाणियव्वं । ६ । ७१. जदि कम्मासरीरकायप्पओगप० किं एगिंदियकम्मासरीरकायप्पओगप० जाव पंचिंदियकम्मासरीर जाव प० ? गोयमा ! एगिंदियकम्मासरीरकायप्पओ० एवं जहा ओगाहणसंठाणे कम्मगस्स भेदो तहेव इहावि जाव पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिंदियकम्मासरीरकायप्पयोगपरिणए वा, अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणु० जाव परिणए वा । ७ । ७२. जइ मीसापरिणए किं मणमीसापरिणए ? वयमीसापरिणए ? कायमीसापरिणए ? गोयमा ! मणमीसापरिणए वा, वयमीसापरिणते वा कायमीसापरिणए वा । ७३. जदि मणमीसापरिणए किं सच्चमणमीसापरिणए ? मोसमणमीसापरिणए ? जहा पओगपरिणए तहा मीसापरिणए वि भाणियव्वं निरवसेसं जाव पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियकम्मासरीरगमीसापरिणए वा, अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणु० जाव कम्मासरीरमीसापरिणए वा । ७४. जदि वीससापरिणए किं वण्णपरिणए गंधपरिणए रसपरिणए फासपरिणए संठाणपरिणए ? गोयमा ! वण्णपरिणए वा गंधपरिणए वा रसपरिणए वा फासपरिणए वा संठाणपरिणए वा । ७५. जदि वण्णपरिणए किं कालवण्णपरिणए नील जाव सुक्किलवण्णपरिणए ? गोयमा ! कालवण्णपरिणए वा जाव सुक्किलवण्णपरिणएवा । ७६. जदि गंधपरिणए किं सुब्भिगंधपरिणए ? दुब्भिगंधपरिणए ? गोयमा ! सुब्भिगंधपरिणए वा, दुब्भिगंधपरिणए वा । ७७. जइ रसपरिणए किं तित्तरसपरिणए ५ पुच्छा । गोयमा ! तित्तरसपरिणए वा जाव महुररसपरिणए वा । ७८. जइ फासपरिणए किं कक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ? गोयमा ! कक्खडफासपरिणए वा जाव लुक्खफासपरिणए वा । ७९. जइ संठाणपरिणए० पुच्छा । गोयमा ! परिमंडलसंठाणपरिणए वा जाव आययसंठाणपरिणए वा । [सु. ८०-८५. विविहभेय-पभेययविभागपुव्वयं दोण्हं दव्वाणं पयोग-मीस-वीससापरिणतत्तपरूवणा] ८०. दो भंते ! दव्वा किं पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ? गोयमा ! पओगपरिणया वा १ । मीसापरिणया वा २ । वीससापरिणया वा ३ । अहवेगे पओगपरिणए, एगे मीसापरिणए ४ । अहवेगे पओगप०, एगे वीससापरि० ५ । अहवेगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए, एवं ६ । ८१. जदि पओगपरिणया किं मणप्पयोगपरिणया ? वइप्पयोग० ? कायप्पयोगपरिणया ? गोयमा ! मणप्पयोगपरिणता वा १ । वइप्पयोगप० २ । कायप्पयोगपरिणया वा ३ । अहवेगे मणप्पयोगपरिणते, एगे वयप्पयोगपरिणते ४ । अहवेगे मणप्पयोगपरिणए, एगे कायप्पओगपरिणए ५ । अहवेगे वयप्पयोगपरिणते, एगे कायप्पओगपरिणते ६ । ८२. जदि मणप्पयोगपरिणता किं सच्चमणप्पयोगपरिणता ? असच्चमणप्पयोगप० ? सच्चामोसमणप्पयोगप० ? असच्चाऽमोसमणप्पयोगप० ? गोयमा ! सच्चमणप्पयोगपरिणया वा जाव असच्चामोसमणप्पयोगपरिणया वा । अहवेगे सच्चमणप्पयोगपरिणए, एगे या मोसमणप्पओगपरिणए १ । अहवेगे सच्चमणप्पओगपरिणते, एगे सच्चामोसमणप्पओगपरिणए २ । अहवेगे सच्चमणप्पओगपरिणए, एगे असच्चामोसमणप्पओगपरिणए ३ । अहवेगे मोसमणप्पयोगपरिणते, एगे सच्चामोसमणप्पयोगपरिणते ४ । अहवेगे मोसमणप्पयोगपरिणते, एगे असच्चामोसमणप्पयोगपरिणते ५ । अहवेगे सच्चामोसमणप्पओगपरिणते, एगे असच्चामोसमणप्पयोगपरिणते ६ । ८३. जइ सच्चमणप्पओगपरिणता किं

Jain Education International 2010_03
For Private & Personal Use Only

www.jainelibrary.org

आरंभसच्चमणप्पयोगपरिणया जाव असमारंभसच्चमणप्पयोगपरिणता ? गोयमा ! आरंभसच्चमणप्पयोगपरिणया वा जाव असमारंभसच्चमणप्पयोगपरिणया वा। अहवेगे आरंभसच्चमणप्पयोगपरिणते, एगे अणारंभसच्चमणप्पयोगपरिणते। एवं एएणं गमएणं दुयसंजोएणं नेयव्वं। सव्वे संयोगा जत्थ जत्तिया उट्ठेंति ते भाणियव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धग त्ति। ८४. जदि मीसापरिणता किं मणमीसापरिणता ? एवं मीसापरिणया वि। ८५. जदि वीससापरिणया किं वण्णपरिणया, गंधपरिणता० ? । एवं वीससापरिणया वि जाव अहवेगे चउरंससंठाणपरिणते, एगे आययसंठाणपरिणए वा। [सु. ८६-८८. विविहभेय-पभेयविभागपुव्वयंतिण्हं दव्वाणं पयोग-मीस-वीससापरिणतत्तपरूवणा] ८६. तिण्णि भंते ! दव्वा किं पयोगपरिणता ? मीसापरिणता ? वीससापरिणता ? गोयमा ! पयोगपरिणया वा, मीसापरिणया वा, वीससापरिणया वा १ । अहवेगे पयोगपरिणए, दो मीसापरिणता १ । अहवेगे पयोगपरिणए, दो वीससापरिणता २ । अहवा दो पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए ३ । अहवा दो पयोगपरिणता, एगे वीससापरिणते ४ । अहवेगे मीसापरिणए, दो वीससापरिणता ५ । अहवा दो मीससापरिणता, एगे वीससापरिणते ६ । अहवेगे पयोगपरिणते, एगे मीसापरिणते, एगे वीससापरिणते ७ । ८७. जदि पयोगपरिणता किं मणप्पयोगपरिणया ? वइप्पयोगपरिणता ? कायप्पयोगपरिणता ? गोयमा ! मणप्पयोगपरिणया वा० एवं एक्कगसंयोगो, दुयसंयोगो तियसंयोगो य भाणियव्वो। ८८. जदि मणप्पयोगपरिणता किं सच्चमणप्पयोगपरिणया ४ । गोयमा ! सच्चमणप्पयोगपरिणया वा जाव असच्चामोसमणप्पयोगपरिणया वा ४ । अहवेगे सच्चमणप्पयोगपरिणए, दो मोसमणप्पयोगपरिणया एवं दुयसंयोगो, तियसंयोगो भाणियव्वो । एत्थ वि तहेव जाव अहवा एगे तंससंठाणपरिणए वा एगे चउरंससंठाणपरिणए वा एगे आययसंठाणपरिणए वा। [सु. ८९-९०. विविहभेय-पभेयविभागपुव्वयं चतुप्पभितिअणंतदव्वाणं पयोग-मीस -वीससापरिणतत्तपरूवणा] ८९. चत्तारि भंते ! दव्वा किं पओगपरिणया ३ ? गोयमा ! पयोगपरिणया वा, मीसापरिणया वा, वीससापरिणया वा। अहवेगे पओगपरिणए, तिण्णि मीसापरिणया १ । अहवा एगे पओगपरिणए, तिण्णि वीससापरिणया २ । अहवा दो पयोगपरिणया, दो मीसापरिणया ३ । अहवा दो पयोगपरिणया, दो वीससापरिणया ४ । अहवा तिण्णि पओगपरिणया, एगे मीससापरिणए ५ । अहवा तिण्णि पओगपरिणया, एगे वीससापरिणए ६ । अहवा एगे मीससापरिणए, तिण्णि वीससापरिणया ७ । अहवा दो मीसापरिणया, दो वीससापरिणया ८ । अहवा तिण्णि मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए ९ । अहवेगे पओगपरिणए एगे मीसापरिणए, दो वीससापरिणया १; अहवेगे पयोगपरिणए,, दो मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए २; अहवा दो पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ३ । ९०. जदि पयोगपरिणया किं मणप्पयोगपरिणया ३ ? एवं एएणं कमेणं पंच छ सत्त जाव दस संखेज्जा असंखेज्जा अणंता य दव्वा भाणियव्वा। दुयासंजोएणं, तियासंजोगेणं जाव दससंजोएणं बारससंजोएणं उवजुंजिऊणं जत्थ जत्तिया संजोगा उट्ठेंति ते सव्वे भाणियव्वा। एए पुण जहा नवमसए पवेसणए भणीहामि तहा उवजुंजिऊण भाणियव्वा जाव असंखेज्जा। अणंता एवं चेव, नवरं एक्कं पदं अब्भहियं जाव अहवा अणंता परिमंडलसंठाणपरिणया जाव अणंता आययसंठाणपरिणया। [सु. ९१. पयोग-मीस-वीससापरिणताणं पोग्गलाणमप्पाबहुयं] ९१. एएसि णं भंते ! पोग्गलाणं पयोगपरिणयाणं मीसापरिणयाणं वीससापरिणयाण य कतरे कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला पयोगपरिणया, मीसापरिणया अणंतगुणा, वीससापरिणया अणंतगुणा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ।☆☆☆ **अट्ठमसयस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥८.१॥** ☆☆☆ **बीओ उद्देसो 'आसीविसे'**☆☆☆ [सु. १. आसीविसाणं भेयदुयपरूवणा] १. कतिविहा णं भंते ! आसीविसा पण्णत्ता, गोयमा ! दुविहा आसीविसा पन्नत्ता, तं जहा जातिआसीविसा य, कम्मआसीविसा य। [सु. २. जातिआसीविसाणं चउभेयपरूवणा] २. जातिआसीविसा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा विच्छुयजातिआसीविसे, मंडुक्कजातिआसीविसे, उरगजातिआसीविसे, मणुस्सजातिआसीविसे। [सु. ३-६. विच्छुयआईणं चउण्हं जातिआसीविसाणं विसयपरूवणा] ३. विच्छुयजातिआसीविसस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! पभू णं विच्छुयजातिआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बोंदिं विसेणं विसपरिगयं विसट्टमाणिं पकरेत्तए। विसए से विसट्टयाए, नो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा, करेंति वा, करिस्संति वा १। ४. मंडुक्कजातिआसीविसपुच्छा। गोयमा ! पभू णं मंडुक्कजातिआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं। सेसं तं चेव, नो चेव जाव करेस्संति वा २। ५. एवं उरगजातिआसीविसस्स वि, नवरं जंबुद्दीवप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं०। सेसं तं चेव, नो चेव जाव करेस्संति वा ३। ६. मणुस्सजातिआसीविसस्स वि एवं चेव, नवरं समयखेत्तप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं०। सेसं तं चेव जाव करेस्संति वा ४। [सु. ७-१९. तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवाणं तिण्हं कम्मआसीविसाणं वित्थरओ परूवणा] ७. जदि कम्मआसीविसे किं नेरइयकम्मआसीविसे, तिरिक्खजोणियकम्मआसीविसे, मणुस्सकम्मआसीविसे, देवकम्मासीविसे ? गोयमा ! नो नेरइयकम्मासीविसे, तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे वि, मणुस्सकम्मासीविसे वि, देवकम्मासीविसे वि। ८. जदि तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ? जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ? गोयमा ! नो एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव नो चतुरिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे। ९. जदि पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं सम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ? गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ? एवं जहा वेउव्वियसरीरस्स भेदो जाव पज्जत्तासंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय जाव कम्मासीविसे। १०. जदि मणुस्सकम्मासीविसे किं सम्मुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे ? गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे ? गोयमा ! णो सम्मुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे, गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे, एवं जहा वेउव्वियसरीरं जाव पज्जत्तासंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसकम्मासीविसे, नो अपज्जत्ता जाव कम्मासीविसे। ११. जदि देवकम्मासीविसे किं भवणवासीदेवकम्मासीविसे जाव वेमाणियदेवकम्मासीविसे ? गोयमा ! भवणवासिदेवकम्मासीविसे, वाणमंतरदेव०, जोतिसिय०, वेमाणियदेवकम्मासीविसे वि। १२. जइ भवणवासिदेवकम्मासीविसे किं असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे जाव थणियकुमार जाव कम्मासीविसे ? गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे वि जाव थणियकुमार जाव कम्मासीविसे वि। १३. (१) जइ असुरकुमार जाव कम्मासीविसे किं पज्जत्तअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे ? अपज्जत्तअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे ? गोयमा ! नो पज्जत्तअसुरकुमार जाव कम्मासीविसे, अपज्जत्तअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे। (२) एवं जाव थणियकुमाराणं। १४. जदि वाणमंतरदेवकम्मासीविसे किं पियासवाणमंतर० ? एवं सव्वेसिं पि अपज्जत्तगाणं। १५. जोतिसियाणं सव्वेसिं अपज्जत्तगाणं। १६. जदि वेमाणियदेवकम्मासीविसे किं कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे ? कप्पातीतवेमाणियदेवकम्मासीविसे ? गोयमा ! कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे, नो कप्पातीतवेमाणियदेवकम्मासीविसे। १७. जति कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे किं सोधम्मकप्पोव० जाव कम्मासीविसे जाव अच्चुयकप्पोवग जाव कम्मासीविसे ? गोयमा ! सोधमकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे वि जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे वि, नो आणयकप्पोवग जाव नो अच्चुतकप्पोवगवेमाणियदेव०। १८. जदि सोहम्मकप्पोवग जाव कम्मासीविसे किं पज्जत्तसोधम्मकप्पोवगवेमाणिय० अपज्जत्तगसोहम्मग० ? गोयमा ! नो पज्जत्तसोहम्मकप्पोवगवेमाणिय०, अपज्जत्तसोधम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे। १९. एवं जाव नो पज्जत्तासहस्सारकप्पोवगवेमाणिय जाव कम्मासीविसे, अपज्जत्तसहस्सारकप्पोवग जाव कम्मासीविसे। [सु. २०-२१. छउमत्थस्स सव्वभावजाणणाअविसयाइं केवलिणो य सव्वभावजाणणाविसयाइं दस ठाणाइं] २०. दस ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणति न पासति, तं जहा धम्मत्थिकायं १ अधम्मत्थिकायं २ आगासत्थिकायं ३ जीवं असरीरपडिबद्धं ४ परमाणुपोग्गलं ५ सद्दं ६ गंधं ७ वातं ८ अयं जिणे भविस्सति वा ण वा भविस्सइ ९ अयं सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्सति वा न वा करेस्सइ १०। २१. एयाणि चेव उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणति पासति, तं जहा धम्मत्थिकायं १ जाव करेस्सति वा न वा करेस्सति १०। [सु. २२-२३. पंचविहनाणभेयाइजाणणत्थं रायपसेणइयसुत्तावलोयणनिद्देसो]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२. कतिविहे णं भंते ! नाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे नाणे पण्णत्ते, तं जहा आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे ओहिनाणे मणपज्जवनाणे केवलनाणे। २३. (१) से किं तं आभिणिबोहियनाणे ? आभिणिबोहियनाणे चतुव्विहे पण्णत्ते, तं जहा उग्गहो ईहा अवाओ धारणा। (२) एवं जहा रायप्पसेणइए णाणाणं भेदो तहेव इह वि भाणियव्वो जाव से त्तं केवलनाणे। [सु. २४-२८. अण्णाणाणं भेय-पभेयपरूवणा] २४. अण्णाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा मइअन्नाणे सुयअन्नाणे विभंगनाणे। २५. से किं तं मइअण्णाणे ? मइअण्णाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा उग्गहो जाव धारणा। २६. (१) से किं तं उग्गहे ? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा अत्थोग्गहे य वंजणोग्गहे य। (२) एवं जहेव आभिणिबोहियनाणं तहेव, नवरं एगट्ठियवज्जं जाव नोइंदियधारणा, से त्तं धारणा। से त्तं मतिअण्णाणे। २७. से किं तं सुयअण्णाणे ? सुतअण्णाणे जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छद्दिट्ठिएहिं जहा नंदीए जाव चत्तारि वेदा संगोवंगा। से त्तं सुयअन्नाणे। २८. से किं तं विभंगनाणे ? विभंगनाणे अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा गामसंठिए नगरसंठिए जाव संन्निवेससंठिए दीवसंठिए समुद्दसंठिए वाससंठिए वासहरसंठिए पव्वयसंठिए रूक्खसंठिए थूभसंठिए हयसंठिए गयसंठिए नरसंठिए किन्नरसंठिए किंपुरिससंठिए महोरगसंठिते गंधव्वसंठिए उसभसंठिए पसु-पसय-विहग-वानरणाणासंठाणसंठिते पण्णत्ते। [सु. २९-३८. जीव चउवीसदंडय-सिद्धेसु नाणि-अण्णाणिवत्तव्वया] २९. जीवा णं भंते ! किं नाणी, अन्नाणी ? गोयमा ! जीवा नाणी वि, अन्नाणी वि। जे नाणी ते अत्थेगतिया दुन्नाणी, अत्थेगतिया तिन्नाणी, अत्थेगतिया चउनाणी, अत्थेगतिया एगनाणी। जे दुन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य। जे तिन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुतनाणी ओहिनाणी, अहवा आभिणिबोहियणाणी सुतणाणी मणपज्जवनाणी। जे चउणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुतणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी। जे एगनाणी ते नियमा केवलनाणी। जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणि, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। जे दुअण्णाणी ते मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य। जे तिअण्णाणी ते मतिअण्णाणी सुयअण्णाणी विभंगनाणी। ३०. नेरइया णं भंते ! किं नाणी, अण्णाणी ? गोयमा ! नाणी वि अण्णाणी वि। जे नाणी ते नियमा तिन्नाणी, तं जहा आभिणिबोहि० सुयनाणी ओहिनाणी। जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। एवं तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। ३१. (१) असुरकुमारा णं भंते किं नाणी अण्णाणी ? तहेव नेरइया तहेव तिण्णि नाणाणि नियमा, तिण्णि य अण्णाणाणि भयणाए। (२) एवं जाव थणियकुमारा। ३२. (१) पुढविक्काइया णं भंते ! किं नाणी अण्णाणी ? गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी मतिअण्णाणी य, सुतअण्णाणी य। (२) एवं जाव वणस्सइकाइया। ३३. (१) बेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा ! णाणी वि, अण्णाणी वि। जे नाणी ते नियमा दुण्णाणी, तं जहा-आभिणिबोहियनाणी य सुयणाणी य। जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी-आभिणिबोहियअण्णाणी य सुयअण्णाणी य। (२) एवं तेइंदिय-चउरिंदिया वि। ३४. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! नाणी वि अण्णाणी वि। जे नाणी ते अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिन्नाणी। एवं तिण्णिनाणाणि तिण्णि अण्णाणाणि य भयणाए। ३५. मणुस्सा जहा जीवा तहेव पंच नाणाणि तिण्णि अण्णाणाणि य भयणाए। ३६. वाणमंतरा जहा नेरइया। ३७. जोतिसिय-वेमाणियाणं तिण्णिनाणा तिण्णिअन्नाणा नियमा। ३८. सिद्धा णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! णाणी, नो अण्णाणी। नियमा एगनाणी-केवलनाणी। सु. ३९-१५९. गइआइवीसइदारेसु नाणि-अण्णाणिवत्तव्वया [सु. ३९-४३. पढमं गइदारं पडुच्च नाणि-अन्नाणिपरूवणा] ३९. निरयगतिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अण्णाणी ? गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। तिण्णिनाणाइं नियमा, तिण्णिअन्नाणाइं भयणाए। ४०. तिरियगतिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अण्णाणी ? गोयमा ! दो नाणा, दो अन्नाणा नियमा। ४१. मणुस्सगतिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? गोयमा ! तिण्णिनाणाइं भयणाए, दो अण्णाणाइं नियमा। ४२. देवगतिया जहा निरयगतिया। ४३. सिद्धगतिया णं भंते ! ०। जहा सिद्धा (सु. ३८)। १। [सु. ४४-४८. बिइयं इंदियदारं पडुच्च नाणि-अन्नाणिपरूवणा] ४४. सइंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अण्णाणी ? गोयमा ! चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। ४५. एगिंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? जहा पुढविक्काइया। ४६. बेइंदिय-तेइंदिय-चतुरिंदियाणं दो नाणा, दो अण्णाणा नियमा। ४७. पंचिंदिया जहा सइंदिया। ४८. अणिंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? जहा सिद्धा (सु. ३८)। २। [सु.४९-५२. तइयं कायदारं पडुच्च नाणि-अन्नाणिपरूवणा] ४९.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सकाइया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? गोयमा ! पंच नाणाणि तिण्णि अन्नाणाइं भयणाए। ५०. पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया नो नाणी, अण्णाणी। नियमा दुअण्णाणी; तं जहा-मतिअण्णाणी य सुयअण्णाणी य। ५१. तसकाइया जहा सकाइया (सु. ४९)। ५२. अकाइया णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? जहा सिद्धा (सु.३८)।३। [(सु. ५३-५५. चउत्थं सुहुमदारं पडुच्च नाणि-अन्नाणिपरूवणा] ५३. सुहुमा णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? जहा पुढविकाइया (सु. ५०)। ५४. बादरा णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? जहा सकाइया (सु. ४९)। ५५. नोसुहुमानोबादरा णं भंते ! जीवा० ? जहा सिद्धा (सु. ३८)।४। [(सु. ५६-७०. पंचमं पज्जत्तदारं पडुच्च नाणि-अन्नाणिपरूवणा] ५६. पज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? जहा सकाइया (सु. ४९)। ५७. पज्जत्ता णं भंते ! नेरतिया किं नाणी० ? तिण्णिनाणा, तिण्णिअण्णाणा नियमा। ५८. जहा नेरइया एवं जाव थणियकुमारा। ५९. पुढविकाइया जहा एगिंदिया। एवं जाव चतुरिंदिया। ६०. पज्जत्ता णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नाणी, अण्णाणी ? तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा भयणाए। ६१. मणुस्सा जहा सकाइया (सु. ४९)। ६२. वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया (सु. ५७)। ६३. अपज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी २ ? तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा भयणाए। ६४. (१) अपज्जत्ता णं भंते ! नेरतिया किं नाणी, अन्नाणी ? तिण्णि नाणा, नियमा तिण्णि अण्णाणा भयणाए। (२) एवं जाव थणियकुमारा। ६५. पुढविक्काइया जाव वणस्सतिकाइया जहा एगिंदिया। ६६. (१) बेंदिया णं० पुच्छा। दो नाणा, दो अण्णाणा णियमा। (२) एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं। ६७. अपज्जत्तगा णं भंते ! मणुस्सा किं नाणी, अन्नाणी ? तिण्णि नाणाइं भयणाए, दो अण्णाणाइं नियमा। ६८. वाणमंतरा जहा नेरतिया (सु. ६४)। ६९. अपज्जत्तगा जोतिसिय-वेमाणिया णं० ? तिण्णि नाणा, तिन्नि अण्णाणा नियमा। ७०. नोपज्जत्तगनोअपज्जत्तगा णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? जहा सिद्धा (सु. ३८)।५। [(सु. ७१-७५. छट्टं भवत्थदारं पडुच्च नाणि-अन्नाणिपरूवणा] ७१. निरयभवत्था णं भंते ! जीवा किं नाणी, अण्णाणी ? जहा निरयगतिया (सु. ३९)। ७२. तिरियभवत्था णं भंते ! जीवा किं नाणी, अण्णाणी ? तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा भयणाए। ७३. मणुस्सभवत्थ णं० ? जहा सकाइया (सु. ४९)। ७४. देवभवत्था णं भंते ! ? जहा निरयभवत्था (सु. ७१)। ७५. अभवत्था जहा सिद्धा (सु. ३८)।६। [सु. ७६-७८. सत्तमं भवसिद्धियदारं पडुच्च नाणि-अन्नाणिपरूवणा] ७६. भवसिद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? जहा सकाइया (सु. ४९)। ७७. अभवसिद्धिया णं० पुच्छा। गोयमा ! नो नाणी; अण्णाणी, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। ७८. नोभवसिद्धियनोअभवसिद्धिया णं भंते ! जीवा० ? जहा सिद्धा (सु. ३८)।७। [सु. ७९-८१. अट्ठमं सन्निदारं पडुच्च नाणि अन्नाणिपरूवणा] ७९. सण्णी णं० पुच्छा। जहा सइंदिया (सु. ४४)। ८०. असण्णी जहा बेइंदिया (सु. ४६)। ८१. नोसण्णीनोअसण्णी जहा सिद्धा (सु. ३८)।८। [सु. ८२-११७. नवमं लद्धिदारं पडुच्च नाणि-अन्नाणिपरूवणा] [सु. ८२-९०. दसविहलद्धिभेय-पभेयपरूवणा] ८२. कतिविहा णं भंते ! लद्धी पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा लद्धी पण्णत्ता, तं जहा-नाणलद्धी १ दंसणलद्धी २ चरित्तलद्धी ३ चरित्ताचरित्तलद्धी ४ दाणलद्धी ५ लाभलद्धी ६ भोगलद्धी ७ उवभोगलद्धी ८ वीरियलद्धी ९ इंदियलद्धी १०। ८३. णाणलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा आभिणिबोहियणाणलद्धी जाव केवलणाणलद्धी। ८४. अण्णाणलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा मइअण्णाणलद्धी सुतअण्णाणलद्धी विभंगनाणलद्धी। ८५. दंसणलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा सम्मद्दंसणलद्धी मिच्छादंसणलद्धी सम्मामिच्छादंसणलद्धी। ८६. चरित्तलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा सामाइयचरित्तलद्धी छेदोवट्ठावणियलद्धी परिहारविसुद्धलद्धी सुहुमसंपरागलद्धी अहक्खायचरित्तलद्धी। ८७. चरित्ताचरित्तलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एगागारा पण्णत्ता। ८८. एवं जाव उवभोगलद्धी एगागारा पण्णत्ता। ८९. वीरियलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा बालवीरियलद्धी पंडियवीरियलद्धी बालपंडियवीरियलद्धी। ९०. इंदियलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा सोतिंदियलद्धी जाव फासिंदियलद्धी। [सु. ९१-९९. नाण-अन्नाणलद्धिमंतजीवेसु नाणि-अन्नाणिपरूवणा] ९१. (१) नाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी,

Jain Education International 2010_03

For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

अण्णाणी ? गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी; अत्थेगतिया दुनाणी। एवं पंच नाणाइं भयणाए। (२) तस्स अलद्धीया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अण्णाणी ? गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी; अत्थेगतिया दुअण्णाणी, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। ९२. (१) आभिणिबोहियणाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अण्णाणी ? गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी; अत्थेगतिया दुण्णाणी, चत्तारि नाणाइं भयणाए। (२) तस्स अलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अण्णाणी ? गोयमा ! नाणी, वि अण्णाणी वि। जे नाणी ते नियमा एगनाणी-केवलनाणी। जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअन्नाणी, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। ९३. (१) एवं सुयनाणलद्धीया वि। (२) तस्स अलद्धीया वि जहा आभिणिबोहियनाणस्स अलद्धीया। ९४. (१) ओहिनाणलद्धीया णं० पुच्छा। गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी, अत्थेगतिया तिणाणी, अत्थेगतिया चउनाणी। जे तिणाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी। जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुतणाणी ओहिणाणी मणपज्जवनाणी। (२) तस्स अलद्धीया णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। एवं ओहिनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। ९५. (१) मणपज्जवनाणलद्धिया णं० पुच्छा। गोयमा ! णाणी, णो अण्णाणी। अत्थेगतिया तिणाणि, अत्थेगतिया चउनाणी। जे तिणाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुतनाणी मणपज्जवणाणी। जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी मणपज्जवनाणी। (२) तस्स अलद्धीया णं० पुच्छा। गोयमा ! णाणी वि, अण्णाणी वि, मणपज्जवणाणवज्जाइं चत्तारि णाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। ९६. (१) केवलनाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। नियमा एगणाणी-केवलनाणी। (२) तस्स अलद्धिया णं० पुच्छा। गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणि वि। केवलनाणवज्जाइं चत्तारि णाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। ९७. (१) अण्णाणलद्धिया णं० पुच्छा। गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणि; तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। (२) तस्स अलद्धिया णं० पुच्छा। गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। पंच नाणाइं भयणाए। ९८. जहा अण्णाणस्स लद्धिया अलद्धिया य भणिया एवं मइअण्णाणस्स, सुयअण्णाणस्स य लद्धिया अलद्धिया य भाणियव्वा। ९९. विभंगनाणलद्धियाणं तिण्णि अण्णाणाइं नियमा। तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए। दो अण्णाणाइं नियमा। [सु. १००-१०३. दंसणलद्धिमंतजीवेसु नाणि -अन्नाणिपरूवणा] १००. (१) दंसणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अण्णाणी ? गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। पंच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। (२) तस्स अलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? गोयमा ! तस्स अलद्धिया नत्थि। १०१. (१) सम्मद्दंसणलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए। (२) तस्स अलद्धियाणं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। १०२. (१) मिच्छादंसणलद्धिया णं भंते !० पुच्छा। तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। (२) तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं, तिण्णि य अण्णाणाइं भयणाए। १०३. सम्मामिच्छादंसणलद्धिया अलद्धिया य जहा मिच्छादंसणलद्धी अलद्धी तहेव भाणियव्वं। [सु. १०४-१०६. चरित्तलद्धिमंतजीवेसु नाणि-अन्नाणिपरूवणा] १०४. (१) चरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अण्णाणी ? गोयमा ! पंच नाणाइं भयणाए। (२) तस्स अलद्धियाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं, तिन्नि य अन्नाणाइं भयणाए। १०५. (१) सामाइयचरित्तलद्धिया णं भंते ! गोयमा ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? गोयमा ! नाणी, केवलवज्जाइं चत्तारि नाणाइं भयणाए। (२) तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं तिण्णि य अण्णाणाइं भयणाए। १०६. एवं जहा सामाइयचरित्तलद्धिया अलद्धिया य भाणिया एवं जाव अहक्खायचरित्तलद्धिया अलद्धिया य भाणियव्वा, नवरं अहक्खायचरित्तलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए। [सु. १०७. चरित्ताचरित्तलद्धिमतंजीवेसु नाणि -अन्नाणिपरूवणा] १०७. (१) चरित्ताचरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अण्णाणी ? गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी। जे दुन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी य, सुयनाणी य। जे तिन्नाणी ते आभि० सुतना० ओहिनाणी य। (२) तस्स अलद्धीयाण पंच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। [सु. १०८-११२. दाण-लाभ-भोग-उवभोग-वीरियलद्धिमंतजीवेसु नाणि-अन्नाणिपरूवणा] १०८. (१) दाणलद्धियाणं पंच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। २ तस्स अलद्धीया णं० पुच्छा। गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी नियमा। एगनाणी-केवलनाणी। १०९. एवं जाव वीरियस्स लद्धी अलद्धी य भाणियव्वा। ११०. (१) बालवीरियलद्धियाणं तिण्णि नाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए। १११. (१) पंडियवीरियलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए। (२) तस्स अलद्धियाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं णाणाइं, अण्णाणाणि तिण्णि य भयणाए। ११२. (१) बालपंडियवीरियलद्धिया णं भंते ! जीवा० ? तिण्णि नाणाइं भयणाए। (२) तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं, तिण्णि य अण्णाणाइं भयणाए। [सु. ११३-११७. इंदियलद्धिमंतजीवेसु नाणि -अन्नाणिपरूवणा] ११३. (१) इंदियलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अण्णाणी ? गोयमा ! चत्तारि णाणाइं, तिण्णि य अन्नाणाइं भयणाए। (२) तस्स अलद्धिया णं० पुच्छा। गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी नियमा। एगनाणी-केवलनाणी। ११४. (१) सोइंदियलद्धियाणं जहा इंदियलद्धिया (सु. ११३)। (२) तस्स अलद्धिया णं पुच्छा। गोयमा ! नाणी वि अण्णाणी वि। जे नाणी ते अत्थेगतिया दुन्नाणी, अत्थेगतिया एगन्नाणी। जे दुन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी। जे एगनाणी ते केवलनाणी। जे अण्णाणी ते नियमा दुअन्नाणी, तं जहा मइअण्णाणी य, सुतअण्णाणी य। ११५. चक्खिंदियं-घाणिंदियाणं लद्धियाणं अलद्धियाण य जहेव सोइंदियस्स (सु. ११४)। ११६. (१) जिब्भिंदियलद्धियाणं चत्तारि णाणाइं, तिण्णि य अण्णाणाणि भयणाए। (२) तस्स अलद्धिया णं० पुच्छा। गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। जे नाणी ते नियमा एगनाणी-केवलनाणी। जे अण्णाणी ते नियमा दुअन्नाणी, तं जहा मइअण्णाणी य, सुतअन्नाणी य। ११७. फासिंदियलद्धियाणं अलद्धियाणं जहा इंदियलद्धिया य अलद्धिया य (सु. ११३)।९। [सु. ११८-१३०. दसमं उवओगदारं पडुच्च नाणि-अन्नाणिपरूवणा] ११८. सागारोवयुत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी, अण्णाणी ? पंच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। ११९. आभिणिबोहियनाणसाकारोवयुत्ता वि। १२०. एवं सुतनाणसागारोवउत्ता वि। १२१. ओहिनाणसागारोवउत्ता जहा ओहिनाणलद्धिया (सु. ९४ १)। १२२. मणपज्जवनाणसागारोवजुत्ता जहा मणपज्जवनाणलद्धिया (सु ९५ १)। १२३. केवलनाणसागारोवजुत्ता जहा केवलनाणलद्धिया (सु. ९६ १)। १२४. मइअण्णाणसागारोवयुत्ताणं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। १२५. एवं सुतअण्णाणसागारोवयुत्ता वि। १२६. विभंगनाणसागारोवजुत्ताणं तिण्णि अण्णाणाइं नियमा। १२७. अणागारोवयुत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी, अण्णाणी ? पंच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। १२८. एवं चक्खुदंसण-अचक्खुदंसणअणागारोवजुत्ता वि, नवरं चत्तारि णाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। १२९. ओहिदंसणअणागारोवजुत्ता णं० पुच्छा। गोयमा ! नाणी वि अण्णाणी वि। जे नाणी ते अत्थेगतिया तिन्नाणी, अत्थेगतिया चउनाणी। जे तिन्नाणी ते आभिणिबोहिय० सुतनाणी ओहिनाणी। जे चउणाणी ते आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी। जे अन्नाणी ते नियमा तिअण्णाणी, तं जहा मइअण्णाणी सुतअण्णाणी विभंगनाणी। १३०. केवलदंसणअणागारोवजुत्ता जहा केवलनाणलद्धिया (सु. ९६ १ ।१०। [सु. १३१-१३३. एगारसं जोगदारं पडुच्च नाणि अन्नाणिपरुवणा] १३१. सजोगी णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? जहा सकाइया (सु. ४९) १३२. एवं मणजोगी, वइजोगी कायजोगी वि। १३३. अजोगी जहा सिद्धा (सु. ३८) ।११। [सु. १३४-१३७. बारसमं लेस्सादारं पडुच्च नाणि-अन्नाणिपरूवणा] १३४. सलेस्सा णं भंते ! ० ? जहा सकाइया (सु. ४९)। १३५. (१) कण्हलेस्सा णं भंते ! ० ? जहा सइंदिया। (सु.४४)। (२) एवं जाव पम्हलेसा। १३६. सुक्कलेस्सा जहा सलेस्सा (सु. १३४)। १३७. अलेस्सा जहा सिद्धा (सु.३८) ।१२। [सु. १३८-१३९. तेरसमं कसायदारं पडुच्च नाणि -अन्नाणिपरूवणा] १३८. (१) सकसाई णं भंते ! ० ? जहा सइंदिया (सु.४४)। (२) एवं जाव लोहकसाई। १३९. अकसाई णं भंते ! किं णाणी० ? पंच नाणाइं भयणाए ।१३। [सु. १४०-१४१. चोद्दसमं वेददारं पडुच्च नाणि-अन्नाणिपरूवणा] १४०. (१) सवेदगा णं भंते ! ० ? जहा सइंदिया (सु ४४)। (२) एवं इत्थिवेदगा वि। एवं पुरिसवेयगा। एवं नपुंसकवे०। १४१. अवेदगा जहा अकसाई (सु. १३९) ।१४। [सु. १४२-१४३. पनरसमं आहारदारं पडुच्च नाणि-अन्नाणिपरूवणा] १४२. आहारगा णं भंते ! जीवा० ? जहा सकसाई (सु. १३८), नवरं केवलनाणं पि। १४३. अणाहारगा णं भंते ! जीवा किं नाणी, अण्णाणी ? मणपज्जवनाणवज्जाइं नाणाइं, अन्नाणाणि य तिण्णि भयणाए ।१५। [सु. १४४-१५१. सोलसमं विसयदारं -नाण-अन्नाणविसयपरूवणा] १४४. आभिणिबोहियनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! से समासतो चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो। दव्वतो णं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आभिणिबोहियनाणी आदेसेणं सव्वदव्वाइं जाणति पासति। खेत्ततो आभिणिबोहियणाणी आदेसेणं सव्वं खेत्तं जाणति पासति। एवं कालतो वि। एवं भावओ वि। १४५. सुतनाणस्स णं भंते! केवतिए विसए पण्णत्ते? गोयमा! से समासओ चतुव्विहे पण्णत्ते, तं जहा दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो। दव्वतो णं सुतनाणी उवयुत्ते सव्वदव्वाइं जाणति पासति। एवं खेत्ततो वि, कालतो वि। भावतो णं सुयनाणी उवजुत्ते सव्वभावे जाणति पासति। १४६. ओहिनाणस्स णं भंते! केवतिए विसए पण्णत्ते? गोयमा! से समासओ चतुव्विहे पण्णत्ते, तं जहा दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो। दव्वतो णं ओहिनाणी रूविदव्वाइं जाणति पासति जहा नंदीए जाव भावतो। १४७. मणपज्जवनाणस्स णं भंते! केवतिए विसए पण्णत्ते? गोयमा! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो। दव्वतो णं उज्जुमती अणंते अणंतपदेसिए जहा नंदीए जाव भावओ। १४८. केवलनाणस्स णं भंते! केवतिए विसए पण्णत्ते? गोयमा! से समासओ चतुव्विहे पण्णत्ते, तं जहा दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो। दव्वतो णं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणति पासति। एवं जाव भावओ। १४९. मइअन्नाणस्स णं भंते! केवतिए विसए पन्नत्ते? गोयमा! से समासतो चतुव्विहे पण्णत्ते, तं जहा दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो। दव्वतो णं मइअन्नाणी मइअन्नाणपरिगताइं दव्वाइं जाणति पासति। एवं जाव भावतो मइअन्नाणी मइअन्नाणपरिगते भावे जाणति पासति। १५०. सुतअन्नाणस्स णं भंते! केवतिए विसए पण्णत्ते? गोयमा! से समासतो चतुव्विहे पण्णत्ते, तं जहा दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो। दव्वतो णं सुयअन्नाणी सुतअन्नाणपरिगताइं दव्वाइं आघवेति पण्णवेति परूवेइ। एवं खेत्ततो कालतो। भावतो णं सुयअन्नाणी सुतअन्नाणपरिगते भावे आघवेति तं चेव। १५१. विभंगणाणस्स णं भंते! केवतिए विसए पण्णत्ते? गोयमा! से समासतो चतुव्विहे पण्णत्ते, तं जहा दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो। दव्वतो णं विभंगनाणी विभंगणाणपरिगताइं दव्वाइं जाणति पासति। एवं जाव भावतो णं विभंगनाणी विभंगनाणपरिगए भावे जाणति पासति। १६। [सु. १५२-१५३. सत्तरसमं कालदारं पडुच्चं नाणि -अन्नाणिपरूवणा] १५२. णाणी णं भंते! 'णाणि' त्ति कालतो केवच्चिरं होति? गोयमा! नाणी दुविहे पण्णत्ते, तं जहा सादीए वा अपज्जवसिते, सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिए से जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं सातिरेगाइं। १५३. आभिणिबोहियणाणी णं भंते! आभिणिबोहियणाणि त्ति०?। एवं नाणी, आभिणिबोहियनाणी जाव केवलनाणी, अन्नाणी, मइअन्नाणी, सुतअन्नाणी, विभंगनाणी; एएसिं दसण्ह वि संचिट्ठणा जहा कायठितीए।१७। [सु. १५४. अट्ठारसमअंतरदारवत्तव्वयाजाणणत्थं जीवाभिगमसुत्तावलोयणनिद्देसो] १५४. अंतरं सव्वं जहा जीवाभिगमे। १८। [सु. १५५. एगूवीसइमअप्पबहुत्तदारवत्तव्वयाजाणणत्थं पन्नवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] १५५. अप्पाबहुगाणि तिण्णि जहा बहुवत्तव्वताए। १९। [सु. १५६-१५९. वीसइमं पज्जवदारं -नाण -अन्नाणपज्जवपरूवणा] १५६. केवतिया णं भंते! आभिणिबोहियणाणपज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! अणंता आभिणिबोहियणाणपज्जवा पण्णत्ता। १५७. (१) केवतिया णं भंते! सुतनाणपज्जवा पण्णत्ता? एवं चेव। (२) एवं जाव केवलनाणस्स। १५८. एवं मतिअन्नाणस्स सुतअन्नाणस्स। १५९. केवतिया णं भंते! विभंगनाणपज्जवा पण्णत्ता गोयमा! अणंता विभंगनाणपज्जवा पण्णत्ता। २०। [सु. १६०-१६२. नाणपज्जवाणं अन्नाणपज्जवाणं नाणऽन्नाणपज्जवाणं च अप्पाबहुयं] १६०. एतेसि णं भंते! आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं सुयनाणपज्जवाणं ओहिनाणपज्जवाणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं केवलनाणपज्जवाण य कतरे कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, ओहिनाणपज्जवा अणंतगुणा, सुतनाणपज्जवा अणंतगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा अणंतगुणा, केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा। १६१. एएसि णं भंते! मइअन्नाणपज्जवाणं सुतअन्नाणपज्जवाणं विभंगनाणपज्जवाण य कतरे कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा विभंगनाणपज्जवा, सुतअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा, मतिअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा। १६२. एएसि णं भंते! आभिणिबोहियणाणपज्जवाणं जाव केवलनाणपज्जवाणं मइअन्नाणपज्जवाणं सुयअन्नाणपज्जवाणं विभंगनाणपज्जवाण य कतरे कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, विभंगनाणपज्जवा अणंतगुणा, ओहिणाणपज्जवा अणंतगुणा, सुतअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा, सुतनाणपज्जवा विसेसाहिया, मइअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा विसेसाहिया,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ।☆☆☆ अट्ठमस्स सयस्स बितिओ उद्देसो ॥८.२॥ ☆☆☆ ततिओ उद्देसो 'रुक्ख' ☆☆☆ [सु. १-५ रुक्खभेय -पभेयाइपरूवणा] १. कतिविहा णं भंते ! रुक्खा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा संखेज्जजीविया असंखेज्जजीविया अणंतजीविया। २. से किं तं संखेज्जजीविया ? संखेज्जजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा ताले तमाले तक्कलि तेतलि जहा पण्णवणाए जाव नालिएरी, जे यावन्ने तहप्पगारा। से त्तं संखेज्जजीविया। ३. से किं तं असंखेज्जजीविया ? असंखेज्जजीविया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा एगट्ठिया य बहुबीयगा य। ४. से किं तं एगट्ठिया ? एगट्ठिया अणेविहा पण्णत्ता, तं जहा निंबंवजंबु एवं जहा पण्णवणापए जाव फला बहुबीयगा। से त्तं बहुबीयगा। से त्तं असंखेज्जजीविया। ५. से किं तं अणंतजीविया ? अणंतजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा आलुए मूलए सिंगबेरे एवं जहा सत्तमसए (सु. ७ उ० ३ सु० ५) जाव सीउंढी मुसुंढी, जे यावन्ने तहप्पकारा। से त्तं अणंतजीविया। [सु. ६. कुम्माइपाणीणं छिन्नभागंतरे जीवपदेसत्तं, छिन्नभागंतरजीवपदेसेसु सत्थसंकमाभावो य] ६. (१) अह भंते ! कुम्मे कुम्मावलिया, गोहे गोहावलिया, गोणे गोणावलिया, मणुस्से मण्णुस्सावलिया, महिसे महिसावलिया, एएसि णं दुहा वा तिहा वा संखेज्जहा वा छिन्नाणं जे अंतरा ते वि णं तेहिं जीवपदेसेहिं फुडा ? हंता, फुडा। (२) पुरिसे णं भंते ! ते अंतरे हत्थेण वा पादेण वा अंगुलियाए वा, सलागाए वा कट्ठेण वा कलिंचेण वा आमुसमाणे वा सम्मुसमाणे वा आलिहमाणे वा विलिहमाणे वा अन्नयरेण वा तिक्खेणं सत्थजातेणं आच्छिंदेमाणे वा विच्छिंदेमाणे वा, अगणिकाएणं वा समोडहमाणे तेसिं जीवपदेसाणं किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पायइ ? छविच्छेदं वा करेइ ? णो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं संकमति। [सु. ७-८. रयणप्पभाइपुढवीणं चरमाचरमपरूवणत्थं पन्नवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] ७. कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा पुढवी, ईसिपब्भारा। ८. इमा णं भंते ! रयणप्पभापुढवी किं चरिमा, अचरिमा ? चरिमपदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव वेमाणिया णं भंते ! फासचरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमा वि अचरिमा वि। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोतमे०। ॥८.३॥ ☆☆☆ चउत्थो उद्देसो 'किरिया' ☆☆☆ [सु. १. चउत्थुद्देसगस्स उवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वदासि [सु. २. किरियाभेयभेयाइपरूवणत्थं पन्नवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] २. कति णं भंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा काइया अहिगरणिया, एवं किरियापदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव मायावत्तियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ। सेवं भंते ! सेवं भंते ति भगवं गोयमे०। ॥८.४॥ ☆☆☆ पंचमो उद्देसो 'आजीव' ☆☆☆ [सु. १. पंचमुद्देसगस्स उवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वदासि [सु. २-५. आजीवियकहियनिग्गंथसंबंधिपरूवणाए भगवओ सहेउया अणुमती] [सु. २-३. कयसामाइयस्स समणोवासयस्स सकीयभंडेसु अपरिण्णातत्तं २. आजीविया णं भंते ! थेरे भगवंते एवं वदासी समणोवासगस्स णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ भंडे अवहरेज्जा, से णं भंते ! तं भंडं अणुगवेसमाणे किं समंडं अणुगवेसति ? परायगं भंडं अणुगवेसइ ? गोयमा ! सभंडं अणुगवेसति नो परायगं भंडं अणुगवेसेति। ३. (१) तस्स णं भंते ! तेहिं सीलव्वत-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं से भंडे अभंडे भवति ? हंता, भवति। (२) से केणं खाइ णं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'सभंडं अणुगवेसइ नो परायगं भंडं अणुगवेसइ' ? गोयमा ! तस्स णं एवं भवति णो मे हिरण्णे, नो मे सुवण्णे, नो मे कंसे, नो मे दूसे, नो मे विउलधण-कणग रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयणमादीए संतसारसावदेज्जे, ममत्तभावे पुण से अपरिण्णाते भवति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ 'सभंडं अणुगवेसइ नो परायगं भंडं अणुगवेसइ। [सु. ४-५. कयसामाइयस्स समणोवायस्स सकीयभज्जाए पेज्जबंधणावोच्छिन्नत्तं] ४. समणोवासगस्स णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ जायं चरेज्जा, से णं भंते ! किं जायं चरइ, अजायं चरइ ? गोयमा ! जायं चरइ, नो अजायं चरइ। ५. (१) तस्स णं भंते ! तेहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहो-ववासेहि सा जाया अजाया भवइ ? हंता, भवइ। (२) से केणं खाइ णं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ० 'जायं चरइ, नो

Jain Education International 2010_03

For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

अजायं चरइ' ? गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ णो मे माता, णो मे पिता, णो मे भाया, णो मे भगिणी, णो मे भज्जा, णो मे पुत्ता, णो मे धूता, नो मे सुण्हा, पेज्जबंधणे पुण से अव्वोच्छिन्ने भवइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो अजायं चरइ। [सु. ६-८. पच्चाइक्खमाणस्स समणोवासयस्स तीत-पडुप्पन्न-अणागय-थूलगपाणाइवायाइ पडुच्च पडिक्कमण-संवरण-पच्चक्खाणरूवा वित्थरओ तिविह-तिविहाइभंगपरूवणा] ६. (१) समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव थूलए पाणातिवाते अपच्चक्खाए भवइ, से णं भंते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे किं करेति ? गोयमा ! तीतं पडिक्कमति, पडुप्पन्नं संवरेति, अणागतं पच्चक्खाति। (२) तीतं पडिक्कममाणे किं तिविहं तिविहेणं पडिक्कमति १, तिविहं दुविहेणं पडिक्कमति २, तिविहं एगविहेणं पडिक्कमति ३, दुविहं तिविहेणं पडिक्कमति ४, दुविहं दुविहेणं पडिक्कमति ५, दुविहं एगविहेणं पडिक्कमति ६, एक्कविहं तिविहेणं पडिक्कमति ७, एक्कविहं दुविहेणं पडिक्कमति ८, एक्कविहं एगविहेणं पडिक्कमति ९ ? गोयमा ! तिविहं वा तिविहेणं पडिक्कमति, तिविहं वा दुविहेणं पडिक्कमति तं चेव जाव एक्कविहं वा एक्कविहेणं पडिक्कमति। तिविहं वा तिविहेणं पडिक्कममाणे न करेति, न कारवेति, करेंतं णाणुजाणति, मणसा वयसा कायसा १। तिविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेति, न कारवेति, करेंतं नाणुजाणति, मणसा वयसा २; अहवा न करेति, न कारवेति, करेंतं नाणुजाणति, मणसा कायसा ३; अहवा न करेइ, न कारवेति, करेंतं णाणुजाणति, वयसा कायसा ४। तिविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेति, न कारवेति, करेंतं णाणुजाणति, मणसा ५; अहवा न करेइ, ण कारवेति, करेंतं णाणुजाणति, वयसा ६; अहवा न करेति, न कारवेति, करेंतं णाणुजाणति, कायसा ७। दुविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेति, मणसा वयसा कायसा ८; अहवा न करेति, करेंतं नाणुजाणइ, मणसा वयसा कायसा ९; अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ; मणसा वयसा कायसा १०। दुविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेति न कारवेति, मणसा वयसा ११; अहवा न करेति, न कारवेति, मणसा कायसा १२; अहवा न करेति, न कारवेति, वयसा कायसा १३; अहवा न करेति, करेंतं नाणुजाणइ, मणसा वयसा १४, अहवा न करेति, करेंतं नाणुजाणइ, मणसा कायसा १५, अहवा न करेति, करेंतं नाणुजाणति, वयसा कायसा १६; अहवा न कारवेति, करेंतं नाणुजाणति मणसा वयसा १७; अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ, मणसा कायसा १८; अहवा न कारवेति, करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा १९। दुविहं एक्कविहेणं पडिक्कममाणे न करेति, न कारवेति, मणसा २०; अहवा न करेति, न कारवेति वयसा २१; अहवा न करेति, न कारवेति कायसा २२; अहवा न करेति, करेंतं नाणुजाणइ, मणसा २३; अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणति, वयसा २४; अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ, कायसा २५; अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ, मणसा २६; अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ, वयसा २७; अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ, कायसा २८। एगविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे न करेति, मणसा वयसा कायसा २९; अहवा न कारवेइ मणसा वयसा कायसा ३०; अहवा करेंतं नाणुजाणति मणसा वयसा कायसा ३१; एक्कविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेति मणसा वयसा ३२; अहवा न करेति मणसा कायसा ३३; अहवा न करेइ वयसा कायसा ३४; अहवा न कारवेति मणसा वयसा ३५, अहवा न कारवेति मणसा कायसा ३६; अहवा न कारवेइ वयसा कायसा ३७; अहवा करेंतं नाणुजाणति मणसा वयसा ३८; अहवा करेंतं नाणुजाणति मणसा कायसा ३९; अहवा करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा ४०। एक्कविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेति मणसा ४१; अहवा न करेति वयसा ४२; अहवा न करेति कायसा ४३, अहवा न कारवेति मणसा ४४; अहवा न कारवेति वयसा ४५; अहवा न कारवेइ कायसा ४६; अहवा करेंतं नाणुजाणइ मणसा ४७; अहवा करेंतं नाणुजाणति वयसा ४८; अहवा करेंतं नाणुजाणइ कायसा ४९। (३) पडुप्पन्नं संवरमाणे किं तिविहं तिविहेणं संवरेइ ? एवं जहा पडिक्कममाणेणं एगूणपण्णं भंगा भणिया एवं संवरमाणेण वि एगूणपण्णं भंगा भाणियव्वा। (४) अणागतं पच्चक्खमाणे किं तिविहं तिविहेणं पच्चक्खाइ ? एवं ते चेव भंगा एगूणपण्णं भाणियव्वा जाव अहवा करेंतं नाणुजाणइ कायसा। ७. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव थूलमुसावादे अपच्चक्खाए भवइ, से णं भंते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे एवं जहा पाणाइवातस्स सीयालं भंगसतं (१४७) भणितं तहा मुसावादस्स वि भाणियव्वं। ८. एवं अदिण्णादाणस्स वि। एवं थूलगस्स मेहुणस्स वि। थूलगस्स परिग्गहस्स वि जाव अहवा करेंतं नाणुजाणइ कायसा। [सु. ९. समणोवासग-आजीवियोवासगाणं भिन्नतानिद्देसो] ९. एए खलु एरिसगा समणोवासगा भवंति,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नो खलु एरिसगा आजीवियोवासगा भवंति। [सु. १०. आजीवियसमयपरूवणा] १० आजीवियसमयस्स णं अयमट्ठे पण्णत्ते-अक्खीणपडिभोइणो सव्वे सत्ता, से हंता छेत्ता भत्ता लुंपित्ता विलुंपित्ता उद्दवइत्ता आहारमाहारेंति। [सु. ११. आजीवियोवासगाणं दुवालस नामाणि] ११. तत्थ खलु इमे दुवालस आजीवियोवासगा भवंति, तं जहा-ताले १ तालपलंबे २ उव्विहे ३ संविहे ४ अवविहे ५ उदए ६ नामुदए ७ णम्मुदए ८ अणुवालए ९ संखवालए १० अयंबुले ११ कायरए १२। [सु. १२. आजीवियोवासगाणं आचारपरूवणा] १२. इच्चेते दुवालस आजीवियोवासगा अरहंतदेवतागा अम्मा-पिउसुस्सूसगा; पंचफलपडिक्कंता, तं जहा उंबरेहिं, वडेहिं, बोरेहिं सतरेहिं पिलंखूहिं; पलंडु-ल्हसण-कंद-मूलविवज्जगा अणिल्लंछिएहिं अणक्कभिन्नेहिं गोणेहिं तसपाणविवज्जिएहिं चित्तेहिं वित्तिं कप्पेमाणे विहरंति। [सु. १३. आजीविओवासगेहिंतो पनरसकम्मादाणवज्जयाणं समणोवासगाणं पाहण्णपरूवणा] १३. 'एए वि ताव एवं इच्छिंति, किमंग पुण जे इमे समणोवासगा भवंति ?' जेसिं नो कप्पंति इमाइं पण्णरस कम्मादाणाइं सयं करेत्तए वा, कारवेत्तए वा, करेंतं वा अन्नं न समणुजाणेत्तए, तं जहा इंगालकम्मे वणकम्मे साडीकम्मे भाडीकम्मे फोडीकम्मे दंतवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे केसवाणिज्जे रसवाणिज्जे विसवाणिज्जे जंतपीलणकम्मे निल्लंछणकम्मे दवग्गिदावणया सर -दह - तलायपरिसोसणया असतीपोसणया। [सु. १४. समणोवासगाणं देवगइगामित्तं] १४. इच्चेते समणोवासगा सुक्का सुक्काभिजातीया भवित्ता कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। [सु. १५. देवलोगभेयपरूवणा] १५. कतिविहा णं भंते ! देवलोगा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा भवणवासि-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। **☆☆☆ अट्ठमसयस्स पंचमो उद्देसओ ॥७.५॥ ☆☆☆ छट्ठो उद्देसो 'फासुगं' ☆☆☆** [सु. १. तहाविहसमण -माहणे फासुएसणिज्जपडिलाहगस्स समणोवासगस्स निज्जराकरपरूवणा] १. समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेमाणस्स किं कज्जति ? गोयमा ! एगंतंसो से निज्जरा कज्जइ, नत्थि य से पावे कम्मे कज्जति। [सु. २. तहाविहसमण-माहणे अफासुयअणेसणिज्जपडिलाहगस्स समणोवासगस्स बहुनिज्जरा-अप्पकम्मकरणपरूवणा] २. समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण-पाण जाव पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ ? गोयमा ! बहुतरिया से निज्जरा कज्जइ, अप्पतराए से पावे कम्मे कज्जइ। [सु. ३. तहाविहं असंजयाइयं पडिलाहगस्स समणोवासयस्स एगंतकम्मबंध-निज्जराऽभावपरूवणा] ३. समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं अस्संजयअविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मं फासुएण वा अफासुएण वा एसणिज्जेण वा अणेसणिज्जेण वा असण-पाण जाव किं कज्जइ ? गोयमा ! एगंतसो से पावे कम्मे कज्जइ, नत्थि से काइ निज्जरा कज्जइ। [सु. ४-६. गाहावइदिण्णपंड-पडिग्गह-गोच्छग-रयहरण-चोलपट्टग-कंबल-लट्ठी संथारगेसु गाहगनिग्गंथं पडुच्च दायगनिद्देसाणुसारिणी उवभोगपरूवणा] ४. (१) निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठं केइ दोहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, एगं थेराणं दलयाहि, से य तं पिंडं पडिग्गहेज्जा, थेरा य से अणुगवेसियव्वा सिया, जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेवाऽणुप्पदायव्वे सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तं नो अप्पाणा भुंजेज्जा, नो अन्नेसिं दावए, एगंते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थंडिले पडिलेहेत्ता, पमज्जित्ता परिट्ठावेतव्वे सिया। (२) निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठं केति तिहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, दो थेराणं दलयाहि, से य ते पडिग्गहेज्जा, थेरा य से अणुगवेसेयव्वा, सेसं तं चेव जाव परिट्ठावेयव्वे सिया। (३) एवं जाव दसहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा, नवरं एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, नव थेराणं दलयाहि, सेसं तं चेव जाव परिट्ठावेतव्वे सिया। ५. (१) निग्गंथं च णं गाहावइ जाव केइ दोहिं पडिग्गहेहिं उवनिमंतेज्जा एगं आउसो ! अप्पणा परिभुंजाहि, एगं थेराणं दलयाहि, से य तं पडिग्गहेज्जा, तहेव जाव तं नो अप्पणा परिभुंजेज्जा, नो अन्नेसिं दावए। सेसं तं चेव जाव परिट्ठावेयव्वे सिया। (२) एवं जाव दसहिं पडिग्गहेहिं। ६. एवं जहा पडिग्गहवत्तव्वया भणिया एवं गोच्छग-रयहरण-चोलपट्टग-कंबल-लट्ठी-संथारगवत्तव्वया य भाणियव्वा जाव दसहिं संथारएहिं उवनिमंतेज्जा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव परिट्ठावेयव्वे सिया। [सु. ७. पिंडयायपतिण्णाए गाहावइकुलमणुपविट्ठस्स अण्णयरअकिच्चट्ठाणसेविस्स आलोयणादिपरिणामस्स निग्गंथस्स आराहगत्तं] ७. (१) निग्गंथेण य गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविट्ठेणं अन्नयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एवं भवति इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि विउट्टामि विसोहेमि अकरणयाए अब्भुट्ठेमि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जामि, तओ पच्छा थेराणं अंतियं आलोएस्सामि जाव तवोकम्मं पडिवज्जिस्सामि। से य संपट्ठिए, असंपत्ते, थेरा य अमुहा सिया, से णं भंते! किं आराहए विराहए?, गोयमा! आराहए, नो विराहए। (२) से य संपट्ठिए असंपत्ते अप्पणा य पुव्वामेव अमुहे सिया, से णं भंते! किं आराहए, विराहए? गोयमा! आराहए, नो विराहए। (३) से य संपट्ठिए, असंपत्ते थेरा य कालं करेज्जा, से णं भंते! किं आराहए विराहए? गोयमा! आराहए, नो विराहए। (४) से य संपट्ठिए असंपत्ते अप्पणा य पुव्वामेव कालं करेज्जा, से णं भंते! किं आराहए विराहए? गोयमा! आराहए, नो विराहए। (५) से य संपट्ठिए संपत्ते, थेरा य अमुहा सिया, से णं भंते! किं आराहए विराहए? गोयमा! आराहए, नो विराहए। (६)-८ से य संपट्ठिए संपत्ते अप्पणा य०। एवं संपत्तेण वि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा जहेव असंपत्तेणं। [सु. ८-९. वियार-विहारभूमिणिक्खंतस्स गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स य अन्नयरअकिच्चठाणसेविस्स आलोयणादिपरिणामस्स निग्गंथस्स आराहगत्तं] ८. निग्गंथेणं य बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खेतेणं अन्नयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एवं भवति इहेव ताव अहं०। एवं एत्थ वि, ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए। ९. निग्गंथेण य गामाणुगामं दूइज्जमाणेणं अन्नयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एवं भवति इहेव ताव अहं०। एत्थ वि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए। [सु. १०. सत्तम-अट्ठम-नवमसुत्तवण्णितविसए निग्गंथीए आराहगतं] १०. (१) निग्गंथीए य गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठाए अन्नयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तीसे णं एवं भवइ -इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि जाव तवोकम्मं पडिवज्जामि तओ पच्छा पवत्तिणीए अंतियं आलोएस्सामि जाव पडिवज्जिस्सामि, सा य संपट्ठिया असंपत्ता, पवत्तिणी य अमुहा सिया, सा णं भंते! किं आराहिया, विराहिया? गोयमा! आराहिया, नो विराहिया। (२) सा य संपट्ठिया जहा निग्गंथस्स तिण्णि गमा भणिया एवं निग्गंथीए वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जाव आराहिया, नो विराहिया। [सु. ११. सत्तमाइदसमसुत्तपज्जंतपरूविय 'आराहगत' समत्थणे उण्णलोमाइ -अहयवत्थाइदिट्ठंतजुगं] ११. (१) से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-आराह,, नो विराहए? "गोयमा! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं उण्णलोभं वा गयलोभं वा सणलोभं वा कपपासलोमं वा तणसूयं वा दुहा वा तिहा वा संखेज्जहा वा छिंदित्ता अगणिकायंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा! छिज्जमाणे छिन्ने, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, डज्झमाणे दड्ढे त्ति वत्तव्वं सिया? हंता, भगवं! छिज्जमाणे छिन्ने जाव दड्ढे त्ति वत्तव्वं सिया। " २ से जहा वा केइ पुरिसे वत्थं अहतं वा धोतं वा तंतुग्गयं वा मंजिट्ठादोणीए पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, रज्जमाणे रत्ते त्ति वत्तव्वं सिया? हंता, भगवं! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते जाव रत्ते त्तिवत्तव्वं सिया। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ-आराहए, नो विराहए"। [सु. १२-१३. झियायमाणे पदीवे अगारे य जोइजलणपडिवादणं] १२. पईवस्स णं भंते! झियायमाणस्स किं पदीवे झियाति, लट्ठी झियाइ, वत्ती झियाइ, तेल्ले झियाइ, दीवचंपए झियाइ, जोती झियाइ? गोयमा! नो पदीवे झियाइ, जाव नो दीवचंपए झियाइ, जोती झियाइ। १३. अगारस्स णं भंते! झियायमाणस्स किं अगारे झियाइ, कुड्डा झियायंति, कडणा झियायंति, धारणा झियायंति, बलहरणे झियाइ, वंसा झियायंति, मल्ला झियायंति, वग्गा झियायंति, छित्तरा झियायंति, छाणे झियाति, जोती झियाति? गोयमा! नो अगारे झियाति, नो कुड्डा झियातिं, जाव नो छाणे झियाति, जोती झियाति। [सु. १४-२९. जीव -चउवीसदंडएसु एगत्त-पहुत्तेणं एग -बहुओरालियाइपंचसरीरेहिं किरियापरूवणा] १४. जीवे णं भंते! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए? गोयमा! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए, सिय अकिरिए। १५. नेरइए णं भंते! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए? गोयमा! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए। १६. असुरकुमारे णं भंते! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए? एवं चेव। १७. एवं जाव वेमाणि,, नवरं मणुस्से जहा जीवे (सु. १४)। १८. जीवे णं भंते! ओरालियसरीरेहिंतो कतिकिरिए? गोयमा! सिय तिकिरिए जाव सिय

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकिरिए। १९. नेरइए णं भंते ! ओरालियसरीरेहिंतो कतिकिरिए ? एवं एसो जहा पढमो दंडओ (सु. १५-१७) तहा इमो वि अपरिसेसो भाणियव्वो जाव वेमाणिए, नवरं मणुस्से जहा जीवे (सु. १८)। २०. जीवा णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ? गोयमा ! सिय तिकिरिया जाव सिय अकिरिया। २१. नेरइया णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ? एवं एसो वि जहा पढमो दंडओ (सु. १५-१७) तहा भाणियव्वो जाव वेमाणिया, नवरं मणुस्सा जहा जीवा (सु. २०)। २२. जीवा णं भंते ! ओरालियसरीरेहिंतो कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि, अकिरिया वि। २३. नेरइया णं भंते ! ओरालियसरीरेहिंतो कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि। २४. एवं जाव वेमाणिया, नवरं मणुस्सा जहा जीवा (सु. २२)। २५. जीवे णं भंते ! वेउव्वियसरीराओ कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय अकिरिए। २६. नेरइए णं भंते ! वेउव्वियसरीराओ कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए। २७. एवं जाव वेमाणिए, नवरं मणुस्से जहा जीवे (सु.२५)। २८. एवं जहा ओरालियसरीरेणं चत्तारि दंडगा भणिया तहा वेउव्वियसरीरेण वि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा, नवरं पंचमकिकरिया न भण्णइ, सेसं तं चेव। २९. एवं जहा वेउव्वियं तहा आहारगं पि, तेयगं पि, कम्मगं पि भाणियव्वं। एक्केक्के चत्तारि दंडगा भाणियव्वा जाव वेमाणिया णं भंते ! कम्मगसरीरेहिंतो कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।☆☆☆

अट्ठमसयस्स छट्ठो उद्देसओ समत्तो ॥८.६॥ **सातमो उद्देसो 'अदत्ते'** ☆☆☆ [सु. १-२. रायगिहे नगरे अन्नउत्थियवासो भगवओ समोसरणं च] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे। वण्णओ। गुणसिलए चेइए। वण्णओ, जाव पुढविसिलावट्टओ। तस्स णं गुणसिलयस्स चेइयस्स अदुरसामंते बहवे अन्नउत्थिया परिवसंति। २. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आदिगारे जाव समोसढे जाव बरिसा पडिगया। [सु. ३-१५. अन्नउत्थियाणं निग्गंथथेरेहिं सह अदिण्णादाणविसओ विवादो] ३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना जहा बितियसए (स. २ उ. ५ सु. १२) जाव जीवियासामरणभयविप्पमुक्का समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा जाव विहरंति। ४. तए णं ते अन्नउत्थिया जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते थेरे भगवंते एवं वयासी तुब्भे णं अज्जो ! तिविहं तिविहेणं अस्संजयअविरयअप्पडिहय जहा सत्तमसए बितिए उद्देसए (सु. ७ उ. २ सु. १ (२) जाव एगंतबाला यावि भगह। ५. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं अस्संजयअविरय जाव एगंतबाला यावि भवामो ? ६. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी तुब्भे णं अज्जो ! अदिन्नं गेण्हह, अदिन्नं भुंजह,अदिन्नं सातिज्जह। तए णं तुब्भे अदिन्नं गेण्हमाणा, अदिन्नं भुंजमाणा, अदिन्नं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं अस्संजयअविरय जाव एगंतबाला यावि भगह। ७. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे अदिन्नं गेण्हामो, अदिन्नं भुंजामो, अदिन्नं सातिज्जमो, तए णं अम्हे अदिन्नं गेण्हमाणा, जाव अदिन्नं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं अस्संजय जाव एगंतबाला यावि भवाओ ? ८. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी तुम्हाणं अज्जो ! दिज्जमाणे अदिन्ने, पडिगहेज्जमाणे अपडिग्गहिए, निसिरिज्जमाणे अणिसट्ठे, तुब्भे णं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गहगं असंपत्तं एत्थ णं अंतरा केइ अवहरिज्जा, गाहावइस्स णं तं, नो खलु तं तुब्भं, तए णं तुब्भे अदिन्नं गेण्हह जाव अदिन्नं सातिज्जह, तए णं तुब्भे अदिन्नं गेण्हमाणा जाव एगंतबाला यावि भवह। ९. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी नो खलु अज्जो ! अम्हे अदिन्नं गिण्हामो, अदिन्नं भुंजामो, अदिन्नं सातिज्जामो, अम्हे णं अज्जो ! दिन्नं गेण्हामो, दिन्नं मुंजामो, दिन्नं सातिज्जामो, तए णं अम्हे दिन्नं गेण्हमाणा दिन्नं भुंजमाणा दिन्नं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं संजयविरयपडिहय जहा सत्तमसए (स.७ उ. २ सु. १ २) जाव एगंतपंडिया यावि भवामो। १०. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी केण कारणेणं अज्जो ! तुम्हे दिन्नं गेण्हह जाव दिन्नं सातिज्जह, तए णं तुब्भे दिन्नं गेण्हमाणा जाव एगंतपंडिया यावि भवह ? ११. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अम्हे णं अज्जो ! दिज्जमाणे दिन्ने, पडिगहेज्जमाणे पडिग्गहिए, निसिरिज्जमाणे निसट्ठे। अम्हं णं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गहगं असंपत्तं एत्थ णं अंतरा केइ अवहरेज्जा, अम्हं णं तं णो खलु तं गाहावइस्स, तए णं अम्हे दिन्नं गेण्हामो दिन्नं भुजामो, दिन्नं सातिज्जमो, तए णं अम्हे दिन्नं गेण्हमाणा जाव दिन्नं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं संजय जाव एगंतपंडिया यावि भवामो। तुब्भे णं अज्जो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं अस्संजय जाव एगंतबाला यावि भवह। १२. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं जाव एगंतबाला यावि भवामो ? १३. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्विं वयासी तुब्भे णं अज्जो ! अदिन्नं गेण्हह, अदिन्नं भुंजह, अदिन्नं साइज्जह, तए णं अज्जो ! तुब्भे अदिन्नं गे० जाव एगंतबाला यावि भवह। १४. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे अदिन्नं गेण्हामो जाव एगंतबाला यावि भवामो ? १५. तए णं थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी तुब्भे णं अज्जो ! दिज्जमाणे अदिन्ने तं चेव जाव गाहावइस्स णं तं, णो खलु तं तुब्भं, तए णं तुब्भे अदिन्नं गेण्हह, तं चेव जाव एगंतबाला यावि भवह। [सु. १६-२४. अन्नउत्थियाणं निग्गंथथेरेहिं सह पुढविहिंसाविसओ विवादो] १६. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी तुब्भे णं अज्जो ! तिविहं तिविहेणं अस्संजय जाव एगंतबाला यावि भवह। १७. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी केण कारणेणं अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवामो ? १८. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी तुब्भे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चेह अभिहणह वत्तेह लेसेह संघाएह संघट्टेह परितावेह किलामेह उवद्दवेह, तए णं तुब्भे पुढविं पेच्चेमाणा जाव उवद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं असंजयअविरय जाव एगंतबाला यावि भवह। १९. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी नो खलु अज्जो ! अम्हे रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चेमो अभिहणामो जाव उवद्दवेमो, अम्हे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा कायं वा जोगं वा रियं वा पडुच्च देसं देसेणं वयामो,पएसं पएसेणं वयामो, तेणं अम्हे देसं देसेणं वयमाणा पएसं पएसेणं वयमाणा नो पुढविं पेच्चेमो अभिहणामो जाव उवद्दवेमो, तए णं अम्हे पुढविं अपेच्चेमाणा अणभिहणेमाणा जाव अणुवद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं संजय जाव एगंतपंडिया यावि भवामो, तुब्भे णं अज्जो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं अस्संजय जाव बाला यावि भवह। २०. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवामो ? २१. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी तुब्भे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चेह जाव उवद्दवेह, तए णं तुब्भे पुढविं पेच्चेमाणा जाव उवद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह। २२. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी तुब्भे णं अज्जो ! गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कंते रायगिहं नगरं संपाविउकामे असंपत्ते ? २३. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी नो खलु अज्जो ! अम्हं गम्ममाणे अगए, वीइक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कंते रायगिहं नगरं जाव असंपत्ते, अम्हं णं अज्जो ! गम्ममाणे गए, वीतिक्कमिज्जमाणे वीतिक्कंते रायगिहं नगरं संपाविउकामे संपत्ते, तुब्भं णं अप्पणा चेव गम्ममाणे अगए वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कंते रायगिहं नगरं जाव असंपत्ते। २४. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं पडिहणेंति, पडिहणित्ता गइप्पवायं नाममज्झयणं पन्नवइंसु। [सु. २५. गइप्पवायभेयपरूवणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] २५. कइविहे णं भंते ! गइप्पवाए पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे गइप्पवाए पण्णत्ते, तं जहा पयोगगती ततगती बंधणछेयणगती उववायगती विहायगती। एत्तो आरब्भ पयोगपयं निरवसेसं भाणियव्वं, जाव से त्तं विहायगई। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ।☆☆☆ **अट्ठमसयस्स सत्तमो ॥८.७॥** ☆☆☆ **अट्ठमो उद्देसो 'पडिणीए'** ☆☆☆ [सु. १. अट्ठमुद्देसगस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे नयरे जाव एवं वयासी [सु. २-७. गुरु-गइ-समूह-अणुकंपा-सुय-भावपडिणीयभेयपरूवणा] २. गुरू णं भंते ! पडुच्च कति पडिणीया पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए थेरपडिणीए। ३. गइं णं भंते ! पडुच्च कति पडिणीया पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा इहलोगपडिणीए परलोगपडिणीए दुहओलोगपडिणीए। ४. समूहं णं भंते ! पडुच्च कति पडिणीया पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पडिणीया

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ता, तं जहा कुलपडिणीए गणपडिणीए संघपडिणीए। ५. अणुकंप पडुच्च० पुच्छा। गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा तवस्सिपडिणीए गिलाणपडिणीए सेहपडिणीए। ६. सुयं णं भंते ! पडुच्च० पुच्छा। गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा सुत्तपडिणीए अत्थपडिणीए तदुभयपडिणीए। ७. भावं णं भंते ! पडुच्च० पुच्छा। गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा नाणपडिणीए दंसणपडिणीए चरित्तपडिणीए। [सु. ८. पंचविहववहारपरूवणा] ८. कइविहे णं भंते ! ववहारे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे ववहारे पण्णत्ते, तं जहा आगम-सुत-आणा-धारणा-जीए। जहा से तत्थ आगमे सिया, आगमेणं ववहारं पट्ठवेज्जा। णो य से तत्थ आगमे सिया; जहा से तत्थ सुते सिया सुएणं ववहारं पट्ठवेज्जा। णो वा से तत्थ सुए सिया; जहा से तत्थ आणा सिया, आणाए ववहारं पट्ठवेज्जा। णो य से तत्थ आणा सिया; जहा से तत्थ धारणा सिया धारणाए ववहारं पट्ठवेज्जा। णो य से तत्थ धारणा सिया; जहा से तत्थ जीए सिया जीएणं ववहारं पट्ठवेज्जा। इच्चेएहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा, तं जहा आगमेणं सुएणं आणाए धारणाए जीएणं। जहा जहा से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा तहा ववहारं पट्ठवेज्जा। [सु. ९. पंचविहववहारववहरमाणे निग्गंथे आराहए] ९. से किमाहु भंते ! आगमबलिया समणा निग्गंथा इच्चेयं पंचविहं ववहारं जया जया जहिं जहिं तया तया तहिं तहिं अणिस्सिओवस्सितं सम्मं ववहरमाणे समणे निग्गंथे आणाए आराहए भवइ ? सु. १०. बंधस्स भेयजुगपरूवणा १०. कइविहे णं भंते ! बंधे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा इरियावहियाबंधे य संपराइयबंधे य। [सु. ११-१४. विविहअवेक्खाए वित्थरओ इरियावहियबंधसामिपरूवणा] ११. इरियावहियं णं भंते ! कम्मं किं नेरइओ बंधइ, तिरिक्खजोणिओ बंधइ, तिरिक्खजोणिणी बंधइ, मणुस्सो बंधइ, मणुस्सी बंधइ, देवो बंधइ, देवी बंधइ ? गोयमा ! नो नेरइओ बंधइ, नो तिरिक्खजोणीओ बंधइ, नो तिरिक्खजोणिणी बंधइ, नो देवो बंधइ, नो देवी बंधइ, पुव्वपडिवन्नए पडुच्च मणुस्सा य, मणुस्सीओ य बंधंति, पडिवज्जमाणए पडुच्च मणुस्सो वा बंधइ १, मणुस्सी वा बंधइ २, मणुस्सा वा बंधंति ३, मणुस्सीओ वा बंधंति ४, अहवा मणुस्सो य मणुस्सी य बंधइ ५, अहवा मणुस्सो य मणुस्सीओ य बंधंति ६, अहवा मणुस्सा य मणुस्सी य बंधंति ७, अहवा मणुस्सा य मणुस्सीओ य बंधंति ८। १२. तं भंते ! किं इत्थी बंधइ, पुरिसो बंधइ, नपुंसगो बंधति, इत्थीओ बंधंति, पुरिसा बंधंति, नपुंसगा बंधंति ? नोइत्थीनोपुरिसोनोनपुंसगो बंधइ ? गोयमा ! नो इत्थी बंधइ, नो पुरिसो बंधइ जाव नो नपुंसओ बंधइ। पुव्वपडिवन्नए पडुच्च अवगयवेदा बंधंति, पडिवज्जमाणए य पडुच्च अवगयवेदो वा बंधति, अवगयवेदा वा बंधंति। १३. जइ भंते ! अवगयवेदो वा बंधइ, अवगयवेदा वा बंधंति तं भंते ! किं इत्थीपच्छाकडो बंधइ १, पुरिसपच्छाकडो बंधइ २, नपुंसकपच्छाकडो बंधइ ३, इत्थीपच्छाकडा बंधंति ४, पुरिसपच्छाकडा वि बंधंति ५, नपुंसगपच्छाकडा वि बंधंति ६, उदाहु इत्थिपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधति ४, उदाहु इत्थीपच्छाकडो य णपुंसगपच्छाकडो य बंधइ ४, उदाहु पुरिसपच्छाकडो य णपुंसगपच्छाकडो य बंधइ ४, उदाहु इत्थिपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य णपुंसगपच्छाकडो य भाणियव्वं ८, एवं एते छव्वीसं भंगा २६ जाव उदाहु इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसकपच्छाकडा य बंधंति ? गोयमा ! इत्थिपच्छाकडो वि बंधइ १, पुरिसपच्छाकडो वि बंधइ २ नपुंसगपच्छाकडो वि बंधइ ३, इत्थीपच्छाकडा वि बंधंति ४, पुरिसपच्छाकडा वि बंधंति ५, नपुंसकपच्छाकडा वि बंधंति ६, अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधइ ७, एवं एए चेव छव्वीसं भंगा भाणियव्वा जाव अहवा इत्थिपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति। १४. तं भंते ! किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ १, बंधी बंधइ न बंधिस्सइ २, बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ३, बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ४, न बंधी बंधइ बंधिस्सइ ५, न बंधी बंधइ न बंधिस्सइ ६, न बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ७, न बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ८ ? गोयमा ! भवागरिसं पडुच्च अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ। अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ। एवं तं चेव सव्वं जाव अत्थेगतिए न बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ। गहणागरिसं पडुच्च अत्थेगतिए बंधी, बंधइ, बंधिस्सइ; एवं जाव अत्थेगतिए न बंधी, बंधइ, बंधिस्सइ। णो चेव णं न बंधी, बंधइ, न बंधिस्सइ। अत्थेगतिए न बंधी, न बंधइ, बंधिस्सइ। अत्थेगतिए न बंधी, न बंधइ, न बंधिस्सइ। [सु. १५-१६. इरियावहियबंधं पडुच्च

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सादिसपज्जवसियाइ - देससव्वाइबंधपरूवणा] १५. तं भंते ! किं साईयं सपज्जवसियं बंधइ, साईयं अपज्जवसियं बंधइ, अणाईयं सपज्जवसियं बंधइ, अणाईयं अपज्जवसियं बंधइ ? गोयमा ! साईयं सपज्जवसियं बंधइ, नो साईयं अपज्जवसियं बंधइ, नो अणाईयं सपज्जवसियं बंधइ, नो अणाईयं अपज्जवसियं बंधइ। १६. तं भंते ! किं देसेणं देसं बंधइ, देसेणं सव्वं बंधइ, सव्वेणं देसं बंधइ, सव्वेणं सव्वं बंधइ ? गोयमा ! नो देसेणं देसं बंधइ, णो देसेणं सव्वं बंधइ, नो सव्वेणं देसं बंधइ, सव्वेणं सव्वं बंधइ। [सु. १७-२०. विविहअवेक्खाए वित्थरओ संपराइयबंधसामिपरूवणा] १७.संपराइयं णं भंते ! कम्मं किं नेरइयो बंधइ, तिरिक्खजोणीओ बंधइ, जाव देवी बंधइ ? गोयमा ! नेरइओ वि बंधइ, तिरिक्खजोणीओ वि बंधइ, तिरिक्खजोणिणी वि बंधइ, मणुस्सो वि बंधइ, मणुस्सी वि बंधइ, देवो वि बंधइ, देवी वि बंधइ। १८. तं भंते ! किं इत्थी बंधइ, पुरिसो बंधइ, तहेव जाव नोइत्थीनोपुरिसोनोनपुंसओ बंधइ ? गोयमा ! इत्थी वि बंधइ, पुरिसो वि बंधइ, जाव नपुंसगो वि बंधइ। अहवेए य अवगयवेदो य बंधइ, अहवेए य अवगयवेया य बंधंति। १९. जइ भंते ! अवगयवेदो य बंधइ अवगयवेदा य बंधंति तं भंते ! किं इत्थीपच्छाकडो बंधइ, पुरिसपच्छाकडो एवं जहेव इरियावहियाबंधगस्स तहेव निरवसेसं जाव अहवा इत्थीपच्छाकडा य, पुरिसपच्छाकडा य, नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति। २०. तं भंते ! किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ; बंधी बंधइ न बंधिस्सइ २; बंधी न बंधइ, बंधिस्सइ ३; बंधी न बंधइ, न बंधिस्सइ ४ ? गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ १; अत्थेगतिए बंधी बंधइ, न बंधिस्सइ २; अत्थेगतिए बंधी न बंधइ, बंधिस्सइ ३; अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ४। [सु. २१-२२. संपराइयबंधं पडुच्च सादिसपज्जवसियाइ - देससव्वाइबंधपरूवणा] २१. तं भंते ! किं साईयं सपज्जवसियं बंधइ ? पुच्छा तहेव। गोयमा ! साईयं वा सपज्जवसियं बंधइ, अणाईयं वा सपज्जवसियं बंधइ, अणाईयं वा अपज्जवसियं बंधइ, णो चेव णं साईयं अपज्जवसियं बंधइ। २२. तं भंते ! किं देसेणं देसं बंधइ ? एवं जहेव इरियावहियाबंधगस्स जाव सव्वेणं सव्वं बंधइ। [सु. २३. कम्मपयडिभेयपरूवणा] २३. कइ णं भंते ! कम्मपयडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपयडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा- णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं। [सु. २४. परीसहभेयपरूवणा] २४. कइ णं भंते ! परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता, तं जहा-दिगिंछापरीसहे १, पिवासापरीसहे २, जाव दंसणपरीसहे २२। [सु. २५-२९. चउसु कम्मपयडीसु परीसहसंखापरूवणा] २५. एए णं भंते ! बावीसं परीसहा कतिसु कम्मपगडीसु समोयरंति ? गोयमा ! चउसु कम्मपयडीसु समोयरंति, तं जहा- नाणावरणिज्जे, वेयणिज्जे, मोहणिज्जे, अंतराइए। २६. नाणावरणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! दो परीसहा समोयरंति, तं जहा-पण्णापरीसहे नाणपरीसहे य। २७. वेयणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एक्कारस परीसहा समोयरंति, तं जहा- "पंचेव आणुपुव्वी, चरिया, सेज्जा, वहे य, रोगे य। तणफास जल्लमेव य एक्कारस वेदणिज्जम्मि" ॥१॥ २८. (१) दंसणमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एगे दंसणपरीसहे समोयरइ। (२) चरित्तमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! सत्त परीसहा समोयरंति, तं जहा- "अरती अचेल इत्थी निसीहिया जायणा य अक्कोसे। सक्कारपुरक्कारे चरित्तमोहम्मि सत्तेते" ॥२॥ २९. अंतराइए णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एगे अलाभपरीसहे समोयरइ। [सु. ३०-३४. अट्ठविह-सत्तविह-छव्विह-एक्कविहबंधगे अबंधगे य परीसहसंखापरूवणा] ३०. सत्तविहबंधगस्स णं भंते ! कति परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता, वीसं पुण वेदेइ-जं समयं सीयपरीसहं वेदेति णो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ णो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ। जं समयं चरियापरीसहं वेदेति णो तं समयं निसीहियापरीसहं वेदेति, जं समयं निसीहियापरीसहं वेदेइ णो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ। ३१. अट्ठविहबंधगस्स णं भंते ! कति परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता० एवं (सु. ३०) अट्ठविहबंधगस्स। ३२. छव्विहबंधगस्स णं भंते ! सरागछउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चोद्दस परीसहा पण्णत्ता, बारस पुण वेदेइ-जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ णो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ। जं समयं चरियापरीसहं वेदेति णो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ, जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेति णो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ। ३३. (१) एक्कविहबंधगस्स णं भंते ! वीयरागछउमत्थस्स कति परीसहा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ता ? गोयमा ! एवं चेव जहेव छव्विहबंधगस्स। (२) एगविहबंधगस्स णं भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता, नव पुण वेदेइ। सेसं जहा छव्विहबंधगस्स। ३४. अबंधगस्स णं भंते ! अजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता, नव पुण वेदेइ, जं समयं सीयपरीसहं वेदेति नो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेति नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ। जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेति, जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ। [सु. ३५-४५. उच्चत्त-खेत्तगमण-खेत्तावभासण-खेत्तुज्जोवण-खेत्ततवण-खेत्तभासणाइं पडुच्च वित्थरओ जंबुद्दीवसूरियवत्तव्वया] ३५. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति, अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ? हंता, गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य तं चेव जाव अत्थमणमुहूत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति। ३६. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि य मज्झंतियमुहुत्तंसि य, अत्थमणमुहुत्तंसि य सव्वत्थ समा उच्चत्तेणं ? हंता, गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमण जाव उच्चत्तेणं। ३७. जइ णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि य मज्झंतियमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि जाव उच्चत्तेणं से केणं खाइ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ?' गोयमा ! लेसापडिघाएणं उग्गमणमुहुत्तंसि दूर य मूले य दीसंति, लेसाभितावेणं मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति, लेस्सापडिघाएणं अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति जाव अत्थमण जाव दीसंति। ३८. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया किं तीयं खेत्तं गच्छंति, पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छंति, अणागयं खेत्तं गच्छंति ? गोयमा ! णो तीयं खेत्तं गच्छंति, पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छंति, णो अणागयं खेत्तं गच्छंति। ३९. जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया किं तीयं खेत्तं ओभासंति, पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासंति, अणागयं खेत्तं ओभासंति ? गोयमा ! नो तीयं खेत्तं ओभासंति, पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासंति, नो अणागयं खेत्तं ओभासंति। ४०. तं भंते ! किं पुट्ठं ओभासंति, अपुट्ठं ओभासंति ? गोयमा ! पुट्ठं ओभासंति, नो अपुट्ठं ओभासंति जाव नियमा छद्दिसिं। ४१. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया किं तीयं खेत्तं उज्जोवेंति ? एवं चेव जाव नियमा छद्दिसिं। ४२. एवं तवेंति, एवं भासंति जाव नियमा छद्दिसिं। ४३. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरियाणं किं तीए खेत्ते किरिया कज्जइ, पडुप्पन्ने खित्ते किरिया कज्जइ, अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ ? गोयमा ! नो तीए खेत्ते किरिया कज्जइ, पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया कज्जइ, णो अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ। ४४. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जति, अपुट्ठा कज्जइ ? गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जति जाव नियमा छद्दिसिं। ४५. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया केवतियं खेत्तं उड्ढं तवंति, केवतियं खेत्तं अहे तवंति, केवतियं खेत्तं तिरियं तवंति ? गोयमा ! एगं जोयणसयं उड्ढं तवंति, अट्ठारस जोयणसयाइं अहे तवंति, सीयालीसं जोयणसहस्साइं दोण्णि तेवट्ठे जोयणसए एक्कवीसं च सट्ठिभाए जोयणस्स तिरियं तवंति। [सु. ४६-४७. चंदाइउड्ढोववन्नगपरूवणाइजाणणत्थं जीवाभिगमसुत्तावलोयणनिद्देसो] ४६. अंतो णं भंते ! माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स जे चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवा ते णं भंते ! देवा किं उड्ढोववन्नगा ? जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव उक्कोसेणं छम्मासा। ४७. बहिया णं भंते ! माणुसुत्तरस्स० जहा जीवाभिगमे जाव इंदट्ठाणे णं भंते ! केवतियं कालं उववाएणं विरहिए पन्नत्ते ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆ **अट्ठमसए अट्ठमो उद्देसो समत्तो ॥८.८॥** ☆☆☆ **नवमो उद्देसो 'बंध'** ☆☆☆ [सु. १. पयोगबंध-वीससाबंधनामं बंधभेयजुगं] १. कइविहे णं भंते ! बंधे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे बंधेपण्णत्ते, तं जहा पयोगबंधे य, वीससाबंधे य। [सु. २-११. वीससाबंधस्स भेय-पभेयनिरूवणापुव्वं वित्थरओ परूवणा] २. वीससाबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा साईयवीससाबंधे य अणाईयवीससाबंधे य। ३. अणाईयवीससाबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे, अधम्मत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगासत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे। ४. धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे णं भंते ! किं देसबंधे सव्वबंधे ? गोयमा ! देसबंधे, नो सव्वबंधे। ५. एवं अधम्मत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे वि, एवं आगासत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे वि। ६. धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाईयवीससाबंधेणं भंते ! कालओ केवच्चिरं होई ? गोयमा ! सव्वद्धं। ७. एवं अधम्मत्थिकाए, एवं आगासत्थिकाये। ८. सादीयवीससाबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा बंधणपच्चइए भायणपच्चइए परिणामपच्चइए। ९. से किं तं बंधणपच्चइए ? बंधणपच्चइए, जं णं परमाणुपोग्गला दुपएसिय-तिपएसिय-जाव-दसपएसिय-संखेज्जपएसिय-असंखेज्जपएसिय -अणंतपएसियाणं खंधाणं वेमायनिद्धयाए वेमायलुक्खयाए वेमायनिद्ध-लुक्खयाए बंधणपच्चइएणं बंधे समुप्पज्जइ जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। से त्तं बंधणपच्चइए। १०. से किं तं भायणपच्चइए ? भायणपच्चइए, जं णं जुण्णसुरा -जुण्णगुल -जुण्णतंदुलाणं भायणपच्चइएणं बंधे समुप्पज्जइ जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। से त्तं भायणपच्चइए। ११. से किं तं परिणामपच्चइए ? परिणामपच्चइए, जं णं अब्भाणं अब्भरुक्खाणं जहा ततियसए (स० ३ उ० ७ सु. ४ ५) जाव अमोहाणं परिणामपच्चइएणं बंधे समुप्पज्जइ जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा। से त्तं परिणामपच्चइए। से त्तं सादीयवीससाबंधे। से त्तं वीससाबंधे। [सु. १२-१२९. पयोगबंधस्स वित्थरओ परूवणा] [सु.१२. पयोगबंधस्स भेय -पभेयपरूवणा] १२. से किं तं पयोगबंधे ? पयोगबंधे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा अणाईए वा अपज्जवसिए १, सादीए वा अपज्जवसिए २, सादीए वा सपज्जवसिए ३। तत्थ णं जे से अणाईए अपज्जवसिए से णं अट्ठण्हं जीवमज्झपएसाणं। तत्थ वि णं तिण्हं तिण्हं अणाईए अपज्जवसिए, सेसाणं साईए। तत्थ णं जे से सादीए अपज्जवसिए से णं सिद्धाणं। तत्थ णं जे से साईए सपज्जवसिए से णं चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा आलावणबंधे अल्लियावणबंधे सरीरबंधे सरीरप्पयोगबंधे। [सु. १३. आलावणबंधपरूवणा] १३. से किं तं आलावणबंधे ? आलावणबंधे, जं णं तणभाराण वा कट्ठभाराण वा पत्तभाराण वा पलालभाराण वा वेल्लभाराण वा वेत्तलया -वाग -वरत्त -रज्जु -वल्लि -कुस -दब्भमादिएहिं आलावणबंधे समुप्पज्जइ; जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। से त्तं आलावणबंधे। [सु. १४. आलियावणबंधस्स लेसणाबंधाइभेदचउक्कं] १४. से किं तं अल्लियावणबंधे ? अल्लियावणबंधे चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा लेसणाबंधे उच्चयबंधे समुच्चयबंधे साहणणाबंधे। [सु. १५. लेसणाबंधपरूवणा] १५. से किं तं लेसणाबंधे ? लेसणाबंधे, जं णं कुड्डाणं कुट्टिमाणं खंभाणं पासायाणं कट्ठाणं चम्माणं घडाणं पडाणं कडाणं छुहा-चिक्खल्ल-सिलेसलक्ख-महुसित्थमाइएहिं लेसणएहिं बंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। से त्तं लेसणाबंधे। [सु. १६. उच्चयबंधपरूवणा] १६. से किं तं उच्चयबंधे ? उच्चयबंधे, जं णं तणरासीण वा कट्ठरासीण वा पत्तरासीण वा तुसरासीण वा भुसरासीण वा गोयमरासीण वा अवगररासीण वा उच्चएणं बंधे समुप्पज्जइ. जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। से त्तं उच्चयबंधे। [सु १७. समुच्चयबंधपरूवणा] १७. से किं तं समुच्चयबंधे ? समुच्चयबंधे, जं णं अगड-तडाग-नदि-दह-वावी-पुक्खरणी-दीहियाणं गुंजालियाणं सराणं सरपंतिआणं सरसरपंतियाणं बिलपंतियाणं देवकुल-सभा-पवा-धूम-खाइयाणं फरिहाणं पागार-ऽट्टालग-चरिय-दार-गोपुर-तोरणाणं पासाय-घर-सरण-लेण-आवणाणं सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहमादीणं छुहा -चिक्खल्ल-सिलेससमुच्चएणं बंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं से त्तं समुच्चयबंधे। [सु. १८-२०. साहणणाबंधस्स भेयजुयपरूवणा] १८. से किं तं साहणणाबंधे ? साहणणाबंधे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा देससाहणणाबंधे य सव्वसाहणणाबंधे य। १९. से किं तं देससाहणणाबंधे ? देससाहणणाबंधे, जं णं सगडरह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-संदमाणिया-लोही-लोहकडाह-कडच्छुअ-आसण-सयण-खंभ-भंड-मत्त-उवगरणमाईणं देससाहणणाबंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। से त्तं देससाहणणाबंधे। २०. से किं तं सव्वसाहणणाबंधे ? सव्वसाहणणाबंधे, से णं खीरोदगमाईणं। से त्तं सव्वसाहणणाबंधे। से त्तं साहणणाबंधे। से त्तं अल्लियावणबंधे। [सु. २१-२३. सरीरबंधस्स भेयजुयपरूवणा] २१. से किं तं सरीरबंधे ? सरीरबंधे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा पुव्वप्पओगपच्चइए य पडुप्पन्नप्पओगपच्चइए य। २२. से किं तं पुव्वप्पओगपच्चइए ? पुव्वप्पओगपच्चइए, जं णं नेरइयाणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संसारत्थाणं सव्वजीवाणं तत्थ तत्थ तेसु तेसु कारणेसु समोहन्नमाणाणं जीवप्पदेसाणं बंधे समुप्पज्जइ। से त्तं पुव्वप्पयोगपच्चइए। २३. से किं तं पडुप्पन्नप्पयोगपच्चइए ? पडुप्पन्नप्पयोगपच्चइए, जं णं केवलनाणिस्स अणगारस्स केवलिसमुग्घाएणं समोहयस्स, ताओ समुग्घायाओ पडिनियत्तमाणस्स, अंतरा पंथे वट्टमाणस्स तेया-कम्माणं बंधे समुप्पज्जइ। किं कारणं ? ताहे से पएसा एगत्तीगया भवंति त्ति। से त्तं पडुप्पन्नप्पयोगपच्चइए। से त्तं सरीरबंधे। [सु. २४-१२९. सरीरप्पओगबंधस्स वित्थरओ परूवणा] [सु. २४. सरीरप्पओगबंधस्स ओरालियाइपंचभेयपरूवणा] २४. से किं तं सरीरप्पयोगबंधस्स ? सरीरप्पयोगबंधे पंचविहे पन्नत्ते, तं जहा ओरालियसरीरप्पओगबंधे वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे आहारगसरीरप्पओगबंधे तेयासरीरप्पयोगबंधे कम्मासरीरप्पयोगबंधे। [सु. २५-५०. ओरालियसरीरप्पओगबंधस्स भेय-पभेयाइनिरूवणापुव्वं वित्थरओ परूवणा] २५. ओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तं जहा एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे बेइंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे जाव पंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे। २६. एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे, एवं एएणं अभिलावेणं भेदा ओगाहणसंठाणे ओरालियसरीरस्स तहा भाणियव्वा जाव पज्जत्तगब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे य अपज्जत्तगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे य। २७. ओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए पमादपच्चया कम्मं च जोगं च भवं च आउयं च पडुच्च ओरालियसरीरप्पयोगनामकम्मस्स उदएणं ओरालियसरीरप्पयोगबंधे। २८. एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? एवं चेव। २९. पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे एवं चेव। ३०. एवं जाव वणस्सइकाइया। एवं बेइंदिया। एवं तेइंदिया। एवं चउरिंदिया। ३१. तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? एवं चेव। ३२. मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए पमादपच्चया जाव आउयं च पडुच्च मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे। ३३. ओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सव्वबंधे ? गोयमा ! देसबंधे वि सव्वबंधे वि। ३४. एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सव्वबंधे ? एवं चेव। ३५. एवं पुढविकाइया। ३६. एवं जाव मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सव्वबंधे ? गोयमा ! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि। ३७. ओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं देसबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं समयूणाइं। ३८. एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं; देसबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समऊणाइं। ३९. पुढविकायएगिंदिय० पुच्छा। गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समऊणाइं। ४०. एवं सव्वेसिं सव्वबंधो एक्कं समयं, देसबंधो जेसिं नत्थि वेउव्वियसरीरं तेसिं जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं जा जस्स उक्कोसिया ठिती सा समऊणा कायव्वा। जेसिं पुण अत्थि वेउव्वियसरीरं तेसिं देसबंधो जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं जा जस्स ठिती सा समऊणा कायव्वा जाव मणुस्साणं देसबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं समयूणाइं। ४१. ओरालियसरीरबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडिसमयाहियाइं। देसबंधंतरं जहन्नेणं एक्कंसमयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं तिसमयाहियाइं। ४२. एगिंदियओरालिय० पुच्छा। गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं तसमयूणं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयाहियाइं। देसबंधंतरं जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। ४३. पुढविकाइयएगिंदिय० पुच्छा। गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहेव एगिंदियस्स तहेव भाणियव्वं; देसबंधंतरं जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिण्णि समया। ४४. जहा पुढविक्काइयाणं एवं जाव चउरिंदियाणं वाउक्काइयवज्जाणं, नवरं सव्वबंधंतरं उक्कोसेणं जा जस्स ठिती सा समयाहिया कायव्वा। वाउक्काइयाणं सव्वबंधंतरं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं समयाहियाइं। देसबंधंतरं जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। ४५. पंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालिय० पुच्छा। सव्वबंधंतरं जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी समयाहिया, देसबंधंतरं जहा एगिंदियाणं तहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं। ४६. एवं मणुस्साण वि निरवसेसं भाणियव्वं जाव उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। ४७. जीवस्स णं भंते ! एगिंदियत्ते णोएगिंदियत्ते पुणरवि एगिंदियत्ते एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं दो खुड्डागभवग्गहणाइं तिसमयूणाइं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं; देसबंधंतरं जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं। ४८. जीवस्स णं भंते ! पुढविकाइयत्ते नोपुढविकाइयत्ते पुणरविपुढविकाइयत्ते पुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं तिसमयऊणाइं; उक्कोसेणं अणंतं कालं, अणंता उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा, असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं पोग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो। देसबंधंतरं जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो। ४९. जहा पुढविक्काइयाणं एवं वणस्सइकाइयवज्जाणं जाव मणुस्साणं। वणस्सइकाइयाणं दोण्णि खुड्डाइं एवं चेव; उक्कोसेणं असंखिज्जं कालं, असंखिज्जाओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा। एवं देसबंधंतरं पि उक्कोसेणं पुढविकालो। ५०. एएसि णं भंते ! जीवाणं ओरालियसरीरस्स देसबंधगाणं सव्वबंधगाणं अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा, अबंधगा विसेसाहिया, देसबंधगा असंखेज्जगुणा। [सु. ५१-८२. वेउव्वियसरीरप्पओगबंधस्स भेयाइनिरूवणापुव्वं वित्थरओ परूवणा] ५१. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य, पंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य। ५२. जइ एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे किं वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे, अवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे वेउव्वियसरीरभेदो तहा भाणियव्वो जाव पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव पयोगबंधे य। ५३. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए जाव आउयं वा लद्धिं वा पडुच्च वेउव्वियसरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे। ५४. वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए तं चेव जाव लद्धिं वा पडुच्च वाउक्काइयएगिंदियवेउव्विय जाव बंधे। ५५. (१) रयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए जाव आउयं वा पडुच्च रयणप्पभापुढवि० जाव बंधे। (२) एवं जाव अहेसत्तमाए। ५६. तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीर० पुच्छा। गोयमा ! वीरिय० जहा वाउक्काइयाणं। ५७. मणुस्सपंचिंदियवेउव्विय० ? एवं चेव। ५८. (१) असुरकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्विय० जहा रयणप्पभापुढविनेरइया। (२) एवं जाव थणियकुमारा। ५९. एवं वाणमंतरा। ६०. एवं जोइसिया। ६१. (१) एवं सोहम्मकप्पोवगया वेमाणिया। एवं जाव अच्चुय०। (२) गेवेज्जकप्पातीया वेमाणिया एवं चेव। (३) अणुत्तरोववाइयकप्पातीया वेमाणिया एवं चेव। ६२. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सव्वबंधे ? गोयमा ! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि। ६३. वाउक्काइयएगिंदिय०। एवं चेव। ६४. रयणप्पभापुढविनेरइय०। एवं चेव। ६५. एवं जाव अणुत्तरोववाइया। ६६. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो समया। देसबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं। ६७. वाउक्काइयएगिंदियवेउव्विय० पुच्छा। गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं; देसबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। ६८. (१) रयणप्पभापुढविनेरइय० पुच्छा। गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं; देसबंधे जहन्नेणं दसवाससहस्साइं तिसमयऊणाइं, उक्कोसेणं सागरोवमं समऊणं। (२) एवं जाव अहेसत्तमा। नवरं देसबंधे जस्स

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जा जहन्निया ठिती सा तिसमऊणा कायव्वा, जा च उक्कोसिया सा समयूणा। ६९. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण मणुस्साण य जहा वाउक्काइयाणं। ७०. असुरकुमार-नागकुमार० जाव अणुत्तरोववाइयाणं जहा नेरइयाणं, नवरं जस्स जा ठिई सा भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइयाणं सव्वबंधे एक्कं समयं; देसबंधे जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं तिसमयूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं। ७१. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, अणंताओ जाव आवलियाए असंखिज्जइभागो। एवं देसबंधंतरं पि। ७२. वाउक्काइयवेउव्वियसरीर० पुच्छा। गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं। एवं देसबंधंतरं पि। ७३. तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधंतरं० पुच्छा। गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडीपुहत्तं। एवं देसबंधंतरं पि। ७४. एवं मणूसस्स वि। ७५. जीवस्स णं भंते ! वाउकाइयत्ते नोवाउकाइयत्ते पुणरवि वाउकाइयत्ते वाउकाइयएगिंदियवेउव्विय० पुच्छा। गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, वणस्सइकालो। एवं देसबंधंतरं पि। ७६. (१) जीवस्स णं भंते ! रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते णोरयणप्पभापुढवि० पुच्छा। गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो। देसबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं; उक्कोसेणं अणंतं कालं. वणस्सइकालो। (२) एवं जाव अहेसत्तमाए, नवरं जा जस्स ठिती जहन्निया सा सव्वबंधंतरे जहन्नेणं अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव। ७७. पंचिंदियतिरिक्खजोणिय -मणुस्साण जहा वाउक्काइयाणं। ७८. असुरकुमार-नागकुमार जाव सहस्सारदेवाणं एएसिं जहा रयणप्पभागाणं, नवरं सव्वबंधंतरे जस्स जा ठिती जहन्निया सा अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव। ७९. जीवस्स णं भंते ! आणयदेवत्ते नोआणय० पुच्छा। गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अट्ठारससागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं; उक्कोसेणं अणंतं कालं, वणस्सइकालो। देसबंधंतरं जहन्नेणं वासपुहत्तं; उक्कोसेणं अणंतं कालं, वणस्सइकालो। एवं जाव अच्चुए; नवरं जस्स जा ठिती सा सव्वबंधंतरे जहन्नेणं वासपुहत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव। ८०. गेवेज्जकप्पातीय० पुच्छा। गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं; उक्कोसेणं अणंतं कालं, वणस्सइकालो। देसबंधंतरं जहन्नेणं वासपुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो। ८१. जीवस्स णं भंते ! अणुत्तरोववातिय० पुच्छा। गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं एक्कत्तीसं सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं। देसबंधंतरं जहन्नेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं। ८२. एएसि णं भंते ! जीवाणं वेउव्वियसरीरस्स देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा, देसबंधगा असंखिज्जगुणा, अबंधगा अणंतगुणा। [सु. ८३-८९. आहारगसरीरप्पओगबंधस्स वित्थरओ परूवणा] ८३. आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते। ८४. (१) जइ एगागारे पण्णत्ते किं मणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे ? किं अमणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे ? गोयमा ! मणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे, नो अमणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे। (२) एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे जाव इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे, णो अणिड्ढिपत्तपमत्त जाव आहारगसरीरप्पयोगबंधे। ८५. आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए जाव लद्धिं पडुच्च आहारगसरीरप्पयोगणामाए कम्मस्स उदएणं आहारगसरीरप्पयोगबंधे। ८६. आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सव्वबंधे ? गोयमा ! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि। ८७. आहारगसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं। देसबंधे जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। ८८. आहारगसरीरप्पओगबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-अणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोया; अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं। एवं देसबंधंतरं पि। ८९. एएसि णं भंते ! जीवाणं आहारगसरीरस्स देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा, देसबंधगा संखिज्जगुणा, अबंधगा अणंतगुणा।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[सु. ९०-९६. तेयगसरीरप्पओगबंधस्स भेय-पभेयाइनिरूवणापुव्वं वित्थरओ परूवणा] ९०. तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा एगिंदियतेयासरीरप्पयोगबंधे, बेइंदिय०, तेइंदिय०, जाव पंचिंदियतेयासरीरप्पयोगबंधे। ९१. एगिंदियतेयासरीरप्पयोगबंधेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसंठाणे जाव पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियतेयासरीरप्पयोगबंधे य अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय० जाव बंधे य। ९२. तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए जाव आउयं वा पडुच्च तेयासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं तेयासरीरप्पयोगबंधे। ९३. तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे सव्वबंधे ? गोयमा ! देसबंधे, नो सव्वबंधे। ९४. तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा अणाईए वा अपज्जवसिए, अणाईए वा सपज्जवसिए। ९५. तेयासरीरप्पयोगबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! अणाईयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, अणाईयस्स सपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं। ९६. एएसि णं भंते ! जीवाणं तेयासरीरस्स देसबंधगाणं अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा तेयासरीरस्स अबंधगा, देसबंधगा अणंतगुणा। [सु. ९७-११९. कम्मगसरीरप्पयोगबंधस्स भेय -पभेयाइनिरूवणापुव्वं वित्थरओ परूवणा] ९७. कम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे जाव अंतराइयकम्मासरीरप्पयोगबंधे। ९८. णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! नाणपडिणीययाए णाणणिण्हवणयाए णाणंतराएणं णाणप्पदोसेणं णाणच्चासादणाए णाणविसंवादणाजोगेणं णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे। ९९. दरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! दंसणपडिणीययाए एवं जहा णाणावरणिज्जं, नवरं 'दंसण' नाम घेत्तव्वं जाव दंसणविसंवादणाजोगेणं दरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं जाव प्पओगबंधे। १००. सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! पाणाणुकंपयाए भूयाणुकंपयाए, एवं जहा सत्तमसए दसमु (छट्ठ)द्देसए जाव अपरियावणयाए (स. ७ उ० ६ सु. २४) सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं सायावेयणिज्जकम्मा जाव बंधे। १०१. अस्सायावेयणिज्ज० पुच्छा। गोयमा ! परदुक्खणयाए परसोयणयाए जहा सत्तमसए दसमु(छट्ठ)द्देसए जाव परियावणयाए (स. ७ उ० ६ सु. २८) अस्सायावेयणिज्जकम्मा जाव पयोगबंधे। १०२. मोहणिज्जकम्मासरीरप्पयोग० पुच्छा। गोयमा ! तिव्वकोहयाए तिव्वमाणयाए तिव्वमायाए तिव्वलोभाए तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए मोहणिज्जकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे। १०३. नेरइयाउयकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! महारंभयाए महापरिग्गहयाए पंचिंदियवहेणं कुणिमाहारेणं नेरइयाउयकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं नेरइयाउयकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे। १०४. तिरिक्खजोणियाउयकम्मासरीरप्पओग० पुच्छा। गोयमा ! माइल्लयाए नियडिल्लयाए अलियवयणेणं कूडतूल -कूडमाणेणं तिरिक्खजोणियकम्मासरीर जाव पयोगबंधे। १०५. मणुस्सआउयकम्मासरीर० पुच्छा। गोयमा ! पगइभद्दयाए पगइविणीययाए साणुक्कोसयाए अमच्छरिययाए मणुस्साउयकम्मा० जाव पयोगबंधे। १०६. देवाउयकम्मासरीर० पुच्छा। गोयमा ! सरागसंजमेणं संजमासंजमेणं बालतवोकम्मेणं अकामनिज्जराए देवाउयकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे। १०७. सुभनामकम्मासरीर० पुच्छा। गोयमा ! कायउज्जुययाए भावुज्जुययाए भासुज्जुययाए अविसंवादणजोगेणं सुभनामकम्मासरीर० जाव प्पयोगबंधे। १०८. असुभनामकम्मासरीर० पुच्छा। गोयमा ! कायअणुज्जुययाए भावअणुज्जुययाए भासअणुज्जुययाए विसंवायणाजोगेणं असुभनामकम्मा० जाव पयोगबंधे। १०९. उच्चागोयकम्मासरीर० पुच्छा। गोयमा ! जातिअमदेणं कुलअमदेणं बलअमदेणं रूवअमदेणं तवअमदेणं सुयअमदेणं लाभअमदेणं इस्सरियअमदेणं उच्चागोयकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे। ११०. नीयगोयकम्मासरीर० पुच्छा। गोयमा ! जातिमदेणं कुलमदेणं बलमदेणं जाव इस्सरियमदेणं णीयागोयकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे। १११. अंतराइयकम्मासरीर० पुच्छा। गोयमा ! दाणंतराएणं लाभंतराएणं भोगंतराएणं उवभोगंतराएणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीरियंतराएणं अंतराइयकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं अंतराइयकम्मासरीरप्पयोगबंधे। ११२. (१) णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते! किं देसबंधे सव्वबंधे? गोयमा! देसबंधे, णो सव्वबंधे। (२) एवं जाव अंतराइयकम्मासरीरप्पयोगबंधे। ११३. णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा- अणाईए सपज्जवसिए, अणाईए अपज्जवसिए वा. एवं जहा तेयगसरीरसंचिट्ठणा तहेव। ११४. एवं जाव अंतराइयकम्मस्स। ११५. णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधंतरं णं भंते! कालओ केवच्चिरं होई? गोयमा! अणाईयस्स० एवं जहा तेयगसरीरस्स अंतरं तहेव। ११६. एवं जाव अंतराइयस्स। ११७. एएसि णं भंते! जीवाणं नाणावरणिज्जस्स देसबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो० जाव अप्पाबहुगं जहा तेयगस्स। ११८. एवं आउयवज्जं जाव अंतराइयस्स। ११९. आउयस्स पुच्छा। गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा आउयस्स कम्मस्स देसबंधगा, अबंधगा संखेज्जगुणा। [सु. १२०-१२८. ओरालियाईणं पंचण्हं सरीराणमण्णोण्णं सव्व -देसबंधवत्तव्वया] १२०. (१) जस्स णं भंते! ओरालियसरीरस्स सव्वबंधे से णं भंते! वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए, अबंधए? गोयमा! नो बंधए, अबंधए। (२) आहारगसरीरस्स किं बंधए, अबंधए? गोयमा! नो बंधए, अबंधए। (३) तेयासरीरस्स किं बंधए, अबंधए? गोयमा! बंधए, नो अबंधए। (४) जइ बंधए किं देसबंधए, सव्वबंधए? गोयमा! देसबंधए, नो सव्वबंधए। (५) कम्मासरीरस्स किं बंधए, अबंधए? जहेव तेयगस्स जाव देसबंधए, नो सव्वबंधए। १२१. जस्स णं भंते! ओरालियसरीरस्स देसबंधे से णं भंते! वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए, अबंधए? गोयमा! नो बंधए, अबंधए। १२२. एवं जहेव सव्वबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स। १२३. (१) जस्स णं भंते! वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधे से णं भंते! ओरालियसरीरस्स किं बंधए, अबंधए? गोयमा! नो बंधए, अबंधए। (२) आहारगसरीरस्स एवं चेव। (३) तेयगस्स कम्मगस्स य जहेव ओरालिएणं समं भणियं तहेव भाणियव्वं जाव देसबंधए, नो सव्वबंधए। १२४. (१) जस्स णं भंते! वेउव्वियसरीरस्स देसबंधे से णं भंते! ओरालियसरीरस्स किं बंधए, अबंधए? गोयमा! नो बंधए, अबंधए। (२) एवं जहा सव्वबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेणं वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स। १२५. (१) जस्स णं भंते! आहारगसरीरस्स सव्वबंधे से णं भंते! ओरालियसरीरस्स किं बंधए, अबंधए? गोयमा! नो बंधए, अबंधए। (२) एवं वेउव्वियस्स वि। (३) तेया-कम्माणं जहेव ओरालिएणं समं भणियं तहेव भाणियव्वं। १२६. जस्स णं भंते! आहारगसरीरस्स देसबंधे से णं भंते! ओरालियसरीरस्स० एवं जहा आहारगसरीरस्स सव्वबंधेणं भणियं तहा देसबंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स। १२७. (१) जस्स णं भंते! तेयासरीरस्स देसबंधे से णं भंते! ओरालियसरीरस्स किं बंधए, अबंधए? गोयमा! बंधए वा अबंधए वा। (२) जइ बंधए किं देसबंधए, सव्वबंधए? गोयमा! देसबंधए वा, सव्वबंधए वा। (३) वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए, अबंधए? एवं चेव। (४) एवं आहारगसरीरस्स वि। (५) कम्मगसरीरस्स किं बंधए, अबंधए? गोयमा! बंधए, नो अबंधए। (६) जइ बंधए किं देसबंधए, सव्वबंधए? गोयमा! देसबंधए, नो सव्वबंधए। १२८. जस्स णं भंते! कम्मगसरीरस्स देसबंधे से णं भंते! ओरालियसरीरस्स० जहा तेयगस्स वत्तव्वया भणिया तहा कम्मगस्स वि भाणियव्वा जाव तेयासरीरस्स जाव देसबंधए, नो सव्वबंधए। [सु. १२९. ओरालियाइपंचसरीरदेसबंधग-सव्वबंधगाणं जीवाणमप्पाबहुयं] १२९. एएसि णं भंते! जीवाणं ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयाकम्मासरीरगाणं देसबंधगाणं सव्वबंधगाणं अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा १। तस्स चेव देसबंधगा संखेज्जगुणा २। वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा असंखेज्जगुणा ३। तस्स चेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा ४। तेया -कम्मगाणं दुण्ह वि तुल्ला अबंधगा अणंतगुणा ५। ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा अणंतगुणा ६। तस्स चेव अबंधगा विसेसाहिया ७। तस्स चेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा ८। तेया -कम्मगाणं देसबंधगा विसेसाहिया ९। वेउव्वियसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया १०। आहारगसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया ११। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ☆☆☆ अट्ठमसयस्स नवमो

Jain Education International 2010_03

For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

उद्देसओ समत्तो ॥ ८.९॥ दसमो उद्देसो 'आराहणा'☆☆☆ [सु. १. दसमुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे नगरे जाव एवं वयासी [सु. २. अन्नउत्थियवत्तव्वनिरासपुव्वयं सीलं -सुयजुत्तपुरिसे पडुच्च भगवओ आराहग -विराहगपरूवणा] २. अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव एवं परूवेंति एवं खलु सीलं सेयं १, सुयं सेयं २, सुयं सेयं सीलं सेयं ३, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जं णं ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु मए चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा सीलसंपन्ने णामं एगे, णो सुयसंपन्ने १; सुयसंपन्ने नामं एगे, नो सीलसंपन्ने २, एगे सीलसंपन्ने वि सुयसंपन्ने वि ३, एगे णो सीलसंपन्ने नो सुयसंपन्ने ४। तत्थ णं जे से पढमे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं, असुयवं, उवरए, अविण्णायधम्मे, एस णं गोयमा ! मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते। तत्थ णं जे से दोच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं, सुयवं, अणुवरए, विण्णायधम्मे एस णं गोयमा ! मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते। तत्थ णं जे से तच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं, सुयवं, उवरए, विण्णायधम्मे, एस णं गोयमा ! मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते। तत्थ णं जे से चउत्थे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं, असुतवं, अणुवरए, अविण्णायधम्मे एस णं गोयमा ! मए पुरिसे सव्वविराहए पण्णत्ते। [सु. ३-६. आराहणाए णाणाइतिभेया तप्पभेया य] ३. कतिविहा णं भंते ! आराहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा आराहणा पण्णत्ता, तं जहा नाणाराहणा दंसणाराहणा चरित्ताराहणा। ४. णाणाराहणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा उक्कोसिया मज्झिमिया जहन्ना। ५. दंसणाराहणा णं भंते ! ० ? एवं चेव तिविहा वि। ६. एवं चरित्ताराहणा वि। [सु. ७-९. आराहणाभेयाणं परोप्परमुवनिबंधपरूवणा] ७. जस्स णं भंते ! उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा ? जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया णाणाराहणा ? गोयमा ! जस्स उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसिया वा अजहन्नउक्कोसिया वा, जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा जहन्ना वा अजहन्नमणुक्कोसा वा। ८. जस्स णं भंते ! उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा ? जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया णाणाराहणा ? जहा उक्कोसिया णाणाराहणा य दंसणाराहणा य भणिया तहा उक्कोसिया णाणाराहणा य चरित्ताराहणा य भाणियव्वा। ९. जस्स णं भंते ! उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा ? जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया दंसणाराहणा ? गोयमा ! जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा वा जहन्ना वा अजहन्नमणुक्कोसा वा, जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दंसणाराहणा नियमा उक्कोसा। [सु. १०-१८. उक्कोस -मज्झिम -जहन्नाणं णाण -दंसण -चरित्ताराहणाणं फलपरूवणा] १०. उक्कोसियं णं भंते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव अंतं करेति ? गोयमा ! अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव अंतं करेति। अत्थेगतिए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव अंतं करेति। अत्थेगतिए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जति। ११. उक्कोसियं णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं० ? एवं चेव। १२. उक्कोसियं णं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता० ? एवं चेव। नवरं अत्थेगतिए कप्पातीएसु उववज्जति। १३. मज्झिमियं णं भंते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव अंतं करेति ? गोयमा ! अत्थेगतिए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतं करेति, तच्चं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ। १४. मज्झिमियं णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता० ? एवं चेव। १५. एवं मज्झिमियं चरित्ताराहणं पि। १६. जहन्नियं णं भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव अंतं करेति ? गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतं करेइ, सत्त -ऽट्ठभवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ। १७. एवं दंसणाराहणं पि। १८. एवं चरित्ताराहणं पि। [सु. १९-२२. पोग्गलपरिणामभेय -पभेयपरूवणा] १९. कतिविहे णं भंते ! पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा वण्णपरिणामे १ गंधपरिणामे २ रसपरिणामे ३ फासपरिणामे ४ संठाणपरिणामे ५। २०. वण्णपरिणामे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा कालवण्णपरिणामे जाव सुक्किल्लवण्णपरिणामे। २१. एएणं अभिलावेणं गंधपरिणामे दुविहे,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रसपरिणामे पंचविहे, फासपरिणामे अट्ठविहे। २२. संठाणपरिणामे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा परिमंडलसंठाणपरिणामे जाव आययसंठाणपरिणामे। [सु. २३-२८. एगाइअणंतपुग्गलत्थिकायपदेसे पडुच्च दव्व -दव्वदेसाइया वत्तव्वया] २३. एगे भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसे किं दव्वं १, दव्वदेसे २, दव्वाइं ३, दव्वदेसा ४, उदाहु दव्वं च दव्वदेसे य ५, उदाहु दव्वं च दव्वदेसा य ६, उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसे य ७, उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसा य ८ ? गोयमा ! सिय दव्वं, सिय दव्वदेसे, नो दव्वाइं, नो दव्वदेसा, नो दव्वं च दव्वदेसे य, जाव नो दव्वाइं च दव्वदेसा य। २४. दो भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा किं दव्वं दव्वदेसे० पुच्छा तहेव। गोयमा ! सिय दव्वं १, सिय दव्वदेसे २, सिय दव्वाइं ३, सिय दव्वदेसा ४, सिय दव्वं च दव्वदेसे य ५, नो दव्वं च दव्वदेसा य ६, सेसा पडिसेहेयव्वा। २५. तिण्णि भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा किं दव्वं० पुच्छा। गोयमा ! सिय दव्वं १, सिय दव्वदेसे २, एवं सत्त भंगा भाणियव्वा, जाव सिय दव्वाइं च दव्वदेसे य; नो दव्वाइं च दव्वदेसा य। २६. चत्तारि भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा किं दव्वं० पुच्छा। गोयमा ! सिय दव्वं १, सिय दव्वदेसे २, अट्ठ वि भंगा भाणियव्वा जाव सिय दव्वाइं च दव्वदेसा य ८। २७. जहा चत्तारि भणिया एवं पंच छ सत्त जाव असंखिज्जा। २८. अणंता भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा किं दव्वं एवं चेव जाव सिय दव्वाइं च दव्वदेसा य। [सु. २९-३०. लोयागास -जीवपदेसाणं असंखिज्जत्तपरूवणा] २९. केवतिया णं भंते ! लोयागासपएसा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा लोयागासपएसा पण्णत्ता। ३०. एगमेगस्स णं भंते ! जीवस्स केवइया जीवपएसा पण्णत्ता ? गोयमा ! जावतिया लोगागासपएसा एगमेगस्स णं जीवस्स एवतिया जीवपएसा पण्णत्ता। [सु. ३१. कम्मपयडिभेयपरूवणा] ३१. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं। [सु. ३२. चउवीसइदंडएसु अट्ठकम्मपयडिपरूवणा] ३२. (१) नेरइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ। (२) एवं सव्वजीवाणं अट्ठ कम्मपगडीओ ठावेयव्वाओ जाव वेमाणियाणं। [सु. ३३-३६. चउवीसदंडएसु अट्ठण्हं कम्मपगडीणं अणंतअविभागपलिच्छदपरूवणा] ३३. नाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेया पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता। ३४. नेरइयाणं भंते ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेया पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता। ३५. एवं सव्वजीवाणं जाव वेमाणियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता। ३६. एवं जहा णाणावरणिज्जस्स अविभागपलिच्छेदा भणिया तहा अट्ठण्ह वि कम्मपगडीणं भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं अंतराइयस्स। [सु. ३७-४१. जीव -चउवीसदंडयजीवपदेसम्मि अट्ठण्हं कम्मपगडीणं अविभागपलिच्छेदावेढणपरिवेढणवत्तव्वया] ३७. एगमेगस्स णं भंते ! जीवस्स एगमेगे जीवपएसे णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेढियपरिवेढिए सिया ? गोयमा ! सिय आवेढियपरिवेढिए, सिय नो आवेढियपरिवेढिए। जइ आवेढियपरिवेढिए नियमा अणंतेहिं। ३८. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स एगमेगे जीवपएसे णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेढियपरिवेढिते ? गोयमा ! नियमा अणंतेहिं। ३९. जहा नेरइयस्स एवं जाव वेमाणियस्स। नवरं मणूसस्स जहा जीवस्स। ४०. एगमेगस्स णं भंते ! जीवस्स एगमेगे जीवपएसे दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहिं० ? एवं जहेव नाणावरणिज्जस्स तहेव दंडगो भाणियव्वो जाव वेमाणियस्स। ४१. एवं जाव अंतराइयस्स भाणियव्वं, नवरं वेयणिज्जस्स आउयस्स नामस्स गोयस्स, एएसिं चउण्ह वि कम्माणं मणूसस्स जहा नेरइयस्स तहा भाणियव्वं, सेसं तं चेव। [सु. ४२-४५. नाणावरणिज्जस्स दंसणावरणादीहिं सत्तहिं कम्मपगडीहिं सहभाववत्तव्वया] ४२. जस्स णं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स दरिसणावरणिज्जं, जस्स दंसणावरणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ? गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जं तस्स दंसणावरणिज्जं नियमा अत्थि, जस्स णं दरिसणावरणिज्जं तस्स वि नाणावरणिज्जं नियमा अत्थि। ४३. जस्स णं भंते ! णाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं, जस्स वेयणिज्जं तस्स णाणावरणिज्जं ? गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियमा अत्थि, जस्स पुण वेयणिज्जं तस्स णाणावरणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि। ४४. जस्स णं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं, जस्स मोहणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ? गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोहणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं नियमा अत्थि। ४५. (१) जस्स णं भंते ! णाणावरणिज्जं तस्स आउयं० ? एवं जहा वेयणिज्जेण समं भणियं तहा आउएण वि समं भाणियव्वं। (२) एवं नामेण वि, एवं गोएण वि समं। (३) अंतराइएण वि जहा दरिसणावरणिज्जेण समं तहेव नियमा परोप्परं भाणियव्वाणि १। [सु. ४६. दंसणावरणिज्जस्स वेयणिज्जाईहिं छहिं कम्मपगडीहिं सहभाववत्तव्वया] ४६. जस्स णं भंते ! दरिसणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं, जस्स वेयणिज्जं तस्स दरिसणावरणिज्जं ? जहा नाणावरणिज्जं उवरिमेहिं सत्तहिं कम्मेहिं समं भणियं तहा दरिसणावरणिज्जं पि उवरिमेहिं छहिं कम्मेहिं समं भाणियव्वं जाव अंतराइएणं २। [सु. ४७-५० वेयणिज्जस्स मोहणिज्जाईहिं पंचहिं कम्मपगडीहिं सहभाववत्तव्वया] ४७. जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स मोहणिज्जं, जस्स मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्जं ? गोयमा ! जस्स वेयणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियमा अत्थि। ४८. जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स तस्स आउयं० ? एवं एयाणि परोप्परं नियमा। ४९. जहा आउएण समं एवं नामेण वि, गोएण वि समं भाणियव्वं। ५०. जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स अंतराइयं० ? पुच्छा। गोयमा ! जस्स वेयणिज्जं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण अंतराइयं तस्स वेयणिज्जं नियमा अत्थि ३। [सु. ५१-५२. मोहणिज्जस्स आउयआईहिं चउहिं कम्मपगडीहिं सहभाववत्तव्वया] ५१. जस्स णं भंते ! मोहणिज्जं तस्स आउयं, जस्सं आउयं तस्स मोहणिज्जं ? गोयमा ! जस्स मोहणिज्जं तस्स आउयं नियमा अत्थि, जस्स पुण आउयं तस्स पुण मोहणिज्जं सिय अत्थि सिय नत्थि। ५२. एवं नामं गोयं अंतराइयं च भाणियव्वं ४। [सु. ५३-५५. आउयस्स नामाईहिं तीहिं कम्मपगडीहिं सहभाववत्तव्वया] ५३. जस्स णं भंते ! आउयं तस्स नामं० ? पुच्छा। गोयमा ! दो वि परोप्परं नियमं। ५४. एवं गोत्तेण वि समं भाणियव्वं। ५५. जस्स णं भंते ! आउयं तस्स अंतराइयं० ? पुच्छा। गोयमा ! जस्स आउयं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण अंतराइयं तस्स आउयं नियमा ५। [सु. ५६-५७. नामस्स गोय-अंतराइयकम्मपगडीहिं सहभाववत्तव्वया] ५६. जस्स णं भंते ! नामं तस्स गोयं, जस्स णं गोयं तस्स णं नामं ? गोयमा ! जस्स णं णामं तस्स णं नियमा गोयं, जस्स णं गोयं तस्स णं नियमा नामं-गोयमा ! दो वि एए परोप्परं नियमा। ५७. जस्स णं भंते ! णामं तस्स अंतराइयं० ! पुच्छा। गोयमा ! जस्स नामं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण अंतराइयं तस्स नामं नियमा अत्थि ६। [सु. ५८. गोयस्स अंतराइयपगडीए सहभाववत्तव्वया] ५८. जस्स णं भंते ! गोयं तस्स अंतराइयं० ? पुच्छा। गोयमा ! जस्स णं गोयं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण अंतराइयं तस्स गोयं नियमा अत्थि ७। [सु. ५९-६१. जीव -चउवीसदंडय -सिद्धेसु पोग्गलि -पोग्गलवत्तव्वया ५९. (१) जीवे णं भंते ! किं पोग्गली, पोग्गले ? गोयमा ! जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'जीवे पोग्गली वि पोग्गले वि' ? गोयमा ! से जहानामए छत्तेणं छत्ती, दंडेणं दंडी, घडेणं घडी, पडेणं पडी, करेणं करी एवामेव गोयमा ! जीवे वि सोइंदिय -चक्खिदिय -घाणिंदिय -जिब्भिंदिय -फासिंदियाइं पडुच्च पोग्गली, जीवं पुच्च पोग्गले, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ 'जीवे पोग्गली वि पोग्गले वि'। ६०. (१) नेरइए णं भंते ! किं पोग्गली० ? एवं चेव। (२) एवं जाव वेमाणिए। नवरं जस्स जइ इंदियाइं तस्स तइ भाणियव्वाइं। ६१. (१) सिद्धे णं भंते ! किं पोग्गली, पोग्गले ? गोयमा ! नो पोग्गली, पोग्गले। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव पोग्गले ? गोयमा ! जीवं पडुच्च, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ 'सिद्धे नो पोग्गली, पोग्गले'। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। **卐卐卐 अट्ठमसए दसमो ॥८.१० ॥ समत्तं अट्ठमं सयं ॥८॥ *卐卐卐 नवमं सतं 卐卐卐** [सु. १. नवमसतस्स उद्देसनामपरूवणा] १. जंबुद्दीवे १ जोइस २ अंतरदीवा ३० असोच्च ३१ गंगेय ३२। कुंडग्गामे ३३ पुरिसे ३४ नवमम्मि सयम्मि चोत्तीसा ॥१॥ ☆☆☆ **पढमो उद्देसो 'जंबुद्दीवे'** ☆☆☆ [सु. २. पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ] २. तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला नामं नगरी होत्था। वण्णओ। माणिभद्दे चेइए। वण्णओ। सामी समोसढे। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। जाव भगवं गोयमे पज्जुवासमाणे एवं वयासी [सु. ३. जंबुद्दीववत्तव्वयाजाणणत्थं जंबुद्दीवपण्णत्तीसुत्तावलोयणानिद्देसो] ३. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे ? किंसंठिए णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे ? एवं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंबुद्दीवपण्णत्ती भाणियव्वा जाव एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे चोद्दस सलिलासयसहस्सा छप्पन्नं च सहस्सा भवंतीति मक्खाया। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ☆☆☆। नवमस्स पढमो ॥९.१॥ ☆☆☆ **बितिओ उद्देसो 'जोइस'** ☆☆☆ [सु. १. बितिउद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासी [सु. २-५. जंबुद्दीव -लवणसमुद्द -धायइसंड -कालोदसमुद्द -पुक्खरवरदीवाईसु चंदसंखाजाणणत्थं जीवाभिगमसुत्तावलोयणनिद्देसो] २. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया चंदा पभासिंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा ? एवं जहा जीवाभिगमे जाव -'नव य सया पण्णासा तारागणकोडिकोडीणं' ॥ सोभं सोभिंसु सोभिंति सोभिस्संति। ३. लवणे णं भंते ! समुद्दे केवतिया चंदा पभासिंसु वा पभासिंति वा पभासिस्संति वा ? एवं जहा जीवाभिगमे जाव ताराओ। ४. धायइसंडे कालोदे पुक्खरवरे अब्भिंतरपुक्खरद्धे मणुस्सखेत्ते, एएसु सव्वेसु जहा जीवाभिगमे जाव 'एग ससी परिवारो तारागणकोडिकोडीणं ॥' ५. पुक्खरद्धे णं भंते। समुद्दे केवइया चंदा पभासिंसु वा पभासंति वा पभासिस्संति वा ? एवं सव्वेसु दीव -समुद्देसु जोतिसियाणं भाणियव्वं जाव सयंभूरमणे जाव सोभं सोभिंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ।☆☆☆ **नवमसए बीओ उद्देसो समत्तो** ॥९.२ ॥ ☆☆☆ **तइउद्देसाइतीसइमपज्जंता उद्देसा 'अंतरदीवा'** ☆☆☆ [सु. १. तइयाइतीसइमपज्जंतउद्देसाणमुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासी [सु. २-३. एगोरूयादिअट्ठावीसइअंतरदीववत्तव्वयाजाणणत्थं जीवाभिगमसुत्तावलोयणनिद्देसो] २. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं एगोरुयमणुस्साणं एगोरुयदीवे णामं दीवे पन्नत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं एवं जहा जीवाभिगमे जाव सुद्धदंदीवे जाव देवलोगपरिग्गहा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो !। ३. एवं अट्ठावीसं पि अंतरदीवा सएणं सएणं आयाम-विक्खंभेणं भाणियव्वा, नवरं दीवे दीवे उद्देसओ। एवं सव्वे वि अट्ठावीसं उद्देसगा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆ **नवमस्स तइयाइआ तीसंता उद्देसा समत्ता। ९.३-३० ॥** ☆☆☆ **एगत्तीसइमो उद्देसो 'असोच्च'** ☆☆☆ [सु. १. एगत्तीसइमुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासी [सु. २-१२. केवलि-केवलिसावगाईहिंतो असोच्चा सुद्धधम्म-बोहि-अणगारिता-बंभचेरवास-संजम-संवर-आभिणिबोहियाइपंचनाणाणं लाभलाभवत्तव्वया] २. (१) असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा केवलिसावगस्स वा केवलिसावियाए वा केवलिउवासगस्स वा केवलिउवासियाए वा तप्पक्खियस्स वा तप्पक्खियसावगस्स वा तप्पक्खियसावियाए वा तप्पक्खियउवासगस्स वा तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगइए केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-असोच्चा णं जाव नो लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-तं चेव जाव नो लभेज्ज सवणयाए। ३ (१) असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बोहिं बुज्झेज्जा ? गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगतिए केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, अत्थेगइए केवलं बोहिं णो बुज्झेज्जा। (२) से केणट्ठेणं भंते ! जाव नो बुज्झेज्जा ? गोयमा ! जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं बोहिं णो बुज्झेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव णो बुज्झेज्जा। ४. (१) असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा ? गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, अत्थेगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा। (२) से केणट्ठेणं जाव नो पव्वएज्जा ? गोयमा !

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जस्स णं धम्मंतराइयाणं खओवसमे कडे भवति से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवति से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव मुंडे भवित्ता जाव णो पव्वएज्जा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो पव्वएज्जा । ५. (१) असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा ? गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा । (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव नो आवसेज्जा ? गोयमा ! जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव नो आवसेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव नो आवसेज्जा । ६. (१) असोच्चा णं ! केवलिस्स वा जाव केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा ? गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स जाव उवासियाए वा जाव अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा । (२) से केणट्ठेणं जाव नो संजमेज्जा ? गोयमा ! जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव नो संजमेज्जा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अत्थेगतिए नो संजमेज्जा । ७. (१) असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स जाव अत्थेगतिए केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं जाव नो संवरेज्जा । (२) से केणट्ठेणं जाव नो संवरेज्जा ? गोयमा ! जस्स णं अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, जस्स णं अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव नो संवरेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव नो संवरेज्जा । ८. (१) असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स जाव केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगइए केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा । (२) से केणट्ठेणं जाव नो उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! जस्स णं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, जस्स णं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव नो उप्पाडेज्जा । ९. असोच्चा णं भंते ! केवलि० जाव केवलं सुयनाणं उप्पाडेज्जा ? एवं जहा आभिणिबोहियनाणस्स वत्तव्वया भणिया तहा सुयनाणस्स वि भाणियव्वा, नवरं सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे । १०. एवं चेव केवलं ओहिनाणं भाणियव्वं; नवरं ओहिणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे । ११. एवं केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, नवरं मणपज्जवणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे । १२. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाणं उप्पाडेज्जा ? एवं चेव, नवरं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए भाणियव्वे, सेसं तं चेव । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा । [सु. १३. बिइयसुत्ताइबारसमसुत्तपज्जंतवत्तव्वयाए समुच्चएणं परूवणा] १३. (१) असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेजा सवणयाए १ ?, केवलं बोहिं बुज्झेज्जा २ ?, केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा ३ ?, केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा ४ ?, केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा ५ ?, केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा ६ ?, केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा ७ ?, जाव केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा १० ?, केवलनाणं उप्पाडेज्जा ११ ?, गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए १; अत्थेगतिए केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बोहिं णो बुज्झेज्जा २; अत्थेगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, अत्थेगतिए जाव नो पव्वएज्जा ३; अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा ४; अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा ५; एवं संवरेण वि ६; अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्थेगतिए जाव नो उप्पाडेज्जा ७; एवं जांव मणपज्जवनाणं ८-९-१०; अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ११। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ असोच्चा णं तं चेव जाव अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ १, जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ २, जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ३, एवं चरित्तावरणिज्जाणं ४, जयणावरणिज्जाणं ५, अज्झवसाणवरणिज्जाणं ६, आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं ७, जाव मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ८-९-१०, जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं जाव खए नो कडे भवइ ११, से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए, केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा जाव केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा। जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवति १, जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ २, जस्सं णं धम्मंतराइयाणं ३, एवं जाव जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ ११ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए १, केवलं बोहिं बुज्झेज्जा २, जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा ११। [सु. १४-३१. असुयकेवलिआइवयणे विभंगनाणाओ पत्तओहिनाणे लेसानाण-जोग-उवओग-संघयण-संठाण-उच्चत्त-आउय-वेद-कसाय-अज्झवसाणपरूवणापुव्वं कमेण केवलनाणुप्पत्ति-सिज्झणाइवत्तव्वया] १४. तस्स णं छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगतिभद्दयाए पगइउवसंतयाए पगतिपयणुकोह-माण-माया-लोभयाए मिउमद्दवसंपन्नयाए अल्लीणताए भद्दताए विणीतताए अण्णया कयाइ सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं परिणामेणं, लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं अन्नाणे समुप्पज्जइ, से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं जाणइ पासइ, से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं जीवे वि जाणइ, अजीवे वि जाणइ, पासंडत्थे सारंभे सपरिग्गहे संकिलिस्समाणे वि जाणइ, विसुज्झमाणे वि जाणइ, से णं पुव्वामेव सम्मत्तं पडिवज्जइ, सम्मत्तं पडिवज्जित्ता समणधम्मं रोएति, समणधम्मं रोएत्ता चरित्तं पडिवज्जइ, चरित्तं पडिवज्जित्ता लिंगं पडिवज्जइ, तस्स णं तेहिं मिच्छत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं परिहायमाणेहिं, सम्मद्दंसणपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं परिवड्ढमाणेहिं से विब्भंगे अन्नाणे सम्मत्तपरिग्गहिए खिप्पामेव ओहि परावत्तइ। १५. से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ? गोयमा ! तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा, तं जहा तेउलेस्साए पम्हलेस्साए सुक्कलेस्साए। १६. से णं भंते ! कतिसु णाणेसु होज्जा ? गोयमा ! तिसु, आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा। १७. (१) से णं भंते ! किं सजोगी होज्जा, अजोगी होज्जा ? गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा। (२) जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा, वइजोगी होज्जा, कायजोगी होज्जा ? गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा। १८. से णं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा, अणागारोवउत्ते होज्जा ? गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा। १९. से णं भंते ! कयरम्मि संघयणे होज्जा ? गोयमा ! वइरोसभनारायसंघयणे होज्जा। २०. से णं भंते ! कयरम्मि संठाणे होज्जा ? गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अन्नयरे संठाणे होज्जा। २१. से णं भंते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्त रयणी, उक्कोसेणं पंचधणुसतिए होज्जा। २२. से णं भंते ! कयरम्मि आउए होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं सातिरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउए होज्जा। २३. (१) से णं भंते ! किं सवेदए होज्जा, अवेदए होज्जा ? गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा। (२) जइ सवेदए होज्जा किं इत्थीवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, नपुंसगवेदए होज्जा, पुरिसनपुंसगवेदए होज्जा ? गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, नो नपुंसगवेदए होज्जा, पुरिसनपुंसगवेदए वा होज्जा। २४. (१) से णं भंते ! किं सकसाई होज्जा, अकसाई होज्जा ? गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा। (२) जइ सकासाई होज्जा, से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ? गोयमा ! चउसु संजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा। २५. (१) तस्स णं भंते ! केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता। (२) ते णं भंते ! किं पसत्था अप्पसत्था ? गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था। २६. से णं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वट्टमाणे अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ,

अणंतेहिं तिरिक्खजोणिय जाव विसंजोएइ, अणंतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणियमणुस्स-देवगतिनामाओ उत्तरपयडीओ तासिं च णं उवग्गहिए अणंताणुबंधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, अणंताणुबंधी कोह-माण-माया-लोभे खवित्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवित्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवित्ता संजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ। संजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवित्ता पंचविहं नाणावरणिज्जं नवविहं दरिसणावरणिज्जं पंचविहमंतराइयं तालमत्थकडं च णं मोहणिज्जं कट्टु कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाण-दंसणे समुप्पज्जति। २७. से णं भंते ! केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेज्जा वा पण्णवेज्जा वा परूवेज्जा वा ? नो इणट्ठे समट्ठे, णऽन्नत्थ एगणाएण वा एगवागरणेण वा। २८. से णं भंते ! पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा ? णो इणट्ठे समट्ठे, उवदेसं पुण करेज्जा। २९. से णं भंते ! सिज्झति जाव अंतं करेति ? हंता, सिज्झति जाव अंतं करेति। ३०. से णं भंते ! किं उड्ढं होज्जा अहो होज्जा, तिरियं होज्जा ? गोयमा ! उड्ढं वा होज्जा, अहो वा होज्जा, तिरियं वा होज्जा। उड्ढं होमाणे सद्दावइ-वियडावइ-गंधावइ-मालवंतपरियाएसु वट्टवेयड्ढपव्वएसु होज्जा, साहरणं पडुच्च सोमणसवणे वा पंडगवणे वा होज्जा। अहो होमाणे गड्डाए वा दरीए वा होज्जा, साहरणं पडुच्च पायाले वा भवणे वा होज्जा। तिरियं होमाणे पण्णरससु कम्मभूमीसु होज्जा, साहरणं पडुच्च अड्ढाइज्जदीव -समुद्दतदेक्कदेसभाए होज्जा। ३१. ते णं भंते ! एगसमएणं केवतिया होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं दस। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ 'असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, अत्थेगतिए असोच्चा णं केवलि जाव नोलभेज्जा सवणयाए जाव अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा। [सु. ३२. बितियसुत्ताइतेरसमसुत्तपज्जंतगय 'असोच्चा' पदपरूवियवत्तव्वयाठाणे 'सोच्चा' पदपुव्विया वत्तव्वया] ३२. सोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! सोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं० । एवं जा चेव असोच्चाए वत्तव्वया सा चेव सोच्चाए वि भाणियव्वा, नवरं अभिलावो सोच्चेति। सेसं तं चेव निरवसेसं जाव 'जस्स णं मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ से णं सोच्चा केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभिज्ज सवणयाए, केवलं बोहिं बुज्झेज्जा जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा (सु. १३ (२)। [सु. ३३-४४. सुयकेवलिआइवयणे ओहिनाणिम्मि चोद्दसमाइइगतीसइमसुत्तगयवत्तव्वया] ३३. तस्स णं अट्ठमंअट्ठमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स पगइभद्दयाए तहेव जाव गवेसणं करेमाणस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ। से णं तेणं ओहिनाणेणं समुप्पन्नेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं, उक्कोसेणं असंखिज्जाइ अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ। ३४. से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ? गोयमा ! छसु लेस्सासु होज्जा, तं जहा कण्हलेसाए जाव सुक्कलेसाए। ३५. से णं भंते ! कतिसु णाणेसु होज्जा ? गोयमा ! तिसु वा चउसु वा होज्जा। तिसु होज्जमाणे आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा, चउसु होज्जमाणे आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाण -मणपज्जवनाणेसु होज्जा। ३६. से णं भंते ! किं सजोगी होज्जा, अजोगी होज्जा ? एवं जोगो उवओगो संघयणं संठाणं उच्चत्तं आउयं च एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए (सु. १७-२२) तहेव भाणियव्वाणि। ३७. (१) से णं भंते ! किं सवेदए० पुच्छा। गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा। (२) जइ अवेदए होज्जा किं उवसंतवेयए होज्जा, खीणवेयण होज्जा ? गोयमा ! नो उवसंतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा। (३) जइ सवेदए होज्जा किं इत्थीवेदए होज्जा० पुच्छा। गोयमा ! इत्थीवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिसनपुंसगवेदए वा होज्जा। ३८. (१) से णं भंते ! सकसाई होज्जा ? अकसाई होज्जा ? गोयमा ! सकसाई वा होज्जा, अकसाई वा होज्जा। (२) जइ अकसाई होज्जा किं उवसंतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा ? गोयमा ! नो उवसंतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा। (३) जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ? गोयमा ! चउसु वा, तिसु वा, दोसु वा, एक्कम्मि वा होज्जा। चउसु होज्जमाणे चउसु संजलणकोह-माण-माया-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोभेसु होज्जा, तिसु होज्जमाणे तिसु संजलणमाण-माया-लोभेसु होज्जा, दोसु होज्जमाणे दोसु संजलणमाया-लोभेसु होज्जा, एगम्मि होज्जमाणे एगम्मि संजलणे लोभे होज्जा। ३९. तस्स णं भंते ! केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा, एवं जहा असोच्चाए (सु. २५-२६) तहेव जाव केवलवरनाण-दंसणे समुप्पज्जइ (सु.२६)। ४०. से णं भंते ! केवलिपण्णत्तं धम्मं आघविज्जा वा, पण्णवेज्जा वा, परूविज्जा वा ? हंता, आघविज्ज वा, पण्णवेज्ज वा, परूवेज्ज वा। ४१. (१) से णं भंते ! पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा ? हंता, गोयमा ! पव्वावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा। (२) तस्स णं भंते ! सिस्सा वि पव्वावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ? हंता, पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा। (३) तस्स णं भंते ! पसिस्सा वि पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा ? हंता, पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा। ४२. (१) से णं भंते ! सिज्झति बुज्झति जाव अंतं करेइ ? हंता, सिज्झइ जाव अंतं करेइ। (२) तस्स णं भंते ! सिस्सा वि सिज्झंति जाव अंतं करेंति ? हंता, सिज्झंति जाव अंतं करेंति। (३) तस्स णं भंते ! परिस्सा वि सिज्झंति जाव अंतं करेंति ? एवं चेव जाव अंतं करेंति। ४३. से णं भंते ! किं उड्ढं होज्जा ? जहेव असोच्चाए (सु. ३०) जाव तदेक्कदेसभाए होज्जा। ४४. ते णं भंते ! एगसमएणं केवतिया होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं अट्ठसयं -१०८। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ -सोच्चा णं केवलिस्स वा जाव केवलिउवासियाए वा जाव अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ। ☆☆☆ **नवमसयस्स इगतीसइओ उद्देसो ॥९.३१॥** **बत्तीसइमो उद्देसो 'गंगेय'** ☆☆☆ [सु. १-२. बत्तीसइमुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नगरे होत्था। वण्णओ। दूतिपलासे चेइए। सामी समोसढे। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया। २. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे गंगेए नामं अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी [सु. ३-५५. पासावच्चिज्जगंगेयअणगारस्स पुच्छाओ भगवओ समाहाणं च] [सु. ३-१३. चउवीसदंडएसु संतर -निरतरोववाय -उव्वट्टणपरूवणा] ३. संतरं भंते ! नेरइया उववज्जंति, निरंतरं नेरइया उववज्जंति ? गंगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति, निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति। ४. (१) संतरं भंते ! असुरकुमारा उववज्जंति, निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति ? गंगेया ! संतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति, निरंतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति। (२) एवं जाव थणियकुमारा। ५. (१) संतरं भंते ! पुढविकाइया उववज्जंति, निरंतरं पुढविकाइया उववज्जंति ? गंगेया ! नो संतरं पुढविकाइया उववज्जंति, निरंतरं पुढविकाइया उववज्जंति। (२) एवं जाव वणस्सइकाइया। ६. वेइंदिया जाव वेमाणिया, एते जहा णेरइया। ७. संतरं भंते ! नेरइया उव्वट्टंति, निरंतरं नेरइया उव्वट्टंति ? गंगेया ! संतरं पि नेरइया उव्वट्टंति, निरंतरं पि नेरइया उव्वट्टंति। ८. एवं जाव थणियकुमारा। ९. (१) संतरं भंते ! पुढविक्काइया उव्वट्टंति० ? पुच्छा। गंगेया ! णो संतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति निरंतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति। (२) एवं जाव वणस्सइकाइया नो संतरं, निरंतरं उव्वट्टंति। १०. संतरं भंते ! बेइंदिया उव्वट्टंति, निरंतरं बेंदिया उव्वट्टंति ? गंगेया ! संतरं पि बेइंदिया उव्वट्टंति, निरंतरं पि बेइंदिया उव्वट्टंति। ११. एवं जाव वाणमंतरा। १२. संतरं भंते ! जोइसिया चयंति० ? पुच्छा। गंगेया ! संतरं पि जोइसिया चयंति, निरंतरं पि जोइसिया चयंति। १३. एवं जाव वेमाणिया वि। [सु. १४. पवेसणगस्स भेयचउक्कं] १४. कइविहे णं भंते ! पवेसणए पण्णत्ते ? गंगेया ! चउव्विहे पवेसणए पण्णत्ते, तं जहा नेरइयपवेसणए तिरिक्खजोणियपवेसणए मणुस्सपवेसणए देवपवेसणए। [सु. १५-२९. नेरइयपवेसणगपरूवणा] [सु. १५. नेरइयपवेसणगस्स सत्त भेया] १५. नेरइयपवेसणए णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गंगेया ! सत्तविहे पन्नत्ते, तं जहा रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए जाव अहेसत्तमापुढविनेरइय पवेसणए। [सु. १६-२७. नेरइयपवेसणए पविसमाणाणं एगादिअसंखेज्जाण नेरइयाणं सत्त नरयपुढविं पडुच्च वित्थरओ भंगपरूवणा] १६. एगे भंते ! नेरइए नेरइयपवेसणए णं पविसमाणे किं रयणप्पभाए होज्जा, सक्करप्पभाए होज्जा, जाव अहेसत्तमाए होज्जा ? गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा। ७। १७. दोभंते ! नेरइया नेरइयपवेसणए णं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ? गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा

Jain Education International 2010_03
For Private & Personal Use Only

www.jainelibrary.org

जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।७। अहवा एगे रयणप्पभाए हुज्जा, एगे सक्करप्पभाए होज्जा १ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए होज्जा २ । जाव एगे रयणप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा, ३-४-५-६ । अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा ७ । जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा, ८-९-१०-११ । अहवा एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए होज्जा १२ । एवं जाव अहवा एगे वालुयप्पभाए. एगे अहेसत्तमाए होज्जा, १३-१४=१५ । एवं एक्केक्का पुढवी छुड्डेयव्वा जाव अहवा एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा, १६-१७-१८-१९-२०-२१ । १८. तिण्णि भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणए णं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ? गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।७। अहवा एगे रयणप्पभाए, दो सक्करप्पभाए होज्जा, १ । जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, दो अहेसत्तमाए होज्जा, २-३-४-५-६ । अहवा दो रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए होज्जा १ । जाव अहवा दो रयणप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा, २-३-४-५-६=१२ । अहवा एगे सक्करप्पभाए, दो वालुयप्पभाए होज्जा १ । जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए, दो अहेसत्तमाए होज्जा, २-३-४-५=१७ । अहवा दो सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए होज्जा १ । जाव अहवा दो सक्करप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा, २-३-४-५=२२ । एवं जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वयाभणिया तहा सव्वपुढवीणं भाणियव्वा, जाव अहवा दो तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा । ४-४, ३-३, २-२, १-१, =४२ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए होज्जा १ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए होज्जा २ । जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३-४-५ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए होज्जा ६ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे धूमप्पभाए होज्जा ७ । एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ८-९ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए होज्जा १० । जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा, ११-१२ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए होज्जा १३ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १४ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १५ । अहवा एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए होज्जा १६ । अहवा एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे धूमप्पभाए होज्जा १७ । जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा, १८-१९ । अहवा एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए होज्जा २० । जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा, २१-२२ । अहवा एगे सक्करप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए होज्जा २३ । अहवा एगे सक्करप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा २४ । अहवा एगे सक्करप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा २५ । अहवा एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा २६ । अहवा एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा २७ । अहवा एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २८ । अहवा एगे वालुयप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए होज्जा २९ । अहवा एगे वालुयप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३० । अहवा एगे वालुयप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३१ । अहवा एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए होज्जा ३२ । अहवा एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३३ । अहवा एगे पंकप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३४ । अहवा एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३५ । ८४ । १९. चत्तारि भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणए णं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा० ? पुच्छा । गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ७ । अहवा एगे रयणप्पभाए, तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा १ । अहवा एगे रयणप्पभाए, तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा २ । एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा ३-६ । अहवा दो रयणप्पभाए, दो सक्करप्पभाए होज्जा १, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए, दो अहेसत्तमाए होज्जा २-६=१२ । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए होज्जा १ । एवं जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा २-६=१८ । अहवा एगे सक्करप्पभाए, तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा १, एवं जहेव रयणप्पभाए उवरिमाहिं समं चारियं तहा रयणप्पभाए वि उवरिमाहिं समं चारियव्वं १-१५=३३ । एवं एक्केक्काए समं चारेयव्वं जाव अहवा तिण्णि तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १५-१५=६३ । अहवा एगे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, दो वालुयप्पभाए होज्जा १ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए. दो पंकप्पभाए होज्जा २ । एवं जाव एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, दो अहेसत्तमाए होज्जा ३-४-५ । अहवा एगे रयणप्पभाए, दो सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए होज्जा १ । एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, दो सक्करप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा २-३-४-५=१० । अहवा दो रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए होज्जा १=११ । एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ५=१५ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, दो पंकप्पभाए होज्जा १-१६ । एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, दो अहेसत्तमाए होज्जा २-३-४=१९ । एवं एएणं गमएणं जहा तिण्हं तियजोगो तहा भाणियव्वो जाव अहवा दो धूमप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १०५ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए होज्जा १ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे धूमप्पभाए होज्जा २ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे तमाए होज्जा ३ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ४ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए १=५ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे तमाए होज्जा २-६ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३-७ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए होज्जा १-८ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा २-९ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगेतमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १=१० । अहवा एगे रयणप्पभाए०, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए होज्जा १-११ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे तमाए होज्जा २-१२ । अहवा एगे रयण०, एगे वालुय०, एगे पंकप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३-१३ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए होज्जा १-१४ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुय०, एगे धूम०, एगे अहेसत्तमाए होज्जा २-१५ । अहवा एगे रयण०, एगे वालुय०, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १-१६ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए होज्जा १-१७ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूम०, एगे अहेसत्तमाए होज्जा २-१८ । अहवा एगे रयण०, एगे पंक०, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १-१९ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १-२० । अहवा एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए होज्जा १-२१ । एवं जहा रयणप्पभाए उवरिमाओ पुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि उवरिमाओ चारियव्वाओ जाव अहवा एग सक्करप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमा,, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १०-३० । अहवा एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए होज्जा १-३१ । अहवा एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा २-३२ । अहवा एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३-३३ । अहवा एगे वालुयप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ४-३४ । अहवा एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १-३५ । २०. पंच भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणए णं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा० ? पुच्छा। गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जाजाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।७। अहवा एगे रयणप्पभाए, चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा १ । जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा ६ । अहवा दो रयणप्पभाए, तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा १-७ । एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए, तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा ६=१२ । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए, दो सक्करप्पभाए होज्जा १-१३ । एवं जाव अहेसत्तमाए होज्जा ६=१८ । अहवा चत्तारि रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए होज्जा १-१९ । एवं जाव अहवा चत्तारि रयणप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ६=४२ । अहवा एगे सक्करप्पभाए, चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा १ । एवं जहा रयणप्पभाए समं उवरिमपुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि समं चारेयव्वाओ जाव अहवा चत्तारि सक्करप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा २० । एवं एक्केक्काए समं चारेयव्वाओ जाव अहवा चत्तारि तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ८४ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा । एवं जाव अहवा एगे रयण०, एगे सक्कर०,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिण्णि पालुयप्पभाए होज्जा १। एवं जाव अहवा, एगे सक्कर० तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा ५। अहवा एगे रयणप्पभाए, दो सक्करप्पभाए, दो वालुयप्पभाए होज्जा १-६। एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, दो सक्करप्पभाए, दो अहेसत्तमाए होज्जा ५-१०। अहवा दो रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, दो वालुयप्पभाए होज्जा १-११। एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, दो अहेसत्तमाए होज्जा ५-१५। अहवा एगे रयणप्पभाए, तिण्णि सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए होज्जा १-१६। एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, तिण्णि सक्कर०, एगे अहेसतमाए होज्जा ५-२०। अहवा दो रयण०, दो सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए होज्जा १-२१। एवं जाव दो रयणप्पभाए, दो सक्करप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए ५-२५। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए होज्जा १-२६। एवं जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ५-३०। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, तिण्णि पंकप्पभाए होज्जा १-३१। एवं एएणं कमेणं जहा चउण्हं तियसंजोगो भणितो तहा पंचण्ह वि तिवसंजोगो भाणियव्वो; नवरं तत्थ एगो संचारिज्जइ, इह दोण्णि, सेसं तं चेव, जाव अहवा तिण्णि धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २१०। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, दो पंकप्पभाए होज्जा १। एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा ४। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, दो वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए होज्जा १-५। एवं जाव अहेसत्तमाए ४-८। अहवा एगे रयणप्पभाए, दो सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए होज्जा १-९। एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, दो सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ४-१२। अहवा दो रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए होज्जा १-१३। एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ४-१६। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, दो धूमप्पभाए होज्जा १-१७। एवं जहा चउण्हं चउक्कसंजोगो भणिओ तहा पंचण्ह वि चउक्कसंजोगो भाणियव्वो, नवरं अब्भहियं एगो संचारेयव्वो, एवं जाव अहवा दो पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए, होज्जा १४०। अहवा १-१-१-१-१ एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा १। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे तमाए होज्जा २। अहवा एगे रयणप्पभाए, जाव एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए होज्जा ४। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे धूमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ५। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ६। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए होज्जा ७। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ८। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ९। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १०। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए होज्जा ११। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १२। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १३। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १४। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा १५। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा १६। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १७। अहवा एगे सक्करप्पभाए, जाव एगे पंकप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १८। अहवा एगे सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा १९। अहवा एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा २०। अहवा एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा २१। ४६२। २१. छब्भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणए णं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा० ? पुच्छा। गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ७। अहवा एगे रयणप्पभाए, पंच सक्करप्पभाए वा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होज्जा १ । अहवा एगे रयणप्पभाए, पंच वालुयप्पभाए वा होज्जा २ । जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, पंच अहेसत्तमाए होज्जा ६ । अहवा दो रयणप्पभाए, चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा १-७ । जाव अहवा दो रयणप्पभाए, चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा ६-१२ । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए, तिण्णि सक्करप्पभाए १-१३ । एवं एएणं कमेणं जहा पंचण्हं दुयासंजोगो तहा छण्ह वि भाणियव्वो, नवरं एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव अहवा पंच तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १०५ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, चत्तारिवालुयप्पभाए होज्जा १ । अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, चत्तारि पंकप्पभाए होज्जा २ । एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा ५ । अहवा एगे रयणप्पभाए, दो सक्करप्पभाए, तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा ६ । एवं एएणं कमेणं जहा पंचण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा छण्ह वि भाणियव्वो, नवरं एक्को अब्भहिओ उच्चारेयव्वो, सेसं तं चेव । ३५० । चउक्कसंजोगो वि तहेव ।३५० । पंचगसंजोगो वि तहेव, नवरं एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव पच्छिमो भंगो -अहवा दो वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।१०५ । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा १, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ४, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ५, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ६, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ७ । ९२४ । २२. सत्त भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणए णं पविसमाणा० पुच्छा । गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ७ । अहवा एगे रयणप्पभाए, छ सक्करप्पभाए होज्जा । एवं एएणं कमेणं जहा छण्हं दुयासंजोगो तहा सत्तण्ह वि भाणियव्वं नवरं एगो अब्भहिओ संचारिज्जइ । सेसं तं चेव । तियासंजोगो, चउक्कसंजोगो, पंचसंजोगो, छक्कसंजोगो य छण्हं जहा तहा सत्तण्ह वि भाणियव्वो, नवरं एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव छक्कगसंजोगो । अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा १ । १७१६ । २३. अट्ठ भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणए णं पविसमाणा० पुच्छा । गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ७ । अहवा १+७ एगे रयणप्पभाए सत्त सक्करप्पभाए होज्जा १ । एवं दुयासंजोगो जाव छक्कसंजोगो य जहा सत्तण्हं भणिओ तहा अट्ठण्ह वि भाणियव्वो, नवरं एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो । सेसं तं चेव जाव छक्कसंजोगस्स । अहवा ३+१+१+१+१+१ तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, एवं संचारेयव्वं जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा । ३००३ । २४. नव भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणए णं पविसमाणा० पुच्छा । गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ७ । अहवा १-८ एगे रयणप्पभाए अट्ठ सक्करप्पभाए होज्जा । एवं दुयासंजोगो जाव सत्तगसंजोगो य । जहा अट्ठण्हं भणियं तहा नवण्हं पि भाणियव्वं, नवरं एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेसं तं चेव । पच्छिमो आलावगो -अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए वा होज्जा । ५००५ । २५. दस भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणए णं पविसमाणा० पुच्छा । गंगेया ! रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाएवा वा होज्जा ७ । अहवा १+९ एगे रयणप्पभाए, नव सक्करप्पभाए होज्जा एवं दुयासंजोगो जाव सत्तसंजोगो य जहा नवण्हं, नवरं एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो । सेसं तं चेव । अपच्छिमआलावगो-अहवा ४+१+१+१+१+१+१, चत्तारि रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा । ८००८ । २६. संखेज्जा भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणए णं पविसमाणा० पुच्छा । गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ७ । अहवा एगे रयणप्पभाए, संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए, संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए, संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा । एवं एएणं कमेणं एक्केक्को संचारेयव्वो जाव अहवा दस रयणप्पभाए, संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दस रयणप्पभाए, संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए, संखेज्जा सक्करप्पभाए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होज्जा; जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए, संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए, संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा; एवं जहा रयणप्पभाए उवरिमपुढवीहिं समं चारिया एवं सक्करप्पभाए वि उवरिमपुढवीहिं समं चारेयव्वा एवं एक्केक्का पुढवी उवरिमपुढवीहिं समं चारेयव्वा जाव अहवा संखेज्जा तमाए, संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। २३१। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्कर०, संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, संखेज्जापंकप्पभाए होज्जा। जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए, दो सक्करप्पभाए, संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा। जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, दो सक्करप्पभाए, संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए, तिण्णि सक्करप्पभाए, संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं एक्केक्को संचारेयव्वो। अहवा एगे रयणप्पभाए, संखेज्जा सक्करप्पभाए, संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा; जाव अहवा रयणप्पभाए, संखेज्जा वालुयप्पभाए, संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए, संखेज्जा सक्करप्पभाए, संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा। जाव अहवा दो रयणप्पभाए, संखेज्जा सक्करप्पभाए, संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए, संखेज्जा सक्करप्पभाए, संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं एक्केक्को रयणप्पभाए संचारेयव्वो जाय अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए, संखेज्जा सक्करप्पभाए, संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा; जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए, संखेज्जा सक्करप्पभाए, संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, संखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा; जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए, दो वालुयप्पभाए, संखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं तियासंजोगो चउक्कसंजोगो जाव सत्तगसंजोगो य जहा दसण्हं तहेव भाणियव्वो। पच्छिमो आलावगो सत्तसंजोगस्स अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए, संखेज्जा सक्करप्पभाए, जाव संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। ३३३७। २७. असंखेज्जा भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणए णं० पुच्छा। गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ७। अहवा एगे रयणप्पभाए, असंखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एवं दुयासंजोगो जाव सत्तगसंजोगो य जहा संखिज्जाणं भणिओ तहा असंखेज्जाण वि भाणियव्वो, नवरं असंखेज्जाओ अब्भहिओ भाणियव्वो, सेसं तं चेव जाव सत्तगसंजोगस्स पच्छिमो आलवगो -अहवा असंखेज्जा रयणप्पभाए असंखेज्जा सक्करप्पभाए जाव असंखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। [सु. २८. पयारंतरेण नेरइयपवेसणगपरूवणा] २८ उक्कोसा णं भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणए णं० पुच्छा ? गंगेया ! सव्वे वि ताव रयणप्पभाए होज्जा ७। अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य होज्जा। अहवा रयणप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा, जाव अहवा रयणप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा। अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा। एवं जाव अहवा रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा ५। अहवा रयणप्पभाए, वालुयप्पभाए, पंकप्पभाए य होज्जा; जाव अहवा रयणप्पभाए, वालुयप्पभाए, अहेसत्तमाए य होज्जा ४। अहवा रयणप्पभाए, पंकप्पभाए य, धूमाए होज्जा। एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा तिण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए, तमाए य, अहेसत्तमाए य होज्जा १५। अहवा रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, वालुयप्पभाए, पंकप्पभाए य होज्जा। अहवा रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, वालुयप्पभाए, धूमप्पभाए य होज्जा; जाव अहवा रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, वालुयप्पभाए, अहेसत्तमाए य होज्जा ४। अहवा रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, पंकप्पभाए, धूमप्पभाए य होज्जा। एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा चउण्हं चउक्कसंजोगो तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए, धूमप्पभाए, तमाए, अहेसत्तमाए होज्जा २०। अहवा रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, वालुयप्पभाए, पंकप्पभाए, धूमप्पभाए य होज्जा १। अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए, तमाए य होज्जा २। अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए, अहेसत्तमाए य होज्जा ३। अहवा रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, वालुयप्पभाए, धूम०, तमाए य होज्जा ४। एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा पंचण्हं पंचकसंजोगो तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए, पंकप्पभाए, जाव अहेसत्तमाए होज्जा १५। अहवा रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, जाव धूमप्पभाए, तमाए य होज्जा १। अहवा रयणप्पभाए, जाव धूमप्पभाए, अहेसत्तमाए य होज्जा २। अहवा रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, जाव पंकप्पभाए, तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा ३। अहवा रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, वालुयप्पभाए, धूमप्पभाए, तमाए, अहेसत्तमाए होज्जा ४। अहवा रयणप्पभाए,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सक्करप्पभाए, पंकप्पभाए जाव अहेसत्तमाए, य होज्जा ५। अहवा रयणप्पभाए, वालुयप्पभाए, जाव अहेसत्तमाए होज्जा६। अहवा रयणप्पभाए य, सक्करप्पभाए, जाव अहेसत्तमाए होज्जा१। [सु. २९. रयणप्पभादिनेरइयपवेसणगस्स अप्पाबहुयं] २९. एयस्स णं भंते ! रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणगस्स सक्करप्पभापुढ० जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गंगेया ! सव्वत्थोवे अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए, तमापुढविनेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे, एवं पडिलोमगं जाव रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे। [सु. ३०-३४. तिरिक्खजोणियपवेसणगपरूवणा] [स. ३०. तिरिक्खजोणियपवेसणगस्स पंच भेया] ३०. तिरिक्खजोणियपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गंगेया ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए। [सु. ३१-३२. तिरिक्खजोणियपवेसणए पविसमाणाणं एगादिअसंखेज्जाणं तिरिक्खजोणियाणं एगिंदियाइपंचेंदिए पडुच्च भंगपरूवणा] ३१. एगे भंते ! तिरिक्खजोणिए तिरिक्खजोणियपवेसणए णं पविसमाणे किं एगिंदिएसु होज्जा जाव पंचिंदिएसु होज्जा ? गंगेया ! एगिंदिएसु वा होज्जा जाव पंचिंदिएसु वा होज्जा। ३२. दो भंते ! तिरिक्खजोणिया० पुच्छा। गंगेया ! एगिंदिएसु वा होज्जा जाव पंचिंदिएसु वा होज्जा ५। अहवा एगे एगिंदिएसु होज्जा एगे बेइंदिएसु होज्जा। एवं जहा नेरइयपवेसणए तहा तिरिक्खजोणियपवेसणए वि भाणियव्वे जाव असंखेज्जा। [सु. ३३. पयारंतरेणं तिरिक्खजोणियपवेसणगपरूवणा] ३३. उक्कोसा भंते! तिरिक्खजोणिया० पुच्छा। गंगेया! सव्वे वि ताव एगेंदिएसु वा होज्जा। अहवा एगिंदिएसु वा बेइंदिएसु वा होज्जा। एवं जहा नेरतिया चारिया तहा तिरिक्खजोणिया वि चारेयव्वा। एगिंदिया अमुयंतेसु दुयासंजोगो तियासंजोगो चउक्कसंजोगो पंचसंजोगो उवउज्जिऊण भाणियव्वो जाव अहवा एगिंदिएसु वा बेइंदिय जाव पंचिंदिएसु वा होज्जा। [सु. ३४. एगिंदियादितिरिक्खजोणियपवेसणगस्स अप्पाबहुयं] ३४. एयस्स णं भंते ! एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणयस्स य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिए वा ? गंगेया ! सव्वत्थोवे पंचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए, चउरिंदियतिरिक्खजोणियप० विसेसाहिए, तेइंदिय० विसेसाहिए, बेइंदिय० विसेसाहिए, एगिंदियतिरिक्ख० विसेसाहिए। [सु. ३५-४१. मणुस्सपवेसणगपरूवणा] [सु. ३५. मणुस्सपवेसणगस्स दोभेया] ३५. मणुस्सपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? गंगेया ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा समुच्छिममणुस्सपवेसणए, गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणए य। [सु. ३६-३९. मणुस्सपवेसणए पविसमाणाणं एगादिअसंखेज्जाणं मणुस्साणं सम्मुच्छिम-गब्भयमणुस्से पडुच्च भंगपरूवणा] ३६. एगे भंते ! मणुस्से मणुस्सपवेसणए णं पविसमाणे कं सम्मुच्छिममणुस्सेसु होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ? गंगेया ! सम्मुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा। ३७. दो भंते ! मणुस्सा० पुच्छा। गंगेया ! सम्मुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा। अहवा एगे सम्मुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा। एवं एएणं कमेणं जहा नेरइयपवेसणए तहा मणुस्सपवेसणए वि भाणियव्वे जाव दस। ३८. संखेज्जा भंते ! मणुस्सा० पुच्छा। गंगेया ! सम्मुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा। अहवा एगे सम्मुच्छिममणुस्सेसु होज्जा, संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा। अहवा दो सम्मुच्छिममणुस्सेसु होज्जा, संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा। एवं एक्केक्कं ओसारिंतेसु जाव अहव संखेज्जा सम्मुच्छिममणुस्सेसु होज्जा, संखेज्जागब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा। ३९. असंखेज्जा भंते ! मणुस्सा० पुच्छा। गंगेया ! सव्वे वि ताव सम्मुच्छिम-मणुस्सेसु होज्जा। अहवा असंखेज्जासम्मुच्छिममणुस्सेसु, एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा। अहवा असंखेज्जा सम्मुच्छिममणुस्सेसु, दो गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा। एवं जाव असंखेज्जा सम्मुच्छिममणुस्सेसु होज्जा, संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा। [सु. ४०. पयारंतरेण मणुस्सपवेसणगपरूवणा] ४० उक्कोसा भंते ! मणुस्सा० पुच्छा। गंगेया ! सव्वे वि ताव सम्मुच्छिममणुस्सेसु होज्जा। अहवा सम्मुच्छिममणुस्सेसु य गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा। [सु. ४१. सम्मुच्छिम-गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणगस्स अप्पाबहुयं] ४१. एयस्स णं भंते ! सम्मुच्छिममणुस्सपवेसणगस्स गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिए वा ? गंगेया ! सव्वत्थोवे गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणए, सम्मुच्छिममणुस्सपवेसणए असंखेज्जगुणे। [सु. ४२-४६. देवपवेसणगपरूवणा]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[सु. ४२. देवपवेसणगस्स भेयचउक्कं] ४२. देवपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गंगेया ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा भवणवासिदेवपवेसणए जाव वेमाणियदेवपवेसणए। [सु. ४३-४४. देवपवेसणए पविसमाणाणं एगादिअसंखेज्जाणं देवाणं भवणवासिआइदेवे पडुच्च भंगपरूवणा] ४३. एगे भंते ! देवे देवपवेसणए णं पविसमाणे किं भवणवासीसु होज्जा वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु होज्जा ? गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होज्जा। ४४. दो भंते ! देवा देवपवेसणए० पुच्छा। गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होज्जा। अहवा एगे भवणवासीसु, एगे वाणमंतरेसु होज्जा। एवं जहा तिरिक्खजोणियपवेसणए तहा देवपवेसणए वि भाणियव्वे जाव असंखिज्ज त्ति। [सु. ४५. पयारंतरेण देवपवेसगपरूवणा ४५. उक्कोसा भंते ! पुच्छा। गंगेया ! सव्वे वि ताव जोइसिएसु होज्जा। अहवा जोइसिय-भवणवासीसु य होज्जा। अहवा जोइसिय-वाणमंतरेसु य होज्जा। अहवा जोइसिय-वेमाणिएसु य होज्जा। अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य होज्जा। अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वेमाणिएसु य होज्जा। अहवा जोइसिएसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा। अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा। सु. ४६. भवणवासिआइदेवपवेसणगस्स अप्पाबहुयं ४६. एयस्स णं भंते ! भवणवासिदेवपवेसणगस्स वाणमंतरदेवपवेसणगस्स जोइसियदेवपवेसणगस्स वेमाणियदेवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिए वा ? गंगेया ! सव्वत्थोवे वेमाणियदेवपवेसणए, भवणवासिदेवपवेसणए असंखेज्जगुणे, वाणमंतरदेवपवेसणए असंखेज्जगुणे, जोइसियदेवपवेसणए संखेज्जगुणे। [सु. ४७. नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवपवेसणगाणमप्पाबहुयं] ४७. एयस्स णं भंते ! नेरइयपवेसणगस्स तिरिक्ख० मणुस्स० देवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिए वा ? गंगेया ! सव्वत्थोवे मणुस्सपवेसणए, नेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे, देवपवेसणए असंखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियपवेसणए असंखेज्जगुणे। [सु. ४८ चउवीसदंडएसु संतर-निरंतरोववाय-उव्वट्टणापरूवणा] ४८. संतरं भंते ! नेरइया उववज्जंति ? निरंतरं नेरइया उववज्जंति ? संतरं असुरकुमारा उववज्जंति ? निरंतरं असुरकुमारा जाव संतरं वेमाणिया उववज्जंति ? निरंतरं वेमाणिया उववज्जंति ? संतरं नेरइया उव्वट्टंति ? निरंतरं नेरतिया उव्वट्टंति ? जाव संतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति ? निरंतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति ? संतरं जोइसिया चयंति ? निरंतरं जोइसिया चयंति ? संतरं वेमाणिया चयंति ? निरंतरं वेमाणिया चयंति ? गंगेया ! संतरं पि नेरतिया उववज्जंति, निरंतरं पि नेरतिया उववज्जंति जाव संतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति, निरंतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति। नो संतरं पुढविक्काइया उववज्जंति, निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति; एवं जाव वणस्सइकाइया। सेसा जहा नेरइया जाव संतरं पि वेमाणिया उववज्जंति, निरंतरं पि वेमाणिया उववज्जंति। संतरं पि नेरइया उव्वट्टंति, निरंतरं पि नेरइया उव्वट्टंति; एवं जाव थणियकुमारा। नो संतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति, निरंतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति; एवं जाव वणस्सइकाइया। सेसा जहा नेरइया, नवरं जोइसिय-वेमाणिया चयंति अभिलावो, जाव संतरं पि वेमाणिया चयंति, निरंतरं पि वेमाणिया चयंति। [सु. ४९-५७. पयारंतरेण चउवीसदंडएसु उववाय-उव्वट्टणापरूवणा] ४९. सओ भंते ! नेरतिया उववज्जंति ? असओ भंते ! नेरइया उववज्जंति ? गंगेया ! सओ नेरइया उववज्जंति, नो असओ नेरइया उववज्जंति। एवं जाव वेमाणिया। ५०. सओ भंते ! नेरतिया उव्वट्टंति, असओ नेरइया उव्वट्टंति ? गंगेया ! सतो नेरइया उव्वट्टंति, नो असओ नेरइया उव्वट्टंति। एवं जाव वेमाणिया, नवरं जोइसिय-वेमाणिएसु 'चयंति' भाणियव्वं। ५१. (१) सओ भंते ! नेरइया उववज्जंति, असओ नेरइया उववज्जंति ? सओ असुरकुमारा उववज्जंति जाव सतो वेमाणिया उववज्जंति, असतो वेमाणिया उववज्जंति ? सतो नेरतिया उव्वट्टंति, असतो नेरइया उव्वट्टंति ? सतो असुरकुमारा उव्वट्टंति जाव सतो वेमाणिया चयंति, असतो वेमाणिया चयंति ? गंगेया ! सतो नेरइया उववज्जंति, नो असओ नेरइया उववज्जंति, सओ असुरकुमारा उववज्जंति, नो असतो असुरकुमारा उववज्जंति, जाव सओ वेमाणिया उववज्जंति, नो असतो वेमाणिया उववज्जंति। सतो नेरतिया उव्वट्टंति, नो असतो नेरइया उव्वट्टंति; जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया०। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति; जाव सओ वेमाणिया चयंति, नो असओ वेमाणिया चयंति ? से नूणं गंगेया ! पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं सासए लोए बुइए, अणाईए अणवयग्गे जहा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमे सए (स. ५ उ० ९ सु० १४ २) जाव जे लोक्कइ से लोए, से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति। ५२. (१) सयं भंते ! एतेवं जाणह उदाहु असयं ? असोच्चा एतेवं जाणह उदाहु सोच्चा 'सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति जाव सओ वेमाणिया चयंति, नो असओ वेमाणिया चयंति' ? गंगेया ! सयं एतेवं जाणामि, नो असयं; असोच्चा एतेवं जाणामि, नो सोच्चा; 'सतो नेरइया उववज्जंति, नो असओ नेरइया उववज्जंति, जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति'। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तं चेव जाव नो असतो वेमाणिया चयंति ? गंगेया ! केवलीणं पुरत्थिमेणं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ, दाहिणेणं एवं जहा सद्दुद्देसए (स० ५ उ० ४ सु० ४ २) जाव निव्वुडे नाणे केवलिस्स, से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ तं चेव जाव नो असतो वेमाणिया चयंति। ५३. (१) सयं भंते ! नेरइया नेरइएसु उववज्जंति ? असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति ? गंगेया ! सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एय वुच्चइ जाव उववज्जंति ? गंगेया ! कम्मोदएणं कम्मगुरुयत्ताए कम्मभारियत्ताए कम्मगुरुसंभारियत्ताए, असुभाणं कम्माणं उदएणं, असुभाणं कम्माणं विवागेणं, असुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, से तेणट्ठेणं गंगेया ! जाव उववज्जंति। ५४. (१) सयं भंते ! असुरकुमारा०पुच्छा। गंगेया ! सयं असुरकुमारा जाव उववज्जंति, नो असयं असुरकुमारा जाव उववज्जंति। (२) से केणट्ठणं तं चेव जाव उववज्जंति ? गंगेया ! कम्मोदएणं कम्मविगतीए कम्मविसोहीए कम्मविसुद्धीए, सुभाणं कम्माणं उदएणं, सुभाणं कम्माणं विवागेणं, सुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए उववज्जंति, नो असयं असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए उववज्जंति।से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति। एवं जाव थणियकुमारा। ५५. (१) सयं भंते ! पुढविक्काइया० पुच्छा। गंगेया ! सयं पुढविकाइया जाव उववज्जंति, नो असयं पुढविक्काइया जाव उववज्जंति। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव उववज्जंति ? गंगेया ! कम्मोदएणं कम्मगुरुयत्ताए कम्मभारियत्ताए कम्मगुरुसंभारियत्ताए, सुभासुभाणं कम्माणं उदएणं, सुभासुभाणं कम्माणं विवागेणं, सुभासुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं पुढविकाइया जाव उववज्जंति, नो असयं पुढविकाइया जाव उववज्जंति। से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति। ५६. एवं जाव मणुस्सा। ५७. वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा। से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ-सयं वेमाणिया जाव उववज्जंति, नो असयं जाव उववज्जंति। [सु. ५८. भगवओ सव्वण्णुत्ते गंगेयाणगारस्स पच्चभिण्णा] ५८. तप्पभिइं च णं से गंगेया ! अणगारे समणं भगवं महावीरं पच्चभिजाणइ सव्वण्णू सव्वदरिसी। [सु. ५९. गंगेयाणगारस्स पंचजामधम्मपडिवज्जणं निव्वाणं च] ५९. तए णं से गंगेये अणगारे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतियं चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं एवं जहा कालासवेसियपुत्तो (स० १ उ० ९ सु० २३-२४)तहेव भाणियव्वं जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।☆☆☆ गंगेयो समत्तो ॥ ९.३२ ॥ ☆☆☆ तेत्तीसइमो उद्देसो 'कुंडग्गामे' ☆☆☆ [सु. १-२०. उसभदत्तमाहण-देवाणंदामाहणीअहियारो] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं माहणकुंडग्गामे नयरे होत्था। वण्णओ। बहुसालए चेतिए। वण्णओ। २. तत्थ णं माहणकुंडग्गामे नयरे उसभदत्ते नामं माहणे परिवसतिअड्ढे दित्ते वित्ते जाव अपरिभूए। रिउवेद-जजुवेद-सामवेद-अथव्वणवेद जहा खंदओ (स० २ उ० १ सु० १२) जाव अन्नेसु य बहुसु बंभण्णएसु नएसु सुपरिनिट्ठिए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्ण-पावे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति। ३. तस्स णं उसभदत्तमाहणस्स देवाणंदा नामं माहणी होत्था, सुकुमालपाणिपाया जाव पियदंसणा सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्ण-पावा जाव विहरइ। [सु. ४-१२. माहणकुंडग्गामसमोसढस्स भगवओ वंदणत्थं उसभदत्तदेवाणंदाणं विभूईए गमणं] ४. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा जाव पज्जुवासति। ५. तए णं उसभदत्ते माहणे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ जाव हियए जेणेव देवाणंदा माहणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता देवाणंदं माहणिं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव सुहंसुहेणं विहरमाणे जाव बहुसालए चेइए अहापडिरूवं जाव विहरति । तं महाफलं खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नाम-गोयस्स वि सवणयाए किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिए ! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो । एयं णं इहभवे य परभवे य हियए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ । ६. तए णं सा देवाणंदा माहणी उसभदत्तेणं माहणेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठजाव हियया करयल जाव कट्टु उसभदत्तस्स माहणस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ । ७. तए णं से उसभदत्ते माहणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेत्ता एवं वयासि-खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त - जोइयसमखुर - वालिधाणसमलिहियसिंगएहिं जंबूणयामयकलावजुत्तपइविसिट्ठएहिं रययामयघंटसुत्तरज्जुयवरकंचणनत्थपग्गहोग्गहियएहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिरयणघंटियाजालपरिगयं सुजायजुगजोत्तरज्जुयजुगपसत्थसुविरचितनिम्मियं पवरलक्खणोववेयं [ग्रन्थाग्रम् ६०००] धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ८. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा उसभदत्तेणं माहणेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव हियया करयल० एवं वयासी-सामी ! 'तह' त्ताणाए विणएणं वयणं जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त० जाव धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेत्ते जाव तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति । ९. तए णं से उसभदत्ते माहणे ण्हाए जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, साओ गिहाओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढे । १०. तए णं सा देवाणंदा माहणी ण्हाया जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं जाव अंतेउराओ निग्गच्छति; अंतेउराओ निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता जाव धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा । ११. तए णं से उसभदत्ते माहणे देवाणंदाए माहणीए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढे समाणे णियगपरियालसंपरिवुडे माहणकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थकरातिसए पासइ, २ धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओपच्चोरुहइ, २ समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छति, तं जहा-सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए एवं जहा बिइयसए (स० २ उ० ५ सु० १४) जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ । १२. तए णं सा देवाणंदा माहणी धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ०, पच्चोरुहित्ता बहुयाहिं खुज्जाहिं जाव महतरगवंदपरिक्खित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, तं जहा-सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए १ अचित्ताणं दव्वाणं अविमोयणयाए २ विणयोणयाए गायलट्ठीए ३ चक्खुफासे अंजलिपग्गहेणं ४ मणस्स एगत्तीभावकरणेणं ५ । जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उसभदत्तं माहणं पुरओ कट्टु ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी णमंसमाणी अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासइ । [सु. १३-१४. भगवंतदंसणागयपण्हयदेवाणंदासंबंधियगोयमपुच्छाए भगवओ समाहाणं] १३. तए णं सा देवाणंदा माहणी आगयपण्हया पप्फुयलोयणा संवरियवलयबाहा कंचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलंबगं पिव समूससियरोमकूवा समणं भगवं महावीरं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी देहमाणी चिट्ठति । १४. 'भंते !' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी- किं णं भंते ! एसा देवाणंदा माहणी आगयपण्हया तं चेव जाव रोमकूवा देवाणुप्पियं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी देहमाणी चिट्ठइ ? 'गोयमा !' दि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-एवं खलु गोयमा ! देवाणंदा माहणी मम अम्मगा, अहं णं देवाणंदाए माहणीए अत्तए । तेणं एसा देवाणंदा माहणी तेणं पुव्वपुत्तसिणेहाणुरागेणं आगयपण्हया जाव समूससियरोमकूवा ममं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी देहमाणी चिट्ठइ । [सु. १५-२०. उसभदत्त-देवाणंदाणं पव्वज्जागहणं निव्वाणं च] १५. तए णं समणे भगवं महावीरे उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदाए य माहणीए तीसे य महतिमहालियाए इसिपरिसाए जाव परिसा पडिगया । १६. तए णं से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठेत्ता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आया० जाव नमंसित्ता एवं वयासी-'एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते !' जहा खंदओ (स० २ उ० १ सु० ३४) जाव 'से जहेयं तुब्भे वदह' त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ, सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव नमंसित्ता एवं वयासी-आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, एवं जहा खंदओ (स० २ उ० १ सु० ३४) तहेव पव्वइओ जाव सामाइयमाइयाइं इक्कारस अंगाइं अहिज्जइ जाव बहूहिं चउत्थ-छट्ठ-ऽट्ठम-दसम जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेति, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरति नग्गभावो जाव तमट्ठं आराहेइ, २ जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। १७. तए णं सा देवाणंदा माहणी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा० समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं जाव नमंसित्ता एवं वयासि-एवमेयं भंते !, तहमेयं भंते !, एवं जहा उसभदत्तो (सु०१६) तहेव जाव धम्ममाइक्खियं। १८. तए णं समणे भगवं महावीरे देवाणंदं माहणिं सयमेव पव्वावेति, सयमेव मुंडावेति, सयमेव अज्जचंदणाए अज्जाए सीसिणित्ताए दलयइ। १९. तए णं सा अज्जचंदणा अज्जा देवाणंदं माहणिं सयमेव पव्वावेति, सयमेव मुंडावेति, सयमेव सेहावेति, एवं जहेव उसभदत्तो तहेव अज्जचंदणाए अज्जाए इमं एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं संपडिवज्जइ-तमाणाए तहा गच्छइ जाव संजमेणं संजमति। २०. तए णं सा देवाणंदा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतियं सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ। सेसं तं चेव जाव सव्वदुक्खप्पहीणा। [सु. २१-११२. जमालिअहियारो] २१. तस्स णं माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नामं नगरे होत्था। वण्णओ। [सु. २२. जमालिस्स भोगोवभोगाइविभववण्णणं] २२. तत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नयरे जमाली नामं खत्तियकुमारे परिवसति, अड्ढे दित्ते जाव अपरिभूए उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसतिबद्धेहिं नाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवनच्चिज्जमाणे उवनच्चिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे पाउस-वासारत्त-सदर-हेमंत-वसंत-गिम्हपज्जंते छप्पि उऊ जहाविभवेणं माणेमाणे माणेमाणे कालं गालेमाणे इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ। [सु.२३-२८. भगवंतागमणसवणाणंतरं जमालिस्स खत्तियकुंडग्गामाओ माहणकुंडग्गामे भगवओ समीवमागमणं] २३. तए णं खत्तियकुंडग्गामे नगरे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर जाव बहुजणसद्दे इ वा जहा उववाइए जाव एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ-एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आइगरे जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स बहिया बहुसालए चेइए अहापडिरूवं जाव विहरइ। तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं जहा उववाइए जाव एगाभिमुहे खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नगरे जेणेव बहुसालए चेइए एवं जहा उववाइए जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति। २४. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स तं महया जणसद्दं वा जाव जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-किं णं अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नगरे इंदमहे इ वा, खंदमहे इ वा, मुगुंदमहे इ वा, नागमहे इ वा, जक्खमहे इ वा, भूयमहे इ वा, कूवमहे इ वा, तडागमहे इ वा, नइमहे इ वा दहमहे इ वा, पव्वयमहे इ वा, रुक्खमहे इ वा, चेइयमहे इ वा, थूभमहे इ वा, जं णं एए बहवे उग्गा भोगा राइन्ना इक्खागा णाया कोरव्वा खत्तिया खत्तियपुत्ता भडा भडपुत्ता सेणावइ २ पसत्थारो २ लेच्छई २ माहणा २ इब्भा २ जहा उववाइए जाव सत्थवाहप्पभिइओ ण्हया कयबलिकम्मा जहा उववाइए जाव निग्गच्छंति ? एवं संपेहेइ, एवं संपेहित्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेति, कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेत्ता एवं वयासि-किं णं देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नगरे इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति ? २५. तए णं से कंचुइज्जपुरिसे जमालिणा खत्तियकुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ० समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल० जमालिं खत्तियकुमारं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी-'णो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ जाव निग्गच्छंति। एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज समणे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवं महावीरे आइगरे जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स बहिया बहुसालए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं जाव विहरति, तए णं एए बहवे उग्गा भोगा जाव अप्पेगइया वंदणवत्तियं जाव निग्गच्छंति'। २६. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे कंचुइज्जपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, कोडुंबियपुरिसे सद्दावइत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। २७. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिणा खत्तियकुमारेणं एवं वुत्ता समाणा जाव पच्चप्पिणंति। २८. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे जहा उववाइए परिसावण्णओ तहा भाणियव्वं जाव चंदणोक्खित्तगायसरीरे सव्वालंकारविभूसिए मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, मज्जणघराओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउघंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता चाउघंटं आसरहं दुरूहेइ, चाउघंटं आसरहं दुरूहित्ता सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडकरपहकरवंदपरिक्खित्ते खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नगरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हेइ, तुरए निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, रहं ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहति, रहाओ पच्चोरुहित्ता पुप्फ-तंबोलाउहमादीयं वाहणाओ य विसज्जेइ, वाहणाओ विसज्जित्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, एगसाडियं उत्तरासंगं करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए अंजलिमउलियहत्थे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेत्ता जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासेइ। [सु. २९-३३. भगवंतदेसणासवणाणंतरं अम्मा-पिईणं पुरओ जमालिस्स पव्वज्जागहणसंकप्पकहणं] २९. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स तीसे य महतिमहालियाए इसि० जाव धम्मकहा जाव पुरिसा पडिगया। ३०. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वयासी-सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! जाव से जहेवं तुब्भे वदह, जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मा-पियरो आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं। ३१. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ० समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता तमेव चाउघंटं आसरहं दुरूहेइ दुरूहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सकोरंट जाव धरिज्जमाणेणं महया भडचडगर० जाव परिक्खित्ते जेणेव खत्तियकुंडग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ, तुरए निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, रहं ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, रहाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अब्भिंतरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव अम्मा-पियरो तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता अम्मापियरो जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी-एवं खलु अम्म ! ताओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए। ३२. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा-पियरो एवं वयासि-धन्ने सि णं तुमं जाया !, कयत्थे सि णं तुमं जाया, कयपुण्णे सि णं तुमं जाया !, कयलक्खणे सि णं तुमं जाया !, जं णं तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मे निसंते, से वि य ते धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। ३३. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो दोच्चं पि एवं वयासी-एवं खलु मए अम्म ! ताओ ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते जाव अभिरुइए। तए णं अहं अम्म ! ताओ ! संसारभउव्विग्गे, भीए जम्मण-मरणेणं, तं इच्छामि णं अम्म ! ताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। [सु. ३४. पुत्तपव्वज्जागहणवयणसवणाणंतरं जमालिमायाए मुच्छानिवडणं] ३४. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुण्णं अमणामं

असुयपुव्वं गिरं सोच्चा निसम्म सेयागयरोमकूवपगलंतविलीणगत्ता सोगभरपवेवियंगमंगी नित्तेया दीणविमणवयणा करयलमलिय व्व कमलमाला तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरलायन्नसुन्ननिच्छाया गयसिरीया पसिढिलभूसणपडंतखुण्णियसंचुण्णियधवलवलयपब्भट्ठउत्तरिज्जा मुच्छावसणट्ठचेतगुरुई सुकुमालविकिण्णकेसहत्था परसुणियत्त व्व चंपगलता निव्वत्तमहे व्व इंदलट्ठी विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि 'धस'त्ति सव्वंगेहिं सन्निवडिया। [सु. ३५-४४. पव्वज्जिउकामस्स जमालिस्स पव्वज्जागहणानिवारएहिं अम्मा-पिईहिं सह संलावो] ३५. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ससंभमोयत्तियाए तुरियं कंचणभिंगारमुहविणिग्गयसीयलजलविमल-धारापसिच्चमाणनिव्ववियगायलट्ठी उक्खेवगतालियंटवीयणगजणियवाएणं सफुसिएणं अंतेउरपरिजणेणं आसासिया समाणी रोयमाणी कंदमाणी सोयमाणी विलवमाणी जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी तुमं सि णं जाय! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविये हिययनंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए किमंग पुण पासणयाए ? तं नो खलु जाया! अम्हे इच्छामो तुब्भं खणमवि विप्पओगं, तं अच्छाहि ताव जाया! जाव ताव अम्हे जीवामो; तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवये वड्ढिय कुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि। ३६. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एवं वयासी तहा वि णं तं अम्म! ताओ! जं णं तुब्भे मम एवं वदह 'तुमं सि णं जाया! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते तं चेव जाव पव्वइहिसि', एवं खलु अम्म! ताओ! माणुस्सए भवे अणेगजाइ-जरा-मरण-रोग-सारीर-माणसपकामदुक्खवेयण-वसण सतोवद्दवाभिभूए अधुवे अणितिए असासए संझब्भरागसरिसे जलबुब्बुदसमाणे कुसग्गजलबिंदुसन्निभे सुविणगदंसणोवमे विज्जुलयाचंचले अणिच्चे सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस णं जाणइ अम्म! ताओ! के पुव्विं गमणयाए ? के पच्छा गमणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मं! ताओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए। ३७. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा-पियरो एवं वयासी इमं च ते जाया! सरीरगं पविसिट्ठरूवं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं उत्तमबल-वीरियसत्तजुत्तं विण्णाणवियक्खणं ससोहग्गगुणसमुस्सियं अभिजायमहक्खमं विविहवाहिरोगरहियं निरुवहयउदत्तलट्ठपंचिंदियपडुं, पढमजोव्वणत्थं अणेगउत्तमगुणेहिं जुत्तं, तं अणुहोहि ताव जाव जाया! नियगसरीररूवसोहग्गजोव्वणगुणे, तओ पच्छा अणुभूयनियगसरीररूवसोभग्गजोव्वणगुणे अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवये वड्ढिय कुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि। ३८. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एवं वयासी तहा वि णं तं अम्म! ताओ! जं णं तुब्भे ममं एवं वदह 'इमं च णं ते जाया! सरीरगं० तं चेव जाव पव्वइहिसि' एवं खलु अम्म! ताओ! माणुस्सगं सरीरं दुक्खाययण विविहवाहिसयसन्निकेतं अट्ठियकट्ठुट्ठियं छिरा-ण्हारुजालओणद्धसंपिणद्धं मट्टियभंडं व दुब्बलं असुइसंकिलिट्ठं अणिट्ठवियसव्वकालसंठप्पयं जराकुणिम-जज्जरघरं व सडण-पडण विद्धंसणधम्मं पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वं भविस्सइ, से केस णं जाणति अम्म! ताओ! के पुव्विं० ? तं चेव जाव पव्वइत्तए। ३९. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा-पियरो एवं वयासी-इमाओ य ते जाया! विपुलकुलबालियाओ कलाकुसलसव्वकाललालियसुहोचियाओ मद्दवगुणजुत्तनिउणविणओवयारपंडियवियक्खणाओ मंजुलमियमुंरभणियविहसियविप्पेक्खियगतिविलासचिट्ठियविसारदाओ अविकलकुलसीलसालिणीओ विसुद्धकुलवंससंताणतंतुवद्धणपगब्भवयभाविणीओ मणाणुकूलहियइच्छियाओ अट्ठ तुज्झ गुणवल्लभाओ उत्तमाओ निच्चं भावाणुरत्तसव्वंगसुंदरीओ भारियाओ, तं भुंजाहि ताव जाया! एताहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगी विसयवियवोच्छिन्नकोउहल्ले अम्हेहिं कालगएहिं जाव पव्वइहिसि। ४०. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एवं वयासी तहा वि णं तं अम्म! ताओ! जं णं तुब्भे मम एवं वयह 'इमाओ ते जाया! विपुलकुल० जाव पव्वइहिसि' एवं खलु अम्म! ताओ! माणुस्सगा कामभोगा उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणगवंतपित्त-पूय-सुक्क-सोणियसमुब्भवा अमणुण्णदुरूवमुत्त-पूइपुरीसपुण्णा मयगंधुस्सासअसुभनिस्सासा उव्वेयणगा बीभच्छा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पकालिया लहुसगा कलमलाहिवासदुक्खबहुजणसाहारणा परिकिलेस -किच्छदुक्खसज्झा अबुहजणसेविया सदा साहुगरहणिज्जा अणंतसंसारवद्धणा कडुयफलविवागा चुडलि व्व अमुच्चमाण दुक्खाणुबंधिणो सिद्धिगमणविग्घा, से केस णं जाणति अम्म ! ताओ ! के पुव्विं गमणयाए ? के पच्छा गमणयाए ? तं इच्छामि णं अम्म ! ताओ ! जाव पव्वइत्तए। ४१. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा-पियरो एवं वयासी इमे य ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहुहिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य विउलधणकणग० जाव संतसारसावएज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दातुं, पकामं भोत्तुं, पकामं परिभाएउं, तं अणुहोहि ताव जाया ! विउले माणुस्सए इड्ढिसक्कारसमुदए, तओ पच्छा अणुहूयकल्लाणे वड्ढिय कुलवंसतंतु जाव पव्वइहिसि। ४२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एवं वयासी तहा वि णं तं अम्म ! ताओ ! जं णं तुब्भे ममं एवं वदह 'इमे य ते जाया ! अज्जग -पज्जग० जाव पव्वइहिसि' एवं खलु अम्म ! ताओ ! हिरण्णे य सुवण्णे य जाव सावएज्जे अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए मच्चुसाहिए दाइयसाहिए अग्गिसामन्ने जाव दाइयसामन्ने अधुवे अणितिए असासए पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस णं जाणइ० तं चेव जाव पव्वइत्तए। ४३. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्म-ताओ जाहे नो संचाएंति विसयाणुलोमाहिं बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सन्नवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सन्नवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभयुव्वेवणकरीहिं पण्णवणाहिं पण्णवेमाणा एवं वयासी एवं खलु जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले जहा आवस्सए जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेंति, अहीव एगंतदिट्ठीए, खुरो इव एगंतधाराए, लोहमया जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गंगा वा महानदी पडिसोयगमणयाए, महासमुद्दे वा भुजाहिं दुत्तरे, तिक्खं कमियव्वं, गरुयं लंबेयव्वं, असिधारगं वत्तं चरियव्वं, नो खलु कप्पइ जाया ! समणाणं निग्गंथाणं आहाकम्मिए इ वा, उद्देसिए इ वा, मिस्सजाए इ वा, अज्झोयरए इ वा, पूइए इ वा, कीए इ वा, पामिच्चे इ वा, अच्छेज्जे इ वा, अणिसट्ठे इ वा, अभिहडे इ वा, कंतारभत्ते इ वा, दुब्भिक्खभत्ते इ वा, गिलाणभत्ते इ वा, वद्दलियाभत्ते इ वा, पाहुणगभत्त इ वा, सेज्जायर पिंडे इ वा, रायपिंडे इ वा, मूलभोयणे इ वा, कंदभोयणे इ वा, फलभोयणे इ वा, बीयभोयणे इ वा, हरियभोयणे इ वा, भुत्तए वा पायए वा। तुमं सि च णं जाया ! सुहसमुयिते णो चेव णं दुहसमुयिते, नालं सीयं, नालं उण्हं, नालं खुहा, नालं पिवासा, नालं चोरा, नालं वाला, नालं दंसा, नालं मसगा, नालं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायंके परीसहोवसग्गे उदिण्णे अहियासेत्तए। तं नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुज्झं खणमवि विप्पयोगं, तं अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो, तओ पच्छा अम्हेहिं जाव पव्वइहिसि। ४४. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा -पियरो एवं वयासी -तहा वि णं तं अम्मं ! ताओ जं णं तुब्भे ममं एवं वदह एवं खलु जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले तं चेव जाव पव्वइहिसि। एवं खलु अम्म ! ताओ ! निग्गंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोगपडिबद्धाणं परलोगपरम्मुहाणं विसयतिसियाणं दुरणुचरे, पागयजणस्स, धीरस्स निच्छियस्स ववसियस्स नो खलु एत्थं किंचि वि दुक्करं करणयाए, तं इच्छामि णं अम्म ! ताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए। [४५. जमालिपव्वज्जागहणे अम्मा-पिईणमणुमती] ४५. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा -पियरो जाहे नो संचाएंति विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य बहूहि य आघवणाहि य पण्णवणाहि य सन्नवणाहि य विण्णवणाहि य आघवेत्तए वा जाव विण्णवेत्तए वा ताहे अकामाइं चेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स निक्खमणं अणुमन्नित्था। [सु. ४६-८२. विसिट्ठविभूइवण्णणापुव्वं जमालिपव्वज्जागहणविसइयं वित्थरओ वण्णणं जमालिस्स पव्वज्जागहणं च] ४६. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दवेत्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खत्तियकुंडग्गामं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसियसम्मज्जिओवलित्तं जहा उववाइए जाव पच्चप्पिणंति। ४७. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विपुलं पिक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह। ४८. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव पच्चप्पिणंति। ४९. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा-पियरो सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसीयावेंति, निसीयावेत्ता अट्ठसएणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोवण्णियाणं कलसाणं एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठसएणं भोमिज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए जाव रवेणं महया महया निक्खमणाभिसेगेणं अभिसिंचइ, निक्खमणाभिसेगेण अभिसिंचित्ता करयल जाव जएणं विजएणं वद्धावेंति, जएणं विजएणं वद्धावेत्ता एवं वयासी भण जाया ! किं देमो ? किं पयच्छामो ? किणा वा ते अट्ठो ? ५०. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा -पियरो एवं वयासी इच्छामि णं अम्म ! ताओ ! कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणिउं कासवगं च सद्दाविउं। ५१. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय सयसहस्सेणं सयसहस्सेणं कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणेह, सयसहस्सेणं च कासवगं सद्दावेह। ५२. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल जाव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं तहेव जाव कासवगं सद्दावेंति। ५३. तए णं से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविते समाणे हट्ठे तुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सरीरे जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता करयल० जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पियरं जएणं विजएणं वद्धावेइ, जएणं विजएणं वद्धावित्ता एवं वयासी संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं मए करणिज्जं। ५४. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कासवगं एवं वयासी तुमं णं देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेहि। ५५. तए णं से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे करयल जाव एवं सामी ! तहत्ताणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता सुरभिणा गंधोदएणं हत्थ -पादे पक्खालेइ, सुरभिणा गंधोदएणं हत्थ-पादे पक्खलित्ता सुद्धाए अट्ठपडलाए पोत्तीए मुहं बंधइ, मुहं बंधित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेइ। ५६. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छइ, अग्गकेसे पडिच्छित्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ, सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेत्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहिं अच्चेति, अच्चित्ता सुद्धवत्थेणं बंधेइ, सुद्धवत्थेणं बंधित्ता रयणकरंडगंसि पक्खिवति, पक्खिवित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं सुयवियोगदूसहाइं अंसूइं विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी एवं वयासी एस णं अम्हं जमालिस्स खत्तियकुमारस्स बहूसु तिहीसु य पव्वणीसु य उस्सवेसु य जण्णेसु य छणेसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सति इति कट्टु ओसीसगमूले ठवेति। ५७. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मा-पियरो दुच्चं पि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति, दुच्चं पि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावित्ता जमालिं खत्तियकुमारं सेयापीतएहिं कलसेहिं ण्हाणेंति, से० २ पम्हसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाइए गायाइं लूहेंति, सुरभीए गंधकासाइए गा[illegible] लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपंति, गायाइं अणुलिंपित्ता नासानिस्सासवायवोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिसजुत्तं हय[illegible]पेलवातिरेगं धवलं कणगखचियंतकम्मं महरिहं हंसलक्खणं पडसाडगं परिहिंति, परिहित्ता हारं पिणद्धेंति, २ अद्धहारं पिणद्धेंति, अ० पिणद्धित्ता एवं जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव जाव चित्तं रयणसंकडुक्कडं मउडं पिणद्धंति, किं बहुणा ? गंथिम-वेढिम-पुरिम-संघातिमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिवं अलंकियविभूसियं करेंति। ५८. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासि-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं जहा रायप्पसेणइज्जे विमाणवण्णओ जाव मणिरयणघंटियाजालपरिखित्तं पुरिससहस्सवाहणीयं सीयं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। ५९. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति। ६०. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे केसालंकारेणं वत्थालंकारेणं मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं चउव्विहेणं अलंकारेण अलंकरिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेति, सीहासणाओ अब्भुट्ठेत्ता सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सन्निसण्णे। ६१. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सरीरा हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरूहइ, सीयं दुरूहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि सन्निसण्णा। ६२. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मधाई ण्हाया जाव सरीरा रयहरणं च पडिग्गहं च

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरूहइ, सीयं दुरूहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरंसि सन्निसण्णा। ६३. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरूणी सिंगारागारचारूवेसा संगय-गय जाव रूवजोव्वणविलासकलिया सुंदरथण० हिम-रयत-कुमुद-कुंदेंदुप्पगासं सकोरेंटमल्लदामं धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं ओधरेमाणी ओधरेमाणी चिट्ठति। ६४. तए णं तस्स जमालिस्स उभयोपासिं दुवे वरतरूणीओ सिंगारागारचारु जाव कलियाओ नाणामणि-कणग-रयण-विमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ संखंक-कुंदेंदु दगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निकासाओ चामराओ गहाय सलीलं वीयमाणीओ वीयमाणीओ चिट्ठंति। ६५. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तरपुरत्थिमेणं एगा वरतरूणी सिंगारागार जाव कलिया सेयं रयतामयं विमलसलिलपुण्णं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठइ। ६६. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणपुरित्थमेणं एगा वरतरूणी सिंगारागार जाव कलिया चित्तं कणगदंडं तालयंटं गहाय चिट्ठति। ६७. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेत्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसयं सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावण्ण -रूव-जोव्वणगुणोववेयं एगाभरणवसणगहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सद्दावेह। ६८. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सरिसयं सरित्तयं जाव सद्दावेंति। ६९. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा (?तरुणा) जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठ० ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता एगाभरण-वसणगहियनिज्जोया जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता करयळ जाव वद्धवेत्ता एवं वयासी संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं अम्हेहिं करणिज्जं। ७०. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं एवं वदासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हया कयबलिकम्मा जाव गहियनिज्जोगा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहह। ७१. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा(?तरुणा) जमालिस्स खत्तियकुमारस्स जाव पडिसुणेत्ता ण्हाया जाव गहियनिज्जोगा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहंति। ७२. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तं सोत्थिय सिरिवच्छ जाव दप्पणा। तदणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगारं जहा उववाइए जाव गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। एवं जहा उववाइए तहेव भाणियव्वं जाव आलोयं च करेमाणा 'जय जय' सद्दं च पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तदणंतरं च णं बहवे उग्गा भोगा जहा उववाइए जाव महापुरिसवग्गुरा परिक्खित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ य मग्गओ य पासओ य अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। ७३. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाए कतबलिकम्मे जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं उद्धुव्वमाणीहिं हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए संपरिवुडे महया भड -चडगर जाव परिक्खित्ते जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ पिट्ठओ अणुगच्छइ। ७४. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ महंआसा आसवरा, उभओ पासिं णागा णागवरा, पिट्ठओ रहा रहसंगेल्ली। ७५. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अब्भुग्गयभिंगारे पग्गहियतालियंटे ऊसवियसेतछत्ते पवीइतसेतचामरवालवीयणीए सव्विड्ढीए जाव णादितरवेणं खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। ७६. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणस्स सिंघाडग-तिग-चउक्क जाव पहेसु बहवे अत्थत्थिया जहा उववाइए जाव आभिनंदंता य अभित्थुणंता य एवं वयासी जय जय णंदा ! धम्मेणं, जय जय णंदा ! तवेणं, जय जयणंदा ! भद्दं ते, अभग्गेहिं णाण-दंसण-चरित्तमुत्तमेहिं अजियाइं जिणाहि इंदियाइं, जियं च पालेहि समणधम्मं, जियविग्घो वि य वसाहि तं देव ! सिद्धिमज्झे, णिहणाहि य राग-दोसमल्ले तवेणं धितिधणियबद्धकच्छे, मद्दाहि अट्ठकम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं, अप्पमत्तो हराहि आराहणपडागं च धीर ! तिलोक्करंगमज्झे, पाव य वितिमिरमणुत्तरं केवलं च णाणं, गच्छ य मोक्खं परं पदं जिणवरोवदिट्ठेणं सिद्धिमग्गेणं अकुडिलेणं, हंता परीसहचमुं, अभिभविय गामकंटकोवसग्गा णं, धम्मे ते अविग्घमत्थु। त्ति कट्टु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिनंदंति य अभिथुणंति य। ७७. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे नयणमालासहस्सेहिं पिच्छिज्जमाणे पिच्छिज्जमाणे एवं जहा उववाइए कूणिओ जाव णिग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नगरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ, ठवित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ। ७८. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा-पियरो पुरओ काउं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ; तेणेव उवागच्छित्ता, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वदासी एवं खलु भंते ! जमाली खत्तियकुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते जाव किमंग पुण पासणयाए ? से जहानामए उप्पले इ वा पउमे इ वा जाव सहस्सपत्ते इ वा पंके जाए जले संवुड्ढे णोवलिप्पति पंकरएणं णोवलिप्पइ जलरएणं एवामेव जमाली वि खत्तियकुमारे कामेहिं जाए भोगेहिं संवुड्ढे णोवलिप्पइ कामरएणं णोवलिप्पइ भोगरएणं णोवलिप्पइ मित्त-णाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं, एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गे, भीए जम्मण-मरणेणं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयइ, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं अम्हे सीसभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया सीसभिक्खं। ७९. तए णं समणे भगवं महावीरे तं जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं। ८०. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालंकार ओमुयइ। ८१. तते णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरण-मल्लालंकारं पडिच्छति, पडिच्छित्ता हार -वारिं जाव विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी 'घडियव्वं जाया !, जइयव्वं जाया !, परक्कमियव्वं जाया !, अस्सिं च णं अट्ठे णो पमायेतव्वं' ति कट्टु जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मा-पियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता, जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया। ८२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, करित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता एवं जहा उसभदत्तो (सु. १६) तहेव पव्वइओ, नवरं पंचहिं पुरिससएहिं सद्धिं तहेव सव्वं जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जेत्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठ-ऽट्ठम जाव मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। [सु. ८३-८७. भगवंताणुमइउवेहगस्स जमालिस्स जणवयविहरणं] ८३. तए णं से जमाली अणगारे अन्नया कयाई जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए। ८४. तए णं से समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं णो आढाइ, णो परिजाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ। ८५. तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं जाव विहरित्तए। ८६. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्चं पि तच्चं पि एयमट्ठं णो आढाइ जाव तुसिणीए संचिट्ठइ। ८७. तए णं से जमालि अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ। [सु. ८८-९१. जमालिस्स सावत्थीए भगवओ य चंपाए विहरणं] ८८. तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं णयरी होत्था। वण्णओ। कोट्ठए चेइए। वण्णओ। जाव वणसंडस्स। ८९. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी होत्था। वण्णओ। पुण्णभद्दे चेइए। वण्णओ। जाव पुढविसिलावट्टओ। ९०. तए णं से जमाली अणगारे अन्नया कयाइ पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हति, अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। ९१. तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपा नगरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ; तेणेव उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हति, अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। [सु. ९२. जमालिसरीरे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रोगायंकुप्पत्ती] ९२. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहिं अरसेहि य विरसेहि य अंतेहि य पंतेहि य लूहेहि य तुच्छेहि य कालाइक्कंतेहि य पमाणाइक्कंतेहि य सीतएहि य पाण -भोयणेहिं अन्नया कयाइ सरीरगंसि विउले रोगातंके पाउब्भूए उज्जले तिउले पगाढे कक्कसे कडुए चंडे दुक्खे दुग्गे तिव्वे दुरहियासे, पित्तज्जरपरिगतसरीरे दाहवक्कंतिए यावि विहरइ। [सु. ९३-९७. उप्पन्नरोगायंकस्स जमालिस्स संथारगकरणपण्हुत्तरगय - 'कडेमाणकड' विसइया विपरिणामणा] ९३. तए णं से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समाणे समणे णिग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम सेज्जासंथारगं संथरेह। ९४. तए णं ते समणा णिग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जासंथारगं संथरेंति। ९५. तए णं से जमाली अणगारे बलियतरं वेदणाए अभिभूए समाणे दोच्चं पि समणे निग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावित्ता दोच्चं पि एवं वयासी-ममं णं देवाणुप्पिया ! सेज्जासंथारए किं कडे ? कज्जइ ? तए णं ते समणा निग्गंथा जमालिं अणगारं एवं वयासी-णो खलु देवाणुप्पियाणं सेज्जासंथारए कडे, कज्जति। [सु. ९६-९७. 'चलमाण-चलिय' आइभगवंतवयणविरुद्धाए जमालिकयाए परूवणाए केसिंचि जमालिसिस्साणमसद्दहणा भगवंतसमीवगमणं च] ९६. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-जं णं समणे भगवं महावीरे एवं आइक्खइ जाव एवं परूवेइ- 'एवं खलु चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए जाव निज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे' तं णं मिच्छा, इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए, जम्हा णं सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे संथरिज्जमाणे असंथरिए तम्हा चलमाणे वि अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे वि अणिज्जिण्णे। एवं संपेहेइ; एवं संपेहेत्ता समणे निग्गंथे सद्दावेइ; समणे निग्गंथे सद्दावेत्ता एवं वयासी-जं णं देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे एवं आइक्खइ जाव परूवेइ-एवं खलु चलमाणे चलिए तं चेव सव्वं जाव णिज्जरिज्जमाणे अणिज्जिण्णे। ९७. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स एवं आइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स अत्थेगइया समणा निग्गंथा एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति। अत्थेगइया समणा निग्गंथा एयमट्ठं णो सद्दहंति णो पत्तियंति णो रोयंति। तत्थ णं जे ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति ते णं जमालिं चेव अणगारं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति। तत्थ णं जे ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं णो सद्दहंति णो पत्तियंति णो रोयंति ते णं जमालिस्स अणगारस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव चंपानयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति, करित्ता वंदंति णमंसंति, २ समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति। [सु. ९८. चंपाए भगवंतसमीवागयस्स जमालिस्स अप्पाणमुद्दिस्स केवलित्तपरूवणं] ९८. तए णं से जमाली अणगारे अन्नया कयाइ ताओ रोगायंकाओ विप्पमुक्के हट्ठे जाए अरोए बलियसरीरे सावत्थीओ नयरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-जहा णं देवाणुप्पियाणं बहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्था भवेत्ता छउमत्थावक्कमणेणं अवक्कंता, णो खलु अहं तहा छउमत्थे भवित्ता छउमत्थावक्कमणेणं अवक्कंते, अहं णं उप्पन्नणाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते। [सु. ९९-१०२. गोयमकयपण्हनिरुत्तरस्स भगवंतकयसमाहाणमसद्दहंतस्स य जमालिस्स मरणं लंतयदेवकिब्बिसिएसु उववाओ य] ९९. तए णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं एवं वयासि-णो खलु जमाली ! केवलिस्स णाणे वा दंसणे वा सेलंसि वा थंभंसि वा थूभंसि वा आवरिज्जइ वा णिवारिज्जइ वा। जइ णं तुमं जमाली ! उप्पन्नणाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते तो णं इमाइं दो वागरणाइं वागरेहि, 'सासए लोए जमाली ! असासए लोए जमाली ! ? सासए जीवे जमाली ! असासए जीवे जमाली ! ?' १००. तए णं से जमाली अणगारे भगवया गोयमेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए जाव कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था, णो संचाएति भगवओ गोयमस्स किंचि वि पमोक्खमाइक्खित्तए, तुसिणीए संचिट्ठइ। १०१. 'जमाली' ति समणे भगवं महावीरे जमालिं अणगारं एवं वयासी-अत्थि णं जमाली ! ममं बहवे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्था जे णं पभू एयं वागरणं वागरित्तए जहा णं अहं, नो चेव णं एयप्पगारं भासं भासित्तए जहा णं तुमं। सासए लोए जमाली ! जं णं कयावि णासि ण, कयावि ण भगति ण, न कदावि ण भविस्सइ; भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे। असासए लोए जमाली ! जओ ओसप्पिणी भवित्ता उस्सप्पिणी भवइ, उस्सप्पिणी भवित्ता ओसप्पिणी भवइ। सासए जीवे जमाली ! जं णं न कयाइ णासि जाव णिच्चे। असासए जीवे जमाली ! जं णं नेरइए भवित्ता तिरिक्खजोणिए भवइ, तिरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ, मणुस्से भवित्ता देवे भवइ। १०२. तए णं से जमाली अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं णो सद्दहइ णो पत्तियइ णो रोएइ, एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे दोच्चं पि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमइ, दोच्चं पि आयाए अवक्कमित्ता बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, अ० झूसेत्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिव्विसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने। [सु. १०३. गोयमपण्हुत्तरे भगवंतकयं जमालिगइपरूवणं] १०३. तए णं से भगवं गोयमे जमालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से जमाली णामं अणगारे, से णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ? गोयमा दि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे से तदा मम एवं आइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठं णो सद्दहइ णो पत्तियइ णो रोएइ, एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमेणे दोच्चं पि ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं तं चेव जाव देव किब्बिसियत्ताए उववन्ने। [सु. १०४-९. देवकिब्बिसियाणं भेय-ठाण-उववायहेउ-अणंतरगइपरूवणा] १०४. कतिविहा णं भंते ! देवकिब्बिसिया पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा देवकिब्बिसिया पण्णत्ता, तं जहा तिपलिओवमट्ठिईया, तिसागरोवमट्ठिईया, तेरससागरोवमट्ठिईया। १०५. कहि णं भंते ! तिपलिओवमट्ठितीया देवकिबिबिसिया परिवसंति ? गोयमा ! उप्पिं जोइसियाणं, हिट्ठिं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिपलिओवमट्ठिईया देवकिब्बिसिया परिवसंति। १०६. कहि णं भंते ! तिसागरोवमट्ठिईया देवकिब्बिसिया परिवसंति ? गोयमा ! उप्पिं सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं, हिट्ठिं सणंकुमार -माहिंदेसु कप्पेसु, एत्थे णं तिसागरोवमट्ठिईया देवकिब्बिसिया परिवसंति। १०७. कहि णं भंते ! तेरससागरोवमट्ठिईया देवकिब्बिसिया देवा परिवसंति ? गोयमा ! उप्पिं बंभलोगस्स कप्पस्स, हिट्ठिं लंतए कप्पे, एत्थ णं तेरससागरोवमट्ठिईया देवकिब्बिसिया देवा परिवसंति। १०८. देवकिब्बिसिया णं भंते ! केसु कम्मादाणेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति ? गोयमा ! जे इमे जीवा आयरियपडिणीया उवज्झायपडिणीया कुलपडिणीया गणपडिणीया, संघपडिणीया, आयरिय -उवज्झायाणं अयसकरा अवण्णकरा अकित्तिकरा बहूहिं असब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं च परं च उभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवकिब्बिसिएसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति; तं जहा तिपलिओवमट्ठितीएसु वा तिसागरोवमट्ठितीएसु वा तेरससागरोवमट्ठितीएसु वा। १०९. देवकिबिबसिया णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ? गोयमा ! जाव चत्तारि पंच नेरइय -तिरिक्खजोणिय -मणुस्स -देवभवग्गहणाइं संसार अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झंति बुज्झंति जाव अंतं करेंति। अत्थेगइया अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टंति। [सु. ११०-११. जमालिस्स देवकिब्बिसिओववायहेउपरूवणा] ११०. जमाली णं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भंते ! अणगारे अरसाहारे विरसाहारे अंताहारे पंताहारे लूहाहारे तुच्छाहारे अरसजीवी विरसजीवी जाव तुच्छजीवी उवसंतजीवी पसंतजीवी विवित्तजीवी ? हंता, गोयमा ! जमाली णं अरगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवि ? हंता, गोयमा ! जमाली णं अरगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी। १११. जति णं भंते ! जमाली अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी कम्हा णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमट्ठितीएसु देवकिब्बितसएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ? गोयमा ! जमाली णं अणगारे आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए आयरिय -उवज्झायाणं अयसकारए जाव वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता अद्धमासिए संलेहणाए तीसय भत्ताइं अणसमाए उदेति, तीसं भत्ताइं अणसणाए उदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे जाव उववन्ने। [सु. ११२. जमालिजीवस्स परंपरेणं सिज्झणापरूवणा] ११२. जमाली णं भंते ! देव ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! जाव पंच तिक्खिजोणिय -मणुस्स -देवभवग्गहणाइं संसार अणुपरियट्टित्ता ततो पच्छा सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ॥ ☆☆☆ **जमाली समत्तो ॥९.३३॥ ☆☆☆ चउत्तीसइमो उद्देसो 'पुरिसे'☆☆☆** [सु. १. चोत्तिसइमुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवं वदासी [सु. २-६. पुरिस-आस-हत्थिआइ-अन्नयरतसपाण-इसिहणमाणे पुरिसे तदण्णजीवहणणपरूवणा] २. (१) पुरिसे णं भंते ! पुरिसं अणमाणे किं पुरिसं हणति, नोपुरिसं हणति ? गोयमा ! पुरिसं पि हणति, नोपुरिसे वि हणति। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ' ? गोतमा ! तस्स णं एवं भवइ 'एवं खलु अहं एगं पुरिसं हणामि' से णं एगं पुरिसं अणमाणे अणेगे जीवे हणइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ 'पुरिसं पि हणइ नो पुरिसे वि हणइ'। ३. (१) पुरिसे णं भंते ! आसं अणमाणे किं आसं हणइ, नोआसे वि अणइ ? गोयमा ! आसं पि हणइ, नोआसे वि हणइ। (२) से केणट्ठेणं ? अट्ठो तहेव। ४. एवं हत्थिं सीहं वग्घं जाव चिल्ललगं। ५. (१) पुरिसे णं भंते ! अन्नयरं तसपाणं हणमाणे किं अन्नयरं तसपाणं हणइ, नोअन्नयरे तसे पाणे हणइ ? गोयमा ! अन्नयरं पि तसपाणं हणइ, नोअन्नयरे वि तसे पाणे हणइ। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ'अन्नयरं पि तसपाणं हणइ नो अन्नयरे वि तसे पाणे हणइ' ? गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ एवं खलु अहं एगं अन्नयरं तसं पाणं हणामि, से णं एगं अन्नयरं तसं पाणं हणमाणे अणेगे जीवे हणइ। से तेणट्ठेणं गोयमा। तं चेव। एए सव्वे वि एक्कगमा। ६. (१) पुरिसे णं भंते ! इसिं हणमाणे किं इसिं हणइ, नोइसिं हणइ ? गोयमा ! इसिं पि हणइ नोइसिं पि हणइ। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव नोइसिं पि हणइ ? गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ एवं खलु अहं एगं इसिं हणामि, से णं एगं इसिं हणमाणे अणंते जीवे हणइ से तेणट्ठेणं निक्खेवओ। [सु. ७-८. हणमाणस्स पुरिसस्स वेरफासणावत्तव्वया] ७. (१) पुरिसे णं भंते ! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसवेरेणं पुट्ठे, नोपुरिसवेरेणं पुट्ठे ? गोयमा ! नियमा ताव पुरिसवेरेणं पुट्ठे १, अहवा पुरिसवेरेण य णोपुरिसवेरेण य पुट्ठे २, अहवा पूरिवेरेण य नोपुरिसवेरेहि य पुट्ठे ३। (२) एवं आसं, एवं जाव चिल्ललगं जाव अहवा चिल्ललगवेरेण य णोचिल्ललगवेरेहि य पुट्ठे। ८. पुरिसे णं भंते ! इसिं हणमाणे किं इसिवेरेणं पुट्ठे, नोइसिवेरेणं पुट्ठे ? गोयगा ! नियमा ताव इसिवेरेणं पुट्ठे १, अहवा इसिवेरेण य णोइसिवेरेण य पुट्ठे २, अहवा इसिवेरेण य नोइसिवेरेहि य पुट्ठे ३। [सु. ९-१५. पुढविकाइयाईणं पंचण्हं उच्छासाइपरूवणा] ९. पुढविकाइये णं भंते ! पुढविकायं चेव आणमति वा पाणमति ऊससति वा नीससति वा ? हंता, गोयमा ! पुढविक्काइए पुढविक्काइयं चेव आणमति वा जाव नीससति वा। १०. पुढविक्काइए णं भंते ! आउक्काइयं आणमति वा जाव नीससति वा ? हंता, गोयमा ! पुढविक्काइइए आउक्काइयं आणमति वा जाव नीससति वा। ११. एवं तेउक्काइयं वाउक्काइयं। एवं वणस्सइकाइयं। १२. आउक्काइए णं भंते ! पुढविक्काइयं आणमति वा पाणमति वा० ? एवं चेव। १३. आउक्काइए णं भंते ! आउक्काइयं चेव आणमति वा० ? एवं चेव। १४. एवं तेउ-वाउ-वणस्सइकाइयं। १५. तेउक्काइए णं भंते ! पुढविक्काइयं आणमति वा ? एवं.जाव वणस्सइकाइए णं भंते ! वणस्सइकाइयं चेव आणमति वा० ? तहेव। [सु. १६-२२. उच्छसंताईसु पुढविकाइयाईसु पंचसु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किरियापरूवणा] १६. पुढविक्काइए णं भंते ! पुढविकाइयं चेव आणममाणे वा पाणममाणे वा ऊससमाणे वा नीससमाणे वा कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए। १७. पुढविक्काइए णं भंते ! आउक्काइयं आणमाणे वा० ? एवं चेव। १८. एवं जाव वणस्सइकाइयं। १९. एवं आउकाइएण वि सव्वे वि भाणियव्वा। २०. एवं तेउक्काइएण वि। २१. एवं वाउक्कइएण वि। २२. वणस्सइकाइए णं भंते ! वणस्सइकाइयं चेव आणममाणे वा० ? पुच्छा। गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए। [सु. २३-२५. रुक्खमूल-कंद-बीयाणि पचालेमाणे पवाडेमाणे य वाउकाए किरियापरूवणा] २३. वाउक्कइए णं भंते ! रुक्खस्स मूलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए। २४. एवं कंदं। २५. एवं जाव बीयं पचालेमाणे वा० पुच्छा। गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆॥ **चउत्तीसइमो उद्देसो समत्तो ॥९.३४॥ नवमं सत्तं समत्तं ॥९॥ 卐卐卐 दसमं सयं 卐卐卐** [सु. १. दसमसयस्स चोत्तीसुद्देसनामसंगहगाहा] १. दिस १ संवुडअणगारे २ आइड्ढी ३ सामहत्थि ४ देवि ५ सभा ६। उत्तर अंतरदीवा ७-३४ दसमम्मि सयम्मि चोत्तीसा॥१॥ ☆☆☆ **पढमो उद्देसओ 'दिस'** ☆☆☆ [सु. २. पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ] २. रायगिहे जाव एवं वदासी [सु. ३-५. दिसाणं सरूवं] ३. किमियं भंते ! पाईणा ति पवुच्चति ? गोयमा ! जीवा चेव अजीवा चेव। ४. किमियं भंते ! पडीणा ति पवुच्चति ? गोयमा ! एवं चेव ५. एवं दाहिणा, एवं उदीणा, एवं उड्ढा, एवं अहा वि। [सु. ६. दिसाणं दस भेया] ६. कति णं भंते ! दिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दस दिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा पुरत्थिमा १ पुरत्थिमदाहिणा २ दाहिणा ३ दाहिणपच्चत्थिमा ४ पच्चत्थिमा ५ पच्चत्थिमुत्तरा ६ उत्तरा ७ उत्तरपुरत्थिमा ८ उड्ढा ९ अहा १०। [सु. ७. दसण्हं दिसाणं नामंतरदसगं] ७. एयासि णं भंते ! दसण्हं दिसाणं कति णामधेज्जा पण्णत्ता ? गोयमा ! दस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा इंदऽग्गेयी १-२ जम्मा य ३ नेरती ४ वारुणी ५ य वायव्वा ६। सोमा ७ ईसाणी या ८ विमला य ९ तमा य १० बोधव्वा ॥२॥ [सु. ८-१७. जीवाजीवेहिं जीवाजीवदेस-पदेसेहि य दससु दिसासु वत्तव्वया] ८. इंदा णं भंते ! दिसा किं जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपएसा ? गोयमा ! जीवा वि, तं चेव जाव अजीवपएसा वि। जे जीवा ते नियमं एगिंदिया, बेइंदिया जाव पंचिंदिया, अणिंदिया। जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा। जे जीवपएसा ते नियमं एगिंदियपएसा जाव अणिंदियपएसा। जे जीवपएसा ते नियमं एगिंदियपएसा जाव अणिंदियपएसा। जे अजीवा, ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा रूविअजीवा य, अरूविअजीवा य। जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा खंधा १ खंधदेसा २ खंधपएसा ३ परमाणुपोग्गला ४। जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा नो धम्मत्थिकाये, धम्मत्थिकायस्स देसे १ धम्मत्थिकायस्स पदेसा २; नो अधम्मत्थिकाये, अधम्मत्थिकायस्स देसे ३ अधम्मत्थिकायस्स पदेसा ४; नो आगासत्थिकाये, आगासत्थिकायस्स देसे ५ आगासत्थिकायस्स पदेसा ६ अद्धासमये ७। ९. अग्गेयी णं भंते ! दिसा किं जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा० पुच्छा। गोयमा ! णो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीव वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि। जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा। अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे १, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसा २, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा ३। अहवा एगिंदियदेसा य तेइंदियस्स देसे, एवं चेव तियभंगो भाणियव्वो। एवं जाव अणिंदियाणं तियभंगो। जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा। अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियस्स पदेसा, अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियाण य पएसा। एवं आदिल्लविरहिओ जाव अणिंदियाणं। जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा- रूविअजीवा य अरूविअजीवा य। जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा खंधा जाव परमाणुपोग्गला ४। जे अरूविअजीवा ते सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा नो धम्मत्थिकाये, धम्मत्थिकायस्स देसे १ धम्मत्थिकायस्स पदेसा २; एवं अधम्मत्थिकायस्स वि ३-४; एवं आगासत्थिकायस्स वि जाव आगासत्थिकायस्स

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पदेसा ५-६; अद्धासमये ७ ॥ १०. जम्मा णं भंते ! दिसा किं जीवा० ? जहा इंदा (सु. ८) तहेव निरवसेसं। ११. नेरई जहा अग्गेयी (सु. ९)। १२. वारुणी जहा इंदा (सु.८)। १३. वायव्वा जहा अग्गेयी (सु. ९)। १४. सोमा जहा इंदा। १५. ईसाणी जहा अग्गेयी। १६. विमलाए जीवा जहा अग्गेईए, अजीवा जहा इंदाए। १७. एवं तमाए वि, नवरं अरूवी छव्विहा। अद्धासमयो न भण्णति। [सु. १८-१९. पंचविहसरीरभेयाइजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] १८. कति णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा ओरालिए जाव कम्मए। १९. ओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? एवं ओगाहणसंठाणपदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव अप्पाबहुगं ति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। **☆☆☆॥ दसमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥१०.१ ॥ बीओ उद्देसओ 'संवुडअणगारे'☆☆☆** [सु. १. बितिउद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासी। [सु. २-३. वीयीपंथ-अवीयीपंथठियम्मि रूवाइं निज्झायमाणम्मि संवुडम्मि अणगारम्मि कमेण संपराइयकिरिया -इरियावहियकिरियापरूवणं] २. (१) संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स वीयी पंथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स, मग्गतो रूवाइं अवयक्खमाणस्स, पासतो रूवाइं अवलोएमाणस्स, उड्ढं रूवाइं ओलोएमाणस्स, अहे रूवाइं आलोएमाणस्स तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! संवुडस्स णं अणगारस्स वीसयी पंथे ठिच्चा जाव तस्स णं णो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ संवुड० जाव संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा एवं जहा सत्तमसए पढमोद्देसए (सु. ७ उ० १ सु. १६ २) जाव से णं उस्सुत्तमेव रीयति, सेतेणट्ठेणं जाव संपराइया किरिया कज्जति। ३. (१) संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स अवीयी पंथे ठिच्चा पुरतो रूवाइं निज्झायमाणस्स जाव तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ० ? पुच्छा। गोयमा ! संवुड० जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? जहा सत्तमसए सत्तमुद्देसए (सु. ७ उ. ७सु. १ २) जाव से णं अहासुत्तमेव रीयति, सेतेणट्ठेणं जाव नो संपराइया किरिया कज्जइ। [सु. ४. जोणिभेयाइजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] ४. कतिविधा णं भंते ! जोणी पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा सीया उसिणा सीतोसिणा। एवं जोणीपयं निरवसेसं भाणियव्वं। [सु. ५. वेयणाभेयाइजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] ५. कतिविधा णं भंते ! वेदणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा वेदणा पण्णत्ता, तं जहा सीता उसिणा सीतोसिणा। एवं वेदणापदं भाणितव्वं जाव नेरइया णं भंते ! किं दुक्खं वेदणं वेदेंति, सुहं वेदणं वेदेंति, अदुक्खमसुहं वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! दुक्खं पि वेदणं पि वेदेंति, सुहं पि वेदणं वेदेंति, अदुक्खमसुहं पि वेदणं वेदेंति। [सु. ६. मासियभिक्खुपडिमाराहणाजाणणत्थं दसासुयक्खंधावलोयणनिद्देसो] ६. मासियं णं भंते ! भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स निच्चं वोसट्ठे काये चियत्ते देहे, एवं मासिया भिक्खुपडिमा निरवसेसा भाणियव्वा जहा दसाहिं जाव आराहिया भवति। [सु. ७-९. अणालोयग-आलोयगस्स भिक्खुणो कमेण अणाराहणाआराहणापरूवणं] ७. (१) भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता, से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयऽपडिक्कंते कालं करेति नत्थि तस्स आराहणा। (२) से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेति अत्थि तस्स आराहणा। ८. (१) भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता, तस्स णं एवं भवति पच्छा वि णं अहं चरिमकालसमयंसि एयस्स ठाणस्स आलोएस्सामि जाव पडिवज्जिस्सामि, से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयऽपडिक्कंते जाव नत्थि तस्स आराहणा। (२) से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं अत्थि तस्स आराहणा। ९. (१) भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता, तस्स णं एवं भवति 'जइ ताव समणोवासगा वि कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति किमंग पुण अहं अणपन्नियदेवत्तणं पि नो लभिस्सामि ?' त्ति कट्टु से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयऽपडिक्कंते कालं करेति नत्थि तस्स आराहणा। (२) से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेति अत्थि तस्स आराहणा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ॥ १०.२॥ **☆☆☆ तइओ उद्देसओ 'आइड्ढी' ☆☆☆** [सु. १. तइउद्देस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वदासी [सु. २-५.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आइड्डि-परिड्डीहिं देवसु देवावासंतरगमणसामत्थवत्तव्वया] २. आइड्डीए णं भंते ! देवे जाव चत्तारि पंच देवावासंतराइं वीतिक्कंते तेण परं परिड्डीए ? हंता, गोयमा ! आइड्डीए णं०, तं चेव। ३. एवं असुरकुमारे वि। नवरं असुरकुमारावासंतराइं, सेसं तं चेव। ४. एवं एएणं कमेणं जाव थणियकुमारे। ५. एवं वाणमंतरे जोतिसिए वेमाणिए जाव तेण परं परिड्डीए। [सु. ६. अप्पिड्डियदेवस्स महिड्डियदेवमज्झे गमणसामत्थाभावो] ६. अप्पिड्डीए णं भंते ! देवे महिड्डीयस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवइज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे। [सु. ७ समिड्डियदेवस्स पमत्तसमिड्डियदेवमज्झे गमणसामत्थं] ७. (१) समिड्डीए णं भंते ! देवे समिड्डीयस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे। पमत्तं पुण वीतीवएज्जा। (२) से णं भंते ! किं विमोहित्ता पभू, अविमोहित्ता पभू ? गोयमा ! विमोहेत्ता पभू, नो अविमोहेत्ता पभू। (३) से भंते ! किं पुव्विं विमोहेत्ता पच्छा वीतीवएज्जा ? पुव्विं वीतीवएत्ता पच्छा विमोहेज्जा ? गोयमा ! पुव्विं विमोहेत्ता पच्छा वीतीवएज्जा, णो पुव्विं वीतीवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा। [सु. ८. महिड्डियदेवस्स अप्पिड्डियदेवमज्झे गमणसामत्थं] ८. (१) महिड्डीए णं भंते ! देवे अप्पिड्डीयस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा ? हंता, वीतीवएज्जा। (२) से भंते ! किं विमोहित्ता पभू, अविमोहित्ता पभू ? गोयमा ! विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू। (३) से भंते ! किं पुव्विं विमोहेत्ता पच्छा वीतीवइज्जा ? पुव्विं वीतीवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ? गोयमा ! पुव्विं वा विमोहित्ता पच्छा वीतीवएज्जा, पुव्विं वा वीतीवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा। [सु. ९-१०. अप्पिड्डियाणं चउव्विहाणं देवाणं सकीयदेवलोयमहिड्डियदेवमज्झे गमणसामत्थाभावो] ९. (१) अप्पिड्डीए णं भंते ! असुरकुमारे महिड्डीयस्स असुरकुमारस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे। (२) एवं असुरकुमारेण वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जहा ओहिएणं देवेणं भणिता। (३) एवं जाव थणियकुमारेणं। १०. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिएणं एवं चेव (सु. ९)। [सु. ११-१२. छट्ठ सत्तम-अट्ठमसुत्तवत्तव्वयाणुसारेण देवस्स देवीमज्झगमणसामत्थासामत्थपरूवणं] ११. अप्पिड्डीए णं भंते ! देवे महिड्डीयाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे। १२. समिड्डीए णं भंते ! देवे समिड्डीयाए देवीए मज्झंमज्झेणं० ? एवं तहेव देवेण य देवीए य दंडओ भाणिव्वो जाव वेमाणियाए। [सु. १३. छट्ठ-सत्तम-अट्ठमसुत्तवत्तव्वयाणुसारेण देवी देवमज्झगमणसामत्थासामत्थनिरूवणं] १३. अप्पिड्डिया णं भंते ! देवी महिड्डीयस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं० ? एवं एसो वि तइओ भाणिव्वो जाव महिड्डिया वेमाणिणी अप्पिड्डिडयस्स वेमाणियस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा ? हंता, वीतीवएज्जा। [सु. १४-१७. छट्ठ-सत्तम-अट्ठमवत्तव्वयाणुसारेण देवीए देवीमज्झगमणसामत्थासामत्थनिरूवणं] १४. अप्पिड्डीया णं भंते ! देवी महिड्डियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे। १५. एवं समिड्डिया देवी समिड्डियाए देवीए तहेव। १६. महिड्डिया देवी अप्पिड्डियाए देवीए तहेव। १७. एवं एक्केक्के तिण्णि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जाव महिड्डीया णं भंते ! वेमाणिणी अप्पिड्डीयाए वेमाणिणीए मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा ? हंता, वीतीवएज्जा। सा भंते ! किं विमोहित्ता पभू ? तहेव जाव पुव्विं वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा। एए चत्तारि दंडगा। [सु. १८. धावमाणस्स आसस्स 'खु खु' सद्दकरेण हेउनिरूवणं] १८. आसस्स णं भंते ! धावमाणस्स किं 'खु खु' त्ति करेइ ? गोयमा ! आसस्स णं धावमाणस्स हिययस्स य जगयस्स य अंतरा एत्थ णं कक्कडए नामं वाए समुट्ठइ, जे णं धावमाणस्स 'खु खु' त्ति करेति। [सु. १९. पण्णवणीभासापरूवणं] १९. अह भंते ! आसइस्सामो सइस्सामो चिट्ठिस्सामो निसिइस्सामो तुयट्टिस्सामो, आमंताणि आणमणी २ जायणि ३ तह पुच्छणी ४ य पण्णवणी ५। पच्चक्खाणी भासा ६ भासा इच्छाणुलोभा य ॥१॥ अणभिग्गहिया भासा ८ भासा य अभिग्गहम्मि बोधव्वा ९। संसयकरणी भासा १० वोयड ११ मव्वोयडा १२ चेव ॥२॥ पण्णवणी णं एसा भासा, न एसा भासा मोसा ? हंता, गोयमा ! आसइस्सामो० तं चेव जाव न एसा भासा मोसा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१०.३॥ ☆☆☆

चउत्थो उद्देसओ 'सामहत्थि' ☆☆☆ [सु. १-४. चउत्थुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नगरे होत्था। वण्णओ। दूतिपलासए चेतिए। सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया। २. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवतो महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं अणगारे जाव उड्ढंजाणू जाव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहरइ। ३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतेवासी सामहत्थी नामं अणगारे पगतिभद्दए जहा रोहे जाव उड्ढंजाणू जाव विहरति। ४. तए णं से सामहत्थी अणगारे जायसड्ढे जाव उट्ठाए उट्ठेति, उ० २ जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवच्छति, ते० उ० २ भगवं गोयमं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासमाणे एवं वदासी- [सु. ५-७. चमरतायत्तीसगदेवाणं अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए सासयत्तं] ५. (१) अत्थि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा ? हंता, अत्थि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति-चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा, तावत्तीसगा देवा ? एवं खलु सामहत्थी ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कायंदी नामं नगरी होत्था। वण्णओ। तत्थ णं कायंदीए नयरीए तावत्तीसं सहाया गाहावती समणोवासगा परिवसंति अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगयजीवाऽजीवा उवलद्धपुण्ण-पावा जाव विहरंति। तए णं ते तावत्तीसं सहाया गाहावती समणोवासया पुव्विं उग्गा उग्गविहारी संविग्गा संविग्गविहारी भवित्ता तओ पच्छा पासत्था पासत्थविहारी ओसन्ना ओसन्नविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति, पा० २ अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेंति, झू० २ तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छे० २ तस्स ठाणस्स अणालोइयऽपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना। (३) जप्पभितिं च णं भंते ! ते कायंदगा तावत्तीसं सहाया गाहावती समणोवासगा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसदेवत्ताए उववन्ना तप्पभितिं च णं भंते ! एवं वुच्चति 'चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा, तावत्तीसगा देवा' ?। ६. तए णं भगवं गोयमे सामहत्थिणा अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे संकिते कंखिए वितिगिंछिए उट्ठाए उट्ठेइ, उ० २ सामहत्थिणा अणगारेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, ते० उ० २ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वं० २ एवं वदासी- ७. (१) अत्थि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो तावत्तीसगा देवा, तावत्तीसगा देवा ? हंता, अत्थि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ एवं तं चेव सव्वं भाणियव्वं (सु० ५ २-३) जाव तप्पभितिं च णं एवं वुच्चइ चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा, तावत्तीसगा देवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते, जं न कदायि नासी, न कदायि न भवति, जाव निच्चे अव्वोच्छित्तिनयट्ठताए। अन्ने चयंति, अन्ने उववज्जंति। [सु. ८. बलितायत्तीसगदेवाणं अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए सासयत्तं] ८. (१) अत्थि णं भंते ! बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो तावत्तीसगा देवा, तावत्तीसगा देवा ? हंता, अत्थि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति-बलिस्स वइरोयणिंदस्स जाव तावत्तीसगा देवा, तावत्तीसगा देवा ? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विब्भेले णामं सन्निवेसे होत्था। वण्णओ। तत्थ णं वेभेल सन्निवेसे जहा चमरस्स जाव उववन्ना। जप्पभितिं च णं भंते ! ते विब्भेलगा तावत्तीसं सहाया गाहावती समणोवासगा बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सेसं तं चेव (सु० ७ २) जाव निच्चे अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए। अन्ने चयंति, अन्ने उववज्जंति। [सु. ९-१०. धरणिंदाइमहाघोसपज्जंततायत्तीसगदेवाणं अव्वोच्छित्ति-नयट्ठयाए सासयत्तं] ९. (१) अत्थि णं भंते ! धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा, तावत्तीसगा देवा ? हंता, अत्थि। (२) से केणट्ठेणं जाव तावत्तीसगा देवा, तावत्तीसगा देवा ? गोयमा ! धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते, जं न कदायि नासी, जाव अन्ने चयंति, अन्ने उववज्जंति। १०. एवं भूयाणंदस्स वि। एवं जाव महाघोसस्स। [सु. ११-१२. सक्कीसाणतायत्तीसगदेवाणं अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए सासयत्तं] ११. (१) अत्थि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो० पुच्छा। हंता, अत्थि। (२) से केणट्ठेणं जाव तावत्तीसगा देवा, तावत्तीसगा देवा ? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वालए नामं सन्निवेसे होत्था। वण्णओ। तत्थ णं वालए सन्निवेसे तावत्तीसं सहाया गाहावती समणोवासगा जहा चमरस्स जाव विहरंति। तए णं ते तावत्तीसं सहाया गाहावती समणोवासगा पुव्विं पि पच्छा वि उग्गा उग्गविहारी संविग्गा संविग्गविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियाणं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेंति, झू० २ सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छे० २ आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा जाव उववन्ना। जप्पभितिं च णं भंते ! ते वालगा तावत्तीसं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहाया गाहावती समणोवासगा सेसं जहा चमरस्स जाव अन्ने उववज्जंति। १२. अत्थि णं भंते ! ईसाणस्स०। एवं जहा सक्कस्स, नवरं चंपाए नगरीए जाव उववन्ना। जप्पभितिं च णं भंते ! चंपिच्चा तावत्तीसं सहाया० सेसं तं चेव जाव अन्ने उववज्जंति। [सु. १३-१४. सणंकुमाराइअच्चुयपज्जंततायत्तीसगदेवाणं अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए सासयत्तं] १३. (१) अत्थि णं भंते ! सणंकुमारस्स देविंदस्स देवरण्णो० पुच्छा। हंता, अत्थि। (२) से केणट्ठेणं० ? जहा धरणस्स तहेव। १४. एवं जाव पाणतस्स। एवं अच्चुतस्स जाव अन्ने उववज्जंति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆ ॥ दसमस्स चउत्थो ॥१०.४॥ **पंचमो उद्देसओ 'देवी'** ☆☆☆

[सु. १-३. पंचमुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे गुणसिलए चेइए जाव परिसा पडिगया। २. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना जहा अट्ठमे सए सत्तमुद्देसए (स० ८ उ० ७ सु० ३ जाव विहरंति। ३. तए णं ते थेरा भगवंतो जायसड्ढा जायसंसया जहा गोयमसामी जाव पज्जुवासमाणा एवं वदासी [सु. ४ चमरऽग महिसीणह अग्गमहिसिपरिवारदेवीणं च संखाई परूपणं]४. चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा काली रायी रयणी विज्जू मेहा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देवीसहस्सा परिवारो पन्नत्तो। पभू णं ताओ एगमेगा देवी अन्नाइं अट्ठऽट्ठ देवीसहस्साइं परिवारो पन्नत्तो। पभू णं ताओ सुपव्वावरेणं चत्तालीसं देवीसहस्सा, से त्तं तुडिए। [सु. ५. अप्पणो सुहम्माए चमरस्स सभाए चमरस्स भोगभुंजणाईसु असमत्थत्तं, तस्स हेऊ य] ५. (१) पभू णं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-नो पभू चमरे असुरिंदे चमरचंचाए रायहाणीए जाव विहरित्तए? ''अज्जो ! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए माणवए चेइयखंभे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहूओ जिणसकहाओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठंति, जाओ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अन्नेसिं च बहूणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ नमंसणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेतियं पज्जुवासणिज्जाओ भवंति, तेसिं पणिहाए नो पभू; से तेणट्ठेणं अज्जो ! एवं वुच्चइ नो पभू चमरे असुरिंदे जाव राया चमरचंचाए जाव विहरित्तए।'' (३) पभू णं अज्जो ! चमरे असुरिंदे असुरकुमाराया चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं तावत्तीसाए जाव अन्नेहि य बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महयाऽहय जाव भुंजमाणे विहरित्तए, केवलं परियारिद्धीए; नो चेव णं मेहुणवत्तियं'' । [सु. ६-१०. सोमाईणं चउण्हं चमरलोगपालाणं देवीसंखाइपरूवणा] ६. चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा कणगा कणगलया चित्तगुत्ता वसुंधरा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देविसहस्स परियारो पन्नत्तो। पभू णं ताओ एगमेगा देवी अन्नं एगमेगं देविसहस्सं परिवारं विउव्वित्तए। एवामेव चत्तारि देविसहस्सा, से त्तं तुडिए। ७. पभू णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए सोमंसि सीहासणंसि तुडिएणं० ? अवसेसं जहा चमरस्स, नवरं परियारो जहा सूरियाभस्स, सेसं तं चेव जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं। ८. चमररस्स णं भंते ! जाव रण्णो जमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ० ? एवं चेव, नवरं जमाए रायहाणीए सेसं जहा सोमस्स। ९. एवं वरुणस्स वि, नवरं वरुणाए रायहाणीए। १०. एवं वेसमणस्स वि, नवरं वेसमणाए रायहाणीए। सेसं तं चेव जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं। [सु. ११-१२. बलिस्स, सोमाईणं चउण्हं बलिलोगपालाणं च देवीसंखाइपरूवणा] ११. बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स० पुच्छा। अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा सुंभा निसुंभा रंभा निरंभा मयणा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ० सेसं जहा चमरस्स, नवरं बलिचंचाए रायहाणीए परियारो जहा मोउद्देसए (सु. ३ उ० १ सु. ११-१२), सेसं तं चेव, जाव मेहुणवत्तियं। १२. बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा मीणगा सुभद्दा विजया असणी। तत्थ णं एगमेगाए देवीए० सेसं जहा चमरसोमस्स,

Jain Education International 2010_03

For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

एवं जाव वेसमणस्स। [सु. १३-१५. धरणस्स, कालवालाईणं चउण्हं धरणलोगपालाणं च देवीसंखाइपरूवणा] १३. धरणस्स णं भंते ! नागकुमररिंदस्स नागकुमाररण्णो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ? अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा अला मक्का सतेरा सोयामणी इंदा घणविज्जुया। तत्थ णं एगमेगाए देवीए छ च्छ देविसहस्सा परियारो पन्नत्तो। पभू णं ताओ एगमेगा देवी अन्नाइं छ च्छ देविसहस्साइं परियारं विउव्वित्तए। एवामेव सपुव्वावरेणं उत्तीसं देविसहस्सा, से त्तं तुडिए। १४. पभू णं भंते ! धरणे० ? सेसं तं चेव, नवरं धरणाए रायहाणीए धरणंसि सीहासणंसि सओ परियारो, सेसं तं चेव। १५. धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स कालवालस्स लोगपालस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्त्ताओ; तं जहा असोगा विमला सुप्पभा सुदंसणा। तत्थ णं एगमेगाए० अवसेसं जहा चमरलोगपालाणं। एवं सेसाणं तिण्ह वि लोगपालाणं। [सु. १६-१८. भूयाणंदाईणं भवणवासिइंदाणं, तेसिं तेसिं लोगपालाणं च देवीसंखाइपरूवणा] १६. भूयाणंदस्स णं भंते !० पुच्छा। अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा रूया रूयंसा सुरूया रूयगावती रूयकंता रूयप्पभा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए० अवसेसं जहा धरणस्स। १७. भूयाणंदस्स णं भंते ! नागवित्तस्स० पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा सुणंदा सुभद्दा सुजाया सुमणा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए० अवसेसं जहा चमरलोगपालाणं। एवं सेसाणं तिण्ह वि लोगपालाणं। १८. जे दाहिणिल्ला इंदा तेसिं जहा धरणस्स। लोगपालाणं पि तेसिं जहा धरणलोगपालाणं। उत्तरिल्लाणं इंदाणं जहा भूयणंदस्स। लोगपालाण वि तेसिं जहा भूयाणंदस्स लोगपालाणं। नवरं इंदाणं सव्वेसिं रायहाणीओ, सीहासणाणि य सरिसणमगाणि, परियारो जहा मोउद्देसए (सु० ३ उ० १ सु० १४)। लोगपालाणं सव्वेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसनामगाणि, परियारो जहा चमरलोगपालाणं। [सु. १९-२६. कालाईणं वाणमंतरिंदाणं देवीसंखाइपरूवणा] १९. (१) कालस्स णं भंते ! पिसाइंदस्स पिसायरण्णो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा कमला कमलप्पभा उप्पला सुदंसणा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं, सेसं जहा चमरलोगपालाणं। परियारो तहेव, नवरं कालाए रायहाणीए कालंसि सीहासणंसि, सेसं तं चेव। (२) एवं महाकालस्स वि। २०. (१) सुरूवस्स णं भंते ! भूइंदस्स भूयरन्नो० पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा रूववती बहुरूवा सुरूवा सुभगा। तत्थ णं एगमेगाए० सेसं जहा कालस्स। (२) एवं पडिरूवगस्स वि। २१. (१) पुण्णभद्दस्स णं भंते ! जक्खिंदस्स० पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा पुण्णा बहुपुत्तिया उत्तमा तारया। तत्थ णं एगमेगाए० सेसं जहा कालस्स०। (२) एवं माणिभद्दस्स वि। २२. (१) भीमस्स णं भंते ! रक्खसिंदस्स० पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा पउमा पउमावती कणगा रयणप्पभा। तत्थ णं एगमेगा० सेसं जहा कालस्स। (२) एवं महाभीमस्स वि। २३. (१) किन्नरस्स णं भंते ! ० पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा वडेंसा केतुमती रतिसेणा रतिप्पिया। तत्थ णं० सेसं तं चेव। (२) एवं किंपुरिसस्स वि। २४. (१) सप्पुरिसस्स णं० पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-रोहिणी नवमिया हिरी पुप्फवती। तत्थ णं एगमेगा०, सेसं तं चेव। (२) एवं महापुरिसस्स वि। २५. (१) अतिकायस्स णं भंते !० पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-भुयगा भुयगवती महाकच्छा फुडा। तत्थ णं०, सेसं तं चेव। (२) एवं महाकायस्स वि। २६. (१) गीतरतिस्स णं भंते !० पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-सुघोसा विमला सुस्सरा सरस्सती। तत्थ णं०, सेसं तं चेव। (२) एवं गीयजसस्स वि। सव्वेसिं एतेसिं जहा कालस्स, नवरं सरिसनामियाओ रायहाणीओ सीहासणाणि य। सेसं तं चेव।[सु. २७-३०. चंद-सूर-गहाणं देवीसंखाइपरूवणा] २७. चंदस्स णं भंते ! जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो० पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि, अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा। एवं जहा जीवाभिगमे जोतिसियउद्देसए तहेव। २८. सूरस्स वि सूरप्पभा आयावाभा अच्चिमाली पभंकरा। सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं। २९. इंगालस्स णं भंते ! महग्गहस्स कति अग्ग० पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-विजया वेजयंती जयंती अपराजिया। तत्थ णं एगमेगाए देवीए०, सेसं जहा चंदस्स। नवरं इंगालवडेंसए विमाणे इंगालगंसि

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीहासणंसि। सेसं तं चेव। ३०. एवं वियालगस्स वि। एवं अट्ठासीतीए वि महागहाणं भाणियव्वं जाव भावकेउस्स। नवरं वडेंसगा सीहासणाणि य सरिनामगाणि। सेसं तं चेव। [सु. ३१-३३. सक्कस्स देविंदस्स, तस्स लोगपालाणं च देविसंखाइपरूवणा] ३१. सक्कस्स णं भंते! देविंदस्स देवरण्णो० पुच्छा। अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-पउमा सिवा सुयी अंजू अमला अच्छरा नवमिया रोहिणी। तत्थ णं एगमेगाए देवीए सोलस सोलस देविसहस्सा परियारो पन्नत्तो। पभू णं ताओ एगमेगा देवी अन्नाइं सोलस सोलस देविसहस्सा परियारं विउव्वित्तए। एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठावीसुत्तरं देविसयसहस्सं, से त्तं तुडिए। ३२. पभू णं भंते! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं० सेसं जहा चमरस्स (सु० ६-७)। नवरं परियारो जहा मोउद्देसए (स० ३ उ० १ सु० १५)। ३३. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ० पुच्छा। अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-रोहिणी मदणा चित्ता सोमा। तत्थ णं एगमेगा०, सेसं जहा चमरलोगपालाणं (सु० ८-१३)। नवरं सयंपभे विमाणे सभाए सुहम्माए सोमंसि सीहासणंसि, सेसं तं चेव। एवं जाव वेसमणस्स, नवरं विमाणाइं जहा ततियसए (स० ३ उ० ७सु० ३)। [सु. ३४-३५. ईसाणस्स, तस्स लोगपालाणं च देविसंखाइपरूवणा] ३४. ईसाणस्स णं भंते!० पुच्छा। अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-कण्हा कण्हराई रामा रामरक्खिया वसू वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा। तत्थ णं एगमेगाए०, सेसं जहा सक्कस्स। ३५. ईसाणस्स णं भंते! देविंदस्स सोमस्स महारण्णो कति० पुच्छा। अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-पुढवी राती रयणी विज्जू। तत्थ णं०, सेसं जहा सक्कस्स लोगपालाणं। एवं जाव वरुणस्स, नवरं विमाणा जहा चउत्थसए (स० ४ उ० १ सु० ३)। सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ। ॥१०.५॥ **☆☆☆ छट्ठो उद्देसओ 'सभा' ☆☆☆** [सु. १. सक्कस्स सुहम्मसभाए वण्णणं] १. कहि णं भंते! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पन्नत्ता? गोयमा! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव पंच वडेंसगा पन्नत्ता, तं जहा-असोगवडेंसए जाव मज्झे सोहम्मवडेंसए। से णं सोहम्मवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, एवं जह सूरियामे तहेव माणं तहेव उववातो। सक्कस्स य अभिसेओ तहेव जह सूरियाभस्स ॥१॥ अलंकार अच्चणिया तहेव जाव आयरक्ख त्ति, दो सागरोवमाइं ठिती। [सु. २. सक्कस्स देविंदस्स इड्ढिआईणं परूवणा] २. सक्के णं भंते! देविंदे देवराया केमहिड्ढीए जाव केमहासोक्खे? गोयमा! महिड्ढीए जाव महासोक्खे, से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं जाव विहरति, एमहिड्ढीए जाव एमहासोक्खे सक्के देविंदे देवराया। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ॥१०.६॥ **सत्तमाइचोत्तीसइमपज्जंता उद्देसा 'उत्तरअंतरदीवा'** [सु.१. उत्तरिल्लअंतरदीववत्तव्वयाजाणणत्थं जीवाभिगमसुत्तावलोयणनिद्देसो] १. कहिं णं भंते! उत्तरिल्लाणं एगोरूयमणुस्साणं एगोरूयदीवे नामं दीवे पन्नत्ते? एवं जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव सुद्धदंतदीवो त्ति। एए अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरति। ॥१०.७-३४॥ **☆☆☆॥दसमं सयं समत्तं ॥१०॥☆☆☆** **卐卐卐 एक्कारस्स सयं 卐卐卐** [सु. १. एगारससयस्स बारसउद्देसनामसंगहगाहा] १. उप्पल १ सालु २ पलासे ३ कुंभी ४ नालीय ५ पउम ६ कण्णीय ७। नलिण ८ सिव ९ लोग १० कालाऽऽलभिय ११-१२ दस दो य एक्कारे ॥१॥ **☆☆☆ पढमो उद्देसओ 'उप्पल' ☆☆☆** [सु. २. पढमुद्देसस्स दारसंगहगाहाओ] २. उववाओ १ परिमाणं २ अवहारुच्चत्त ३-४ बंध ५ वेदे ६ य। उदए ७ उदीरणाए ८ लेसा ९ दिट्ठी १० य नाणे ११ य ॥२॥ जोगुवओगे १२-१३ वण्ण-रसमाइ १४ ऊसासगे १५ य आहारे १६। विरई १७ किरिया १८ बंधे १९ सण्ण२० कसायित्थि २१-२२ बंधे २३ य ॥३॥ सण्णिंदिय २४-२५ अणुबंधे २६ संवेहाऽऽहार २७-२८ ठिइ २९, समुग्घाए ३०। चयणं ३१ मूलादीसु य उववाओ सव्वजीवाणं ३२ ॥४॥ [सु. ३. पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ] ३. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव पज्जुवासमाणे एवं वदासी- [सु. ४. उप्पलपत्ते एग-अणेगजीववियारो] ४. उप्पले णं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे? गोयमा! एगजीवे, नो अणेगजीवे। तेण परं जे अन्ने जीवा उववज्जंति ते

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं णो एगजीवा, अणेगजीवा। [सु. ५. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च पढमं उववायदारं] ५. ते णं भंते! जीवा कतोहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, देवहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति, देवेहिंतो वि उववज्जंति। एवं उववाओ भाणियव्वो जहा वक्कंतीए वणस्सतिकाइयाणं जाव ईसाणो त्ति। दारं १ । [सु. ६. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च बीयं परिमाणदारं] ६. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति। दारं । [सु. ७ उप्पलपत्तजीवे पडुच्च तइयं अवहारदारं] ७. ते णं भंते ! जीवा समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा केवतिकालेणं अवहीरंति ? गोयमा ! ते णं असंखेज्जा समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा असंखेज्जाहिं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया सिया। दारं ३ । [सु. ८. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च चउत्थं उच्चत्तदारं] ८. तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं। दारं ४ । [सु. ९. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च पंचमं णाणावरणाइबंधदारं] ९. ते णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा, अबंधगा ? गोयमा ! नो अबंधगा, बंधए वा बंधगा वा। एवं जाव अंतराइयस्स। नवरं आउयस्स पुच्छा, गोयमा ! बंधए वा १, अबंधए वा २, बंधगा वा ३, अबंधगा वा ४, अहवा बंधए य अबंधए य ५, अहवा बंधए य अबंधगा य ६, अहवा बंधगा य अबंधगे य ७, अहवा बंधगा य अबंधगा य ८, एते अट्ठ भंगा। दारं ५ । [सु. १०-११. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च छट्ठं वेददारं] १०. ते णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेदगा, अवेदगा ? गोयमा ! नो अवेदगा, वेदए वा वेदगा वा। एवं जाव अंतराइयस्स। ११. ते णं भंते ! जीवा किं सातावेदगा, असातावेदगा ? गोयमा ! सातावेदए वा, असातावेयए वा, अट्ठ भंगा। दारं ६ । [सु. १२. उप्प,पत्तजीवे पडुच्च सत्तमं उदयदारं] १२. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदई, अणुदई ? गोयमा ! नो अणुदई, उदई वा उदइणो वा। एवं जाव अंतराइयस्स। दारं ७ । [सु. १३. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च अट्ठमं उदीरणादारं] १३. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदीरगा, अणुदीरगा ? गोयमा ! नो अणुदीरगा, उदीरए वा उदीरगा वा। एवं जाव अंतराइयस्स। नवरं वेदणिज्जाउएसु अट्ठ भंगा। दारं ८ । [सु. १४. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च नवमं लेस्सादारं] १४. ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा तेउलेस्सा ? गोयमा ! कण्हलेस्सा वा जाव तेउलेस्से वा, कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा, अहवा कण्हलेस्से य नीललेस्से य, एवं एए दुयासंजोग-तिया-संजोग-चउक्कसंजोगेण य असीतिं भंगा भवंति। दारं ९ । [सु. १५. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च दसमं दिट्ठिदारं] १५. ते णं भंते ! जीवा किं सम्मद्दिट्ठी, मिच्छाद्दिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! नो सम्मद्दिट्ठी, नो सम्मामिच्छद्दिट्ठी, मिच्छादिट्ठी वा मिच्छादिट्ठिणो वा। दारं १० । [सु. १६. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च एगारसमं नाणदारं]। १६. ते णं भंते ? जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? गोयमा ! नो नाणी, अन्नाणी वा अन्नाणिणो वा [दारं ११] [सु. १७. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च बारसमं जोगदारं] १७. ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी ? गोयमा ! नो मणज़ोग, णो वइजोगी, कायजोगी वा कायजोगिणो वा। दारं १२ । [सु. १८ उप्पलपत्तजीवे पडुच्च तेरसमं उवओगदारं] १८. ते णं भंते ? जीवा किं सागारोवउता, अणागारोवउत्ता ? गोयमा ? सागारोवउन्तं वा अणागारोवउत्तेवा, अट्ठ भंगा। दारं १३। [सु. १९. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च चोद्दसमं वण्ण-रसाइदारं] १९. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीगा कतिवण्णा कतिरसा कतिगंधा कतिफासा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचवण्णा, पंचरसा, दुगंधा, अट्ठफासा पन्नत्ता। ते पुण अप्पणा अवण्णा अगंधा अरसा अफासा पन्नत्ता। दारं १४ । [सु. २०. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च पनरसमं ऊसासगदारं] २०. ते णं भंते ! जीवा किं उस्सासा, निस्सासा, नोउस्सासनिस्सासा ? गोयमा ! उस्सासए वा १, निस्सासए वा २, नोउस्सासनिस्सासए वा ३, उस्सासगा वा ४, निस्सासगा वा ५, नोउस्सासनिस्सासगा वा ६, अहवा उस्सासए य निस्सासए य निस्सासए य ४(७-१०), अहवा उस्सासए य नोउस्सासनीसासए य ४ (१५-१८), अहवा उस्सासए य नीसासए य नोउस्सासनिस्सासए य -अट्ठ भंगा (१९-२६), एए छव्वीसं भंगा भवंति। दारं १५ । [सु. २१. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च सोलसमं आहारदारं] २१. ते णं भंते ! जीवा किं आहारगा, अणाहारगा ? गोयमा ! आहारए वा

For Private & Personal Use Only

अणाहारए वा, एवं अट्ठ भंगा। दारं १६ । [सु. २२. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च सत्तरसमं विरइदारं] २२. ते णं भंते ! जीवा किं विरया, अविरया विरयाविरया ? गोयमा ! नो विरया, नो विरयाविरया, अविरए वा अविरता वा। दारं १७ । [सु. २३. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च अट्ठारसमं किरियादारं]२३. ते णं भंते ! जीवा किं सकिरिया, अकिरिया ? गोयमा ! नो अकिरिया, सकिरिया, सकिरिया वा। दारं १८ । [सु. २४. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च एगूणवीसइमं सत्तविह -अट्ठविहबंधगदारं] २४. ते णं भंते ! जीवा किं सत्तविहबंधगा, अट्ठविहबंधगा ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा, अट्ठ भंगा। दारं १९ । [सु. २५-२६. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च २०-२१ तमाणि सण्णा-कसायदाराइं] २५. ते णं भंते ! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता, भयसण्णोवउत्ता, मेहुणसन्नोवउत्ता, परिग्गसहसन्नोवउत्ता ? गोयमा ! आहारसण्णोवउत्ता वा, असीती भंगा। दारं २० । २६. ते णं भंते ! जीवा किं कोहकसायी, माणकसायी, मायाकसायी, लोभकसायी ? असीती भंगा। दारं २१ । [सु. २७-२८. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च २२-२३ तमाइं इत्थिवेदादिवेदगबंधगाइं दाराइं] २७. ते णं भंते ! जीवा किं इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा ? गोयमा ! नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदए वा नपुंसगवेदगा वा। दारं २२ । २८. ते णं भंते ! जीवा किं इत्थिवेदबंधगा, पुरिसवेदबंधगा, नपुंसगवेदबंधगा ? गोयमा ! इत्थिवेदबंधए वा पुरिसवेदबंधए वा नपुंसगवेदबंधए वा, छव्वीसं भंगा। दारं २३ । [सु. २९-३०. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च २४-२५ तमाइं सण्णि-इंदियदाराइं] २९. ते णं भंते ! जीवा किं सण्णी, असण्णी ? गोयमा ! नो सण्णी, असण्णी वा असण्णिणो वा। दारं २४ । ३०. ते णं भंते ! जीवा किं सइंदिया, अणिंदिया ? गोयमा ! नो अणिंदिया, सइंदिए वा सइंदिया वा। दारं २५ ।[सु. ३१-३९. उप्पलजीवं पडुच्चं २६-२७ तमाइं अणुबंध-संवेहदाराइं] ३१. से णं भंते ! 'उप्पलजीवे' त्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। दारं २६ ३२. से णं भंते ! उप्पलजीवे 'पुढविजीवे' पुणरवि 'उप्पलजीवे' त्ति केवतियं कालं से हवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । एवतियं कालं से हवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । ३३. से णं भंते ! उप्पलजीवे आउजीवे० एवं चेव । ३४. एवं जहा पुढविजीवे भणिए तहा जाव वाउजीवे भाणियव्वे । ३५. से णं भंते ! उप्पलजीवे से वणस्सइजीवे, से वणस्सइजीवे पुणरवि उप्पलजीवे त्ति केवतियं कालं से हवेज्जा, केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ? गोयमा ! भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अणंताइं भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंतं कालं-तरुकालो, एवतियं कालं से हवेज्जा, एवइयं कालं गइरागइं करेज्जा । ३६. से णं भंते ! उप्पलजीवे बेइंदियजीवे, बेइंदियजीवे पुणरवि उप्पलजीवे त्ति केवतियं कालं से हवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। एवतियं कालं से हवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। ३७. एवं तेइंदियजीवे, एवं चउरिंदियजीवे वि। ३८. से णं भंते ! उप्पलजीवे पंचेंदियतिरिक्खजोणियजीवे, पंचिंदियतिरिक्खजोणियजीवे पुणरवि उप्पलजीवे त्ति० पुच्छा। गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दोभवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहत्तं। एवतियं कालं से हवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। ३९. एवं मणुस्सेण वि समं जाव एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा दारं २७ । [सु. ४०-४४. उप्पलपत्तजीवे पडुच्च २८-३१ तमाइं आहार-ठिइ-समुग्घाय-चयणदाराइं] ४०. ते णं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणंतपदेसियाइं दव्वाइं०, एवं जहा आहारुद्देसए वणस्सतिकाइयाणं आहारो तहेव जाव सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति, नवरं नियमं छद्दिसिं, सेसं तं चेव। दारं २८ । ४१. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं। दारं २९ । ४२. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति समुग्घाता पन्नत्ता ? गोयमा ! तओ समुग्घाया पन्नत्ता, तं जहा-वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए। दारं ३० । ४३. ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति, असमोहया मरंति ? गोयमा ! समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति। ४४. ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ?, कहिं उववज्जंति ?, किं नेरइएसु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति?० एवं जहा वक्कंतीए उव्वट्टणाए वणस्सइकाइयाणं तहा भाणियव्वं। दारं३१ । [सु. ४५. उप्पलमूलाईसु सव्वजीवाणं उववायपरूवगं बत्तीसइमं दारं] ४५. अह भंते ! सव्वपाणा सव्वभूया सव्वजीवा सव्वसत्ता उप्पलमूलत्ताए उप्पलकंदत्ताए उप्पलनालत्ताए उप्पलपत्तत्ताए उप्पलकेसरत्ताए उप्पलकण्णियत्ताए उप्पलथिभगत्ताए उववपन्नपुव्वा ? हंता, गोयमा ! असंति अदुवा अणंतखुत्तो। दारं ३२ । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। **☆☆☆ ॥उप्पलुद्देसओ॥११.१॥ बीओ उद्देसओ 'सालु' ☆☆☆** [सु. १. सालुयजीववत्तव्वयाजाणणत्थं पढमउप्पलुद्देसावलोयणनिद्देसपुव्वं विसेसपरूवणा] १. सालुए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे ? गोयमा ! एगजीवे, एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा जाव अणंतखुत्तो। नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं। सेसं तं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥११.२॥ **☆☆☆ तइओ उद्देसओ 'पलासे'☆☆☆** [सु. १. पलासजीववत्तव्वयाजाणणत्थं पढमउप्पलुद्देसावलोयणनिद्देसपुव्वं विसेसपरूवणा] १. पलासे णं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे? एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणितव्वा। नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं गाउयपुहत्तं। देवा एएसु न उववज्जंति। लेसासु- ते णं भंते! जीवा किं कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा? गोयमा! कण्हलेस्सा वा, नीललेस्सा वा, काउलेस्सा वा, छव्वीसं भंगा। सेसं तं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ॥११.३॥ **☆☆☆ चउत्थो उद्देसओ 'कुंभी' ☆☆☆** [सु. १. कुंभियजीववत्तव्वयाजाणणत्थं तइयपलासुद्देसावलोयणनिद्देसपुव्वं विसेसपरूवणा] १. कुंभिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे ? एवं जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे, नवरं ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहुत्तं। सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥११.४॥ **☆☆☆ पंचमो उद्देसओ 'नालीय'☆☆☆** [सु. १. नालियजीववत्तव्वयाजाणणत्थं चउत्थकुंभिउद्देसावलोयणनिद्देसो] १. नालिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे ? एवं कुंभिउद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ।॥११.५॥ **☆☆☆ छट्ठो उद्देसओ 'पउम'☆☆☆** [सु. १. पउमजीववत्तव्वयाजाणणत्थं पढमउप्पलुद्देसावलोयणनिद्देसो] १. पउमे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे ? एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥११.६॥ **☆☆☆सत्तमो उद्देसओ 'कण्णीय' ☆☆☆** [सु. १. कण्णियजीववत्तव्वयाजाणणत्थं पढमउप्पलुद्देसावलोयणनिद्देसो] १. कण्णिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे ? एवं चेव निरवसेसं भाणियव्वं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥११.७॥ **☆☆☆ अट्ठमो उद्देसओ 'नलिण'☆☆☆** [सु. १. नलिणजीववत्तव्वयाजाणणत्थं पढमउप्पलुद्देसावलोयणनिद्देसो] १. नलिणे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे ? एवं चेव निरवसेसं जाव अणंतखुत्तो।। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥११.८॥ **☆☆☆ नवमो उद्देसओ 'सिव'☆☆☆** [सु. १-५. सिवस्स रण्णो रायहाणी-भज्जा-पुत्ताणं नामाइं] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था। वण्णओ। २. तस्स णं हत्थिणापुरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे एत्थे णं सहसंबवणे नामं उज्जाणे होत्था। सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे णंदणवणसन्निगासे सुहसीयलच्छाए मणोरमे सादुफले अकंटए पासादीए जाव पडिरूवे। ३. तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे सिवे नामं राया होत्था, महताहिमवंत०। वण्णओ। ४. तस्स णं सिवस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था, सुकुमालपाणिपाया०। वण्णओ। ५. तस्स णं सिवस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए अत्तए सिवभद्दए नामं कुमारे होत्था, सुकुमाल० जहा सूरियकंते जाव पच्चुवेक्खमाणे पच्चुवेक्खमाणे विहरति। [सु. ६. सिवस्स रण्णोदिसापोक्खियतावसपव्वज्जागहणसंकप्पो विविहप्पयारतावसनामाइं च] ६. तए णं तस्स सिवस्स रण्णो अन्नया कदायि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि रज्जधुरं चिंतेमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था "अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं जहा तामलिस्स (स० ३ उ० १ सु० ३६) जाव पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वड्ढामि, रज्जेणं वड्ढामि, एवं रट्ठेणं बलेणं वाहणेणं कोसेणं कोट्ठागारेणं पुरेणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतेउरेणं वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण० जाव संतसारसावदेज्जेणं अतीव अतीव अभिवड्ढामि, तं किं णं अहं पुरा पोराणाणं जाव एगंतसोक्खयं उवेहमाणे विहरामि? तं जाव जाव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि तं चेव जाव अभिवड्ढामि, जावं च मे सामंतरायाणो वि वसे वट्टंति, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते सुबहुं लोहीलोहकडाहकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडयं घडावेत्ता, सिवभद्दं कुमारं रज्जे ठावित्ता, तं सुबहुं लोहीलोहकडाहकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडयं गहाय जे इमे गंगाकूले वाणपत्था तावसा भवंति, तं जहा होत्तिया पोत्तिया जहा उववातिए जाव कट्ठसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा विहरंति। तत्थ णं जे ते दिसापोक्खिय तावसा तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खिततावसत्ताए पव्वइत्तए। पव्वइते वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिहस्सामि कप्पति मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालएणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय जाव विहरित्तए'' त्ति कट्टु; एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं जाव जलंते सुबुहुं लोहीलोह जाव घडावित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ; को० स० २ एवं वदासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हत्थिणापुरं नगरं सब्भितरबाहिरियं आसिय जाव तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति। [सु. ७-११. सिवभद्दकुमाररज्जाभिसेयपुव्वं सिवस्स रण्णो दिसापोक्खियतावसपव्वज्जागहणं] ७. तए णं से सिवे राया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, स० २ एवं वदासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सिवभद्दस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह। ८. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव उवट्ठवेंति। ९. तए णं से सिवे राया अणेगगणनायग-दंडनायग जाव संधिपाल सद्धिं संपरिवुडे सिवभद्दं कुमारं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसीयावेति, नि० २ अट्ठसतेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव अट्ठसतेणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए जाव रवेणं महया रायाभिसेएणं अभिसिंचति, म० अ० २ पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गाताइं लूहेति, पम्ह० लू० २ सरसेणं गोसीसेणं एवं जहेव जमालिस्स अलंकारो (स० ९ उ० ३३ सु० ५७) तहेव जाव कप्परुक्खगं पिव अलंकियविभूसियं करेति, क० २ करयल जाव कट्टु सिवभद्दं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेति, जए० व० २ ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं जहा उववातिए कोणियस्स जाव परमायुं पालयाहि इट्ठजणसंपरिवुडे हत्थिणापुरस्स नगरस्स अन्नेसिं च बहूणं गामागर -नगर जाव विहराहि, त्ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजति। १०. तए णं से सिवभद्दे कुमारे राया जाते महया हिमवंत० वण्णओ जाव विहरति। ११. तए णं से सिव राया अन्नया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-णक्खत्त-दिवस-मुहुत्तंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेति, वि० उ० २ मित्त-णाति-नियग जाव परिजणं रायाणो य खत्तिया आमंतेति, आ० २ ततो पच्छा ण्हाते जाव सरीरे भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त-नाति-नियग-सयण जाव परिजणेणं राईहि य खत्तिएहि य सद्धिं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं एवं जहा तामली (स० ३ उ० १ सु० ३६) जाव सक्कारेति सम्माणेति, सक्कारे० स० २ तं मित्त-नाति जाव परिजणं रायाणो य खत्तिए य सिवभद्दं च रायाणं आपुच्छति, आपुच्छित्ता सुबहुं लोहीलोहकडाहकडुच्छु जाव भंडगं गहाय जे इमे गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवंति तं चेव जाव तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए। पव्वइए वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हति कप्पति मे जावज्जीवाए छट्ठं० तं चेव जाव (सु. ६) अभिग्गहं अभिगिण्हइ, अय० अभि० २ पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। [सु. १२-१५. सिवस्स रायरिसिणो दिसापोक्खियतावसचरियाए वित्थरओ वण्णणं] १२. तए णं से सिवे रायरिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहति, आया० प० २ वागवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छति, ते० उ० २ किढिणसंकाइयगं गिण्हइ, कि० गि० २ पुरत्थिमं दिसं पोक्खेइ। 'पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणतु' त्ति कट्टु पुरत्थिमं दिसं पासति, पा० २ जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव हरियाणि य ताइं गेण्हति, गे० २ किढिणसंकाइयगं भरेति, किढि० भ० २ दब्भे य कुसे य समिहाओ य पत्तामोडं च गेण्हइ, गे० २ जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, ते० उवा० २ किडिणसंकाइयगं ठवेइ, किढि० ठवेत्ता वेदिं वड्ढेति, वेदिं व० २ उवलेवणसम्मज्जणं करेति, उ० क० २ दब्भ-कलसाहत्थगए जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छइ, उवा० २ गंगामहानदिं ओगाहइ, गंगा० ओ० २ जलमज्जणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करेति, जल० क० २ जलकीडं करेति, जल० क० २ जलाभिसेयं करेति, ज० क० २ आयंते चोक्खे परमसूइभूते देवत-पितिकयकज्जे दब्भसगब्भकलसाहत्थगते गंगाओ महानदीओ पच्चुत्तरति, गंगा० प० २ जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छति, उवा० २ दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाए य वेदिं रएति, वेदिं र० २ सरएणं अरणिं महेति, सह म० २ अग्गिं पाडेति, अग्गिं पा० २ अग्गिं संधुक्केति, अ० सं २ समिहाकट्ठाइं पक्खिवइ, स प० २ अग्गिं उज्जालेति, अ० उ० २ अग्गिस्स दाहिणे पासे, सत्तंगाइं समादहे। तं जहा सकहं १ वक्कलं २ ठाणं ३ सेज्जाभंडं ४ कमंडलुं ५। दंडदारुं ६ तहऽप्पाणं ७ अहेताइं समादहे॥१॥ महुणा य घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ, अ० हु० २ चरुं साहेइ, चरुं सा० २ बलिवइस्सदेवं करेइ, बलि० क० २ अतिहिपूयं करेति, अ० क० २ ततो पच्छा अप्पणा आहारमाहारेति। १३. तए णं से विसे रायरिसी दोच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चे छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीतो पच्चोरुहइ, आ० प० २ वागल० एवं जहा पढमपारणगं, नवरं दाहिणं दिसं पोक्खेति। दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं०, सेसं तं चेव जाव आहारमाहारेइ। १४. तए णं से सिवे रायरिसी तच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरति। तए णं से सिवे रायरिसी० सेसं तं चेव, नवरं पच्चत्थिमं दिसं पोक्खेति। पच्चत्थिमाए दिसाए वरुणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खतु सिवं० सेसं तं चेव जाव ततो पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ। १५. तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थं छट्ठक्खमणं० एवं तं चेव, नवरं उत्तरं दिसं पोक्खेइ। उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पतियं अभिरक्खउ सिवं०, सेसं तं चेव जाव ततो पच्छा अप्पणा आहारमाहारेति। [सु. १६-१८. उप्पन्नविभंगनाणस्स सिवस्स रायरिसिणो अप्पणो अतिसेसनाणित्तपरूवणे लोगाणं वितक्को] १६. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं जाव आयावेमाणस्स पगतीभद्दयाए जाव विणीययाए अन्नया कदायि तयावरणिज्जाणं कम्माणं खयोवसमेणं ईहापोहमग्गणवसेणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं अन्नाणे समुप्पन्ने। से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं पासति अस्सिं लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे। तेण परं न जाणति न पासति। १७. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था अत्थि णं ममं अतिसेसे नाण-दंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा, सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। एवं संपेहेइ, एवं सं० २ आयावणभूमीओ पच्चोरुभति, आ० प० २ वागवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छति, ते० उ० २ सुबहुं लोहीलोहकडाहकडुच्छुयं जाव भंडगं किढिणसंकाइयं च गेण्हति, गे० २ जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छति, ते०उ० २ भंडनिक्खेवं करेइ, भंड० क० २ हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग जाव पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खति जाव एवं परूवेइ अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाण-दंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए जाव दीवा य समुद्दा य। १८. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस एवमाइक्खति जाव परूवेइ एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवं आइक्खइ जाव परूवेइ 'अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाण-दंसणे जाव तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य'। से कहमेयं मन्ने एवं? [सु. १९-२१. सिवरायरिसिपरूवियसत्तदीव-समुद्दवत्तव्वपरिहारपुव्वं भगवओ असंखेज्जदीवं-समुद्दपरूवणा] १९. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा जाव पडिगया। २०. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जहा बितियसए नियंठुद्देसए (सु० २ उ० ५ सु० २१-२४) जाव अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेति बहुजणो अन्नमन्नस्स एवं आइक्खति जाव एवं परूवेइ 'एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवं आइक्खइ जाव परूवेइ अत्थि णं देवाणुप्पिया! तं चेव जाव वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। से कहमेयं मन्ने एवं?' २१. तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जायसड्ढे जहा नियंठुद्देसए (स० २ उ० ५ सु० २५ १) जाव तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। से कहमेयं भंते! एवं? 'गोयमा!' दी समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वदासी जं णं गोयमा! से बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव भंडनिक्खेवं करेति, हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग० तं चेव जाव वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्मं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं चेव जाव तेणं परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। तं णं मिच्छा। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खमि जाव परूवेमि एवं खलु जंबुद्दीवादीया दीवा लवणदीया समुद्दा संठाणओ एगविहिहाणा, वित्थारओ अणेगविहिहाणा एवं जहा जीवाभिगमे जाव सयंभुरमणपज्जवसाणा अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो !। [सु. २२-२६. दीव-समुद्ददव्वेसु वण्ण-गंध-रस-फासपरूवणो] २२. अत्थि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दव्वाइं सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि अगंधाइ, पि सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि, अन्नमन्नबद्धाइं अन्नमन्नपुट्ठाइं जाव घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता, अत्थि। २३. अत्थि णं भंते ! लवणसमुद्दे दव्वाइं सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि, अन्नमन्नबद्धाइं अन्नमन्नपुट्ठाइं जाव घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता, अत्थि। २४. अत्थि णं भंते ! धातइसंडे दीवे दव्वाइं सवन्नाइं पि० एवं चेव। २५. एवं जाव सयंभुरमणसमुद्दे जाव हंता, अत्थि। २६. तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वं० २ जामेव दिसं पाउब्भूता तामेव दिसं पडिगया। [सु. २७-२९. दीव-समुद्दविसए भगवओ परूवणाए सवणाणंतरं सिवरायरिसिणो विभंगनाणविलओ] २७. तए णं हत्थिणापुरे पगरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ-"जं णं देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ-अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाण जाव समुद्दा य, तं नो इणट्ठे समट्ठे। समणे भगवं महावीरं एवमाइक्खइ जाव परूवेइ 'एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं तं चेव जाव भंडनिक्खेवं करेति, भंड० क० २ हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग जाव समुद्दा य। तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाव समुद्दा य, तं णं मिच्छा'। समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खति-एवं खलु जंबुद्दीवाइया दीवा लवणाइया समुद्दा तं चेव जाव असंखेज्जा दीव-समुद्दा पण्णत्ता समणाउसो !"। २८. तए णं से सिवे रायरिसी बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था। २९. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स संकियस्स कंखियस्स जाव कलुससमावन्नस्स से विभंगे अन्नाणे खिप्पामेव परिवडिए। [सु. ३०-३२. सिवरायरिसिणो निग्गंथपव्वज्जागहणं सिज्झाणा य] ३०. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था- 'एवं खलु समणे भगवं महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव सहसंबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरति। तं महाफलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नाम-गोयस्स जहा उववातिए जाव गहणयाए, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव पज्जुवासामि। एयं णे इहभवे य परभवे य जाव भविस्सति' त्ति कट्टु एवं संपेहेति, एवं सं० २ जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, ते० उ० २ तावसावसहं अणुप्पविसति, ता० अ०२ सुबहुं लोहीलोहकडाह जाव किढिणसंकातियगं च गेण्हति, गे० २ तावसावसहातो पडिनिक्खमति, ता० प० २ परिवडियविब्भंगे हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, नि० २ जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवा०२ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, क०२ वंदति नमंसति, वं०२ नच्चासन्ने नाइदूरे जाव पंजलिकडे पज्जुवासति। ३१. तए णं समणे भगवं महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसे य महतिमहालियाए जाव आणाए आराहए भवति। ३२. तए णं से सिवे रायरिसी समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म जहा खंदओ (सु० २ उ० १ सु० ३४) जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, उ० अ० २ सुबहुं लोहीलोहकडाह जाव किढिणसंकातियगं एगंते एडेइ, ए० २ सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, स० क० २ समणं भगवं महावीरं एवं जहेव उसभदत्ते (स० ९उ० ३३ सु० १६) तहेव पव्वइओ, तहेव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, तहेव सव्वं जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। [सु. ३३. सिज्झमाणजीवसंघयण-संठाणइजाणणत्थं उववाइयसुत्तावलोयणनिद्दसो] ३३. भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति, नमंसति, वं० २ एवं वयासी जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि संघयणे सिज्झंति ? गोयमा ! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति एवं जहेव उववातिए तहेव 'संघयणं संठाणं उच्चत्तं आउयं च परिवसणा' एवं सिद्धिगंडिया निरवसेसा भाणियव्वा जाव 'अव्वाबाहं सोक्खं अणुहुंती सासयं सिद्धा'।! सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति। ☆☆☆॥ **सिवो समत्तो** ॥११.९॥ ☆☆☆ दसमो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्देसओ 'लोग'☆☆☆ [सु. १. दसमुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वदासी [सु. २. लोयस्स दव्वलोयाइभेयचउक्कं] २. कतिविधे णं भंते! लोए पन्नत्ते? गोयमा! चउव्विहे लोए पन्नत्ते, तं जहा दव्वलोए खेत्तलोए काललोए भावलोए। [सु. ३-६. खेत्तलोयस्स अहोलोयाइ भेयतिगं तप्पभेया य] ३. खेत्तलोए णं भंते! कतिविहे पन्नत्ते? गोयमा! तिविहे पन्नत्ते, तं जहा अहेलोयखेत्तलोए १ तिरियलोयखेत्तलोए २ उड्ढलोयखेत्तलोए ३। ४. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! सत्तविधे पन्नत्ते, तं जहा रयणप्पभापुढविअहेलोयखेत्तलोए जाव अहेसत्तमपुढविअहेलोयखेत्तलोए। ५. तिरियलोयखेवलोए णं भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! असंखेज्जतिविधे पन्नत्ते, तं जहा जंबुद्दीवतिरियलोयखेवलोए जाय सयंभुरमणसमुद्दतिरियलोयखेवलोए। ६. उड्ढलोगखेत्तलोए णं भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! पण्णरसविधे पन्नत्ते, तं जहा सोहम्मकप्पउड्ढलोगखेत्तलोए जाव अच्चुयउड्ढलोग० गेवेज्जविमाणउड्ढलोग० अणुत्तरविमाण० इसिपब्भारपुढविअहेलोयखेत्तलोए। [सु. ७-९. अहेतिरिय-उड्ढलोयाणं संठाणपरूवणं] ७. अहेलोगखेत्तलोए णं भंते! कंसंठिते पन्नत्ते? गोयमा! तप्पागारसंठिए पन्नत्ते। ८. तिरियलोयखेवलोए णठ भंते! किंसंठिए पन्नत्ते? गोयमा! झल्लरिसंठिए पन्नत्ते। ९. उड्ढलोगखेत्तलोगपुच्छा। उड्ढमुतिंगाकारसंठिए पन्नत्ते। [सु. १०-११. लोय-अलोयाणं संठाणपरूवणा] १०. लोए णं भंते! किंसंठिए पन्नत्ते? गोयमा! सुपइट्ठगसंठिए लोए पन्नत्ते, तं जहा हेट्ठा वित्थिण्णे, मज्झे संखित्ते जहा सत्तमसए पढमे उद्देसए (स० ७ उ० १ सु० ५) जाव अंतं करेति। ११. अलोए णं भंते! किंसठिए पन्नत्ते? गोयमा! झुसिरगोलसंठिए पन्नत्ते। [सु. १२-१४. जीवाजीवेहिं जीवाजीवदेस-पदेसेहि य अहे-तिरिय-उड्ढ-खेत्तलोए वत्तव्वया] १२. अहेलोगखेत्तलोए णं भंते! किं जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा० ? एवं जहा इंदा दिसा (सु० १० उ० १ सु० ८) तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव अद्धासमए। १३. तिरियलोयखेवलोए णं भंते! किं जीवा० ? एवं चेव। १४. एवं उड्ढलोगखेत्तलोए वि। नवरं अरूवी उव्विहा, अद्धासमओ नत्थि। [सु. १५-१६. जीवाजीवेहिं जीवाजीवदेस-पदेसहि य लोयालोएसु वत्तव्वया] १५. लोए णं भंते! किं जीवा० ? जहा बितियसए अत्थिउद्देसए लोयागासे (स० २ उ० १० सु० ११), नवरं अरूवी सत्तविहा जाव अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, नो आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे आगासत्थिकायस्स पएसा, अद्धासमए। सेसं तं चेव। १६. अलोए णं भंते! किं जीवा० ? एवं जहा अत्थिकायउद्देसए अलोगागासे (स० २ उ० १० सु १२) तहेव निरवसेसं जाव अणंतभागूणे। [सु. १७-१९. तिविहखेत्तलोयएगपएसे जीवाजीव-जीवाजीवदेसपदेसवत्तव्वया] १७. अहेलोगखेत्तलोगस्स णं भंते! एगम्मि आगासपएसे किं जीवा, जीवदेसा जीवपदेसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपएसा? गोयमा! नो जीवा, जीवदेसा वि जीवपदेसा वि अजीवा वि अजीवदेसा वि अजीवपदेसा वि। जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा; अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे, अधवा एगिंदियदेसा य बेइंदियदेसा य अणिंदियाण देसा। जे जीवपदेसा ते पियमं एगिंदियपएसा, अहवा एगिंदियपएसा य बेइंदियस्स पएसा, अहवा एगिंदियपएसा य बेइंदियाण य पएसा, एवं आदिल्लविरहिओ जाव पंचिंदिएसु, अणिंदिएसु तिय भंगो। जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा रूवी अजीवा य, अरूवी अजीवा य। रूवी तहेव। जे अरूवी अजीव ते पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा नो धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे १ धम्मत्थिकास्स पदेसे २, एवं अधम्मत्थिकायस्स वि ३-४, अद्धासमए ५। १८. तिरियलोगखेत्तलोगस्स वि, नवरं अद्धासमओ नत्थि, अरूवी चउव्विहा। [सु. २०-२१. लोयालोयाणमेगपएसे जीवाजीव-जीवाजीवदेस-पदेसवत्तव्वया] २०. लोगस्स जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स एगम्मि आगासपदेसे। २१. लोगस्स णं भंते! एगम्मि आगासपएसे० पुच्छा। गोयमा! नो जीवा नो जीवदेसा, तं चेव जाव अणंतेहिं अगरूयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासस्स अणंतभागूणे। [सु. २२-२५. तिविहखेत्तलोय-अलोएसु दव्व-काल-भावओ आघेयपरूवणं] २२. (१) दव्वओ णं अहेलोगखेत्तलोए अणंता जीवदव्वा, अणंता अजीवदव्वा, अणंता जीवाजीवदव्वा। (२) एवं तिरियलोयखेत्तलोए वि। (३) एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि। २३. दव्वओ णं अलोए णेवत्थि जीवदव्वा, नेवत्थि अजीवदव्वा, नेवत्थि जीवाजीवदव्वा, एगे अजीवदव्वस्स देसे जाव सव्वागासअणंतभागूणे। २४. (१) कालओ णं अहेलोयखेत्तलोए न कदायि नासि जाव निच्चे। (२) एवं जाव अलोगे। २५. (१) भावओ णं अहेलोगखेत्तलोए अणंता वण्णपज्जवा जहा खंदए (स० २ उ० १ सु० २४ १) जाव अणंता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अगरूयलहुयपज्जवा। (२) एवं जाव लोए। (३) भावओ णं अलोए नेवत्थि वण्णपज्जवा जाव नेवत्थि अगरूयलहुयपज्जवा, एगे अजीवसव्वदेसे जाव अणंतभागूणे। [सु. २६. लोयवत्तव्वया] २६. लोए णं भंते ! के महालए पण्णत्ते ? गोयमा ! अयं णं जंबुद्दीव दीवे सव्वदीव० जाव परिक्खेवेणं। तेणं कालेणं तेणं समएरं छ देवा महिड्ढीया जाव महेसक्खा जंबुद्दीव दीवे मंदरे पव्वए मंदरचूलियं सव्वओ समता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठेज्जा। अहे णं चत्तारि दिसाकुमारिमहत्तरियाओ चत्तारि बलिपिंडे गहाय जंबुद्दीवस्स दीवस्स चउसु वि दिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते चत्तारि बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुहे पक्खिवेज्जा। पभू णं गोयमा ! तओ एगमेगे देवे ते चत्तारि बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए। ते णं गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगतीए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाते, एवं दाहिणाभिमुहे, एवं पच्चत्थाभिमुहे, एवं उत्तराभिमुहे, एवं उड्ढाभिमुहे पयाते, एवं दाहिणाभिमुहे पयाते। तेणं कालेणं तेणं उत्तराभिमुहे, एवं उड्ढाभिमुहे, एगे देवे अहोभिमुहे पयाते। तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससहस्साउए दारए पयाए। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउरंति। तए णं तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, णो चेव णं जाव संपाउरंति। तए णं तस्स दारगस्स अट्ठिमिंजा पहीणा भवंति, णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवंसे पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा लोगं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स नाम-गोते वि पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति। 'तेसि णं भंते ! देवाणं किं गए बहुए, अगए बहुए ?' 'गोयमा ! गए बहुए, नो अगए बहुए, गयाओ से अगए असंखिज्जइभागे, अगयाओ से गए असंखेज्जगुणे। लोए णं गोतमा ! एमहालए पन्नत्ते।' [सु. २७. अलोयवत्तव्वया] २७. अलोए णं भंते ! केमहालए पन्नत्ते ? गोयमा ! अयं णं समयखत्ते पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयाविक्खंमेणं जहा खंदए (सु० २ उ० १ सु० २४ ३) जाव परिक्खेवेणं। तेणं कालेणं तेणं समएणं दस देवा महिड्ढीया तहेव जाव संपरिक्खित्ताणं चिट्ठेज्जा, अहे णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ अट्ठ बलिपिंडे गहाय माणुसुत्तपव्वयस्स चउसु वि दिसासु चउसु वि विदिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा अट्ठ बलिपिंडे जमगसगं बहियामुहीओ पक्खिवेज्जा। पभू णं गोयमा ! तओ एगमेगे देवे ते अट्ठ बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए। ते णं गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए लोगंते ठिच्चा असब्भावपट्ठवणाए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाए, एगे देवे दाहिणपुरत्थाभिमुहे पयाते, एवं जाव उत्तरपुरत्थाभिमुहे, एगे देवे उड्ढाभिमुहे, एगे देवे अहोभिमुहे। पयाए। तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससयसहस्साउए दारए पयाए। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति। तं चेव जाव 'तेसि णं देवाणं किं गए बहुए, अग, बहुए ?' 'गोयमा ! नो गते बहुए, अगते बहुए, गयाओ से अगए अणंतगुणे, अगयाओ से गए अणंतभागे। अलोए णं गोयमा ! एमहालए पन्नत्ते।' [सु. २८. लोगस्सगेपदेसम्मि वत्तव्वविसेसो] २८. (१) लोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपएसे जे एगिंदियपएसा जाव पंचिंदियपदेसा अणिंदियपएसा अन्नमन्नबद्धा जाव अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठंति, अत्थि णं भंते ! अन्नमन्नस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएंति, छविच्छेदं वा करेंति ? णो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ लोगस्स णं एगम्मि आगासपएसे जे एगिंदियएसा जाव चिट्ठंति नत्थि णं ते अन्नमन्नस्स किंचि आबाहं वा जाव करेंति ? गोयमा ! से जहानामए नट्टिया सिया सिंगारागारचारुवेसा जाव कलिया रंगट्ठाणंसि जणसयाउलंसि जणसयसहस्साउलंसि बत्तीसतिविधस्स नट्टस्स अन्नयरं नट्टविहिं उवदंसेज्जा। से नूणं गोयमा ! ते पेच्छगा तं नट्टियं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएंति ? 'हंता, समभिलोएंति'। ताओ णं गोयमा ! दिट्ठीओ तंसि नट्टियंसि सव्वओ समंता सन्निवडियाओ ? 'हंता, सन्निवडियाओ।' अत्थि णं गोयमा ! ताओ दिट्ठीओ तीसे नट्टियाए किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएंति, छविच्छेदं वा करेति ? 'णो इणट्ठे समट्ठे।' ताओ वा दिट्ठीओ अन्नमन्नाए दिट्ठीए किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएंति, छविच्छेदं वा करेंति ? 'णो इणट्ठे समट्ठे।' सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति तं चेव जाव छविच्छेदं वा न करेंति। [सु. २९. लोगस्स एगम्मि आगासपदेसे जहन्न-उक्कोसपदेसु जीवपदेसाणं सव्वजीवाण य अप्पाबहुयं] २९. लोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपएसे जहन्नपदे जीवपदेसाणं, उक्कोसपदे जीवपदेसाणं, सव्वजीवाण य कतरे कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा लोगस्स एगम्मि आगासपदेसे जहन्नपदे जीवपदेसा, सव्वजीवा असंखेज्जगुणा, उक्कोसपदे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवपदेसा विसेसाहिया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । ॥११.१० ॥ ☆☆☆ एक्कारसो उद्देसओ 'काल'☆☆☆ [सु. १-६. वाणियग्गामवत्थव्वसुदंसणसेट्ठिधम्माराहगत्तनिद्देसपुव्वं एगारसुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे नामं नगरे होत्था, वण्णओ। दूतिपलासए चेतिए, वण्णओ जाव पुढविसिलवट्टओ । २. तत्थ णं वाणियग्गामे नगरे सुदंसणे नामं सेट्ठी परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूते समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ। ३. सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासति। ४. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाते कय जाव पायच्छित्ते सव्वालंकारभूसिए सातो गिहाओ पडिनिक्खमति, सातो गिहाओ प० २ सकोरटेंमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं पायविहारचारेणं महया पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते वाणियग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव दूतिपलासए चेतिए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, ते० उ० २ समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छति, तं जहा सचित्ताणं दव्वाणं जहा उसभदतो (स० ९ उ० ३३ सु० ११) जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति। ५. तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स सेट्ठिस्स तीसे य महतिमहालियाए जाव आराहए भवति। ६. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म अट्ठतुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेति, उ० २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वदासी [सु. ७ कालस्स पमाणकालाइभेयचउक्कं] ७. कतिविधे णं भंते! काले पन्नत्ते ? सुदंसणा! चउव्विहे काले पन्नत्ते, तं जहा पमाणकाले १ अहाउनिव्वत्तिकाले २ मरणकाले ३ अद्धाकाले ४। [सु. ८-१३. पमाणकालपरूवणा सु. ८. पमाणकालस्स दिवस-राइभेएण भेयदूयं, सम-उक्कोस-जहन्नपोरिसीपरूवणं च] ८. से किं तं पमाणकाले ? पमाणकाले दुविहे पन्नत्ते, तं जहा दिवसप्पमाणकाले य १ रत्तिप्पमाणकाले य २। चउपोरिसिए दिवसे, चउपोरिसा राती भवति। उक्कसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरिसी भवति। जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरिसी भवति। [सु. ९-१३. दिवस-राइतिविहपोरिसीणं वित्थरओ वत्तव्वया] ९. जदा णं भंते! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरिसी भवति तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी परिहायमाणी जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरिसी भवति ? जदा णं जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरिसी भवति तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरिसी भवति तदा णं बावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी परिहायमाणी जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरिसी भवति तदा णं बावीससयभागभुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरिसी भवति । १०. कदा णं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवस्स वा रातीए वा पोरिसी भवति ? कदा जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरिसी भवति ? सुदंसणा! जदा णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती भवति तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवति, जहन्निया तिमुहुत्ता रातीए पोरिसी भवति। जदा वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता रातीए पोरिसी भवइ, जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ। ११. कदा णं भंते ! उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती भवति ? कदा वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ? सुदंसणा ! आसाढपुण्णिमाए उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती भवइ; पोसपुण्णिमाए णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता रात्ती भवति, जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति। १२. अत्थि णं भंते ! दिवसा य रातीओ य समा चेव भवंति ? हंता, अत्थि। १३. कदा णं भंते ! दिवसा य रातीओ य समा चेव भवंति ? सुदंसणा ! चेत्तासोयपुण्णिमासु णं, एत्थ णं दिवसा य रातीओ य समा चेव भवंति; पन्नरसमुहुत्ते दिवसे, पन्नरसमुहुत्ता राती भवति; चउभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरिसी भवइ। से त्तं पमाणकाले। [सु. १४. अहाउनिव्वत्तिकालपरूवणा] १४. से किं तं अहाउनिव्वत्तिकाले ? अहाउनिव्वत्तिकाले, जं णं जेणं नेरइएण वा तिरिक्खजोणिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा अहाउयं निव्वत्तियं से त्तं अहाउनिव्वत्तिकाले।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[सु. १५. मरणकालपरूवणा] १५. से किं तं मरणकाले ? मरणकाले, जीवो वा सरीराओ, सरीरं वा जीवाओ। से त्तं मरणकाले। [सु. १६. समय-आवलियाइसरूवनिरूवणपुव्वं अद्धाकालपरूवणा] १६. (१) से किं तं अद्धाकाले ? अद्धाकाले अणेगविहे पन्नत्ते, से णं समयट्ठयाए आवलियट्ठयाए जाव उस्सप्पिणिअट्ठयाए। (२) एस णं सुदंसणा ! अद्धा दोहारच्छेदेणं छिज्जमाणी जाहे विभागं नो हव्वमागच्छति से त्तं समए समयट्ठताए। (३) असंखेज्जाणं समयाणं समुदयसमितिसमागमेणं सा एगा 'आवलिय'त्ति पव्वुच्चइ। संखेज्जाओ आवलियाओ जहा सालिउद्देसए (स० ६ उ० ७ सु० ४-७) जाव तं सागरोवमस्स उ एगस्स भवे परीमाणं। [सु. १७. पलिओवम-सागरोवमाणं पओयणं] १७. एएहि णं भंते ! पलिओवम-सागरोवमेहिं किं पयोयणं ? सुदंसणा ! एएहिं णं पलिओवम-सागरोवमेहिं नेरतिय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवाणं आउयाइं मविज्जंति। [सु. १८. चउवीसइदंडयठितिजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] १८. नेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? एवं ठितिपदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। [सु. १९-६१. सुदंसणसेट्ठिपुव्वभवकहानिरूवणपुव्वं पलिओवम-सागरोवमाणं खयाऽवचयपरूवणा] १९. (१) अत्थि णं भंते ! एतेसिं पलिओवम-सागरोवमाणं खए ति वा अवचए ति वा ? हंता, अत्थि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'अत्थि णं एएसिं पलिओवम-सागरोवमाणं जाव अवचये ति वा ? [सु. २०-६१. सुदंसणसेट्ठिपुव्वभवकहा सु. २०-२२. हत्थिणाउर-बलराय-पभावतीदेवीनामनिरूवणं] २०. एवं खलु सुदंसणा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था, वण्णओ। सहसंबवणे उज्जाणे, वण्णओ। २१. तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे बले नामं राया होत्था, वण्णओ। २२. तस्स णं बलस्स रण्णो पभावती नामं देवी होत्था, सुकुमाल० वण्णओ जाव विहरति।[सु. २३ वासघर-सयणीयवण्णणापुरस्सरं पभावतीए सीहसुविणदंसणवण्णणं] २३. तए णं सा पभावती देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भिंतरओ सचित्तकम्मे बाहरितो दूमियघट्ठमट्ठे विचित्तउल्लोगचिल्लियतले मणिरतणपणासियंधकारे बहुसमसुविभत्तदेसभाए पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्कधूवमघमघेंतगंधुद्धुताभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूते तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टीए उभओ बिब्बोवणे दुहओ उन्नए मज्झे णय-गंभीरे गंगापुलिणवालुयउद्दालसालिसए ओयवियखोमियदुगुल्लपट्टपलिच्छायणे सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आइणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे सुगंधवरकुसुमचुण्णसयणोवयारकलिए अद्धरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी अयमेयारूवं ओरालं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं सस्सिरीयं महासुविणं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा हार-रयय-खीर-सागर-ससंककिरण-दगरय-रययमहासेलपंडुरतरोरुरमणिज्जपेच्छणिज्जं थिरलट्ठवट्टपीवसुसिलिट्ठविसिट्ठविसिट्ठतिक्खदाढाविडंबितमुहं परिकम्मियजच्चकमलकोमलमाइयसोभंतलट्ठउट्ठं रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालुजीहं मूसागयपवरकणगतावितआवत्तायंतवट्टतडिविमलसरिसनयणं विसालपीवरोरुपडिपुण्णविमलखंधं मिउविसदसुहुमलक्खणपसत्थवित्थिण्णकेसरसडोवसोमियं ऊसियसुनिमितसुजातअप्फोडितणंगूलं सोमं सोमाकारं लीलायंतं जंभायंतं नहयलातो ओवयमाणं नियगवदणकमलसरमतिवयंतं सीहं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा। [सु. २४. बलस्स रण्णो समक्खं पभावतीए नियसुविणनिवेदणं सुविणफलकहणविन्नत्ती य] २४. तए णं सा पभावती देवी अयमेयारूवं ओरालं जाव सस्सिरीयं महासुविणं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हिदया धाराहयकलंबगं पिव समूसवियरोमकूवा तं सुविणं ओगिण्हति, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेति, अ० २ अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबिताए रायहंससरिसीए गतीए जेणेव बलस्स रण्णो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छति, ते० उ० २ बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं मियमहुरमंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी संलवमाणी पडिबोहेति, पडि० २ बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणि-रयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि णिसीयति, णिसीयित्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव संलवमाणी संलवमाणी एवं वयासी एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगण० तं चेव जाव नियगवयणमतिवयंतं सीहं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा। तं णं देवाणुप्पिया ! एतस्स

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओरालस्स जाव महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सति ? [सु. २५. पभावतिपुरओ बलेण रण्णा पुत्तजम्मसूयणापडिवायगं सुविणफलकहणं अणुवूहणं च] २५. तए णं से बले राया पभावतीए देवीए अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हयहियये धाराहतणीमसुरभिकुसुमं व चंचुमालइयतणू ऊसवियरोमकूवे तं सुविणं ओगिण्हइ, ओ० २ ईहं पविसति, ईहं प० २ अप्पणो साभाविएणं मतिपुव्वएणं बुद्धिविण्णोणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेति, तस्स० क० २ पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव मंगल्लाहिं मियमहुरसस्सिरीयाहिं वग्गूहिं संलवमाणे एवं वयारी "ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, कल्लाण णं तुमे जाव सस्सिरीए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगलकारए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिए !, भोगलाभो देवाणुप्पिए !, पुत्तलाभो देवाणुप्पिए !, रज्जलाभो देवाणुप्पिए ! एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! णवण्हं भासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीतिक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं कुपव्वयं कुलवडेंसगं कुलतिलगं कुलकित्तिकरं कुलनंदिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवड्ढणकरं सुकुमालपाणिपायं अहीणपुण्णपंचिंदियसरीरं जाव ससिसोमागारं कंतं पियदंसणं सुरूवं देवकुमारसप्पभं दारगं पयाहिसि । से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्णविपुलबलवाहणे रज्जवती राया भविस्सति । तं ओराले णं तुमे देवी ! सुमिणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि० जाव मंगल्लकारए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे" त्ति कट्टु पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं दोच्चं पि तच्चं पि अणुवूहति । [सु. २६. पभावतीए सुभसुविणजागरिया] २६. तए णं सा पभावती देवी बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० करयल जाव एवं वयासी-'एवमेतं देवाणुप्पिया !, तहमेयं देवाणुप्पिया !, अवितहमेयं देवाणुप्पिया !, असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया !, इच्छियमेयं देवाणुप्पिया !, पडिच्छियमेतं देवाणुप्पिया !, इच्छियपडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया से जहेयं तुब्भे वदह' त्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, तं० पडि०२ बलेण रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी णाणामणि-रयणभत्तिचित्तातो भद्दासणाओ अब्भुट्ठइ, अ०२ अतुरियमचवल जाव गतीए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, ते० उ० २ सयणिज्जंसि निसीयति, नि० २ एवं वदासी-'मा मे से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुविणे अन्नेहिं पावसुविणेहिं पडिहम्मिस्सइ' त्ति कट्टु देव-गुरुजण-संबद्धाहिं पसत्थाहिं मंगल्लाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुविणजागरियं पडिजागरमणी पडिजागरमाणी विहरति । [सु. २७-२८. बलेण रण्णा कोंडुबियपुरिसेहिंतो उवट्ठाणसालाए सीहासणरयावणं] २७. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, को०स०२ एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अज्ज सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणक्षसालं गंधोदयसित्तसुइयसम्मज्जियोवलित्तं सुगंधवरपंचवण्णपुप्फोवयारकलियं कालागरुपवरकुंदुरुक्क० जाव गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करे० २ सीहासणं रएह, सीहा० र० २ ममेतं जाव पच्चप्पिणह । २८. तए णं ते कोडुंबिय० जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं जाव पच्चप्पिणंति । [सु. २९-३१. कयवायाम-मज्जणाइपाभाइयकिच्चेण बलेण रण्णा पभावइदेवि-पमुहनवभद्दासणरयावणं, कोडुंबियपुरिसेहिंतो सुविणऽत्थपाढगनिमंतणं, सुविणत्थपाढगाणमागमणं च] २९. तए णं से बले राया पच्चूसकालसमयंसि सयणिज्जाओ समुट्ठेति, स० स० २ पायवीढातो पच्चोरुभति, प० २ जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छति, ते० उ० २ अट्टणसालं अणुपविसइ जहा उववातिए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे जाव ससि व्व पियदंसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमति, म० प० २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छति, ते० उ० २ सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, नि० २ अप्पणो उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चत्थुयाइं सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइं रयावेइ, रया० २ अप्पणो अदूरसामंते णाणामणिरयणमंडियं अहियपेच्छणिज्जं महग्घवरपट्टणुग्गयं सण्हपट्टभत्तिसयचित्तताणं ईहामियउसम जाव भत्तिचित्तं अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेति, अं०२ नाणामणि-रयणभत्तिचित्तं अत्थरयमउयमसूरगोत्थगं सेयवत्थपच्चत्थुतं अंगसुहफासयं सुमउयं पभावतीए देवीए भद्दासणं रयावेइ, र० २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, को० स० २ एवं वदासि-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए विविहसत्थकुसले सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह । ३०. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता बलस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडि० २ सिग्घं तुरियं चवलं चंडं वेइयं हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेसिं सुविणलक्खणपाडगाणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, ते० उ० २ ते सुविणलक्खणपाढळ सद्दावेंति। ३१. तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठ० ण्हाया कय० जाव सरीरा सिद्धत्थग-हरियालियकयमंगलमुद्धाणा सएहिं सएहिं गिहेहिंतो निग्गच्छंति, स० नि० २ हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव बलस्स रण्णो भवणवरवडेंसए तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उ० २ भवणवरवडेंसगपडिदुवारंसि एगतो मिलंति, ए० मि० २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति, ते० उ० २ करयल० बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति। तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलेणं रण्णा वंदियपूइयसक्कारियसम्माणिया समाणा पत्तेयं पत्तेयं पुव्वनत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति। [सु. ३२. सुविणऽत्थपाढगाण पुरओ पभावइदिट्ठसुविणफलजाणणत्थं बलस्स रण्णो पुच्छा] ३२. तए णं से बले राया पभावतिं देविं जवणियंतरियं ठावेइ, ठा० २ पुप्फ-फलपडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुविणलक्खणपाढए एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! पभावती देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव सीहं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा, तं णं देवाणुप्पिया! एयस्स ओरालस्स जाव के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सति? [सु. ३३. बलं रायाणं पइ विविहसुविणभेयवण्णणापुरस्सरं सुविणऽत्थपाढगाणं पभावइदेवीए उत्तमपुत्तसंभवनिरूवणं] ३३. (१) तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० तं सुविणं ओगिण्हंति, तं० ओ २ ईहं पविसंति, ईहं पविसित्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेंति, त० क० २ अन्नमन्नेणं सद्धिं संचालेंति, अ० सं० २ तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा बलस्स रण्णो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणा एवं वयासी- "(२) एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा, बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिया! तित्थयरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति, तं जहा- गय वसह सीह अभिसेय दाम ससि दिणयरं झयं कुंभं। पउमसर सागर विमाणभवय रयणुच्चय सिहिं च ॥१॥ वासुदेवमायरो णं वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि ए,सिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे सत्त महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति। बलदेवमायरो बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं जोद्दसण्हमहासुविणाणं अन्नयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ताणं पडिबुच्छंति। मंडलियमायरो मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एतेसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरं एगं महासुविणं पासित्ताणं पडिबुज्झंति। "(३) इमे य णं देवाणुप्पिया! पभावतीए देवीए एगे महासुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं देवाणुप्पिया! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि जाव मंगल्लकारए णं देवाणुप्पिया! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे। अत्थभाभो देवाणुप्पिया! भोगलाभो० पुत्तलाभो० रज्जलाभो देवाणुप्पिया!।"(४) एवं खलु देवाणुप्पिया! पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव वीतिक्कंताणं तुम्हं कुलकेउं जाव पयाहिति। से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे जाव रज्जवती राया भविस्सति, अणगारे वा भावियप्पा। तं ओराले णं देवाणुप्पिया! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण जाव दिट्ठे।"[सु. ३४. बलेण रण्णा सक्कार-सम्माण-पीइदाणपुव्वं सुविणऽत्थपाढगविसज्जणं पभावइदेविं पइ अणुवूहणापुव्वं सुविणऽत्थकहणं च] ३४. तए णं से बले राया सुविणलक्खपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठकयरल जाव कट्टु ते सुविणलक्खणपाढगे एवं वयासी 'एवमेयं देवाणुप्पिया! जाव से जहेयं तुब्भे वदह', त्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छति, तं० प० २ ते सुविणलक्खणपाढए विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइम-पुप्फ-वत्थ-गंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति सम्माणेति, स० २ विउलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलयति, वि० द० २ पडिविसज्जेति, पडि० २ सीहासणाओ अब्भुट्ठेति, सी० अ० २ जेणेव पभाती देवी तेणेव उवागच्छति, ते उ० २ पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव संलवमाणे संलवमाणे एवं वयासी "एवं खलु देवाणुप्पिए! सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा, बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिए! तित्थयगमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा, तं चेव जाव अन्नयरं एगं महासुविणे दिट्ठे। तं ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव रज्जवती राया भविस्सति अणगारे वा भावियप्पा, तं ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे" त्ति कट्टु पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव दोच्चं पि तच्चं पि तच्चं पि अणुवूहइ। [सु. ३५-३६. नियसुविणऽत्थजाणणाणंतरं बभावतीए देवीए तहाविहोवयारेहिं गब्भपरिवहणं] ३५. तए णं सा पभावती देवी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निमस्स हट्ठतुट्ठ० करयल जाव एवं वदासी एवमेयं देवाणुप्पिया! जाव तं सुविणं सम्मं पडिच्छति, तं० पडि० २ बलेण रण्णा अब्भणुण्णाता समाणी नाणामणि-रयणमत्ति जाव अब्भुट्ठेति, अ० २ अतुरितमचवल जाव गतीए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छति, ते० उ० २ सयं भवणमणुपविट्ठा। ३६. तए णं सा पभावती देवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सव्वालंकारविभूसिया तं गब्भस्स हियं मितं पत्थं गब्भपोसेणं तं देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विवित्तमउएहिं सयणासणेहिं पतिरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला संपुण्णदोहला सम्माणियदोहलाअविमाणियदोहलावोच्छिन्नदोहला विणीदोहला ववगयरोग-सोग-मोह-भय-परित्तासा तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ। [सु. ३७-३९. पभावइदेवीए पुत्तजम्मो, बलिरायाओ वद्धावयपडियारीणं पीइदाणाइ य] ३७. तए णं सा पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव दारयं पयाता, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पियट्ठताए पियं निवेदेमो, पियं ते भवउ। ३९. तए णं से बले राया अंगपडियारियाणं अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयणीव जाव रोमकूवे तासिं अंगपडियारियाणं मउडवज्जं जहामालियं ओमोयं दलयति, ओ० द० २ सेतं रययमयं विमलसलिलपुण्णं भिंगारं पगिण्हति, भिं० प० २ मत्थए धोवति, म० धो० २ विउलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलयति, वि० द० २ सक्कारेइ सम्माणेइ, स० २ पडिविसज्जेति। [सु. ४०-४४. पुत्तजम्ममहूसवस्स वित्थरओ वण्णणं, जायदारयस्स 'महब्बल' नामकरणं च] ४०. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, को० स० एवं वदासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हत्थिणापुरे नगरे चारगसोहणं करेह, चा० क० २ माणुम्मारवद्धणं करेह, मा० क० २ हत्थिणापुरं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसियसम्मज्जियोवलित्तं जाव करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य, जूवसहस्सं वा, चक्कसहस्सं वा, पूयामहामहिमसक्कारं वा ऊसवेह, ऊ० २ ममेतमाणत्तियं पच्चप्पिणह। ४१. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा बलेणं रण्णा एवं वुत्ता जाव पच्चप्पिणंति। ४२. तए णं से बले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छति, ते० उ० २ तं चेव जाव मज्जणघराओ पडिनिक्खमति, प० २ उस्सुंकं उक्करं उक्किट्ठं अदेज्जं अमेज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेगतालाचराणुचरियं अणुद्धयमुइंगं अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलियं सपुरजणजाणवयं दसदिवसे ठितिवडियं करेति। ४३. तए णं से बले राया दसाहियाए ठितिवडियाए वट्टमाणीए सतिए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य सतिए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य लाभे पडिच्छेमाणे य पडिच्छावेमाणे य एवं विहरति। ४४. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठितिवडियं करेंति, ततिए दिवसे चंदसूरदंसावणियं करेंति, छट्ठे दिवसे जागरियं करेंति। एक्कारसमे दिवसे वीतिक्कंते, निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे, संपत्ते बारसाहदिवसे विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेंति, उ० २ जहा सिवो (स० ११ उ० ९ सु० ११) जाव खत्तिए य आमंतेंति, आ० २ ततो पच्छा ण्हाता कत० तं चेव जाव सक्कारेंति सम्माणेंति, स० २ तस्सेव मित्त-णाति जाव राईण य खात्तियाण य पुरतो अज्जयपज्जयपिउपज्जयागयं बहुपुरिसपरंपरप्परूढं कुलाणुरूवं कुलसरिसं कुलसंताणतंतुवद्धणकरं अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति जम्हा णं अम्हं इमे दारए बलस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए तं होउ णं अम्हं इमस्स दारयस्स नामधेज्जं महब्बले। तए णं तस्स दारगस्स अम्माषियरो नामधेज्जं करेंति 'महब्बले' त्ति। [सु. ४५-४७. पंचधाइपालणपरिवड्ढणाइ-लेहसालासिक्खाकमेण महब्बलकुमारस्स तारुण्णभावो] ४५. तए णं से महब्बले दारए पंचधातीपरिग्गहिते, तं जहा खीरधातीए एवं जहा दढप्पतिण्णे जाव निवातनिव्वाघातंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ। ४६. तए णं तस्स महब्बलस्स दारगस्स अम्मा-पियरो अणुपुव्वेणं ठितिवडियं वा चंद-सूरदंसावणियं वा जागरियं वा नामकरणं वा परंगामणं वा पयचंकमावणं वा जेमावणं वा पिंडवद्धणं वा पजंपामणं वा कण्णवेहणं वा संवच्छरपडिलेहणं वा चोलोयणगं वा उवणयणं वा अन्नाणि य बहूणि गब्भाधाणजम्मणमादियाइं कोतुयाइं करेंति। ४७. तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मा-पियरो सातिरेगऽट्ठवासगं जाणित्ता सोभणंसि तिहि-करण-मुहुत्तंसि एवं जहा दढप्पतिण्णो जाव अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था। [सु. ४८. बलरायकरियमहब्बलकुमारावासभवणवण्णणं] ४८. तए णं तं महब्बलं कुमारं उम्मुक्कबालभावं जाव अलंभोगसमत्थं विजाणित्ता अम्मा-पियरो अट्ठ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासायवडेंसए कारेंति। अब्भुग्गमूसिय पहसिते इव वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे जाव पडिरूवे। तेसिं णं पासायवडेंसगाणं बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महेगं भवणं कारेंति अणेगखंभसयसन्निविट्ठं; वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे पेच्छाघरमंडवंसि जाव पडिरूवं। [सु. ४९. महब्बलकुमारेण अट्ठकण्णापाणिग्गहणं] ४९. तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मा-पियरो अन्नया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउय-मंगल-पायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं पमक्खणग-ण्हाण-गीय-वाइय -पसाहणट्ठंगतिलगकंकणअविहववहुउवणीयं मंगल-सुजंपितेहि य वरकोउय-मंगलोवयारकयसंतिकम्मं सरिसियाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सरिसलायण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाणं विणीयाणं कयकोउय-मंगलोवयारकतसंतिकम्माणं सरिसएहिं रायकुलेहिंतो आणितेल्लियाणं अट्ठण्हं रायवरकन्नाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविसु। [सु. ५०. अम्मा-पिइदिण्णस्स महब्बलकुमारापीइदाणस्स वित्थरओ वण्णणं] ५०. तए णं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स अम्मा-पियरो अयमेयारूवं पीतिदाणं दलयंति, तं जहा अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ सुवण्णकोडीओ, अट्ठ मउडे मउडप्पवरे, अट्ठकुंडलजोए कुंडलजोयप्पवरे, अट्ठ हारे हारप्पवरे, अट्ठ अद्धहारे अद्धहारप्पवरे, अट्ठ एगावलीओ एगावलिप्पवराओ, एवं सुत्तावलीओ, एवं कणगावलीओ, एवं रयणावलीओ, अट्ठ कडगजोए कडगजोयप्पवरे, एवं तुडियजोए, अट्ठ खोमजुयलाइं खोमजुयलप्पसराइं, एवं वडगजुयलाइं, एवं पट्टजुयलाइं, एवं दुगुल्लजुयलाइं, अट्ठ सिरीओ, अट्ठ हिरीओ; एवं धितीओ, कित्तीओ, बुद्धीओ, लच्छीओ; अट्ठ नंदाइं, अट्ठ भद्दाइं, अट्ठ तले तलप्पवरे सव्वरयणामए णियगवरभवणकेऊ, अट्ठ झए झयप्पवरे, अट्ठ वए वयप्पवरे दसगोसाहस्सिएणं वएणं, अट्ठ नाडगाइं नाडगप्पवराइं बत्तीसइबद्धेणं नाडएणं, अट्ठ आसे आसप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ जाणाइं जाणप्पवराइं, अट्ठ जुंगाइ जुंगप्पवराइं, एवं सिबियाओ, एवं संदमाणियाओ, एवं गिल्लीओ, थिल्लीओ, अट्ठ वियडजाणाइं वियडजाणप्पवराइं, अट्ठ रहे पारिजाणिए, अट्ठ रहे संगामिए, अट्ठ आसे आसप्पवरे, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे, अट्ठ गामे गामप्पवरे दसकुलसाहस्सिएणं गामेणं, अट्ठ दासे दासप्पवरे, एवं दासीओ, एवं किंकरे, एवं कंचुइज्जे, एवं वरिसधरे, एवं महत्तरए, अट्ठ सोवण्णिए ओलंबणदीवे, अट्ठ रुप्पामए ओलंबणदीवे, अट्ठ सुवण्णरुप्पामए ओलंबणदीवे, अट्ठ सोवण्णिए उक्कंपणदीवे, एवं चेव तिण्णि वि; अट्ठ सोवण्णिए पंजरदीवे, एवं चेव तिण्णि वि; अट्ठ सोवण्णिए थाले, अट्ठ रुप्पामए थाले, अट्ठ सुवण्ण-रुप्पामए थाले, अट्ठ सोवण्णियाओ पत्तीओ, अट्ठ सोवण्णियाओ पत्तीओ, अट्ठ रुप्पामयाओ पत्तीओ, अट्ठ सुवण्ण-रुप्पामयाओ पत्तीओ; अट्ठ सोवण्णियाइं थासगाइं ३, अट्ठ सोवण्णियाइं मल्लगाइं ३, अट्ठ सोवण्णियाओ तलियाओ ३, अट्ठ सोवण्णियाओ कविचिआओ ३, अट्ठ सोवण्णिए अवएडए ३, अट्ठ सोवण्णियाओ अवयक्काओ ३, अट्ठ सोवण्णिए पायपीढए ३, अट्ठ सोवण्णिओ भिसियाओ ३, अट्ठ सोवण्णियाओ करोडियाओ ३, अट्ठ सोवण्णिए पल्लंके ३, अट्ठ सोवण्णियाओ पडिसेज्जाओ ३, अट्ठ० हंसासणाइं ३, अट्ठ० कोंचासणाइं ३, एवं गरुलासणाइं उन्नतासणाइं पणतासणाइं दीहासणाइं भद्दासणाइं पक्खासणाइं मगरासणाइं, अट्ठ० पउमासणाइं, अट्ठ० उसभासणाइं, अट्ठ० दिसासोवत्थियासणाइं, अट्ठ० तेल्लसमुग्गे, जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठ० सरिसवसमुग्गे, अट्ठ खुज्जाओ जहा उववातिए जाव अट्ठ पारसीओ, अट्ठ छत्ते, अट्ठ छत्तधारीओ चेडीओ, अट्ठ चामराओ, अट्ठ चामरधारीओ चेडीओ, अट्ठ तालियंटे, अट्ठ तालियंटधारीओ चेडीओ, अट्ठ करोडियाओ, अट्ठकरोडियाधारीओ चेडीओ, अट्ठखीरधातीओ, जाव अट्ठ अंकधातीओ, अट्ठ अंगमद्दियाओ, अट्ठ उम्मद्दियाओ, अट्ठ ण्हावियाओ, अट्ठ पसाधियाओ, अट्ठ वण्णगपेसीओ, अट्ठ चुण्णगपेसीओ, अट्ठ कोडा(?ट्ठा)कारीओ, अट्ठ दवकारीओ, अट्ठ उवत्थाणियाओ, अट्ठ नाडइज्जाओ, अट्ठ कोडुंबिणीओ, अट्ठ महाणसिणीओ, अट्ठ भंडागारिणीओ, अट्ठ अब्भाधारिणीओ, अट्ठ पुप्फघरिणीओ, अट्ठ पाणिघरिणीओ, अट्ठ बलिकारियाओ, अट्ठसेज्जाकारीओ, अट्ठ अब्भिंतरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ बाहिरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ मालाकारीओ, अट्ठ पेसणकारीओ, अन्नं वा सुबहुं हिरण्णं वा, सुवण्णं वा, कंसं वा, दूसं वा, विउलधणकणग जाव संतासावदेज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं परिभोत्तुं पकामं परियाभाएउं। [सु. ५१-५२. महब्बलकुमारस्स नियभज्जासु अम्मा-पिइदिण्णपीइदाणविभयणं भोगभुंजणं च] ५१. तए णं से महब्बले कुमारे एगमेगाए भज्जाए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयति, एगमेगं सुवण्णकोडिं दलयति, एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयति, एवं तं चेव सव्वं जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयति, अन्नं वा सुबहुं हिरण्णं वा जाव परियाभाएउं। ५२. तए णं से महब्बले कुमारे उप्पं पासायवरगए जहा जमाली (स० ९ उ० ३३ सु० २२) जाव विहरति। [सु. ५३-५४. धम्मगोसाणगारस्स हत्थिणापुरागमणं, परिसापज्जुवासणा य] ५३. तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहो पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे जातिसंपन्ने वण्णओ जहा केसिसामिस्स जाव पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूतिज्जमाणे जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छति, उवा० २ अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हति, ओ० २ संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। ५४. तए णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिय जाव परिसा पज्जुवासति। [सु. ५५-५७. धम्मघोसाणगारस्संतिए महब्बलकुमारस्स पव्वज्जागहणं] ५५. तए णं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स तं महया जणसद्दं वा जणवूहं वा एवं जहा जमाली (स० ९ उ० ३३ सु० २४-२५) तहेव चिंता, तहेव कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ, कंचुइज्जपुरिसे वि तहेव अक्खाति, नवरं धम्माघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल जाव निग्गच्छति। एवं खलु देवाणुप्पिया! विमलस्स अरहतो पउप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे सेसं तं चेव जास सो वि तहेव रहवरेणं निग्गच्छति। धम्मकहा जहा केसिसामिस्स। सो वि तहेव (स० ९ उ० ३३ सु० ३३) अम्मापियरं आपुच्छति, नवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वइत्तए तहेव वुत्तपडिवुत्तिया (स० ९ उ० ३३ सु० ३५-४५) नवरं इमाओ य ते जाया! विउलरायकुलबालियाओ कला० सेसं तं चेव जाव ताहे अकामाइं चेव महब्बलकुमारं एवं वदासी तं इच्छामो ते जाया! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए। ५६. तए णं से महब्बले कुमारे अम्मा-पिउवयणमणुत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ। ५७. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्देवेइ, एवं जहा विसभद्दस्स (स० १ उ० ९ सु० ७-९) तहेव रायाभिसेओ भाणितव्वो जाव अभिसिंचंति, अभिसिंचित्ता करतलपरि० महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धवेंति, जएणं विजएणं वद्धावित्ता एवं वयासी भण जाया! किं देमो? किं पयच्छामो? सेसं जहा जमालिस्स तहेव, जाव (स० ९ उ० ३३ सु० ४९-८२) [सु. ५८. महब्बलाणगारस्स विविहतवोणुट्ठाणकमेण कालगमणं बंभलोयकप्पुववाओ य] ५८. तए णं से महब्बले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जति, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणति, बहु० पा० २ मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए० आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसूरिय जहा अम्मडो जाव बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं महब्बलस्स वि देवस्स दस सागरावमाइं ठिती पन्नत्ता। [सु. ५९. 'महब्बलदेवजीवस्स सुदंसणसेट्ठित्तेणप्पत्ती' इति कहणाणंतरं सुदंसणसेट्ठिं पइ भगवओ सव्वचागकरणोवएसो] ५९. से णं तुमं सुदंसणा! बंभलोए कप्पे दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्ता तओ चेव देवलोगाओ आउक्खएणं ठितिक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव वाणियग्गामे नगरे सेट्ठिकुलंसि पुमत्ताए पच्चायाए। तए णं तुमे सुदंसणा! उम्मुक्कबालभावेणं विण्णयपरिणयमेत्तेणं जोव्वणगमणुप्पत्तेणं तहारूवाणं थेराणं अंतियं केवलिपण्णत्ते धम्मे निसंते, से वि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइते, तं सुट्ठु णं तुमं सुदंसणा! इदाणिं पि करेसि। सेतेणट्ठेणं सुदंसणा! एवं वुच्चति 'अत्थि णं एतेसिं पलिओवमसागरोवमाणं खए ति वा, अवचए ति वा'। [सु. ६०-६१. उप्पन्नजाईसरणस्स सुदंसणसेट्ठिस्स चारित्तगहणाणंतरं मोक्खगमणं] ६०. तए णं तस्स सुदंसणस्स सेट्ठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियंएयमट्ठं सोच्चा निसम्म सुभेणं अज्झवसाणेणं, सोहणेणं परिणामेणं, लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं, तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सण्णीपुव्वंजातीसरणे समुप्पन्ने, एतमट्ठं सम्मं अभिसमेति। ६१. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे दुगुणाणीयसड्ढसंवेगे आणंदंसुपुण्णनवणे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, आ० क० २ वंदति नमंसति, वं० २ एवं वयासी एवमेयं भंते! जाव से जहेयं तुब्भे वदह, त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमति सेसं जहा उसभदत्तस्स (सु० ९ उ० ३३ सु० १६) जाव सव्वदुकखप्पहरणे, नवरं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जति, बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणति। सेसं तं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆ ॥महब्बलो समत्तो ॥११.११॥ **बारसमो उद्देसओ 'आलभिया'** ☆☆☆ [सु. १-५. आलभियानगरीवत्थव्वसमणोवासयाणं देवट्ठितिजिण्णासाए इसिभद्दपुत्तसमणोवासयकया देवट्ठितिपरूवणा, अन्नसमणोवासयाणमसद्दहणा य] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था। वण्णओ। संखवणे चेतिए। वण्णओ। २. तत्थ णं आलभियाए नगरीए बहवे इसिभद्दपुत्तपामोक्खा समणोवासया परिवसंति अड्ढा जाव अपरिलूता अभिगयजीवाजीवा जाव विहरंति। ३. तए णं तेसिं समणोवासयाणं अन्नया कयाइ एगयमो समुवागयाणं सहियाणं समुपविट्ठाणं सन्निसन्नाणं अयमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्थादेवलोगेसु णं अज्जो ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ४. तए णं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवट्ठितीगहियट्ठे ते समणोवासए एवं वयासी-देवलोगेसु णं अज्जो ! देवाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया दुसमयाहिया तिसमयाहिया जाव दससमयाहिया संखेज्जसमयाहिया असंखेज्जसमयाहिया; उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता। तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य। ५. तए णं ते समणोवासगा इसिभद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोएंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोएमाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया। [सु. ६. आलभियानगरीए भगवओ समोसरणं] ६. तेणं कालेणं तेणं समणेणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव परिसा पज्जुवासति। [सु. ७-१२. इसिभद्दपुत्तपरूवियदेवट्ठितिविसए भगवओ अविरोहं सोऊणं इसिभद्दपुत्तं पइ समणोवासयाणं खामणा, सट्ठाणगमणं च] ७. तए णं ते समणोवासगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठा एवं जहा तुंगिउद्देसए (स० २ उ० ५ सु० १४) जाव पज्जुवासंति। ८. तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महति० धम्मकहा जाव आणाए आराहए भवति। ९. तए णं ते समणोवासया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेतिं, उ० २ समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं० २ एवं वदासी-एवं खलु भंते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्हं एवं आइक्खति जाव परूवेति-देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिती पन्नत्ता, तेण परं समयाहिया जाव तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य। से कहमेतं भंते ! एवं ? १०. 'अज्जो !' त्ति समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी-जं णं अज्जो ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुब्भं एवं आइक्खइ जाव परूवेइ-देवलोगेसु णं अज्ज ! देवाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता तेण परं समयाहिया जाव तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य, सच्चे णं एसमट्ठे। अहं पि णं अज्जो ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि-देवलोगेसु णं अज्ज ! देवाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं० तं चेव जाव वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य। सच्चे णं एसे अट्ठे। ११. तए णं समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं० २ जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवा० २ इसिभद्दपुत्तं समणोवासगं वंदंति नमंसंति, वं० २ एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेंति। १२. तए णं ते समणोवासया पसिणाइं पुच्छंति, प० पु० २ अट्ठाइं परियादियंति, अ० प० २ समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं० २ जामेव दिसं पाउब्भूता तामेव दिसं पडिगया। [सु. १३-१४. गोयमपुच्छाए भगवओ इसिभद्दपुत्तदेवलोगगमण-विदेह-सिज्झणापरूवणा] १३. 'भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसति, वं० २ एवं वयासी-पभू णं भंते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वइत्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! इसिभद्दपुत्ते णं समणोवासए बहूहिं सीलव्वत-गुणव्वत-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहो-ववासेहिं अहापरिग्गहितेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासइं समणोवासगपरियागं पाउणिहिति, ब० पा० २ मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेहिति, मा० झू० २ सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेहिति, स० छे० २ आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणामे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं इसिभद्दपुत्तस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती भविस्सति। १४. से णं भंते ! इसिभद्दपुत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति

भगवं गोयमे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति। [सु. १५. आलभियानगरीतो भगवओ जणवयविहारो] १५. तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ आलभियाओ नगरीओ संखवणाओ चेतियाओ पडिनिक्खमति, प० २ बहिया जणवयविहारं विहरति। [सु. १६-१७. आलभियानगरीसंखवणचेतियसमीवे मोग्गलपरिव्वयगस्स विभंगणापुप्पत्ती] १६. तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी त्था। वण्णओ। तत्थ णं संखवणे णामं चेइए होत्था। वण्णओ। तस्स णं संखवणस्स चेतियस्स अदूरसामंते मोग्गले नामं परिव्वायए परिवसति रिजुव्वेद-यजुव्वेद जाव नयेसु सुपरिनिट्ठिए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ जाव आयावेमाणे विहरति। १७. तए णं तस्स मोग्गलस्स परिव्वायगस्स छट्ठंछट्ठेणं जाव आयावेमाणस्स पगतिभद्दयाए जहा सिवस्स (स० ११ उ० ९ सु० १६) जाव विब्भंगे नामं णाणे समुप्पन्ने। से णं तेणं विब्भंगेण नाणेणं समुप्पन्नेणं बंभलोए कप्पे देवाणं ठितिं जाणति पासति। [सु. १८-१९. विभंगणाणिस्स मोग्गलपरिव्वायगस्स देव-देवलोयविसयाए परूवणाए लोयाणं वियक्को] १८. तए णं तस्स मोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-'अत्थि णं ममं अतिसेसे नाण-दंसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु णं देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिती पन्नत्ता, तेण परं समयाहिया दुसमयाहिया जाव असंखेज्जसमयाहिया; उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य'। एवं संपेहेति, एवं सं० २ आयावणभूमीओ पच्चोरुभति, आ० प० २ तिदंड-कुंडिय जाव धाउरत्ताओ य गेण्हति, गे० उ० २ भंडनिक्खेवं करेति, भं० क० २ आलभियाए नगरीए सिंघाडग जाव पहेसु अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति जाव परूवेति-अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाण-दंसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु णं देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं० तं चेव जाव वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य। १९. तए णं आलभियाए नगरीए एवं एएणं अभिलावेणं जहा सिवस्स (स० ११ उ० ९ सु० १८) जाव से कहमेयं मन्ने एवं? [सु. २०-२३. भगवओ देव-देवलोयविसइया परूवणो] २०. सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया। भगवं गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद्दं निसामेति (स० ११ उ० ९ सु० २०), तहेव सव्वं भाणियव्वं जाव (स० ११ उ० ९ सु० २१) अहं पुण गोयमा! एवं आइक्खामि एवं भासामि जाव परूवेमि-देवलोएसु णं देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिती पन्नत्ता, तेण परं समयाहिया सुदमयाहिया जाव उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता; तेण परं वुच्छिन्ना देवा य देवलोगा य। २१. अत्थि णं भंते! सोहम्मे कप्पे दव्वाइं पि अवण्णाइं पि तहेव (सु. ११ उ० ९ सु० २२) जाव हंता, अत्थि। २२. एवं ईसाणे वि। एवं जाव अच्चुए। एवं गेविज्जविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु वि, ईसिपब्भाराए वि जाव हंता, अत्थि। २३. तए णं सा महतिमहालिया जाव पडिगया। [सु. २४. मोग्गपरिव्वायगस्स निग्गंथपव्वज्जागहणं सिज्झणा ये] २४. तए णं आलभियाए नगरीए सिंघाडग-तिय० अवसेसं जहासिवस्स (स० ११ उ० ९ सु० २७-३२) जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, नवरं तिदंड-कुंडियं जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परिवडियविब्भंगे आलभियं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमति, उत्तर० अ० २ तिदंड-कुंडियं च जहा खंदओ (स० २ उ० १ सु० ३४) जाव पव्वइओ। सेसं जहा सिवस्स जाव अव्वाबाहं सोक्खं अणुहुंते(ती) सासतं सिद्धा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ॥११.१२॥ ☆☆☆॥**एक्कारसमं सयं समत्तं ॥११॥**

卐卐卐बारसमं सयं 卐卐卐 [सु. १. बारसमसयस्स दसुद्देसनामसंगहगाहा] १. संखे १ जयंति २ पुढवी ३ पोग्गल ४ अइवाय ५ राहु ६ लोगे य ७। नागे य ८ देव ९ आया १० बारसमसए दसुद्देसा ॥१॥

☆☆☆ **पढमो उद्देसओ 'संखे'** ☆☆☆

[सु. २-९. सावत्थिनयरिवत्थव्वसंख - पोक्खलिपमुहसमणोवासयाणं भगवओ देसणासुणणाइ] २. तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था। वण्णओ। कोट्ठए चेतिए। वण्णओ। ३. तत्थ णं सावत्थीए नगरीए बहवे संखपामोक्खा समणोवासगा परिवसति अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरंति। ४. तस्स णं संखस्स समणोवासगस्स उप्पला नामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव विरहति। ५. तत्थ णं सावत्थीए नगरीए पोक्खली नामं समणोवासए परिवसति अड्ढे अभिगय जाव विहरति। ६. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ। ७. तए णं ते समणोवासगा इमीसे जहा

आलभियाए (स० ११ उ० १२ सु० ७) जाव पज्जुवासंति। ८. तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महतिमहालियाए० धम्मकहा जाव परिसा पडिगया। ९. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं० २ पसिणाइं पुच्छंति, प० पु० २ अट्ठाइं परियादियंति, अ० प० २ उट्ठाए उट्ठेंति, उ० २ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठगाओ चेतियाओ पडिनिक्खमंति, प० २ जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव पाहारेत्थ गमणाए। [सु. १०-११. संखसमणोवासयस्स पक्खियपोसहनिमित्तं समणोवासए पइ विपुलासणाइकरणनिद्देसो] १०. तए णं से संखे समणोवासए ते समणोवासए एवं वदासी तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! विपुलं असण-पाण-खाइमं उवक्खडावेह। तए णं अम्हे तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसाएमाणा विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरिस्सामो। ११. तए णं ते समणोवासगा संखस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणंति। [सु. १२. संखसमणोवासयस्स पक्खियपोसहनिमित्तं असणाइभुंजणपरिणामनिवत्तणं आरंभचागपुव्वं पोसहसालाए पोसहजागरिया य] १२. तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था 'नो खलु मे सेयं तं विउलं असणं जाव साइमं आसाएमाणस्स विस्सादेमाणस्स परिभाएमाणस्स परिभुंजेमाणस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए। सेयं खलु मे पोसहसालाए पोसहियस्स बंभयारिस्स उम्मुक्कमणि-सुवण्णस्स ववगयमाला-वण्णग-विलेवणस्स निक्खित्तसत्थ -मुसलस्स एगस्स अब्बिइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहएरित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेति, ए० सं० २ जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव सए गिहे जेणेव उप्पला समणोवासिया तेणेव उवागच्छति, उवा० २ उप्पलं समणोवासियं आपुच्छति, उ० आ० २ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छति, उवा० २ पोसहसालं अणुपविसति, पो० अ० २ पोसहसालं पमज्जति, पो० प० २ उच्चारपासवणमूमिं पडिलेहेति, ० प० २ दब्भसंथारगं संथरति, द० सं० २ दब्भसंथारगं दुरुहइ, २ पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी जाव पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरति। [सु. १३-१४. असणाइउवक्खडणाणंतरं संखनिमंतणत्थं पोक्खलिस्स संखगिहगमणं] १३. तए णं ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव साइं साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, ते० उ० २ विपुलं असण -पाण -खाइम -साइमं उवक्खडावेंति, उ० २ अन्नमन्ने सद्दावेंति, अन्न० स० २ एवं वयासी 'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले असण -पाण -खाइम -साइमे उवक्खडाविते, संखे य णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं संख समणोवासगं सद्दावेत्तए।' १४. तए णं से पोक्खली समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी 'अच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुनिव्वुया वीसत्था, अहं णं संखं समणोवासगं सद्दावेमि' त्ति कट्टु तेसिं समणोवासगाणं अंतियाओ पडिनिक्खमति, प० २ सावत्थनगरीमज्झंमज्झेणं जेणेव संखस्स समणोवासयस्स गिहे तेणेव उवागच्छति, ते उ० २ संखस्स समणोवासगस्स गिहं अणुपविट्ठे। [सु. १५. गिहागयं पोक्खलिं पइ संखभज्जाए उप्पलाए वंदणाइकरणं संखपोसहजागरियानिरूवणं च] १५. तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासगं एज्जमाणं पासति, पा० २ हट्ठतुट्ठ० आसणातो अब्भुट्ठेति, आ० अ० २ सत्तट्ठ पदाइं अणुगच्छति, स० अ० २ पोक्खलिं समणोवासगं वंदति नमंसति, वं० २ आसणेणं उवनिमंतेति, आ० उ० २ एवं वयासी संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पयोयणं ? तए णं से पोक्खली समणोवासए उप्पलं समणोवासियं एवं वयासी -कहिं णं देवाणुप्पिए ! संखे समणोवासए ? तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासगं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! संखे समाणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव विहरति। [सु. १६-१७. पोसहसालाठियं संखं पइ पोक्खलिस्स असणाइआसायणत्थं निमंतणं, संखस्स तन्निसेहनिरूवणं च] १६. तए णं से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसाला जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छति, उवा २ गमणागमणाए पडिक्कमति, ग० प० २ संखं समणोवासगं वंदति नमंसति, वं० २ एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले असण जाव साइमे उवक्खडाविते, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं जाव साइमं आसाएमाणा जाव पडिजागरमाणा विहरामो। १७. तए णं से संखे समणोवासए पोक्खलिं समणोवासगं एवं वयासी 'णो खलु कप्पति देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स

विहरित्तए। कप्पति मे पोसहसालाए पोसहियस्स जाव विहरित्तए। तं छंदेणं देवाणुप्पिया ! तुब्भे तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा जाव विहरह'। [सु. १८-१९. पोक्खलिकहियसंखवुत्तंतसवणाणंतरं समणोवासयाणं असणाइउवभोगो] १८. तए णं से पोक्खली समरोवासगे संखस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पोसहसालाओ पडिनिक्खमति, पडि० २ सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छति, ते० उ० २ ते समणोवासए एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए जाव विहरति। तं छंदेणं देवाणुप्पिया ! तुब्भेविउलं असण-पाण-खाइम-साइमं जाव विहरह। संखे णं समणोवासए नो हव्वमागच्छति। १९. तए णं ते समणोवासगा तं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसाएमाणा जाव विहरंति। [सु. २०-२१. संखस्स अन्नेसिं समणोवासयाणं च भगवओ समीवमागमणं वंदणाइकरणं च] २०. तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे जाव सम्मुज्जित्था 'सेयं खलु मे कल्लं पादु० जाव जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासित्ता तओ पडिनियत्तस्स पक्खियं पोसहं पारित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेति, एवं सं० २ कल्लं जाव जलंते पोसहसालाओ पडिनिक्खमति, पो० प० २ सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिते सयातो गिहातो पडिनिक्खमति, स० प० २ पायविहारचारेणं सावत्थिं णगरिं मज्झंमज्झेणं जाव पज्जुवासति। अभिगमो नत्थि। २१. तए णं ते समणोवासगा कल्लं पादु० जाव जलंते ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सरीरा सएहिं सएहिं गिहेहिंतो पडनिक्खमंति, स० प० २ एगयओ मिलायंति, एगयओ मिलाइत्ता सेसं जहा पढमं जाव पज्जुवासंति। [सु. २२. भगवओ धम्मकहाए निद्देसो] २२. तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य० धम्मकहा जाव आणाए आराहए भवति। [सु. २३-२४. अप्पहीलणमणुभवमाणे संखमुवालंभमाणे समणोवासए पइ भगवओ संखहीलणाइपडिसेहपरूवणा] २३. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेंति, उ० २ समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं० २ जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवा० २ संखं समणोवासयं एवं वयासी "तुमं णं देवाणुप्पिया ! हिज्जो अम्हे अप्पणा चेव एवं वदासी 'तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं जाव विहरिस्सामो'। तए णं तुमं पोसहसालए जाव विहरिए तं सुट्ठु णं तुमं देवाणुप्पिया ! अम्हं हीलसिं " २४. 'अज्जो !' त्ति समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी मा णं अज्जो ! तुब्भे संखं समणोवासगं हीलह, निंदह, खिंसह, गरहह, अवमन्नह। संखे णं समणोवासए पियधम्मे चेव, दढधम्मे चेव, सुदक्खुजागरियं जागरिते। [सु. २५. गोयमपण्हुत्तरे भगवओ जागरियाभेयनिरूवणं] २५. (१) 'भंते !' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वं० २ एवं वयासी कइविधा णं भंते ! जागरिया पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा जागरिया पन्नत्ता, तं जहा बुद्धजागरिया १ अबुद्धजागरिया २ सुदक्खुजागरिया ३। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'तिविहा जागरिया पन्नत्ता, तं जहा बुद्धजागरिया १ अबुद्धजागरिया २ सुदक्खुजागरिया ३' ? गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो उप्पन्ननाण-दंसणधरा जहा खंदए (स० २ उ० १ सु० ११) जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी, एए णं बुद्धा बुद्धजागरियं जागरंति। जे इमे अणगारा भगवंतो इरियासमिता भासासमिता जाव गुत्तबंभचारी, एए णं अबुद्धा अबुद्धजागरियं जागरंति। जे इमे समणोवासगा अभिगयजीवाजीवा जाव विहरंति एते णं सुदक्खुजागरियं जागरंति। सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति 'तिविहा जागरिया जाव सुदक्खुजागरिया'। [सु. २६-२८. संखपण्हुत्तरे भगवओ कोह-माण-माया-लोभवसजीवसंसारवुड्ढिपरूवणा] २६. तए णं से संखे समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता २ एवं वयासी कोहवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधति ? किं पकरेति ? किं चिणाति ? किं उवचिणाति ? संखा ! कोहवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ एवं जहा पढमसत्ते असंवुडस्स अणगारस्स (स० १ उ० १ सु० ११) जाव अणुपरियट्टइ। २७. माणवसट्टे णं भंते ! जीवे० ? एवं चेव। २८. एवं मायावसट्टे वि। एवं लोभवसट्टे वि जाव अणुपरियट्टइ। [सु. २९-३०. समणोवासयाणं संखं पइ खमावणा, सगिहगमणं च] २९. तए णं ते समणोवासगा समणस्स मगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीता तत्था तसिया संसारभउव्विग्गा समणं भगवं महावीरं वंदंति, नमंसंति, वं० २ जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवा० २ संखं समणोवासगं वंदंति नमंसंति,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वं० २ एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेंति। ३०. तए णं ते समणोवासगा सेसं जहा आलभियाए (स० ११ उ० १२ सु० १२) जाव पडिगता। [सु. ३१. गोयमपण्हुत्तरे भगवओ संखं पडुच्च कमेण सिज्झणापरूवणा] ३१. 'भंते!' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदिता नमंसित्ता एवं वयासी पभू णं भंते! संखे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं सेसं जहा इसिभद्दपुत्तस्स (स० ११ उ० १२ सु० १३-१४) जाव अंतं काहिति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरति।॥१२.१॥ ☆☆☆**बीओ उद्देसओ 'जयंती'**☆☆☆[सु. १-४. कोसंबीयनयरी-चंदोवतरणचेइयनिद्देसपुव्वं उदयण-मियावई-जयंतीणं वित्थरओ परिचओ] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबी नामं नगरी होत्था। वण्णओ। चंदोवतरणे चेतिए। वण्णओ। २. तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो पोत्ते, सयाणीयस्स रण्णो पुत्ते, चेडगस्स रण्णो नत्तुए, मिगावतीए देवीए अत्तए, जयंतीए समणोवासियाए भत्तिज्जए उदयणे नामं राया होत्था। वण्णओ। ३. तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो सुण्हा, सयाणीयस्स रण्णो भज्जा, चेडगस्स रण्णो धूया, उदयणस्स रण्णो माया, जयंतीए समणोवासियाए भाउज्जा मिगावती नामं देवी होत्था। सुकुमाल० जाव सुरूवा समणोवासिया जाव विहरइ। ४. तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो धूता, सताणीयस्स रण्णो भगिणी, उदयणस्स रण्णो पितुच्छा, मिगावतीए देवीए नणंदा, वेसालीसावगाणं अरहंताणं पुव्वसेज्जायरी जयंती नामं समणोवासिया होत्था। सुकुमाल० जाव सरूवा अभिगत जाव विहरइ। [सु. ५. भगवओ कोसंबीए समोसरणं]५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासति। [सु. ६-१३. उदयण-मियावई जयंतीणं भगवओ समीवमागमणं धम्मसवणाणंतरं उदयण-मियावईणं पडिगमणं च] ६. तए णं से उदयणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, को० स० २ एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कोसंबिं नगरिं सब्भितरबाहिरियं एवं जहा कूणिओ तहेव सव्वं जाव पज्जुवासइ। ७. तए णं सा जयंती समणोवासिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव मियावती देवी तेणेव उवागच्छति, उवा० २ मियावतिं देविं एवं वयासी एवं जहा नवमसए उसभदत्तो (स० ९ उ० ३३ सु० ५) जाव भविस्सति। ८. तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए जहा देवाणंदा (स० ९ उ० ३३ सु० ६) जाव पडिसुणेति। ९. तए णं सा मियावती देवी कोडुंबियपुरिसे सद्देवेति, को० स० २ एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! लहुकरणजुत्तजोइय० जाव (स० ९ उ० ३३ सु० ७) धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति जाव पच्चप्पिणंति। १०. तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव (स० ९ उ० ३३ सु० १०) अंतेउराओ निग्गच्छति, अं० नि० २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छति, ते० उ० २ जाव (स० ९ उ० ३३ सु० १०) रूढा। ११. तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं रूढा समाणी णियगपरियाल० जहा उसभदतो (स० ९ उ० ३३ सु० ११) जाव धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति। १२. तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं बहूहिं खुज्जाहिं जहा देवाणंदा (स० ९ उ० ३३ सु० १२) जाव वंदति नमंसति, वं २ उदयणं रायं पुरओ कट्टु ठिया चेव जाव (स० ९ उ० ३३ सु० १२) पज्जुवासइ। १३. तए णं समणे भगवं महावीरे उदयणस्स रण्णो मियावतीए देवीए जयंतीए समणोवासियाए तीसे य महतिमहा० जाव धम्मं परिकहेति जाव परिसा पडिगता, उदयणे पडिगए, मियावती वि पडिगया। [सु. १४-२१. भगवओ जयंतीपुच्छियविविहपण्हसमाहाणं सु. १४. कम्मगरुयत्तहेउपरूवणं] १४. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वं० २ एवं वयासी कहं णं भंते! जीवा गरूयत्तं हव्वमागच्छंति? जयंती! पाणातिवातेणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं, एवं खलु जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति। एवं जहा पढमसते (स० १ उ० ९ सु० १-३) जाव वीतीवयंति। [सु. १५-१७. भवसिद्धियाणं लक्खणं सिज्झणाइविसया परूवणा य] १५. भवसिद्धियत्तणं भंते! जीवाणं किं सभावओ, परिणामओ? जयंती! सभावओ, नो परिणामओ। १६. सव्वे वि णं भंते! भवसिद्धीया जीवा सिज्झिस्संति? हंता,

Jain Education International : 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जयंती ! सव्वे वि णं भवसिद्धीया जीवा सिज्झिस्संति। १७. (१) जइ णं भंते ! सव्वे भवसिद्धीया जीवा सिज्झिस्संति तम्हा णं भवसिद्धीयविरहिए लोए भविस्सइ ? णो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणं खाइ णं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सव्वे वि णं भवसिद्धीया जीवा सिज्झिस्संति, नो चेव णं भवसिद्धीयविरहिते लोए भविस्सति ? जयंती ! से जहानामए सव्वागाससेढी सिया अणादीया अणवदग्गा परित्ता परिवुडा, सा णं परमाणुपोग्गलमेत्तेहिं खंडेहिं समए समए अवहीरमाणी अवहीरमाणी अणंताहिं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहीरंती नो चेव णं अवहिया सिया, सेतेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ सव्वे वि णं जाव भविस्सति। [सु. १८-२०. सुत्त-जागर-बलियत्त-दुब्बलियत्त-दक्खत्त-आलसियत्ताइं पडुच्च साहु-असाहुपरूवणा] १८. (१) सुत्तत्तं भंते ! साहू, जागरियत्तं साहू ? जयंती ! अत्थेगतियाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'अत्थेगतियाणं जाव साहू' ? गयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिट्ठा अहम्मक्खाई अहम्मपलोई अहम्मपलज्जणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं सुत्तत्तं साहू। एए णं जीवा सुत्ता समाणा नो बहुणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव परियावणयाए वट्टंति। एए णं जीवा सुत्ता समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति। एएसिं णं जीवाणं सुत्तत्तं साहू। जयंती ! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुया जाव धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साहू। एए णं जीवा जागरा समाणा बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टंति। एते णं जीवा जागरमाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति। एएसिं णं जीवाणं सुत्तत्तं साहू। जयंती ! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुया जाव धम्मेणं चेव वितिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साहू। एए णं जीवा जागरा समाणा बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टंति। एते णं जीवा जागरमाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति। एए णं जीवा जागरमाणा धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवंति। एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साहू। से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ 'अत्थेगतियाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू।१९. (१) बलियत्तं भंते ! साहू, दुब्बलियत्तं साहू ? जयंती ! अत्थेगतियाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'जाव साहू' ? जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति एएसि णं जीवाणं सुब्बलियत्तं साहू। एए णं जीवा० एवं जहा सुत्तस्स (सु. १८ २) तहा दुब्बलियस्स वत्तव्वया भाणियव्वा। बलियस्स जहा जागरस्स (सु. १८ २) तहा भाणियव्वं जाव संजोएत्तारो भवंति, एएसि णं जीवाणं बलियत्तं साहू। से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ तं चेव जाव साहू। २०. (१) दक्खत्तं भंते ! साहू, आलसियत्तं साहू ? जयंती ! अत्थेगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति तं चेव जाव साहू ? जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति, एएसि णं जीवाणं आलसियत्तं साहू, एए णं जीवा अलसा समाणा नो बहूणं जहा सुत्ता (सु० १८ २) तहा अलसा भाणियव्वा। जहा जागरा सु० १८ २) तहा दक्खा भाणियव्वा जाव संजोएत्तारो भवंति। एए णं जीवा दक्खा समाणा बहूहिं आयरियवेयावच्चेहिं, उवज्झायवेयावच्चेहिं, थेरवेयावच्चेहिं, तवस्सिवेयावच्चेहिं, गिलाणवेयावच्चेहिं, सेहवेयावच्चेहिं, कुलवेयावच्चेहिं, गणवेयावच्चेहिं, संघवेयावच्चेहिं, साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो भवंति। एतेसि णं जीवाणं दक्खत्तं साहू। सेतेणट्ठेणं तं चेव जाव साहू। सु. २१. इंदियवसट्टे जीवे पडुच्च संसारभमणपरूवणा २१. (१) सोइंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधति ? एवं जहा कोहवसट्टे (स० १२ उ० १ सु० २६) तहेव जाव अणुपरियट्टइ। (२) एवं चक्खिंदियवसट्टे वि। एवं जाव फासिंदियवसट्टे जाव अणुपरियट्टइ। [सु. २२. जयंतीए पव्वज्जागहणं सिद्धिगमणं च] २२. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा सेसं जहा देवाणंदाए (स० ९ उ० ३३ सु० १७-२०) तहेव पव्वइया जाव सव्वदुक्खप्पहीणा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।॥ १२.२॥ ☆☆☆ ततिओ उद्देसओ 'पुढवी'

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

☆☆☆ [सु. १. तइउद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासी [सु. २-३. सत्तण्हं नरयपुढवीणं नाम-गोत्तावगमत्थं जीवाभिगमसुत्तावलोयणनिद्देसो] २. कति णं भंते पुढवीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पन्नत्ताओ, तं जहा पढमा दोच्चा जाव सत्तमा । ३. पढमा णं भंते ! पुढवी किं नामा ? किं गोत्ता पन्नत्ता ? गोयमा ! घम्मा नामेणं, रयणप्पभा गोत्तेणं, एवं जहा जीवाभिगमे पढमो नेरइयउद्देसओ सो निरवसेसो भाणियव्वो जाव अप्पाबहुगं ति । सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति० । ॥१२.३ ॥ ☆☆☆ **चउत्थो उद्देसओ 'पोग्गले'**☆☆☆ [सु. १. चउत्थुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासी [सु. २. दोण्हं संहताणं परमाणुपोग्गलाणं विभयणे भंगपरूवणं] २. दो भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवति ? गोयमा ! दुपदेसिए खंधे भवति । से भिज्जमाणे दुहा कज्जति । एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ परमाणुपोग्गले भवति । [सु. ३. तिण्हं संहताणं परमाणुपोग्गलाणं विभयणे भंगपरूवणं] ३. तिन्नि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवति ? गोयमा ! तिपदेसिए खंधे भवति । से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहा वि कज्जति । दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपसेसिए खंधे भवति । तिहा कज्जमाणे तिन्नि परमाणुपोग्गला भवंति । [सु. ४. चउण्हं संहताणं परमाणुपोग्गलाणं विभयणे भंगपरूवणं] ४. चत्तारि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति पुच्छा । गोयमा ! चउप्पएसिए खंधे भवति । से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहा वि, चउहा वि कज्जइ । दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवति; अहवा दो दुपदेसिया खंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपदेसिए खंधे भवति । चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति । [सु. ५. पंचण्हं संहताणं परमाणुपोग्गलाणं विभयणे भंगपरूवणं] ५. पंच भंते ! परमाणुपोग्गला० पुच्छा । गोयमा ! पंचपदेसिए खंधे भवति । से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहा वि, चउहा वि, पंचहा वि कज्जइ । दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउपदेसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवति । पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणुपोग्गला भवंति । [सु. ६. छण्हं संहताणं परमाणुपोग्गलाणं विभयणे भंगपरूवणं] ६. छब्भंते ! परमाणुपोग्गला० पुच्छा । गोयमा ! छप्पदेसिए खंधे भवइ । से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहा वि, जाव छहा वि कज्जइ । दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ पंच पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपदेसिए खंधे भवति; अहवा दो तिपदेसिया खंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चउपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवति; अहवा तिण्णि दुपदेसिया खंधा भवंति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवति । छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवंति । [सु. ७. सत्तण्हं संहताणं परमाणुपोग्गलाणं विभयणे भंगपरूवणं] ७. सत्त भंते ! परमाणुपोग्गला० पुच्छा । गोयमा ! सत्तपदेसिए खंधे भवति । से भिज्जमाणे दुहा वि जाव सत्तहा वि कज्जइ । दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ तिप्पएसिए, एगयओ चउपएसिए खंधे भवति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणु०, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंधे भवति; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपो०, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपदेसिए खंधे भवति। सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला भवंति। [सु. ८. अट्ठण्हं संहताणं परमाणुपोग्गलाणं विभयणे भंगपरूवणं] ८. अट्ठ भंते ! परमाणुपोग्गला० पुच्छा। गोयमा ! अट्ठपएसिए खंधे भवइ, जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु०, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ छप्पदेसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिपएसिए०, एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवइ; अहवा दो चउप्पदेसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु०, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणु०, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणु०, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दोण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपो०, एगयओ दो परमाणुपो०, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए०, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपो०, एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपो०, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपो०, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवति। अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणुपोग्गला भवंति। [सु. ९. नवण्हं संहताणं परमाणुपोग्गलाणं विभयणे भंगपरूवणं] ९. नव भंते ! परमाणुपोग्गला० पुच्छा। गोयमा ! जाव नवविहा कज्जंति। दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपो०, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवति; एवं एक्केक्कं संचारेंतेहिं जाव अहवा एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए०. एगयओ छप्पएसिए खंधे भवति; अवहा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा तिण्णि तिपएसिया खंधा भवंति। चउहा भिज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपो०, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपो०, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपो०, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणु०, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपो०, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपो०, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपो०, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपो०, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ पंच परमाणुपो० एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए खंधे भवति। नवहा कज्जमाणे नव परमाणुपोग्गला भवंति। [सु. १०. दसण्हं संहताणं परमाणुपोग्गलाणं विभयणे भंगपरूवणं] १०. दस भंते ! परमाणुपोग्गला जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ नवपएसिए खंधे भवति; अहवा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ अट्ठ पएसिए खंधे भवति; एवं एक्केक्कं संचारेंतेण जाव अहवा दो पंचपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपो०, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए०, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ चउप्पएसिए०, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दुपएसिए०, एगयओ तिपएसिए०, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दो तिपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपो०, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए०, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपो०, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपो०, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ दुपदेसिए०, एगयओ तिपएसिए०, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ तिन्नि तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा, एगयओ चउपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपो०, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति, एगयओ चउपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपो०, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ तिन्नि दुपएसिया०, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा पंचदुपएसिया खंधा भवंति। छह कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपो०, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए०, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपो०, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपो०, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपो०, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपो०, एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ पंच परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए०, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपो०, एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपो०, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ छप्परमाणुपो०, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। नवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठ परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए खंधे भवति। दसहा कज्जमाणे दस परमाणुपोग्गला भवंति। [सु. ११. संहताणं संखेज्जाणं परमाणुपोग्गलाणं विभयणे भंगपरूवणं] ११. संखेज्जा भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, एगयओ साहणित्ता किं भवति ? गोयमा ! संखेज्जपएसिए संखे भवति। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि संखेज्जहा वि कज्जति। दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओसंखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ तिपएसिए०, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति; एवं जाव अहवा एगयतो दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयतो दो परमाणुपो०, एगयतो संखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयतो परमाणुपो०, एगयतो दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति, अहवा एगयतो परमाणुपो०, एगयतो तिपएसिए खंधे०, एगयतो संखेज्जपएसिए खंधे भवति; एवं जाव अहवा एगयतो परमाणुपो०, एगयतो दसपएसिए खंधे, एगयतो संखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयतो परमाणुपो०, एगयतो दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयतो दुपएसिए खंधे, एगयतो दो संखेज्जपदेसिया खंधा भवंति; एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयतो दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा तिण्णि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयतो तिन्नि परमाणुपो०, एगयतो संखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयतो दो परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए०, एगयओ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयतो दो परमाणुपो०, एगयतो तिपएसिए०, एगयतो संखेज्जपएसिए खंधे भवति; एवं जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपो०, एगयतो दसपएसिए०, एगयतो संखेज्जपएसिए० भवति; अहवा एगयतो दो परमाणुपो०, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयतो परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपदेसिया खंधा भवंति; जाव अहवा एगयतो परमाणुपो०; एगयतो दसपएसिए०, एगयतो दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयतो परमाणुपो०, एगयतो तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए०, एगयतो तिन्नि संखेज्जपएसिया० भवंति; जाव अहवा एगयओ दसपएसिए०, एगयओ तिन्नि संखेज्जपदेसिया० भवंति; अहवा चत्तारि संखेज्जपएसिया० भवंति । एवं एएणं कमेणं पंचगसंजोगो वि भाणियव्वो जाव नवसंजोगो । दसहा कज्जमाणे एगयतो नव परमाणुपोग्गला, एगयतो संखेज्जपएसिए० भवति; अहवा एगयओ अट्ठ परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए०, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति; एवं एएणं कमेणं एक्केक्को पूरयव्वो जाव अहवा एगयओ दसपएसिए०, एगयओ नव संखेज्जपएसिया० भवंति; अहवा दस संखेज्जपएसिया खंधा भवंति । संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति । [सु. १२. संहताणं असंखेज्जाणं परमाणुपोग्गलाणं विभयणे भंगपरूवणं] १२. असंखेज्जा भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति एगयओ साहणित्ता किं भवति ? गोयमा ! असंखेज्जपएसिए खंधे भवति । से भिज्जमाणे दुहा वि, जाव दसहा वि, संखेज्जहा वि, असंखेज्जहा वि कज्जति । दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपो०, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; जाव अहवा एगयओ दसपदेसिए०, एगयओ असंखिज्जपएसिए० भवति; अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपो०, एगयओ असंखेज्जपएसिए० भवति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए०, एगयओ असंखिज्जकएसिए० भवति; जाव अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ दसपदेसिए०, एगयओ असंखेज्जपएसिए० भवति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ संखेज्जपएसिए०, एगयओ असंखेज्जपएसिए० भवति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए०, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति; एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए०, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा तिन्नि असंखेज्जपएसिया० भवंति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपो०, एगयओ असंखेज्जपएसिए० भवति । एवं चउक्कगसंजोगो जाव दसगसंजोगो । एए जहेव संखेज्जपएसियस्स, नवरं असंखेज्जगं एगं अहिगं भाणियव्वं जाव अहवा दस असंखेज्जपदेसिया खंधा भवंति । संखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ संखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ संखेज्जा दुपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा दसपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति । असंखेज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति । [सु. १३. संहताणं अणंताणं परमाणुपोग्गलाणं विभेयणे भंगपरूवणं] १३. अणंता णं भंते ! परमाणुपोग्गला जाव किं भवति ? गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे भवति । से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहा जाव दसहा वि, संखिज्ज-असंखिज्ज-अणंतहा वि कज्जइ । दुहा कज्जमाणे एगयो परमाणुपोग्गले, एगयओ अणंतपएसिए खंधे; जाव अहवा दो अणंतपएसिया खंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ अणंतपएसिए खंधे; जाव अहवा दो अणंतपएसिया खंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयतो दो परमाणुपो०, एगयतो अणंतपएसिए० भवति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ दुपएसिए०, एगयओ अणंतपएसिए० भवति; जाव अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ असंखेज्जपएसिए०, एगयओ अणंतपदेसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपो०, एगयओ दो अणंतपएसिया० भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए०, एगयओ दो अणंतपएसिया० भवंति; एवं जाव अहवा एगयतो दसपएसिए एगयतो दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपदेसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; अहवा तिन्नि अणंतपएसिया खंधा भवंति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपो०, एगयतो अणंतपएसिए० भवति; एवं चउक्कसंजोगो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव असंखेज्जगसंजोगो। एए सव्वे गहेव असंखेज्जाणं भणिया तहेव अणंताण वि भाणियव्वा, नवरं एक्कं अणंतगं अब्भहियं भणियव्वं जाव अहवा एगयतो संखेज्जा संखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएतसए० भवति; अहवा एगयओ संखेज्जा असंखेज्जपदेसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवति; अहवा संखिज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति। असंखेज्जहा कज्जमाणे एगयतो असंखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयतो असंखिज्जा दुपएसिया खंधा, ,गयओ अणंतप,सिए० भवति; जाव अहवा एगयओ असंखेज्जा संखिज्जपएसिया०, एगयओ अणंतपएसिए० भवति; अहवा एगयओ असंखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए० भवति; अहवा असंखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति। अणंतहा कज्जमाणे अणंता परमाणुपोग्गला भवंति। [सु. १४. परमाणुपोग्गलाणं पोग्गलदव्वेहिं सह संघात-विभेयणेसु अणंताणंतपोग्गलपरियट्टनिरूवणं] १४. एएसि णं भंते! परमाणुपोग्गलाणं साहणणाभेदाणुवाएणं अणंताणंता पोग्गलपरियट्टा समणुगंतव्वा भवंतीति मक्खाया? हंता, गोयमा! एतेसि णं परमाणुपोग्गलाणं साहणणा जाव मक्खाया। [सु. १५. पोग्गलपरियट्टस्स भेयसत्तगं] १५. कतिविधे णं भंते! पोग्गलपरियट्टे पन्नत्ते? गोयमा! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पन्नत्ते, तं जहा ओरालियपोग्गलपरियट्टे वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे तेयापोग्गलपरियट्टे कम्मापोग्गलपरियट्टे मणपोग्गलपरियट्टे वइपोग्गलपरियट्टे आणपाणुपोग्गलपरियट्टे। [सु. १६-१७. चउवीसइदंडएसु पोग्गलपरियट्टपरूवणं] १६. नेरइयाणं भंते! कतिविधे पोग्गलपरियट्टे पन्नत्ते? गोयमा! सत्तविधे पोग्गलपरियट्टे पन्नत्ते, तं जहा ओरालियपोग्गलपरियट्टे वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे जाव आणपाणुपोग्गलपरियट्टे। १७. एवं जाव वेमाणियाणं। [सु. १८-२४. जीव-चउवीसदंडएसु अतीताइपोग्गलपरियट्टसत्तगस्स एगत्तेण परूवणं] १८. एगमेगस्स णं भंते! जीवस्स केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता? अणंता। २ केवइया पुरेक्खडा? कस्सति अत्थि, कस्सति णत्थि। जस्सऽत्थि जहण्णेणं एगो दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। १९. एवं सत्त दंडगा जाव आणपाणु त्ति। २०. (१) एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया? अणंता। (२) केवतिया पुरेक्खडा? कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि। जस्सऽत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। २१. एगमेगस्स णं भंते! असुरकुमारस्स केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा०? एवं चेव। २२. एवं जाव वेमाणियस्स। २३. (१) एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स केवतिया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीया? अणंता। (२) एवं जहेव ओरालियपोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा वि भाणियव्वा। २४. एवं जाव वेमाणियस्स आणापाणुपोग्गलपरियट्टा। एए एगत्तिया सत्त दंडगा भवंति। [सु. २५-२७. चउवीसदंडएसु अतीताइपोग्गलपरियट्टसत्तगस्स पुहत्तेण परूवणं] २५. (१) नेरइयाणं भंते! केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता? अणंता। (२) केवतिया पुरेक्खडा? अणंता। २६. एवं जाव वेमाणियाणं। २७. एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा वि। एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा वेमाणियाणं। एवं एए पोहत्तिया सत्त चउवीसतिदंडगा। [सु. २८-३९. चउवीसदंडयाणं चउवीसदंडएसु अतीताइपोग्गलपरियट्टसत्तगस्स एगत्तेण परूवणं] २८. (१) एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया? नत्थि एक्को वि। (२) केवतिया पुरेक्खडा? नत्थि एक्को वि। २९. (१) एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा०? एवं चेव। (२) एवं जाव थणियकुमारत्ते। ३०. (१) एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स पुढविकाइयत्ते केवतिया केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया? अणंता। (२) केवतिया पुरेक्खडा? कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि। जस्सऽत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। ३१. एवं जाव मणुस्सत्ते। ३२. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते। ३३. एगमेगस्स णं भंते! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया? एवं जहा नेरइयस्स वत्तव्वया भणिया तहा असुरकुमारस्स वि भाणितव्वा जाव वेमाणियत्ते। ३४. एवं जाव थणियकुमारस्स। एवं पुढविकाइयस्स वि। एवं जाव वेमाणियस्स। सव्वेसिं एक्को गमो। ३५. (१) एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स नेरइत्ते केवतिया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीया? अणंता। (२) केवतिया पुरेक्खडा? एक्कुत्तरिया जाव अणंता वा। ३६. एवं जाव थणियकुमारत्ते। ३७. (१) पुढविकाइयत्ते

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुच्छा। नत्थि एक्को वि। (२) केवतिया पुरेक्खडा ? नत्थि एक्को वि। ३८. एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं तत्थ एगुत्तरिओ, जत्थ नत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते। ३९. तेयापोग्गलपरियट्टा कम्मापोग्गलपरियट्टा य सव्वत्थ एक्कुत्तरिया भाणितव्वा। मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पंचेंदिएसु एगुत्तरिया। विगलिंदिएसु नत्थि। वइपोग्गलपरियट्टा एवं चेव, नवरं एगिंदिएसु 'नत्थि' भाणियव्वा। आणापाणुपोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एकत्तरिया जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते। [सु. ४०-४६. चउवीसदंडयाणं चउवीसदंडएसु अतीताइपोग्गलपरियट्टसत्तगस्स पुहत्तेण परूवणं] ४०. (१) नेरइयाणं भंते ! नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया ? नत्थेक्को वि। (२) केवइया पुरेक्खडा ? नत्थेक्को वि। ४१. एवं जाव थणियकुमारत्ते। ४२. (१) पुढविकाइयत्ते पुच्छा। अणंता। २ केवतिया पुरेक्खडा ? अणंता। ४३. एवं जाव मणुस्सत्ते। ४४. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियत्ते जहा नेरइयत्ते। ४५. एवं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते। ४६. एवं सत्त वि पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा। जत्थ अत्थि तत्थ अतीता वि, पुरेक्खडा वि अणंता भाणियव्वा। जत्थ नत्थि तत्थ दो वि 'नत्थि' भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते केवतिया आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अतीया ? अणंता। केवतिया पुरेक्खडा ? अणंता। [सु. ४७- ४९. सत्तण्हं ओरालियाइपोग्गलपरियट्टाणं सरूवं] ४७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ'ओरालियपोग्गलपरियट्टे, ओरालियपोग्गलपरियट्टे' ? गोयमा ! जं णं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालियसरीरपायोग्गाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं निविट्ठाइं अभिनिविट्ठाइं भवंति, सतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ 'ओरालियपोग्गलपरियट्टे, ओरालियपोग्गलपरियट्टे'। ४८. एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि, नवरं वेउव्वियसरीरे वट्टमाणेणं वेउव्वियसरीरपायोग्गाइं दव्वाइं वेउव्वियसरीरत्ताए०। सेसं तं चेव सव्वं। ४९. एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, नवरं आणापाणुपायोग्गाइं सव्वदव्वाइं आणापाणुत्ताए०। सेसं तं चेव। [सु. ५०- ५२. सत्तण्हं पोग्गलपरियट्टाणं निव्वत्तणाकालपरूवणं] ५०. ओरालियपोग्गलपरियट्टे णं भंते ! केवतिकालस्स निव्वत्तिज्जति ? गोयमा ! अणंताहिं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं, एवतिकालस्स निव्वत्तिज्जइ। ५१. एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे। ५२. एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे। [सु. ५३. ओरालियाइपोग्गलपरियट्टसत्तगनिव्वत्तणाकालस्स अप्पाबहुयं] ५३. एतस्स णं भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले, तेयापोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, मणपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वइपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे। [सु. ५४. ओरालियाईणं सत्तण्हं पोग्गलपरियट्टाणं अप्पाबहुयं] ५४. एएसि णं भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टाणं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा, वइपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, मणपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, ओरालियपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, तेयापोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, कम्मपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं जाव विहरइ। ॥ १२.४ ॥ **☆☆☆ पंचमो उद्देसओ 'अतिवात' ☆☆☆** [सु. १. पंचमुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासी [सु. २-७. पाणाइवायाईसु अट्ठारससु पावट्ठाणेसु वण्ण-गंध-रस-फासपरूवणं] २. अह भंते ! पाणातिवाए मुसावाए अदिन्नादाणे मेहुणे परिग्गहे, एस णं कतिवण्णे कतिगंधे कतिरसे कतिफासे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे चउफासे पन्नत्ते। ३. अह भंते ! कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलणे कलहे चंडिक्के भंडणे विवादे, एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचवण्णे पंचरसे दुगंधे चउफासे पन्नत्ते। ४. अह भंते ! माणे मदे दप्पे थंभे गव्वे अत्तुक्कोसे परपरिवाए उक्कासे अवक्कासे उन्नए उन्नामे दुन्नामे, एस णं कतिवण्णे कतिगंधे कतिरसे कतिफासे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचवण्णे जहा कोहे तहेव। ५. अह

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भंते ! माया उवही नियडी वलये गहणे णूमे कक्के कुरूए जिम्हे किब्बिसे आयरणता गूहणया वंचणया पलिउंचणया सातिजोगे, एस णं कतिवण्णे कतिगंधे कतिरसे कतिफासे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचवण्णे जहेव कोहे। ६. अह भंते ! लोभे इच्छा मुच्छा कंखा गेही तण्हा भिज्झा अभिज्झा आसासणता पत्थणता लालप्पणता कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदिरागे, एस णं कतिवण्णे० ? जहेव कोहे। ७. अह भंते ! पेज्जे दोसे कलहे जाव मिच्छादंसणसल्ले, एस णं कतिवण्णे० ? जहेव कोहे तहेव जाव चउफासे। [सु. ८. पाणाइवायाईणं पंचण्हं वेरमणे कोहाईणं च तेरसण्हं विवेगे वण्ण-गंध-रस-फासअभावपरूवणं]८. अह भंते ! पाणातिवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पन्नत्ते ? गोयमा ! अवण्णे अगंधे अरसे अफासे पन्नत्ते। [सु. ९-१२. उप्पात्तियाईसु चउसु बुद्धीसु, चउसु उग्गाहाईसु, पंचसु उट्ठाणाईसु सत्तमे य ओवासंतरे वण्ण-गंध रस-फासअभावपरूवणं] ९. अह भंते ! उप्पत्तिया वेणइया कम्मया पारिणामिया, एस णं कतिवण्णा० ? तं चेव जाव अफासा पन्नत्ता। १०. अह भंते ! उग्गहे ईहा अवाये धारणा, एस णं कतिवण्णा० ? एवं चेव जाव अफासा पन्नत्ता। ११. अह भंते ! उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे, एस णं कतिवण्णे० ? तं चेव जाव अफासे पन्नत्ते। १२. सत्तमे णं भंते ! ओवासंतरे कतिवण्णे० ? एवं चेव जाव अफासे पन्नत्ते। [सु. १३-१४. सत्तमे तणुवाए घणवाए घणोदधिम्मि सत्तमाए य पुढवीए वण्ण-गंध-रस-फासपरूवणं]१३. सत्तमे णं भंते ! तणुवाए कतिवण्णे० ? जहा पाणातिवाए (सु. २) नवरं अट्ठफासे पन्नत्ते। १४. एवं जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए घणोदधी पुढवी। [सु. १५-१६. छट्ठे ओवासंतरे वण्णाईणं अभावो, छट्ठतणुवायाईसु सब्भावो य]१५. छट्ठे ओवासंतरे अवण्णे। १६. तणुवाए जाव छट्ठा पुढवी, एयाइं अट्ठ फासाइं। सु. १७. सत्तमपुढवि व्व सेसपुढवीणं वण्णाइपरूवणानिद्देसो १७. एवं जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्वं। [सु. १८. जंबुद्दीवाईसु वण्णादिपरूवणा]१८. जंबुद्दीवे जाव सयंभुरमणे समुद्दे, सोहम्मे कप्पे जाव ईसिपब्भारा पुढवी, नेरइयावासा जाव वेमाणियावासा, एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि। [सु. १९-२५. चउव्वीसदंडएसु वण्ण-गंध-रस-फासपरूवणं] १९. नेरइया णं भंते ! कतिवण्णा जाव कतिफासा पन्नत्ता ? गोयमा ! वेउव्विय-तेयाइं पडुच्च पंचवण्णा पंचरसा दुगंधा अट्ठफासा पन्नत्ता। कम्मगं पडुच्च पंचवण्णा पंचरसा दुगंधा चउफासा पन्नत्ता। जीवं पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पन्नत्ता। २०. एवं जाव थणियकुमारा। २१. पुढविकाइया णं पुच्छा। गोयमा ! ओरालिय-तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पन्नत्ता, कम्मगं पडुच्च जहा नेरइयाणं, जीवं पडुच्च तहेव। २२. एवं जाव चउरिंदिया, नवरं वाउकाइया ओरालिय-वेउव्वियतेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पन्नत्ता। सेसं जहा नेरइयाणं। २३. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा वाउकाइया। २४. मणुस्स णं० पुच्छा। ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पन्नत्ता। कम्मगं जीवं च पडुच्च जहा नेरइयाणं। २५. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा नेरइया। [सु. २६. धम्मत्थिकायाईसु वण्णइपरूवणं]२६. धम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए, एए सव्वे अवण्णा; नवरं पोग्गलत्थिकाए पंचवण्णे पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे पन्नत्ते। [सु. २७-२९. अट्ठसु कम्मेसु, छसु य लेसासु वण्णइपरूवणं]२७. नाणावरणिज्जे जाव अंतराइए, एयाणि चउफासाणि। २८. कण्हलेसा णं भंते ! कइवण्णा० पुच्छा। दव्वलेसं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पन्नत्ता। भावलेसं पडुच्च अवण्णा अरसा अगंधा अफासा। २९. एवं जाव सुक्कलेस्सा। [सु. ३०. तिसु सम्मद्दिट्ठिआईसु, चउसु दंसणेसु, पंचसु नाणेसु, तिसु अन्नाणेसु, आहाराईसु य चउसु सन्नासु वण्णाइअभावपरूवणं] ३०. सम्मद्दिट्ठि-मिच्छादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठी, चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदंसणे, आभिनिबोहियनाणे जाव विभंगनाणे, आहारसन्ना जाव परिग्गहसण्णा, एयाणि अवण्णाणि अरसाणि अगंधाणि अफासाणि। [सु. ३१. पंचसु सरीरेसु तिसु य जोगेसु वण्णाइपरूवणं]३१. ओरालियसरीरे जाव तेयगसरीरे, एयाणि अट्ठफासाणि। कम्मगसरीरे चउफासे। मणजोगे वइजोगे च चउफासे। कायजोगे अट्ठफासे। [सु. ३२. दोसु उवओगेसु वण्णाइअभावपरूवणं] ३२. सागारोवयोगे य अणागारोवयोगे य अवण्णा०। [सु. ३३-३४. सव्वदव्व-सव्वपदेस-सव्वपज्जवेसु वण्णाइसब्भाव-अभावपरूवणं]३३. सव्वदव्वा णं भंते ! कतिवण्णा० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पन्नत्ता। अत्थेगतिया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव चउफासा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पन्नत्ता। अत्थेगतिया सव्वदव्वा एगवण्णा एगगंधा एगरसा दुफासा पन्नत्ता। अत्थेगतिया सव्वदव्वा अवण्णा जाव अफासा पन्नत्ता। ३४. एवं सव्वपएसा वि, सव्वपज्जवा वि। सु. ३५. तिसु अद्धासु वण्णाइअभावपरूवणं ३५. तीयद्धा अवण्णा जाव अफासा पन्नत्ता। एवं अणागयद्धा वि। एवं सव्वद्धा वि। [सु. ३६. गब्भं वक्कममाणे जीवे वण्णादिपरूवणं] ३६. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे कतिवण्णं कतिगंधं कतिरसं कतिफासं परिणामं परिणमति ? गोयमा ! पंचवण्णं दुगंधं पंचरसं अट्ठफासं परिणामं परिणमति। [सु. ३७. जीवस्स विभत्तिभावे कम्महेउत्तपरूवणं] ३७. कम्मतो णं भंते ! जीवे, नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ, कम्मतो णं जए, नो अकम्मतो विभत्तिभावं परिणमइ ? हंता, गोयमा ! कम्मतो णं० तं चेव जाव परिणमइ, नो अकम्मतो विभत्तिभावं परिणमइ। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१२.५॥ **☆☆☆ छट्ठो उद्देसओ 'राहु' ☆☆☆** [सु. १. छट्ठुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वदासी [सु. २. राहुनाम-विमाणपरूवणं, दिसिं पडुच्च चंद-राहुदंसणपरूवणं, लोयपसिद्धाणं चंदसंबंधीणं गहण-कुच्छिभेय-वंत-वइचरिय-घत्थाणं च सरूवनिरूवणं] २. बहुजणे णं भंते ! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति जाव एवं परूवेइ 'एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ, एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ' से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जं णं से बहुजणे अन्नमन्नस्स जाव मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव एवं परूवेमि ''एवं खलु राहू देवे महिड्ढीए जाव महेसक्खे वरवत्थधरे वरमल्लधरे वरगंधधरे वराभरणधारी। ''राहुस्स णं देवस्स नव नामधेज्जा पन्नत्ता, तं जहा सिंघाडए १ जडिलए २ खवए ३ खरए ४ दद्दुरे ५ मगरे ६ मच्छे ७ कच्छभे ८ कण्हसप्पे ९। ''राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवण्णा पण्णत्ता, तं जहा किण्ह नीला लोहिया हालिद्दा सुक्किला। अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवण्णाभे, अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठवण्णाभे, अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि सुक्किलए राहुविमाणे भासारासिवण्णाभे पण्णत्ते। ''जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेसं पुरत्थिमेणं आवरेत्ताणं पच्चत्थिमेणं वीतीवयति तदा णं पुरत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, पच्चत्थिमेणं राहू। जदा णं राहू आगमच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स लेसं पच्चत्थिमेणं आवरेत्ताणं पुरत्थिमेणं वीतीवयति तदा णं पच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, पुरत्थिमेणं राहू। एवं जहा पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेण य दो आलावगा भणिया एवं दाहिणेणं उत्तरेणं य दो आलावगा भाणियव्वा। एवं उत्तरपुत्थिमेणं दाहिणपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा, दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा। एवं चेव जाव तदा णं उत्तरपच्चत्थिमेण चंदे उवदंसेति, दाहिणपुरत्थिमेणं राहू। ''जदा णं राहू आगमच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं आवरेमाणे आवरेमाणे चिट्ठति तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ, एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ। ''जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरेत्ताणं पासेणं वीईवयइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी भिन्ना, एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी भिन्ना। ''जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरेत्ताणं पच्चोसक्कइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति एवं खलु राहुणा चंदे वते, एवं खलु राहुणा चंदे वंते। ''जया णं राहू आगच्छमाणे वा ४ चंदलेस्सं आवरेत्ताणं मज्झंमज्झेणं वीतीवयति तदा णं मणुस्सा वंदति राहुणा चंदे वतिचरिए, राहुणा चंदे वतिचरिए। ''जदा णं राहू आगच्छमाणे वा जाव परियारेमाणे वा चंदलेस्सं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं आवरेत्ताणं चिट्ठति तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे खलु राहुणा चंदे घत्थे।'' [सु. ३. धुवराहु-पव्वराहुभेएणं राहुभेयजुयं, चंदस्स हाणि-वुड्ढिहेउपरूवणं च] ३. कतिविधे णं भंते ! राहू पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे राहू पन्नत्ते, तं जहा धुवराहू य पव्वराहू य। तत्थ णं जे से धुवराहू से णं बहुलपक्खस्स पाडिवए ग्रन्थाग्रम्र ८००० पन्नरसतिभागेणं पन्नरसतिभागं चंदस्स लेस्सं आवरेमाणे आवरेमाणे चिट्ठति, तं जहा पढमाए पढमं भागं, बितियाए बितियं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं। चरिमसमये चंदे रत्ते भवति, अवसेसे समये चंदे रत्ते वा विरत्ते वा भवति। तमेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे चिट्ठइ-पढमाए पढमं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरिमसमये चंदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समये चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ। तत्थ णं जे से पव्वराहू से जहन्नेणं छण्हं मासाणं; उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स, अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स। [सु. ४-५. ससि-सूरसद्दाणं विसिट्ठऽत्थनिरूवणं] ४. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ 'चंदे ससी'? गोयमा! चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो मियंके विमाणे, कंता देवा, कंताओ देवीओ, कंताइं आसण -सयण -खंभ -भंडमत्तोवगरणाइं, अप्पणा वि य णं चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया सोमे कंते सुभए पियदंसणे सुरूवे, सेतेरट्ठेणं जाव ससी। ५. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ 'सूरे अदिच्चे, सूरे आदिच्चे'? गोयमा! सूरादीया णं समया इ वा आवलिया इ वा जाव ओसप्पिणी इ वा, उस्सप्पिणी इ वा। सेतेणट्ठेणं जाव आदिच्चे। [सु. ६-७. चंद-सूराणं अग्गमहिसीनिरूवणं] ६. चंदस्स णं भंते! जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ? जहा दसमसए (स० १० उ० ५ सु० २७) जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं। ७. सूरस्स वि तहेव (स० १० उ० ५ सु० २८)। [सु. ८. चंद-सूराणं कामभोगाणुभवनिरूवणं] ८. चंदिम-सूरिया णं भंते! जोतिसिंदा जोतिसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति? गोयमा! से जहानामए केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थाए भारियाए सद्धिं अचिरवत्तविवाहकज्जे अत्थगवेसणाए सोलसवासविप्पवासिए, से णं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि नियगं गिहं व्वमागते ण्हाते कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए मणुण्णं थालिपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाकुलं भोयणं भुत्ते समाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि; वण्णओ० महब्बले (स० ११ उ० ११ सु० २३) जाव सयणोवयारकलिए ताए तारिसियाए भारियाए सिंगारागारचारुवेसाए जाव कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणाणुकूलाए सद्धिं इट्ठे सद्दे फरिसे जाव पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरेज्जा, से णं गोयमा! पुरिसे विओसमणकालसमयंकिरिसयं सातासोक्खं पच्चणुभवमाणे विहरति? 'ओरालं समणाउसो!' तस्स णं गोयमा! पुरिसस्स कामभोएहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। असुरिंदवज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरकुमाराणं (इंदभूयाणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। असुरकुमाराणं० देवाणं कामभोगेहिंतो गहगणपक्खत्त -तारारूवाणं जोतिसियाणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। गहगण -नक्खत्त जाव कामभोगेहिंतो चंदिम -सूरियाणं जोतिसियाणं जोतिसराईणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। चंदिम -सूरिया णं गोतमा! जोतिसिंदा जोतिसरायाणो एरिसे कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव विहरति। ॥१२.६॥ ☆☆☆ **सत्तमो उद्देसओ 'लोगे'** ☆☆☆ [सु. १. सत्तमुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी [सु. २. लोगपमाणपरूवणं] २. केमहालए णं भंते! लोए पन्नत्ते? गोयमा! महतिमहालए लोए पन्नत्ते; पुरत्थिमेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ, दाहिणेणं असंखिज्जाओ एवं चेव, एवं पच्चत्थिमेण वि, एवं उत्तरेण वि, एवं उड्ढं पि, अहे असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खंभेणं। [सु. ३. उदाहरणपुव्वयं लोगगयपत्तेयपरमाणुपएसे जीवस्स जम्म -मरणपरूवणं] ३. (१) एयंसि णं भंते! एमहालयंसि लोगंसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि? गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ 'एयंसि णं एमहालयंसि लोगंसि नत्थि केयी परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जत्थ णं अयं जीवे ण जाए वा न मए वावि'? गोयमा! से जहानामए केयि पुरिसे अयासयस्स एगं महं अयावयं करेज्जा; से णं तत्थ जहन्नेणं एक्कं वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं अयासहस्सं पक्खिवेज्जा; ताओ णं तत्थ पउरगोयराओ पउरपाणियाओ जहन्नेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा, उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा, अत्थि णं गोयमा! तस्स अयावयस्स केयि परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जे णं तासिं अयाणं उच्चारेण वा पासवणेण वा खेलेण वा सिंघाणएण वा वंतेण वा पित्तेण वा पूएण वा सुक्केण वा सोणिएण वा चम्मेहि वा रोमेहि वा सिंगेहि वा खूरेहिं वा नहेहिं वा अणोक्कंतपुव्वे भवति? 'णो इणट्ठे समट्ठे'। होज्जा वि णं गोयमा! तस्स अयावयस्स केयि परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जे णं तासिं अयाणं उच्चारेण वा जाव नहेहिं वा अणोक्कंतपुव्वे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नो चेव णं एयंसि एमहालयंसि लोगंसि लोगस्स य सासयभावं, संसारस्स य अणादिभावं, जीवस्स य निच्चभावं कम्मबहुत्तं जम्मण-मरणबाहुल्लं च पडुच्च नत्थि केयि परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि। से तेणट्ठेणं तं चेव जाव न मए वा वि। [सु. ४. चउवीसइदंडयगयआवाससंखाजाणणत्थं पढमसयावलोयणनिद्देसो] ४. कति णं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पन्नत्ताओ, जहा पढमसए पंचमउद्देसए (स० १ उ० ५ सु० १-५) तहेव आवासा ठावेयव्वा जाव अणुत्तरविमाणे त्ति जाव अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे। [सु. ५-१९. जीव-सव्वजीवाणं चउवीसइदंडएसु अणंतसो उववन्नपुव्वत्तपरूवणं] ५. (१) अयं णं भंते ! जीवे इमीसे रतणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि पुढविकायइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए नरगत्ताए नेरइयत्ताए उव्ववन्नपुव्वे ? हंता, गोतमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो। (२) सव्वजीवा वि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरया० तं चेव जाव अणंतखुत्तो। ६. अयं णं भंते ! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणवीसाए० एवं जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा। एवं जाव धूमप्पभाए। ७. अयं णं भंते ! जीवे तमाए पुढवीए पंचूणे निरयावाससयसहस्से एगमेगंसि९ सेसं तं चेव। ८. अयं णं भंते ! जीवे अहेसत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महानिरएसु एगमेगंसि निरयावसंसि० सेसं जहा रयणप्पभाए। ९. (१) अयं णं भंते ! जीवे चोयट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावासंसि पुढविकात्तयत्ताए जाव वणस्सत्काइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए आसण -सयण -भंडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता, गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो। (२) सव्वजीवा वि णं भंते !० एवं चेव। १०. एवं जाव थणियकुमारेसु नाणत्तं आवासेसु, आवासा पुव्वभणिया। ११. (१) अयं णं भंते ! जीवे असंखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविकाइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वण्सतिकाइयत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता, गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो। (२) एवं सव्वजीवा वि। १२. एवं जाव वणस्सत्काइएसु। १३. (१) अयं णं भंते ! जीवे असंखेज्जेसु बेंदियावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि बेंदियावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सतिकाइयत्ताए बेंदियत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता, गोयमा ! जाव खुत्तो। (२) सव्वजीवा वि णं० एवं चेव। १४. एवं जाव मणुस्सेसु। नवरं तेंदिएसु जाव वणस्सतिकाइयत्ताएतेंदियत्ताए, चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए० सेसं जहा बेंदियाणं। १५. वाणमंतर-जोतिसिय-सोहम्मीसाणे [?सु] य जहा असुर-कुमाराणं। १६. (१) अयं णं भंते ! जीवे सणंकुमारे कप्पे बारससु विमाणावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि वेमाणियावासंसि पुढविकायत्ताए० सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव अणंतखुत्तो। नो चेव णं देवित्ताए। (२) एवं सव्वजीवा वि। १७. एवं जाव आणय-पाणएसु। एवं आरणच्चुएसु वि। १८. अयं णं भंते ! जीवे तिसु वि अट्ठारसुत्तरेसु गेवेज्जविमाणावाससएसु० एवं चेव। १९. (१) अयं णं भंते ! जीवे पंचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तरविमाणंसि पुढवि० तहेव जाव अणंतखुत्तो, नो चेव णं देवत्ताए वा, देवित्ताए वा। (२) एवं सव्वजीवा वि। [सु. २०-२३. जीव-सव्वजीवाणं मायाइ-सत्तुआइ-रायाइ दासाइभावेहिं अणंतसो उववन्नपुव्वत्तपरूवणं] २०. (१) अयं णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए पितित्ताए भाइत्ताए भगिणित्ताए भज्जत्ताए पुत्तत्ताए धूयत्ताए सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता, गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो। (२) सव्वजीवा णं भंते ! इमस्स जीवस्स माइत्ताए जाव उववन्नपुव्वा ? हंता, गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो। २१. (१) अयं णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए वेरियत्ताए घायत्ताए वहत्ताए पडिणीयत्ताए पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता, गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो। (२) सव्वजीवा वि णं भंते ! ० एवं चेव। २२. (१) अयं णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए जुगरायत्ताए जाव सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता, गोयमा ! असइं जाव अणंतखुत्तो। (२) सव्वजीवा णं० एवं चेव। २३. (१) अयं णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं दासत्ताए पेसत्ताए भयगत्ताए भाइल्लत्ताए भोगपुरिसत्ताए सीसत्ताए वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता, गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो। (२) एवं सव्वजीवा वि अणंखुत्तो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति। ।।१२.७।। ☆☆☆**अट्ठमो उद्देसओ 'नागे'**☆☆☆ [सु. १. अट्ठमुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी [सु. २-४. महड्ढियदेवस्स नाग-मणि-रुक्खेसु उववाओ, सफलसेवत्तं, तयणंतरभवाओ य सिज्झणा] २. (१) देवे णं भंते ! महड्ढीए जाव महेसक्खे अणंतरं चइत्ता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बिसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा ? हंता, उववज्जेज्जा। (२) से णं तत्थ अच्चियवंदियपूइयसक्कारियसम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे यावि भवेज्जा ? हंता, भवेज्जा। (३) से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा बुज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा ? हंता, सिज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा। ३. देवे णं भंते ! महड्ढीए एवं चेव जाव बिसरीरेसु मणीसु उववज्जेज्जा? एवं चेव जहा नागाणं। ४. देवे णं भंते! महड्ढीए जाव बिसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा ? हंता, उववज्जेज्जा। एवं चेव। नवरं इमं नाणत्तं जाव सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिते यावि भवेज्जा ? हंता, भवेज्जा। सेसं तं चेव जाव अंतं करेज्जा। [सु. ५-७. निस्सीलाईणं वानराइ-सीहाइ-ढंकाईणं नरगगामित्तनिरूवणं] ५. अह भंते ! गोलंगूवसभे कुक्कुडवसभे मंडुक्कवसभे, एए णं निस्सीला निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोमट्ठितीयंसि नरगंसि नेरतियत्ताए उववज्जेज्जा ? समणे भगवं महावीरे वागरेति 'उववज्जमाणे उववन्ने' त्ति वत्तव्वं सिया। ६. अह भंते ! सीहे वग्घे जहा ओसप्पिणिउद्देसए (सु० ७ उ० ६ सु० ३६) जाव परस्सरे, एए णं निस्सीला० एवं चेव जाव वत्तव्वं सिया। ७. अह भंते ! ढंके कंके विलए मुद्दए सिखी, एते णं निस्सीला० सेसं तं चेव जाव वत्तव्वं सिया। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ। ॥१२.८॥ ☆☆☆ **नवमो उद्देसओ 'देव'** ☆☆☆ [सु. १. भवियदव्वदेवाइभेएणं देवाणं पंच भेया] १. कतिविहा णं भंते ! देवा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा देवा पन्नत्ता, तं जहा भवियदव्वदेवा १ नरदेवा २ धम्मदेवा ३ देवातिदेवा ४ भावदेवा ५। [सु. २-६. भवियदव्वदेवाइपंचविहदेवसरूवपरूवणं] २. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'भवियदव्वदेवा, भवियदव्वदेवा' ? गोयमा ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवेसु उववज्जित्तए, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ 'भवियदव्वदेवा, भवियदव्वदेवा'। ३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'नरदेवा, नरदेवा' ? गोयमा ! जे इमे रायाणो चाउरंतचक्कवट्टी उप्पन्नसमत्तचक्करयणप्पहाणा नवनिहिपतिणो समिद्धकोसा बत्तीसंरायवरसहस्साणुयातमग्गा सागरवरमेहलाहिपतिणो मणुस्सिंदा, से तेणट्ठेणं जाव 'नरदेवा, नरदेवा'। ४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'धम्मदेवा, धम्मदेवा' ? गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवंतो रियासमिया जाव गुत्तबंभचारी, सेतेणट्ठेणं जाव 'धम्मदेवा, धम्मदेवा'। ५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'देवातिदेवा, देवातिदेवा' ? गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंता उप्पन्ननाण-दंसणधरा जाव सव्वदरिसी, सेतेणट्ठेणं जाव 'देवातिदेवा, देवातिदेवा'। ६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'भावदेवा, भावदेवा' ? गोयमा ! जे इमे भवणवति-वाणमंतर -जोतिस-वेमाणिया देवा देवगतिनाम-गोयाइं कम्माइं वेदेंति, से तेणट्ठेणं जाव 'भावदेवा, भावदेवा'। [सु. ७-११. भवियदव्वदेवाइपंचविहदेवाणं उववायवत्तव्वया] ७. भवियदव्वदेवा णं भंते ! कओहिंओ उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरि-मणु-देवेहिंतो वि उववज्जंति। भेदो जहा वक्कंतीए। सव्वेसु उववातेयव्वा जाव अणुत्तरोववातिय त्ति। नवरं असंखेज्जवासाउय-अकम्मभूमगअंतरदीवग-सव्वट्ठसिद्धवज्जं जाव अपराजियदेवेहिंतो वि उववज्जंति, णो सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतो उववज्जंति। ८. (१) नरदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरतिय० पुच्छा। गोयमा ! नेरतिएहिंतो उववज्जंति, नो तिरि०, नो मणु०, देवेहिंतो वि उववज्जंति। (२) जदि नेरतिएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभापुढविनेरतिएहिंतो उववज्जंति जाव अहेसत्तमापुढविनेरतिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरतिएहिंतो उववज्जंति, नो सक्कर० जाव नो अहेसत्तमपुढविनेरतिएहिंतो उववज्जंति। (३) जइ देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति, वाणमंतर-जोतिसिय -वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जंति, वाणमंतर०, एवं सव्वदेवेसु उववाएयव्वा वक्कंतीभेदेणं जाव सव्वट्ठसिद्ध त्ति। ९. धम्मदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं नेरतिएहिंतो ? एवं वक्कंतीभेदेणं सव्वेसु उववाएयव्वा जाव सव्वट्ठसिद्ध त्ति। नवरं तमा-अहेसत्तमा-तेउ-वाउ-असंखेज्जावासाउय-अकम्मभूमग-अंतरदीवगवज्जेसु। १०. (१) देवातिदेवा णं भंते ! कतोहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ?० पुच्छा। गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, नो तिरि०, नो मणु०, देवहिंतो वि उववज्जंति। (२) जति नेरतिएहिंतो० एवं तिसु पुढविसु उववज्जंति, सेसाओ खोडेयव्वाओ। (३) जदि देवेहिंतो०, वेमाणिएसु

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्ध त्ति। सेसा खोडेयव्वा। ११. भावदेवा णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति ?० एवं जहा वक्कंतीए भवणवासीणं उववातो तहा भाणियव्वं। [सु. १२-१६. भवियदव्वदेवाइपंचविहदेवाणं ठिइपरूवणं] १२. भवियदव्वदेवाणं भंते! केवतियं कोलं ठिती पन्नत्ता ? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। १३. नरदेवाणं० पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सत्त वाससयाइं, उक्कोसेणं चउरासीतिं पुव्वसयसहस्साइं। १४. धम्मदेवाणं भंते! पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। १५. देवातिदेवाणं० पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं बावत्तरिं वासाइं, उक्कोसेणं चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं। १६. भावदेवाणं० पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। [सु. १७-२०. भवियदेव्वदेवाइपंचविहदेवाणं विउव्वणापरूवणा] १७. भवियदव्वदेवा णं भंते! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए, पुहत्तं पि पभू विउव्वित्तए ? गोयमा! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहत्तं पि पभू विउव्वित्तए। एगत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवं जाव पंचिंदियरूवं वा, पुहत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवाणि वा जाव पंचिंदियरूवाणि वा। ताइं संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा, संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा, सरिसाणि वा असरिसाणि वा विउव्वंति, विउव्वित्ता तओ पच्छा जहिच्छियाइं कज्जाइं करेंति। १८. एवं नरदेवा वि, धम्मदेवा वि। १९. देवातिदेवा णं० पुच्छा। गोयमा! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहत्तं पि पभू विउव्वित्तए, नो चेव णं संपत्तीए विउव्विंसु वा, विउव्वंति वा, विउव्विस्संति वा। २०. भावदेवा जहा भवियदव्वदेवा। [सु. २१-२५. भवियदव्वदेवाइपंचविहदेवाणं उव्वट्टणापरूवणं] २१. (१) भवियदेव्वदेवा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ? किं नेरइएसु उववज्जंति, जाव देवेसु उववज्जंति ? गोयमा! नो नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरि०, नो मणु, देवेसु उववज्जंति। (२) जइ देवेसु उववज्जंति० ? सव्वदेवेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्ध त्ति। २२. (१) नरदेवा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता० पुच्छा। गोयमा! नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरि०, नो मणु०, नो देवेसु उववज्जंति। (२) जइ नेरइएसु उववज्जंति, सत्तसु वि पुढवीसु उववज्जंति। २३. (१) धम्मदेवा णं भंते! अणंतरं० पुच्छा। गोयमा! नो नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरि०, नो मणु०, देवेसु उववज्जंति। (२) जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासि० पुच्छा। गोयमा! नो भवणवासिदेवेसु उववज्जंति, नो वाणमंतर०, नो जोतिसिय०, वेमाणियदेवेसु उववज्जंति -सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धअणु० जाव उववज्जंति। अत्थेगइया सिज्झंति जाव अंतं करेंति। २४. देवातिदेवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ? गोयमा! सिज्झंति जाव अंतं करेंति। २५. भावदेवा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा। जहा वक्कंतीए असुरकुमाराणं उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा। [सु. २६. भवियदव्वदेवाइपंचविहदेवाणं अणुबंधपरूवणं] २६. भवियदव्वदेवे णं भंते! 'भवियदव्वदेवे' त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। एवं जच्चेव ठिई सच्चेव संचिट्ठणा वि जाव भावदेवस्स। नवरं धम्मदेवस्स जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। [सु. २७-३१. भवियदव्वदेवाइपंचविहदेवाणं अंतरपरूवणं] २७. भवियदव्वदेवस्स णं भंते! केवतियं कालं अंतरं होति ! गोयमा! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालंवणस्सतिकालो। २८. नरदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सातिरेगं सागरावमं, उक्कोसेणं अणंतं कालं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं। २९. धम्मदेवस्स णं० पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं पलिओवमपुहत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं। ३०. देवातिदेवाणं पुच्छा। गोयमा! नत्थि अंतरं। ३१. भावदेवस्स णं० पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-वणस्सतिकालो। [सु. ३२. भवियदव्वदेवाइपंचविहदेवाणं अप्पाबहुयं] ३२. एएसि णं भंते! भवियदव्वदेवाणं नरदेवाणं जाव भावदेवाणं य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा! सव्वत्थोवा नरदेवा, देवातिदेवा संखेज्जगुणा, धम्मदेवा संखेज्जगुणा, भवियदव्वदेवा असंखेज्जगुणा, भावदेवा असंखेज्जगुणा। [सु. ३३. भवणवासिआईणं भावदेवाणं अप्पाबहुयं] ३३. एएसि णं भंते! भावदेवाणं-भवणवासीणं वाणमंतराणं जोतिसियाणं, वेमाणियाणं-सोहम्मगाणं जाव अच्चुतगाणं, गेवेज्जगाणं अणुत्तरोववाइयाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववातिया भावदेवा, उवरिमगेवेज्जा भावदेवा संखेज्जगुणा, जाव आणते कप्पे देवा संखेज्जगुणा एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं जाव जोतिसिया भावदेवा असंखेज्जगुणा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥बारसमसयस्स नवमो ॥ १२.९ ॥☆☆☆ दसमो उद्देसओ 'आता'☆☆☆ [सु. १. आयाए अट्ठभेया] १. कतिविधा णं भंते ! आता पन्नत्ता ? गोयमा ! अट्ठविहा आता पन्नत्ता, तं जहा दवियाया कसायाया जोगाया उवयोगाता णाणाया दंसणाया चरित्ताया वीरियाया। [सु. २-८. दवियायाईण अट्ठण्हं परोप्परं सहभाव -असहभावनिरूवणं] २. (१) जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स कसायाया, जस्स कसायाया तस्स दवियाया ? गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स कसायाता सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि। (२) जस्स णं भंते ! दवियाता तस्स जोगाया० ? एवं जहा दवियाया य कसायाता य भणिया तहा दवियाया य जोगाया य भाणियव्वा। (३) जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स उवयोगाया० ? एवं सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा। जस्स दवियाया तस्स उवयोगाया नियमं अत्थि, जस्स वि उवयोगाया तस्स वि दवियाया नियमं अत्थि। जस्स दवियाया तस्स नाणाया भयणाए, जस्स पुण नाणाया तस्स दवियाता नियमं अत्थि। जस्स दवियाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स वि दंसणाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि। जस्स दवियाया तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताया तस्स दवियाया नियमं अत्थि। एवं वीरियायाए वि समं। ३. (१) जस्स णं भंते ! कसायाया तस्स जोगाया० पुच्छा। गोयमा ! जस्स कसायाता तस्स जोगाया नियमं अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि। (२) एवं उवयोगायाए वि समं कसायाता नेयव्वा। (३) कसायाया य नाणाया य परोप्परं दो वि भइयव्वाओ। (४) जहा कसायाया य उवयोगाया य तहा कसायाया य दंसणाया य। ५ कसायाया य चरित्ताया य दो वि परोप्परं भइयव्वाओ। (६) जहा कसायाया य जोगाया य तहा कसायाया य वीरियाया य भाणियव्वाओ। ४. एवं जहा कसायाताए वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाए वि उवरिमाहिं समं भाणियव्वा। ५. जहा दवियायाए वत्तव्वया भणिया तहा उवयोगायाए वि उवरिल्लाहिं समं भणियव्वा। ६. (१) जस्स नाणाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स पुण दंसणाया तस्स णाणाया भयणाए। (२) जस्स नाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण चरित्ताया तस्स नाणाया नियमं अत्थि। (३) णाणाया य वीरियाया य दो वि परोप्परं भयणाए। ७. जस्स दंसणाया तस्स उवरिमाओ दो वि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दंसणाया नियमं अत्थि। ८. जस्स चरित्ताया तस्स वीरियाया नियमं अत्थि, जस्स पुण वीरियाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि। [सु. ९. अट्ठविहाणं आयाणं अप्पाबहुयं] ९. एयासि णं भंते ! दवियायाणं कसायाणं जाव वीरियायाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ चरित्तायाओ, नाणायाओ अणंतगुणाओ, कसायायाओ अणंतगुणाओ, जोगायाओ विसेसाहियाओ, वीरियायाओ विसेसाहियाओ, उययोग-दविय-दंसणायाओ तिण्णि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ। [सु. १०. नाणं पडुच्च आयसरूवनिरूवणं]१०. आया भंते ! नाणे, अन्ने नाणे ? गोयमा ! आया सिय नाणे, सिय अन्नाणे, णाणे पुण नियमं आया। [सु. ११-१५. चउवीसइदंडएसु नाणं पडुच्च आयनिरूवणं]११. आया भंते ! नेरइयाणं नाणे, अन्ने नेरइयाणं नाणे ? गोयमा ! आया नेरइयाणं सिय अन्नाणे, नाणे पुण से नियमं आया। १२. एवं जाव तणियकुमाराणं। १३. आया भंते ! पुढविकाइयाणं अन्नाणे, अन्ने पुढविकाइयाणं अन्नाणे ? गोयमा ! आया पुढविकाइयाणं नियमं अन्नाणे, अण्णाणे वि नियमं आया। १४. एवं जाव वणस्सतिकाइयाणं। १५. बेइंदिय-तेइदिय० जाव वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं। [सु. १६. दसणं पडुच्च आयसरूवनिरूवणं] १६. आया भंते ! दंसणे, अन्ने दंसणे ? गोयमा ! आया नियमं दंसणे, दंसणे वि नियमं आया। [सु. १७-१८. चउवीसदंडएसु दंसणं पडुच्च आयनिरूवणं]१७. आया भंते ! नेरइयाणं दंसणे, अन्ने नेरइयाणं दंसणे ? गोयमा ! आया नेरइयाणं नियमं दंसणे, दंसणे वि से नियमं आया। १८. एवं जाव वेमाणियाणं निरंतरं दंडओ। [सु. १९-२१. रयणप्पभाइपुढवीभावाणं अत्तत्तादिभावेण परामरिसो]१९. (१) आया भंते ! रयणप्पभा पुढवी, अन्ना रयणप्पभा पुढवी ? गोयमा ! रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नो आया, सिय अवत्तव्वं-आया ति य, नो आता ति य। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'रयणप्पभा पुढवी सिय आता, सिय नो आया, सिय अवत्तव्वं-आता ति य, नो आया ति य' ? गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे नो आता, तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं-रयणप्पभा पुढवी आया ति य, नो आया ति य। सेतेणट्ठेणं तं चेव जाव नो आया ति य। २०. आया भंते ! सक्करप्पभा पुढवी ?० जहा रयणप्पभा पुढवी तहा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सक्करप्पभा वि। २१. एवं जाव अहेसत्तमा। [सु. २२-२३. सोहम्मकप्पाइअच्चुयकप्पपज्जंतभावाणं अत्तंत्तादिभावेण परामरिसो] २२. (१) आया भंते ! सोहम्मे, कप्पे ?० पुच्छा। गोयमा ! सोहम्मे कप्पे सिय आया, सिय नो आया, जाव नो आया ति य। (२) से केणट्ठेणं भंते ! जाव नो आया ति य ? गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे नो आया, तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं-आता ति य, नो आया ति य। सेतणट्ठेणं तं चेव जाव नो आया ति य। २३. एवं जाव अच्चुए कप्पे। [सु. २४-२६. गेवेज्जविमाण-अणुत्तरविमाण-ईसिपब्भाराभावाणं अत्तत्ताइभावेण परामरिसो] २४. आया भंते ! गेवेज्जविमाणे, अन्ने गेवेज्जविमाणे ? एवं जहा रयणप्पभा तहेव। २५. एवं अणुत्तरविमाणा वि। २६. एवं ईसिपब्भारा वि। [सु. २७-३३. परमाणुपोग्गल-दुपएसियाइअणंतपएसियखंधपज्जंतभावाणं अत्तत्ताइभावेण परामरिसो] २७. आया भंते ! परमाणुपोग्गले, अन्ने परमाणुपोग्गले ? एवं जहा सोहम्मे तहा परमाणुपोग्गले वि भाणियव्वे। २८. (१) आया भंते ! दुपदेसिए खंधे, अन्ने दुपएसिए खंधे ? गोयमा ! दुपएसिए खंधे सिय आया १, सिय नो आया २, सिय अवत्तव्वं-आया ति य नो आया ति य ३, सिय आया य नो आया य ४, सिय आया य अवत्तव्वं-आया ति य नो आया ति य ५, सिय नो आया य अवत्तव्वं-आया ति य नो आया ति य ६। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं० तं चेव जाव नो आया य, अवत्तव्वं-आया ति य नो आया ति य ? गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया १; परस्स आदिट्ठे नो आया २; तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं-दुपएसिए खंधे आया ति य, नो आया ति य ३; देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे दुपदेसिए खंधे आया य नो आया य ४; देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंधे आया य, अवत्तव्वं-आया ति य नो आया ति य ५; देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंधे नो आया य, अवत्तव्वं-आता ति य नो आया ति य ६। से तेणट्ठेणं तं चेव जाव नो आया ति य। २९. (१) आया भंते ! तिपएसिए खंधे, अन्ने तिपएसिए खंधे ? गोयमा ! तिपएसिए खंधे सिय आया १, सिय नो आया २, सिय अवत्तव्वंआता ति य नो आता ति य ३, सिय आया य नो आया य ४, सिय आया य नो आयाओ य ५, सिय आयाओ य नो आया य ६, सिय आया य अवत्तव्वंआया ति य नो आया ति य ७, सिय आया य अवत्तव्वाइं-आयाओ य नो आयाओ य ८, सिय आयाओ य अवत्तव्वं-आया ति य नो आया ति य ९, सिय नो आया य अवत्तव्वं-आया ति य नो आया ति य १०, सिय नो आया य अवत्तव्वाइं-आयाओ य नो आयाओ य ११, सिय नो आयाओ य अवत्तव्वं-आया ति य नो आया ति य १२, सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं-आया ति य नो आता ति य १३। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'तिपएसिए खंधे सिय आया य० एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं-आया ति य नो आया ति य ? गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया १; परस्स आइट्ठे नो आया २; तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आया ति य नो आया ति य३; देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे तिपदेसिए खंधे आया य नो आया य ४; देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य नो आयाओ य ५; देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाओ य नो आया य ६; देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं आया इ य नो आया ति य ७; देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य ८; देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा, देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाओ य अवत्थव्वं- आया ति य नो ति य ९; एए तिण्णि भंगा। देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे नो आया य अवत्तव्वं -आया ति य नो आया ति य १०; देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे, देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे नो आया य अवत्तव्वाइं- आयाओ य नो आयाओ य ११; देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा, देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे नो आयओ य अवत्तव्वं- आया ति य नो आया ति य १२; देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य नो आया य अवत्तव्वं आया य नो आया ति य १३। सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ तिपएसिए खंधे सिय आया० तं चेव जाव नो आया ति य। ३०. (१) आया भंते ! चउप्पएसिए खंधे, अन्ने० पुच्छा। गोयमा ! चउप्पएखिंधे सिय आया १, सिय नो आया २, सिय अवत्तव्वं -आया ति य नो आया

Jain Education International 2010_03   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

ति य ३, सिय आया य नो आया य ४-७, सिय आया य अवत्तव्वं ८-११, सिय नो आया य अवत्तव्वं १२-१५, सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं आया ति य नो आया ति य १६, सिय आया य नो आया य अवत्तव्वाइं -आयाओ य नो आयाओ १७, सिय आया य नो आयाओ य अवत्तव्वं -आया ति य नो आया ति य १८, सिय आयाओ य नो आया य अवत्तव्वं -आया ति य नो आया ति य १९। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ चउप्पएसिए खंधे सिय आया य, नो आया य, अवत्तव्वं० तं चेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्वं। गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया १, परस्स आदिट्ठे नो आया २, तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं० ३, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे अब्भावपज्जवे चउभंगो, सब्भावपज्जवेणं तदुभयेण य चउभंगो, असब्भावेणं तदुभयेण य चउभंगो; देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य, नो आया य, अवत्तव्वं आया ति य नो आया ति य; देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे, देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खंधे आया य, नो आया य, अवत्तव्वाइं- आयाओ य नो आयाओ य १७, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा, देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पए सिए खंधे आया य, नो आयाओ य, अवत्तव्वं आया ति य नो आया ति य १८, देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा, देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आताओ य, नो आया य, अवत्तव्वं-आया ति य नो आया ति य १९। सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ चउप्पएसिए खंधे सिय आया, सिय नो आया, सिय अवत्तव्वं। निक्खेवे ते चेव भंगा उच्चारेयव्वा जाव नो आया ति य। ३१. (१) आया भंते ! पंचपएसिए खंधे, अन्ने पंचपएसिए खंधे ? गोयमा ! पंचपएसिए खंधे सिय आया १, सिय नो आया २, सिय अवत्तव्वं आया ति य नो आया ति य ३, सिय आया य नो आया य ४-७, सिय आया य अवत्तव्वं ८-११, नो आया य आया-अवत्तव्वेण य १२-१५, तियगसंजोगे एक्को ण पडइ १६-२२। २ से केणट्ठेणं भंते !० तं चेव पडिउच्चारेयव्वं। गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया १, परस्स आदिट्ठे नो आया २, तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं० ३, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे, एवं दुयगसंजोगे सव्वे पडंति। तियसंजोगे एक्को ण पडइ। ३२. छप्पएसियस्स सव्वे पडंति। ३३. जहा छप्पएसिए एवं जाव अणंतपएसिए। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति। ॥१२.१०॥ ॥बारसमं सयं समत्तं ॥१२॥

तेरसमं सयं

[सु. १. तेरसमयस्स उद्देसनामपरूवणा] १. पुढवी १ देव २ मणंतर ३ पुढवी ४ आहारमेव ५ उववाए ६। भासा ७ कम्म ८ ऽणगारे केयाघडिया ९ समुग्घाए १०॥

☆☆☆ पढमो उद्देसओ 'पुढवी' ☆☆☆

[सु. २. पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ] २. रायगिहे जाव एवं वयासी [सु. ३. सत्तपुढवीनामपरूवणा] ३. कति णं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पन्नत्ताओ, तं जहा रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा। [सु. ४-५. रयणप्पभापुढवीनिरयावासाणं संखा संखेज्ज-असंखेज्जवित्थडत्तं च] ४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता। ५. ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि। [सु. ६. रयणप्पभापुढवीए संखेज्जवित्थडेसु निरयावासेसु उववन्नगाणं नारयाणं एगसमओववायसंखाइअणागारोवउत्तोववायसंखाविसयाणं एगूणचत्तालाणं पण्हाणं समाहाणं] ६. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवतिया नेरइया उववज्जंति ? १, केवतिया काउलेस्सा उववज्जंति ? २, केवतिया कण्हपक्खिया उववज्जंति ? ३, केवतिया सुक्कपक्खिया उववज्जंति ? ४, केवतिया सन्नी उववज्जंति ? ५, केवतिया असन्नी उववज्जंति ? ६, केवतिया भवसिद्धिया उववज्जंति ? ७, केवतिया अभवसिद्धिया उववज्जंति ? ८, केवतिया आभिणिबोहियनाणी उववज्जंति ? ९, केवतिया सुयनाणी उववज्जंति ? १०, केवतिया ओहिनाणी उववज्जंति ? ११, केवतिया मतिअन्नाणी उववज्जंति ? १२, केवतिया सुयअन्नाणी उववज्जंति ? १३, केवतिया विभंगनाणी उववज्जंति ? १४, केवतिया चक्खुदंसणी उववज्जंति ? १५, केवतिया अचक्खुदंसणी उववज्जंति ? १६, केवतिया ओहिदंसणी उववज्जंति ? १७, केवतिया आहारसण्णोवउत्ता उववज्जंति ? १८, केवतिया भयसण्णोवउत्ता

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उववज्जंति ? १९, केवतिया मेहुणसण्णोवउत्ता उववज्जंति ? २०, केवतिया परिग्गहसण्णोवउत्ता उववज्जंति ? २१, केवतिया इत्थिवेदगा उववज्जंति ? २२, केवतिया पुरिसवेदगा उववज्जंति ? २३, केवतिया नपुंसगवेदगा उववज्जंति ? २४, केवतिया कोहकसाई उववज्जंति ? २५, जाव केवतिया लोभकसायी उववज्जंति ? २६-२८, केवतिया सोतिंदियोवउत्ता उववज्जंति ? २९, जाव केवतिया फासिंदियोवउत्ता उववज्जंति ? ३०-३३, केवतिया नोइंदियोवउत्ता उववज्जंति ? ३४, केवतिया मणजोगी उववज्जंति ? ३५, केवतिया वइजोगी उववज्जंति ? ३६, केवतिया कायजोगी उववज्जंति ? ३७, केवतिया सागरोवउत्ता उववज्जंति ? ३८, केवतिया अणागारोवउत्ता उववज्जंति ? ३९ ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उववज्जंति १ । जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उववज्जंति २ । जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जंति ३ । एवं सुक्कपक्खिया वि ४ । एवं सन्नी ५ । एवं असण्णी ६ । एवं भवसिद्धिया ७ । एवं अभवसिद्धिया ८, आभिणिबोहिनाणी ९, सुयनाणी १०, ओहिनाणी ११, मतिअन्नाणी १२, सुयअन्नाणी १३, विभंगनाणी १४ । चक्खुदंसणी न उववज्जंति १५ । जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उववज्जंति १६ । एवं ओहिदंसणी वि १७, आहारसण्णोवउत्ता वि १८, जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता वि १९-२०-२१ । इत्थिवेदगा न उववज्जंति २२ । पुरिसवेदगा वि न उववज्जंति २३ । जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जानपुंसगवेदगा उववज्जंति २४ । एवं कोहकसायी जाव लोभकसायी २५-२८ । सोतिंदियोवउत्ता न उववज्जंति २९ । एवं जाव फासिंदियोवउत्ता न उववज्जंति ३०-३३ । जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नोइंदियोवउत्ता उववज्जंति ३४ । मणजोगी ण उववज्जंति ३५ । एवं वइजोगी वि ३६ । जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उववज्जंति ३७ । एवं सागरोवउत्ता वि ३८ । एवं अणागारोवउत्ता वि ३९ । [सु. ७. छट्ठसुत्तुत्ताणं एगूणचत्तालाणं पण्हाणं उव्वट्टणं पडुच्च समाहाणं] ७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवतिया नेरइया उव्वट्टंति ? १, केवतिया काउलेस्सा उव्वट्टंति ? २, जाव केवतिया अणागारोवउत्ता उव्वट्टंति ? ३९ । गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमयेणं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उव्वट्टंति १ । जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जाकाउलेस्सा उव्वट्टंति २ । एवं जाव सण्णी ३-४-५ । असण्णी ण उव्वट्टंति ६ । जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा भवसिद्धीया उव्वट्टंति ७ । एवं जाव सुयअन्नाणी ८-१३ । विभंगनाणी न उव्वट्टंति १४ । चक्खुदंसणी ण उव्वट्टंति १५ । जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उव्वट्टंति १६ । एवं जाव लोभकसायी १७-२८ । सोतिंदियोवउत्ता ण उव्वट्टंति २९ । एवं जाव फासिंदियोवउत्ता न उव्वट्टंति ३०-३३ । जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नोइंदियोवउत्ता उव्वट्टंति ३४ । मणजोगी न उव्वट्टंति ३५ । एवं वइजोगी वि ३६ । जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उव्वट्टंति ३७ । एवं सागरोवउत्ता ३८, अणागारोवउत्ता ३९ । [सु. ८. रयणप्पभापुढवीए संखेज्जवित्थडेसु निरयावासेसु नेरइयाणं संखाइअचरिमसंखाविसयाणं एगूणपन्नासाणं पण्हाणं समाहाणं] ८. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु केवतिया नेरइया पण्णत्ता ? १, केवइया काउलेस्सा जाव केवतिया अणागारोवउत्ता पण्णत्ता ? २-३९, केवतिया अणंतरोववन्नगा पन्नत्ता ? ४०, केवतिया परंपरोववन्नगा पन्नत्ता ? ४१, केवतिया अणंतरोगाढा पन्नत्ता ? ४२, केवतिया परंपरोगाढा पन्नत्ता ? ४३, केवतिया अणंतराहारा पन्नत्ता ? ४४, केवतिया परंपराहारा पन्नत्ता ? ४५, केवतिया अणंतरपज्जत्ता पन्नत्ता ? ४६, केवतिया परंपरपज्जत्ता पन्नत्ता ? ४७, केवतिया चरिमा पन्नत्ता ? ४८, केवतिया अचरिमा पन्नत्ता ? ४९ । गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु संखेज्जा नेरइया पन्नत्ता १ । संखेज्जा काउलेस्सा पन्नत्ता २ । एवं जाव संखेज्जा सन्नी पन्नत्ता ३-५ । असण्णी सिय अत्थि सिय नत्थि; जदि जत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पन्नत्ता ६ । संखेज्जा भवसिद्धीया पन्नत्ता ७ । एवं जाव संखेज्जा परिग्गहसन्नवउत्ता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पन्नत्ता ८-२१। इत्थिवेदगा नत्थि २२। पुरिसवेदगा नत्थि २३। संखेज्जा नपुंसगवेदगा पण्णत्ता २४। एवं कोहकसायी वि २५। माणकसाई जहा असण्णी २६। एवं जाव लोभकसायी २७-२८। संखेज्जा सोतिंदियोवउत्ता पन्नत्ता २९। एवं जाव फासिंदियोवउत्ता ३०-३३। नोइंदियोवउत्ता जहा असण्णी ३४। संखेज्जा मणजोगी पन्नत्ता ३५। एवं जाव अणागरोवउत्ता ३६-३९। अणंतरोववन्नगा सिय अत्थि सिय नत्थि; जदि अत्थि जहा असण्णी ४०। संखेज्जा परंपरोववन्नगा ४१। एवं जहा अणंतरोववन्नगा तहा अणंतरोगाढा ४२, अणंतराहारगा ४४, अणंतरपज्जत्तगा ४६। परंपरोगाढगा जाव अचरिमा जहा परंपरोववन्नगा ४२, ४५, ४७, ४८, ४९। [सु. ९. रयणप्पभापुढवीए असंखेज्जवित्थडेसु निरयावासेसु छट्ठ-सत्तम- अट्ठमसुत्तंतग्गयाणं पण्हाणं समाहाणं] ९. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवतिया नेरतिया उववज्जंति ? १, जाव केवतिया अणागारोवउत्ता उव्वट्टंति ? २-३९। गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं असंखेज्जा नेरइया उव्वट्टंति १। एवं जहेव संखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा [सु० ६-७-८ तहा असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णिगमगा भाणियव्वा। नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा, सेसं तं चेव जाव असंखेज्जा अचरिमा पन्नत्ता]४९। ''णाणत्तं लेस्सासु'', लेसाओ जहा पढमसए (स० १ उ० ५ सु० २८)। नवरं संखेज्जवित्थडेसु वि असंखेज्जवित्थडेसु वि ओहिनाणी ओहिदंसणी य संखेज्जा उव्वट्टावेयव्वा, सेसं तं चेव। [सु. १०-१८. सक्करप्पभाइअहेसत्तमासु छसु नरयपचढवीसु चउत्थाइनवमसुत्तंतग्गयाणं पण्हाणं समाहाणं] १०. सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए केवतिया निरयावास० पुच्छा। गोयमा ! पणुवीसं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता। ११. ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? एवं जहा रयणप्पभाए तहा सक्करप्पभाए वि। नवरं असण्णी तिसु वि गमएसु न भण्णति, सेसं तं चेव। १२. वालुयप्पभाए णं० पुच्छा। गोयमा ! पन्नरस निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता। सेसं जहा सक्करप्पभाए। ''णाणत्तं लेसासु'', लेसाओ जहा पढमसए (स० १ उ० ५सु० २८)। १३. पंकप्पभाए० पुच्छा। गोयमा ! दस निरयावाससयसहस्सा०। एवं जहा सक्करप्पभाए। नवरं ओहिनाणी ओहिदंसणी य न उव्वट्टंति, सेसं तं चेव। १४. धूमप्पभाए णं पुच्छा। गोयमा ! तिण्णि निरयावाससयसहस्सा० एवं जहा पंकप्पभाए। १५. तमाए णं भंते ! पुढवीए केवतिया निरयावास० पुच्छा। गोयमा ! एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पन्नत्ते। सेसं जहा पंकप्पभाए। १६. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए कति अणुत्तरा महतिमहालया निरया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच अणुत्तरा जाव अप्पतिट्ठाणे। १७. ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थहा य। १८. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहा० जाव महानिरएसु संखेज्जवित्थडे नरए एगसमएणं केवति० एवं जहा पंकप्पभाए। नवरं तिसु नाणेसु न उववज्जंति न उव्वट्टंति। पन्नत्तएसु तहेव अत्थि। एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि। नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा। [सु. १९-२७. सत्तण्हं नरयपुढवीणं संखेज्ज-असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु सम्मद्दिट्ठिआईणं उववाय-उव्वट्टणा-अविरहियत्तविसयाणं पण्हाणं समाहाणं] १९. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मद्दिट्ठी नेरतिया उव्वट्टंति, मिच्छद्दिट्ठी नेरइया उव्वट्टंति, सम्मामिच्छद्दिट्ठी नेरतिया उव्वट्टंति ? गोयमा ! सम्मदिट्ठी वि नेरतिया उव्वट्टंति, मिच्छद्दिट्ठी वि नेरतिया उव्वट्टंति, नो सम्मामिच्छद्दिट्ठी नेरतिया उव्वट्टंति। २०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मदिट्ठी नेरतिया उव्वट्टंति ? ०, एवं चेव। २१. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरगा किं सम्मद्दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया ? गोयमा ! सम्मद्दिट्ठीहि वि नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छादिट्ठीहि वि नेरइएहिं अविरहिता, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया विरहिया वा। २२. एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा। २३. एवं सक्करप्पभाए वि। एवं जाव तमाए। २४. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु जाव संखेज्जवित्थडे नरए किं सम्मदिट्ठी नेरइया० पुच्छा। गोयमा ! सम्मद्दिट्ठी नेरइया न उववज्जंति, मिज्झद्दिट्ठी नेरइया उव्वट्टंति, सम्मामिच्छद्दिट्ठी नेरइया न उव्वट्टंति। २५. एवं उव्वट्टंति वि। २६. अविरहिए जहेव रयणप्पभाए। २७. एवं

असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा। [सु. २८-३०. लेस्सं पडुच्च नरयोववायपरूवणा] २८. (१) से नूणं भंते ! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उव्वट्टंति ? हंता, गोयमा ! कण्हलेस्से जाव उववज्जंति। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'कण्हलेस्से जाव उववज्जंति' ? गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु संकिलिस्समाणेसु कण्हलेसं परिणमइ कण्हलेसं परिणमित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति। २९. (१) से नूणं भंते ! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ? हंता, गोयमा ! जाव उववज्जंति। (२) से केणट्ठेणं जाव उववज्जंति ? गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु वा नीललेस्सं परिणमति, नीललेसं परिणमित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! जाव उववज्जंति। ३०. से नूणं भंते ! कण्हलेस्से नील० जाव भवित्ता काउलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ? एवं जहा नीललेस्साए तहा काउलेस्सा वि भाणियव्वा जाव से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१३.१॥ ☆☆☆ **बीओ उद्देसओ 'देव'** ☆☆☆ [सु. १. चउव्विहदेवभेयपरूवणा] १. कतिविधा णं भंते ! देवा पन्नत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवा पन्नत्ता, तं जहा भवणवासी वाणमंतरा जोतिसिया वेमाणिया। [सु. २. भवणवासिदेवाणं दसभेयपरूवणं] २. भवणवासी णं भंते ! देवा कतिविधा पन्नत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तं जहा असुरकुमारा० एवं भेदो जहा बितियसए देवुद्देसए (स० २ उ० ७) जाव अपराजिया सव्वट्ठसिद्धगा। [सु. ३-४. असुरकुमारदेवाणं भवणावाससंखा संखेज्ज-असंखेज्जवित्थडत्तं च] ३. केवतिया णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? गोयमा ! चोसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता। ४. ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि असंखेज्जवित्थडा वि। [सु. ५. पढमुद्देसस्स छट्ठसुत्तंतग्गयएगूणचत्तालाणं अट्ठमसुत्तंतग्गयएगूणपन्नासाणं च पण्हाणं असुरकुमारदेवे पडुच्च समाहाणं] ५. (१) चोयट्ठीए णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु एगसमयेणं केवतिया असुरकुमारा उववज्जंति ? जाव केवतिया तेउलेस्सा उववज्जंति ? केवतिया कण्हपक्खिया उववज्जंति ? एवं जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा, तहेव वागरणं, नवरं दोहिं वि वेदेहिं उववज्जंति, नपुंसगवेयगा न उववज्जंति। सेसं तं चेव। (२) उव्वट्टंतगा वि तहेव, नवरं असण्णी उव्वट्टंति, ओहिनाणी ओहिदंसणी य ण उव्वट्टंति, सेसं तं चेव। पन्नत्तएसु तहेव, नवरं संखेज्जगा इत्थिवेदगा पन्नत्ता। एवं पुरिसवेदगा वि। नपुंसगवेदगा नत्थि। कोहकसायी सिय अत्थि, सिय नत्थि; जइ अत्थि जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पन्नत्ता। एवं माण० माय०। संखेज्जालोभकसायी पन्नत्ता। सेसं तं चेव तिसु वि गमएसु चत्तारि लेस्साओ भाणियव्वाओ। (३) एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं तिसु वि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा जाव असंखेज्जा अचरिमा पन्नत्ता। [सु. ६. नागकुमाराइथणियकुमारपज्जंतेसु पंचमसुत्तुत्तवत्तव्वया] ६. केवतिया णं भंते ! नागकुमारावास० ? एवं जाव थणियकुमारा, नवरं जत्थ जत्तिया भवणा। [सु. ७-९. वाणमंतरदेवे पडुच्च तइयाइपंचमसुत्ततग्गयपण्हाणं समाहाणं] ७. केवतिया णं भंते ! वाणमंतरावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा वाणमंतरावाससयसहस्सा पन्नत्ता। ८. ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडा, नो असंखेज्जवित्थडा। ९. संखेज्जेसु णं भंते ! वाणमंतरावाससयसहस्सेसु एगसमएणं केवतिया वाणमंतरा उववज्जंति ? एवं जहा असुरकुमाराणं संखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमा तहेव भाणियव्वा वाणमंतराण वि तिण्णि गमा। [सु. १०-११. जोइसियदेवे पडुच्च तइयाइपंचमसुत्तंतग्गयपण्हाणं समाहाणं] १०. केवतिया णं भंते ! जोतिसियविमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा जोतिसिया विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता। ११. ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा० ? एवं जहा वाणमंतराणं तहा जोतिसियाण वि तिन्नि गमा भाणियव्वा, नवरं एगा तेउलेस्सा। उववज्जंतेसु पन्नत्तेसु य असन्नी नत्थि। सेसं तं चेव। [सु. १२-२४. कप्पवासि-गेवेज्जग-अणुत्तरदेवे पडुच्च तइयापंचमसुत्तंतग्गयपण्हाणं समाहाणं] १२. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता। १३. ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्तडा वि।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु विमाणेसु एगसमएणं केवतिया सोहम्मा देवा उववज्जंति ? केवतिया तेउलेस्सा उववज्जंति ? एवं जहा जोतिसियाणं तिन्नि गमा तहेव भाणियव्वा, नवरं तिसु वि संखेज्जा भाणियव्वा। ओहिनाणी ओहिदंसणी य चयावेयव्वा। सेसं तं चेव। असंखेज्जवित्थडेसु एवं चेव तिन्नि गमा, नवरं तिसु वि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा। ओहिनाणी ओहिदंसणी य संखेज्जा चयंति। सेसं तं चेव। १५. एवं जहा सोहम्मे वत्तव्वया भणिया तहा ईसाणे वि छ गमगा भाणियव्वा। १६. सणंकुमारे एवं चेव, नवरं इत्थिवेदगा उववज्जंतेसु पन्नत्तेसु य न भण्णंति, असण्णी तिसु वि गमएसु न भण्णंति। सेसं तं चेव। १७. एवं जाव सहस्सारे, नाणत्तं विमाणेसु, लेस्सासु य। सेसं तं चेव। १८. आणय-पाणएसु णं भंते ! कप्पेसु केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता। १९. ते णं भंते ! किं संखेज्ज० पुच्छा। गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि। एवं संखषज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा जहा सहस्सारे। असंखेज्जवित्थडेसु उववज्जंतेसु य चयंतेसु य एवं चेव संखेज्जाभाणियव्वा। पन्नत्तेसु असंखेज्जा, नवरं नोइंदियोवउत्ता, अणंतरोववन्नगा, अणंतरोगाढगा, अणंतराहारगा, अणंतरपज्जत्तगा य, एएसिं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पन्नत्ता। सेसा असंखेज्जा भाणियव्वा। २०. आरणऽच्चुएसु एवं चेव जहा आणय-पाणतेसु, नाणत्तं विमाणेसु। २१. एवं गेवेज्जगा वि। २२. कति णं भंते ! अणुत्तरविमाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पन्नत्ता। २३. ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य। २४. पंचसु णं भंते ! अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे विमाणे एगसमएणं केवतिया अणुत्तरोववातिया देवा उववज्जंति ? केवतिया सुक्कलेस्सा उववज्जंति ?० पुच्छा तहेव। गोयमा ! पंचसु णं अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे अणुत्तरोविमाणे एगसमएणं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अणुत्तरोववातिया देवा उववज्जंति। एवं जहा गेवेज्जविमाणेसु संखेज्जवित्थडेसु, नवरं कण्हपक्खिया, अभवसिद्धिया, तिसु अन्नाणेसु एए न उववज्जंति, न चयंति, न वि पन्नत्तएसु भाणियव्वा, अचरिमा वि खोडिज्जंति जाव संखेज्जा चरिमा पन्नत्ता। सेसं तं चेव। असंखेज्जवित्थडेसु वि एते न भण्णंति, नवरं अचरिमा अत्थि। सेसं जहा गेवेज्जएसु असंखेज्जवित्थडेसु जाव असंखेज्जा अचरिमा पन्नत्ता। [सु. २५-२७. चउव्विहाणं देवाणं संखेज्ज-असंखेज्जवित्थडेसु आवासेसु सम्मद्दिट्ठिआईणं उववाय-उवट्टणा-अविरहियत्तविसयाणं पण्हाणं समाहाणं] २५. चोयट्ठीए णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्मद्दिट्ठी असुरकुमारा उववज्जंति, मिच्छद्दिट्ठी ?० एवं जहा रयणप्पभाए तिन्नि आलावगा भणिया तहा भाणियव्वा। एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिन्नि गमा। २६. एवं जाव गेवेज्जविमाणेसु। २७. अणुत्तरविमाणेसु एवं चेव, नवरं तिसु वि आलावएसु मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छद्दिट्ठी य न भण्णंति। सेसं तं चेव। [सु. २८-३१. लेस्सं पडुच्च देवलोओववायपरूवणा] २८. से नूणं भंते ! कण्हलेस्से नील० जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति ? हंता, गोयमा ! ० एवं जहेव नेरइएसु पढमे उद्देसए तहेव भाणियव्वं। २९. नीललेस्साए वि जहेव नेरइयाणं जहा नीललेस्साए। ३०. एवं जाव पम्हलेस्सेसु। ३१. सुक्कलेस्सेसु एवं चेव, नवरं लेसाठाणेसु विसुज्झमाणेसु विसुज्झमाणेसु सुक्कलेस्सं परिणमति, सुक्कलेसं परिणमित्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१३.२॥ **☆☆☆ ततिओ उद्देसओ 'अणंतर' ☆☆☆** [सु. १. चउवीसइदंडएसु परियारणाइजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो]१. नेरतिया णं भंते ! अणंतराहारा ततो निव्वत्तणया। एवं परियारणापदं निरवसेसं भाणियव्वं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१३.३॥ **☆☆☆ चउत्थो उद्देसओ 'पुढवी' ☆☆☆** [सु. १. सत्तपुढविनामपरूवणा] १. कति णं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा। [सु. २-५. सत्तण्हं नरयपुढवीणं नरयावाससंखानिरूवणपुव्वयं अणेयपदेहिं परोप्परं तुलणा पढमं नेरइयदारं] २. अहेसत्तमाए णं पुढवीए पंच अणुत्तरा महतिमहालया जाव अपतिट्ठाणे। ते णं णरगा छट्ठाए तमाए पुढवीए नरएहिंतो महत्तरा चेव १, महावित्थिण्णतरा चेव २, महोवासतरा चेव ३, महापतिरिक्कतरा चेव ४, नो तहा महावेसणतरा चेव १,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आइण्णतरा चेव २, आउलतरा चेव ३, अणोमाणतरा चेव ४; तेसु णं नरएसु नेरतिया छट्ठाए तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव १, महाकिरियतरा चेव २, महासवतरा चेव ३, महावेयणतरा चेव ४, नो तहा-अप्पकम्मतरा चेव १, अप्पकिरियतरा चेव २ अप्पासवतरा चेव ३, अप्पवेयणतरा चेव ४। अप्पिड्ढियतरा चेव १, अप्पजुतियतरा चेव २; नो तहा महिड्ढियतरा चेव १, नो महज्जुतियतरा चेव २। ३. छट्ठाए णं तमाए पुढवीए एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पन्नत्ते। ते णं नरगा अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो नो तहा -महत्तरा चेव, महावित्थिण्ण० ४; महप्पवेसणतरा चेव, आइण्ण० ४। तेसु णं नरएसु नेरइया अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरिय० ४; नो तहा महाकम्मतरा चेव, महाकिरिय० ४; महिड्ढियतरा चेव, महज्जुतियतरा चेव; नो तहा -अप्पिड्ढियतरा चेव, अप्पज्जुतियतरा चेव। छट्ठाए णं तमाए पुढवीए नरगा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नरएहिंतो महत्तरा चेव० ४; नो तहा महप्पवेसणतरा चेव० ४। तेसु णं नरएसु नेरइया पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव० ४; नो तहा अप्पकम्मतरा चेव० ४; अप्पिड्ढियतरा चेव अप्पजुइयतरा चेव; नो तहा महिड्ढियतरा चेव० २। ४. पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिन्नि निरयावाससतसहस्सा पन्नत्ता। ५. एवं जहा छट्ठाए भणिया एवं सत्त वि पुढवीओ परोप्परं भण्णंति जाव रयणप्पभ त्ति। जाव नो तहा महिड्ढियतरा चेव अप्पज्जुतियतरा चेव। [सु. ६-९. सत्तपुढविनेरइयाणं एगिंदियजीवफासाणुभवनिरूवणं -बीयं फासदारं] ६. रयणप्पभपुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं पुढविफासं पच्चणुभवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणाणं। ७. एवं जाव अहेसत्तमपुढविनेरतिया। ८. एवं आउफासं। ९. एवं जाव वणस्सइफासं। [सु. १०. सत्तण्हं पुडवीणं परोप्परबाहल्ल-खुड्डगत्तजाणणत्थं जीवाभिगमसुत्तावलोयणनिद्देसो तइयं पणिहिदारं] १०. इमा णं भंते ! रयणप्पभा पुढवी दोच्चं सक्करप्पभं पुढविं पणिहाए सव्वमहंतिया बाहल्लेणं, सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु ? एवं जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउद्देसए। [सु. ११. सत्तपुढविनिरयंतग्गयाणमेगिंदियाणं महाकम्मतरत्ताइनिरूवणं चउत्थं निरयंतदारं] ११. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णिरयपरिसामंतेसु जे पुढविकाइया। एवं जहा नेरइयउद्देसए जाव अहेसत्तमाए। [सु. १२-१५. लोग-अहेलोग-उड्ढलोग-तिरियलोगआयाममज्झठाणनिरूवणं पंचमं लोगमज्झदारं]१२. कहि णं भंते ! लोगस्स आयाममज्झे पन्नत्ते ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए ओवासंतरस्स असंखेज्जतिभागं ओगाहित्ता, एत्थ णं लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते। १३. कहि णं भंते ! अहेलोगस्स आयाममज्झे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए ओवासंतरस्स सातिरेगं अद्धं ओगाहित्ता, एत्थ णं अहेलोगस्स आयाममज्झे पन्नत्ते। १४. कहि णं भंते ! उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पन्नत्ते ? गोयमा ! उप्पिं सणंकुमार-माहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं बंभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे, एत्थ णं उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पन्नत्ते। १५. कहि णं भंते ! तिरियलोगस्स आयाममज्झे पन्नत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु, एत्थ णं तिरियलोगमज्झे अट्ठपएसिए रुपए पन्नत्ते, जओ णं इमाओ दस दिसाओ पवहंति, तं जहा पुरत्थिमा पुरत्थिमदाहिणा एवं जहा दसमसते (स० १० उ० १ सु० ६-७ जाव नामधेज्ज त्ति। [सु. १६-२२. इंदापभिईणं दसण्हं दिसा -विदिसाणं सरूवनिरूवणं छट्ठं दिसा-विदिसापवहदारं]१६. इंदा णं भंते ! दिसा किमादीया किंपवहा कतिपदेसादीया कतिपदेसुत्तरा कतिपदेसिया किंपज्जवसिया किंसंठिया पन्नत्ता ? गोयमा ! इंदा णं दिसा रुयगादीया रुपगप्पवहा दुपदेसादीया दुपदेसुत्तरा, लोगं पडुच्च असंखेज्जपएसिया, अलोगं पडुच्च अणंतपदेसिया, लोगं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च सादीया अपज्जवसिया, लोगं पडुच्च मुरवसंठिया, अलोगं पडुच्च सगडुद्धिसंठिता पन्नत्ता। १७. अग्गेयी णं भंते ! दिसा मिकादीया किंपवहा कतिपएसादीया कतिपएसवित्थिण्णा कतिपदेसिया किंपज्जवसिया किंसंठिया पन्नत्ता ? गोयमा ! अग्गेयी णं दिसा रुपगादीया रुपगप्पवहा एगपएसादीया एगपएसवित्थिण्णा अणुत्तरा, लोगं पडुच्च असंखेज्जपएसिया, अलोगं पडुच्च अणंतपएसिया, लोगं पडुच्च सादयि सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च सादीया अपज्जवसिया, छिन्नमुतावलिसंठिया पन्नत्ता। १८. जमा जहा इंदा। १९. नेरती जहा अग्गेयी। २०. एवं जहा इंदा तहा दिसाओ चत्तारि वि। जहा अग्गेयी तहा चत्तारि वि विदिसाओ। २१. विमला णं भंते ! दिसा किमादीया०, पुच्छा। गोयमा ! विमला णं दिसा रुयगादीया रुयगप्पवहा चउप्पएसादीया, दुपदेसवित्थिण्णा अणुत्तरा, लोगं पडुच्च० सेसं जहा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्गेयीए, नवरं रूयगसंठिया पन्नत्ता। २२. एवं तमा वि। [सु. २३-२८. लोग-पंचऽत्थिकायसरूवनिरूवणं -सत्तमं पवत्तणदारं] २३. किमियं भंते ! लोए त्ति पवुच्चइ ? गोयमा ! पंचत्थिकाया, एस णं एवतिए लोए त्ति पवुच्चइ, तं जहा धम्मऽत्थिकाए, अधम्मऽत्थिकाए, जाव पोग्गलऽत्थिकाए। २४. धम्मऽत्थिकाए णं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ? गोयमा ! धम्मऽत्थिकाए णं जीवाणं आगमण-गमण-भासुम्मेस-मणजोग-वइजोग-कायजोगा, जे यावन्ने तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मऽत्थिकाए पवत्तंति। गतिलक्खणे णं धम्मत्थिकाए। २५. अहम्मऽत्थिकाए णं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ? गोयमा ! अहम्मऽत्थिकाए णं जीवाणं ठाण-निसीयण-तुयट्टण-मणस्स य एगत्तीभावकरणता, जे यावन्ने तहप्पगारा थिरा भाव सव्वे ते अहम्मऽत्थिकाये पवत्तंति। ठाणलक्खणे णं अहम्मत्थिकाए। २६. आगासऽत्थिकाए णं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ? गोयमा ! आगासऽत्थिकाए णं जीवदव्वाण य अजीवदव्वाण य भायणभूए। एगेण वि से पुण्णे, दोहि वि पुण्णे, सयं पि माएज्जा। कोडिसएण वि पुण्णे, कोडिसहस्सं पि माएज्जा ॥१॥ अवगाहणालक्खणे णं आगासत्थिकाए। २७. जीवऽत्थिकाए णं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ? गोयमा ! जीवऽत्थिकाए णं जीवे अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं अणंताणं सुयनाणपज्जवाणं एवं जहा बितियसए अत्थिकायुद्देसए (स० २ उ० १० सु० ९ २) जाव उवयोगं गच्छति। उवयोगलक्खणे णं जीवे। २८. पोग्गलऽत्थिकाए पुच्छा। गोयमा ! पोग्गलऽत्थिकाए णं जीवाणं ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेया-कम्मा-सोतिंदिय-चक्खिदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदिय-मणजोग-वइजोग-कायजोग-आणापाणूणं च गहणं पवत्तति। गहणलक्खणे णं पोग्गलत्थिकाए। [सु. २९-५१. पंचऽत्थिकायपएस-अद्धासमयाणं परोप्परं वित्थरओ पएसफुसणानिरूवणं -अट्ठमं अत्थिकायफुसणादारं] २९. (१) एगे भंते ! धम्मऽत्थिकायपएसे केवतिएहिं धम्मऽत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहन्नपए तीहिं, उक्कोसपए छहिं। (२) केवतिएहिं अधम्मऽत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? जहन्नपए चउहिं, उक्कोसपदे सत्तहिं। (३) केवतिएहिं आगासऽत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? सत्तहिं। (४) केवतिएहिं जीवऽत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? अणंतेहिं। (५) केवतिएहिं पोग्गलऽत्थिकाय पहसेहिं पुट्ठे ? अणंतेहिं। (६) केवतिएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे ? सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे। जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं। ३०. (१) एगे भंते ! अहम्मऽत्थिकायपएसे केवतिएहिं धम्मऽत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहन्नपए चउहिं, उक्कोसपए सत्तहिं। (२) केवतिएहिं अहम्मऽत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? जहन्नपए तीहिं, उक्कोसपदे छहिं। सेसं जहा धम्मऽत्थिकायस्स। ३१. (१) एगे भंते ! आगासऽत्थिकायपएसे केवतिएहिं धम्मऽत्थि कायपएसेहिं पुट्ठे ? सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे। जति पुट्ठे जहन्नपदे एक्केण वा दोहि वा तीहिं वा चउहिं वा, उक्कोसपदे सत्तहिं। (२) एवं अहम्मऽत्थिकायपएसेहि वि। (३) केवतिएहिं आगासऽत्थिकायपदेसेहिं० ? छहिं। (४) केवतिएहिं जीवऽत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे। जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं। (५) एवं पोग्गलऽत्थिकायपएसेहि वि, अद्धासमयेहि वि। ३२. (१) एगे भंते ! जीवऽत्थिकायपएसे केवतिएहिं धम्मऽत्थि० पुच्छा। जहन्नपए चउहिं, उक्कोसपए सत्तहिं। (२) एवं अधम्मऽत्थिकायपएसेहि वि। (३) केवतिएहिं आगासऽत्थि० ? सत्तहिं। (४) केवतिएहिं जीवत्थि० ? सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स। ३३. एगे भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं० ? एवं जहेव जीवत्थिकायस्स। ३४. (१) दो भंते ! पोग्गलऽत्थिकायप्पदेसा केवतिएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ? जहन्नपए छहिं, उक्कोसपदे बारसहिं। (२) एवं अहम्मऽत्थिकायप्पएसेहि वि। (३) केवतिएहिं आगासत्थिकाय० ? बारसहिं। (४) सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स। ३५. (१) तिन्नि भंते ! पोग्गलऽत्थिकायपदेसा केवतिएहिं धम्मत्थि० ? जहन्नपदे अट्ठहिं, उक्कोसपदेसेहि सत्तरसहिं। (२) एवं अहम्मत्थिकायपदेसेहि वि। (३) केवइएहिं आगासत्थि० ? सत्तरसहिं। (४) सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स। ३६. एवं एएणं गमेणं भाणियव्वा जाव दस, नवरं जहन्नपदे दोन्नि पक्खिवियव्वा, उक्कोसपए पंच ३७. चत्तारि पोग्गलऽत्थिकाय० ? जहन्नपदे दसहिं, उक्को० बावीसाए। ३८. पंच पोग्गल० ? जहं० बारसहिं, उक्कोस० सत्तावीसाए। ३९. छ पोग्गल० ? जहं चोद्दसहिं, उक्को० बत्तीसाए। ४०. सत्त पो० ? जहन्नेणं सोलसहिं, उक्को० सत्ततीसाए। ४१. अट्ठ पो० ? जहं० अट्ठारसहिं, उक्कोसेणं बायालीसाए। ४२. नव पो० ? जहं० वीसाए, उक्को० सीयालीसाए। ४३. दस० ? जहं० बावीसाए, उक्को० बावण्णाए। ४४. आगासऽत्थिकायस्स सव्वत्थ उक्कोसगं भाणियव्वं। ४५. (१) संखेज्जा भंते ! पोग्गलऽत्थिकायपएसा

केवतिएहिं धम्मऽत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ? जहन्नपदे तेणेव संखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसपए तेणेव संखेज्जपएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं। (२) केवतिएहिं अहम्मऽत्थिकाएहि० ? एवं चेव। (३) केवतिएहिं आगासऽत्थिकाय० ? तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं। (४) केवतिएहिं जीवत्थिकाय० ? अणंतेहिं। (५) केवतिएहिं पोग्गलत्थिकाय० ? अणंतेहिं। (६) केवतिएहिं अद्धासमयेहिं० ? सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे जाव अणंतेहिं। ४६. (१) असंखेज्जा भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवतिएहिं धम्मऽत्थि० ? जहन्नपदे तेणेव असंखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसेणं तेणेव असंखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं। (२) सेसं जहा संखेज्जाणं जाव नियमं अणंतेहिं। ४७. अणंता भंते ! पोग्गलऽत्थिकायपएसा केवतिएहिं धम्मऽत्थिकाय० ? एवं जहा असंखेज्जा तहा अणंता वि निरवसेसं। ४८. (१) एगे भंते ! अद्धासमए केवतिएहिं धम्मऽत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? सत्तहिं। (२) केवतिएहिं अहम्मऽत्थि० ? एवं चेव। (३) एवं आगासऽत्थिकाएहि वि। (४) केवतिएहिं जीव० ? अणंतेहिं। (५) एवं जाव अद्धासमएहिं। ४९. (१) धम्मऽत्थिकाए णं भंते ! केवतिएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? नत्थि एक्केण वि। (२) केवतिएहिं अधम्मऽत्थिकायप्पएसहिं० ? असंखेज्जेहिं। (३) केवतिएहिं आगासऽत्थिकायप० ? असंखेज्जेहिं। (४) केवतिएहिं जीवऽत्थिकायपए० ? अणंतेहिं। (५) केवतिएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं ? अणंतेहिं। (६) केवतिएहिं अद्धासमएहिं० ? सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे। जइ पुट्ठे नियमा अणंतेहिं। ५०. (१) अधम्मऽत्थिकाए णं भंते ! केव० धम्मत्थिकाय० ? असंखेज्जेहिं। (२) केवतिएहिं अहम्मत्थि० ? नत्थि एक्केण वि। (३) सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स। ५१. एवं एतेणं गमएणं सव्वे वि। सट्ठाणए नत्थेक्केण वि पुट्ठा। परट्ठाणए आदिल्लएहिं तीहिं असंखेज्जेहिं भाणियव्वं, पच्छिल्लएसु तिसू अणंता भाणियव्वा जाव अद्धासमयो त्ति -जाव केवतिएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे ? नत्थेक्केण वि। [सु. ५२-६३. पंचऽत्थिकायपएस-अद्धासमयाणं परोप्परं बित्थरओ पएसावगाहणानिरूवणं नवमं ओगाहणयादारं] ५२. (१) जत्थ णं भंते ! एगे धम्मऽत्थिकायपएसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मऽत्थिकायपएसा ओगाढा ? नत्थेक्को वि। (२) केवतिया अधम्मऽत्थिकायपएसा ओगाढा ? एक्को। (३) केवतिया आगासऽत्थिकाय० ? एक्को। (४) केवतिया जीवऽत्थि० ? अणंता। (५) केवतिया पोग्गलऽत्थि० ? अणंता। (६) केवतिया अद्धा समया० ? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा। जति ओगाढा अणंता। ५३. (१) जत्थ णं भंते ! एगे अधम्मऽत्थिकायपएसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मऽत्थि० ? एक्को। (२) केवतिया अहम्मऽत्थि० ? नत्थि एक्को वि। (३) सेसं जहा धम्मऽत्थिकायस्स। ५४. (१) जत्थ णं भंते ! एगे आगासऽत्थिकायपएसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मऽत्थिकाय० ? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा। जति ओगाढा एक्को। (२) एवं अहम्मत्थिकायपएसा वि। (३) केवतिया आगासऽत्थिकाय० ? नत्थेक्को वि। (४) केवतिया जीवऽत्थि० ? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा। जति ओगाढा अणंता। (५) एवं जाव अद्धासमया। ५५. (१) जत्थ णं भंते ! एगे जीवऽत्थिकायपएसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मऽत्थि० ? एक्को। (२) एवं अहम्मऽत्थिकाय०। (३) एवं आगासाऽत्थिकायपएसा वि। (४) केवतिया जीवऽत्थि० ? अणंता। (५) सेसं जहा धम्मऽत्थिकायस्स। ५६. जत्थ णं भंते ! एगे पोग्गलऽत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केयतिया धम्मऽत्थिकाय० ? एवं जहा जीवऽत्थिकायपएसे तहेव निरवसेसं। ५७. (१) जत्थ णं भंते ! दो पोग्गलऽत्थिकायपएसा ओगाढा तत्थ केवतिया धम्मऽत्थिकाय० ? सिय एक्को, सिय दोण्णि। (२) एवं अहम्मऽत्थिकायस्स वि। (३) एवं आगासऽत्थिकायस्स वि। (४) सेसं जहा धम्मऽत्थिकायस्स। ५८. (१) जत्थ णं भंते ! तिन्नि पोग्गलत्थि० तत्थ केवतिया धम्मऽत्थिकाय० ? सिय एक्को, सिय दोन्नि, सिय तिन्नि। (२) एवं अहम्मऽत्थिकायस्स वि। (३) एवं आगासऽत्थिकायस्स वि। (४) सेसं जहेव दोण्हं। ५९. एवं एक्केक्को वड्ढियव्वो पएसो आदिल्लएहिं तीहिं अत्थिकाएहिं। सेसं जहेव दोण्हं जाव दसण्हं सिय एक्को, सिय दोन्नि, सिय तिन्नि जाव सिय दस। संखेज्जाणं सिय एक्को, सिय दोन्नि, जाव सिय दस, सिय संखेज्जा। असंखेज्जाणं सिय एक्को, जाव सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा। जहा असंखेज्जा एवं अणंता वि। ६०. (१) जत्थ णं भंते ! एगे अद्धासमये ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मऽत्थि० ? एक्को। (२) केवतिया अहम्मऽत्थि० ? एक्को। (३) केवतिया आगासऽत्थि० ? एक्को। (४) केवतिया जीवऽत्थि० ? अणंता। (५) एवं जाव अद्धासमया। ६१. (१) जत्थ णं भंते ! धम्मऽत्थिकाये ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा ? नत्थि एक्को वि। (२) केवतिया

अहम्मऽत्थिकाय० ? असंखेज्जा। (३) केवतिया आगास० ? असंखेज्जा। (४) केवतिया जीवऽत्थिकाय० ? अणंता। (५) एवं जाव अद्धा समया। ६२. (१) जत्थ णं भंते ! अहम्मृत्थिकाये ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मऽत्थिकाय० ? असंखेज्जा। (२) केवतिया अहम्मऽत्थि० ? नत्थि एक्को वि। (३) सेसं जहा धम्मऽत्थिकायस्स। ६३. एवं सव्वे। सट्ठाणे नत्थि एक्को वि भाणियव्वं। परट्ठाणे आदिल्लगा तिन्नि असंखेज्जा भाणियव्वा, पच्छिल्लगा तिन्नि अणंता भाणियव्वा जाव अद्धासमओ त्ति जाव केवतिया अद्धासमया ओगाढा ? नत्थि एक्को वि। [सु. ६४-६५. पंचण्हं एगिंदियाणं परोप्परं ओगाहणानिरूवणं दसमं जीवोगाढदारं] ६४. (१) जत्थ णं भंते ! एगे पुढविकाइए ओगाढे तत्थ केवतिया पुढविकाइया ओगाढा ? असंखेज्जा। (२) केवतिया आउक्काइया ओगाढा ? असंखेज्जा। (३) केवतिया तेउकाइया ओगाढा ? असंखेज्जा। (४) केवतिया वाउ० ओगाढा ? असंखेज्जा। (५) केवतिया वणस्सतिकाइया ओगाढा ? अणंता। ६५. (१) जत्थ णं भंते ! एगे आउकाइए ओगाढे तत्थ णं केवतिया पुढवि० ? असंखेज्जा। (२) केवतिया आउ० ? असंखेज्जा। एवं जहेव पुढविकाइयाणं वत्तव्वयातहेव सव्वेसिं निरवसेसं भाणियव्वं जाव वणस्सतिकाइयाणं जाव केवतिया वणस्सतिकाइया ओगाढा ? अणंता। [सु. ६६. धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय -आगासत्थिकाएसु कूडागारसालोदाहरणपुव्वयं आसणादिनिसेहपरूवणं एगारसमं अत्थिपएसनिसीयणदारं] ६६. (१) एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकाय० अधम्मत्थिकाय० आगासत्थिकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा तुयट्टित्तए वा ? नो इणट्ठे समट्ठे, अणंता पुण तत्थ जीवा ओगाढा। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ एयंसि णं धम्मत्थि० जाव आगासत्थिकायंसि नो चक्किया केयि आसइत्तए वा जाव ओगाढा ? ''गोयमा ! से जहा नामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा जहा रायप्पसेणइज्जे जाव दुवारवयणाइं पिहेइ; दुवारवयणाइं पिहित्ता तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए जहन्नेणं एक्को वा दो तिण्णि वा, उक्कोसेणं पदीवसहस्सं पलीवेज्जा; से नूणं गोयमा ! ताओ पदीवलेस्साओ अन्नमन्नसंबद्धाओ अन्नमन्नपुट्ठाओ जाव अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठंति ?'' 'हंता, चिट्ठंति।' ''चक्किया णं गोयमा ! केयि तासु पदीवलेस्सासु आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा ?'' 'भगवं ! णो इणट्ठे समट्ठे, अणंता पुण तत्थ जीवा ओगाढा।' सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव ओगाढा। [६७-६८. बहुसम-सव्वसंखित्त-विग्गहविग्गहियलोयनिरूवणं बारसमं बहुसमदारं] ६७. कहि णं भंते ! लोए बहुसमे ? कहि णं भंते ! लोए सव्वविग्गहिए पन्नत्ते ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु, एत्थ णं लोए बहुसमे, एत्थ णं लोए सव्वविग्गहिए पन्नत्ते। ६८. कहि णं भंते ! विग्गहविग्गहिए लोए पन्नत्ते ? गोयमा ! विग्गहकंडए, एत्थ णं विग्गहविग्गहिए लोए पन्नत्ते। [सु. ६९. लोगसंठाणपरूवणं तेरसमं लोगसंठाणदारं] ६९. किंसंठिए णं भंते ! लोए पन्नत्ते ? गोयमा ! सुपतिट्ठगसंठिए लोए पन्नत्ते, हेट्ठा वित्थण्णे, मज्झे जहा सत्तमसए पढमुद्देदे (स० ७ उ० १ सु ५) जाव अंतं करेति। [सु. ७०. अहेलोग-तिरियलोग-उड्ढलोगाणं अप्पाबहुयं] ७०. एतस्स णं भंते ! अहेलोगस्स तिरियलोगस्स उड्ढलोगस्स य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे तिरियलोए, उड्ढलोए असंखेज्जगुणे, अहेलोए विसेसाहिए। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।॥ १३.४॥ **☆☆☆पंचमो उद्देसो 'आहारे'☆☆☆** [सु. १ चउवीसइदंडएसु आहारादिजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] १. नेरतिया णं भंते ! किं सचित्ताहारा, अचित्ताहारा० ? पढमो नेरइयउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।॥१३.५॥ **☆☆☆ छट्ठो उद्देसओ 'उववाए' ☆☆☆** [सु. १. छट्ठुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासी [सु. २-४. चउवीसदंडएसु संतर-निरंतरोववाय -उव्वट्टणपरूवणा] २. संतरं भंते ! नेरतिया उववज्जंति, निरंतरं नेरतिया उववज्जंति ? गोयमा ! संतरं पि नेरतिया उववज्जंति, निरंतरं पि नेरतिया उववज्जंति। ३. एवं असुरकुमारा वि। ४. एवं जहा गंगेय(स० ९ उ० ३२ सु० ३-१३) तहेव दो दंडगा जाव संतरं पि वेमाणिया चयंति, निरंतरं पि वेमाणिया चयंति। [सु. ५-६. चमरचंचआवासस्स वण्णणं पओयणं च]५. कहि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचे नामं आवासे पन्नत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे एवं जहा बितियसए सभाउद्देसवत्तव्वया (स० २ उ० ८ सु०

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१) सच्चेव अपरिसेसा नेयव्वा, नवरं इमं नाणत्तं जाव तिगिच्छिकूडस्स उप्पायपव्वयस्स चमरचंचाए रायहाणीए चमरचंचस्स आवासपव्वयस्स अन्नेसिं च बहूणं० सेसं तं चेव जाव तेरसअंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहिया परिक्खेवेणं। तीसे णं चमरचंचाए रायहाणीए दाहिणपच्चत्थिमेणं छक्कोडिसए पणपन्नं च कोडीओ पणतीसं च सयसहस्साइं पन्नासं च सहस्साइं अरुणोदगसमुद्दं तिरियं वीतीवइत्ता एत्थ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचे नामं आवासे पण्णत्ते, चउरासीतिं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, दो जोयणसयसहस्सा पन्नट्ठिं च सहस्साइं छच्च बत्तीसे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं। से णं एगेणं पागारेणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते। से णं पागारे दिवड्ढं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं, एवं चमरचंचारायहाणीवत्तव्वया भाणियव्वा सभाविहूणा जाव चत्तारि पासायपंतीओ। ६. (१) चमरे णं भंते ! असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचे आवासे वसहिं उवेति ? नो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणं खाइ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'चमरचंचे आवासे, चमरचंचे आवासे' ? गोयमा ! से जहानामए इहं मणुस्सलोगंसि उवगारियलेणा इ वा, उज्जाणियलेणा इ वा, निज्जाणियलेणा इ वा, धारवारियलेणा इ वा, तत्थ णं बहवे मणुस्सा य मणुस्सीओ य आसयंति सयंति जहा रायप्पसेणइज्जे जाव कल्लाणफलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणा विहरंति, अन्नत्थ पुण वसहिं उवेति, एवामेव गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचे आवासे केवलं किड्डारतिपत्तियं, अन्नत्थ पुण वसहिं उवेति। सेतेणट्ठेणं जाव आवासे। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति। [सु. ७-८. भगवओ महावीरस्स रायगिहाओ विहरणं, चंपानयरीए पुण्णभद्दचेईए आगमणं च] ७. तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नदा कदायि रायगिहाओ नगराओ गुणतसलाओ जाव विहरति। ८. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था। वण्णओ। पुण्णभद्दे चेतिए। वण्णओ। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव विहरमाणे जेणेव चंपानगरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेतिए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जाव विहरइ। [सु. ९-३७. उद्दायणरायरिसि-अभीयिकुमारवुत्तंतो सु. ९-१६. वीतिभयनगर-मियवण-उद्दायणराय-पउमावइ-पभावइमहिसी-अभीयिरायकुमार-रायभाइणेज्जकेसिकुमाराणं वण्णणं] ९. तेणं कालेणं तेणं समएणं सिंधूसोवीरेसु जणवएसु वीतीभए नामं नगरे होत्था। वण्णओ। १०. तस्स णं वीतीभयस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए, एत्थ णं मियवणे नामं उज्जाणे होत्था। सव्वोउय० वण्णओ। ११. तत्थ णं वीतीभए नगरे उद्दायणे नामं राया होत्था, महया० वण्णओ। १२. तस्स णं उद्दायणस्स रन्नो पउमावती नामं देवी होत्था, सुकुमाल० वण्णओ। १३. तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पभावती नामं देवी होत्था। वण्णओ, जाव विहरति। १४. तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए अभीयी नामं कुमारे होत्था। सुकुमाल० जहा सिवभद्दे (सु० ११ उ० ९ सु० ५) जाव पच्चुवेक्खमाणे विहरइ। १५. तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो नियए भाइणेज्जे केसी नामं कुमारे होत्था, सुकुमाल० जाव सुरूवे। १६. से णं उद्दायणे राया सिंधूसोवीरप्पामोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाणं, वीतीभयप्पामोक्खाणं तिण्हं तेसट्ठीणं नगरागरसयाणं, महसेणप्पामोक्खाणं दसण्हं राईणं बद्धमउडाणं विदिण्णछत्त-चामर-वालवीयणीणं, अन्नेसिं च बहूणं राईसर-तलवर जाव सत्थवाहप्पभितीणं आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव कारेमाणे पालेमाणे समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरति। [सु. १७-१८. पोसहसालाए पोसहियस्स उद्दायणस्स रण्णो भगवंतमहावीरवंदणाइअज्झवसाओ] १७. तए णं से उद्दायणे राया अन्नदा कदायि जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छति, जहा संखे (स० १२ उ० १ सु० १२) जाव विहरति। १८. तए णं तस्स उद्दायणस्स रण्णो पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-"धन्ना णं ते गामाऽऽगर-नगर-खेड-कव्वड-मडंब-दोणमुह-पट्टणा-ऽऽसम-संवाह-सन्निवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरति, धन्ना णं ते राईसर-तलवर जाव सत्थवाह-प्पभितयो जे णं समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति जाव पज्जुवासंति। जति णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं जाव विहरमाणे इहभागच्छेज्जा, इह समोसरेज्जा, इहेव वीतीभयस्स नगरस्स बहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं जाव विहरेज्जा तो णं अहं समणं भगवं महावीरं वंदेज्जा, नमंसेज्जा जाव पज्जुवासेज्जा।" [सु. १९-२२. भगवओ वीतीभयनगरागमणं, उद्दायणस्स य पव्वज्जागहणसंकप्पो] १९. तए णं समणे भगवं महावीरे उद्दायणस्स रण्णो अयमेयारूवं अज्झत्थियं जाव समुप्पन्नं विजाणित्ता चंपाओ नगरीओ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुण्णभद्दाओ चेतियाओ पडिनिक्खमति, प० २ त्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणु० जाव विहरमाणे जेणेव सिंधूसोवीरा जणवदा, जेणेव वीतीभये नगरे, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छति, उवा० २ जाव विहरति। २०. तए णं वीतीभये नगरे सिंघाडग जाव परिसा पज्जुवासइ। २१. तए णं से उद्दायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ० कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, को० स० २ एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वीयीभयं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं जहा कूणिओ उववातिए जाव पज्जुवासति। पउमावतीपामोक्खाओ देवीओ तहेव जाव पज्जुवासंति। धम्मकहा। २२. तए णं से उद्दायणे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेति, उ० २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वयासी-"एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! जाव से जहेयं तुब्भे वदह, त्ति कट्टु जं नवरं देवाणुप्पिया ! अभीयीकुमारं रज्जे ठावामि। तए णं अहं देवाप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामि"। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं। [सु. २३-२६. नियपुत्तकल्लाणकंखिउद्दायणरायकओ कम्मबंधभूले रज्जे नियभाइणेज्जकेसिकुमारस्स रज्जाभिसेओ] २३. तए णं से उद्दायणे राया समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ० समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वं० न० त्ता तमेव आभिसक्कं हत्थिं द्रहति, २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ मियवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वीतीभये नगरे तेणेव पहारेत्था गमणाए। २४. तए णं तस्स उद्दायणस्स रण्णो अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था "एवं खलु अमीयीकुमारे ममं एगे पुत्ते इट्ठे कंते जाव किमंग पुण पासणयाए ?, तं जति णं अहं अमीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामि तो णं अभीयीकुमारे रज्जे य रट्ठे य जाव जणवए य माणुस्सएसु य कामभोएसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सइ, तं नो खलु मे सेयं अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइत्तए। सेयं खलु मे णियगं भाइणेज्जं केसिकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवतो जाव पव्वइत्तए"। एवं संपेहेति, एवं स. २ त्ता जेणेव वीतीभये नगरे तेणेव उवागच्छति, उवा० २ त्ता वीतीभयं नगरं मज्झंमज्झेणं० जेणेव सए गेहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छति, उवा० २ त्ता आभिसेक्कं हत्थिं ठावेति, आ० ठ० २ आभिसेक्काओ हत्थीओ पच्चोरुभइ, आ० प० २ जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति, उवा० २ सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, नि० २ कोडुंबियरपुरिसे सद्दावेइ, को० स० २ एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वीतीभयं नगरं सब्भितरबाहिरियं जाव पच्चप्पिणंति। २५. तए णं से उद्दायणे राया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, स० २ एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! केसिस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं एवं रायाभिसेओ जहा सिवभद्दस्स (स०११ उ० ९ सु० ७-९) तहेव भाणियव्वो जाव परमायु पालयाहि इट्ठजणसंपरिवुडे सिंधूसोवीरपामोक्खाणं सोलसण्हं जणवदाणं, वीतीभयपामोक्खाणं०, महसेणप्पा०, अन्नेसिं च बहूणं राईसरतलवर० जाव कारेमाणे पालेमाणे विहराहि, त्ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजंति। २६. तए णं से केसी कुमारे राया जाते महया जाव विहरति। [सु. २७-३१. केसिरायाणुमन्नियस्स उद्दायणराइणो महाविच्छड्डेण पव्वज्जागहणं मोक्खगमणं च] २७. तए णं से उद्दायणे राया केसिं रायाणं आपुच्छइ। २८. तए णं से केसी राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ एवं जहा जमालिस्स (स० ९ उ० ३३ सु० ४६-४७) तहेव सब्भिंतरबाहिरियं तहेव जाव निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेति। २९. तए णं से केसी राया अणेगगणणायग० जाव परिवुडे उद्दायणं रायं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसीयावेति, नि० २ अट्ठसएणं सोवण्णियाणं एवं जहा जमालिस्स (स० ९ उ० ३३ सु० ४९) जाव एवं वयासी भण सामी ! किं देमो ? किं पयच्छामो ? किणा वा ते अट्ठो ? तए णं से उद्दायणे राया केसिं रायं एवं वयासी इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! कुत्तियावणाओ एवं जहा जमालिस्स (स० ९ उ० ३३ सु० ५०-५६); नवरं पउमावती अग्गकेसे पडिच्छइ पियविप्पयोगदूसहं०। ३०. तए णं से केसी राया दोच्चं पि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेति, दो० र० २ उद्दायणं रायं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेयापीतएहिं कलसेहिं० सेसं जहा जमालिस्स (स० ९ उ० ३३ सु० ५७-६०) जाव सन्निसन्ने तहेव अम्मधाती, नवरं पउमावती हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय, सेसं तं चेव जाव सीयाओ पच्चोरुभति, सी० प० २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवा० २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदति नमंसति, वं० २ उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमति, उ० अ० २ सयमेव आभरणमल्लालंकारं० तं चेव, पउमावती पडिच्छइ जाव घडियव्वं सामी ! जाव नो पमादेयव्वं ति कट्टु, केसी राया पउमावती य समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं० २ जाव पडिगया। ३१. तए णं से उद्दायणे राया सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं०, सेसं जहा उसभदत्तस्स (स० ९ उ० ३३ सु० १६) जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। [सु. ३२. रज्जालाभनिमित्तेण उद्दायणरायरिसिम्मि घेराणुबद्धस्स अभीयिकुमारस्स वीतिभयनगराओ चंपाए निवासो] ३२. तए णं तस्स अभीयिस्स कुमारस्स अन्नदा कदायि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था -'एवं खलु अहं उद्दायणस्स पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, तए णं से उद्दायणे राया ममं अवहाय नियगं भागिणेज्जं केसिकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ जाव पव्वइए'। इमेणं एतारूवेणं महता अप्पत्तिएणं मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे अंतेपुरपरियालसंपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए वीतीभयाओ नगराओ निग्गच्छति, नि० २ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नगरी जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवा० २ कूणियं रायं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। इत्थ वि णं से विउलभोगसमितिसमन्नागए यावि होत्था। [सु. ३३-३६. समणोवासगधम्मरयस्स उद्दायणवेरं अणालोइयपडिक्कंतस्स पत्तमरणस्स अभीयिकुमारस्स असुरकुमारदेवत्तेणं उववाओ] ३३. तए णं से अभीयी कुमारे समणोवासए यावि होत्था, अभिगय० जाव विहरति। उद्दायणम्मि रायरिसिम्मि समणुबद्धवेरे यावि होत्था। ३४. तेणं कालेणं तेणं समएणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु चोसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता। ३५. तए णं से अभीयी कुमारे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणति, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छे० २ तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु चोयट्ठीए आतावा जाव सहस्सेसु अण्णतरंसि आतावाअसुरकुमारावासंसि आतावाअसुरकुमारदेवत्ताए उववन्ने। ३६. तत्थ णं अत्थेगइयाणं आतावगाणं असुरकुमाराणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिती पन्नत्ता। तत्थ णं अभीयिस्स वि देवस्स एगं पलिओवमं ठिती पन्नत्ता। [सु. ३७. देवलोगचवणाणंतरं अभीयिस्स सिद्धिगमणनिरूवणं] ३७. से णं भंते ! अभीयी देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठितिक्खएणं अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१३.६॥

☆☆☆ सत्तमो उद्देसओ 'भासा' ☆☆☆

[सु. १. सत्तमुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासी [सु. २-५. भासाए अणत्तत्त-रूवित्त-अचित्तत्त -अजीवत्तसरूवनिरूवणं] २. आया भंते ! भासा, अन्ना भासा ? गोयमा ! नो आता भासा, अन्ना भासा। ३. रूविं भंते ! भासा, अरूविं भासा ? गोयमा ! रूविं भासा, नो अरूविं भासा। ४. सचित्ता भंते ! भासा, अचित्ता भासा ? गोयमा ! नो जीवा भासा, अजीवा भासा। [सु. ६. अजीवाणं भासानिसेहो] ६. जीवाणं भंते ! भासा, अजीवाणं भासा ? गोयमा ! जीवाणं भासा, नो अजीवाणं भासा। [सु. ७. 'भासिज्जमाणी भासा' इति भासासरुवं] ७. पुव्विं भंते ! भासा, भासिज्जमाणी भासा, भासासमयवीतिक्कंता भासा ? गोयमा ! नो पुव्विं भासा, भासिज्जमाणी भासा, नो भासासमयवीतिक्कंता भासा। [सु. ८. भासिज्जमाणीए भासाए विभेयणनिरूवणं] ८. पुव्विं भंते ! भासा भिज्जइ, भासिज्जमाणी भासा भिज्जइ, भासासमयवीतिक्कंता भासा भिज्जइ ? गोयमा ! नो पुव्विं भासा भिज्जइ, भासिज्जमाणी भासा भिज्जइ, नो भासासमयवीतिक्कंता भासा भिज्जइ। सु. ९. भासाए भेयचउक्कं ९. कतिविधा णं भंते ! भासा पन्नत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा भासा पण्णत्ता, तं जहा सच्चा मोसा सच्चामोसा असच्चामोसा। [सु. १०-१३. मणं पडुच्च विइयाइअट्ठमसुत्तंतग्गयवत्तव्वया] १०. आता भंते ! मणे, अन्ने मणे ? गोयमा ! नो आया मणे, अन्ने मणे। ११. जहा भासा तहा मणे वि जाव नो अजीवाणं मणे।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. पुव्विं भंते ! मणे, मणिज्जमाणे मणे ?० एवं जहेव भासा। १३. पुव्विं भंते ! मणे भिज्जइ, मणिज्जमाणे मणे भिज्जइ, मणसमयवीतिक्कंते मणे भिज्जइ ? एवं जहेव भासा। [सु. १४. मणस्स भेयचउक्कं] १४. कतिविधे णं भंते ! मणे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे मणे पन्नत्ते, तं जहा सच्चे, जाव असच्चमोसे। [सु. १५-१८. कायस्स अत्तत्ताऽणत्तत्त-रूवित्तारूवित्त-सचित्तत्ताचित्तत्तजीवत्ताजीवत्तसरूवनिरूवणं] १५. आया भंते ! काये, अन्ने काये ? गोयमा ! आया वि काये, अन्ने वि काये। १६. रूविं भंते ! काये० पुच्छा। गोयमा ! रूविं पि काये, अरूविं पि काये। १७. एवं सचित्ते वि काए, अचित्ते वि काए। १८. एवं एक्केक्के पुच्छा। जीवे वि काये, अजीवे वि काए। [सु. १९. जीवाजीवाणं कायसब्भावो] १९. जीवाण वि काये, अजीवाण वि काए। [सु. २०-२१. तिविहं जीवसंबंधं पडुच्च कायनिरूवणं कायविभेयणनिरूवणं च] २०. पुव्विं भंते ! काये० ? पुच्छा। गोयमा ! पुव्विं पि काए, कायिज्जमाणे वि काए, कायसमयवीतिक्कंते वि काये। २१. पुव्विं भंते ! काये भिज्जइ ?० पुच्छा। गोयमा ! पुव्विं पि काए भिज्जइ जाव कायसमयवीतिक्कंते वि काए भिज्जति। [सु. २२. कायस्स भेयसत्तगं] २२. कतिविधे णं भंते ! काये पन्नत्ते ? गोयमा ! सत्तविधे काये पन्नत्ते, तं जहा ओरालिए ओरालियमीसए वेउव्विए वेउव्वियमीसए आहारए आहारयमीसए कम्मए। [सु. २३. मणणस्स भेयपंचगं] २३. कतिविधे णं भंते ! मरणे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे मरणे पन्नत्ते, तं जहा आवीचियमरणे ओहिमरणे आतियंतियमरणे बालमरणे पंडियमरणे। [सु. २४-३०. आवीचियमरणस्स भेय-पभेया तस्सरूवं च] २४. आवीचियमरणे णं भंते ! कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते तं जहा दव्वावीचियमरणे खेत्तावीचियमरणे कालावीचियमरणे भवावीचियमरणे भावावीचियमरणे। २५. दव्वावीचियमरणे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा नेरइयदव्वावीचियमरणे तिरिक्खजोणियदव्ववीचियमरणे मणुस्सदव्वावीचियमरणे देवदव्वावीचियमरणे। २६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'नेरइयदव्वावीचियमरणे, नेरइयदव्वावीचियमरणे' ? गोयमा ! जं णं नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं नेरइयाउयत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं निविट्ठाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमन्नगयाइं भवंति ताइं दव्वाइं आवीची अणुसमयं निरंतरं मरंतीति कट्टु, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ 'नेरइयदव्वावीचियमरणे, नेरइयदव्वावीचियमरणे'। २७. एवं जाव देवदव्वावीचिययरणे। २८. खेत्तावीचियमरणे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा नेरइयखेत्तावीतिचियमरणे जाव देवखेत्तावीतियमरणे। २९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'नेरइयखेत्तावीचियमरणे, नेरइयखेत्तावीचियमरणे' ? गोयमा ! जं णं नेरइया नेरइयखेत्ते वट्टमाणे जाइं दव्वाइं नेरइयाउयत्ताए एवं जहेव दव्वावीचियमरणे तहेव खेत्तावीचियमरणे वि। ३०. एवं जाव भावावीचियमरणे। [सु. ३१-३५. ओहिमरणस्स भेय-पभेया तस्सरूवं च] ३१. ओहिमरणे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तं जहा दव्वोहिमरणे खेत्तोहिमरणे। ३२. दव्वोहिमरणे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा-नेरइयदव्वोहिमरणे जाव देवदव्वोहिमरणे। ३३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'नरेइयदव्वोहिमरणे, नेरइयदव्वोहिमरणे' ? गोयमा ! जं णं नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं संपयं मरंति, ते णं नेरइया ताइं दव्वाइं अणागते काले पुणो वि मरिस्संति। सेतेणट्ठेणं गोयमा ! जाव दव्वोहिमरणे। ३४. एवं तिरिक्खजोणिय० मणुस्स० देवोहिमरणे वि। ३५. एवं एएणं गमएणं खेत्तोहिमरणे वि, कालोहिमरणे वि, भवोहिमरणे वि, भावोहिमरणे वि। [सु. ३६-४०. आतियंतियमरणस्स भेय-पभेया तस्सरूवं च]३६. आतियंतियमरणे णं भंते !० पुच्छा। गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तं जहा दव्वतियंतियमरणे, खेत्तातियंतियमरणे, जाव भावातियंतियमरणे। ३७. दव्वातियंतियमरणे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा नेरइयदव्वातियंतियमरणे जाव देवदव्वातियंतियमरणे। ३८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'नेरइयदव्वातियंतियमरणे, नेरइयदव्वातियंतियमरणे' ? गोयमा ! जं णं नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं संपतं मरंति, जे णं नेरइया ताइं दव्वाइं अणागते काले नो पुणो वि मरिस्संति। से तेणट्ठेणं जाव मरणे। ३९. एवं तिरिक्ख० मणुस्स० देव०। ४०. एवं खेत्तातियंतिययमरणे वि, जाव भावातियंतियमरणे वि। [सु. ४१. बालमरणस्स भेया सरूवं च] ४१. बालमरणे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुवालसविहे पन्नत्ते तं जहा वलयमरणे जहा खंदए (स० २ उ० १ सु० २६) जाव गद्धपट्ठे। [सु. ४२.-४४. पंडितमरणस्स भेदा सरूवं च] ४२. पंडियमरणे णं भंते !

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा पाओवगमणे य भत्तपच्चक्खाणे य। ४३. पाओवगमणे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविधे पन्नत्ते, तं जहा णीहारिमे य अणीहारिमे य, नियमं अपडिकम्मे। ४४. भत्तपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? एवं तं चेव, नव नियमं सपडिकम्मे। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१३.७॥ ☆☆☆ **अट्ठमो उद्देसओ 'कम्म'** ☆☆☆[सु. १. कम्मपगडिभेयाइजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो १. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा। अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ। एवं बंधट्ठितिउद्देसओ भाणियव्वो निरवसेसो जहा पन्नवणाए। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१३.८॥

☆☆☆**नवमो उद्देसओ 'अणगारे केयाघडिया'** ☆☆☆[सु. १. नवमुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासी [सु. २-३. गहियकेयाघडियपुरिसोदाहरणेण भावियऽप्पणो अणगारस्स विउव्वणसत्तीनिरूवणं] २. से जहानामए केयि पुरिसे केयाघडियं किच्चहत्थगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए ? गोयमा ! से जहानामए जुवति जुवाणे हत्थेणं हत्थे एवं जहा ततियसते पंचमुद्देसए (स० ३ उ० ५ सु० ३) जाव नो चेव णं संपत्तीए विउव्विंसु वा विउव्वति वा विउव्विस्सति वा। [सु. ४-५. गहियहिरण्णादिपेडपुरिसोदाहरणेहिं भाविऽप्पणो अणगारस्स विउव्वणसत्तीनिरूवणं]४. से जहानामए केयि पुरिसे हिरण्णपेलं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा हिरण्णपेलहत्थकिच्चगतेणं अप्पाणेणं०, सेसं तं चेव। ५. एवं सुवण्णपेलं, एवं रयणपेलं, वइरपेलं, वत्थपेलं, आभरणपेलं। [सु. ६. गहियवियलादिकिडपुरिसोदाहरणेहिं भावियप्पणो अणगारस्स विउव्वणसत्तीनिरूवणं] ६. एवं वियलकिडं, सुंबकिडं चम्मकिडं कंबलकिडं। [सु. ७. गहियअयआइभारपुरिसोदाहरणेहिं भावियप्पणो अणगारस्स विउव्वणसत्तीनिरूवणं] ७. एवं अयभारं तंबभारं तउयभारं सीसगभारं हिरण्णभारं सुवण्णभारं वइरभारं। [सु. ८-१५. वग्गुली-जन्नोवइया-जलोया-बीयंबीयगसउण-पक्खिबिरालय-जीवंजीवगसउण -हंस-समुद्दवायसोदाहरणेहिं भवियऽप्पणो अणगारस्स विउव्वणसत्तीनिरूवणं] ८. से जहानामए वग्गुली सिया, दो वि पाए उल्लंबिया उल्लंबिया उड्ढपादा अहोसिरा चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा वग्गुलीकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं०। ९. एवं जण्णोवइयवत्तव्वया भाणितव्वा जाव विउव्विस्संति वा। १०. से जहानामए जलोया सिया, उदगंसि कायं उव्विहिया उव्विहिया गच्छेज्जा, एवामेव० सेसं जहा वग्गुलीए। ११. से जहानामए बीयंबीयगसउणे सिया, दो वि पाए समतुरंगेमाणे समरिंगेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगरे०, सेसं तं चेव। १२. से जहानामए पक्खिबिरालए सिया, रुक्खाओ रुक्खं डेवेमाणे डेवेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे९, सेसं तं चेव। १३. से जहानामए जीवंजीवगसउणए सिया, दो वि पाए समतुरंगेमाणे समतुरंगेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे०, सेसं तं चेव। १४. से जहाणामाए हंसे सिया, तीरातो तीरं अभिरममाणे अभिरममाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे हंसकिच्चगतेणं अप्पाणेणं०, तं चेव। १५. से जहानामए सम्मुद्दवायसए सिया, वीयीओ वीयिं डेवेमाणे डेवेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव०, तहेव। [सु. १६-१९. गहियचक्क-छत्त-चम्म -रयणाइपुरिसोदाहरणेहिं भावियऽप्पणो अणगारस्स विउव्वणसत्तीनिरूवणं] १६. से जहानामए केयि पुरिसे चक्कं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा चक्कहत्थकिच्चगएरं अप्पाणेणं०, सेसं जहा केयाघडियाए। १७. एवं छत्तं। १८. एवं चम्मं। १९. से जहानामए केयि पुरिसे रयणं गहायं गच्छेज्जा, ० एवं चेव। एवं वइरं, वेरुलियं, जाव रिट्ठं। [सु. २०. उप्पलहत्थादिपुरिसोदारणेहिं भावियऽप्पणो अणगारस्स विउव्वणसत्तीनिरूवणं] २०. एवं उप्पलहत्थगं, एवं पउमहत्थगं, एवं कुमुदहत्थगं, एवं जाव से जहानामए केयि पुरिसे सहस्सपत्तगं गहाय गच्छेज्जा,० एवं चेव। [सु. २१. विसावदारयपुरिसोदाहरणेण भावियऽप्पणो अणगारस्स विउव्वणसत्तीनिरूवणं] २१. से जहानामए केयि पुरिसे भिसं अवद्दालिय अवद्दालिय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि मिसकिच्चगएणं अप्पाणेणं०, तं चेव। [सु. २२-२५. मुणालिया-वणसंड-पुक्खरणीउदाहरणेहिं भावियऽप्पणो अणगारस्स विउव्वणसत्तीनिरूवणं] २२. से जहानामए मुणालिया सिया, उदगंसि कायं उम्मज्जिय उम्मज्जिय चिट्ठेज्जा, एवामेव०, सेसं जहा वग्गुलीए। २३. से जहानामए वणसंडे सिया किण्हे किण्होभासे जाव निकुरुंबभूए पासादीए ४, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा वणसंडकिच्चगतेणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा, सेसं तं चेव।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. से जहानामए पुक्खरणी सिया, चउक्कोणा समतीरा अणुपुव्वसुजाय० जाव सद्दुन्नइयमहुरसरणादिया पासादीया ४, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा पोक्खरणीकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ? हंता, उप्पतेज्जा। २५. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवतियाइं पभू पोक्खरणी किच्चगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए ?० सेसं तं चेव जाव विउस्सति वा। [सु. २६. विउव्वणाकरणे माइत्तनिरूवणं] २६. से भंते ! किं मायी विउव्वइ, अमायी विउव्वइ ? गोयमा ! मायी विउव्वति, नो अमायी विउव्वति।[सु. २७. विउव्वणविसए मायं अमायं पडुच्च अणाराहणा-आराहणानिरूवणं]२७. मायी णं तस्स ठाणस्स अणालोइय० एवं जहा ततियसए चउत्थुद्देसए (स० ३ उ० ४ सु० १९) जाव अत्थि तस्स आराहणा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरति। ॥१३.९॥ ☆☆☆ **दसमो उद्देसओ 'समुग्घाए'** ☆☆☆ [सु. १. समुग्घायसरूवावगमत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] १. कति णं भंते ! छाउमत्थिया समुग्घाया पन्नत्ता ? गोयमा ! छ छाउमत्थिया समुग्घाया पन्नत्ता, तं जहा वेदणासमुग्घाते, एवं छाउमत्थिया समुग्घाता नेतव्वा जहा पण्णवणाए जाव आहारगसमुग्घातो त्ति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति। ॥दसमो ॥१३.१०॥☆☆☆ **॥तेरसमं सयं समत्तं॥** 卐卐卐 **चोद्दसमं सयं** 卐卐卐 [सु. १ चोद्दसमसयस्स उद्देसनामपरूवणा] १. चर १ उम्माद २ सरीरे ३ पोग्गल ४ अगणी ५ तहा किमाहारे ६। संसिट्ठमंतरे ७-८ खलु अणगारे ९ केवली चेव १० ॥१॥ ☆☆☆ **पढमो उद्देसओ 'चरम'** ☆☆☆[सु. २ पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ] २. रायगिहे जाव एवं वयासी [सु. ३-५. भवियप्पणो अणगारस्स लेस्सं पडुच्च चरम-परमदेवावासंतरोववायपरूवणा]३. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा चरमं देवावासं वीतिक्कंते, परमं देवावासं असंपत्ते, एत्थ णं अंतरा कालं करेज्जा, तस्स णं भंते ! कहिं गती, कहिं उववाते पन्नत्ते ? गोयमा ! जे से तत्थ परिपस्सओ तल्लेसा देवावासा तहिं तस्स गती, तहिं तस्स उववाते पन्नत्ते। से य तत्थगए विराहेज्जा कम्मलेस्सामेव पडिपडइ, से य तत्थ गए नो विराहेज्जा तामेव लेस्सं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। ४. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा चरमं असुरकुमारावासं वीतिक्कंते, परमं असुरकुमारा० ? एवं चेव। जाव थणियकुमारावासं, जोतिसियावासं। एवं वेमाणियावासं जाव विहरइ। [सु. ६-७. चउवीसइदंडएसु सिग्घगइं पडुच्च परूवणा] ६. नेरइयाणं भंते ! कहं सीहा गती ? कहं सीहे गतिविसए पन्नत्ते ? गोयमा ! से जहानामए केयि पुरिसे तरूणे बलवं जाव निउणसिप्पोवगए आउंटियं बाहं पसारेज्जा, पसारियं वा बाहं आउंटेज्जा, विक्खिण्णं वा मुट्ठिं साहरेज्जा, साहरियं वा मुट्ठिं विक्खिरेज्जा, उम्मिसियं वा अच्छिं निमिसेज्जा, निमिसितं वा अच्छिं उम्मिसेज्जा, भवेयारूवे ? णो तिणट्ठे समट्ठे। नेरइया णं एगसमएण वा दुसमएण वा तिसमएण वा विग्गहेणं उववज्जंति, नेरइयाणं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पन्नत्ते। ७. एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं एगिंदियाणं चउसमइए विग्गहे भाणियव्वे। सेसं तं चेव। [सु. ८-९. चउवीसइदंडएसु अणंतरोववन्नत्ताइपरूवणं] ८. (१) नेरइया णं भंते ! किं अणंतरोववन्नगा, परंपरोववन्नगा, अणंतरपरंपरअणुववन्नगा वि ? गोयमा ! नेरइया अणंतरोववन्नगा वि, परंपरोववन्नगा वि, अणंतरपरंपरअणुववन्नगा वि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव अणंतरपरंपरअणुववन्नगा वि ? गोयमा ! जे णं नेरइया पढमसमयोववन्नगा ते णं नेरइया अणंतरोववन्नगा, जे णं नेरइया अपमसमयोववन्नगा ते णं नेरइया परंपरोववन्नगा, जे णं नेरइया विग्गहगतिसमावन्नगा ते णं नेरइया अणंतरपरंपरअणुववन्नगा। सेतेणट्ठेणं जाव अणुववन्नगा वि। ९. एवं निरंतरं जाव वेमाणिया। [सु. १०-१३. अणंतरोववन्नगाईसु चउवीसइदंडएसु आउयबंधपरूवणा]१०. अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति ? तिरिक्ख-मणुस्स -देवाउयं पकरेंति ? गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, जाव नो देवाउयं पकरेंति ? ११. परंपरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति, जाव देवाउयं पकरेंति ? गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति। १२. अणंतरपरंपरअणुववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं प० पुच्छा। गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, जाव नो देवाउयं पकरेंति। १३. एवं जाव वेमाणिया, नवरं पंचिदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य परंपरोववन्नगा चत्तारि वि आउयाइं पकरेंति। सेसं तं चेव। [सु. १४-१५. चउवीसदंडएसु अणंतरनिग्गयत्ताइपरूवणा] १४. (१) नेरइया णं भंते ! किं

अणंतरनिग्गया परंपरनिग्गया अणंतरपरंपरअनिग्गया ? गोयमा ! नेरइया णं अणंतरनिग्गया वि जाव अणंतरपरंपरअनिग्गया वि। (२) से केणट्ठेणं जाव अणिग्गता वि ? गोयमा ! जे णं नेरइया पढमसमयनिग्गया ते णं नेरइया अणंतरनिग्गया, जे णं नेरइया अपढमसमयनिग्गया ते णं नेरइया परंपरनिग्गया, जे णं नेरइया विग्गहगतिसमावन्नगा ते णं नेरइया अणंतरपरंपरअणिग्गया। सेतेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अणिग्गता वि। १५. एवं जाव वेमाणिया। [सु. १६-१९. अणंतरनिग्गयाईसु चउवीसइदंडएसु आउयबंधपरूवणा] १६. अणंतरनिग्गया णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति, जाव देवाउयं पकरेंति ? गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति। १७. परंपरनिग्गया णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं० पुच्छा। गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेंति, जाव देवाउयं पि पकरेंति। १८. अणंतरपरंपरअणिग्गया णं भंते ! नेरइया० पुच्छा०। गोयमा ! नो नेरइयाउयं पि पकरेंति, जाव नो देवाउयं पि पकरेंति। १९. निरवसेसं जाव वेमाणिया। [सु. २०. चउवीसइदंडएसु अणंतरखेदोववन्नगत्ताइं-अणंतरखेदनिग्गयत्ताइपरूवणा आउयबंधपरूवणा य] २०. नेरइया णं भंते ! किं अणंतरखेदोववन्नगा, परंपरखेदोववन्नगा, अरंतरपरंपरखेदाणुववन्नगा ? गोयमा ! नेरइया०, एवं एतेणं अभिलावेणं ते चेव चत्तारि दंडगा भाणियव्वा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति। ☆☆☆।।चोदसमसयस्स पढमो ।।१४.१।।☆☆☆ **बीओ उद्देसओ 'उम्माद'** ☆☆☆ [सु. १. उम्मायस्स जक्खावेस -मोहणिज्जसमुब्भवरूवं भेयजुयं तस्सरूवं च] १. कतिविधे णं भंते ! उम्मादे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा जक्खाएसे य मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएणं। तत्थ णं जे से जक्खाएसे से णं सुहवेयणतराए चेव, सुहविमोयणतराए चेव। तत्थ णं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं से णं दुहवेयतराए चेव, दुहविमोयणतराए चेव। [सु. २-६. चउवीसदंडएसु सहेउया उम्मायपरूवणा] २. (१) नेरइयाणं भंते ! कतिविधे उम्मादे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे उम्मादे पन्नत्ते, तं जहा जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएणं। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'नेरइयाणं दुविहे उम्मादे पन्नत्ते, तं जहा जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स जाव उदएणं' ? गोयमा ! देवे वा से असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से णं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्मायं पाउणिज्जा। मोहणिज्जस्स वा कम्मस्स उदएणं मोहणिज्जं उम्मायं पाउणेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव उधएणं। ३. असुरकुमाराणं भंते ! कतिविधे उम्मादे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे उम्माए पन्नत्ते। एवं जहेव नेरइयाणं, नवरं देवे वा से महिड्ढियतराए असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से णं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा०। सेसं तं चेव। सेतेणट्ठेणं जाव उदएणं। ४. एवं जाव थणियकुमाराणं। ५. पुढविकाइयाणं जाव मणुस्साणं, एतेसिं जहा नेरइयाणं। ६. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं। [सु. ७. सामावियवट्ठिपरूवणं] ७. अत्थि णं भंते ! पज्जन्ने कालवासी वुट्ठिकायं पकरेति ? हंता, अत्थि। [सु. ८-१३. सक्कदेविंदादिचउव्विहदेवकयवुट्ठिसरूवनिरूवणं] ८. जाहे णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकायं काउकामे भवति से कहमियाणिं पकरेति ? गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया अब्भंतरपरिसए देवे सद्दावेति, तए णं ते अब्भंतरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा मज्झिमपरिसए देवे सद्दावेति, तए णं ते मज्झिमपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरपरिसए देवे सद्दावेंति, तए णं ते बाहिरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरबाहिरगे देवे सद्दावेंति, तए णं ते बाहिरबाहिरगा देवा सद्दाविया समाणा आभियोगिए देवे सद्दावेंति, तए णं ते जाव सद्दाविया समाणा वुट्ठिकाइए देवे सद्दावेंति, तए ण ते वुट्ठिकाइया देवा सद्दाविया समाणा वुट्ठिकायं पकरेंति। एवं खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकायं पकरेति। ९. अत्थि णं भंते ! असुरकुमारा वि देवा वुट्ठिकायं पकरेंति ? हंता, अत्थि। १०. किंपत्तियं णं भंते ! असुरकुमारा देवा वुट्ठिकायं पकरेंति ? गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो एएसि णं जम्मणमहिमासु वा, निक्खमणमहिमासु वा, नाणुप्पायमहिमासु वा परिनिव्वाणमहिमासु वा एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा वुट्ठिकायं पकरेंति। ११. एवं नागकुमारा वि। १२. एवं जाव थणियकुमारा। १३. वाणमंतर -जोतिसिय -वेमाणिया एवं चेव। [सु. १४-१७. ईसाणदेविंदादिचउव्विहदेवकयतमुकायसरूवनिरूवणं] १४. जाहे णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया तमुकायं कातुकामे भवति से कहमियाणिं पकरेति ? गोयमा ! ताहे चेव णं ईसाणे देविंदे देवराया अब्भिंतरपरिसए देवे सद्दावेति, तए णं ते अब्भिंतरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा एवं जहेव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सक्कस्स जाव तए णं ते आभियोगिया देवा सद्दाविया समाणा तमुकाइए देवे सद्दावेंति, तए णं ते तमुकाइया देवा सद्दाविया समाणा तमुकायं पकरेंति, एवं खलु गोयमा ! ईसाणे देविंदे देवराया तमुकायं पकरेति । १५. अत्थि णं भंते ! असुरकुमारा वि देवा तमुकायं पकरेंति ? हंता, अत्थि । १६. किंपत्तियं णं भंते ! असुरकुमारा देवा तमुकायं पकरेंति ? गोयमा ! किड्डारतिपत्तियं वा, पडिणीयविमोहणट्टयाए वा, गुत्तिसारक्खणहेउं वा अप्पणो वा सरीरपच्छायणट्टयाए, एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा वि देवा तमुकायं पकरेंति । १७. एवं जाव वेमाणिया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ । ॥१४.२॥ ☆☆☆ **तइओ उद्देसओ 'सरीरे'** ☆☆☆ [सु. १-३. महाकायचउव्विहदेवे पडुच्च भावियऽप्पअणगारसरीरमज्झवइक्कम-अवइक्कमनिरूवणं] १. (१) देवे णं भंते ! महाकाये महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं वीयीवएज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए वीतीवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीतीवएज्जा । (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'अत्थेगइए वीतीवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीतीवएज्जा' ? गोयमा ! देवा दुविहा पन्नत्ता, तं जहा मायीमिच्छादिट्ठीउववन्नगा य, अमायीसम्मद्दिट्ठीउववन्नगा य । तत्थ णं जे से मायीमिच्छद्दिट्ठीउववन्नए देवे से णं अणगारं भावियप्पाणं पासति, पासित्ता नो वंदति, नो नमंसति, नो सक्कारेइ, नो सम्माणेति, नो कल्लाणं मंगलं देवतं जाव पज्जुवासति । से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा । तत्थ णं जे से अमायीसम्मद्दिट्ठिउववन्नए देवे, से णं अणगारं भावियप्पाणं पासति, पासित्ता वंदति नमंसति जाव पज्जुवासइ, से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं नो वीयीवएज्जा । सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव नो वीयीवएज्जा । २. असुरकुमारे णं भंते ! महाकाये महासरीरे०, एवं चेव । ३. एवं देवदंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणिए । [सु. ४-९. चउवीसइदंडएसु विणयं पडुच्च निरूवणं सु. ४. नेरइएसु विणयाभावनिरूवणं] ४. अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं सक्कारे ति वा सम्माणे ति वा किइकम्मे ति वा अब्भुट्ठाणे इ वा अंजलिपग्गहे ति वा आसाणाभिग्गहे ति वा आसणाणुप्पदाणे ति वा, एंतस्स पच्चुग्गच्छणया, ठियस्स पज्जुवासणया, गच्छंतस्स पडिसंसाहणया ? नो तिणट्ठे समट्ठे । [सु. ५-६. भवणवासीसु देवेसु विणयपरूवणं]५. अत्थि णं भंते ! असुरकुमाराणं सक्कारे ति वा सम्माणे ति वा जाव पडिसंसाहणता ? हंता, अत्थि । ६. एवं जाव थणियकुमाराणं । [सु. ७. एगिंदिय-विगलिंदिएसु विणयाभावनिरूवणं] ७. पुढविकाइयाणं जाव चउरिंदियाणं, एएसिं जहा नेरइयाणं । [सु. ८. पंचिंदियतिरिक्खेसु आसणाभिग्गह-आसणाणुप्पदाणवज्जविणयनिरूवणं] ८. अत्थि णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं सक्कारे ति वा जाव पडिसंसाधणया ? हंता, अत्थि, नो चेव णं आसणाभिग्गहे ति वा, आसणाणुप्पयाणे ति वा । [सु. ९. मणुस्स-जोतिसिय-वेमाणियदेवेसु विणयनिरूवणं] ९. मणुस्साणं जाव वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं । [सु. १०-१३. अप्पिड्डिय-महिड्डिय-समड्डियदेव-देवीणं परोप्परमज्झवइक्कम-अवइक्कमनिरूवणं] १०. अप्पिड्ढिए णं भंते ! देवे महिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा ? नो तिणट्ठे समट्ठे । ११. समिड्ढिए णं भंते ! देवे समिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा ? णो तिणमट्ठे समट्ठे, पमत्तं पुण वीतीवएज्जा । १२. से णं भंते ! किं सत्थेणं अक्कमित्ता पभू, अणक्कमित्ता पभू ? गोयमा ! अक्कमित्ता पभू, नो अणक्कमित्ता पभू । १३. से णं भंते ! किं पुव्विं सत्थेणं अक्कमित्ता पच्छा वीतीवएज्जा, पुव्विं वीतीवतित्ता पच्छा सत्थेणं अक्कमेज्जा ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा दसमसए आतिड्ढीउद्देसए (स० १० उ० ३ सु० ६-१७) तहेव निरवसेसं चत्तारि दंडगा भाणितव्वा जाव महिड्ढीया वेमाणिणी अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए । [सु. १४-१७. नेरइएसु पोग्गलपरिणाम-वेयणापरिणामनिरूवणं लेसाइसेसपदज्जाणणत्थं च जीवाभिगमसुत्तावलोयणनिद्देसो] १४. रयणप्पभपुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं पोग्गलपरिणामं पच्चभवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं । १५. एवं जाव अहेसत्तमापुढविनेरइया । १६. एवं वेदणापरिणामं । १७. एवं जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउद्देसए, जाव अहेसत्तमापुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं परिग्गहसण्णापरिणामं पच्चणुभवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥१४.३॥ ☆☆☆ **चउत्थो उद्देसओ 'पोग्गल'** ☆☆☆ [सु. १-४. अतीत-वट्टमाण-अणागयकालं पडुच्च विविहफासाइपरिणयस्स पोग्गलस्स खंधस्स य एगवण्णाइपरूवणं] १. एस णं भंते ! पोग्गले तीतमणंतं सासयं समयं समयंलुक्खी, समयं अलुक्खी, समयं लुक्खी वा अलुक्खी वा, पुव्विं च णं करणेणं अणेगवण्णं अणेगरूवं परिणामं परिणमइ, अह से परिणामे निज्जिणणे भवति तओ पच्छा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगवण्णे एगरूवे सिया ? हंता, गोयमा ! एस णं पोग्गले तीत०, तं चेव जाव एगरूवे सिया। २. एस णं भंते ! पोग्गले पडुप्पन्नं सासयं समयं० ? एवं चेव। ३. एवं अणागयमणंतं पि। ४. एस णं भंते ! खंधे तीतमणंतं० ? एवं चेव खंधे वि जहा पोग्गले। [सु. ५-७. अतीत-वट्टमाण-अणागयकालं पडुच्च विविहभावपरिणयस्स जीवस्स एगभावाइपरूवणं ५. एस णं भंते ! जीवे तीतमणंतं सासयं समयं समयं दुक्खी, समयं अदुक्खी, समयं दुक्खी वा अदुक्खी वा ? पुव्विं च णं करणेणं अणेगभावं अणेगभूतं परिणामं परिणमइ, अह से वेयणिज्जे निज्जिण्णे भवति ततो पच्छा एगभावे एगभूते सिया ? हंता, गोयमा ! एस णं जीवे जाव एगभूते सिया। ६. एवं पडुप्पन्नं सासयं समयं। ७. एवं अणागयमणंतं सासयं समयं। [सु. ८-९. परमाणुपोग्गलस्स सासयत्त-असासयत्त-चरमत्त-अचरमत्तनिरूवणं]८. (१) परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं सासए, असासए ? गोयमा ! सिय सासए, सिय असासए। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'सिय सासए, सिय असासए' ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासए, वण्णपज्जवेहिं जाव फासपज्जवेहिं असासए। सेतेणट्ठेणं जाव सिय असासए। ९. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं चरिमे, अचरिम ? गोयमा ! दव्वादेसेणं नो चरिमे, अचरिमे; खेत्तादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे; कालादेसेणं सिय चरिमे,सिय अचरिमे; भावादसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे। [सु. १०. परिणामभेदादिजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] १०. कतिविधे णं भंते ! परिणामे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे परिणामे पन्नत्ते, तं जहा जीवपरिणामे य, अजीवपरिणामे य। एवं परिणामपदं निरवसेसं भाणियव्वं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति। ॥१४.४॥ **☆☆☆ पंचमो उद्देसओ 'अगणी' ☆☆☆** [सु. १-९. चउवीसइदंडएसु अगणिकायमज्झवइक्कम-अवइक्कमं पडुच्च निरूवणं] १. (१) नेरइए णं भंते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए वीतीवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीतीवएज्जा। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'अत्थेगतिए वीतीवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीतीवएज्जा ? गोयमा ! नेरइया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा विग्गहगतिसमावन्नगा य अविग्गहगतिसमावन्नगा य। तत्थ णं जे से विग्गहगतिसमावन्नए नेरतिए से णं अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा। से णं तत्थ णं जे से अविग्गहगतिसमावन्नए नेरइए से णं अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं णो वीतीवएज्जा। सेतेणट्ठेणं जाव नो वीतीवएज्जा। २. (१) असुरकुमारे णं भंते ! अगणिकायस्स० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिए वीतीवएज्जा, अत्थगतिए नो वीतीवएज्जा। (२) से केणट्ठेणं जाव नो वीतीवएज्जा ? गोयमा ! असुरकुमारा दुविहा पन्नत्ता, तं जहा विग्गहगतिसमावन्नगा य अविग्गहगतिसमावन्नगा य। तत्थ णं जे से विग्गहगतिसमावन्नए असुरकुमारे से णं एवं जहेव नेरतिए जाव कमति। तत्थ णं जे से अविग्गहगतिसमावन्नए असुरकुमारे से णं अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा, अत्थेगइए नो वीइव,ज्जा। जे णं वीतीवएज्जा से णं तत्थ झियाएज्जा ? नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमति। से तेणट्ठेणं०। ३. एवं जाव थणियकुमारे। ४. एगिंदिया जहा नेरइया। ५. बेइंदिया णं भंते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं० ? जहा असुरकुमारे तहा बेइंदिए वि। नवरं जे णं वीतीवएज्जा से णं तत्थ झियाएज्जा ? हंता, झियाएज्जा। सेसं तं चेव। ६. एवं जाव चउरिंदिए। ७. (१) पंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! अगणिकाय० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिए वीतीवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा। (२) से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा विग्गहगतिसमावन्नगा य अविग्गहगतिसमावन्नगा य। विग्गहगतिसमावन्नए जहेव नेरइए जाव नो खलु तत्थ सत्थं कमइ। अविग्गहगइसमावन्नगा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा इड्ढिप्पत्ता य अणिड्ढिप्पत्ता य। तत्थ णं जे से इड्ढिप्पत्ते पंचेंदियतिरिक्खजोणिए से णं अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीयीवएज्जा। जे णं वीतीवएज्जा से णं तत्थ झियाएज्जा ? नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ। तत्थ णं जे से अणिड्ढिप्पत्ते पंचिंदियतिरिक्खजोणि से णं अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा। जे णं वीतीवएज्जा से णं तत्थ झियाएज्जा ? हंता, झियाएज्जा ! सेतेणट्ठेणं जाव नो वीतीवएज्जा। ८. एवं मणुस्से वि। ९. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिए जहा असुरकुमारे। [सु. १०-२०. चउवीसइदंडएसु अणिट्ठ-इट्ठसद्दाइदसठाणगयठाणसंखानिरूवणं] १०. नेरतिया दस ठाणाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा अणिट्ठा सद्दा, अणिट्ठा रूवा, जाव अणिट्ठा फासा, अणिट्ठा गती, अणिट्ठा ठिती, अणिट्ठे लायण्णे, अणिट्ठे जसोकित्ती, अणिट्ठे

For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उट्ठाणकम्मबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमे । ११. असुरकुमारा दस ठाणाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा इट्ठा सद्दा, इट्ठा रूवा जाव इट्ठे उट्ठाणकम्मबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमे । १२. एवं जाव थणियकुमारा । १३. पुढविकाइया छट्ठाणाइं पच्चणुभवमाणा विहरति, तं जहा इट्ठाणिट्ठा फासा, इट्ठाणिट्ठा गती, एवं जाव परक्कमे । १४. एवं जाव वणस्सइकाइया । १५. बेइंदिया सत्त ट्ठाणाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा इट्ठाणिट्ठा रसा, सेसं जहा एगिंदियाणं । १६. तेइंदिया णं अट्ठ ट्ठाणाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा इट्ठाणिट्ठा गंधा, सेसं जहा बेइंदियाणं । १७. चउरिंदिया नव ट्ठाणाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा इट्ठाणिट्ठा रूवा, सेसं जहा तेइंदियाणं । १८. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दस ट्ठाणाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा इट्ठाणिट्ठा सद्दा जाव परक्कमे । १९. एवं मणुस्सा वि । २०. वाणमंतर -जोतिसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा । [सु. २१-२२. देवस्स तिरियपव्वतउल्लंघणविसए बज्झपोग्गलाऽणायाणआयाणेहिं अणुक्कमेण असामत्थं सामत्थं च] २१. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले अपरियादिइत्ता पभू तिरियपव्वतं वा तिरियभित्तिं बा उल्लंघेत्तए वा पल्लंघेत्तए वा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । २२. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियादिइत्ता पभू तिरियप० जाव पल्लंघेत्तए वा ? हंता, पभू । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥१४.५॥ ★★★ **छट्ठो उद्देसओ 'किमाहारे'** ★★★ [सु. १. छट्ठुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वदासी [सु. २-३. चउवीसइदंडएसु आहार-परिणाम -जोणि-ठितिपरूवणं] २. नेरतिया णं भंते ! किमाहारा, किंपरिणामा, किंजोणीया, किंठितीया पन्नत्ता ? गोयमा ! नेरइया णं पोग्गलाहारा, पोग्गलपरिणामा, पोग्गलजोणीया, पोग्गलठितीया, कम्मोवगा, कम्मनियाणा, कम्मट्ठितीया, कम्मुणा मेव विप्परियासमेंति । ३. एवं जाव वेमाणिया । [सु. ४-५. चउवीसइदंडएसु वीचिदव्व-अवीचिदव्वाहारपरूवणं] ४. (१) नेरइया णं भंते ! किं वीचिदव्वाइं आहारेंति, अवीचिदव्वाइं आहारेंति ? गोयमा ! नेरतिया वीचिदव्वाइं पि आहारेंति, अवीचिदव्वाइं पि आहारेंति । (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'नेरतिया वीचि० तं चेव जाव आहारेंति' ? गोयमा ! जे णं नेरइया एगपदेसूणाइं पि दव्वाइं आहारेंति ते णं नेरतिया वीचिदव्वाइं आहारेंति, जे णं नेरतिया पडिपुण्णाइं दव्वाइं आहारेंति ते णं नेरइया अवीचिदव्वाइं आहारेंति । सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति जाव आहारेंति । ५. एवं जाव वेमाणिया । [सु. ६-९. सक्कदेविंदाइअच्चुयइंदपज्जंतेसु इंदेसु भोगनिरूवणं] ६. जाहे णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजिउकामे भवति से कहमिदाणिं पकरेति ? गोयमा ! ग्रं० ९००० ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया एगं महं नेमिपडिरूवगं विउव्वति, एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं जाव अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं, तस्स णं नेमिपडिरूवगस्स अवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पन्नत्ते जाव मणीणं फासो । तस्स णं नेमिपडिरूवगस्स अवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पन्नत्ते जाव मणीणं फासो । तस्स णं नेमिपडिरूवगस्स बहुमज्झदेसेभागे, तत्थ णं महं एगं पासायवडेंसगं विउव्वति, पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसिय० वण्णओ जाव पडिरूवं । तस्स णं पासायवडेंसगस्स उल्लोए पउमलयाभत्तिचित्ते जाव पडिरूवे । तस्स णं पासायवडेंसगस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिमागे जाव मणीणं फासो मणिपेढिया अट्ठजोयणिया जहा वेमाणियाणं । तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं महं एगे देवसयणिज्जे विउव्वति । सयणिज्जवण्णओ जाव पडिरूवे । तत्थ णं से सक्के देविंदे देवराया अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, दोहि य अणिएहिं नट्टाणिएण य गंधव्वाणिएण य -सद्धिं महयाहयनट्ट जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति । ७. जाहे णं ईसाणे देविदे देवराया दिव्वाइं० जहा सक्के तहा ईसाणे वि निरवसेसं । ८. एवं सणंकुमारे वि, नवरं पासायवडेंसओ छज्जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, तिण्णि जोयणसयाइं विक्खंभेणं । मणिपेढिया तहेव अट्ठजोयणिया । तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगं सीहासणं विउव्वति, सपरिवारं भाणियव्वं । तत्थ णं सणंकुमारे देविंदे देवराया बावत्तरीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव चउहि य बावत्तरीहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं बहूहिं सणंकुमारकप्पवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महया जाव विहरति । ९. एवं जहा सणंकुमारे तहा जाव पाणतो अच्चुतो, नवरं जो जस्स परिवारो सो तस्स भाणियव्वो । पासायउच्चत्तं जं सएसु कप्पेसु विमाणाणं उच्चंत्तं, अद्धद्धं वित्थारो जाव अच्चुयस्स नव जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धपंचमाइं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोयणसयाइं विक्खंभेणं, तत्थ णं गोयमा ! अच्चुए देविंदे दवराया दसहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव विहरति। सेसं तं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।॥१४.६॥

☆☆☆ सत्तमो उद्दसओ 'संसिद्ध' ☆☆☆ [सु. १. सत्तमुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव परिसा पडिगया। [सु. २ केवललाभसंसयसमावन्नं गोयमं पइ भगवओ ससमाणत्तपरूवणा]२. 'गोयमा !' दी समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी चिरसंसिट्ठोऽसि मे गोयमा !, चिरसंथुतोऽसि मे गोयमा !, चिरपरिचिओऽसि मे गोयमा !, चिरझुसिओऽससि मे गोयमा !, चिराणुगओऽसि मे गोयमा !, चिराणुवत्ती सि मे गोयमा !, अणंतरं देवलोए, अणंतरं माणुस्सए भवे, किं परं मरणा कायस्स भेदा इतो चुता, दो वि तुल्ला एगट्ठा अविसेसमणाणत्ता भविस्सामो। [सु. ३. अणुत्तरदेवेसु बिइयसुत्तवत्तव्वजाणणानिरूवणं] ३. (१) जहा णं भंते ! वयं एयमट्ठं जाणामो पासामो तहा णं अणुत्तरोववातिया वि देवा एयमट्ठं जाणंति पासंति ? हंता, गोयमा ! जहा णं वयं एयमट्ठं जाणामो पासामो तहा अणुत्तरोववातिया वि देवा एयमट्ठं जाणंति पासंति। (२) से केणट्ठेणं जाव पासंति ? गोयमा ! अणुत्तरोववातियाणं अणंताओ मणोदव्वग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमन्नागयाओ भवंति, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति जाव पासंति। [सु. ४. तुल्लस्स भेयछक्कं] ४. कविविधे णं भंते ! तुल्लए पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहे तुल्लए पन्नत्ते, तं जहा दव्वतुल्लए खेत्ततुल्लए कालतुल्लए भवतुल्लए भावतुल्लए संठाणतुल्लए। [सु. ५. दव्वतुल्लनिरूवणं] ५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'दव्वतूल्लए, दव्वतुल्लए' ? गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वतो तुल्ले, परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलवतिरित्तस्स दव्वओ णो तुल्ले। दुपएसिए खंधे दुपएसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, दुपएसिए खंधे दुपएसियवतिरित्तस्स खंधस्स दव्वओ णो तुल्ले। एवं जाव दसपएसिए। तुल्लसंखेज्जपएसियस्स खंधे तुल्लसंखेज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, तुल्लसंखेज्जपएसिए खंधे तुल्लसंखेज्जपएसियवतिरित्तस्स खंधस्स दव्वओ णो तुल्ले। एवं तुल्लअसंखेज्जपएसिए वि। एवं तुल्लअणंतपदेसिए वि। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति 'दव्वतुल्लए, दव्वतुल्लए'। [सु. ६. खेत्ततुल्लनिरूवणं]६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'खेत्ततुल्लए, खेत्ततुल्लए' ? गोयमा ! एगपदेसोगाढे पोग्गले एगपदेसोगाढस्स पोग्गलस्स खेत्तओ तुल्ले, एगपदेसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढवतिरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ णो तुल्ले। एवं जाव दसपदेसोगाढे, तुल्लसंखेज्जपदेसोगाढे० तुल्लसंखेज्ज०। एवं तुल्लअसंखेज्जपदेसोगाढे वि। सेतेणट्ठेणं जाव खेत्ततुल्लए। [सु. ७. कालतुल्लनिरूवणं] ७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'कालतुल्लए, कालतुल्लए' ? गोयमा ! एगसमयठितीए पोग्गले एग० कालओ तुल्ले, एगसमयठितीए पोग्गले एगसमयठितीयवतिरित्तस्स पोग्गलस्स कालओ णो तुल्ले। एवं जाव दससमयट्ठितीए। तुल्लसंखेज्जसमयठितीए एवं चेव। एवं तुल्लअसंखेज्जसमयट्ठितीए वि। से तेणट्ठेणं जाव कालतुल्लए, कालतुल्लए। [सु. ८. भवतुल्लनिरूवणं] ८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'भवतुल्लए, भवतुल्लए' ? गोयमा ! नेरइए नेरइयस्स भवट्ठयाए तुल्ले, नेरइए नेरइयवतिरित्तस्स भवट्ठयाए नो तुल्ले। तिरिक्खजोणिए एवं चेव। एवं मणुस्से। एवं देवे वि। सेतेणट्ठेणं जाव भवतुल्लए, भवतुल्लए। [सु. ९. भावतुल्लनिरूवणं] ९. से केणट्ठुणं भंते ! एवं वुच्चइ 'भावतुल्लए, भावतुल्लए' ? गोयमा ! एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालगस्स पोग्गलस्स भावओ तुल्ले, एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालगवतित्तस्स पोग्गलस्स भावओ णो तुल्ले। एवं जाव दसगुणकालए। तुल्लसंखेज्जगुणकालए पोग्गले तुल्लसंखेज्ज०। एवं तुल्लअसंखेज्जगुणकालए वि। एवं तुल्लअणंतगुणकालए वि। जहा कालए एवं नीलए लोहियए हालिद्दए सुकिल्लए। एवं सुब्भिगंधे दुब्भिगंधे। एवं तित्ते जाव महुरे। एवं कक्खडे जाव लुक्खे। उदइए भावे उदइयस्स भावस्स भावओ तुल्ले, उदइए भावे उदइयभाववइरित्तस्स भावस्स भावओ नो तुल्ले। एवं उवसमिए खइए खयोवसमिए पारिणामिए, सन्निवातिए भावे सन्निवातियस्स भावस्स। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति 'भावतुल्लए, भावतुल्लए'। [सु. १०. संठाणतुल्लनिरूवणं] १०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'संठाणतुल्लए, संठाणतुल्लए' ? गोयमा ! परिमंडले संठाणे परिमंडलस्स संठाणस्स संठाणओ तुल्ले, परिमंडले संठाणे परिमंडलसंठारवतिरित्तस्स संठाणस्स संठारओ नो तुल्ले। एवं वट्टे तंसे चउरंसे आयए। समचउरंससंठाणे समचउरंस्स संठाणस्स संठाणओ तुल्ले, दमचउरंसे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संठाणे समचउरंससंठाणवतिरित्तस्स संठाणस्स संठाणओ नो तुल्ले। एवं परिमंडले वि। एवं जाव हुंडे। से तेणट्ठेणं जाव संठाणतुल्लए, संठाणतुल्लए। [सु. ११. मूढस्स अमूढस्स य अणसणिअणगारस्स अज्झवसायं पडुच्च आहारनिरूवणं]११. (१) भत्तपच्चक्खायए णं भंते ! अणगारे मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने आहारमाहारेइ, अहे णं वीससाए कालं करेति ततो पच्छा अमुच्छिते अगिद्धे जाव अणज्झोववन्ने आहारमाहारेइ ? हंता, गोयमा ! भत्तपच्चक्खायए णं अणगारे० तं चेव। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'भत्तपच्चक्खायए णं अण' तं चेव गोयमा ! भत्तपच्चक्खायए णं अणगारे मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने आहारे भवइ, अहे णं वीससाए कालं करेइ तओ पच्छा अमुच्छिते जाव आहारे भवति। सेतेणट्ठेणं गोयमा ! जाव आहारमाहारेति। [सु. १२. लवसत्तमदेवसरूवं] १२. (१) अत्थि णं भंते ! 'लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा' ? हंता, अत्थि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा' ? गोयमा ! से जहानामए केयि पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए सालीण वा वीहीण व गोधूमाण वा जवाण वा जवजवाण वा पिक्काणं परियाताणं हरियाणं हरियकंडाणं तिक्खेणं णवपज्जणएणं असियएणं पडिसाहरिया पडिसाहरिया पडिसंखिविय पडिसंखिविय जाव 'इणामेव इणामेव' त्ति कट्टु सत्त लए लएज्जा, जति णं गोयमा ! तेसिं देवाणं एवतियं कालं आउए पहुप्पंते तो णं ते देवा तेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्झंता जाव अंतं करेंता। सेतेणट्ठेणं जाव लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा। [सु. १३-१४. अणुत्तरोववाइयदेवसरूवं]१३. (१) अत्थि णं भंते ! अणुत्तरोववातिया देवा, अणुत्तरोववातिया देवा ? हंता, अत्थि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'अणुत्तरोववातिया देवा, अणुत्तरो ववातिया देवा' ? गोयमा ! अणुत्तरोववातियाणं देवाणं अणुत्तरा सद्दा जाव अणुत्तरा फासा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ अणुत्तरोववातिया देवा, अणुत्तरोववातिया देवा। १४. अणुत्तरोववातिया णं भंते ! देवा केवतिएणं कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववातियदेवत्ताए उववन्ना ? गोयमा ! जावतियं छट्ठभत्तिए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतिएणं कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववातिया देवा अणुत्तरोववातियदेवत्ताए उववन्ना। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१४.७॥ **☆☆☆ अट्ठमो उद्देसओ 'अंतरे' ☆☆☆** [सु. १-३. सत्तण्हं नरयपुढवीणं परोप्परं अंतरं] १. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए य पुढवीए केवतियं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते। २. सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए वालुयप्पभाए य पुढवीए केवतियं० ? एवं चेव। ३. एवं जाव तमाए अहेसत्तमाए य। [सु. ४. अहेसत्तमाए नरयपुढवीए अलोगस्स य अंतरं] ४. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए अलोगस्स य केवतियं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते। [सु. ५. रयणप्पभाए नरयपुढवीए जोतिसस्स य अंतरं] ५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए जोतिसस्स य केवतियं० पुच्छा ! गोयमा ! सत्तनउए जोयणसए अबाहाए अंतरे पन्नत्ते। [सु. ६. जोतिसस्स सोहम्मीसाणाण य अंतरं] ६. जोतिसस्स णं भंते ! सोहम्मीसाणाण य कप्पाणं केवतियं० पुच्छा। गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणाइं जाव अंतरे पन्नत्ते। [सु. ७-१५. वेमाणियदेवलोगाणं परोप्परं अंतरं] ७. सोहम्मीसाणाणं भंते ! सणंकुमार-माहिंदाण य केवतियं० ? एवं चेव। ८. सणंकुमार-माहिंदाणं भंते ! बंभलोगस्स य कप्पस्स केवतियं० ? एवं चेव। ९. बंभलोगस्स णं भंते ! लंतगस्स य कप्पस्स केवतियं० ? एवं चेव। १०. लंतयस्स णं भंते ! महासुक्कस्स य कप्पस्स केवतियं० ? एवं चेव। ११. एवं महासुक्कस्स सहस्सारस्स य। १२. एवं सहस्सारस्स आणय -पाणयाण य कप्पाणं। १३. एवं आणय -पाणयाण आरणऽच्चुयाण य कप्पाणं। १४. एवं आरणऽच्चुताणं गेवेज्जविमाणाण य। १५. एवं गेवेज्जविमाणाणं अणुत्तरविमाणाण य। [सु. १६. अणुत्तरविमाणाणं ईसिपब्भाराए य पुढवीए अंतरं]१६. अणुत्तरविमाणाणं भंते ! ईसिपब्भाराए य पुढवीए केवतिए० पुच्छा। गोयमा ! दुवालसजोयणे अबाहाए अंतरे पन्नत्ते। [सु. १७. ईसिपब्भाराए पुढवीए अलोगस्स य अंतरं] १७. ईसिपब्भाराए णं भंते ! पुढवीए अलोगस्स य केवितिए अबाहाए० पुच्छा। गोयमा ! देसूणं जोयणं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते। [सु. १८-२०. भगवंतपरूवियं सालरुक्ख-साललट्ठिया -उबरलट्ठियाणं दुभवंतरे मोक्खगमणं] १८. (१) एस णं भंते ! सालरुक्खए उण्हाभिहते तण्हाभिहए दवग्गिजालाभिहए कालमासे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति, कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! इहेव रायगिहे नगरे सालरुक्खत्ताए पच्चायाहिति। से णं तत्थ अच्चियवंदियपूइयसक्कारियसम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिते यावि भविस्सइ। (२) से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गमिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति। १९. (१) एस णं भंते ! साललट्ठिया उण्हभिहया तण्हाभिहया दवग्गिजालाभिहया कालमासे जाव कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले महेसरीए नगरीए सामलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिति। सा णं तत्थ अच्चियवंदियपूइय जाव लाउल्लोइयमहिया यावि भविस्सइ। (२) से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं०, सेसं जहा सालरुक्खस्स जाव अंतं काहिति। २०. (१) एस णं भंते ! उंबरलट्ठिया उण्हभिहया तण्हाभिहया दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं जाव कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पाडलिपुत्ते नामं नगरे पाडिलिरुक्खत्तशए पच्चायाहिति। से णं तत्थ अच्चितवंदिय जाव भविस्सइ। (२) से णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता०, सेसं तं चेव जाव अंतं काहिति। [सु. २१. भगवंतपरूवियं अम्मडपरिव्वायगस्स सत्तण्हं सिस्ससयाणं आराहगत्तं] २१. तेणं कालेणं तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासिसया गिम्हकालसमयंसि एवं जहा उववातिए जाव आराहगा। [सु. २२. भगवंतपरूवियं अम्मडपरिव्वायगस्स दुभवंतरे मोक्खगमणं]२२. बहुजणे णं भंते ! अन्नमन्नस्स एवामाइक्खति ४-एवं खलु अम्मडे परिव्वाए कंपिल्लपुरे नगरे घरसते एवं जहा उववातिए अम्मडवत्तव्वया जाव दढप्पतिण्णे अंतं काहिति। [सु. २३. उदाहरणपुव्वयं देवाणं अव्वाबाहगत्तनिरूवणं]२३. (१) अत्थि णं भंते ! अव्वाबाहा देवा, अव्वाबाहा देवा ? हंता अत्थि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'अव्वाबाहा देवा, अव्वाबाहा देवा' ? गोयमा ! पभू णं एगमेगे अव्वाबाहे देवे एगमेगस्स पुरिसस्स एगमेगंसि अच्छिपत्तंसि दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेत्तए, णो चेव णं तस्स पुरिसस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएति, छविच्छेयं वा करेति, एसुहुमं च णं उवदंसेज्जा। से तेणट्ठेणं जाव अव्वाबाहा देवा, अव्वाबाहा देवा। [सु.२४ सक्कदेविंदकए पुरिससीसच्छेयणाइम्मि वि पुरिसस्स अणाबाहाइनिरूवणं]२४. (१) पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया पुरिसस्स सीसं सापाणिणा असिणा छिंदित्ता कमंडलुम्मि पक्खिवित्तए ? हंता, पभू। (२) से कहमिदाणिं पकरेइ ? गोयमा ! छिंदिया छिंदिया व णं पक्खिवेज्जा, भिंदिया भिंदिया व णं पक्खिवेज्जा, कुट्टिया कुट्टिया व णं पक्खिवेज्जा, चुण्णिया चुण्णिया व णं पक्खिवेज्जा, ततो पच्छा खिप्पामेव पडिसंघातेज्जा, नो चेव णं तस्स पुरिसस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएज्जा, छविच्छेयं पुण करेति, एसुहुमं च णं पक्खिवेज्जा। [सु. २५-२८. जंभयाणं देवाणं सरूवं भेया ठाणं ठिई य] २५.(१) अत्थि णं भंते ! जंभया देवा, जंभया देवा ? हंता, अत्थि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, 'जंभया देवा, जंभया देवा' ? गोयमा ! जंभगा णं देवा निच्चं पमुदितपक्कीलिया कंदप्परतिमोहणसीला, जे णं ते देवे कुद्धे पासेज्जा से णं महंतं अयसं पाउणेज्जा, जे णं ते देवे तुट्ठे पासेज्जा से णं महंतं जसं पाउणेज्जा, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! 'जंभगा देवा, जंभगा देवा'। २६. कतिविहा णं भंते ! जंभगा देवा पन्नत्ता ? गोयमा ! दसविहा पन्नत्ता, तं जहा अन्नजंभगा, पाणजंभगा, वत्थजंभगा, लेणजंभगा, सयणजंभगा, पुप्फजंभगा, फलजंभगा, पुप्फफलजंभगा, विज्जाजंभगा, अवियत्तिजंभगा। २७. जंभगा णं भंते ! देवा कहिं वसहिं उवेंति ? गोयमा ! सव्वेसु चेव दीहवेयड्ढेसु चित्तविचित्तजमगपव्वएसु कंचणपव्वएसु य, एत्थ णं जंभगा देवा वहिं उवेंति। २८. जंभगाणं भंते ! देवाणं केवतियं कलं ठिती पन्नत्ता ? गोयमा ! एगं पलिओवमं ठिती पन्नत्ता। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विरहति। ॥१४.८॥ **☆☆☆ नवमो उद्देसओ 'अणगारे' ☆☆☆** [सु. १. अप्पणो कम्मलेसं अजाणओ भावितप्पणो अणगारस्स सरीरिकम्मलेसाजाणणानिरूवणं]१. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा अप्पणो कम्मलेस्सं न जाणति, न पासति, तं पुण जीवं सरूविं सकम्मलेस्सं जाणइ, पासइ ? हंता, गोयमा ! अणगारे णं भावियप्पा अप्पणो जाव पासति। [सु. २-३. सकम्मलेस्साणं सरूवीणं पुग्गलाणं ओभासादिनिरूवणं] २. अत्थि णं भंते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासंति ४ ? हंता, अत्थि। ३. कयरे णं भंते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओभासंति जाव पभासेंति ? गोयमा ! जाओ इमाओ चंदिम-सूरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेस्साओ बहिया अभिनिस्सडाओ पभावेंति एए णं गोयमा ! ते सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेंति ४ । [सु. ४-११. रमणिज्जारमणिज्ज-इट्ठाणिट्ठाइपोग्गले पडुच्च चउवीसइदंडएसु परूवणं] ४. नेरतियाणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला ? गोयमा ! नो अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला । ५. असुरकुमाराणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला ? गोयमा ! अत्ता पोग्गला, णो अणत्ता पोग्गला । ६. एवं जाव थणियकुमाराणं । ७. पुविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! अत्ता वि पोग्गला, अणत्ता वि पोग्गला । ८. एवं जाव मणुस्साणं । ९. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं । १०. नेरतियाणं भंते ! किं इट्ठा पोग्गला, अणिट्ठा पोग्गला ? गोयमा ! नो इट्ठा पोग्गला, अणिट्ठा पोग्गला । ११. जहा अत्ता भणिया एवं इट्ठा वि, कंता वि, पिया वि, मणुन्ना वि भाणियव्वा । एए पंच दंडगा । [सु. १२. विउव्वियरूवसहस्सस्स महिड्डियस्स देवस्स भासासहस्सभासित्ताइपरूवणं] १२. (१) देवे णं भंते ! महिड्डीए जाव महेसक्खे रूवसहस्सं विउव्वित्ता पभू भासासहस्सं भासित्तए ? हंता, पभू । (२) सा णं भंते ! किं एगा भासा, भासासहस्सं ? गोयमा ! एगा णं सा भासा, णो खलु तं भासासहस्सं । [सु. १३-१६. सूरियस्स सरूव-अन्नयत्थ-पभा छाया-लेस्साणं सुभत्तनिरूवणं] १३. तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे अचिरुग्गतं बालसूरियं जासुमणाकुसुमपुंजप्पगासं लोहीतगं पासति, पासित्ता जातसड्ढे जाव समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव नमंसित्ता जाव एवं वयासी किमिदं भंते ! सूरिए, किमिदं भंते ! सूरियस्स अट्ठे ? गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभे सूरियस्स अट्ठे । १४. किमिदं भंते ! सूरिए, किमिदं भंते ! सूरियस्स पभा ? एवं चेव । १५. एवं छाया । १६. एवं लेस्सा । [सु. १७. विविहसामण्णपरियायसुहस्स विविहदेवसुहेण तुलणा] १७. जे इमे भंते ! अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति एते णं कस्स तेयलेस्सं वीतीवयंति ? गोयमा ! मासपरियाए समणे निग्गंथे वाणमंतराणं देवाणं तेयलेस्सं वीतीवयति । दुमासपरियाए समणे निग्गंथे असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं तेयलेस्सं वीयीवयति । एवं एतेणं अभिलावेणं तिमासपरियाए समणे० असुरकुमाराणं देवाणं(?असुरिंदाणं) तेय० । चतुमासपरियाए स० गह-नक्खत्त-तारारूवाणं जोतिसियाणं देवाणं तेय० । पंचमासपरियाए स० चंदिम-सूरियाणं जोतिसिंदाणं जोतिसराईणं तेय० । छम्मासपरियाए स० सोधम्मीसाणाणं देवाणं० । सत्तमासपरियाए० सणंकुमार-महिंदाणं देवाणं० । अट्ठमासपरियाए बंभलोग-लंतगाणं देवाणं तेयले० । नवमासपरियाए समणे० महासुक्क-सहस्साराणं देवाणं तेय० । दसमासपरियाए सम० आणय-पाणय-आरण-अच्चुयाणं देवाणं० । एक्कारसमासपरियाए० गेवेज्जगाणं देवाणं० । बारसमासपरियाए समणे निग्गंथे अणुत्तरोववातियाणं देवाणं तेयलेस्सं वीतीवयति । तेण परं सुक्के सुक्काभिजातिए भवित्ता ततो पच्छा सिज्झति जाव अंतं करेति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति । ॥ १४.९ ॥ ☆☆☆ **दसमो उद्देसओ 'केवली'** ☆☆☆ [सु. १-६. केवलि-सिद्धाणं छउमत्थआहोहिय-परमाहोहिय-केवलि-सिद्धविसयं समणानाणित्तनिरूवणं] १. केवली णं भंते ! छउमत्थं जाणति पासति ? हंता, जाणति पासति । २. जहा णं भंते ! केवली छउमत्थं जाणति पासति तहा णं सिद्धे वि छउमत्थं जाणति पासति ? हंता, जाणति पासति । ३. केवली णं भंते ! आहोधियं जाणति पासति ? एवं चेव । ४. एवं परमाहोहियं । ५. एवं केवलिं । ६. एवं सिद्धं जाव, जहा णं भंते ! केवली सिद्धं जाणति पासति तहा णं सिद्धे वि सिद्धं जाणति पासति ? हंता, जाणति पासति । [सु. ७-११. केवलि-सिद्धेसु अणुक्कमेण भासणाइ-उम्मेसाइ-आउट्टणाइ-ठाण-सेज्जा निसीहियाकरणविसए करणता-अकरणतानिरूवणं] ७. केवली णं भंते ! भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ? हंता, भासेज्ज वा वागरेज्ज वा । ८. (१) जहा णं भंते ! केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा तहा णं सिद्धे वि भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ? नो तिणट्ठे समट्ठे । (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहा णं केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा नो तहा णं भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ? गोयमा ! केवली णं सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कारपरक्कमे, सिद्धे णं अणुट्ठाणे जाव अपुरिसक्कार परक्कमे, से तेणट्ठेणं जाव वागरेज्ज वा । ९. केवली णं भंते ! उम्मिसेज्ज वा निमिसेज्ज वा ? हंता, उम्मिसेज्ज वा निमिसेज्ज वा, एवं चेव । १०. एवं आउट्टेज्ज वा पसारेज्ज वा । ११. एवं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएज्जा ।[सु. १२-२४. केवलि-सिद्धाणं सत्तनरयपुढवि-कप्पवासि-कप्पातीयदेवलोयईसिब्भारपुढवि-परमाणुपोग्गल -

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुपएसियाइअणंतपएसियखंधसरूवविसयं समाणनाणित्तनिरूवणं] १२. केवली णं भंते ! इमं रयणप्पभं पुढविं 'रयणप्पभपुढवी' ति जाणति पासति ? हंता, जाणति पासति। १३. जहा णं भंते ! केवली इमं रयणप्पभं पुढविं 'रयणप्पभपुढवी' ति जाणति पासति तहा णं सिद्धे वि इमं रयणप्पभं पुढविं 'रयणप्पभपुढवी'ति जाणति पासति ? हंता, जाणति पासति। १४. केवली णं भंते ! सक्करप्पभं पुढविं 'सक्करप्पभपुढवी'ति जाणति पासति ? एवं चेव। १५. एवं जाव अहेसत्तमा। १६. केवली णं भंते ! सोहम्मं कप्पं 'सोहम्मकप्पे'ति जाणति पासति ? हंता, जाणति० एवं चेव। १७. एवं ईसाणं। १८. एवं जाव अच्चुयं। १९. केवली णं भंते ! गेवेज्जविमाणे' त्ति जाणति पासति ? एवं चेव। २०. एवं अणुत्तरविमाणे वि। २१. केवली णं भंते ! ईसिपब्भारं पुढविं 'ईसीपब्भारपुढवी'ति जाणति पासति ? एवं चेव। २२. केवली णं भंते ! परमाणुपोग्गलं 'परमाणुपोग्गले' त्ति जाणति पासति ? एवं चेव। २३. एवं दुपदेसियं खंधं। २४. एवं जाव जहा णं भंते ! केवली अणंतपदेसियं खंधं 'अणंतपदेसिए खंधे' त्ति जाणति पासति तहा णं सिद्धे वि अणंतपदेसियं जाव पासति ? हंता, जाणति पासति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१४.१०॥☆☆☆ **चोद्दसमं सयं समत्तं ॥१४॥** 卐卐卐 **पण्णरसमं सतं** 卐卐卐 [सु. १. पण्णरसमसयस्स मंगलं] १. नमो सुयदेवयाए भगवतीए। [सु. २-५. सावत्थीनगरीवत्थव्वहालाहलानामकुंभकारीए कुंभारावणे मंखलिपुत्तस्स गोसालस्स निवासो] २. तेणं कालेणं तेणं समयेणं सावत्थी नामं नगरी होत्था। वण्णओ। ३. तीसे णं सावत्थीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं कोट्ठए नामं चेतिए होत्था। वण्णओ। ४. तत्थ णं सावत्थीए नगरीए हालाहला नामं कुंभकारी आजीविओवासिया परिवसति, अड्ढा जाव अपरिभूया आजीवियसमयंसि लद्धट्ठा गहितट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ता 'अयमाउसो ! आजीवियसमये अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसं अणट्ठे त्ति आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणी विहरति। ५. तेणं कालेणं तेणं समय;णं भोसाले मंखलिपुत्ते चतुवीसवासपरियाए हालहलाए कुंभकारीए कुंभारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे आजीवियसमयेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति। [सु. ६-९. गोसालयसमीवागयछद्दिसाचररचितनिमित्तादिसत्थावलोयणेण गोसालस्स अप्पणो जिणादिरूवेण पयासणं] ६. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अन्नदा कदायि इमे छद्दिसाचरा अंतियं पादुब्भवित्था, तं जहा सोणे कणंदे कणियारे अच्छिद्दे अग्गिवेसायणे अज्जुणे गोयमपुत्ते। ७. तए णं ते छद्दिसाचरा अट्ठविहं पुव्वगयं मग्गदसमं सएहिं सएहिं मतिदंसणेहिं निज्जूहंति, स० निज्जूहित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं उवट्ठाइंसु। ८. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेण सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं इमाइं छ अणतिक्कमणिज्जाइं वागरणाइं वागरेति, तं जहा लाभं अलाभं सुहं दुक्खं जीवितं मरणं तहा। ९. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं उल्लोयमेत्तेणं सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरति। [सु. १०-१३. सावत्थीनगरीवत्थव्वजणपरूवियगोसालगसव्वण्णुत्तणवुत्तंतसवणाणंतरं गोयमस्स भगवंतं पइ गोसालचरियजाणणत्थं पत्थणा] १०. तए णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति जाव एवं परूवेति एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव पकासेमाणे विहरति, से कहमेयं मन्ने एवं ? ११. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। जाव परिसा पडिगता। १२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवतो महावीरस्स जेट्ठे अंतेवरसी इंदभूतीणामं अणगारे गोयमे गोत्तेणं जाव छट्ठंछट्ठेणं एवं जहा बितियसए नियंठुद्देसए (स० २ उ० ५ सु० २१-२४) जाव अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ "बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति ४ एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव पकासेमाणे विहरइ। से कहमेयं मन्ने एवं ?"। १३. तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जायसड्ढे जाव भत्त-पाणं पडिदंसेति जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी एवं खलु अहं भंते !०, तं चेव जाव जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, से कहमेतं भंते ! एवं ? तं इच्छामि णं भंते ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स उट्ठाणपारियाणिय परिकहियं। [सु. १४-५८. भगवया परूविओ गोसलगचरियपुव्वभागो सु. १४. मंखलिमंखस्स भद्दाए भारियाए गुव्विणित्तं] १४. 'गोतमा !'दी समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वयासी -जं णं गोयमा ! से बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति ४'एवं खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे विहरति' तं णं मिच्छा, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु एयस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मंखली णामं मंखे पिता होत्था। तस्स णं मंखलिस्स मंखस्स भद्दा नामं भारिया होत्था, सुकुमाल० जाव पडिरूवा। तए णं सा भद्दा भारिया अन्नदा कदायि गुव्विणी यावि होत्था। [सु. १५-१७. सरवणसन्निवेसे गोबहुलमाहणस्स गोसालाए मंखलि-भद्दाणं निवासो १५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सरवणे नामं सन्निवेसे होत्था, रिद्धत्थिमिय जाव सन्निभप्पगासे पासादीए ४। १६. तत्थ णं सरवणे सन्निवेसे गोबहुले नामं माहणे परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूते रिव्वद जाव सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था। तस्स णं गोबहुलस्स माहणस्स गोसाला यावि होत्था। १७. तए णं से मंखली मंखे अन्नदा कदायि भद्दाए भारियाए गुव्विणीए सद्धिं चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सरवणे सन्निवेसे जेणेव गोबहुलस्स माहणस्स गोसाला तेणेव उवागच्छति, उवा० २ गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेसंसि भंडानिक्खेवं करेति, भंडा० क० २ सरवणे सन्निवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए करेमाणे अन्नत्थ वसहिं अलभमाणे तस्सेव गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए।[सु. १८-१९. पुत्तजम्माणंतरं मंखलि-भद्दाहिं पुत्तस्स गोसालनामकरणं]१८. तए णं सा भद्दा भारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य रातिंदियाणं वीतिक्कंताणं सुकुमाल जाव पडिरूवं दारगं पयाता। १९. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीतिक्कंते जाव बारसाहदिवसे अयमेतारूवं गोण्णं गूणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति जम्हा णं अम्हं इमे दारए गोबहुलस्स माहरस्स गोसालाए जाए तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं 'गोसाले, गोसाले' त्ति। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति 'गोसाले' त्ति। [सु. २०. पत्तजोव्वणस्स गोसालगस्स मंखत्तणेणं विहरणं]२०. तए णं से गोसाले दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणतमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सयमेव पाडिएक्कं चित्तफलगं करेति, सय० क० २ चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति। [सु. २१-२२. पव्वइयस्स भगवओ महावीरस्स अट्ठियगामवासानिवासाणंतरं रायगिहनगरनालंदाबाहिरियतंतुसालए आगमणं] २१. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अम्मा-पितीहिं देवत्ते गतेहिं एवं जहा भाववाए जाव एगं देवदूसमुपादाय मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वइए। २२. तए णं अहं गोतमा ! पढमं वासं अद्धमासं अद्धमासेणं खममाणे अट्ठियगामं निस्साए पढमं अंतरवासं वासासं उवागते। दोच्चं वासं मासंमासेणं खममाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामंते दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव नालंदाबाहिरिया जेणे तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छामि, ते० उवा० २ अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हामि, अहा० ओ० २ तंतुवायसालए एगदेसंसि वासावासं उवागते। तए णं अहं गोतमा ! पढमं मासक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। [सु. २३. गोसालगस्स वि रायगिहनगरनालंदाबाहिरियतंतुसालए आगमणं] २३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेण अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव नालंदाबाहिरिया जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छति, ते० उवा० २ तंतुवायसालाए एगदेसंसि भंडानिक्खेवं करेइ, भंडा० क० २ रायगिहे नगरे उच्च-नीय जाव अन्नत्थ कत्थयि वसहिं अलभमाणे तीसे व तंतुवायसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागते जत्थेव णं अहं गोयमा !। [सु. २४-२७. रायगिहे विजयगाहावइगिहे भगवओ पढममासक्खमणपारणयं, पंचदिव्वपाउब्भवो, नगरजणकओ य विजयगाहावइस्स धन्नवाओ]२४. तए णं अहं गोयमा ! पढममासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, ते० उवा० २ रायगिहे नगरे उच्च-नीय जाव अडमाणे विजयस्स गाहावतिस्स गिहं अणुप्पविट्ठे। २५. तए णं से विजये गाहावती ममं एज्जमाणं पासति, पा० २ अट्ठतुट्ठ० खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेति, खि० अ० २ पादपीढाओ पच्चोरुभति, पाद० प० २ पाउयाओ ओमुयइ, पा० ओ० २ एगसाडियं उत्तरासंगं करेति, एग० क० २ अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छति, अ० २ ममं तिक्खुत्तो आदाहिणपदाहिणं करेति, क० २ ममं वंदति नमंसति, ममं व० २ ममं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं 'पडिलाभेस्सामि' त्ति कट्टु तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे। २६. तए णं तस्स विजयस्स

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाहावतिस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निपद्धे, संसारे परित्तीकते, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पादुब्भूयाइं, तं जहा-वसुधारा वुट्ठा १, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिते २, चेलुक्खेवे कए ३, आहयाओ देवदुंदुभीओ ४, अंतरा वि य णं आगासे 'अहो ! दाणे, अहो ! दाणे' त्ति घुट्ठे ५ । २७. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति जाव एवं परूवेति धन्ने णं देवाणुप्पिया ! विजये गाहावती, कतत्थे णं देवाणुप्पिया ! विजये गाहावती, कयपुन्ने णं देवाणुप्पिया ! विजये गाहावती, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! विजये गाहावती, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! विजयस्स गाहावतिस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीविफले विजयस्स गाहावतिस्स, जस्स णं गिहंसि कहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पादुब्भूयाइं, तं जहा वसुधरा वुट्ठा जाव अहो दाणे घुट्ठे । तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयक्खणे, कया णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीविफले विजयस्स गाहावतिस्स, विजयस्स गाहावतिस्स । [सु. २८-२९. भगवओ अतिसएण सिस्सभावं निवेयगं गोसालं पइ भगवओ उदासीणया]२८. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नेकोउहल्ले जेणेव विजयस्स गाहावतिस्स गिहे तेणेव उवागच्छति, ते० उवा० २ पासति विजयस्स गाहावतिस्स गिहंसि वसुधारं वुट्ठं, दसद्धवण्णं कुसुमं निवडियं । ममं च णं विजयस्स गाहावतिस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासति, पासित्ता अट्ठतुट्ठ० जेणेव ममं अंतियं तेणेव उवागच्छति, उवा० २ ममं तिक्खुत्तो आदाहिणपदाहिणं करेति, क० २ ममं वंदति नमंसति, वं० २ ममं एवं वयासी तुब्भे णं भंते ! ममं धम्मायरिया, अहं णं तुब्भं धम्मंतेवासी । २९. तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि । [सु. ३०-३९. रायगिहे आणंदगाहावति-सुणंदगाहावतिगिहे भगवओ पढमपारणयअतिसयसहियं अणुक्कमेण दोच्च-तच्चमासक्खमणपारणयं कोल्लागसन्निवेसे य बहुलमाहणगिहे चउत्थमासक्खमणपारणयं] ३०. तए णं अहं गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, प० २ णालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छामि, उवा० २ दोच्चं मासक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । ३१. तए णं अहं गोयमा ! दोच्चमासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, तं० प० २ नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं जेणेव रायगिहे नगरे जाव अडमाणे आणंदस्स गाहावतिस्स गिहं अणुप्पविट्ठे । ३२. तए णं से आणंदे गाहावती ममं एज्जमाणं पासति, एवं जहेव विजयस्स, नवरं ममं विउलाए खज्जगविहीए 'पडिलाभेस्सामी' ति तुट्ठे । सेसं तं चेव जाव तच्चं मासक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । ३३. तए णं अहं गोतमा ! तच्चमासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, तं० प० २ तहेव जाव अडमाणे सुणंदस्स गाहावतिस्स गिहं अणुपविट्ठे । ३४. तए णं से सुणंदे गाहावती०, एवं जहेव विजए गाहावती, नवरं मम सव्वकामगुणिएणं भोयणेणं पडिलाभेति । सेसं तं चेव जाव चउत्थं मासक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । ३५. तीसे णं नालंदाए बाहिरियाए अदूरसामंते एत्थ णं कोल्लाए नामं सन्निवेसे होत्था । सन्निवेसवण्णओ । ३६. तत्थ णं कोल्लाए सन्निवेसे बहुले नामं माहणे परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए रिव्वेद जाव सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था । ३७. तए णं से बहुले माहणे कत्तियचातुम्मासियपाडिवगंसि विउलेणं महु-घयसंजुत्तेणं परमन्नेणं माहणे आयामेत्था । ३८. तए णं अहं गोयमा ! चउत्थमासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, तं० प० २ णालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, नि० २ जेणेव कोल्लाए सन्निवेसे तेणेव उवागच्छामि, ते० उ० २ कोल्लाए सन्निवेसे उच्च-नीय जाव अडमाणे बहुलस्स माहणस्स गिहं अणुप्पविट्ठे । ३९. तए णं से बहुले माहणे ममं एज्जमाणं तहेव जाव ममं विउलेणं महु-घयसंजुत्तेणं परमन्नेणं 'पडिलाभेस्सामी' ति तुट्ठे । ससें जहा विजयस्स जाव बहुलस्स माहणस्स, बहुलस्स माहणस्स । [सु. ४०-४२. रायगिहे भगवंतं गवेसमाणस्स गोसालगस्स भगवंतपवित्तिजाणणत्थं मंखदिक्खाचापुव्वयं कोल्लागसन्निवेसगमणं भगवओ समीवमागमणं च] ४०. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं तंतुवायसालाए अपासमाणे रायगिहे नगरे सब्भंतरबाहिरिए ममं सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ । ममं कत्थति सुतिं वा खुतिं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छति, उवा० साडियाओ य पाडियाओ य कुंडियाओ य पाहणाओ य चित्तफलगं च माहणे आयामेति, आ० २ सउत्तरोट्ठं भंडं कारेति,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स० का० २ तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमति, तं० प० २ णालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, नि० २ जेणेव कोल्लागसन्निवेसे तेणेव उवागच्छइ। ४१. तए णं तस्स कोल्लागस्स सन्निवेसस्स बहिया बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति जाव परूवेति दन्ने णं देवाणुप्पिया! बहुले माहणे, तं चेव जाव जीवियफले बहुलस्स माहणस्स, बहुलस्स माहणस्स। ४२. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था जारिसिया णं ममं धम्मायरिस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवतो महावीरस्स इड्ढी जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नगए नो खलु अत्थि तारिसिया अन्नस्स कस्सइ तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढी जुती जाव परकम्मे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागते, तं निस्संदिद्धं णं 'एत्थं ममं धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे भविस्सति' त्ति कट्टु कोल्लाए सन्निवेसे सब्भिंतर बाहिरिए ममं सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेति। ममं सव्वओ जाव करेमाणे कोल्लागस्स सन्निवेसस्स बहिया पणियभूमीए मम सद्धिं अभिसमन्नागए। [सु. ४३-४४. गोसालगस्स सिस्सत्तपडिवत्तिपत्थणाए भगवओ अणुमई] ४३. तए णं से गोसाळे मंखलिपुत्ते हट्ठतुट्ठ० ममं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं जाव नमंसित्ता एवं वदासी 'तुब्भे णं भंते! मम धम्मायरिया, अहं णं तुब्भं अंतेवासी। ४४. तए णं अहं गोयमा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेमि। [सु. ४५. गोसालगेण सद्धिं भगवओ कोल्लागसन्निवेसपणियभूमीए वरिसछक्कं अवत्थाणं] ४५. तए णं अहं गोयमा! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं पणियभूमीए छव्वासाइ लाभं अलाभं सुखं दुक्खं सक्रमसक्कारं पच्चणुभवमाणे अणिच्चजागरियं विहरित्था। [सु. ४६-४७. सिद्धत्थगाम-कुम्मगामंतरमग्गे भगवओ तिलथंभयनिप्फत्तिपण्हुत्तरं पइ गोसालस्स असद्दहणा, गोसालकयं तिलथंभयउप्पाडणं, दिव्ववरिसाए तिलथंभयनिप्फत्ती य] ४६. तए णं अहं गोयमा! अन्नदा कदायि पढमसरदकालसमयंसि अप्पवुट्ठिकायंसि गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं सिद्धत्थगामाओ नगराओ कुम्मग्गामं नगरं संपट्ठिए विहाराए। तस्स णं सिद्धत्थग्गामस्स नगरस्स कुम्मग्गास्स नगरस्स य अंतरा एत्थ णं महं एगे तिलथंभए पत्तिए पुप्फिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठति। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तं तिलथंभगं पासति, पा० २ ममं वंदति नमंसति, वं० २ एवं वदासी एस णं भंते! तिलथंभए किं निप्फज्जिस्सति, नो निप्फज्जिस्सति? एते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता कहिं गच्छिहिंति? कहिं उववज्जिहिंति? तए णं अहं गोयमा! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी गोसाला! एस णं तिलथंभए निप्फज्जिस्सति, नो न निप्फज्जिस्सइ; एए य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चाइस्संति। ४७. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं आइक्खमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहति, नो पत्तियति, नो रोएइ; एतमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे ममं पणिहाए 'अयं णं मिच्छावादी भवतु' त्ति कट्टु ममं अंतियाओ सणियं सणियं पच्चोसक्कइ, स० प० २ जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छति, उ० २ तं तिलथंभगं सलेट्ठुयायं चेव उप्पाडेइ, उ० २ एगते एडेति, तक्खणमेत्तं च णं गोयमा! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए। तए णं से दिव्वे अब्भवद्दलए खिप्पामेव पतणतणाति, खिप्पा० प० २ खिप्पामेव पविज्जुयाति, खि० प० २ खिप्पामेव नच्चोदगं नातिमट्टियं पविरलपप्फुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सलिलोदगं वासं वासति जेणं से तिलथंभए आसत्थे पच्चायाते बद्धमूले तत्थेव पतिट्ठिए। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता उद्दाइत्ता तस्सेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाता। [सु. ४८-५२. कुम्मगामबहिभागे वेसियायणनामबालतवस्सिस्स गोसालकओ उवहासो, गोसालस्सेवरिं वेसियायणविमुक्कउसिणतेयस्स भगवया नियसीयतेएण उवसमणं, वसियायणकयं भगवंतपभावावगमनिरूवणं च] ४८. तए णं अहं गोयमा! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं जेणेव कुम्मग्गामे नगरे तेणेव उवागच्छामि। ४९. तए णं तस्स कुम्मग्गामस्स नगरस्स बहिया वेसियायणे नामं बालतवस्सी छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिया पगिज्झिया सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरति, आदिच्चतेयतवियाओ य से छप्पदाओ सव्वओ समंता अभिनिस्सवंति, पाण-भूय-जीव-सत्तदयट्ठयाए च णं पडियाओ पडियाओ तत्थेव तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चोरुभेति। ५०. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं बालतवस्सिं पासति, पा० २ ममं अंतियाओ सणियं सणियं पच्चोसक्कति, ममं० प० २ जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छति,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवा० २ वेसियायणं बालतवस्सिं एवं वयासी किं भवं मुणी मुणिए ? उदाहु जूयासेज्जायरए ? तए णंसे वेसियायणे बालतवस्सी गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं णो आढाति नो परिजाणति, तुसिणीए संचिट्ठति। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं बालतवस्सिं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी किं भवं मुणी मुणिए जाव सेज्जायरए ? तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं दोच्चं पि एवं वूत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभति, आयावण० प० २ तेयासमुग्घाएणं समोहन्नति ते० स० २ सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कति, स० प० २ गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरति। ५१. तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अणुकंपणट्ठयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स तेयपडिसाहरणट्ठयाए एत्थ णं अंतरा सीयलियं तेयलेस्सं निसिरामि, जाए सा ममं सीयलियाए तेयलेस्साए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसुणा तेयलेस्सा पडिहया। ५२. तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी ममं सीयलियाए तेयलेस्साए साउसुणं तेयलेस्सं पडिहयं जाणित्ता गोसालस्स य मंखलिपुत्तस्स सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकीरमाणं पासित्ता साअं उसुणं तेयलेस्सं पडिसाहरति, साउसुणं तेयलेस्सं पडिसाहरित्ता ममं एवं वयासी से गतमेयं भगवं !, गतगेतमयं भगवं !। [सु. ५३. अणवगयवेसियायणवत्तव्वं गोसालं पइ भगवओ सब्भावकहणं] ५३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी किं णं भंते ! एस जूयासेज्जायरए तुब्भे एवं वदासी 'से गयमेतं भगवं ! गयगयमेतं भगवं !' ? तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वदामि "तुमं णं गोसाला ! वेसियायणं बालतवस्सिं पाससि, पा० २ ममं अंतियातो सणियं सणियं पच्चोसक्कसि, प० २ जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छसि, ते उ० २ वेसियायणं बालतवस्सिं एवं वयासी-किं भवं मुणी मुणिए ? उदाहु जूयासेज्जायरए ? तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी तव एयमट्ठं नो आढाति, नो परिजाणति, तुसिणीए संचिट्ठति। तए णं तुमं गोसाला ! वेसियायणं बालतवस्सिं दोच्चं पि तच्चं पिए वं वयासी किं भवं मुणी सेज्जायरए ? तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी तुमं(?मे) दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरुते जाव पच्चोसक्कति, प० २ तव वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरति। तए णं अहं गोसाला ! तव अणुकंपणट्ठताए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणतेयपडिसाहरणट्ठयाए एत्थ णं अंतरा सीयलियं तेयलेस्सं निसिरामि जाव पडिहयं जाणित्ता तव य.सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकीरमाणं पासित्ता सायं उसुणं तेयलेस्सं पडिसाहरति, सायं० प० २ ममं एवं वयासी से गयमेयं भगवं !, गयगयमेयं भगवं !"। [सु. ५४. गोसालकयपण्हुत्तरे भगवओ तेयलेस्सासरूवकहणं] ५४. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं अंतियाओ एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीए जाव संजायभये ममं वंदति नमंसति, ममं वं० २ एवं वयासी कहं णं भंते ! संखित्तविउलतेयलेस्से भवति ? तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयामि जे णं गोसाला ! एगाए सणहाए कुम्मासपिंडियाए एगेण य वियडासएणं छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय जाव विहरइ से णं अंतो छण्हं मासाणं संखित्तविउलतेयलेस्से भवति। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एयमट्ठं सम्मं विणएणं पडिस्सुणेति। [सु. ५५-५८. कुम्मगाम-सिद्धत्थगामंतरमग्गविहरणे तिलथंभयनिप्फत्ति-दंसणाणंतर गोसालस्स पउट्टपरिहारवादित्तं, भगवओ समीवाओ अवक्कमणं, छद्दिसाचरसंपक्को य] ५५. तए णं अहं गोयमा ! अन्नदा कदायि गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं कुम्मग्गामाओ नगराओ सिद्धत्थग्गामं नगरं संपत्थिए विहाराए। जाहे य मो तं देसं हव्वमागया जत्थ णं से तिलथंभए। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वदासि "तुब्भे णं भंते ! तदा ममं एवं आइक्खह जाव परूवेह 'गोसाला ! एस णं तिलथंभए निप्फज्जिस्सति, नो न निप्फ०, तं चेव जाव पच्चायाइस्संति' तं णं मिच्छा, इमं णं पच्चक्खमेव दीसति 'एस णं से तिलथंभए णो निप्फन्ने, अनिप्फन्नमेव; ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता उद्दाइत्ता नो एयस्स चेव तिलथंगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाता"। तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वदामि "तुमं णं गोसाला ! तदा ममं एवं आइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहसि, नो पत्तियसि, नो रोएसि, एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे ममं पणिहाए 'अयं णं मिच्छावादी भवतु' त्ति कट्टु ममं अंतियाओ सणियं सणियं पच्चोसक्कसि, प० २ जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छसि, उ० २ जाव एगंतमंते एडेसि, तक्खणमेत्तं गोसाला ! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूते। तए णं से दिव्वे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब्भवद्दलए खिप्पामेव०, तं चेव जाव तस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया। तं एस णं गोसाला ! से तिलथंभए निप्फन्ने, णो अनिप्फन्नमेव, ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाता। एवं खलु गोसाला! वणस्सतिकाइया पउट्टपरिहारं परिहरंति'' । ५६. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमणस्स एयमट्ठं नो सद्दहति ३। एतमट्ठं असद्दहमाणे जाव अरोयमाणे जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छति, उ० २ ततो तिलथंभयाओ तं तिलसंगलियं खुडति, खुडित्ता करतलंसि सत्त तिले पप्फोडेइ। तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ते सत्त तिले गणेमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था 'एवं खलु सव्वजीवा वि पउट्टपरिहारं परिहरंति'। एस णं गोयमा ! गोसालास्स मंखलिपुत्तस्स पउट्टे। एस णं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमणे पन्नत्ते। ५७. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते एगाए सणहाए कुम्मासपिंडियाए एगेण य वियडासएणं छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय जाव विहरइ। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते अंतो छण्हं मासाणं संखित्तविउलतेयलेस्से; जाते। ५८. तए णं तस्स णं तस्स गोसालस्स मंखलियपुत्तस्स अन्नदा कदायि इमे छद्दिसाचरा अंतियं पादुब्भवित्था, तं जहा सोणे०, तं चेव सव्वं जाव अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरति। तं नो खलु गोयमा ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे, जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासेमाणे विहरति। गोसाले णं मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे विहरति। सु. ५९. परिसापडिगमणं ५९. तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा जहा सिवे (स० ११ उ० ९ सु० २६) जाव पडिगया। [सु. ६०-६१. भगवंतपरूवियं गोसालगअजिणत्तं निसम्म सामरिसस्स गोसालस्स कुंभकारावणावत्थाणं] ६०. तए णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स जाव परूवेइ "जं णं देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरति तं मिच्छा, समणे भगवं महावीरे एवं आइक्खति जाव परूवेति 'एवं खलु तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मंखली नामं मंखे पिता होत्था। तए णं तस्स मंखलिस्स०, एवं चेव सव्वं भाणितव्वं जाव अजिणे जिणसद्दं पकासेमाणे विहरति'। तं नो खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरति, गोसाले णं मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी जाव विहरति। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासेमाणे विहरति"। ६१. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे आतावणभूमितो पच्चोरुभति, आ० प० २ सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, ते० उ० २ हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे महत्ता अमरिसं वहमाणे एवं वा वि विहरति। [सु. ६२-६५. गोयरचरियानिग्गयं आणंदथेरं पइ गोसालस्स अत्थलोभिवणिविणासदिट्ठंतकहणपुव्वं भगवंतमरणपरूवणं] ६२. तेणं कालेणं तेणं समयेणं समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतेवासी आणंदे नामं थेरे पगतिभद्दए जाव विणीए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। तए णं से आणंदे थेरे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी (स० २ उ० ५ सु० २२-२४) तहेव आपुच्छइ, तहेव जाव उच्च-नीय-मज्झिम जाव अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयति। ६३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदे थेरं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयमाणं पासति, पासित्ता एवं वयासी एहि ताव आणंदा ! इओ एगं महं ओवमियं निसामेहि। ६४. तए णं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छति। ६५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरे एवं वदासी एवं खलु आणंदा ! इतो चिरातीयाए अद्धाए केयी उच्चावया वणिया अत्थऽत्थी अत्थलुद्धा अत्थगवेसी अत्थकंखिया अत्थपिवासा अत्थगवेसणयाए नाणाविहउलपणिभंडमायाए सगडी-सागडेणं सुबहुं भत्त -पाणपत्थयणं गहाय एगं महं अगामियं अणोहियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुप्पविट्ठा। तए णं तेसिं वणियाणं तीसे अकामियाए अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुज्जमाणे परिभुज्जमाणे झीणे। तए णं ते वणिया झीणोदगा समाणा तण्हाए परिब्भवमाणा अन्नमन्नं सद्दावेंति, अन्न० स० २ एवं वयासी 'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अकामियाए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिते उदए अणुपुव्वेणं परिभुज्जमाणे परिभुज्जमाणे झीणे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अकामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेत्तए' त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, अन्न० पडि० २ तीसे णं अगामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेंति। उदगस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेमाणा एगं महं वणसंडं आसादेंति किण्हं किण्होभासं जाव निकुरुंबभूयं पासादीयं जाव पडिरूवं। तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महेगं वम्मीयं आसादेंति। तस्स णं वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूओ अब्भुग्गयाओ अभिनिसढाओ, तिरियं सुसंपग्गहिताओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ पन्नगद्धसंठाणसंठियाओ पासादीयाओ जाव पडिरूवाओ। तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठ० अन्नमन्नं सद्दावेंति, अन्न० स० २ एवं वयासी 'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमीसे अकामियाए जाव सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेमाणेहिं इमे वणसंडे आसादिते किण्हे किण्होभासे०. इमस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए इमे वम्मीए आसादिए, इमस्स णं वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूओ अब्भुग्गयाओ जाव पडिरूवाओ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स पढमं वपुं भिंदित्तए अवि या इंथ ओरालं उदगरयणं अस्सादेस्सामो'। तए णं ते वणिया अन्नमन्नस्स अंतियं एतमट्ठं पडिस्सुणेंति, अन्न० प० २ तस्स वम्मीयस्स पढमं वपुं भिंदंति, ते णं तत्थ अच्छं पत्थं जच्चं तणुयं फालियवण्णाभं ओरालं उदगरयणं आसादेंति। तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठ० पाणियं पिबंति, पा० पि० २ वाहणाइं पज्जेंति, वा० प० २ भायणाइं भरेंति, भा० भ० २ दोच्चं पि अन्नमन्नं एवं वदासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वपूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स दोच्चं पि वपुं भिंदित्तए, अवि या इंथ ओरालं सुवण्णरयणं अस्सादेस्सामो। तए णं ते वणिया अन्नमन्नस्स अंतियं एयमट्ठं पडिस्सुणेंति, अन्न० प० २ तस्स वम्मीयस्स दोच्चं पि वपुं भिंदंति। ते णं तत्थ अच्छं जच्चं तावणिज्जं महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं सुवण्णरयणं अस्सादेंति। तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठ० भायणाइं भरेंति, भा० भ० २ पवहणाइं भरेंति, प० भ० २ तच्चं पि अन्नमन्नं एवं वदासि एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वपूए भिन्नए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, दोच्चाए वपूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स तच्चं पि वपुं भिंदित्तए, अवि या इंथ ओरालं मणिरयणं अस्सादेस्सामो। तए णं ते वणिया अन्नमन्नस्स अंतियं एतमट्ठं पडिसुणेंति, अन्न० प० २ तस्स वम्मीयस्स तच्चं पि वपुं भिंदंति। ते णं तत्थ विमलं निम्मलं नित्तलं निक्कलं महत्थं महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं मणिरयणं अस्सादेंति। तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठ० भायाणाइं भरेंति, भा० भ० २ पवहणाइं भरेंति, प० भ० २ चउत्थं पि अन्नमन्नं एवं वदासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वपूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए, तच्चाए वपूए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स चउत्थं पि वपुं भिंदित्तए, अवि या इंथ उत्तमं महग्घं महरिहं ओरालं वइररतणं अस्सादेस्सामो। तए णं तेसिं वणियाणं एगे वणिए हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेसिए हिय-सुह-निस्सेसकामए ते वणिए एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वपूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे जाव तच्चाए वपूए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए, तं होउ अलाहि पज्जत्तं णे, एसा चउत्थी वपू मा भिज्जउ, चउत्थी णं वपू सउवसग्गा यावि होज्जा। तए णं ते वणिया तस्स वणियस्स हियकामगस्स सुहकाम० जाव हिय ०सुह-निस्सेसकामगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एतमट्ठं नो सद्दहंति जाव नो रोयेंति, एतमट्ठं असद्दहमाणा जाव अरोयेमाणा तस्स वम्मीयस्स चउत्थं पि वपुं भिंदंति, ते णं तत्थ उग्गविसं चंडविसं घोरविसं महाविसं अतिकायमहाकायं मसि-मूसाकालगं नयणविसरोसपुण्णं अंजणपुंजनिगरप्पगासं रत्तच्छं जमलजुवलचंचलचलचलंतजीहं धरणितलवेणिभूयं उक्कडफुडकुडिलजडुलकक्खडविकडफडाडोवकरणदच्छं लोहागरधम्ममाणधमधमेंतघोसं अणागलियचंडतिव्वरोसं समुहिं तुरियं चवलं धमंतं दिट्ठीविसं सप्पं संघट्टेंति। तए णं से दिट्ठीविसे सप्पे तेहिं वणिएहिं संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे सणियं सणियं उट्ठेति, उ० २ सरसरसरस्स वम्मीयस्स सिहरतलं द्रुहति, सर० द्रु० २ आदिच्चं णिज्झाति, आ० णि० २ ते वणिए अणिमिसाए दिट्ठीए सर० द्रु० २

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदिच्चं णिज्झाति, आ० णि० २ ते वणिए अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वतो समंता समभिलोएति। तए णं ते वणिया तेणं दिट्ठीविसेणं सप्पेणं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोइया समाणा खिप्पामेव सभंडमत्तोवगरणमाया एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासीकया यावि होत्था। तत्थ णं जे से वणिए तेसिं वणियाणं हियकामए जाव हिय-सुह-निस्सेसकामए से णं आणुकंपिताए देवयाए सभंडमत्तोवकरमायाए नियगं नगरं साहिए। ''एवामेव आणंदा ! तव वि धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं नायपुत्तेणं ओराले परियाए अस्सादिए, ओराला कित्ति-वण्ण-सद्द -सिलोगा सदेवमणुयासूरे लोए पुवंति गुवंति तुवंति 'इति खलु समणे भगवं महावीरे, इति खलु समणे भगवं महावीरे'। तं जदि मे से अज्ज किंचि वदति तो णं तवेणं तेएण एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेमि जहा वा वालेणं ते वणिया। तुमं च णं आणंदा ! सारक्खामि संगोवामि जहा वा से वणिए तेसिं वणियाणं हितकामए जाव निस्सेसकामए आणुकंपियाए देवाए सभंडमत्तोवगरण० जाव साहिए। तं गच्छ णं तुमं आणंदा ! तव धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स णातपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि।'' [सु. ६६. गोसालकहियपच्चवायनिवेयणाणंतरं भगवंतमरणसंकियं आणंदथेरं पइ भगवओ गोसालवतेयसंबंधिसामत्थ -असामत्थपरूवणं, सव्वेसिं समाणाणं गोसालेण सद्धिं धम्मियचोयणाइअकरणादेसपेसणं च] ६६. तए णं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे भीए जाव संजायभये गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिनिक्खमति, प० २ सिग्घं तुरियं ५ सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, नि० २ जेणेव कोट्ठए चेतिए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवा० २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, क० २ वंदति नमंसति, वं० २ एवं वयासी ''एवं खलु अहं भंते ! छट्ठक्खमणपारणगंसि तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय जाव अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए जाव वीयीवयामि। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छामि। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी 'एवं खलु आणंदा ! इतो चिरातीआए अद्धाए केयि उच्चावया वणिया०, एवं तं चेव जाव सव्वं निरवसेसं भाणियव्वं जाव नियगनगरं साहिए। तं गच्छ णं तुमं आणंदा ! तव धम्मायरियस्स धम्मोव० जाव परिकहेहि'। तं पभू णं भंते ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए ? विसए णं भंते ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स जाव करेत्तए ? समत्थे णं भंते ! गोसाले जाव करेत्तए ?'' ''पभू णं आणंदा ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं जाव करेत्तए, विसए णं आणंदा ! गोसालस्स जाव करेत्तए, समत्थे णं आणंदा !गोसाले जाव करेत्तए। नो चेव णं अरहंते भगवंते, पारितावणियं पुण करेज्जा। जावतिए णं आणंदा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवतेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठयराए चेव तवतेए अणगाराणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण अणगारा भगवंता। जावइए णं आणंदा ! अणगाराणं भगवंताणं तवतेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठयराए चेव तवतेए थेराणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण थेरा भगवंतो। जावतिए णं आणंदा ! थेराणं भगवंताणं तवतेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठयराए चेव तवतेए अरहंताणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण अरहंता भगवंतो। तं पभू णं आणंदा ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेयेणं जाव करेत्तए, विसए णं आणंदा ! जाव करेत्तए, समत्थे णं आणंदा ! जाव करेत्तए; नो चेव णं अरहंते भगवंते, पारियावणियं पुण करेज्जा। तं गच्छ णं तुमं आणंदा ! गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेहि मा णं अज्जो ! तुब्भं केयि गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएतु, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेउ, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेउ। गोसाले णं मंखलिपुत्ते समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने''। [सु. ६७. गोयमाइनिग्गंथाणं पुरओ आणंदथेरस्स गोसालसमक्खधाम्मियचोयणाइअकरणरूवभगवंतादेसनिरूवणं] ६७. तए णं से आणंदे थेरे समणेणं भगवता महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वं० २ जेणेव गोयमादी समणा निग्गंथा तेणेव उवागच्छति, ते० उवागच्छित्ता गोतमादी समणे निग्गंथे आमंतेति, आ० २ एवं वयासी एवं खलु अज्जो ! छट्ठक्खमणपारणगंसि समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय०, तं चेव सव्वं जाव नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहिं०, तं ?चेव जाव मा णं अज्जो ! तुब्भं केयि गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ जाव मिच्छं विप्पडिवन्ने। [सु. ६८. भगवओ समक्खं गोसालस्स

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालमाण-नियपुव्वभव-नियसिद्धिगमणाइगब्भियं सवित्थरं नियसिद्धंतनिरूवणं] ६८. जावं च णं आणंदे थेरे गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेति तावं च णं से गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कूंभकारावणाओ पडिनिक्खमति, पडि० २ आजीवियसंघसंपरिवुडे महया अमरिसं वहमाणे सिग्घं तुरियं जाव सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, नि० २ जेणेव कोट्ठए चेतिए जेणेव भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, ते० उ० २ समणस्स भगवतो महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वदासी सुट्ठु णं आउसो ! कासवा ! ममं एवं वदासी, साहु णं आउसो ! कासवा ! ममं एवं वदासी 'गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी, गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी' । जे णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तव धम्मंतेवासी से णं सुक्के सुक्काभिजाइए भवित्ता कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने । अहं णं उदाई नामं कंडियायणिए अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि, अज्जु० विप्प० २ गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, गो० अणु० २ इमं सत्तमं पउट्टपरिहारं परिहरामि । जे वि याइं आउसो ! कासवा ! अम्हं समयंसि केयि सिज्झिंसु वा सिज्झंति वा सिज्झिस्संति वा सव्वे ते चउरासीतिं महाकप्पसयसहस्साइं सत्त दिव्वे सत्त संजूहे सत्त सन्निगब्भे सत्त पउट्टपरिहारे पंच कम्मुणि सयसहस्साइं सट्ठिं च सहस्साइं छच्चच सए तिण्णि य कम्मंसे अणुपुव्वेणं खवइत्ता तओ पच्छा सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वाइंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंसु वा, करेंति वा, करिस्संति वा। से जहा वा गंगा महानदी जतो पवूढा, जहिं वा पज्जुवत्थिता, एस णं अद्धा पंच जोयणसताइं आयामेणं, अद्धजोयणं विक्खंभेणं, पंच धणुसयाइं ओवेहेणं, एएणं गंगापमाणेणं सत्त गंगाओ सा एगा महागंगा, सत्त महागंगाओ सा एगा साईणगंगा, सत्त सादीणगंगाओ सा एगा मड्डुगंगा, सत्त मड्डुगंगाओ सा एगा लोहियगंगा, सत्त लोहियगंगाओ सा एगा आवतीगंगा, सत्त आवतीगंगाओ सा एगा परमावती, एवामेव सपुव्वावरेणं एगं गंगासयसहस्सं सत्तरस य सहस्सा छच्च अगुणपन्नं गंगासता भवंतीति मक्खाया । तासिं दुविहे उद्धारे पन्नत्ते, तं जहा सुहुमबोंदिकलेवरे चेव, बादरबोंदिकलेवरे चेव । तत्थ णं जे से सुहुमबबोंदिकलेवरे से ठप्पे । तत्थ णं जे से बादरबोंदिकलेवरे ततो णं वाससते गते वाससते गते एगमेगं गंगावालुयं अवहाय जावतिएणं कालेणं से कोट्ठे खीणे णीरए निल्लेवे निट्ठिए भवति से त्तं सरे सरप्पमाणे । एएणं सरप्पमाणेणं तिण्णि सरसयसाहस्सीओ से एगे महाकप्पे । चउरासीतिं महाकप्पसयसहस्साइं से एगे महामाणसे । अणंतातो संजूहातो जीवे चयं चयित्ता उवरिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जति । से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठितिक्खएणं अणंतरं चयं चयित्ता पढमे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाति । से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ । से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आयु० जाव चइत्ता दोच्चे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाति । से णं ततोहिंतो अणंतरं उव्वाट्टित्ता हेट्ठिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ । से णं तत्थ दिव्वाइं जाव चइत्ता तच्चे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाति । से णं तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता उवरिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जति । से णं तत्थ दिव्वाइं भोग० जाव चइत्ता चतुत्थे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाति । से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जति । से णं तत्थ दिव्वाइं भोग० जाव चइत्ता पंचमे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति । से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता हिट्ठिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ । से णं तत्थ दिव्वाइं भोग० जाव चइत्ता छट्ठे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति । से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता बंभलोगे नामं से कप्पे पन्नत्ते पाईणपडीणायते उदीणदाहिणवित्थिण्णे जहा ठाणपदे जाव पंच वडेंसया पन्नत्ता, तं जहा असोगवडेंसए जाव पडिरूवा । से णं तत्थ देवे उववज्जति । से णं तत्थ दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोग० जाव चइत्ता सत्तमे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाति । से णं तत्थ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण जाव वीतिक्कंताणं सुकुमालगभद्दलए मिदुकुंडलकुंचियकेसए मट्ठगंडयकण्णपीढए देवकुमारसप्पभए दारए पयाति से णं अहं कासवा ! । तए णं अहं आउसो ! कासवा ! कोमारियपव्वज्जाए कोमारएणं बंभचेरवासेणं अविद्धकन्नए चेव संखाणं पडिलभामि, संखाणं पडिलभित्ता इमे सत्त पउट्टपरिहारे परिहरामि, तं जहा एणेज्जगस्स १ मल्लरामगस्स २ मंडियस्स ३ राहस्स ४ भारद्दाइस्स ५ अज्जुणगस्स गोतमपुत्तस्स ६ गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ७ । तत्थ णं जे से पढमे पउट्टपरिहारे से णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया मंडियकुच्छिंसि चेतियंसि उदायिस्स

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंडियायणियस्स सरीरगं विप्पज्जहामि, उदा० सरीरगं विप्पजहित्ता एणेज्जगस्स सरीरगं अणुप्पविसामि। एणेज्जगस्स सरीरगं अणुप्पविसित्ता बावीसं वासाइं पढमं पडट्टपरिहारं परिहरामि। तत्थ णं जे से दोच्चे पउट्टपरिहारे से णं उद्दंडपुरस्स नगरस्स बहिया चंदोयरणंसि चेतियंसि एरेज्जगस्स सरीरगं विप्पजहामि, एरेज्जगस्स सरीरगं विप्पजहित्ता मल्लरामगस्स सरीरगं अणुप्पविसामि; मल्लरामगस्स सरीरगं अणुप्पविसित्ता एक्कवीसं वासाइं दोच्चं पउट्टपरिहारं परिहरामि। तत्थ णं जे से तच्चे पउट्टपरिहारे से णं चंपाए नगरीए बहिया अंगमंदिरंसि चेतियंसि मल्लारामगस्स सरीरगं विप्पजहामि; मल्लरामगस्स सरीरगं विप्पज्जहित्ता मंडियस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, मंडियस्स सरीरगं अणुप्पविसित्ता वीसं वासाइं तच्चं पउट्टपरिहारं परिहरामि। ''तत्थ णं जे से चउत्थे पउट्टपरिहारे से णं वाणारसीए नगरीए बहिया काममहावणंसि चेतियंसि मंडियस्स सरीरगं विप्पजहामि, मंडियस्स सरीरगं विप्पज्जहित्ता राहस्स सरीरगं अणुप्पविसामि; राहस्स सरीरगं अणुप्पविसित्ता एक्कूणवीसं वासाइं चउत्थं पउट्टपरिहारं परिहरामि। तत्थ णं से पंचमे पउट्टपरिहारे से णं आलभियाए नगरीए बहिया पत्तकालगंसि चेतियंसि राहस्स सरीरगं विप्पजहामि, राहस्स सरीरगं विप्पज्जहित्ता भारद्दाइस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, भारद्दाइस्स सरीरगं अणुप्पविसित्ता अट्ठारस वासाइं पंचमं पउट्टपरिहारं परिहरामि। तत्थ णं जे से छट्ठे पउट्टपरिहारे से णं वेसालीए नगरीए बहिया कंडियायणियंसि चेतियंसि भारद्दाइयस्स सरीरगं विप्पजहामि, भारद्दाइयस्स सरीरगं विप्पजहित्ता अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अज्जुणगस्स० सरीरगं अणुप्पविसित्ता सत्तरस वासाइं छट्ठं पउट्टपरिहारं परिहरामि। तत्थ णं जे से सत्तमे पउट्टपरिहारे से णं इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि, अज्जुणयस्स० सरीरगं विप्पजहित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं सीयसहं उण्हसहं खुहासहं विविहदंस-मसगपरीसहोवसग्गसहं थिरसंघयणं ति कट्टु तं अणुप्पविसामि, तं अणुप्पविसित्ता सोलस वासाइं इमं सत्तमं पउट्टपरिहारं परिहरामि। एवामेव आउसो! कासवा एएणं तेत्तीसेणं वाससएणं सत्त पउट्टपरिहारा परिहारिया भवंतीति मक्खाता। तं सुट्ठु णं आउसो! कासवा! ममं एवं वदासि, साधु णं आउसो! कासवा! ममं एवं वदासि 'गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी, गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासि'त्ति। [सु. ६९. मंखलिपुत्तगोसालभिन्नमप्पाणं पयडंतं गोसालं पइ भगवओ तेणोदाहरणपुव्वं तस्स मंखलिपुत्तगोसालत्तेणेव निरूवणं] ६९. तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वदासि गोसाला! से जहानामए तेणए सिया, गामेल्लएहिं परब्भमाणे परब्भमाणे कत्थयि गड्ढं वा दरिं वा दुग्गं वा णिण्णं वा पव्वयं वा विसमं वा अणस्सादेमाणे एगेणं महं उण्हालोमेण वा सणलोमेण वा कप्पासपोम्हेण वा तणसूएर वा अत्ताणं आवरेत्ताणं चिट्ठेज्जा, से णं अणावरिए आवरियमिति अप्पाणं मन्नति, अप्पच्छन्ने पच्छन्नमिति अप्पाणं मन्नति, अणिलुक्कके णिलुक्कमिति अप्पाणं मन्नति, अपलाए पलायमिति अप्पाणं मन्नति, एवामेव तुमं पि गोसाला! अणन्ने सते अन्नमिति अप्पाणं उवलभसि, तं मा एवं गोसाला!, नारिहसि गोसाला!, सच्चेव ते सा छाया, नो अन्ना। [सु. ७०. भगवंतं पइगोसालस्स मारणसूयगाइं दुव्वयणाइं] ७०. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ५ समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहि आओसणाहिं आओसति, उच्चा० आओ० २ उच्चावयाहिं उण्हंसणाहिं उद्धंसेति, उच्चा० उ० २ उच्चावयाहिं निब्भच्छणाहिं निब्भच्छेति, उच्चा० नि० २ उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडेति, उच्चा० नि० एवं वदासि नट्ठे सि कदायि, विणट्ठे सि कदायि, भट्ठे सि कदायि, नट्ठविणट्ठभट्ठे सि कदायि, अज्ज न भवसि, ना हि ते ममाहिंतो सुहमत्थि। [सु. ७१-७३. भगवओ अवण्णाकारयं गोसालं पइ सव्वाणुभूइअणगारस्स अणुसट्ठी, पडिकुण्हगोसालकओ सव्वाणुभूइअणगारविणासो, पुणो वि य भगवंतं पइ गोसालस्स मारणसूयगाइं दुव्वयणाइं] ७१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी पायीणजाणवए सव्वाणुभूती णामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विणीए धम्मायरियाणुरागेणं एयमट्ठं असद्दहमाणे उट्ठाए उट्ठेति, उ० २ जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवा० २ गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासि जे वि ताव गोसाला! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतियं एवमवि आरियं धम्मियं सुवयणं निसामेति से वि तं वंदति नमंसति जाव कल्लाण मंगलं देवयं चेतियं पज्जुवासति, किमंग पुण तुमं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोसाला ! भगवया चेव पव्वाविए, भगवया चेव मुंडाविए, भगवया चेव सेहाविए, भगवया चेव सिक्खाविए, भगवया चेव बहुस्सुतीकते, भगवओ चेव मिच्छं विप्पडिवन्ने, तं मा एवं गोसाला !, नारिहसि गोसाला !, सच्चेव ते सा छाया, नो अन्ना। ७२. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सव्वाणुभूइणा अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ५ सव्वाणुभूतिं अणगारं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेति। ७३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सव्वाणुभूइं अणगारं तवेणं तेएरं एगाहच्चं जाव भासरासिं करेत्ता दोच्चं पि समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसइ जाव सुहमत्थि। [सु. ७४-७६. भगवओ अवण्णाकारयं गोसालं पइ सुनक्खत्तअणगारस्स अणुसट्ठी, पडिकुद्धगोसालतेयकओ सुनक्खत्त अणगारविणासो, पुणो वि य भगवंतं पइ गोसालस्स मारणसूयगाइं दुव्वयणाइं] ७४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतेवासी कोसलजाणवए सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विणीए धम्मायरियाणुरागेणं जहा सव्वाणुभूती तहेव जाव सच्चेव ते सा छाया, नो अन्ना। ७५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सुनक्खत्तेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुते ५ सुनक्खत्तं अणगारं तवेणं तेएणं परितावेति। तए णं से सुनक्कत्ते अणगारे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविए समाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवा० २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदति नमंसति, वं० २ सयमेव पंच महव्वयाइं आरुभेति, स० आ० २ समणा य समणीओ य खामेति, सम० खा० २ आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगते। ७६. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सुनक्खत्तं अणगारं तवेणं तेयेणं परितावेत्ता तच्चं पि समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसति सव्वं तं चेव जाव सुहमत्थि। [सु. ७७-७८. गोसालं पइ भगवओ अणुसट्ठी, पडिकुद्धगोसालमुक्केण य निप्फलेण तेएर गोसालस्सेव अणुडहणं] ७७. तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासि जे वि ताव गोसाला ! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स०, वा तं चेव बहुस्सुतीकते ममं चेव मिच्छं विप्पडिवन्ने ?, तं मा एवं गोसाला ! जाव नो अन्ना। ७८. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेणं भगवता महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ५ तेयासमुग्घातेणं समोहन्नइ, तेया० स० २ सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ, स० प० २ समणस्स भगवतो महावीरस्स वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरति। से जहानामए वाउक्कलिया इ वा वायमंडलिया इ वा सेलंसि वा कुड्डंसि वा थंभंसि वा थूमंसि वा आवारिज्जमाणी वा निवारिज्जमाणी वा सा णं तत्थ णो कमति, नो पक्कमति, एवामेव गोसालस्स वि मंखलिपुत्तस्स तवे तेये समणस्स भगवतो महावीरस्स वहाए सरीरगंसि निसिट्ठे समाणे से णं तत्थ नो कमति, नो पक्कमति, अंचिअंचिं करेति, अंचि० क० २ आदाहिणपयाहिणं करेति, आ० क० २ उड्ढं वेहासं उप्पतिए। से णं तओ पडिहए पडिनियत्तमाणे तमेव गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुडहमाणे अणुडहमाणे अंतो अंतो अणुप्पविट्ठे। [सु. ७९. अणुडहणाणंतरं गोसालकयं छम्मासब्भंतरभगवंतरणनिरूवणं] ७९. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सएणं तेयेणं अन्नाइट्ठे समाणे समणं भगवं महावीरं एवं वदासि तुमं णं आउसो ! कासवा ! मम तवेणं तेएरं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्ससि। [सु. ८०. अप्पणो सोलसवासाणंतरमरणनिरूवणपुव्वं भगवंतकओ सत्तरत्तावधिगोसालमरणनिद्देसो] ८०. तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वदासि नो खलु अहं गोसाला ! तव तवेणं तेयणं अन्नइट्ठे समाणे अंतो छण्हं जाव कालं करेस्सामि, अहं णं अन्नइं सोलस वासाइं जिणे सुहत्थी विरिस्सामि। तुमं णं गोसाला ! अप्पणा चेव तेएणं अन्नइट्ठे समाणे अंतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे जाव छउमत्थे चेव कालं करेस्ससि। सु. ८१. सावत्थिवत्थव्वजणसमूहे भगवओ गोसालस्स य मरणनिद्देसविसयं चच्चणं ८१. तए णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवामाइक्खइ जाव एवं परूवेति एवं खलु देवाणुप्पिया ! सावत्थीए नगरीए बहिया कोट्ठए चेतिए दुवे जिणा संलवेंति, एगे वदति तुमं पुव्विं कालं करेस्ससि, एगे वदति तुमं पुव्विं कालं करेस्ससि, तत्थ णं के सम्मावादी, के मिच्छावादी ? तत्थ णं जे से अहप्पहाणे जणे से वदति समणे भगवं महावीरे सम्मावादी, गोसाले मंखलिपुत्ते मिच्छावादी। [सु. ८२-८३. नट्ठतेयं गोसालं पइ धम्मचोयणाइकरणत्थं भगवया निग्गंथगपेसणं, निग्गंथगणस्स य गोसालमक्खं धम्मचोयणाइ] ८२. 'अज्जो ! ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासि अज्जो ! से

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहानामए तणरासी ति वा कट्ठरासी ति वा पत्तरासी ति वा तयारासी ति वा तुसरासी ति वा भुसरासी ति वा गोयमरासी ति वा अवकररासी ति वा अगणिझामिए अगणिझूसिए अगणिपरिणामिए हयतेय गयतेए नट्ठतेये भट्ठतेये लुत्ततेए विणट्ठतेये जाए एवामेव गोसाले मंखलिपुत्ते ममं वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरेत्ता हततेय गततेये जाव विणट्ठतेये जाए, तं छंदेणं अज्जो ! तुब्भे गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोदेह, धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएत्ता धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेह, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारात्ता धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेह, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेत्ता अट्ठेहि य हेतूहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेह। ८३. तए णं ते समणा निग्गंथा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं० २ जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छंति, उवा० २ गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोदणाए पडिचोदेंति, ध० प० २ धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेंति, ध० प० २ धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेंति, ध० प० २ अट्ठेहि य हेऊहि य कारणेहि य जाव निप्पट्ठपसिणवागरणं करेंति। [सु. ८४-८५. धम्मचोयगनिग्गंथगणविवरीयकरणे असमत्थं गोसालं विण्णाय बहूणं आजीवयथेराणं भगवओ निस्साए विहरणं] ८४. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेहिं निग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोइज्जमाणे जाव निप्पट्ठपसिणवागरणे कीरमाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे नो संचाएति समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएत्तए, छविच्छेयं वा करेत्तए। ८५. तए णं ते आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं समणेहिं निग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोइज्जमाणं पडिचोइज्जमाणं, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणं, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारिज्जमाणं अट्ठेहि य हेऊहि य जाव कीरमाणं आसुरुत्तं जाव मिसिमिसेमाणं समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकरेमाणं पासंति, पा० २ गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ अत्थेगइया आयाए अवक्कमंति, आयाए अ० २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, ते० उ० २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति; क० २ वंदंति नमंसंति, वं० २ समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति। अत्थेगइया आजीविया थेरा गोसालं चेव मंखलिपुत्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति। [सु. ८६. अंतोसभुब्भूयडाहस्स गोसालस्स कुंभकारावणे मज्जपाणाइयो विविहाओ चेट्ठाओ] ८६. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते जस्सट्ठाए हव्वमागए तमट्ठं असाहेमाणे, रुंदाइं पलोएमाणे, दीहुण्हाइं नीससमाणे, दाढियाए लोमाइं लुंचमाणे, अवडुं कंडूयमाणे, पुंलिं पप्फोडेमाणे,हत्थे विणिद्धुणमाणे, दोहि वि पाएहिं भूमिं कोट्टेमाणे 'हाहा अहो ! हओऽहमस्सी' ति कट्टु समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतीयाओ कोट्ठयाओ चेतियाओ पडिनिक्खमति, पडि० २ जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए मज्जपारगं पियमाणे अभिक्खणं गायमाणे अभिक्खणं नच्चमाणे अभिक्खणं हालाहलाए कुंभकारीए अंजलिकम्मं करेमाणे सीलएणं मट्टियापाणएणं आयंचणिउदएणं गायाइं परिसिंचेमाणे विहरइ। [सु. ८७. भगवंतपरूवियं गोसालतेयलेस्सासामत्थं] ८७. 'अज्जो' ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासि जावतिए णं अज्जो ! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं ममं वहाए सरीरगंसि तेये निसट्ठे से णं अलाहि पज्जत्ते सोलसण्हं जणवयाणं, तं जहा अंगाण वंगाणं मगहाणं मलयाणं मालवगाणं अच्छाणं वच्छाणं कोट्ठाणं पा ढाणं लाढाणं वज्जाणं मोलीणं कासीणं कोसलाणं अवाहाणं सुभुत्तराणं घाताए वहाए उच्छादणताए भासीकरणताए। [सु. ८८. नियअवज्जपच्छादणट्ठा गोसालयपरूवणाए अट्ठचरिमनिरूवणपुव्वं अप्पणो तित्थयरत्तनिरूवणं] ८८. जं पि य अज्जो ! गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुभकारीए कुंभकारावणंसि अंबऊणगहत्थगए मज्जपाणं पियमाणे अभिक्खणं जाव अंजलिकम्मं करेमाणे विहरति तस्स वि णं वज्जस्स पच्छायणट्ठताए इमाइं अट्ठ चरिमाइं पन्नवेति, तं जहा चरिमे पाणे, चरिमे गेये, चरिमे नट्टे, चरिमे अंजलिकम्मे, चरिमे पुक्खलसंवट्टए महामेहे, चरिमे सेयणए गंधहत्थी, चरिमे महासिलाकंटए संगामे, अहं च णं इमीसे ओसप्पिणिसमाए चउवीसाए तित्थकराणं चरिमे तित्थकरे सिज्झिस्सं जाव अंतं करेस्सं। [सु. ८९-९५. गोसालपरूवियाइं पाणगचक्क-अपाणगचछक्काइं] ८९. जं पि य अज्जो ! गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलएणं मट्टियापाणएणं आदंचणिउदएणं गायाइं परिसिंचेमाणे विहरति तस्स वि णं वज्जस्स पच्छायणट्ठयाए इमाइं चत्तारि पाणगाइं, चत्तारि अपाणगाइं पन्नवेति। ९०. से किं तं पाणए ?

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाणए चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा गोपुट्ठए हत्थमद्दियए आयवतत्तए सिलापब्भट्ठए। से त्तं पाणए। ९१. से किं तं अपाणए ? अपाणए चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा थालपाणए तयापाणए सिंबलिपाणए सुद्धपाणए। ९२. से किं तं थालपाणए ? थालपाणए जे णं दाथालगं वा दावारगं वा दाकुंभगं वा दाकलसं वा सीयलगं उल्लगं हत्थेहिं परामसइ, न य पाणियं पियइ से तं थालपाणए। ९३. से किं तं तयापाणए ? तयापाणए जे णं अंबं वा अंबाडगं वा जहा पयोगपए जाव बोरं वा तिंदुरुयं वा तरुणगं आमगं आसगंसि आवीलेति वा पवीलेति वा, न य पाणियं पियइ से तं तयापाणए। ९४. से किं तं सिंबलिपाणए ? सिंबलिपाणए जे णं कलसंगलियं वा मुग्गसिंगलियं वा माससंगलियं वा सिंबलिसिंगलियं वा तरुणियं आमियं आसगंसि आवीलेति वा पवीलेति वा, ण य पाणियं पियइ से तं सिंबलिपाणए। ९५. से किं तं सुद्धपाणए ? सुद्धपाणए जे णं छम्मासे सुद्धं खादिमं खाति- दो मासे पुढविसंथारोवगए, दो मासे कट्ठसंथारोवगए, दो मासे दब्भसंथारोवगए। तस्स णं बहुपडिपुण्णाणं छण्हं मासाणं अंतिमराईए इमे दो देवा महिड्ढीया जाव महेसक्खा अंतियं पाउब्भवंति, तं जहा पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य। तए णं ते देवा सीतलएहिं उल्लएहिं हत्थेहिं गायाइं परामसंति, जे णं ते देवे सातिज्जति से णं आसीविसत्ताए कम्मं पकरेति, जे णं ते देवे नो सातिज्जति तस्स णं संसि सरीरगंसि अगणिकाए संभवति। से णं सएणं तेयेणं सरीरगं झामेति, सरीरगं झामेत्ता ततो पच्चा सिज्झति जाव अंतं करेति। से त्तं सुद्धपाणए। [सु. ९६-९८. सावत्थिवत्थव्वअयंपुलनामआजीवियोवासगस्स हल्लानामकीडगसंठाणसरूवजिण्णासए कुंभकारावणागमणं गोसालपवित्तिलज्जियस्स य कुंभकारावणाओ पच्चोसक्कणं] ९६. तत्थ णं सावत्थीए नगरीए अयंपुले णामं आजीविओवासए परिवसति अड्ढे जहा हालाहला जाव आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति। ९७. तए णं तस्स अयंपुलस्स आजीविओवासगस्स अन्नदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था किंसंठिया णं हल्ला पन्नत्ता ?। ९८. तए णं तस्स अयंपुलस्स आजीविओवासगस्स दोच्चं पि अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था 'एवं खलु ममं धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते उप्पन्ननाण-दंसणधरे जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तं सेयं खलु मे कल्लं जाव जलंते गोसालं मंखलिपुत्तं वंदित्ता जाव पज्जुवासेत्ता, इमं एयारूवं वागरणं वागरित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेति, एवं सं० २ कल्लं जाव जलंते ण्हाए कय जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सातोगिहाओ पडिनिक्खमइ, सातो० प० २ पादविहारचारेणं सावत्थिं नगरिं मज्झंगिहाओ पडिनिक्खमइ, सातो० प० २ पादविहारचारेणं सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभमारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छति, ते० उ० २ पासति गोसालं मंखलिपुत्तं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबऊणगहत्थगयं जाव अंजलिकम्मं करेमाणं सीयलएणं मट्टिया जाव गायाइं परिसिंचमाणं, पासित्ता लज्जिए विलिए विड्ढे सणियं सणियं पच्चोसक्कइ। [सु. ९९-१०७. आजीवियथेरपडिसिद्धपच्चोसक्कणस्स अयंपुलस्स गोसालसमीवागमणं गोसालपरूवियसमाहाणस्स य सट्ठाणगमणं]९९. तए णं ते आजीविया थेरा अयंपुलं आजीवियोवासगं लज्जियं जाव पच्चोसक्कमाणं पासंति, पा० २ एवं वदासि एहि ताव अयंपुला ! इतो। १००. तए णं से अयंपुले आजीवियोवासए अजीवियथेरेहिं एवं वुत्ते समाणे जेणेव आजीविया थेरा तेणेव उवागच्छइ, उवा० २ आजीविए थेरे वंदति नमंसति, वं० २ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासति। १०१. 'अयंपुलं !' त्ति आजीविया थेरा अयंपुलं आजीवियोवासगं एवं वदासि 'से नूणं ते अयंपुला ! पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि जाव किंसिठिया हल्ला पन्नत्ता ? तए णं तव अयंपुला ! दोच्चं पि अयमेयारूवे०, तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे जेणेव इहं तेणेव हव्वमागए, से नूणं ते अयंपुला ! अट्ठे समट्ठे ?' 'हंता, अत्थि'। जं पि य अयंपुला ! तव धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए जाव अंजलिकम्मं करेमाणे विहरइ तत्थ वि णं भगवं इमाइं अट्ठ चरिमाइं पन्नवेति, तं जहा- चरिमे पाणे जाव अंतं करेस्सति। जं पि य अयंपुला ! तव धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलएणं मट्टिया जाव विहरति, तत्थ वि णं भगवं इमाइं चत्तारि पाणगाइं, चत्तारि अपाणगाइं पन्नवेति। से किं तं पाणए ? पाणए जाव ततो पच्छा सिज्झति जाव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतं करेति। तं गच्छ णं तुमं अयंपुला ! एस चेव ते धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते इमं एयारूवं वागरणं वागरेहिति। १०२. तए णं से अयंपुले आजीवियोवासए आजीविएहिं थेरेहिं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेति, उ० २ जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव पहारेत्थ गमणाए। १०३. तए णं ते आजीविया थेरा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंबकूणगएडावणट्ठयाए एगंतमंते संगारं कुव्वंति। १०४. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आजीवियाणं थेराणं संगारं पडिच्छइ, सं० प० अबकूणगं एगंतमंते एडेइ। १०५. तए णं से अयंपुले आजीवियोवासए जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवा० २ गोसालं मंखलिपुत्तं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासति। १०६. 'अयंपुला !' ती गोसाले मंखलिपुत्ते अयंपुलं आजीवियोवासगं एवं वदासि 'से नूणं अयंपुला ! पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि जाव जेणेव ममं अंतियं तेणेव हव्वमागए, से नूणं अयंपुला ! अट्ठे समट्ठे ?' 'हंता, अत्थि'। 'तं नो खलु एस अंबकूणए, अंबचोणए, अंबचोयए णं एसे। किं संठिया हल्ला पन्नत्ता ? वंसीमूलसंठिया हल्ला पण्णत्ता। वीणं वाएहि रे वीरगा !, वीणं वाएहि रे वीरगा !। १०७. तए णं से अयंपुले आजीवियोवासए गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं इमं एयारूवं वागरणं वागरिए समाणे हट्ठतुट्ठ० जाव हियए गोसालं मंखलिपुत्तं वंदति नमंसति, वं० २ पसिणाइं पुच्छइ, पसि० पु० २ अट्ठाइं परियादीयति, अ० प० २ उट्ठाए उट्ठेति, उ० २ गोसालं मंखलिपुत्तं वंदति नमंसति जाव पडिगए। [सु. १०८. जाणियआसन्नमरणकालस्स गोसालस्स नियसिस्साणं पइ नियमरणमहूसवकरणादेसो] १०८. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते अप्पणो मरणं आभोएइ, अप्प० आ० २ आजीविए थेरे सद्दावेइ, आ० स० २ एवं वदासि "तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ममं कालगयं जाणित्ता सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेह, सु० ण्ह० २ पम्हलसुकुमालाए गंधकासाईए गायाइं लूहेह, गा० लू० २ सरसेणं गोसीसेणं चंदणेणं गायाइं अणुलिंपह, सरह अ० २ महरिहं हंसलक्खणं पडसाडगं नियंसेह, मह० नि० २ सव्वालंकारविभूसियं करेह, स० क० २ पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं द्रुहह, पुरि० द्रु० २ सावत्थीए नगरीए सिंघाडग० जाव पहेसु महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वदह 'एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासेमाणे विहरित्ता इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं चरिमतित्थगरे सिद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे'। इड्ढिसक्कारसमुदएणं ममं सरीरगस्स णीहरणं करेह"। तए णं ते आजीविया थेरा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एतमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति। [सु. १०९. लद्धसम्मत्तस्स गोसालस्स नियसिस्साणं पइ नियअवेलणापुव्वं मरणाणंतरविहाणादेसो] १०९. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सत्तरत्तंसि परिणममाणंसि पडिलद्धसम्मत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था 'णशे खलु अहं जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासेमाणे विहरिए, अहं णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघातए समणमारए समणपडिणीए, आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ता मिनिवेसेहि य अप्पाणं वा परं वा तदूभयं वा वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहरित्ता सएणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतोसत्तरतस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्सं, समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासेमाणे विहरति। एवं संपेहेति, एवं स० २ आजीविए थेरे सद्दावेइ, आ० स० २ उच्चावयसवहसाविए करेति, उच्चा० क० २ एवं वदासि "नो खलु अहं जिणे जिणप्पलावी जाव पकासेमाणे विहरिए, अहं णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघातए जाव छउमत्थे चेव कालं करेस्सं, समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासेमाणे विहरति। तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ममं कालगयं जाणत्ता वामे पाए सुंबेणं बंधह, वामे० बं० २ तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुभह, ति० उ० २ सावत्थीए नगरीए सिंघाडग० जाव पहेसु आकड्ढविकड्ढिं करेमाणे महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वदह 'नो खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए, एस णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए जाव चउमत्थे चेव कालगते, समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव विहरति।' महता अणिड्ढिसक्कारसमुदएणं ममं सरीरगस्स नीहरणं करेज्जाह"। एवं वदित्ता कालगए। [सु. ११०. गोसालमरणाणंतरं आजीवियथेरेहिं पच्छन्नअवहेलणापुव्वं पयडं महूसवकरणपुव्वं च गोसालसरीरनीहरणं] ११०. तए णं ते आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं कालगयं जाणित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स दुवाराइं पिहेंति; दु० पि० २ हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स बहुमज्झदेसभाए सावत्थिं णगरिं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आलिहंति, सा० आ० २ गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं वामे पाए सुंबेणं बंधंति, वा० बं० २ तिक्खुत्तो मुहे उट्ठहंति, ति० उ० २ सावत्थीए नगरीए सिंग्घाडग० जाव पहेसु आकड्ढविकड्ढिं करेमाणा णीयं णीयं सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयासि 'नो खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव पहेसु आकड्ढविकड्ढिं करेमाणा णीयं णीयं सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयासि 'नो खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए, एस णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगते, समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ'। सवहपडिमोक्खणगं करेंति, सवहपडिमोक्खणगं करेत्ता दोच्चं पि पूयासक्कारथिरीकरणट्ठयाए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वामाओ पादाओ सुबं मुयंति, सुंबं मु० २ हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स दुवारवयणाइं अवंगुणंति, अवं० २ गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेंति, तं चेव जाव महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगस्स नीहरणं करेंति। [सु. १११. भगवओ सावत्थीओ विहरणं] १११. तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नदा कदायि सावत्थीओ नगरीओ कोट्ठयाओ चेतियाओ पडिनिक्खमति, पडि० २ बहिया जणवयविहारं विहरति। [सु. ११२-१३. मेंढियगाम-सालकोट्ठगचेतिय-मालुयाकच्छ-रेवतीगाहावतिणीनिद्देसो] ११२. तेणं कालेणं तेणं समएणं मेंढियग्गामे नामं नगरे होत्था। वण्णओ। तस्स णं मेंढियग्गामस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे एत्थ णं साणकोट्ठए नामं चेतिए होत्था। वण्णओ। जाव पुढविसिलापट्टओ। तस्स णं साणकोट्ठगस्स चेतियस्स अदूरसामंते एत्थ णं महेगे मालुयाकच्छए यावि होत्था, किण्हे किण्होमासे जाव निकुरुंबभूए पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव अतीव उत्तसोमेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठति। ११३. तत्थ णं मेंढिग्गामे नगरे रेवती नामं गाहावतिणी परिवसति अड्ढा जाव अपरिभूया। [सु. ११४-१५. मेंढियगामबहियासाणकोट्ठगचेतियसमागयस्स भगवओ विपुलरोगायंकपाउब्भवे गोसालतेयलेसापभावविसओ जणपलावो] ११४. तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नदा कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव मेंढियग्गमे नगरे जेणेव साणकोट्ठए चेतिए जाव परिसा पडिगया। ११५. तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विपुले रोगायंके पाउब्भूते उज्जले जाव दुरहियासे। पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए यावि विहरति। अवि याऽऽइं लोहियवच्चाइं पि पकरेति। चाउव्वण्णं च णं वागरेति 'एवं खलु समणे भगवं महावीरे गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेयेणं अन्नइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए छउमत्थे चेव कालं करेस्सति'। [सु. ११६-२०. रोगायंकत्थभगवंतवुत्तंतेण माणसियदुक्खेणं रुयमाणं सीहनामाणगारं पइ नियसमीवागमणत्थं भगवया निग्गंथपेसणं सीहाणगारस्स य भगवंतसमीवागमणं] ११६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतेवासी सीहे नामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढंबाहा० जाव विहरति। ११७. तए णं तस्स सीहस्स अणगारस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु मम धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स समणस्स भगवतो महावीरस्स सरीरगंसि विपुले रोगायंके पाउब्भूते उज्जले जाव छउमत्थे चेव कालं करिस्सति, वदिस्संति य णं अन्नतित्थिया 'छउमत्थे चेव कालगए'। इमेणं एयारूवेणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे अयावणभूमीओ पच्चोरुभति, आया० प० २ जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छति, उवा० २ मालुयाकच्छयं अंतो अंतो अणुप्पविसति, मा० अणु० २ महया महया सद्देणं कुहुकुहुस्स परुन्ने'। ११८. 'अज्जो' त्ति समणे भगवं महावीरे स्मणे निग्गंथे आमंतेति, आमंतेत्ता एवं वदासि 'एवं खलु अज्जो ! ममं अंतेवासी सीहे नामं अणगारे पगतिभद्दए० तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव परुन्ने। तं गच्छह णं अज्जो ! तुब्भे सीहं अणगारं सद्दह। ११९. तए णं ते समणा निग्गंथा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं० २ समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतियातो साणकोट्ठयातो चेतियातो पडिनिक्खमंति, सा० प० २ जेणेव मालयाकच्छए, जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छंति, उवा० २ सीहं अणगारं एवं वयासि 'सीहा ! धम्मायरिया सद्दावेंति'। १२०. तए णं से सीहे अणगारे समणेहिं निग्गंथेहिं सद्धिं मालुयाकच्छगाओ पडिनिक्खमति, प० २ जेणेव साणकोट्ठए चेतिए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवा० २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो

Jain Education International 2010_03

For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

आयाहिण० जाव पज्जुवासति। [सु. १२१-२८. आसासणपुव्वयं ओसहाणयणत्थं भगवया सीहणगारस्स रेवतीगाहावतिणीगिहपेसणं आणीयओसहाहारेण य भगवओ नीरोगत्तं]१२१. 'सीहा !' दि समणे भगवं महावीरे सीहं अणगारं एवं वयासि 'से नूणं ते सीहा ! झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे जाव परुन्ने। से नूणं ते सीहा ! अट्ठे समट्ठे ?' 'हंता, अत्थि।' 'तं नो खलु अहं सीहा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेयेणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं जाव कालं करेस्सं। अहं णं अन्नाइं अद्धसोलस वासाइं जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि। तं गच्छ णं तुमं सीहा ! मेंढियगामं नगरं रेवतीए गाहावतिणीए गिहं, तत्थं णं रेवतीए गाहावतिणीए ममं अट्ठाए दुवे कवोयसरीरा उवक्खडिया, तेहिं नो अट्ठो, अत्थि से अन्ने पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमंसए तमाहराहि, तेणं अट्ठो'। १२२. तए णं से सीहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ० जाव हियए समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वं० २ अतुरियमचवलमसंभंतं मुहपोत्तियं पडिलेहेति, कु० प० २ जहा गोयमसामी (स० २ उ० ५ सु० २२) जाव जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवा० २ समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वं० २ समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतियातो साणकोट्ठयाओ चेतियाओ पडिनिक्खमति, पडि० २ अतुरिय जाव जेणेव मेंढियग्गामे नगरे तेणेव उवागच्छति, उवा० २ मेंढियग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव रेवतीए गाहावतिणीए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवा० २ रेवतीए गाहावतिणीए गिहं अणुप्पविट्ठे। १२३. तए णं सा रेवती गाहावतिणी सीहं अणगारं एज्जमाणं पासति, पा० २ हट्ठतुट्ठ० खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेति, खि० अ० २ सीहं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, स० अणु० २ तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, क० २ वंदति नमंसति, वं० २ एवं वयासी संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पओयणं ? तए णं से सीहे अणगारे रेवतिं गाहावतिणिं एवं वयासि एवं खलु तुमे देवाणुप्पिए ! समणस्स भगवतो महावीरस्स अट्ठाए दुवे कवोयसरीरा उवक्खडिया तेहिं नो अट्ठे, अत्थि ते अन्ने पारियासिए मज्जारकडए कुक्कडमंसए तमाहराहि, तेणं अट्ठो। १२४. तए णं सा रेवती गाहावतिणी सीहं अणगारं एवं वदासि केस णं सीहा ! से णाणी वा तवस्सी वा जेणं तव एस अट्ठे मम आतरहस्सकडे हव्वमक्खाए जतो णं तुमं जाणसि ? एवं जहा खंदए (स० २ उ० १ सु० २० २) जाव ततो णं अहं जाणामि। १२५. तए णं सा रेवती गाहावतिणी सीहस्स अणगारस्स अंतियं एतमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवा० २ पत्तं मोएति, पत्तं मो० २ जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवा० २ सीहस्स अणगारस्स पडिग्गहगंसि तं सव्वं सम्मं निसिरति। १२६. तए णं तीए रेवतीए गाहावतिणीए तेणं दव्वसुद्धेणं जाव दाणेणं सीहे अणगारे पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे जहा विजयस्स (सु० २६) जाव जम्मजीवियफले रेवतीए गाहावतिणीए, रेवतीए गाहावतिणीए। १२७. तए णं से सीहे अणगारे रेवतीए गाहावतिणीए गिहाओ पडिनिक्खमति, पडि० २ मेंढियग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, नि० २ जहा गोयमसामी (स० २ उ० ५ सु० २५ १) जाव भत्तपाणं पडिदंसेति, भ० प० २ समणस्स भगवतो महावीरस्स पाणिंसि तं सव्वं सम्मं निसिरति। १२८. तए णं समणे भगवं महावीरे अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं तमाहारं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ। तए णं समरस्स भगवतो महावीरस्स तमाहारं आहारियस्स समाणस्स से विपुले रोगायंके खिप्पामेव उवसंते हट्ठे जाए अरोए बलियसरीरे। तुट्ठा समणा, तुट्ठाओ समणीओ, तुट्ठा सावगा, तुट्ठाओ सावियाओ, तुट्ठा देवा, तुट्ठाओ देवीओ, सदेवमणुयासुरे लोए तुट्ठे हट्ठे जाए 'समणे भगवं महावीरे हट्ठे, समणे भगवं महावीरे हट्ठे'। [सु. १२९. गोयमपुच्छाए भगवंतपरूवियं सव्वाणुभूतिअणगारजीवस्स देवलोगगमणांतरं मोक्खगमणं] १२९. 'भंते !' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वं० २ एवं वदासी एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूती नामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विणीए, से णं भंते ! तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेयेणं भासरासीकए समाणे कहिं गए, कहिं उववन्ने ? एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूती नामं अणगारे पगतीभद्दए जाव विणीए से णं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं भासरासीकए समाणे उड्ढं चंदिमसूरिय जाव बंभ-लंतक-महासुक्के कप्पे वीतीवइत्ता सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, तत्थ णं सव्वाणुभूतिस्स वि देवस्स अट्ठारस सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता। से णं भंते ! सव्वाणुभूती देवे

ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठितिक्खएणं जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति। [सु. १३०. गोयमपुच्छाए भगवंतपरूवियं सुणक्खत्तअणगारजीवस्स देवलोगगमणाणंतरं मोक्खगमणं] १३०. एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कोसलजाणवते सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विणीए, से णं भंते ! तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेयेणं परिताविए समाणे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववन्ने ? एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विणीए, से णं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेयेणं परिताविए समाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छति, उवा० २ वंदति नमंसति, वं० २ सयमेव पंच महव्वयाइं आरुभेति, सयमेव पंच० आ० २ समणा य समणीओ य खामेति, स० खा० २ आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसूरिय जाव आणय-पाणयारणे कप्पे वीतीवइत्ता अच्चुते कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, तत्थ णं सुनक्खत्तस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं०, सेसं जहा सव्वाणुभूतिस्स जाव अंतं काहिति। [सु. १३१-३२. गोयमपुच्छाए भगवंतपरूवणे गोसालजीवस्स अच्चुयदेवलोगगमणाणंतरं महापउम-देवसेण-विमलवाहणनामत्तयधारिनिवत्तेण जम्मो, सुमंगलअणगारकपत्थणाए य सुमंगलाणगारतेयलेस्साए भासरासीभूयस्स विमलवाहणनिवस्स मरणं] १३१. एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते, से णं भंते ! गोसाले मंखलिपुत्ते कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववन्ने ? एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते समणघातए जाव छउमत्थे चेव कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसूरिय जाव अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, तत्थ णं गोसालस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता। १३२. से णं भंते ! गोसाले देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिति ? "गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सतदुवारे नगरे सम्मुतिस्स रन्नोभद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिति। से णं तत्थ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव वीतिक्कंताणं जाव सुरूवे दारए पयाहिति, जं रयणिं च णं दारए जाहिति, तं रयणिं च णं सतदुवारे नगरे सब्भंतरबाहिरिए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिति। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीतिक्कंते जाव संपत्ते बारसाहदिवसे अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं काहिंति जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सतदुवारे नगरे सब्भंतरबाहिरिए जाव रयणवासे य वासे वुट्ठे, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं 'महापउमे, महापउमे'। "तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेहिंति 'महापउमो' त्ति। "तए णं तं महापउमं दारगं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासजायगं जाणित्ता सोमणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्तमुहुत्तंसि महया महया रायाभिसेगेणं अभिसिंचेहिंति। से णं त्थ राया भविस्सइ महता हिमवंत० वण्णओ जाव विहरिस्सति। तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो अन्नदा कदायि दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा सेणाकम्मं काहिंति, तं जहा पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य। तए णं सतदुवारे नगरे बहवे राईसर-तलवर० जाव सत्थवाहप्पमितयो अन्नमन्नं सद्दावेहिंति, अन्न० स० २ एवं वदिहिंति जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं महापउमस्स रण्णो दो देवा महिड्ढीया जाव सेणाकम्मं करेंति तं जहा पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य; तं होउ णं देवाणुप्पिया ! अम्हं महापउमस्स रण्णो दोच्चे वि नामधेज्जे 'देवसेणे, देवसेणे'। तए णं तस्स महापउमस्स रन्नो दोच्चे वि नामधेज्जे भविस्सति 'देवसेणे' ति। तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो अन्नदा कदायि सेते संखतलविमलसन्निगासे चउद्दंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिस्सइ। तए णं से देवसेणे राया तं सेतं संखतलविमलसन्निगासं चउद्दंतं हत्थिरयणं दूरूढे समाणे सयदुवारं नगरं मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं अभिक्खणं अतिजाहिति य निज्जाहिति य। तए णं सयदुवारे नगरे बहवे राईसर जाव पभितयो अन्नमन्नं सद्दावेहिंति, अन्न० स० २ एवं वदिहिंति जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं देवसेणस्स रण्णो सेते संखतलविमलसन्निगासे चउद्दंते हत्थिरयणे समुप्पन्ने, तं होउ णं देवाणुप्पिया ! अम्हं देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे 'विमलवाहणे विमलवाहणे'। "तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे भविस्सति 'विमलवाहणे' त्ति। "तए णं से विमलवाहणे राया अन्नद्दा कदायि समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवज्जिहिति अप्पेगतिए आओसेहिति, अप्पेगतिए अवहसिहिति, अप्पेगतिए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निच्छोडेहिति, अप्पेगतिए निब्भच्छेहिति, अप्पेगतिए बंधेहिति, अप्पेगतिए णिरुंभेहिति, अप्पेगतियाणं छविच्छेदं करेहिति, अप्पेगइए मारेहिति, अप्पेगतिए पमारेहिइ, अप्पेकतिए उद्दवेहिति, अप्पेगतियाणं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं आछिंदिहिति विच्छिंदिहिति भिंदिहिति अवहरिहिति, अप्पेगतियाणं भत्तपाणं वोच्छिंदिहिति, अप्पेगतिए णिन्नगरे करेहिति, अप्पेगतिए निव्विसए करेहिति। ''तए णं सतदुवारे नगरे बहवे राईसर जाव विदिहिंति 'एवं खलु देवाणुप्पिया! विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने अप्पेगतिए आओसति जाव निव्विसए करेति, तं नो खलु देवाणुप्पिया! एयं अम्हं सेयं, नो खलु एयं विमलवाहणस्स रण्णो सेयं, नो खलु एयं रज्जस्स वा रट्ठस्स वा बलस्स वा वाहणस्स वा पुरस्स वा अंतेउरस्स वा जणवयस्स वा सेयं, जं णं विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं विमलवाहणं रायं एयमट्ठं विण्णवित्तए' त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, अन्न० प० २ जेणेव विमलवाहणे राया तेणेव उवागच्छंति, उवा० २ करयलपरिग्गहियं विमलवाहणं रायं जएणं विजएणं वद्धावेहिंति, जएणं विजएणं वद्धावित्ता एवं वदिहिंति 'एवं खलु देवाणुप्पिया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना, अप्पेगतिए आओसंति जाव अप्पेगतिए निव्विसए करेंति, तं नो खलु एयं देवाणुप्पियाणं सेयं, नो खलु एयं अम्हं सेयं, नो खलु एयं रज्जस्स वा जाव जणवदस्स वा सेयं, जं णं देवाणुप्पिया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना, तं विरमंतु णं देवाणुप्पिया एयमट्ठस्स अकरणयाए'। ''तए णं से विमलवाहणे राया तेहिं बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहप्पभितीहिं एयमट्ठं विन्नत्ते समाणे 'नो धम्मो त्ति, नो तवो,' त्ति मिच्छाविणएणं एयमट्ठं पडिसुणेहिति। ''तस्स णं सतदुवारस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे एत्थ णं सुभूमिभागे नामं उज्जाणे भविस्सति, सव्वोउय० वण्णओ। ''तेणं कालेणं तेणं समएणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पउप्पए सुमंगले नामं अणगारे जातिसंपन्ने जहा धम्मघोसस्स वण्णओ (स० ११ उ० ११ सु. ५३) जाव संखित्तविउलतेयलेस्से तिणाणोवगए सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणे विहरिस्सति। ''तए णं से विमलवाहणे राया अन्नदा कदायि रहचरियं काउं निज्जाहिति। तए णं से विमलवाहणे राया सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते रहचरियं करेमाणे सुमंगलं अणगारं छट्ठंछट्ठेणं जाव आतावेमाणं पासिहिति, पा० २ आसुरुते जाव मिसिमिसेमाणे सुमंगलं अणगारं रहसिरेणं णोल्लावेहिति। ''तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा रहसिरेणं णोल्लाविए सगाणे सणियं सणियं उट्ठेहिति, स० उ० २ दोच्चं पि उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय जाव आयावेमाणे विहरिस्सति। ''तए णं से विमलवाहणे राया सुमंगलं अणगारं दोच्चं पि रहसिरेणं णोल्लावेहिति। ''तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा दोच्चं पि रहसिरेणं णोल्लाविए समाणे सणियं सणियं उट्ठेहिति, स० उ० २ ओहिं पउंजिहिति, ओहिं प० २ विमलवाहणस्स रण्णो तीयद्धं आभेएहिति, ती० आ० २ विमलवाहणं रायं एवं वदिहिति 'नो खलु तुमं णं इओ तच्चे भवग्गहणे गोसाले नामं मंखलिपुत्ते होत्था समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए। तं जति तदा सव्वाणुभूतिणा अणगारेणं पभुणा वि होइऊणं सम्मं सहियं खमियं तितिक्खियं अहियासियं, जइ ते तदा समणेणं भगवता महावीरेणं पभुणा वि जाव अहियासियं, तं नो खलु अहं तहा सम्मं सहिस्सं जाव अहियासिस्सं, अहं ते नवरं सहयं सरहं ससारहीयं तवेणं तेयेणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेज्जामि'। ग्रं० १०००० । ''तए णं से विमलवाहणे रायया सुमंगलेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे सुमंगलं अणगारं तच्चं पि रहसिरेणं णोल्लावेहिति। ''तए णं सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा तच्चं पि रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेणे आयावणभूमीओ पच्चोरुहति, आ० प० २ तेयसमुग्घातेणं समोहन्निहिति, तेया० स० २ सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्किहिति, सत्तट्ठ० पच्चो० २ विमलवाहणं रायं सहयं सरहं ससारहीयं तवेणं तेयेणं जाव भासरासिं करेहिति।'' [सु. १३३-३४. गोयमपुच्छाए भगवंतपरूवियं सुमंगलाणगारस्स सव्वट्ठसिद्धविमाणगमणाणंतरं मोक्खगमणं] १३३. सुमंगले णं भंते! अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं जाव भासरासिं करेत्ता कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! सुमंगले णं अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं जाव भासरासिं करेत्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठमदसम-दुवालस जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणेहिति, बहूइं० पा० २ मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए जाव छेदेत्ता आलोइयपडिक्कंते सामहिपत्ते कालमासे० उड्ढं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंदिम जाव गेवेज्जविमाणावाससयं वीतीवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ णं देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता। तत्थ णं सुमंगलस्स वि देवस्स अजहन्नमणुमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता। १३४. से णं भंते ! सुमंगले देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति। [सु. १३५-४७. गोयमपुच्छाए भगवंतपरूविया गोसालजीवविमलवाहणनिवस्स बहुदुक्खपउरा अणेया नारय-तिरिय-मणुयभवा, संजमविराहणाभवा, संजमाराहणाभवा, सोहम्माइ-सव्वट्ठसिद्धविमाणभवा य] १३५. विमलवाहणे णं भंते ! राया सुमंगलेणं अणगारेणं सहये जाव भासरासीकए समाणे कहिं गच्छिहिति, कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! विमलवाहणे णं राया सुमंगलेणं अणगारेणं सहये जाव भासराकए समाणे अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठितीयंसि नगरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति। १३६. से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता मच्छसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति। १३७. से णं ततो अणंतरं उववट्टित्ता दोच्चं पि मच्छेसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव किच्चा छट्ठाए तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति। १३८. से णं तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता इत्थियासु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाह० जाव दोच्चं पि छट्ठाए तमाए पुढवीए उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता दोच्चं पि इत्थियासु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव किच्चा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता उरएसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव किच्चा दोच्चं पि पंचमाए जाव उव्वट्टित्ता दोच्चं पि उरएसु उववज्जिहिति जाव किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठितीयंसि जाव उव्वट्टित्ता सीहेसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे तहेव जाव किच्चा दोच्चं पि चउत्थीए पंक० जाव उवट्टित्ता दोच्चं पि सीहेसु उववज्जिहिति जाव किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल जाव उवट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव किच्चा दोच्चं पि तच्चाए वालुय जाव उवट्टित्ता दोच्चं पि पक्खीसु उवव० जाव किच्चा दोच्चाए सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता सिरीसिवेसु उवव०। तत्थ वि णं सत्थ० जाव किच्चा दोच्चं पि दोच्चाए सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सिरीसिवेसु उववज्जिहिति जाव किच्चा इमीसे रतणप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति, जाव उव्वट्टित्ता सण्णीसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव किच्चा दोच्चं पि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीयंसि णरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति। से णं ततो उव्वट्टित्ता जाइं इमाइं खहचरविहाणाइं भवंति, तं जहा चम्मपक्खीणं लोमपक्खीणं समुग्गपक्खीणं विततपक्खीणं तेसु अणगसतंसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायाहिति। सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं भुयपरिसप्पविहाणाइं भवंति; तं जहा गोहाणं नउलाणं जहा पण्णवणापदे जाव जाहगाणं चाउप्पाइयाणं तेसु, अणगसयसहस्सखुत्तो सेसं जहा खहचराणं, जाव किच्चा जाइं इमाइं उरपरिसप्पविहाणाइं भवंति, तं जहा अहीणं अयगराणं आसालियाणं महोरगाणं, तेसु अणेगसयसह० जाव किच्चा जाइं इमाइं चउप्पयविहाणाइं भवंति, तं जहा एगखुराणं दुखुराणं गंडीपदाणं सणप्पदाणं, तेसु अणेगसयसह० जाव किच्चा जाइं इमाइं जलचरविहाणाइं भवंति, तं जहा मच्छाणं कच्छभाणं जाव सुसुमाराणं, तेसु अणेगसयसहस्स० जाव किच्चा जाइं इमाइं चउरिंदियविहाणाइं भवंति, तं जहा अंधियाणं पोत्तियाणं जहा पण्णवणापदे जाव गोयमकीडाणं, तेसु अणेगसय० जाव किच्चा जाइं इमाइं तेइंदियविहाणाइं भवंति, तं जहा उवचियाणं जाव हत्थिसोडाणं, तेसु अणेगसय० जाव किच्चा जाइं इमाइं बेइंदियविहाणाइं भवंति तं जहा पुलाकिमियाणं जाव समुद्दलिक्खाणं, तेसु अणेगसय० जाव किच्चा जाइं इमाइं वणस्सतिविहाणाइं भवंति, तं जहा रुक्खाणं गच्छाणं जाव कुहुणाणं, तेसु अणेगसय० जाव पच्चायाइस्सइ, उस्सन्नं च णं कडुयरुक्खेसु कडुयवल्लीसु सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव किच्चा जाइं इमाइं वाउकाइयविहाणाइं भवंति, तं जहा पाईणवाताणं जाव सुद्धवाताणं, तेसु अणेगसयसहस्स० जाव किच्चा जाइं इमाइं तेउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा इंगालाणं जाव सूरकंतमणिनिस्सियाणं, तेसु अणेगसयसह०

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव किच्चा जाइं इमाइं आउकाइयविहाणाइं भवंति, तं जहा उस्साणं जाव खातोदगाणं, तेसु अणेगसयसह० जाव पच्चायाइस्सति, उस्सण्णं च णं खारोदएसु खातोदएसु, सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव किच्चा जाइं इमाइं पुढविकाइयविहाणाइं भवंति, तं जहा पुढवीणं सक्कराणं जाव सूरकंताणं, तेसु अणेगसय० जाव पच्चायाहिति, उस्सन्नं च णं खरबादरपुढविकाइएसु, सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव किच्चा रायगिहे नगरे बाहिंखरियत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव किच्चा दोच्चं पि रायगिहे नगरे अंतोखरियत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपादमूले बेभेले सन्निवेसे माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चायाहिति। तए णं तं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं जोव्वणमणुप्पत्तं पडिरूविएणं सुंकेणं पडिरूविएणं विणएणं पडिरूवियस्स भत्तारस्स भारियत्ताए दलइस्संति। सा णं तस्स भारिया भविस्सति इट्ठा कंता जाव अणुमया भंडकरंडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसंगोविया, चेलपाले इव सुसंपरिहिया, रयणकरंडओ विव सुरक्खिया सुसंगोविया 'मा णं सीयं मा णं उण्हं जाव परीसहोवसग्गा फुसंतु'। तए णं सा दारिया अन्नदा कदापि गुव्विणी ससुरकुलाओ कुलघरं निज्जमाणी अंतरा दवग्गिजालमिहया कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु अग्गिकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति। १३९. से णं ततोहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभिहिति, माणुसं विग्गहं लभित्ता केवलं बोधिं बुज्झिहिति, केवलं बोधिं बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति। त्थ वि णं विराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु असुरकुमारे देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति। १४०. से णं ततोहिंतो जाव उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं तं चेव जाव वि णं विराहियसामण्णे कालमासे जाव किच्चा दाहिणिल्लेसु नागकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति। १४१. से णं ततोहिंतो अणंतरं० एवं एएणं अभिलावेणं दाहिणिल्लेसु सुव्वण्णकुमारेसु, दाहिणिल्लेसु विज्जुकुमारेसु, एवं अग्गिकुमारवज्जं जाव दाहिणिल्लेसु थणियकुमारेसु०। १४२. से णं ततो जाव उववट्टित्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति जाव विराहियसामण्णे जोतिसिएसु देवेसु उववज्जिहिति। १४३. से णं ततो अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, केवलं बोहिं बुज्झिहिति जाव अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति। १४४. से णं ततोहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, केवलं बोहिं बुज्झिहिति। तत्थ वि णं अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति। १४५. से णं तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, केवलं बोहिं बुज्झिहिति। तत्थ वि णं अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति। १४६. से णं ततोहिंतो एवं जहा सणंकुमारे तहा बंभलोए महासुक्के आणए आरणे०। १४७. से णं ततो जाव अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति। [सु. १४८-५१. भगवया परूवियं गोसालजीवस्स महाविदेहे दढपतिण्णभवे मोक्खगमणं] १४८. से णं ततोहिंतो अणंतरं चयं चयित्ता महाविदेहे वासे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं जाव अपरिभूयाइं, तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाहिति। एवं जहा उववातिए दढप्पतिण्णवत्तव्वता सच्चेव वत्तव्वता निरवसेसा भाणितव्वा जाव केवलवरनाण-दंसणे समुप्पज्जिहिति। १४९. तए णं से दढप्पतिण्णे केवली अप्पणो तीयद्धं आभोएही, अप्प० आ० २ समणे निग्गंथे सद्दावेहिति, सम० स० २ एवं वदिही 'एवं खलु अहं अज्जो! इतो चिरातीयाए अद्धाए गोसाले नामं मंखलिपुत्ते होत्था समणवायए जाव छउमत्थे चेव कालगए, तम्मूलगं च णं अहं अज्जो! अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिए। तं मा णं अज्जो! तुब्भं पि केयि भवतु आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए, मा णं से वि एवं चेव अणादीयं अणवयग्गं जाव संसारकंतारं अणुपरियट्टिहिति जहा णं अहं'। १५०. तए णं ते समणा निग्गंथा दढप्पतिण्णस्स केवलिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्मा भीया तत्था तसिता संसारभउव्विग्गा दढप्पतिण्णं केवलिं वंदिहिंति नमंसिहिंति, वं० २ तस्स ठाणस्स आलोएहिति निंदिहिंति जाव पडिवज्जिहिंति। १५१. तए णं से दढप्पतिण्णे केवली बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणेहिति, बहू० पा० २ अप्पणो आउसेसं जाणेत्ता भत्तं पच्चक्खाहिति एवं जहा उववातिए जाव सव्वदुक्खाणमंतं काहिति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव विहरति। 卐卐卐 ॥तेयनिसग्गो समत्तो॥ ॥समत्तं च पण्णरसमं सयं एक्कसरयं॥१५॥ 卐卐卐 सोलसमं सयं 卐卐卐 [सु. १ सोलसमसयस्स उद्देसनामाइं]१. अहिकरणि १ जरा २ कम्मे ३ जावतियं ४ गंगदत्त ५ सुमिणे य ६। उवयोग ७ लोग ८ बलि ९ ओहि १० दीव ११ उदही १२ दिसा १३ थणिया १४ ॥१॥ ☆☆☆ **पढमो उद्देसओ 'अहिगरणि'** ☆☆☆ [सु. २ पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ] २ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव पज्जुवासमाणे एवं वदासि [सु. ३-५. अहिगरणीए वाउकायस्स वक्कमण-विणासनिरूवणं] ३. अत्थि णं भंते ! अधिकरणिंसि वाउयाए वक्कमइ ? हंता; अत्थि। ४. से भंते ! किं पुट्ठे उद्दाति, अपुट्ठे उद्दाइ ? गोयमा ! पुट्ठे उद्दाइ, नो अपुट्ठे उद्दाइ। ५. से भंते ! किं ससरीरे निक्खमइ, असरीरे निक्खमइ ? एवं जहा खंदए (स० २ उ० १ सु० ७ ३)) जाव सेतेणट्ठेणं जाव असरीरे निक्खमति। [सु. ६. इगालकारियाए अगणिकाए ठिइनिरूवणं] ६. इंगालकारियाए णं भंते ! अगणिकाए केवतियं कालं संचिट्ठइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि रातिंदियाइं। अन्ने वित्थ वाउयाए वक्कमति, न विणा वाउकाएणं अगणिकाए उज्जलति। [सु. ७-८. तत्तलोहउक्खेवयाइपुरिसस्स किरियानिरूवणं] ७. पुरिसे णं भंते ! अयं अयकोट्ठंसि आयोमयेणं संडासएणं उव्विहमाणे वा पव्विहमाणे वा कतिकिरिए ? गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे अयं अयकोट्ठंसि अयोमयेणं संडासएणं उव्विहति वा पव्विहति वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पाणातिवायकिरियाए पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे; जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो अये निव्वत्तिए, अयकोट्ठे निव्वत्तिए, संडासए निव्वत्तिए, इंगाला निव्वत्तिया, इंगालकड्ढणी निव्वत्तिया, भत्था निव्वत्तिया, ते वि णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा। ८. पुरिसे णं भंते ! अयं अयकोट्ठाओ अयोमएणं संडासएणं गहाय अहिकरणिंसि उक्खिवमाणे वा निक्खवमाणे वा कतिकिरिए ? गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे अयं अयकोट्ठाओ जाव निक्खिवति वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पाणातिवायकिरियाए पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे; जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो अये निव्वत्तिए, संडासए निव्वत्तिते, चम्मेट्ठे निव्वत्तिए, मुट्ठिए निव्वत्तिए, अधिकरणी णिव्वत्तिता, अधिकरणिखोडी णिव्वत्तिता, उदगदोणी णि०, अधिकरणसाला निव्वत्तिया ते वि णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा। [सु. ९-१७. जीव-चउवीसइदंडएसु अहिकरणि-अहिकरण-साहिकरणि-निरहिकरणि-आयाहिकरणिआइ-आयप्पयोगनिव्वत्तियाइपदेहिं निरूवणं] ९. (१) जीवे णं भंते ! किं अधिकरणी, अधिकरणं ? गोयमा ! जीवे अधिकरणी वि, अधिकरणं पि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'जीवे अधिकरणी वि, अधिकरणं पि' ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव अहिकरणं पि। १०. नेरतिए णं भंते ! किं अधिकरणी, अधिकरणं ? गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरणं पि। एवं जहेव जीवे तहेव नेरइए वि। ११. एवं निरंतरं जाव वेमाणिए। १२. (१) जीवे णं भंते ! किं साहिकरणी, निरधिकरणी ? भंते ! साहिकरणी, नो निरहिकरणी। (२) से केणट्ठणं० पुच्छा। गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, सेतेणट्ठेणं जाव नो निरहिकरणी। १३. एवं जाव वेमाणिए। १४. (१) जीव णं भंते ! किं आयाहिकरणी, पराहिकरणी, तदुभयाधिकरणी ? गोयमा ! आयाहिकरणी वि, पराधिकरणी वि, तदुभयाहिकरणी वि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चिति जाव तदुभयाधिकरणी वि ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठणं जाव तदुभयाधिकरणी वि। १५. एवं जाव वेमाणिए। १६. (१) जीवाणं भंते ! अधिकरणे किं आयप्पयोगनिव्वत्तिए, परप्पयोगनिव्वत्तिए, तदुभयप्पयोगनिव्वत्तिए ? गोयमा ! आयप्पयोगनिव्वत्तिए वि, परप्पयोगनिव्वत्तिए वि, तदुभयप्पयोगनिव्वत्तिए वि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेणं जाव तदुभयप्पयोगनिव्वत्तिए वि। १७. एवं जाव वेमाणियाणं। [सु. १८-२०. सरीर-इंदिय-जोगभेयनिरूवणं] १८. कति णं भंते ! सरीरगा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरगा पन्नत्ता, तंजहा ओरालिए जाव कम्मए। १९. कति णं भंते ! इंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच इंदिया पन्नत्ता, तं जहा सोतिंदिए जाव फासिंदिए। २०. कतिविहे णं भंते ! जोए पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोए पन्नत्ते, तं जहा मणजोए वइजोए कायजोए।[सु. २१-२८. सरीरपंचगं निव्वत्तेमाणे जीवे अहिकरणिअहिकरणनिरूवणं]२१. (१) जीवे णं भंते ! आरोलियसरीरं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी, अधिकरणं ? गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरणं पि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ? गोयमा !

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अविरतिं पडुच्च। सेतेणट्ठेणं जाव अधिकरणं पि। २२. पुढविकाइए णं भंते! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी० ? एवं चेव। २३. एवं जाव मणुस्से। २४. एवं वेउव्वियसरीररं पि। नवरं जस्स अत्थि। २५. (१) जीवे णं भंते! आहारगसरीरं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी० पुच्छा। गोयमा! अधिकरणी वि, अधिकरणं पि। (२) से केणट्ठेणं जाव अधिकरणं पि? गोयमा! पमादं पडुच्च। से तेणट्ठेणं जाव अधिकरणं पि। २६. एवं मणुस्से वि। २७. तेयासरीरं जहा ओरालियं, नवरं सव्वजीवाणं भाणियव्वं। २८. एवं कम्मगसरीरं पि। [सु. २९-३०. इंदियपंचगं निव्वत्तेमाणे जीवे अहिकरणिअहिकरणनिरूवणं] २९. जीवे णं भंते! सोतिंदियं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणं? एवं जहेव ओरालियसरीरं तहेव सोइंदियं पि भाणियव्वं। नवरं जस्स अत्थि सोतिंदियं। ३०. एवं चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाणि वि, नवरं जाणियव्वं जस्स जं अत्थि। [सु. ३१-३३. जोगतिगं निव्वत्तेमाणे जीवे अहिकरणि-अहिकरणनिरूवणं] ३१. जीवे णं भंते! मणजोगं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी, अधिकरणं? एवं जहेव सोतिंदियं तहेव निरवसेसं। ३२. वइजोगो एवं चेव। नवरं एगिंदियवज्जाणं। ३३. एवं कायजोगो वि, नवरं सव्वजीवाणं जाव वेमाणिए। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०।॥१६.१॥ ☆☆☆ **बीओ उद्देसओ 'जरा'** ☆☆☆ [सु. १. बिइउद्देसगस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वदासि [सु. २-७. जीव-चउवीसइदंडगेसु जरा-सोगनिरूवणं] २. (१) जीवाणं भंते! किं जरा, सोगे? गोयमा! जीवाणं जरा वि, सोगे वि। (२) से केणट्ठेणं भंते! जाव सोए वि? गोयमा! जे णं जीवा सरीरं वेयणं वेदेंति तेसि णं जीवाणं जरा, जे णं जीवा माणसं वेदणं वेदेंति तेसि णं जीवाणं सोगे। से तेणट्ठेणं जाव सोगे वि। ३. एवं नेरइयाण वि। एवं जाव थणियकुमाराणं। ५. (१) पुढविकाइयाणं भंते! किं जरा, सोगे? गोयमा! पुढविकाइयाणं जरा, नो सोगे। (२) से केणट्ठेणं जाव नो सोगे? गोयमा! पुढविकाइया णं सारीरं वेदणं वेदेंति, नो माणसं वेदणं वेदेंति। से तेणट्ठेणं जाव नो सोगे। ६. एवं जाव चउरिंदियाणं। ७. सेसाणं जहा जीवाणं जाव वेमाणियाणं। सेवं भंते! सेवं भंते! जाव पज्जुवासति। [सु. ८-९. वंदण-नमंसणाइपुव्वं सक्कस्स भगवंतं पइ पण्हकरणं] ८. तेणं कालेणं तेणं समयेणं देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे जाव भुंजमाणे विहरति। इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विपुलेणं ओहिणा आभोएमाणे आभोएमाणे पासति यऽत्थ समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे एवं जहा ईसाणे ततियसए (स० ३ उ० १ सु० ३३) तहेव सक्को वि। नवरं आभियोगिए ण सद्दावेति, हरी पायत्ताणियाहिवती, सुघोसा घंटा, पालओ विमाणकारी, पालगं विमाणं, उत्तरिल्ले निज्जाणमग्गे, दाहिणपुरत्थिमिल्ले रतिकरपव्वए, सेसं तं चेव जाव नामगं सावेत्ता पज्जुवासति। धम्मकहा जाव परिसा पडिगया। ९. तए णं से सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्मा हट्ठतुट्ठ० समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, २ त्ता एवं वयासी [सु. १०. सक्कपण्हुत्तरे भगवया परूवियं ओग्गहपणगं] १०. कतिविहे णं भंते! ओग्गहे पन्नत्ते? सक्का! पंचविहे ओग्गहे पन्नत्ते, तं जहा देविंदोग्गहे, रायोग्गहे गाहावतिओग्गहे सागरिओग्गहे साधम्मिओग्गहे। [सु. ११. सक्कस्स समणनिग्गंथओग्गहजाणणा] ११. जे इमे भंते! अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति एएसि णं अहं ओग्गहं अणुजाणामीति कट्टु समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, २ त्ता तमेव दिव्वं जाणविमाणं दूहति, दू० २ जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए। [सु. १२-१६. गोयमपुट्ठसक्कविसएसु पण्हेसु भगवओ समाहाणं सु. १२. सक्कस्स निग्गंथओग्गहजाणणा] १२. 'भंते!' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वं० २ त्ता एवं वयासी जं णं भंते! सक्के देविंदे देवराया तुब्भे एवं वदति सच्चे णं एस मट्ठे? हंता, सच्चे। [सु. १३. सक्कस्सम्मावाइत्तं] १३. सक्के णं भंते! देविंदे देवराया किं सम्मावादी, मिच्छावादी? गोयमा! सम्मावादी, नो मिच्छावादी। [सु. १४-१५. सक्कस्स सच्च-मोस-सच्चामोस-असच्चामोस-सावज्ज-अणवज्जभासा भासित्तं] १४. सक्के णं भंते! देविंदे देवराया किं सच्चं भासं भासति, मोसं भासं भासति, सच्चामोसं भासं भासति, असच्चामोसं भासं भासइ? गोयमा! सच्चं पि भासं भासति, जाव असच्चामोसं पि भासं भासति। १५. (१) सक्के णं भंते! देविंदे देवराया किं सावज्जं भासं भासति, अणवज्जं भासं भासति? गोयमा! सावज्जं पि भासं भासति, अणवज्जं पि भासं भासति। (२) से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ सावज्जं पि जाव अणवज्जं पि भासं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भासति ? गोयमा ! जाहे णं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं अनिज्जूहित्ताणं भासं भासति ताहे णं सक्के देविंदे देवराया सावज्जं भासं भासति, जाहे णं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं निज्जूहित्ताणं भासं भासइ ताहे सक्के देविंदे देवराया अणवज्जं भासं भासति, से तेणट्ठेणं जाव भासति । [सु. १६. सक्कस्स भवसिद्धियत्त - सम्मद्दिट्ठित्त-परित्तसंसारियत्त-सुलहबोहित्तआराहयत्त-चरिमत्ताइं] १६. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया किं भवसिद्धीए, अभवसिद्धीए, सम्मदिट्ठीए० ? एवं जहा मोउद्देसए सणंकुमारो (स० ३ उ० १ सु० ६२) जाव नो अचरिमे ।[सु. १७-१९. जीव-चउवीसदंडएसु चेयकडकम्मत्तपरूवणं]१७. (१) जीवाणं भंते ! किं चेयकडा कम्मा कज्जंति, अचेयकडा कम्मा कज्जंति ? गोयमा ! जीवाणं चेयकडा कम्मा कज्जंति, नो अचेयकडा कम्मा कज्जंति । (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव कज्जंति ? गोयमा ! जीवाणं आहारोवचिता पोग्गला बोंदिचिया पोग्गला कलेवरचिया पोग्गला तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमंति, नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो ! । दुट्ठाणेसु दुसेज्जासु दुन्निसीहियासु तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमंति, नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो ! । आयंके से वहाए होति, संकप्पे से वहाए होति, मरणंते से वहाए होति, तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमंति, नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो ! । सेतेणट्ठेणं जाव कम्मा कज्जंति । १८. एवं नेरतियाण वि । १९. एवं जाव वेमाणियाणं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरति । ॥१६.२॥ ☆☆☆ **तइओ उद्देसओ 'कम्मे'** ☆☆☆ [सु. १. तइयउद्देसगस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वदासि [सु. २-३. कम्मपगडिभेया चउवीसदंडएसु अट्ठकम्मपगडिनिरूवणं च] २. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ, तं जहा नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । ३. एवं जाव वेमाणियाणं । [सु. ४. णाणावरणिज्जाइबंधय-वेयएसु कम्मपयडिबंध-वेयजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] ४. जीवे णं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं वेदेमाणे कति कम्मपगडीओ वेदेति ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ, एवं जहा पन्नवणाए वेदावेउद्देसओ सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो । वेदाबंधो वि तहेव । बंधावेदो वि तहेव । बंधाबंधो वि तहेव भाणियव्वो जाव वेमाणियाणं ति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति । [सु. ५. भगवओ जणवयविहरणं]५. तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नदा कदायि रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेतियाओ पडिनिक्खमति, प० २ बहिया जणवयविहारं विहरति । [सु. ६-९. उल्लुयतीरनगरबहियाएगजंबुयचेइए भगवओ समागमणं, गोयमपण्हकरणं च] ६. तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयतीरे नामं नगरे होत्था । वण्णओ । ७. तस्स णं उल्लुयतीरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए, एत्थ णं एगजंबुए नामं चेतिए होत्था । वण्णओ । ८. तए णं समाणे भगवं महावीरे अन्नदा कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव एगजंबुए समोसढे । जाव परिसा पडिगया । ९. 'भंते !' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, २ एवं वदासि [सु. १०. आतावेमाणस्स अणगारस्स हत्थाइआउंटणविसये पुव्वण्ह-उत्तरण्हेसु कमेणं निसेह-अणुण्णानिद्देसपुव्वं झाणत्थऽणगारनासियागयलंबमाणअंसियाछेदकवेज्जं अणगारं च पडुच्च किरियानिरूवणं] १०. अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं जाव आतावेमाणस्स तस्स णं पुरत्थिमेणं अवड्ढं दिवसं नो कप्पति हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरूं वा आउंटावेत्तए वा पसारेत्तए वा; पच्चत्थिमेणं से अवड्ढं दिवसं कप्पति हत्थं वा पायं वा जाव ऊरूं वा आउंटावेत्तया वा पसारेत्तए वा । तस्स य अंसियाओ लंबंति, तं च वेज्जे अदक्खु, ईसिं पाडेति, ई० २ अंसियाओ छिंदेज्जा । से नूणं भंते ! जे छिंदति तस्स किरिया कज्जति ? जस्स छिज्जंति नो तस्स किरिया कज्जइ णऽन्नत्थेगेणं धम्मंतराइएणं ? हंता, गोयमा ! जे छिंदति जाव धम्मंतराइएणं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥१६.३॥ ☆☆☆ **चउत्थो उद्देसओ 'जावतियं'** ☆☆☆ [सु. १ चउत्थुद्देसगस्सुवुग्घाओ] १. राहगिहे जाव एवं वदासि [सु. २-६. अंतपंतभोजि-चउत्थ-छट्ठ-अट्ठम-दसमभत्तयअणगारस्स कम्मनिज्जरं पडुच्च नेरइयाणं एगवरिसाइवरिसकोडाकोडिकालेण वि कम्मनिज्जरानिसेहो] २. जावतियं णं भंते ! अन्नगिलायए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरतिया वासेण वा वासेहि वा वाससतेण वा खवयंति ? णो इणट्ठे समट्ठे । ३. जावतियं णं भंते ! चउत्थभत्तिए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरतिया वाससतेण वा वाससतेहि वा वाससहस्सेण वा खवयंति ? णो इणट्ठे समट्ठे । ४. जावतियं णं भंते ! छट्ठभत्तिए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरतिया वाससतेण वा वाससतेहि वा वाससहस्सेण वा खवयंति ? णो इणट्ठे समट्ठे । ५.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जावतियं णं भंते ! अट्ठमभत्तिए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वाससयसहस्सेण वा वाससयसहस्सेहि वा वासकोडीए वा खवयंति ? नो इणट्ठे समट्ठे। ६. जावतियं णं भंते ! दसमभत्तिए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरतिया वासकोडीए वा वासकोडीहिं वा वासकोडाकोडीए वा खवयंति ? णो इणट्ठे समट्ठे। [सु. ७. विइयाइछट्ठसुत्तवत्तव्वावगमत्थं कोसंबगंडियावदालकविद्धपुरिस-अहिगरणिआउडेमाणपुरिस - सामलिगंडियावदालकतरुणपुरिस-तणहत्थग-अयोकवल्लदिट्ठंतपरूवणा ७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति जावतियं अन्नगिलातए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरतिया वासेण वा वासेहि वा वाससएण वा नो खवयंति, जावतियं चउत्थभत्तिए, एवं तं चेव पुव्वभणियं उच्चारेयव्वं जाव वासकोडाकोडीए वा नो खवयंति ? ''गोयमा ! ''से जहानामए केयि पुरिसे जुण्णे जराजज्जरियदेहे सिढिलतयावलितरंगसंपिणद्धगत्ते पविलपरिसडियदंतसेढी उण्हाभिहए तण्हाभिहए आउरे झुंझिते पिवासिए दुब्बले किलंते एगं महं कोसंबगंडियं सुक्खं जडिलं गंठिल्लं चिक्कणं वाइद्धं अपत्तियं मुंडेण परसुणा अक्कमेज्जा, तए णं से पुरिसे महंताइं महंताइं सद्दाइं करेइ, नो महंताइ महंताइं दलाइं अवद्दालेति, एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं चिक्कणीकयाइं एवं छट्ठसए स० ६ उ० १ सु० ४) जाव नो महापज्जवसाणा भवंति। ''से जहा वा केयि पुरिसे अहिकरणिं आउडेमाणे महया जाव नो महापज्जवसाणा भवंति। से जहानामए केयि पुरिसे तरुणे बलवं जाव मेहावी निउणसिप्पोवगए एगं महं सामलिगंडियं उल्लं अजडिलं अगंठिल्लं अचिक्कणं अवाइद्धं सपत्तियं तिक्खेण परसुणा अक्कमेज्जा, तए णं से पुरिसे नो महंताइं महंताइं सद्दाइं करेति, महंताइं महंताइं दलाइं अवद्दालेति, एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबादराइं कम्माइं सिढिलीकयाइं णिट्ठियाइं कयाइं जाव खिप्पामेव परिविद्धत्थाइं भवंति, जावतियं तावतियं जाव महापज्जवसाणा भवंति। ''से जहा वा केयि पुरिसे सुक्कं तणहत्थगं जायतेयंसि पक्खिवेज्जा एवं जहा छट्ठसए (स० ६ उ० १ सु० ४) तहा अयोकवल्ले वि जाव महापज्जवसाणा भवंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ 'जावतियं अन्नइलायए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेइ० तं चेव जाव वासकोडामोडीए वा नो खवयंति' ॥'' सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरइ। ॥१६.४॥ **☆☆☆पंचमो उद्देसओ 'गंगदत्त'☆☆☆** [सु. १-२. भगवओ उल्लयतीरनगरएगजंबुयचेइए समागमणं] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयतीरे नामं नगरे होत्था। वण्णओ। एगजंबुए चेइए। वण्णओ। २. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासति। [सु. ३-७. सक्कस्स भगवओ समीवमागणं, महिड्ढियदेवं पडुच्च सक्कपुच्छाए बाहिरपोग्गलपरियादाणेण आगमण-गमण-भासणाइपरूवणं, सक्कस्स य पडिगमणं] ३. तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी एवं जहेव बितियउद्देसए (सु० ८) तहेव दिव्वेणं जाणविमाणेणं आगतो जाव जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता जाव नमंसित्ता एवं वदासि ४. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले अपरियादिइत्ता पभू आगमित्तए ? नो इणट्ठे समट्ठे। ५. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियादिइत्ता पभू आगमित्तए ? हंता, पभू। ६. देवे णं भंते ! महिड्ढीए एवं एतेणं अभिलावेणं भमित्तए १। एवं भासित्तए वा २, विआगरित्तए वा ३, उम्मिसावेत्तए वा निमिसावेत्तए वा ४, आउटंवेत्तए वा पसारेत्तए वा ५, ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेइत्तए वा ६, एवं विउव्वित्तए वा ७, एवं परियारेत्तए वा ८ ? जाव हंता, पभू। ७. इमाइं अट्ठ उक्खित्तपसिणावागरणाइं पुच्छति, इमाइं० २ संभंतियवंदणएणं वंदति, संभंतिय० २ तमेव दिव्वं जाणविमाणं दूहति, २ जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगते। [सु. ८. गोयमपुच्छाए भगवओ परूवणे मायिमिच्छद्दिट्ठि-अमायिसम्मद्दिट्ठीणं दोण्हं महासुक्कदेवाणं पोग्गलपरिवणइविसयविवाए नियवत्तव्वनिण्णयत्थं अमायिसम्मद्दिट्ठिदेवस्स भगवओ समीवमागमणं, सक्कदेविंदस्स य महासुक्कदेवतेय-असहणाइ] ८. 'भंते !' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, २ एवं वयासी अन्नदा णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया देवाणुप्पियं वंदति नमंसति, वंदि० २ सक्कारेति जाव पज्जुवासति, किं णं भंते ! अज्ज सक्के देविंदे देवराया देवाणुप्पियं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छइ, २ संभंतियवंदणएणं वंदति०, २ जाव पडिगए ? 'गोयमा !' दि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वदासि ''एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे दो देवा महिड्ढीया जाव महेसक्खा एगविमाणंसि देवत्ताए उववन्ना, तं जहा मायिमिच्छादिट्ठिउववन्नए,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमायिसम्मद्दिट्ठिउववन्नए य। ''तए णं से मायिमिच्छादिट्ठिउववन्नए देवे तं अमायिसम्मद्दिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वदासि परिणममाणा पोग्गला नो परिणया, अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला नो परिणया, अपरिणया'। ''तए णं से अमायिसम्मद्दिट्ठीउववन्नए देवे तं मायिमिच्छद्दिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वयासी परिणममाणा पोग्गला परिणया, नो अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला परिणया, नो अपरिणया। ''तं मायिमिच्छद्दिट्ठीउववन्नगं देवं एवं पडिहणइ, एवं पडिहणित्ता ओहिं पउंजति, ओहिं० २ ममं ओहिणा आभोएति, ममं २ अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था 'एवं खलु समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे उल्लुयतीरस्स नगरस्स बहिया एगजंबुए चेइए अहापडिरूवं जाव विहरति, तं सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्ता इमं एयारूवं वागरणं पुच्छित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेति, एवं संपेहित्ता चउहि वि सामाणियसाहस्सीहिं० परियारो जहा सूरियाभस्स जाव निग्घोसनाइतरवेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव उल्लुयतीरे जेणेव एगजंबुए चेतिए जेणेव ममं अंतियं तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए णं से सक्के देविंदे देवराया तस्स देवस्स तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं दिव्वं तेयलेस्सं असहमाणे ममं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छति, पु० २ संभंतिय जाव पडिगए।'' [सु. ९-१३. गंगदत्ताभिहाणअमायिसम्मद्दिट्ठिमहासुक्कदेवपुच्छाए भगवओ मायिमिच्छद्दिट्ठिदेवं पइ गंगदत्तदेववत्तव्वस्स सच्चट्ठनिरूवणाइ] ९. जावं च णं समणे भगवं महावीरे भगवतो गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेति तावं च णं से देवे तं देसं हव्वमागए। १०. तए णं से देवे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदति नमंसति, २ एवं वदासी ''एवं खलु भंते! महासुक्के कप्पे महासमाणे विमाणे एगे मायिमिच्छद्दिट्ठिउववन्नए देवे ममं एवं वदासी 'परिणममाणा पोग्गला नो परिणया, अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला नो परिणया अपरिणया'। तए णं अहं तं मायिमिच्छद्दिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वदामि 'परिणममाणा पोग्गलपरिणया, नो अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला परिणया, णो अपरिणया'। से कहमेयं भंते! एवं?'' ११. 'गंगदत्ता! ई समणे भगवं महावीरे गंगदत्तं देवं एवं वदासी अहं पि णं गंगदत्ता! एवमाइक्खामि० ४ परिणममाणा पोग्गला जाव नो अपरिणया, सच्चमेसे अट्ठे। १२. तए णं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० समणं भगवं महावीरं वंदति, नमंसति, २ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ। १३. तए णं समणे भगवं महावीरे गंगदत्तस्स तीसे य जाव धम्मं परिकहेति जाव आराहए भवति। [सु. १४. भगवया परूवियं गंगदत्तदेवस्स भवसिद्धियाइत्तं, गंगदत्तदेवस्स य सट्ठाणगमणं] १४. तए णं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिये धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेति, उ० २ समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, २ एवं वदासी अहं णं भंते! गंगदत्ते देवे किं भवसिद्धिए अभवसिद्धिए? एवं जहा सूरियाभे जाव बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेति, उव० २ जाव तामेव दिसं पडिगए। [सु. १५. गंगदत्तदिव्वदेविड्ढिसंबद्धाए गोयमपुच्छाए भगवओ समाहाणं] १५. 'भंते!' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव एवं वदासी गंगदत्तस्स णं भंते! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुती जाव अणुप्पविट्ठा? गोयमा! सरीरं गया, सरीरं अणुप्पविट्ठा। कूडागारसालादिट्ठंतो जाव सरीरं अणुप्पविट्ठा। अहो! णं भंते! गंगदत्ते देवे महिड्ढीए जाव महेसक्खे। [सु. १६. गंगदत्तदेवपुव्वभवस्स-गंगदत्तगाहावतिस्स वित्थरओ वुत्तंतो] १६. गंगदत्तेणं भंते! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुती किण्णा लद्धा जाव जं णं गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागया? 'गोयमा!' ई समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वदासी ''एवं खलु गोयमा! ''तेणं कालेणं तेणं समयेणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे णामं नगरे होत्था, वण्णओ। सहसंबवणे उज्जाणे, वण्णओ। तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे गंगदत्ते नामं गाहावती परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूते। ''तेणं कालेणं तेणं समयेणं मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव पकड्ढिज्जमाणेणं पकड्ढिज्जमाणेणं सीसगणसंपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम जाव जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरति। परिसा निग्गता जाव पज्जुवासति। ''तए णं से गंगदत्ते गाहावती इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ० ण्हाते कतबलिकम्मे जाव सरीरे सातो गिहातो पडिनिक्खमति, २ पादविहारचारेणं हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, नि० २ जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव मुणिसुव्वए अरहा तेणेव उवागच्छइ, उवा० २ मुणिसुव्वयं अरहं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति। ''तए णं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुणिसुव्वए अरहा गंगदत्तस्स गाहावतिस्स तीसे य महति जाव परिसा पडिगता। ''तए णं से गंगदत्ते गाहावती मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेति, उ० २ मुणिसुव्वतं अरहं वंदति नमंसति, वं० २ एवं वदासी 'सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वदह। जं नवरं देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे जाव पव्वयामि'। 'अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं'। ''तए णं से गंगदत्ते गाहावती मुणिसुव्वतेणं अरहया एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ० मुणिसुव्वतं अरहं वंदति नमंसति, वं० २ मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियाओ सहसंबवणाओ उज्जाणातो पडिनिक्खमति, पडि० २ जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवा० २ विपुलं असण-पाण० जाव उवक्खडावेइ, उव० २ मित्त-णाति-णियग० जाव आमंतेति, आ० २ ततो पच्छा ण्हाते जहा पूरणे (स० ३ उ० २ सु० १९) जाव जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेति, ठा० २ तं मित्त-णाति० जाव जेट्ठपुत्तं च आपुच्छति, आ० २ पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दूहति, पुरिससह० २ मित्त-णाति-नियग० जाव परिजणेणं जेट्ठपुत्तेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव णादितरवेणं हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, नि० २ जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छति, उ० २ छत्तादिए तित्थगरातिसए पासति, एवं जहा उद्दायणो (स० १३ उ० ६ सु० ३०) जाव सयमेव आभरणं ओमुयइ, स० २ सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, स० २ जेणेव मुणिसुव्वये अरहा, एवं जहेव उद्दायणो (स० १३ उ० ६ सु० ३१) तहेव पव्वइओ। तहेव एक्कारस अंगाइं अधिज्जइ जाव मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए जाव छेदेति, सट्ठिं० २ आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि जाव गंगदत्तदेवत्ताए उववन्ने। ''तए णं से गंगदत्ते देवे अहुणोववन्नमेत्तए समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गच्छति, तं जहा आहारपज्जत्तीए जाव भासा-मणपज्जत्तीए। ''एवं खलु गोयमा ! गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नगया''। [सु. १७. गंगदत्तदेवठितिपरूवणा] १७. गंगदत्तस्स णं भंते ! देवस्स केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता ? गोयमा ! सत्तरससागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता। [सु. १८. गंगदत्तदेवस्स कमेणं सिद्धिगामित्तनिरूवणं]१८. गंगदत्ते णं भंते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१६.५॥ ☆☆☆ **छट्ठो उद्देसओ 'सुमिणे'** ☆☆☆ [सु. १. सुविणस्स पंच पगारा] १. कतिविधे णं भंते ! सुविणदंसणे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे सुविणदंसणे पन्नत्ते, तं जहा अहातच्चे पयाणे चिंतासुविणे तव्विवरीए अव्वत्तदंसणे। [सु. २. सुत्तजागरस्स सुविणदंसणनिरूवणं] २. सुत्ते णं भंते ! सुविणं पासति, जागरे सुविणं पासति, सुत्तजागरे सुविणं पासति ? गोयमा ! नो सुत्ते सुविणं पासति, नो जागरे सुविणं पासति, सुत्तजागरे सुविणं पासति। [सु. ३. जीवेसु सुत्तत्त-जागरत्त-सुत्तजागरत्तनिरूवणं] ३. जीवा णं भंते ! किं सुत्ता, जागरा, सुत्तजागरा ? गोयमा ! जीवा सुत्ता वि, जागरा वि, सुत्तजागरा वि। [सु. ४-५. नेरइय-एगिंदिय-विगलिंदिएसु सुत्तत्तनिरूवणं] ४. नेरतिया णं भंते ! किं सुत्ता० पुच्छा। गोयमा ! नेरइया सुत्ता, नो जागरा, नो सुत्तजागरा। ५. एवं जाव चउरिंदिया। [सु. ६. पंचेदियतिरिक्खजोणिएसु सुत्तत्त-सुत्तजागरत्तनिरूवणं] ६. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! किं सुत्ता० पुच्छा। गोयमा ! सुत्ता, नो जागरा, सुत्तजागरा वि। सु. ७. मणुस्सेसु सुत्तत्त-जागरत्त-सुत्तजागरत्तनिरूवणं ७. मणुस्सा जहा जीवा। [सु. ८. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिएसु सुत्तत्तनिरूवणं] ८. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा नेरइया। [सु. ९. संवुड -संवुडासंवुडेसु सुविणदंसणनिरूवणं] ९. संवुडे णं भंते ! सुविणं पासति, असंवुडे सुविणं पासति, संवुडासंवुडे सुविणं पासति ? गोयमा ! संवुडे वि सुविणं पासति, असंवुडे वि सुविणं पासति, संवुडासंवुडे वि सुविणं पासति। संवुडे सुविणं पासति अहातच्चं पासति। असंवुडे सुविणं पासति तहा वा तं होज्जा, अन्नहा वा तं होज्जा। संवुडासंवुडे सुविणं पासति एवं चेव। [सु. १०-११. जीव-चउवीसइदंडएसु सत्तादि इव संवुडाइदिरूवणं] १०. जीवा णं भंते ! किं संवुडा, असंवुडा, संवुडासंवुडा ? गोयमा ! जीवा संवुडा वि, असंवुडा वि, संवुडासंवुडा वि। ११. एवं जहेव सुत्ताणं दंडओ तहेव भाणियव्वो। [सु. १२-१४. सुविण-महासुविण -सव्वसुविणसंखानिरूवणं]१२. कति णं भंते ! सुविणा पन्नत्ता ? गोयमा ! बायालीसं सुविणा पन्नत्ता। १३.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कति णं भंते ! महासुविणा पन्नत्ता ? गोयमा ! तीसं महासुविणा पन्नत्ता। १४. कति णं भंते ! सव्वसुविणा पन्नत्ता ? गोयमा ! बावत्तरिं सव्वसुविणा पन्नत्ता। [सु. १५-१९. तित्थयर-चक्कवट्टि-वासुदेव-बलदेव-मंडलियगब्भवक्कमणे तेसिं माऊणं सुविणसंखानिरूवणं] १५. तित्थयरमायरो णं भंते ! तित्थगरंसि गब्भं वक्कममाणंसि कति महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति ? गोयमा ! तित्थगरमायरो णं तित्थगरंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति, तं जहा गय-वसभ-सीह जाव सिहिं च। १६. चक्कवट्टिमायरो णं भंते ! चक्कवट्टिंसि गब्भं वक्कममाणंसि कति महासुविणे जाव बुज्झंति ? गोयमा ! चक्कवट्टिमायरो चक्कवट्टिंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासु० एवं जहा तित्थगरमायरो जाव सिहिं च। १७. वासुदेवमायरो णं० पुच्छा। गोयमा ! वासुदेवमायरो जाव वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे सत्त महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति। १८. बलदेवमायरो० पुच्छा। गोयमा ! बलदेवमायरो जाव एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति। १९. मंडलियमायरो णं भंते ! मं० पुच्छा। गोयमा ! मंडलियमायरो जाव एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरं एगं महासुविणं जाव पडिबुज्झंति। [सु. २०-२१. भगवया महावीरेणं छउमत्थकालअंतिमराईए दिट्ठाइ दस सुविणाइं, तेसिं फलं च] २०. समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अंतिमराइयंसि इमे दस महासुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, तं जहा एगं च णं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुविणे पराजियं पासित्ताणं पडिबुद्धे १। एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं पूसकोइलं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे २। एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं पूसकोइलगं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ३। एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ४। एगं च णं महं सेयं गोवग्गं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ५। एगं च णं महं पउमसरं सव्वतो समंता कुसुमियं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ६। एगं च णं महं सागरं उम्मी-वीयीसहस्सकलियं भुयाहिं तिण्णं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ७। एगं च णं महं दिणकरं तेयसा जलंतं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ८। एगं च णं महं हरिवेरुलियवण्णाभेणं नियगेणं अंतेणं माणुसुत्तरं पव्वयं सव्वतो समंता आवेढियं परिवेढियं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ९। एगं च णं महं मंदरे पव्वए मंदरचूलियाए उवरिं सीहासणवरगयं अप्पाणं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे १०। २१. जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुविणे पराजियं पा० जाव पडिबुद्धे तं णं समणेणं भगवता महावीरेणं मोहणिज्जे कम्मे मूलओ उग्घातिए १। जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सुक्किल जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरति २। जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं चित्तविचित्त जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे विचित्तं ससमय-परसमइयं दुवालसंगं गणिपिडिगं आघवेति पन्नवेति परूवेति दंसेति निदंसेति उवदंसेति, तं जहा आयारं सूयगडं जाव दिट्ठिवायं ३। जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे दुविहं धम्मं पन्नवेति, तं जहा अगारधम्मं वा अणगारधम्मं वा ४। जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सेयं गोवग्गं जाव पडिबुद्धे तं णं समणस्स भगवतो महावीरस्स चाउव्वण्णाइण्णे समणसंघे, तं जहा समणा समणीओ सावगा सावियाओ ५। जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं पउमसरं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे जाव वीरे चउव्विहे देवे पण्णवेति, तं जहा भवणवासी वाणमंतरे जोतिसिए वेमाणिए ६। जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सागरं जाव पडिबुद्धे तं णं समणेणं भगवता महावीरेणं अणादीए अणवदग्गे जाव संसारकंतारे तिण्णे ७। जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दिणकरं जाव पडिबुद्धे तं णं समणस्स भगवतो महावीरस्स अणंते अणुत्तरे जाव केवलवरनाण-दंसणे समुप्पन्ने ८। जं णं समणे जाव वीरे एगं महं हरिवेरुलिय जाव पडिबुद्धे तं णं समणस्स भगवतो महावीरस्स ओराला कित्तिवण्णसद्दसिलोया सदेवमणुयासुरे लोगे परितुवंति 'इति खलु समणे भगवं महावीरे, इति खलु समणे भगवं महावीरे' ९। जं णं समणे भगवं महावीरे मंदरे पव्वते मंदरचूलियाए जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवली धम्मं आघवेति जाव उवदंसेति १०। [सु. २२-३५. हयपंतिआइ-दामिणी-रज्जु-किण्हसुत्तगाइ-अयरासिआइ-हिरण्णरासिआइ-तणरासिआइ-सरथंभाइ-खीरकुंभाइ-सुरावियडकुंभाइ-पउमसर-सागर-भवण-विमाणसुविणफलं] २२. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं हयपंतिं वा गयपंतिं वा जाव उसभपंतिं वा पासमाणे पासति, दूहमाणे दूहति,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्रूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव वुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव अंतं करेति। २३. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं दामिणिं पाईणपडिणायतं दुहओ समुद्दे पुट्ठं पासमाणे पासति, संवेल्लेमाणे संवेल्लेइ, संवेल्लियमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण जाव अंतं करेइ। २४. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं रज्जुं पाईणपडिणायतं दुहतो लोगंते पुट्ठं पासमाणे पासति, छिंदमाणे छिंदइ, छिन्नमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव जाव अंतं करेइ। २५. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं किण्हसुत्तगं वा जाव सुक्किलसुत्तगं वा पासमाणे पासति, उग्गोवेमाणे उग्गोवेइ, उग्गोवितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव जाव अंतं करेति। २६. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं अयरासिं वा तंबरासिं वा तउयरासिं वा सीसगरासिं पासमाणे पासति, दुरूहमाणे दुरूहति, दुरूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झइ, दोच्चे भवग्गहणे सिज्झति जाव अंतं करेति। २७. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं हिरण्णरासिं वा सुवण्णरासिं वा रयणरासिं वा वइररासिं वा पासमाणे पासइ, दुरूहमाणे दुरूहइ, दुरूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव अंतं करेति। २८. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं तणरासिं वा जहा तेयनिसग्गे (स० १५ सु० ८२) जाव अवकररासिं वा पासमाणे पासति, विक्खिरमाणे विक्खिरइ, विक्खिण्णमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणव जाव अंतं करेति। २९. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं सरथंभं वा वीरणथंभं वा वंसीमूलथंभं वा वल्लीमूलथंभं वा पासमाणे पासति, उम्मूलेमाणे उम्मूलेइ, उम्मूलितमिति अप्पाणं मन्नति तक्खाणामेव बुज्झति, तेणेव जाव अंतं करेति। ३०. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं खीरकुंभं वा दधिकुंभं वा घयकुंभं वा मधुकुंभं वा पासमाणे पासति, उप्पाडेमाणे उप्पाडेति, उप्पाडितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति तेणेव जाव अंतं करेति। ३१. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं सुरावियडकुंभं वा सोवीरगवियडकुंभं वा तेल्लकुंभं वा वसाकुंभं वा पासमाणे पासति, भिंदमाणे भिंसति, भिन्नमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, दोच्चेणं भव० जाव अंतं करेति। ३२. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं पउमसरं कुसुमियं पासमाणे पासति, ओगाहमाणे ओगाहति, ओगाढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव० तेणेव जाव अंतं करेति। ३३. इत्थी वा जाव सुविणंते एगं महं सागरं उम्मी-वीयी जाव कलियं पासमाणे पासति, तरमाणे तरति, तिण्णमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव० तेणेव जाव अंतं करेति। ३४. इत्थी वा जाव सुविणंते एगं महं भवणं सव्वरयणामयं पासमाणे पासति, अणुप्पविसमाणे अणुप्पविसति, अणुप्पविट्ठमिति अप्पाणं मन्नति० तेणेव जाव अंतं करेति। ३५. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं विमाणं सव्वरयणामयं पासमाणे पासति, द्रूहमाणे द्रूहति, द्रूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव जाव अंतं करेति। [सु. ३६. घाणसहगयपोग्गलाणं घाणगेज्झत्तं] ३६. अह भंते ! कोट्ठपुडाण वा जाव केयतिपुडाण वा अणुवायंसि उब्भिज्जमाणाण वा जाव ठाणाओ वा ठाणं संकामिज्जमाणाणं किं कोट्ठे वाति जाव केयती वाति ? गोयमा ! नो कोट्ठे वाति जाव नो केयती वाती घाणसहगया पोग्गला वांति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१६.६॥ **☆☆☆सत्तमो उद्देसओ 'उवयोग'☆☆☆** [सु. १. उवयोगभेय-पभेयाइजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] १. कतिविधे णं भंते ! उवओगे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे उवयोगे पन्नत्ते, एवं जहा उवयोगपयं पन्नवणाए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं पासणयापयं च निरवसेसं नेयव्वं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१६.७॥ **☆☆☆अट्ठमो उद्देसओ 'लोग' ☆☆☆** [सु. १. लोगपमाणनिरूवणं] १. केमहालए णं भंते ! लोए पन्नत्ते ? गोयमा ! महतिमहालए जहा बारसमसए (स० १२ उ० ७ सु० २) तहेव जाव असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं। [सु. २-६. लोगस्स पुरत्थिमिल्ल-दाहिणिल्ल-पच्चत्थिमिल्ल-उत्तरिल्ल-उवरिल्ल-हेट्ठिल्ल-चरिमंते जीव - अजीव तद्देसपदेसनिरूवणं] २. लोगस्स णं भंते ! पुरत्थिमिल्ले चरिमंते किं जीवा, जीवादेसा, जीवपदेसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपदेसा ? गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि। जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसे। एवं जहा दसमसए अग्गेयी दिसा (स० १० उ० १ सु० ९) तहेव, नवरं देसेसु अणिंदियाणं आदिल्लविरहिओ। जे अरूवी अजीवा ते छव्विहा, अद्धसमयो नत्थि। सेसं

Jain Education International 2010_03

For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

तं चेव सव्वं। ३. लोगस्स णं भंते ! दाहिणिल्ले चरिमंते किं जीवा० ? एवं चेव। ४. एवं पच्चत्थिमिल्ले वि, उत्तरिल्ले वि। ५. लोगस्स णं भंते ! उवरिल्ले चरिमंते किं जीवा० पुच्छा। गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि जाव अजीवपएसा वि। जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा य, अणिंदियदेसा य, अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य बेंदियस्स य देसे, अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा। एवं मज्झिल्लविरहितो जाव पंचिदियाणं। जे जीवप्पएसा ते नियमं एगिंदियप्पदेसा य अणिंदियप्पएसा य, अहवा एगिंदियपदेसा य अणिंदियप्पदेसा य बेइंदियदेस्स य पदेसा, अहवा एगिंदियपदेसा य अणिंदियपएसा य बेइंदियाण य पदेसा। एवं आदिल्लविरहिओ जाव पंचिंदियाणं। अजीवा जहा दसमसए तमाए (स० १० उ० १ सु० १७) तहेव निरवसेसं। ६. लोगस्स णं भंते ! हेट्ठिल्ले चरिमंते किं जीवा० पुच्छा। गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि जाव अजीवप्पएसा वि। जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा, अहवा एगिंदियदेसा य बेंदियस्स य देसे, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा। एवं मज्झिल्लविरहिओ जाव अणिंदियाणं पदेसा आदिल्लविरहिया सव्वेसिं जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमंते तहेव। अजीवा जहा उवरिल्ले चरिमंते तहेव। [सु. ७-९. सत्तण्हं नरयपुढवीणं पुरत्थिमिल्लाइचरिमंते जीव-अजीवतद्देसपदेसनिरूवणं] ७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते किं जीवा० पुच्छा। गोयमा ! नो जीवा, एवं जहेव लोगस्स तहेव चत्तारि वि चरिमंता जाव उत्तरिल्ले, उवरिल्ले जहा दसमसए विमला दिसा (स० १० उ० १ सु० १६) तहेव निरवसेसं। हेट्ठिल्ले चरिमंते जहेव लोगस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते (सु० ६) तहेव, नवरं देसे पंचेंदिएसु तियभंगो, सेसं तं चेव। ८. एवं जहा रयणप्पभाए चत्तारि चरिमंता भणिया एवं सक्करप्पभाए वि। उवरिम-हेट्ठिल्ला जहा रयणप्पभाए हेट्ठिल्ले। ९. एवं जाव अहेसत्तमाए। [सु. १०-१२. सोहम्माइबारसदेवलोग-गेवेज्ज-अणुत्तरविमाण-ईसिपब्भार-पुढवीणं पुरत्थिमिल्लाइचरिमंते जीव-अजीव-तद्देसपदेसाइनिरूवणं] १०. एवं सोहम्मस्स वि जाव अच्चुयस्स। ११. गेविज्जविमाणाणं एवं चेव। नवरं उवरिम-हेट्ठिल्लेसु चरिमंतेसु देसेसु पंचेंदियाण वि मज्झिल्लविरहितो चेव, सेसं तहेव। १२. एवं जहा गेवेज्जविमाणा तहा अणुत्तरविमाणा वि, ईसिपब्भारा वि। [सु. १३. परमाणुपोग्गलस्स एगसमएणं पुरत्थिमिल्लचरिमंत-पच्चत्थिमिल्लाइचरिमंतगमणसामनिरूवणं] १३. परमाणुपोग्गले णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ पच्चत्थिमिल्लं चरिमंतं एगसमएणं गच्छति, पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ पुरत्थिमिल्लं चरिमंतं एगसमएणं गच्छति, दाहिणिल्लाओ चरिमंताओ उत्तरिल्लं जाव गच्छति, उत्तरिल्लाओ० दाहिणिल्लं जाव गच्छति, उवरिल्लाओ चरिमंताओ हेट्ठिल्लं चरिमंतं एग० जाव गच्छति, हेट्ठिल्लाओ चरिमंताओ उवरिल्लं चरिमंतं एगसमएणं गच्छति ? हंता, गोतमा ! परमाणुपोग्गले णं लोगस्स पुरित्थिमिल्ल० तं चेव जाव उवरिल्लं चरिमंतं गच्छति। [सु. १४. मेहवरिसणनिण्णयत्थं हत्थाइआउंटावेमाणपुरिसम्मि किरियापरूवणं] १४. पुरिसे णं भंते ! वासं वासति, वासं नो वासतीति हत्थं वा पायं वा बाहुं वा ऊरुं वा आउंटावेमाणे वा पसारेमाणे वा कतिकिरिए ? गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे वासं वासति, वासं नो वासतीति हत्थं वा जाव ऊरुं वा आउंटावेति वा पसारेति वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे। [सु. १५. देवस्स अलोगंसि हत्थाइआउंटणाइअसामत्थनिरूवणं] १५. (१) देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महेसक्खे लोगंते ठिच्चा पभू अलोगंसि हत्थं वा जाव ऊरुं वा आउंटावेत्ताए वा पसारेत्तए वा ? णो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'देवे णं महिड्ढीए जाव लोगंते ठिच्चा णो पभू अलोगंसि हत्थं वा जाव पसारेत्तए वा' ? गोयमा ! जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला, बोंदिचिया पोग्गला, कलेवरचिया पोग्गला, पोग्गलमेव पप्प जीवाण य अजीवाण य गतिपरियाए आहिज्जइ, अलोए णं नेवत्थि जीवा, नेवत्थि पोग्गला, से तेणट्ठेणं जाव पसारेत्तए वा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१६.८॥ ☆☆☆ **नवमो उद्देसओ 'बलि'** ☆☆☆ [सु. १. वइरोयणिंदस्स बलिस्स सभा-रायहाणीआदीणं निरूवणं] १. कहिं णं भंते ! बलिस्स वइरायणिंदस्स वइरायणरन्नो सभा सुहम्मा पन्नत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं तिरियमसंखेज्जे० जहेव चमरस्स (स० २ उ० ८ सु० १) जाव बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो रुयगिंदे नामं उप्पायपव्वए

Jain Education International 2010_03

For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

पन्नत्ते सत्तरस एक्कवीसे जोयणसए एवं पमाणं जहेव तिगिंछिकूडस्स, पासायवडेंसगस्स वि तं चेव पमाणं सीहासणं सपरिवारं बलिस्स परियारेणं अट्ठो तहेव, नवरं रुयगिंदप्पभाइं ३ कुमुयाइं। सेसं तं चेव जाव बलिचंचाए रायहाणीए अन्नेसिं च जाव निच्चे, रूयगिंदस्स णं उप्पायपव्वयस्स उत्तरेणं छक्कोडिसए तहेव जाव चत्तालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो बलिचंचा नामं रायहाणी पन्नत्ता; एगं जोयणसयसहस्सं पमाणं तहेव जाव बलिपेढस्स उववातो जाव आयरक्खा सव्वं तहेव निरवसेसं, नवरं सातिरेगं सागरोवमं ठिती पन्नत्ता। सेसं तं चेव बली वइरोयणिंदे, बली वइरोयणिंदे। सेवं भंते! सेवं भंते! जाव विहरति। ॥१६.९॥ ☆☆☆**दसमो उद्देसओ 'ओही'** ☆☆☆ [सु. १. ओहिभेयादिजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] १. कतिविधे (?धा) णं भंते! ओही पण्णत्ता? गोयमा! दुविधा ओही पन्नत्ता। ओहीपयं निरवसेसं भाणियव्वं। सेवं भंते! सेवं भंते! जाव विहरति। ॥१६.१०॥☆☆☆ **एगारसमो उद्देसो 'दीव'**☆☆☆ [सु. १. दीवकुमारेसु समाहारादिपयाणं निरूवणं] १. दीवकुमाराणं भंते! सव्वे समाहारा० निस्सासा? नो इणट्ठे समट्ठे। एवं जहा पढमसए बितियउद्देसए दीवकुमाराणं वत्तव्वया(स० १ उ० २ सु० ६) तहेव जाव समाउया समुस्सासनिस्सासा। [सु. २-४. दीवकुमारेसु-लेसानिरूवणं, लेसं पडुच्च अप्पाबहुयं इड्ढिअप्पाबहुयं च] २. दीवकुमाराणं भंते! कति लेस्साओ पन्नत्ताओ? गोयमा! चत्तारि लेस्साओ पन्नत्ताओ, तं जहा कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा। ३. एएसि णं भंते! दीवकुमाराणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा दीवकुमारा तेउलेस्सा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया। ४. एतेसि णं भंते! दीवकुमाराणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पिड्ढिया वा महिड्ढिया वा? गोयमा! कण्हलेस्सेहिंतो नीललेस्सा महिड्ढिया जाव सव्वमहिड्ढिया तेउलेस्सा। सेवं भंते! भंते! जाव विहरति। ॥१६. ११॥ ☆☆☆ **बारसमो उद्देसओ 'उदही'**☆☆☆[सु. १. उदहिकुमारेसु समाहारइनिरूवणाइ] १. उदधिकुमारा णं भंते! सव्वे समाहारा०? एवं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते!०। ॥१६.१२॥ ☆☆☆ **तेसमो उद्देसओ 'दिसा'**☆☆☆[सु. १ दिसाकुमारेसु समाहारइनिरूवणाइ] १. एवं दिसाकुमारा वि। ॥१६.१३॥ ☆☆☆ **चउदसमो उद्देसओ 'थणिया'** ☆☆☆ [सु. १ थणियकुमारेसु समाहाराइनिरूवणाइ]१. एवं थणियकुमारा वि। सेवं भंते! त्ति जाव विहरति। ॥१६.१४॥ 卐卐卐 **॥सोलसमं सयं समत्तं॥** 卐卐卐 **सत्तरसमं सयं** 卐卐卐 [सु. १. सत्तरसमयसयस्स मंगलं]१. नमो सुयदेवयाए भगवतीए। [सु. २. सत्तरसमसयस्स उद्देसनामपरूवणा] २. कुंजर १ संजय २ सेलेसि ३ किरिय ४ ईसाण ५ पुढवि ६-७, दग ८-९ वाऊ १०-११। एगिंदिय १२ नाग १३ सुवण्ण १४ विज्जु १५ वाय १६ ऽग्गि १७ सत्तरसे॥१॥ ☆☆☆ **पढमो उद्देसओ 'कुंजर'**☆☆☆[सु. ३. पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ] ३. रायगिहे जाव एवं वदासि. [सु. ४-७. कूणियरन्नो उदायि -भूयाणंदनामाणं दोण्हं हत्थीणं पुव्वभव-अणंतरभवनिद्देसपुव्वं सिद्धिगमणानिरूवणं] ४. उदायी णं भंते! हत्थिराया कओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने? गोयमा! असुरकुमारेहिंतो देवेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने। ५. उदायी णं भंते! हत्थिराया कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति, कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति। ६. से णं भंते! ततोहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति?, कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति। ७. भूयाणंदे णं भंते! हत्थिराया कतोहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता भूयाणंद०? एवं जहेव उदायी जाव अंतं काहिति। [सु. ८-९. तालमारुभमाणम्मि तालफलं च पचालेमाणाइम्मि पुरिसम्मि ताल-तालफलजीवेसु च किरियापरूवणाइ] ८. पुरिसे णं भंते! तालमारुभइ, तालं आरुभित्ता तालाओ तालफलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए? गोयमा! जावं च णं से पुरिसे तालमारुभति, तालमारुभित्ता तालाओ तालफलं पचालेइ वा पवाडेइ वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे। जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो ताले निव्वत्तिए तालफले निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा। ९. अहे णं भंते ! से तालफले अप्पणो गरुययाए जाव पच्चोवयमाणे ज़ाइं तत्थ पाणाइं जाव जीवियाओ ववरोवेति ततो णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ? गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे तालफले अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे। जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो ताले निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठा। जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो तालफले निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा। जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवतमाणस्स उवग्गहे वट्टंति ते वि णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा। [सु. १०-१४. रुक्खमूल-कंद-बीयाइं पचालेमाणाइम्मि पुरिसम्मि रुक्खमूलकंद-बीयजीवेसु य किरियापरूवणाइ] १०. पुरिसे णं भंते ! रुक्खस्स मूलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ? गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे रुक्खस्स मूलं पचालेति वा पवाडेति वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे। जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा। ११. अहे णं भंते ! से मूले अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति तओ णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ? गोयमा ! जावं च णं से मूले अप्पणो जाव ववरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे। जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो कंदे निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव चउहिं० पुट्ठा। जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा। जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टंति ते वि णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा। १२. पुरिसे णं भंते ! रुक्खस्स कंदं पचालेइ० ? गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे। जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो कंदे निव्वत्तिते ते वि णं जीवा जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा। १३. अहे णं भंते ! कंदे अप्पणो जाव चउहिं० पुट्ठे। जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिते, खंधे निवत्तिते जाव चउहिं० पुट्ठा। जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो कंदे निव्वत्तिते ते वि णं जाव पंचहिं० पुट्ठा। जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स जाव पंचहिं० पुट्ठा। १४. जहा कंदो एवं जाव बीयं। [सु. १५-१७. सरीर-इंदिय-जोगभेयपरूवणं]१५. कति णं भंते ! सरीरगा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरगा पन्नत्ता, तं जहा ओरालिए जाव कम्मए। १६. कति णं भंते ! इंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच इंदिया पन्नत्ता, तं जहा सोतिंदिए जाव फासिंदिए। १७. कतिविधे णं भंते ! जोए पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविधे जोए पन्नत्ते, तं जहा मणजोए वइजोए कायजोए। [सु. १८-२५. ओरालियाइसरीरपंचगं निव्वत्तेमाणेसु जीव-चउवीसइदंडएसु एगत्त-पुहत्तेणं किरियापरूवणं] १८. जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए। १९. एवं पुढविकाइए वि। २०. एवं जाव मणुस्से। २१. जीवा णं भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणा कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि। २२. एवं पुढविकाइया वि। २३. एवं जाव मणुस्सा। २४. एवं वेउव्वियसरीरेण वि दो दंडगा, नवरं जस्स अत्थि वेउव्वियं। २५. एवं जाव कम्मगसरीरं। [सु. २६-२७. इंदियपंचगं जोगितियं च निव्वत्तेमाणेसु जीव-चउवीसइदंडएसु किरियापरूवणं] २६. एवं सोतिंदियं जाव फासिंदियं। २७. एवं मणजोगं, वइजोगं, कायजोगं, जस्स जं अत्थि तं भाणियव्वं। एते एगत्त-पुहत्तेणं छव्वीसं दंडगा। [सु. २८. भावस्स भेयछक्कं]२८. कतिविधे णं भंते ! भावे पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहे भावे पन्नत्ते, तं जहा उदइए उवसमिए जाव सन्निवातिए। [सु. २९. भावभेय-पभेयजाणणत्थं अणुओगद्दारसुत्तावलोयणनिद्देसो] २९. से किं तं उदइए भावे ? उदइए भावे दुविहे पन्नत्ते, तं जहा उदए य उदए य उदयनिप्फन्ने य। एवं एतेणं अभिलावेणं जहा अणुओगद्दारे छन्नामं तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव से त्तं सन्निवातिए भावे। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१७.१॥

☆☆☆ बीओ उद्देसओ 'संजय' ☆☆☆ [सु. १-३. संजय -असंजय -संजयासंजएसु कमेणं धम्म -अधम्म- धम्माधम्म -ठितत्ताइपरूवणं]१. से नूणं भंते ! संयतविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे धम्मे ठिए, अस्संजयअविरयपडिहयअपच्चक्खायपावकम्मे अधम्मे ठिए, संजयासंजये धम्माधम्मे ठिए ?

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हंता, गोयमा ! संजयविरय जाव धम्माधम्मे ठिए। २. एयंसि णं भंते ! धम्मंसि वा अहम्मंसि वा धम्माधम्मंसि वा चक्किया केयि आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा ? णो इणट्ठे समट्ठे। ३. से केणं खाइं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव धम्माधम्मे ठिए ? गोयमा ! संजतविरत जाव पावकम्मे धम्मे ठिए धम्मं चेव उवसंपज्जित्ताणं विहरति। अस्संयत जाव पावकम्मे अधम्मे ठिए अधम्मं चेव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। संजयासंजये धम्माधम्मे ठिए धम्माधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, से तेणट्ठेणं जाव ठिए। [सु. ४. जीवेसु धम्म-अधम्म-धम्माधम्मठितत्तपरूवणं] ४. जीवा णं भंते ! किं धम्मे ठिया, अधम्मे ठिया धम्माधम्मे ठिया ? गोयमा ! जीवा धम्मे वि ठिया, अधम्मे वि ठिया, धम्माधम्मे वि ठिया। [सु. ५-६. नेरइय-एगिंदिय-विगलिंदिएसु अधम्मठितत्तपरूवणं] ५. नेरतिया णं० पुच्छा। गोयमा ! णेरतिया नो धम्मे ठिया, अधम्मे ठिया, नो धम्माधम्मे ठिया। ६. एवं जाव चउरिंदियाणं। [सु. ७. पंचिंदियतिरिक्खेसु अधम्म-धम्माधम्मठितत्तपरूवणं] ७. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं० पुच्छा। गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो धम्मे ठिया, अधम्मे ठिया, धम्माधम्मे वि ठिया। [सु. ८. मणुस्सेसु धम्म-अधम्म-धम्माधम्मठितत्तपरूवणं] ८. मणुस्सा जहा जीवा। सु. ९. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिएसु अधम्मठितत्तपरूवणं ९. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा नेरइया। [सु. १०. अन्नउत्थियमंतव्वनिरासपुव्वयं भगवओ समणोवासएसु बालपंडियत्तनिरूणं] १०. अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति 'एवं खलु समणा पंडिया, समणोवासया बालपंडिया; जस्स णं एगपाणाए वि दंडे अनिक्खिते से णं एगंतबाले त्ति वत्तव्वं सिया' से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जं णं ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव वत्तव्वं सिया, जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु समणा पंडिया; समणोवासगा बालपंडिया; जस्स णं एगपाणाए वि दंडे निक्खत्ते से णं नो एगंतबाले त्ति वत्तव्वं सिया। [सु. ११. जीवेसु बालत्त-पंडियत्त-बालपंडियत्त-निरूवणं] ११. जीवा णं भंते ! किं बाला, पंडिया, बालपंडिया ? गोयमा ! जीवा बाला वि, पंडिया वि, बालपंडिया वि। [सु. १२-१३. नेरइय-एगिंदिय-विगलिंदिएसु बालत्तनिरूवणं] १२. नेरइया णं० पुच्छा। गोयमा ! नेरइया बाला, नो पंडिया, नो बालपंडिया। १३. एवं जाव चउरिंदियाणं। [सु. १४. पंचिंदियतिरिक्खेसु बालत्त-बालपंडियत्तनिरूवणं] १४. पंचिंदियतिरिक्ख० पुच्छा। गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया बाला, नो पंडिया, बालपंडिया वि। [सु. १५. मणुस्सेसु बालत्त-पंडियत्त-बालपंडियत्तनिरूवणं] १५. मणुस्सा जहा जीवा। [सु. १६. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिएसु बालत्तनिरूवणं] १६. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा नेरतिया। [सु. १७. पाणातिवायादीसु पाणातिवायवेरमणादीसु उप्पत्तियादीसु य अणेगेसु पदेसु अन्नउत्थियमंतव्वनिरासपुव्वयं भगवओ जीव-जीवप्पाणं अणण्णत्तनिरूवणं] १७. अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति ''एवं खलु पाणाइवाए मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स अन्ने जीवे, अन्ने जीवाया। पाणातिवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे वट्टमाणस्स अन्ने जीवे, अन्ने जीवाया। उप्पत्तियाए जाव पारिणामियाए वट्टमाणस्स अन्ने जीवे, अन्ने जीवाया। उग्गहे ईहा-अवाये धारणाए वट्टमाणस्स जाव जीवाता। उट्ठाणे जाव परक्कमे वट्टमाणस्स जाव जीवाया। नेरइयत्ते तिरिक्खमणुस्स-देवत्ते वट्टमाणस्स जाव जीवाया। नाणावरणिज्जे जाव अंतराइए वट्टमाणस्स जाव जीवाया। एवं कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए, सम्मदिट्ठीए ३। एवं चक्खुदंसणे ४, आभिणिबोहियनाणे ५, मतिअन्नाणे ३, आहारसन्नाए ४। एवं ओरालियसरीरे ५। एवं मणजोए ३। सागरोवयोगे अणागारोयोगे वट्टमाणस्स अन्ने जीवे, अन्ने जीवाता'' से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जं णं ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव मिच्छं ते एवामाहंसु। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि 'एवं खलु पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स सें चेव जीवे, से चेव जीवाता जाव अणागारोवयोगे वट्टमाणस्स से चेव जीव, से चेव जीवाया'। [सु. १८. पुग्गलसंबंधं पडुच्च रूविभावं पत्तस्स देवस्स अरूवित्तविउव्वणे असंभवनिरूवणं] १८. (१) देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता पभू अरूविं विउव्वित्ताणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिट्ठित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ देवे णं जाव नो पभू अरूविं विउव्वित्ताणं चिट्ठित्तए ? गोयमा ! अहमेयं जाणामि, अहमेयं पासामि, अहमेयं पासामि, अहमेयं बुज्झामि, अहमेयं अभिसमन्नागच्छामि मए एयं नायं, मए एयं दिट्ठं, मए एयं बुद्धं, मए एयं अभिसमन्नागयं जं णं तहागयस्स जीवस्स सरूविस्स सकम्मस्स सरागस्स सवेयणस्स समोहस्स सलेसस्स ससरीरस्स ताओ सरीराओ अविप्पमुक्कस्स एवं पण्णायति, तं जहा कालत्ते वा जाव सुक्किलत्ते वा, सुब्भिगंधत्ते वा दुब्भिगंधत्ते वा, तित्तत्ते वा जाव महुरत्ते वा, कक्खडत्ते वा जाव लुक्खत्ते वा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव चिट्ठित्तए। [सु. १९. अरूविभावं पत्तस्स जीवस्स रूवित्तविउव्वणे असंभवनिरूवणं] १९. स च्चेव णं भंते ! से जीवे पव्वामेव अरूवी भवित्ता पभू रूविं विउव्वित्ताणं चिट्ठित्तए? णो तिणट्ठे समट्ठे। जाव चिट्ठित्तए? गोयमा ! अहमेयं जाणामि, जाव जं णं तहागयस्स जीवस्स अरूविस्स अकम्मस्स अरागस्स अवेदस्स अमोहस्स अलेसस्स असरीरस्स ताओ सरीराओ विप्पमुक्कस्स णो एवं पन्नायति, तं जहा-कालत्ते वा जाव लुक्खत्ते वा, से तेणट्ठेणं जाव चिट्ठित्तए। सेवं मंते ! सेवं मंते ! त्ति०।॥ १७.२॥ ☆☆☆

तइओ उद्देसओ 'सेलेसि'☆☆☆ [सु.१.सेलेसिं पडिवन्नम्मि अणगारम्मि परप्पओगं विणा एयणानिसेहपरूवणं] १. सेलेसिं पडिवन्नए णं भंते ! अणगारे सदा समियं एयति वेयति जाव तं तं भावं परिणमति ? नो इणट्ठे समट्ठे, नऽन्नत्थेगेणं परप्पयोगेणं। [सु.२. एयणाए दव्वादिया पंच भेया] २. कतिविधा णं भंते ! एयणा पन्नता? गोयमा ! पंचविहा एयणा पन्नत्ता, तं जहा-दव्वेयणा खेत्तेयणा कालेयणा भवेयणा भावेयणा। [सु.३-१०. दव्वेयणादियाणं पंचण्हं एयणाणं पत्तेयं चउगइपच्चइय-भेयचउक्कनिरूवणं]३. दव्वेयणा णं भंते! कतिविधा पन्नता?गोयमा! चउव्विहा पन्नता, तं जहा-नेरतियदव्वेयणा तिरिक्खजोणियदव्वेयणा मणुस्सदव्वेयणा देवदव्वेयणा। ४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति नेरतियदव्वेयणा, नेरइयदव्वेयणा? गोयमा ! जं णं नेरतिया नेरतियदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्संति वा तेणं तत्थ नेरतिया नेरतियदव्वे वट्टमाणा नेरतियदव्वेयणं एइंसु वा, एयंति वा, एइस्संति वा, सेतेणट्ठेणं जाव दव्वेयणा। ५. से केणट्ठेणं भंते। एवं वुच्चति तिरिक्खजोणियदव्वेयणा० ? एवं चेव, नवरं 'तिरिक्खजोणियदव्वे' भाणियव्वं। सेसं तं चेव। ६. एवं जाव देवदव्वेयणा। ७. खेत्तेयणा णं भंते ! कतिविहा पन्नता ? गोयमा ! चउव्विहा पन्नता, तं जहा-नेरतियखेत्तेयणा जाव देवखेत्तेयणा॥ ८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति-नेरतियखेत्तेयणा, नेरइयखेत्तेयणा ? एवं चेव, नवरं नेरतियखेत्तेयणा भाणितव्वा। ९. एवं जाव देवखेत्तेयणा। १०. एवं कालेयणा वि। एवं भवेयणा वि, भावेयणा वि; जाव देव-भावेयणा। [सु.११. चलणाए सरीर-इंदिय-जोगचलणारूवं भेयतिगं] ११. कतिविहा णं भंते ! चलणा पन्नत्ता? गोयमा ! तिविहा चलणा पन्नत्ता, तं जहा-सरीरचलणा इंदिचलणा जोगचलणा। [सु. १२-१४. सरीर-इंदिय-जोगचलणाणं कमेणं पंच पंच तिण्णि भेया] १२. सरीरचलणा णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता? गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा-ओरालियसरीरचलणा जाव कम्मगसरीरचलणा। १३. इंदियचलणा णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता? गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा-सोतिंदियचलणा जाव फासिंदियचलणा। १४. जोगचलणा णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता? गोयमा ! तिविहा पन्नत्ता, तं जहा-मणजोगचलणा वइजोगचलणा कायजोगचलणा। [सु. १५-१७. ओरालियाइपंचसरीरचलणाणं सरूवं] १५. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ- ओरालियसरीरचलणा, ओरालिय सरीरचलणा ? गोयमा ! जं णं जीवा ओरालियसरीरे वट्टमाणा ओरालियसरीरपायोग्गाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए परिणामेमाणा ओरालियसरीरचलणं चलिंसु वा, चलिस्संति वा, से तेणट्ठेणं जाव ओरालियसरीरचलणा, ओरालियसरीरचलणा। १६. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ- वेउव्वियसरीरचलणा, वेउव्वियसरीरचलणा? एवं चेव, नवरं वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा। १७. एवं जाव कम्मगसरीरचलणा। [सु.१८-१९. सोतिंदियापंचइंदियचलणाणं सरूवं]१८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-सोतिंदियचलणा, सोतिंदियचलणा ? गोयमा ! जं णं जीवा सोतिंदिए वट्टमाणा सोतिंदियपायोग्गाइं दव्वाइं सोतिंदियत्ताए परिणामेमाणा सोतिंदियचलणं चलिंसु वा, चलंति वा, चलिस्संति वा, से तेणट्ठेणं जाव सोतिंदियचलणा, सोतिंदियचलणा। १९. एवं जाव फासिंदियचलणा। [सु. २०-२१. मणजोगाइतिजोगचलणाणं सरूवं]२०.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-मणजोगचलणा, मणजोगचलणा? गोयमा ! जं णं जीवा मणजोए वट्टमाणा मणजोगप्पायोग्गाइं दव्वाइं मणजोगत्ताए परिणामेमाणा मणचलणं चलिंसु वा, चलंति वा, चलिस्संति वा, से तेणट्ठेणं जाव मणजोगचलणा। २१. एवं वइजोगचलणा वि। एवं कायजोगचलणा वि। [सु.२२. 'संवेग-निव्वेय' आईणं 'मारणंतियअहियासणया' पज्जंताणं पयाणं सिद्धिपज्जवसाणफलत्तनिरूवणं] २२. अह भंते ! संवेगे निव्वेए गुरू-साधम्मियसुस्सूसणया आलोयणया निंदणया गरहणया खमावणया सुयसहायतता विओसमणया, भावे अपडिबद्धया विणिवट्टणया विवित्तसयणासणसेवणया सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे जोगपच्चक्खाणे सरीरपच्चक्खाणे कसायपच्चक्खाणे संभोगपच्चक्खाणे उवहिपच्चक्खाणे भत्तपच्चक्खाणे खमा विरागया भावसच्चे जोगसच्चे करणसच्चे मणसमन्नाहरणया वइसमन्नाहरणया कायसमन्नाहरणया कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, णाणसंपन्नया दंसणसंपन्नया चरित्तसंपन्नया वेदणअहियासणया मारणंतियअहियासणया, एए णं भंते ! पदा किंपज्जवसाणफला पन्नता समणाउसो ! ? गोयमा ! संवेगे निव्वेए जाव मारणंतियअहियासणया, एए णं सिद्धिपज्जवसाणफला पन्नता समणाउसो !। सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरति। ॥१७.३॥ ☆☆☆ **चउत्थो उद्देसओ 'किरिय'** ☆☆☆ [सु.१. चउत्थुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी- [सु.२-७. जीव-चउवीसइदंडएसु पाणाइवायाईहिं पंचहिं किरियापरूवणाइ] २. अत्थि णं भंते ! जीवाणं पाणातिवाएणं किरिया कज्जति ? हंता, अत्थि। ३. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जति, अपुट्ठा कज्जति ? गोयमा! पुट्ठा कज्जति, नो अपुट्ठा कज्जति। एवं जहा पढमसए छट्ठुद्देसए (स० १ उ० ६ सु० ७-११) जाव नो अणाणुपुव्विकडा ति वत्तव्वं सिया। ४. एवं जाव वेमाणियाणं; नवरं जीवाणं एगिंदियाण य निव्वाघाएणं छद्दिसिं; वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं; सेसाणं नियमं छद्दिसिं। ५. अत्थि णं भंते ! जीवाणं मुसावाएणं किरिया कज्जति ? हंता, अत्थि। ६. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जति०? जहा पाणातिवाएणं दंडओ एवं मुसावातेण वि। ७. एवं अदिण्णादाणेण वि, मेहुणेण वि, परिग्गहेण वि। एवं एए पंच दंडगा। [सु.८-१२. समय-देस-पदेसे पडुच्च जीव-चउवीसइदंडएसु पाणाइवायाईहिं कज्जमाणा किरिया 'पुट्ठा' इच्चाइ निरूवणं] ८. जं समयं णं भंते! जीवाणं पाणातिवाएणं किरिया कज्जति सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ, अपुट्ठा कज्जइ ? एवं तहेव जाव वत्तव्वं सिया। जाव वेमाणियाणं। ९. एवं जाव परिग्गहेणं। एते वि पंच दंडगा १०। १०. जं देसं णं भंते! जीवाणं पाणातिवाएणं किरिया कज्जइ०? एवं चेवं। जाव परिग्गहेणं। एवं एते वि पंच दंडगा १५। ११. जं पदेसं णं भंते! जीवाणं पाणातिवाएणं किरिया कज्जइ सा भंते! किं पुट्ठा कज्जइ० ? एवं तहेव दंडओ। १२. एवं जाव परिग्गहेणं। एवं एए वीसं दंडगा। [सु. १३-२०. जीव-चउवीसइदंडएसु दुक्ख-दुक्खवेदण-वेयणा-वयणावेदणाणं अत्तकडत्तनिरूवणं] १३. जीवाणं भंते ! किं अत्तकडे दुक्खे, नो परकडे दुक्खे, नो तदुभयकडे दुक्खे। १४. एवं जाव वेमाणियाणं। १५. जीवा णं भंते ! किं अत्तकडं दुक्खं वेदेंति, परकडं दुक्खं वेदेंति, तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति ? गोयमा ! अत्तकडं दुक्खं वेदेंति, नो परकडं दुक्ख वेदेंति, नो तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति। १६. एवं जाव वेमाणिया। १७. जीवाणं भंते! किं अत्तकडा वेयणा, परकडा वेयणा०? पुच्छा। गोयमा! अत्तकडा वेयणा, णो परकडा वेयणा, णो तदुभयकडा वेदणा। १८. एवं जाव वेमाणियाणं। १९. जीवा णं भंते! किं अत्तकडं वेदणं वेदति, परकडं वेदणं वेदेंति, तदुभयकडं वेयणं वेदेंति ? गोयमा ! जीवा अत्तकडं वेदणं वेदेंति, नो परकडं वेयणं वेएंति, नो तदुभयकडं वेयणं वेएंति। २०. एवं जाव वेमाणिया। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१७.४॥ ☆☆☆ **पंचमो उद्देसओ 'ईसाण'** ☆☆☆ [सु.१.ईसाणस्स देविंदस्स सुधम्मा, सभाए ठाणादिवियारो] १.कहि णं भंते! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पन्नता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम० जहा ठाणपए जाव मज्झे ईसाणवडेंसए। से णं ईसाणवडेंसए महाविमाणे अड्ढतेरस जोयणसयसहस्साइं एवं जहा दसमसए (स० १० उ० ६ सु०१) सक्कविमाणवत्तव्वया, सा इह वि ईसाणस्स निरवसेसा भाणियव्वा जाव आयरक्ख त्ति। ठिती सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं। सेसं तं चेव जाव ईसाणे देविंदे देवराया, ईसाणे देविंदे देवराया। सेवं भंते ! सेवं भंते। त्ति०। ॥१७.५॥☆☆☆

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठो उद्देसओ 'पुढवि'☆☆☆[सु.१-६. सत्तनरयपुढविपुढविकाइयस्स समोहयस्स सोहम्माइकप्पगेवेज्ज-अणुत्तरविमाण-ईसिपब्भारासु पुढविकाइयत्ताए उववज्जमाणस्स उप्पत्तीए पुव्वं पच्छा वा पुग्गलगहणनिरूवणं] १. (१) पुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! किं पुव्विं वा उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा, पुव्विं वा संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ? गोयमा ! पुव्विं वा उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा, पुव्विं वा संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा। (२) से केणट्ठेणं जाव पच्छा उववज्जेज्जा ? गोयमा ! पुढविकाइयाणं तओ समुग्घाया पन्नत्ता, तं जहा-वेयणासमुग्घाए कसायमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए। मारणंतियसमुग्घाएणं समोहण्णमाणे देसेण वा समोहण्णति सव्वेण वा समोहण्णति, देसेणं समोहन्नमाणे पुव्विं संपाउणित्ता पच्छा उववज्जिज्जा, सव्वेणं समोहण्णमाणे पुव्विं उववज्जेत्ता पच्छा संपाउणेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जिज्जा। २. पुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव समोहए, सामोहन्नित्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढवि० एवं चेव ईसाणे वि। ३. एवं जाव अच्चुए। ४. गेविज्जविमाणे अणुत्तरविमाणे ईसिपब्भाराए य एवं चेव। ५. पुढविकाइए णं भंते। सक्करप्पभाए पुढवीए समोहते, समोहन्नित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढवि०। एवं जहा रयणप्पभाए पुढविकाइओ उववातिओ एवं सक्करप्पभपुढविकाइओ वि उववाएयव्वो जाव ईसिपब्भाराए। ६. एवं जहा रयणप्पभाए वत्तव्वता भणिया एवं जाव अहेसत्तमाए समोहतो ईसिपब्भाराए उववातेयव्वो । सेसं तं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।☆☆☆ सत्तमो उद्देसओ 'पुढवि'☆☆☆ [सु.१.सोहम्माइकप्पाइईसिपब्भारपुढविपुढविकाइयस्स समोहयस्स सत्तसु नरयपुढवीसु पुढविकाइयत्ताए उववज्जमाणस्स उप्पत्तीए पुव्वं पच्छा वा पुग्गलगहणनिरूवणं] १. पुढविकाइए णं भंते! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! किं पुव्विं० सेसं तं चेव। जहा रयणप्पभापुढविकाइओ सव्वकप्पेसु जाव ईसिपब्भाराए ताव उववातिओ एवं सोहम्मपुढविकाइओ वि सत्तसु वि पुढवीसु उववातेयव्वो जाव अहेसत्तमाए। एवं जहा सोहम्मपुढविकाइओ सव्वपुढवीसु उववातिओ एवं जाव ईसिपब्भारापुढविकाइओ सव्वपुढवीसु उववातेयव्वो जाव अहेसत्तमाए। सेवं भंते ! सेवं भंते ! ०। ॥१७.७॥ ☆☆☆अट्ठमो उद्देसओ 'दग' ☆☆☆[सु.१-२. छट्ठद्देसवण्णियपुढविकाइयवत्तव्वयाणुसारेण आउकाइयवत्तव्वयानिद्देसो]१. आउकाइए णं भंते ! इमीसे रतणप्पभाए पुढवीए समोहते, समोहन्नित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहा पुढविकाइओ तहा आउकाइओ वि सव्वकप्पेसु जाव ईसिपब्भाराए तहेव उववातेयव्वो। २. एवं जहा रयणप्पभआउकाइओ उववातिओ तहा जाव अहेसत्तमआउकाइओ उववाएयव्वो जाव ईसिपब्भाराए। सेवं भंते! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१७.८॥ ☆☆☆ नवमो उद्देसओ 'दग'☆☆☆ [सु. १-३. सत्तमुद्देसवण्णियपुढविकाइयवत्तव्वयाणुसारेण आउकाइयवत्तव्वयानिद्देसो] १. आउकाइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहन्नित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलयेसु आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते !०? सेसं तं चेव। २. एवं जाव अहेसत्तमाए। ३. जहा सोहम्मआउकाइओ एवं जाव ईसिपब्भाराआउकाइओ जाव अहेसत्तमाए उववातेयव्वो। सेवं भंते ! सेवं भंते !०। ॥१७.९॥ ☆☆☆दसमो उद्देसओ 'वाऊ'☆☆☆[सु.१. छट्ठद्देसवण्णियपुढविकाइयवत्तव्वयाणुसारेण वाउकाइयवत्तव्वयानिद्देसो] १. वाउकाइए णं भंते ! इमीसे रतणप्पभाए जाव जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं०? जहा पुढविकाइओ तहा वाउकाइओ वि, नवरं वाउकाइयाणं चत्तारि समुग्घाया पन्नता, तं जहा-वेदणासमुग्घाए जाव वेउव्वियसमग्घाए। मारणंतियसमुग्घाएणं समोहण्णमाणे देसेण वा समो०। सेसं तं चेव जाव अहेसत्तमाए समोहओ ईसिपब्भाराए उववातेयव्वो । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१७.१०॥☆☆☆ एगारसमो उद्देसओ 'वाऊ' ☆☆☆ [सु.१. सत्तमुद्देसवण्णियपुढविकायवत्तव्वयाणुसारेण वाउकायवत्तव्वयानिद्देसो] १. वाउकाइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए,समोहन्निता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए तणुवाए घणवायवलएसु तणुवायवलएसु वाउकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते !०? सेसं तं चेव। एवं जहा सोहम्मवाउकाइओ सत्तसु वि पुढवीसु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उववातिओ एवं जाव ईसिपब्भारावाउकाइओ अहेसत्तमाए जाव उववायेयव्वो। सेवं भंते !सेवं भंते !०।।१७.११।। ☆☆☆ **बारसमो उद्देसओ 'एगिंदिय'** ☆☆☆ [सु.१. एगिंदिएसु समाहाराइसत्तदारपरूवणं]१. एगिंदिया णं भंते ! सव्वे समाहारा, सव्वे समसरीरा? एवं जहा पढमसए बितियउद्देसए पुढविकाइयाणं वत्तव्वया भणिया (स०१उ०२सु०७) सा चेव एगिंदियाणं इहं भाणियव्वा जाव समाउया समोववन्नगा। [सु.२-४. एगिंदिएसु-लेसापरूवणं, लेसं पडुच्च अप्पाबहुयं इड्ढिअप्पाबहुयं च]२. एगिंदियाणं भंते ! कति लेस्साओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पन्नत्ताओ, तं जहा-कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा। ३. एतेसि णं भंते ! एगिंदियाणं कण्हलेस्साणं जाव विसेसाहिया वा? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया तेउलेस्सा, काउलेस्सा अणंतगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया। ४. एएसि णं भंते ! एगिंदियाणं कण्हलेस्सा० इड्ढी जहेव दीवकुमाराणं(स०१६उ० ११सु० ४)। सेवं भंते ! सेवं भंते !०।।१७.१२।। ☆☆☆**तेरसमो उद्देसओ 'नाग'** ☆☆☆ [सु.१. नागकुमारेसु समाहाराइसत्तदार-लेसा-अप्पबहुयाइपरूवणं] १. नागकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्देसए (स०१६उ०११सु० १-४)तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव इड्ढी। सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरइ।।१७.१३।। ☆☆☆**चोद्दसमो उद्देसओ 'सुवण्ण'** ☆☆☆ [सु.१. सुवण्णकुमारेसु समाहाराइसत्तदार-लेसा-अप्पबहुयाइपरूवणं] १. सुवण्णकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा०? एवं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते !०।।१७.१४।। ☆☆☆ **पण्णरसमो उद्देसओ 'विज्जु'** ☆☆☆] सु.१. विज्जुकुमारेसु समाहाराइसत्तदार-लेसा-अप्पबहुयाइपरूवणं १. विज्जुकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा०? एवं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते !०।।१७.१५।।☆☆☆ **सोलसमो उद्देसओ 'वाय'**☆☆☆ सु.१. वाउकुमारेसु समाहाराइसत्तदार-लेसा-अप्पबहुयाइपरूवणं १. वायकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा०? एवं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते !०।। ।।१७.१६।। ☆☆☆**सत्तरसमो उद्देसओ 'अग्गि'**☆☆☆ [सु.१. अग्गिकुमारेसु समाहाराइसत्तदार-लेसा-अप्पबहुयाइपरूवणं]१.अग्गिकुमारा णं भंते! सव्वे समाहारा०? एवं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते!०। ।।१७.१७।। 卐卐卐 **।।सत्तरसमं सयं समत्तं ।।१७।। अट्ठारसमं सयं** 卐卐卐 [सु.१. अट्ठारसमसयस्स उद्देसनामपरूवणं]१. पढमा १ विसाह १ मायंदिए य ३ पाणातिवाय ४ असुरे य ५। गुल ६ केवलि ७ अणगारे ८ भविए ९ तह सोमिलऽट्ठरसे १० ।।१।। ☆☆☆ **पढमो उद्देसओ'पढमा'** ☆☆☆[सु.२. पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ]२. तेणं' कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवं वयासी- [सु.३-८. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेणं जीवभावं पडुच्च जहाजोगं पढमत्त-अपढमत्तनिरूवणं] ३. जीवे णं भंते! जीवभावेणं किं पढमे, अपढमे? गोयमा ! नो पढमे, अपढमे। ४. एवं नेरइए जाव वेमाणिए। ५. सिद्धे णं भंते ! सिद्धभावेणं किं पढमे, अपढमे? गोयमा ! पढमे, नो अपढमे। ६. जीवा णं भंते ! जीवभावेणं किं पढमा, अपढमा ? गोयमा ! नो पढमा, अपढमा। ७. एवं जाव वेमाणिया। ८. सिद्धा णं० पुच्छा। गोयमा ! पढमा, नो अपढमा।[सु. ९-१७. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेणं जहाजोगं आहार-अणाहारभावं पडुच्च पढमत्त-अपढमत्तनिरूवणं] ९. आहारए णं भंते! जीवे आहारभावेणं किं पढमे, अपढमे? गोयमा ! नो पढमे, अपढमे। १०. एवं जाव वेमाणिए। ११. पोहत्तिए एवं चेव। १२. अणाहारए णं भंते ! जीवे अणाहारभावेणं० पुच्छा। गोयमा ! सिय पढमे, सिय अपढमे। १३. नेरतिए णं भंते !०? एवं नेरतिए जाव वेमाणिए नो पढमे, अपढमे। १४. सिद्धे पढमे, नो अपढमे। १५. अणाहारगा णं भंते ! जीवा अणाहारभावेणं० पुच्छा ! गोयमा ! पढमा वि अपढमा वि। १६. नेरतिया जाव वेमाणिया णो पढमा,अपढमा। १७.सिद्धा पढमा, नो अपढमा। एक्केक्के पुच्छा भाणियव्वा।[सु. १८-२२. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेणं जहाजोगं भवसिद्धियाइभावं पडुच्च पढमत्त-अपढमत्तनिरूवणं] १८. भवसिद्धीए एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहाराए (सु०९-११)। १९. एवं अभवसिद्धीए वि। २०. नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीय णं भंते ! जीवे नोभव० पुच्छा। गोयमा ! पढमे, नो अपढमे। २१. णोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीये णं भंते ! सिद्धे नोभव ०? एवं चेव। २२.एवं पुहत्तेण वि दोण्ह वि। [सु. २३-२८. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेणं जहाजोगं सण्णिआइभावं पडुच्च पढमत्त-अपढमत्तनिरूवणं] २३. सण्णी णं भंते!

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवे सण्णिभावेणं किं० पुच्छा। गोयमा! नो पढमे, अपढमे। २४. एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणिए।२५. एवं पुहत्तेण वि। २६. असण्णी एवं चेव एगत्त-पुहत्तेणं, नवरं जाव वाणमंतरा। २७. नोसण्णीनोअसण्णी जीवे मणुस्से सिद्धे पढमे, नो अपढमे। २८. एवं पुहत्तेण वि।[सु.२९-३२. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेणं जहाजोगं सलेसाइभावं पडुच्च पढमत्त-अपढमत्तनिरूवणं] २९. सलेसे णं भंते !० पुच्छा। गोयमा ! जहा आहारए। ३०. एवं पुहत्तेणं वि। ३१. कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा एवं चेव, नवरं जस्स जा लेसा अत्थि। ३२. अलेसे णं जीव-मणुस्स-सिद्धे जहा नोसण्णीनोअसण्णी (सु.२७)।[सु. ३३-४०. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेणं जहाजोगं सम्मद्दिट्ठिआइभावं पडुच्च पढमत्त-अपढमत्तनिरूवणं] ३३. सम्मदिट्ठीए णं भंते ! जीव सम्मदिट्ठिभावेणं किं पढमे० पुच्छा। गोयमा! सिय पढमे, सिय अपढमे। ३४. एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिए। ३५. सिद्धे पढमे, नो अपढमे। ३६. पुहत्तिया जीवा पढमा वि, अपढमा वि। ३७. एवं जाव वेमाणिया। ३८. सिद्धा पढमा, नो अपढमा। ३९. मिच्छादिट्ठीए एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारगा(सु०९-११)। ४०. सम्मामिच्छद्दिट्ठीए एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मद्दिट्ठी (सु०३३-३७), नवरं जस्स अत्थि सम्मामिच्छत्तं ।[सु० ४१-४४. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेणं जहाजोगं संजयाइभावं पडुच्च पढमत्त-अपढमत्तनिरूवणं] ४१. संजए जीवे मणुस्से य एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मद्दिट्ठी (सु०३३-३७)। ४२. अस्संजए जहा आहारए(सु०९-११)। ४३. संजयासंजये जीवे पंचिंदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्सा एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मद्दिट्ठी (सु०३३-३७)। ४४. नोसंजए नोअसंजए नोसंजयासजंये जीवे सिद्धे य एगत्तपुहत्तेणं पढमे, नो अपढमे। [सु. ४५-५०. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेणं जहाजोगं सकसायाइभावं पडुच्च पढमत्त-अपढमत्तनिरूवणं]४५. सकसायी कोहकसायी जाव लोभकसायी, एए एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए(सु०९-११)। ४६. अकसायी जीवे सिय पढमे,सिय अपढमे। ४७. एवं मणुस्से वि। ४८. सिद्धे पढमे,नो अपढमे। ४९. पुहत्तेणं जीवा मणुस्सा वि पढमा वि, अपढमा वि। ५०. सिद्धा पढमा,नो अपढमा। [सु. ५१-५४. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेणं जहाजोगं नाणिअन्नाणिभावं पडुच्च पढमत्त-अपढमत्तनिरूवणं]५१. णाणी एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मद्दिट्ठी (सु०३३-३७)। ५२. आभिणिबोहियनाणि जाव मणपज्जवनाणी एगत्त-पुहत्तेणं एवं चेव, नवरं जस्स जं अत्थि। ५३. केवलनाणी जीवे मणुस्से सिद्धे य एगत्त-पुहत्तेणं पढमा, नो अपढमा। ५४. अन्नाणि-मतिअन्नाणि सुयअन्नाणि विभंगनाणी य एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए (सु०९-११)। [सु.५५-५६. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एकत्त-पुहत्तेणं जहाजोगं सजोगि-अजोगिभावं पडुच्च पढमत्त-अपढमत्तनिरूवणं] ५५. सजोगी-मणजोगी वइजोगी कायजोगी एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए (सु०९-११), नवरं जस्स जो जोगो अत्थि। ५६. अजोगी जीव-मणुस्स-सिद्धा एगत्त-पुहत्तेणं पढमा, नो अपढमा।[सु.५७. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेणं जहाजोगं सागारोवउत्ताइभावं पडुच्च पढमत्त-अपढमत्तनिरूवणं] ५७. सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता एगत्त-पुहत्तेणं जहा अणाहारए (सु० १२-१७)। [सु. ५८-५९. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेणं जहाजोगं सवेद-अवेदभावं पडुच्च पढमत्त-अपढमत्तनिरूवणं] ५८. सवेदगो जाव नपुंसगवेदगो एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए (सु०९-११), नवरं जस्स जो वेदो अत्थि। ५९. अवेदओ एगत्त-पुहत्तेणं तिसु वि पएसु जहा अकसायी (सु०४६-५०)। [सु. ६०-६१. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेणं जहाजोगं ससरीर-असरीरभावं पडुच्च पढमत्त-अपढमत्तनिरूवणं] ६०. ससरीरी जहा आहारए (सु० ९-११)। एवं जाव कम्मगसरीरी, जस्स जं अत्थि सरीरं; नवरं आहारगसरीरी एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मद्दिट्ठी (सु०३३-३७)। ६१. असरीरी जीवे सिद्धे; एगत्त-पुहत्तेणं पढमा,नो अपढमा। [सु. ६२. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेणं जहाजोगं पज्जत्तअपज्जत्तभावं पडुच्च पढमत्त-अपढमत्तनिरूवणं] ६२. पंचहिं पज्जत्तीहिं, पंचहिं अपज्जत्तीहिं एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए (सु० ९-११)। नवरं जस्स जा अत्थि जाव वेमाणिया नो पढमा, अपढमा। [सु. ६३. पढम-अपढमलक्खणनिरूवणं] ६३. इमा लक्खणगाहा- जो जेण पत्तपुव्वो भावो सो तेणऽपढमओ होति। सेसेसु होइ पढमो अपत्तपव्वेसु भावेसु ॥१॥ [सु. ६४-१०२. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु तइयसुत्ताइबासट्ठितमसुत्त-पज्जंतनिद्दिट्ठकमेणं जीवभावाइपयाइं पडुच्च एगत्त-पुहत्तेणं जहाजोगं चरमत्त-अचरमत्तनिरूवणं] ६४. जीवे णं भंते ! जीवभावेणं किं चरिमे, अचरिमे ? गोयमा! नो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरिमे, अचरिमे। ६५. नेरतिए णं भंते ! नेरतियभावेणं० पुच्छा। गोयमा ! सिय चरिमे, सिय अचरिमे। ६६. एवं जाव वेमाणिए। ६७. सिद्धे जहा जीवे। ६८. जीवा णं० पुच्छा। गोयमा!नो चरिमा, अचरिमा। ६९. नेरतिया चरिमा वि, अचरिमा वि। ७०. एवं जाव वेमाणिया। ७१. सिद्धा जहा जीवा। ७२. आहारए सव्वत्थ एगत्तेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे। पुहत्तेणं चरिमा वि, अचरिमा वि। ७३. अणाहारओ जीवो सिद्धो य; एगत्तेण वि पुहत्तेण वि नो चरिमा, अचरिमा। ७४. सेसट्ठाणेसु एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारओ(सु०७२)। ७५. भवसिद्धीओ जीवपदे एगत्त-पुहत्तेणं चरिमे, नो अचरिमे। ७६. सेसट्ठाणेसु जहा आहारओ। ७७. अभवसिद्धीओ सव्वत्थ एगत्त-पुहत्तेणं नो चरिमे, अचरिमे। ७८. नोभवसिद्धीयनोअभवसिद्धीयजीवा सिद्धा य एगत्त-पुहत्तेणं जहा अभवसिद्धीओ। ७९. सण्णी जहा आहारओ(सु०७२)। ८०. एवं असण्णी वि। ८१. नोसन्नीनोअसन्नी जीवपदे सिद्धपदे य अचरिमो, मणुस्सपदे चरिमो, एगत्त-पुहत्तेणं। ८२. सलेस्सो जाव सुक्कलेस्सो जहा आहारओ (सु०७२), नवरं जस्स जा अत्थि। ८३. अलेस्सो जहा नोसण्णीनोअसण्णी। ८४. समद्दिट्ठी जहा अणाहारओ(सु०७३-७४)। ८५. मिच्छादिट्ठी जहा आहारओ (सु०७२)। ८६. सम्मामिच्छद्दिट्ठी एगिंदिय-विगलिंदियवज्जं सिय चरिमे, सिय अचरिमे। पुहत्तेणं चरिमा वि, अचरिमा वि। ८७. संजओ जीवो मरुस्सो य जहा आहारओ (सु०७२)। ८८. असंजतो वि तहेव। ८९. संजयासंजतो वि तहेव; नवरं जस्स जं अत्थि। ९०. नोसंजयनोअसंजयनोसंजयासंजओ जहा नोभवसिद्धीयनोअभवसिद्धीयो (सु०७८)। ९१. सकसायी जाव लोभकसायी सव्वट्ठाणेसुजहा आहारओ(सु०७२)। ९२. अकसायी जीवपए सिद्धे य नो चरिमो, अचरिमो। मणुस्सपदे सिय चरिमो, सिय अचरिमो। ९३. (१) णाणी जहा सम्मद्दिट्ठी (सु०८४)सव्वत्थ। (२) आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी जहा आहारओ (सु०७२), जस्स जं अत्थि। ३ केवलनाणी जहा नोसण्णीनोअसण्णी (सु०८१)। ९४. अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा आहारओ (सु०७२)। ९५. सजोगी जाव कायजोगी जहा आहारओ (सु०७२), जस्स जो जोगो अत्थि। ९६. अजोगी जहा नोसण्णीनोअसण्णी (सु०८१)। ९७. सागारोवउत्तो अणागारोवउत्तो य जहा अणाहारओ (सु०७३-७४)। ९८. सवेदओ जाव नपुंसगवेदओ जहा आहारओ (सु०७२)। ९९. अवेदओ जहा अकसायी (सु०९२)। १००. ससरीरी जाव कम्मगसरीरी जहा आहारओ (सु०७२), नवरं जस्स जं अत्थि। १०१. असरीरी जहा नोभवसिद्धीयनोअभवसिद्धीओ (सु०७८)। १०२.पंचहिं पज्जत्तीहिं पंचहिं अपज्जत्तीहिं जहा आहारओ (सु०७२)। सव्वत्थ एगत्त-पुहत्तेणं दंडगा भाणियव्वा। [सु. १०३. चरम-अचरमलक्खणनिरूवणं] १०३. इमा लक्खणगाहा- जो जं पाविहिति पुणो भावं सो तेण अचरिमो होइ। अच्चंतवियोगो जस्स जेण भावेण सो चरिमो ॥१॥ सेवं भंते ! सेवं भंते !० जाव विहरति। ॥१८.१॥ ☆☆☆ **बीओ उद्देसओ 'विसाह'** ☆☆☆ [सु.१. विसाहानयरीबहुपुत्तियचेइए भगवओ समवसरणं] १. तेणं कालेणं तेणं समयेणं विसाहा नामं नगरी होत्था। वन्नओ। बहुपुत्तिए चेतिए। वण्णओ। सामी समोसढे जाव पज्जुवासति। [सु.२. सक्कस्स भगवओ समीवमागमणं पडिगमणं च]२, तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे एवं जहा सोलसमसए बितिए उद्देसए (स०१६ उ० २ सु० ८) तहेव दिव्वेण जाणविमाणेण आगतो; नवरं एत्थ आभियोगा वि अत्ति, जाव बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेति, उव० २ जाव पडिगते। [सु.३. देविंदस्स सक्कस्स पुव्वभवकहा-कत्तियाभिहाणसेट्ठिस्स मुणिसुव्वयतित्थयरसमीवं पव्वज्जागहणं सामण्णपालणं देविंदसक्कत्तेणोववाओ य] ३. 'भंते !' त्ति भगवं गोयमे समणं जाव एवं वदासी-जहा ततियसते ईसाणस्स (स० ३ उ० १ सु० ३४-३५) तहेव कूडागारदिट्ठंतो, तहेव पुव्वभवपुच्छा जाव अभिसमन्नागया ? 'गोयमा' ई समणे भगवं गोतमं एवं वदासी-''एवं खलु गोयमा!, ''तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था। वण्णओ। सहस्संबवणे उज्जाणे। वण्णओ। ''तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे कत्तिए नामं सेट्ठी परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए णेगमपढमासणिए, णेगमट्ठसहस्सस्स बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कोडुंबेसु य एवं जहा रायपसेणइज्जे चित्ते जाव चक्खुभूते णेगमट्ठसहस्सस्स सायस्स य कुडुंबस्स आहेवच्चं जाव करेमाणे पालेमाणे समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहरति। ''तेणं कालेणं तेणं समएरं मुणिसुव्वये अरहा आदिगरे जहा सोलसमसए (स०१६ उ० ५ सु०१६) तहेव जाव समोसढे जाव परिसा पज्जुवासति।''तए णं कत्तिए सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ० एवं जहा एक्कारसमसते सुदंसणे(स० ११उ०११सु०४) तहेव निग्गओ जाव पज्जुवासति। ''तए णं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियस्स सेट्ठिस्स धम्मकहा जाव परिसा पडिगता। ''तए णं से कत्तिए सेट्ठी मुणिसुव्वय० जाव निसम्म हट्ठतुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेति, उ० २ मुणिसुव्वयं जाव एवं वदासी-'एवमेयं भंते! जाव से जहेयं तुब्भे वरह। जं नवरं देवाणुप्पिया! नेगमट्ठसहस्सं आपुच्छरमि, जेट्ठपुत्तं च कुडुंबे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं पव्वयामि'।'अहासुहं जाव मा पडिबंधं'। ''तए णं से कत्तिए सेट्ठी जाव पडिनिक्खमइ, प०२ जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवा० २ णेगमट्ठसहस्सं सद्दावेइ, स०२ एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुप्पिया! मए मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरूयिते। तए णं अहं देवाणुप्पिया! संसारभयुव्विग्गे जाव पव्वयामि। तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! किं करेह ? किं ववसह? के भे हिदइच्छिए ? के भे सामत्थे ?' ''तए णं तं णेगमट्ठसहस्सं तं कत्तियं सेट्ठिं एवं वदासी-'जदि णं देवाणुप्पिया! संसारभयुव्विग्गा जाव पव्वइस्संति अम्हं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा भीता जम्मण-मरणाणं देवाणुप्पिएहिं सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं मुंडा भवित्ता अगाराओ जाव पव्वयामो'। ''तए णं से कत्तिए सेट्ठी तं नेगमट्ठसहस्सं एवं वयासी-'जदि णं देवाणुप्पिया! संसारभयुव्विग्गा भीया जम्मण-मरणाणं मए सद्धिं मुणिसुव्वय जाव पव्वाह तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सएसु गिहेसु० जेट्ठपुत्ते कुडुंबे ठावेह, जेट्ठ० ठा०२ पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ द्रूहह, पुरिस० द्रू० २ अकालपरिहीणं चेव मम अंतियं पादुब्भवह'।''तए णं तं नेगमट्ठसहस्सं पि कत्तियस्स सेट्ठिस्स एतमट्ठं विणएणं पडिसुणेति,प० २ जेणेव साइं साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छइ, उवा० २ विपुलं असण जाव उवक्खडावेति, उ० २ मित्तनाति० जाव तस्सेव मित्तनाति० जाव पुरतो जेट्ठपुत्ते कुडुंबे ठावेति, जे० ठा० २ तं मित्तनाति जाव जेट्ठपुत्ते य आपुच्छति, आ०२ पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ द्रूहति, पु० द्रू० २ मित्तणाति० जाव परिजणेणं जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा(?ग्गं)सव्विड्ढीए जाव रवेणं अकालपरिहीणं चेव कत्तियस्स सेट्ठिस्स अंतियं पाउब्भवति। ''तए णं से कत्तिए सेट्ठी विपुलं असण ४ जहा गंगदत्तो (स०१६ उ०५सु०१६) जाव मित्तनाति० जाव परिजणेणं जेट्ठपुत्तेणं णेगमट्ठसहस्सेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव रवेणं हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जहा गंगदत्तो (स० १६ उ० ५ सु० १६) जाव आलित्ते णं भंते! लोए, पलित्ते णं भंते! लोए, जाव आणुगामियत्ताए भविस्सति, तं इच्छामि णं भंते ! णेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं सयमेव पव्वावियं जाव धम्ममाइक्खितं। ''तए णं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियं सेट्ठिं णेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं सयमेव पव्वावेइ जाव धम्ममाइक्खइ-एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं जाव संजमियव्वं। ''तए णं से कत्तिए सेट्ठी नेगमट्ठसहस्सेण सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ इमं एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं संपडिवज्जति तमाणाए तहा गच्छति जाव संजमति। ''तए णं से कत्तिए सेट्ठी णेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं अणगारे जाए रियासमिए जाव गुत्तबंभचारी। ''तए णं से कत्तिए अणगारे मुणिसुव्वयस्स अरहओ तहारूवाणं थेराणं अंतियं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, सा० अ० २ बहूहिं चउत्थछट्ठऽट्ठम० जाव अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं सामण्णपरियागं पाउणति, ब० पा० २ मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेइ, मा० झो० २ सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, स० छे० २ आलोइय जाव कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि जाव सक्के देविंदत्ताए उपवन्ने। ''तए णं से सक्के देविंदे देवराया अहुणोववन्ने''। सेसं जहा गंगदत्तस्स (स० १६ उ० ५ सु० १६) जाव अंतं काहिति, नवरं ठिती दो सागरोवमाइं सेसं तं चेव। सेवं भंते!सेवं भंते !त्ति०। ॥१८.२॥ **☆☆☆ तइओ उद्देसओ 'मायंदिए'☆☆☆** [सु. १-४. रायगिहनगरगुणसिलयचेइए मायंदियपुत्ताणगारपुच्छाए भगवओ परूवणे काउलेस्साणं पुढवि-आउ-वणस्सइकाइयाणं अणंतरमणुस्सभवे सिद्धिगमणनिरूवणं] १. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था। वण्णओ। गुणसिलए चेतिए। वण्णओ। जाव परिसा पडिगया। २. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवतो महावीरस जाव अंतेवासी मागंदियपुत्ते नामं अणगारे पगतिभद्दए जहा मंडियपुत्ते(स० ३ उ०३ सु० १) जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-से नूणं भंते! काउलेस्सेहिंतो पुढविकाइएहिंतो अणंतरं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उव्वट्टित्ता माणुस्सं विग्गहं लभति, मा० ल० २ केवलं बोहिं बुज्झइ, केव० बु० २ तओ पच्छा सिज्झति जाव अंतं करेति ? हंता, मागंदियपुत्ता ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव अंतं करेति। ३. से नूणं भंते! काउलेस्से आउकाइए काउलेस्सेहिंतो आउकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुस्सं विग्गहं लभति, माणुस्सं विग्गहं लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झति जाव अंतं करेति? हंता, मागंदियपुत्ता ! जाव अंतं करेति। ४. से नूणं भंते ! काउलेस्से वणस्सइकाइए० ? एवं चेव जाव अंतं करेति। [सु. ५-७. मायंदियपुत्तकहियं काउलेस्सपुढवि-आउ-वणस्सइकाइयअणंतर-मणुस्सभवसिद्धिगमणवुत्तंतं असद्दहमाणाणं समाणाणं पइ भगवओ कण्हनील-काउलेस्सपुढवि-आउ-वणस्सइकाइयअणंतरमणुस्सभवसिद्धिगमणपरूवणं समणकयं च मायंदियपुत्तखमावणयं] ५. 'सेवं भंते! सेवं भंते!' त्ति मागंदियपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीरं जाव नमंसित्ता जेणेव समणे निग्गंथे तेणेव उवागच्छति, ते० उ० २ समणे निग्गंथे एवं वदासी- 'एवं खलु अज्जो! काउलेस्से आउक्काइए जाव अंतं करेति। एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सतिकाइए जाव अंतं करेति'। ६. तए णं ते समणा निग्गंथा मागंदियपुत्तस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति ३, एयमट्ठं असद्दहमाणा ३ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, ते० उ० २ समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं० २ एवं वयासी-एवंखलु भंते! मागंदियपुत्ते अणगारे अम्हं एवमाइक्खइ जाव परूवेइ-'एवं खलु अज्जो! काउलेस्से पुढविकाइए जाव अंतं करेति, एवं खलु अज्जो!काउलेस्से आउकाइए जाव अंतं करेति, एवं वणस्सतिकाइए वि जाव अंतं करेति। से कहमेयं भंते! एवं'?'अज्जो!'त्ति समणे भगवं महावीरे ते समणे निग्गंथे आमंतित्ता एवं वयासी- जं णं अज्जो ! मागंदियपुत्ते अणगारे तुब्भे एवमाइकखइ जाव परूवेइ-'एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव अंतं करेति, एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव अंतं करेति, एवं खलु वणस्सइकातिए वि जाव अंतं करेति' सच्चे णं एसमट्ठे, अहं पि णं अज्जो! एवमाइक्खामि ४ एवं खलु अज्जो ! कण्हलेस्से पुढविकाइए कण्हलेस्सेहिंतो पुढविकाइएहिंतो जाव अंतं करेति, एवं खलु अज्जो! नीललेस्से पुढविकाइए जाव अंतं करेति, एवं काउलेस्से वि, जहा पुढविकाइए एवं आउकाइए वि, एवं वणस्सतिकाइए वि, सच्चे णं एसमट्ठे। ७. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति समणा निग्गंथा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं०२ जेणेव मागंदियपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छंति, उवा० २ मागंदियपुत्तं अणगारं वंदंति नमंसंति, वं०२ एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेंति। [सु. ८. मायंदियपुत्ताणगारपुच्छाए भगवओ परूवणे भावियप्पणो अणगारस्स सव्व-चरिम-मारणंतियाणं कम्म-मरण-सरीराणं वेदण-निज्जरणाइसमए पुग्गलाणं सुहुमत्तनिरूवणाइ] ८. तए णं से मागंदियपुत्ते अणगारे उट्ठाए उट्ठेइ, उ०२ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, ते० उ० २ समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वं० २ एवं वदासी-अणगारस्स णं भंते! भावियप्पणो सव्वं कम्मं वेदेमाणस्स, सव्वं कम्म निज्जरेमाणस्स, सव्वं मारं मरमाणस्स, सव्वं सरीरं विप्पजहमाणस्स, चरिमं कम्मं वेदेमाणस्स, चरिमं कम्मं निज्जरेमाणस्स, चरिमं मारं मरमाणस्स, चरिमं सरीरं विप्पजहमाणस्स, मारणंतियं मारं मरमाणस्स, मारणंतियं कम्मं वेदेमाणस्स, मारणंतियं कम्मं निज्जरेमाणस्स, मारणंनियं मारं मरमाणस्स, मारणंतियं सरीरं विप्पजहमाणस्स जे चरिमा निज्जरापोग्गला, सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वं लोगं पि णं ते ओगाहित्ताणं चिट्ठंति? हंता, मागंदियपुत्ता! अणगारस्स णं भावियप्पणो जाव ओगाहित्ताणं चिट्ठंति। [सु. ९. निज्जरापोग्गलाणं अन्नत्त-नाणत्ताइजणणा-पासणाविसए छउमत्थं पडुच्च असंभवनिरूवणपुव्वं चउवीसइदंडएसु निज्जरापोग्गलाणं जाणणाइविसए पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] ९. छउमत्थे णं भंते! मणुस्से तेसिं निज्जरापोग्गलाणं किंचि आणत्तं वा णाणत्तं वा एवं जहा इंदियउद्देसए पढमे जाव वेमाणिया जाव पत्थ णं जे ते उवउत्ता ते जाणंति पासंति आहारेंति, से तेणट्ठेणं निक्खेवो भाणितव्वो। [सु. १०-२६. मायंदियपुत्ताणगारपण्हाणं समाहाणं सु. १०. सव्व-भावबंधरूवं बंधस्स भेयजुयं]१०. कतिविधे णं भंते। बंधे पन्नते ? मागंदियपुत्ता! दुविहे बंधे पन्नते, तं जहा-दव्वबंधे य भावबंधे य। [सु. ११. पयोग-वीससाबंधरूवं दव्वबंधस्स भेयजुयं] ११. दव्वबंधे णं भंते ! कतिविधे पन्नते ? मागंदियपुत्ता! दुविधे पन्नते, तं जहा-पयोगबंधे य वीससाबंधे य। [सु.१२. सादीय-अणादीयरूवं वीससाबंधस्स भेयजुयं] १२. वीससाबंधे णं भंते ! कतिविधे पन्नते ? मागंदियपुत्ता ! दुविधे पन्नते, तं जहा-सादीयवीससाबंधे य अणादीयवीससाबंधे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य। [सु.१३. सिढिल-कढिणबंधणरूवं पयोगबंधस्स भेयजुयं]१३. पयोगबंधे णं भंते ! कतिविधे पन्नते? मागंदियपुत्ता ! दुविहे पन्नते तं जहा-सिढिलबंधणबंधे य धणियबंधणबंधे य । [सु.१४. मूल-उत्तरपगडिबंधरूवं भावबंधस्स भेयजुयं] १४. भावबंधे णं भंते! कतिविधे पन्नते ? मागंदियपुत्ता ! दुविहे पन्नते, तं जहा-मूलपगडिबंधे य उत्तरपगडिबंधे य। [सु. १५-१६. चउवीसइदंडएसु भावबंधनिरूवणं] १५. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे भावबंधे पन्नते ? मागंदियपुत्ता ! दुविहे भावबंधे पन्नते, तं जहा-मूलपगडिबंधे य उत्तरपगडिबंधे य। १६. एवं जाव वेमाणियाणं।[सु. १७-२०. अट्ठसु मूलपगडीसु चउवीसइदंडएसु य अट्कम्माइं पडुच्च भावपंधनिरूवणं] १७. नाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स कतिविहे भावबंधे पन्नते ? मागंदियपुत्ता ! दुविहे भावबंधे पन्नते, तं जहा-मूलपगडिबंधे य उत्तरपयडिबंधे य। १८. नेरइयाणं भंते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कतिविहे भावबंधे पण्णते? मागंदियपुत्ता ! दुविहे भावबंधे पन्नते, तं जहा-मूलपगडिबंधे य उत्तरपगडिबंधे य। १९. एवं जाव वेमाणियाणं । २०. जहा नाणावरणिज्जेणं दंडओ भणिओ एवं जाव अंतराएणं भाणियव्वो । [सु. २१-२३.जीव-चउवीसइदंडएसु कड-कडेमाण-कज्जिस्समाणाइं कम्माइं पडुच्च नाणत्तनिरूवणं] २१. (१) जीवाणं भंते ! पावे कम्मे जे य कडे जाव जे य कज्जिस्सइ अत्थि याइं तस्स केयि णाणत्ते ? हंता, अत्थि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति'जीवाणं पावे कम्मे जे य कडे जाव जे य कज्जिस्सति अत्थि याइं तस्स णाणत्ते'? 'मागंदियपुत्ता! से जहानामए-केयि पुरिसे धणुं परामुसति, धणुं प० २ उसुं परामुसति, उसुं प० २ ठाणं ठाति, ठा० २ आयतकण्णायतं उसुं करेति, आ० क० २ उड्ढं वेहासं उव्विहइ। से नूणं मागंदियपुत्ता ! तस्स उसुस्स उड्ढं वेहासं उव्वीढस्स समाणस्स एयति वि णाणत्तं, जाव तं तं भावं परिणमति वि णाणत्तं'? 'हंता, भगवं! एयति वि णाणत्तं, जाव परिणमति वि णाणत्तं।' सेतेणट्ठेणं मागंदियपुत्ता! एवं वुच्चति जाव तं तं भावं परिणमति वि णाणत्तं। २२. नेरतियाणं भंते ! पावे कम्मे जे य कडे० एवं चेव। २३. एवं जाव वेमाणियाणं। [सु. २४-२६. चउवीसइदंडएसु गहियआहारपोग्गले पडुच्च एसकालविसइयआहार-चागपमाणनिरूवणाइ] २४. नेरतिया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति तेसि णं भंते ! पोग्गलाणं सेयकालंसि कतिभागं आहारेंति, कतिभागं निज्जरेंति ? मागंदियपुत्ता ! असंखेज्जइभागं आहारेंति, अणंतभागं निज्जरेंति। २५. चक्किया णं भंते ! केसि तेसु निज्जरापोग्गलेसु आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा ? नो इणट्ठे समट्ठे, अणाहरणमेयं बुइयं समणाउसो ! २६. एवं जाव वेमाणियाणं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१८.३॥

☆☆☆ चउत्थो उद्देसओ 'पाणातिवाय' ☆☆☆

[सु. १. चउत्थुद्देसस्सुवुग्घाओ]१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव भगवं गोयमे एवं वयासि-[सु. २. जीव-अजीवदव्वाइं पडुच्च जीवेसु परिभोग-अपरिभोगनिरूवणं]२. (१) अह भंते! पाणातिवाए मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पाणातिवायवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणे, पुढविकाए जाव वणस्सतिकाये, धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाये जीवे असरीरपडिबद्धे, परमाणुपोग्गले, सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे, सव्वे य बादरबोंदिधरा कलेवरा; एए णं दुविहा जीवदव्वा य जीवाणं परिभोगत्ता, हव्वमागच्छंति? गोयमा ! पाणातिवा, जाव एए णं दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य अत्थेगतिया जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, अत्थेगतिया जीवाणं जाव नो हव्वमागच्छंति। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'पाणाइवाए जाव नो हव्वमागच्छंति ?' गोयमा ! पारातिवाए जाव मिच्छादंसणससल्ले, पुढविकाइए जाव वणस्सतिकाइए सव्वे य बादरबोंदिधरा कलेवरा, एए णं दुविहा-जीवदव्वा य अजीवदव्वा य, जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति । पाणातिवायवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, धम्मत्थिकाये अधम्मत्थिकाये जाव परमाणुपोग्गले, सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे, एए णं ददुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाणं परिभोगत्ताए नो हव्वमागच्छंति। सेतेणट्ठेणं जाव नो हव्वमागच्छंति। [सु. ३. कसायभेयाइजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] ३. कति णं भंते ! कसाया पन्नता? गोयमा ! चत्तारि कसाया पन्नता, तं जहा-कसायपयं निरवसेसं भाणियव्वं जाव निज्जरिस्संति लोभेणं। [सु. ४. जुम्मस्स कडजुम्माइभेयचउक्कं]४. (१) कति णं भंते ! जुम्मा पन्नता ? गोयमा ! चत्तारि जुम्मा- पन्नत्ता, तं जहा-कडजुम्मे तेयोए दावरजुम्मे कलिओए। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति-जाव कलिओए ? गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवहारेण अवहीरमाणे चउपज्जवसिए से त्तं कडजुम्मे। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए से त्तं तेयोए। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए से त्तं दावरजुम्मे। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए से त्तं कलिओये, से तेणट्ठेणं गोतमा ! एवं वुच्चति जाव कलिओए।[सु. ५-१७. चउवीसइदंडय-सिद्ध-इत्थीसु कडजुम्माइनिरूवणं]५. नेरतिया णं भंते ! किं कडजुम्मा तेयोया दावरजुम्मा कलिओया? गोयमा ! जहन्नपए कडजुम्मा, उक्कोसपए तेयोया, अजहन्नमणुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोया। ६. एवं जाव थणियकुमारा। ७. वणस्सतिकातिया णं० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नपदे अपदा, उक्कोसपदे अपदा, अजहन्नमणुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा। ८. बेइंदिया णं० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नपए कडजुम्मा, उक्कासपए दावरजुम्मा, अजहन्नमणुक्कोसपए सिय कडसुम्मा जाव सिय कलियोगा। ९. एवं जाव चतुरिंदिया। १०. सेसा एगिंदिया जहा बेंदिया। ११. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जाव वेमाणिया जहा नेरतिया। १२. सिद्धा जहा वणस्सतिकाइया। १३. इत्थीओ णं भंते ! किं कडजुम्माओ० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नपदे कडजुम्माओ, उक्कोसपए कडजुम्माओ, अजहन्नमणुक्कोसपए सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलियोगाओ। १४. एवं असुरकुमारित्थीओ वि जाव थणियकुमारित्थीओ। १५. एवं तिरिक्खजोणित्थीओ। १६. एवं मणुस्सित्थीओ। १७. एवं जाव वाणमंतर-जोतिय-वेमाणियदेवित्थीओ। [सु. १८. अग्गिजीवेसु अप्प-बहुआउं पडुच्च निरूवणं] १८. जावतिया णं भंते ! वरा अंधगवण्हिणो जीवा तावतिया परा अंधगवण्हिणो जीवा? हंता, गोयमा ! जावतिया वरा अंधगवण्हिणो जीवा तावतिया परा अंधगवण्हिणो जीवा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१८.४॥ ☆☆☆ **पंचमो उद्देसओ 'असुरे'** ☆☆☆ [सु. १-४. चउव्विहदेवेसु अभिरूव-अणभिरूवाइकारणनिरूवणं] १. (१) दो भंते ! असुरकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववन्ना। तत्थ णं एगे असुरकुमारे देवे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, एगे असुरकुमारे देवे से णं नो पासादीए नो दरिसणिज्जे नो अभिरूवे नो पडिरूवे, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पन्नता, तं जहा-वेउव्वियसरीरा य अवेउव्विसरीरा य। तत्थ णं जे से वेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं पासादीए जाव पडिरूवे। तत्थ णं जे से अवेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं नो पासादीए जाव नो पडिरूवे। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'तत्थ णं जे से वेउव्वियसरीरे तं चेव जाव नो पडिरूवे'? 'गोयमा ! से जहानामए इहं मणुयलोगंसि दुवे पुरिसा भवंति-एगे पुरिसे अलंकियविभूसिए, एगे पुरिसे अणलंकियविभूसिए; एएसि णं गोयमा ! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे पासादीये जाव पडिरूवे ? कयरे पुरिसे नो पासादीए जाव नो पडिरूवे ? जे वा से पुरिसे अलंकियविभूसिए, जे वा से पुरिसे अणलंकियविभूसिए?''भगवं ! तत्थ णं जे से पुरिसे अलंकियविभूसिए से णं पुरिसे पासादीये जाव पडिरूवे, तत्थ णं जे से पुरिसे अणलंकियविभूसिए से णं पुरिसे नो पासादीए जाव नो पडिरूवे'। से तेणट्ठेणं जाव नो पडिरूवे। २. दो भंते ! नागकुमारा देवा एगंसि नागकुमारावासंसि० ? एवं चेव। ३. एवं जाव थणियकुमारा। ४. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया एवं चेव। [सु. ५-७. चउवीसइदंडएसु महाकम्मतर-अप्पकम्मतराइकारणनिरूवणं]५. दो भंते ! नेरइया एगंसि नेरतियावासंसि नेरतियत्ताए उववन्ना। तत्थ णं एगे नेरइए महाकम्मतराए चेव जाव महावेदणतराए चेव, एगे नेरइए अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेदणतराए चेव, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! नेइया दुविहा पन्नता, तं जहा-मायिमिच्छद्दिट्ठिउववन्नगा य, अमायिसम्मद्दिट्ठिउववन्नगा य। तत्थ णं जे से मायिमिच्छद्दिट्ठिउववन्नए नेरतिए से णं महाकम्मतराए चेव जाव महावेदणतराए चेव, तत्थ णं जे से अमायिसम्मद्दिट्ठिउववन्नए नेरइए से णं अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेदणतराए चेव। ६. दो भंते ! असुरकुमारा०? एवं चेव। ७. एवं एगिंदिय-विगलिंदियवज्जा जाव वेमाणिया। [सु. ८-११. चउवीसइदंडएसु वट्टमाण-आगामिभवआउयपडिसंवेदणं पडुच्च निरूवरं] ८. नेरइए णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! कयरं आउयं पडिसंवेदेति ? गोयमा ! नेरइयाउयं पडिसंवेदेति, पंचेंदियतिरिक्खजोणियाउए से पुरओ कडे चिट्ठइ। ९. एवं मणुस्सेसु वि, नवरं मणुस्साउए से पुरतो कडे चिट्ठति। १०. असुरकुमारे णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए० पुच्छा। गोयमा ! असुरकुमाराउयं पडिसंवेदेति, पुढविकाइयाउए से पुरतो कडे चिट्ठइ। ११. एवं जो जहिं भविओ उववज्जित्तए तस्स तं पुरतो कडं चिट्ठति, जत्थ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठितो तं पडिसंवेदेति जाव वेमाणिए। नवरं पुढविकाइओ पुढविकाइएसु उववज्जंतओ पुढविकाइयाउयं पडिसंवेदेति, अन्ने य से पुढविकाइयाउए पुरतो कडे चिट्ठति। एवं जाव मणुस्सो सट्ठाणे उववातेयव्वो, परट्ठाणे तहेव। [सु. १२-१५. चउव्विहदेवेसु इच्छियविउव्वणाकरण-अकरणसामत्थं पडुच्च कारणनिरूवणं] १२. दो भंते ! असुरकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवेत्ताए उववन्ना। तत्थ णं एगे असुरकुमारे देवे 'उज्जुयं विउव्विस्सामी' ति उज्जुयं विउव्वह, 'वंकं विउव्विस्सामी' ति वंकं विउव्वइ, जं जहा इच्छति तं तहा विउव्वइ। एगे असुरकुमारे देवे 'उज्जुयं विउव्विस्सामी' ति वंकं विउव्वति, 'वंकं विउव्विस्सामी' ति उज्जुयं विउव्वति, जं जहा इच्छति णो तं तहा विउव्वति। से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-मायिमिच्छद्दिट्ठिउववन्नगा य अमायिसम्मद्दिट्ठिउववन्नगा य। तत्थ णं जे से मायिमिच्छद्दिट्ठिउववन्नए असुरकुमारे देवे से णं 'उज्जुयं विउव्विस्सामी' ति वंकं विउव्वति जाव णो तं तहा विउव्वइ, तत्थ णं जे से अमायिसम्मद्दिट्ठिउववन्नए असुरकुमारे देवे से 'उज्जुयं विउव्विस्सामी' ति उज्जुयं विउव्वति जाव तं तहा विउव्वति। १३. दो भंते! नागकुमारा०? एवं चेव। १४. एवं जाव थणियकुमारा। १५. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया एवं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१८.५॥ **☆☆☆ छट्ठो उद्देसओ 'गुल' ☆☆☆** [सु. १-५. फाणियगुल-भमर-सुयपिच्छ-मंजिट्ठिआईसु वावहारिय-नेच्छइयन-यावेक्खाए वण्ण-गंध-रस-फासनिरूवणं] १. फाणियगुले णं भंते ! कतिवण्णे कतिगंधे कतिरसे कतिफासे पन्नते ? गोयमा ! एत्थं दो नया भवंति, तं जहा-नेच्छयियनए य वावहारियनए य। वावहारियनयस्स गोड्डे फाणियगुले, नेच्छइयनयस्स पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे अट्ठफासे पन्नते। २. भमरे णं भंते ! कतिवण्णे० पुच्छा। गोयमा ! एत्थं दो नया भवंति, तं जहा-नेच्छइयनए य वावहारियनए य। वावहारियनयस्स कालए भमरे, नेच्छइयनयस्स पंचवण्णे जाव अट्ठफासे पन्नते। ३. सुयपिंछे णं भंते! कतिवण्णे०? एवं चेव, नवरं वावहारियनयस्स नीलए सुयपिच्छे, नेच्छइयनयस्स पंचवण्णे० सेसं तं चेव। ४. एवं एएणं अभिलावेणं लोहिया मंजिट्ठी पीतिया हलिद्दा, सुक्किलए संखे, सुब्भिगंधे कोट्ठे, दुब्भिगंधे मयगसरीरे, तित्ते निंबे, कडुया सुंठी, कसायतुरए कविट्ठे, अंबा अंबिलिया, महुरे खंडे, कक्खडे वइरे, मउए नवणीए, गरूए अये, लहुए उलुयपत्ते, सीए हिमे, उसिणे अगणिकाए, णिद्धे तेल्ले। ५. छारिया णं भंते !० पुच्छा। गोयमा ! एत्थ दो नया भवंति, तं जहा-नेच्छइयनए य वावहारियनए य। वावहारियनयस्स लुक्खा छारिया, नेच्छइयनयस्स पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पन्नता। [सु. ६-१३. परमाणु-दुपएसियाइखंधेसु वण्ण-गंध-रस-फासनिरूवणं] ६. परमाणुपोग्गले णं भंते ! कइवण्णे जाव कतिफासे पन्नते ? गोयमा ! एगवण्णे एगगंधे एगरसे दुफासे पन्नते। ७. दुपदेसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे० पुच्छा। गोयमा ! सिय एगवण्णे सिय दुवण्णे, सिय एगगंधे सिय दुगंधे, सिय एगरसे सिय दुरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पन्नते। ८. एवं तिपदेसिए वि, नवरं सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे। एवं रसेसु वि। सेसं जहा दुपदेसियस्स। ९. एवं चउपदेसिए वि, नवरं सिय एगवण्णे जाव सिय चउवण्णे। एवं रसेसु वि। सेसं तं चेव। १०. एवं पंचपदेसिए वि, नवरं सिय एगवण्णे जाव सिय पंचवण्णे। एवं रसेसु वि। गंध-फासा तहेव। ११. जहा पंचपएसिओ एवं जाव असंखेज्जपएसिओ। १२. सुहुमपरिणए णं भंते ! अणहतपदेसिए खंधे कतिवण्णे०? जहा पंचपदेसिए तहेव निरवसेसं। १३. बादरपरिणए णं भंते ! अणंतपएसिए खंधे कतिवण्णे० पुच्छा। गोयमा ! सिय एगवण्णे जाव सिय पंचवण्णे, सिय एगगंधे सिय दुगंधे, सिय एगरसे जाव सिय पंचरसे, सिय चउफासे जाव सिय अट्ठफासे पन्नत्ते। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१८.६॥

☆☆☆सत्तमो उद्देसओ 'केवलि' ☆☆☆ [सु. १. सत्तमुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासी- [सु. २. जक्खाविट्ठकेवलिविसए अन्नउत्थियभणियनिरासपुव्वं भगवओ परूवणे केवलिस्स सच्च-असच्चामोसभासापरूवणं]२. अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति-एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइस्सति, एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासइ, तं जहा-मोसं वा सच्चामोसं वा। से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जं णं ते अन्नउत्थिया जाव जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि ४-नो खलु केवली जक्खाएसेणं आइस्सति, नो खलु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासइ, तं जहा-मोसं वा सच्चामोसं वा। केवली णं असावज्जाओ अपरोवघातियाओ आहच्च दो भासाओ भासति, तं जहा-सच्चं वा असच्चामोसं वा। [सु. ३. कम्म-सरीर-भंडमत्तउवहिरूवं उवहिभेयतियं] ३. कतिविधे णं भंते! उवही पन्नते ? गोयमा! तिविहे उवही पन्नत्ते, तं जहा-कम्मोवही सरीरोवही बाहिरभंडमत्तोवगरणोवही। [सु. ४-६. नेरइय-एगिंदिएसु कम्म-सरीरोवहिरूवं उवहिभेयदुयं, सेसदंडएसु य कम्मोवहिआइउवहिभेयतियं] ४. नेरइयाणं भंते !० पुच्छा। गोयमा ! दुविहे उवही पन्नत्ते, तं जहा-कम्मोवही य सरीरोवही य। ५. सेसाणं तिविहा उवही एगिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं। ६. एगिंदियाणं दुविहे, तं जहा-कम्मोवही य सरीरोवही य। [सु. ७-९. सचित्त-अचित्त-मीसयउवहिरूवं उवहिभेयतियं, चउवीसइदंडएसु य सचित्ताइतिविहोवहिनिरूवणं] ७. कतिविहे णं भंते ! उवही पन्नते ? गोयमा! तिविहे उवही पन्नते, तं जहा-सच्चित्ते अचित्ते मीसए। ८. एवं नेरइयाण वि। ९. एवं निरवसेसं जाव सेमाणियाणं। [सु. १०-११. ततियाइनवमसुत्तभणियउवहिभेयाइअणुसारेण परिग्गहभेयाइनिरूवणं] १०. कतिविधे णं भंते ! परिग्गहे पन्नते ? गोयमा ! तिविहे परिग्गहे पन्नते, तं जहा-कम्मपरिग्गहे सरीरपरिग्गहे बाहिरगभंडमत्तोवगरणपरिग्गहे। ११. नेरतियाणं भंते !०? एवं जहा उवहिणा दो दंडगा भणिया त- ग्रन्थाग्रम् ११००० हा परिग्गहेण वि दो दंडगा भाणियव्वा। [सु. १२. पणिहाणस्स मणपणिहाणाइभेयतियं] १२. कतिविहे णं भंते ! पणिहाणे पन्नते ? गोयमा ! तिविहे पणिहाणे पन्नत्ते, तं जहा-मणपणिहाणे वइपणिहाणे कायपणिहाणे। [सु. १३-१९. सउवीसइदंडएसु जहाजोगं मणपरिहाणाइनिरूवणं] १३. नेरतियाणं भंते ! कतिविहे पणिहाणे पन्नत्ते ? एवं चेव। १४. एवं जाव थणियकुमाराणं। १५. पुढविकाइयाणं० पुच्छा। गोयमा ! एगे कायपणिहाणे पन्नत्ते। १६. एवं जाव वणस्सतिकाइयाणं। १७. बेइंदियाणं० पुच्छा। गोयमा ! दुविहे पणिहाणे पन्नत्ते, तं जहा-वइपणिहाणे य कायपणिहाणे य। १८. एवं जाव चउरिंदियाणं। १९. सेसाणं तिविहे वि जाव वेमाणियाणं। [सु. २०-२२. मण-वइ-कायभेएणं दुप्पणिहाण-सुप्पणिहाणाणं भेयतियं सउवीसइदंडएसु य जहाजोगं निरूवणं] २०. कतिविधे णं भंते! दुप्पणिहाणे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविहे दुप्पणिहाणे पन्नत्ते, तं जहा-मणदुप्पणिहाणे जहेव पणिहाणेणं दंडगो भणितो तहेव दुप्पणिहाणेण वि भाणियव्वो। २१. कतिविधे णं भंते ! सुप्पणिहाणे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविधे सुप्पणिहाणे पन्नत्ते, तं जहा-मणसुप्पणिहाणे वतिसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे। २२. मणुस्साणं भंते ! कतिविधे सुप्पणिहाणे पन्नते ? एवं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरति। [सु. २३. भगवओ जणवयविहरणं]२३. तए णं समणे भगवं महावीरे जाव बहिया जणवयविहारं विहरइ। [सु. २४-२५. रायगिहनगरट्ठियाणं अन्नउत्थियाणं भगवंतपरूवियअत्थि-कायविसए अन्नोन्नं जिन्नासा २४. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था। वण्णतो। गुणसिलए चेतिए। वण्णओ, जाव पुढविसिलावट्ठओ।] २५. तस्स णं गुणसिलस्स चेतियस्स अदूरसामंते बहवे अन्नउत्थिया परिवसंति, तं जहा-कालोदाई सेलोदाई एवं जहा सत्तमसते अन्नउत्थिउद्देसए (स ७ उ० १० सु० १-३) जाव से कहमेयं मन्ने एवं? [सु. २६-२८. रायगिहनगरसमागयं भगवंतं सोच्चा मद्दुयसमणोवासयस्स भगवंतवंदणनिमित्तं गमणं]२६. तत्थ णं रायगिहे नगरे मद्दुए नामं समणोवासए परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूए अभिगय० जाव विहरइ। २७. तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नदा कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव समोसढे। परिसा जाव पज्जुवासइ। २८. तए णं मद्दुए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ० जाव हिदए ण्हाए जाव सरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, सा० प० २ पायविहारचारेणं रायगिहं नगरं जाव निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता तेसिं अन्नउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीतीवयति। [सु.२९-३२. अन्नउत्थियपुच्छियअत्थिकायविसयसंकाए मद्दुयसमणोवासयकयं सहेउयं निराकरणं, मद्दुयस्स य भगवंतसमीवागमणं]२९. तए णं ते अन्नउत्थिया मद्दुयं समणोवासयं अदूरसामंतेणं वीयीवयमाणं पासंति, पा० २ अन्नमन्नं सद्दावेंति, अन्नमन्नं सद्दावेत्ता एवं वदासि-'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमा कहा अवि उप्पकडा, इमं च णं मद्दुए समणोवासए अम्हं अदूरसामंतेणं वीयीवयइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं मद्दुयं समणोवासयं एयमट्ठं पुच्छित्तए' त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, अन्नमन्नस्स० प० २ जेणेव मद्दुए समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवा० २ मद्दुयं समणोवासयं एवं वदासी-एवं खलु मद्दुया ! तव धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे णायपुत्ते पंच अत्थिकाये पन्नवेइ जहा सत्तमे सते

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्नउत्थिउद्देसए (स०७ उ० १० सु०६ १) जाव से कहमेयं मद्दुया ! एवं ? ३०. तए ण से मद्दुए समणोवासए ते अन्नउत्थिए एवं वयासि-जति कज्जं कज्जति जाणामो पासामो; अह कज्जं न कज्जति न जाणामो न पासामो। ३१. तए णं ते अन्नउत्थिया मद्दुयं समणोवासयं एवं वयासी-केस णं तुमं मद्दुया ! समणोवासगाणं भवसि जेण तुमं एयमट्ठं न जाणसि न पाससि ? ३२. तए णं से मद्दुए समणोवासए ते अन्नउत्थिए एवं वयासि- 'अत्थि णं आउसो ! वाउयाए वाति'? 'हंता, अत्थि'। 'तुब्भे णं आउसो ! वाउयायस्स वायमाणस्स रूवं पासह ?''णो तिण०'।'अत्थि णं आउसो ! घाणसहगया पोग्गला'? 'हंता, अत्थि'। 'तुब्भे णं आउसो ! घाणसहगयाणं पोग्गलाणं रूवं पासह'? णो ति०' ! 'अत्थि णं आउसो ! अरणिसहगते अगणिकाए'? 'हंता, अत्थि'। 'तुब्भे णं आउसो ! अरणिसहगयस्स अगणिकायस्स रूवं पासह'? 'णो ति०'। 'अत्थि णं आउसो ! समुद्दस्स पारगताइं रूवाइं'? 'हंता, अत्थि'। 'तुब्भे णं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासह'? 'णो ति०'। 'अत्थि णं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं'? 'हंता, अत्थि'। तुब्भे णं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं पासह'? 'णो ति०'। 'एवामेव आउसो ! अहं वा तुब्भे वा अन्नो वा छउमत्थो जइ जो जं न जाणति न पासति तं सव्वं न भवति एवं भे सुबहुलोए ण भविस्सतीति' कट्टु ते अन्नउत्थिए एवं पडिहणइ, एवं प० २ जेणेव गुणसिलए चेतिए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उ० २ समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं जाव पज्जुवासति। [सु. ३३-३६. मद्दुयकयअन्नउत्थियनिराकरणविसए भगवओ अणुमोयणाइ मद्दुयस्स य सगिहगमणं] ३३. 'मद्दुया !'ई समणे भगवं महावीरे मद्दुयं समणोवासयं एवं वयासि-सुट्ठु णं मद्दुया ! तुमं ते अन्नउत्थिए एवं वयासि, साहु णं मद्दुया ! तुमं ते अन्नउत्थिए एवं वयासि, जे णं मद्दुया ! अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा वागरणं वा अण्णातं अदिट्ठं अस्सुतं अमुयं अविण्णायं बहुजरमज्झे आघवेति पण्णवेति जाव उवदंसेति से णं अरहंताणं आसायणाए वट्टति, अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए वट्टति, केवलीणं आसायणाए वट्टति, केवलिपन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए वट्टति। तं सुट्ठु णं तुमं मद्दुया ! ते अन्नउत्थिए एवं वयासि, साहु णं तुमं मद्दुया ! जाव एवं वयासि। ३४. तए णं मद्दुए समणोवासए समणेणं भगवया महावीरेण एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ० समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वं० २ णच्चासन्ने जाव पज्जुवासति। ३५. तए णं समणे भगवं महावीरे मद्दुयस्स समणोवासगस्स तीसे य जाव परिसा पडिगया। ३६. तए णं मद्दुए समणोवासए समणस्स भगवतो जाव निसम्म हट्ठतुट्ठ० पसिणाइं पुच्छति, प० पु० २ अट्ठाइं परियाइयति, अ० प० २ उट्ठाए उट्ठेति, उ०२ समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसइ जाव पडिगए। [सु. ३७. गोयमपण्हुत्तरे भगवया परूवियं मद्दुयस्स कमेणं सिद्धिगमणं] ३७. 'भंते !' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वं० २ एवं वयासि-पभू णं भंते ! मद्दुए समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं जाव पव्वइत्तए ? णो तिणट्ठे समट्ठे। एवं जहेव संखे (स० १२ उ०१ सु. ३१) तहेव अरूणाभे जाव अंतं काहिति। [सु. ३८-४०. महिड्डियदेवे सहस्ससरीरविउव्वणसामत्थनिरूवणाइ] ३८. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महेसक्खे रूवसहस्सं विउव्वित्ता पभू अन्नमन्नेणं सद्धिं संगामं संगामित्तए ? हंता, पभू। ३९. ताओ णं भंते ! बोंदीओ किं एगजीवफुडाओ, अणेगजीवफुडाओ ? गोयमा ! एगजीवफुडाओ, णो अणेगजीवफुडाओ। ४०. ते णं भंते ! तसिं बोदीणं अंतरा किं एगजीवफुडा, अणेगजीवफुडा ? गोयमा ! एगजीवफुडा, नो अणेगजीवफुडा। [सु. ४१. छिन्नसरीरभागंतरजीवपदेसेसु सत्थकंमासंभवनिरूवणं] ४१. पुरिसे णं भंते ! अंतरे हत्थेण वा एवं जहा अट्ठमसए ततिए उद्दसए (स० ८ ० ३ सु० ६ २) जाव नो खलु तत्थ सत्थं कमति। [सु. ४२-४४. देवासुरसंगामे पहरणविउव्वणानिरूवणाइ]४२. अत्थि णं भंते ! देयासुरा संगामा, देवासुरा संगामा ? हंता, अत्थि। ४३. देवासुरेसु णं भंते ! संगामेसु वट्टमाणेसु किं णं तेसिं देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमति ? गोयमा ! जं णं ते देवा तणं वा कट्ठं वा पत्तं वा सक्करं वा परामुसंति तं णं तेसिं देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमति। ४४. जहेव देवाणं तहेव असुरकुमाराणं ? णो इणट्ठे समट्ठे। असुरकुमाराणं देवाणं निच्च विउव्विया पहरणरयणा पन्नत्ता। [सु. ४५-४७. देवेसु लवणसमुद्दाइअणुपरियट्टणसामत्थनिरूवणाइ] ४५. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महेसक्खे पभू लवणसमुद्दं अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छित्तए? हंता, पभू। ४६. देवे णं भंते ! महिड्ढीए एवं धातइसंडं दीवं जाव हंता, पभू। ४७. एवं जाव रूयगवरं दीवं जाव हंता, पभू। तेण परं वीतीवएज्जा नो चेव णं अणुपरियट्टेज्जा। [सु. ४८-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५०. देवेसु कालावेक्खाए अणंतकम्मंसखवणानिरूवणं] ४८. अत्थि णं भंते ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहन्नेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति ? हंता, अत्थि। ४९. अत्थि णं भंते ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहन्नेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयति ? हंता, अत्थि। ५०. अत्थि णं भंते ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहन्नेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ? हंता, अत्थि। [सु. ५१. कालावेक्खाए अणंतकम्मंसखवगदेवभेयनिरूवणं] ५१. कयरे णं भंते ! ते देवा अणंते कम्मंसे जहन्नेणं एक्केण वा जाव पंचहिं वससतेहिं खवयंति ? कयरे णं भंते ! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ? कयरे णं भंते ! ते देवा जाव पंचहिं वाससतसहस्सहिं खवयंति ? गोयमा ! वाणमंतरा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससएणं खवयंति, असुरिंदवज्जिया भवणवासी देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससएहिं खवयंति, असुरकुमारा(?रिंदा) देवा अणंते कम्मंसे तीहिं वाससएहिं खवयंति, गह-नक्खत्त-तारारूवा जोतिसिया देवा अणंते कम्मंसे चतुवास जाव खवयंति, चंदिम-सूरिया जोतिसिंदा जोतिसरायाणो अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससएहिं खवयंति। सोहम्मीसाणगा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससहस्सेणं जाव खवयंति, सणंकुमार-माहिंदगा देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससहस्सेहिं खवयंति, एवं एएणं अभिलावेणं बंभलोग-लंतगा देवा अणंते कम्मंसे तीहिं वाससहस्सेहिं खवयंति, महासुक्क-सहस्सारगा देवा अणंते० चउहिं वाससह०, आणय-पाणय-आरण-अच्चुयगा देवा अणंते० पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति। हेट्ठिमगेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससयसहस्सेणं खवयंति, मज्झिमगेवेज्जगा देवा अणंते० दोहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति, उवरिमगेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे तिहिं वाससयसह० जाव खवयंति, विजयवेजयंत-जयंत-अपराजियगा देवा अणंते० चउहिं वास० जाव खवयंति, सव्वट्ठसिद्धगा देवा अणंते कम्मसे पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति। एए णं गोयमा ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहन्नेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति। एए णं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति। एए णं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ॥१८.७॥ ☆☆☆ **अट्ठमो उद्देसओ 'अणगारे'** ☆☆☆ [सु. १. अट्ठमुद्देसयस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासी- [सु. २. पायस्स अहे समागयकुक्कुडपोयाइ पडुच्च रीयमाणम्मि अणगारम्मि इरियावहियाकिरियानिरूवणं] २. (१) अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो पुरओ दुहओ जुगमायाए पेहाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स अहे कुक्कुडपोते वा वट्टापोते वा कुलिंगच्छाए वा परियावज्जेज्जा, तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! अणगारस्स णं भावियप्पणो जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जति, नो संपराइया किरिया कज्जति। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहा सत्तमसए सत्तुद्देसए(स० ७ उ०७ सु० १ २) जाव अट्ठो निक्खित्तो। सेवं भंते !० जाव विहरति। [सु. ३-६. जणवयविहरणकमेण भगवओ रायगिहनगरसमागमणं]३. तए णं समणे भगवं महावीरे बहिया जाव विहरइ। ४. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव पुढविसिलावट्टए। ५. तस्स णं गुणसिलस्स चेतियस्स अदूरसामंते बहवे अन्नउत्थिया परिवसंति। ६. तए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव परिसा पडिगता। [सु. ७-१५. गमणनिस्सियजीवपरितावणाइविसए अन्नउत्थियभणियस्स गोयमकओ निरासो, भगवंतकयं च गोयमस्स अणुमोयणं] ७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवतो महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं अणगारे जाव उड्ढंजाणू जाव विहरइ। ८. तए णं ते अन्नउत्थिया जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति, उवा०२ भगवं गोयमं एवं वयासि- तुब्भे णं अज्जो ! तिविहं तिविहेणं अस्संजय जाव एगंतबाला यावि भवह। ९. तए णं भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं वयासि-केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं अस्संजय जाव एगंतबाला यावि भवामो ? १०. तए णं ते अन्नउत्थिया भगवं गोयमं एवं वदासि-तुब्भे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेह अभिहणह जाव उवद्दवेह। तए णं तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा जाव उवद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह। ११. तए णं भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं वदासि-नो खलु अज्जो ! अम्हे रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेमो जाव उवद्दवेमो, अम्हे णं अज्जो रीयं रीयमाणा कायं च जोयं च रीयं च पडुच्च

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिस्स दिस्स पदिस्स पदिस्स वयामो। तए णं अम्हे दिस्स दिस्स वयमाणा पदिस्स पदिस्स वयमाणा णो पाणे पेच्चेमो जाव णो उवद्दवेमो। तए णं अम्हे पाणे अपेच्चेमाणा जाव अणोद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतपंडिया यावि भवामो। तुब्भे णं अज्जो! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह। १२. तए णं ते अन्नउत्थिया भगवं गोयमं एवं वदासि-केणं कारणेणं अज्जो! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव भवामो? १३. तए णं भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं वयासि-तुब्भे णं अज्जो! रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेह जाव उवद्दवेह। तए णं तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा जाव उवद्दवेमाणा तिविहं जाव एगंतबाला यावि भवह। १४.तए णं भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं पडिहणइ, प० २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उ०२ समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वं० २ णच्चसन्ने जाव पज्जुवासति। १५. 'गोयमा!' ई समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासि-सुट्ठु णं तुमं गोयमा! ते अन्नउत्थिए एवं वयासि, साहु णं तुमं गोयमा! ते अन्नउत्थिए एवं वदासि, अत्थि णं गोयमा! ममं बहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्था जे णं नो पभू एयं वागरणं वागरेत्तए जहा णं तुमं, तं सुट्ठु णं तुमं गोयमा! ते अन्नउत्थिए एवं वयासि, साहु णं तुमं गोयमा! ते अन्नउत्थिए एवं वदासि। [सु. १६-१९. परमाणु-दुपएसियाइखंधजाणण-पासणं पडुच्च छउमत्थमणुस्सम्मि निरूवणं] १६. तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवता महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ० समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वं० २ एवं वदासि-छउमत्थे णं भंते! मणुस्से परमाणुपोग्गलं किं जाणइ पासइ, उदाहु न जाणइ न पासइ? गोयमा! अत्थेगतिए जाणति, न पासति; अत्थेगतिए न जाणति, न पासति। १७. छउमत्थे णं भंते! मणूसे दुपएसियं खंधं किं जाणति पासइ? एवं चेव। १८. एवं जाव असंखेज्जपएसियं। १९. छउमत्थे णं भंते! मणूसे अणंतपएसियं खंधं किं० पुच्छा। गोयमा! अत्थेगतिए जाणति पासति; अत्थेगतिए जाणति, न पासति; अत्थेगतिए न जाणति, पासति; अत्थेगतिए न जाणति न पासति। [सु. २०-२३. परमाणु-दुपएसियाइखंधाणं जाणण-पासणं पडुच्च आहोहियपरमाहोहिय-केवलीसु निरूवणं] २०. आहोहिए णं भंते! मणुस्से परमाणुपोग्गलं०? जहा छउमत्थे एवं आहोहिए वि जाव अणंतपएसियं। २१. (१) परमाहोहिए णं भंते! मणूसे परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणइ तं समयं पासति, जं समयं पासति तं समयं जाणति? णो तिणट्ठे समट्ठे। (२) से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-परमाहोहिए णं मणूसे परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणति नो तं समयं पासति, जं समयं पासति नो तं समयं जाणइ? गोयमा! सागारे से नाणे भवति, अणागारे से दंसणे भवति, से तेणट्ठेणं जाव नो तं समयं जाणइ। २२. एवं जाव अणंतपएसियं। २३. केवली णं भंते! मणूसे परमाणुपोग्गलं०? जहा परमाहोहिए तहा केवली वि जाव अणंतपएसियं। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०।॥१८.८॥ **☆☆☆नवमो उद्देसओ 'भविए'☆☆☆** [सु. १. नवमुद्देसयस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासि- [सु. २-९. भवियदव्वनेरइयाइ पडुच्च चउवीसइदंडएसु निरूवणं] २. (१) अत्थि णं भंते! भवियदव्वनेरइया, भवियदव्वनेरइया? हंता, अत्थि। (२) से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-भवियदव्वनेरइया, भवियदव्वनेरइया? गोयमा! जे भविए पंचेंदियतिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा नेरइएसु उववज्जित्तए, से तेणट्ठेणं०। ३. एवं जाव थणियकुमाराणं। ४. (१) अत्थि णं भंते! भवियदव्वपुढविकाइया, भवियदव्वपुढविकाइया? हंता, अत्थि। (२) से केणेट्ठेणं०? गोयमा! जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से बा देवे वा पुविकाइएसु उववज्जित्तए, से तेणट्ठेणं०। ५. आउकाइय-वणस्सतिकाइयाणं एवं चेव। ६. तेउ-वाउ-बेंदिय-तेदिय-चउरिंदियाण य जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा। ७. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं जे भविए नेरइए वा तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पंचेंदियतिरिक्खजोणिए वा। ८. एवं मणुस्साण वि। ९. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियाणं जहा नेरइया। [सु. १०-२०. भवियदव्वनेरइयाइठिइं पडुच्च चउवीसइदंडएसु निरूवणं] १०. भवियदव्वनेरइयस्स णं भंते! केवतियं कालं ठिती पन्नता? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी। ११. भवियदव्वअसुरकुमारस्स णं भंते! केवतियं कालं ठिती पन्नता? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं। १२. एवं जाव थणियकुमारस्स। १३. भवियदव्वपुढविकाइयस्स णं० पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं। १४. एवं आउकाइयस्स वि। १५. तेउ-वाउ जहा नेरइयस्स। १६. वणस्सइकाइयस्स जहा पुढविकाइयस्स। १७. बेइंदिय-तेइंदिय-चतुरिंदियस्स जहा नेरइयस्स। १८. पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स जहन्नेणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। १९. एवं मणुस्सस्स वि। २०. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियस्स जहा असुरकुमारस्स। **सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०।** ॥१८.९॥ **☆☆☆दसमो उद्देसओ'सोमिल'☆☆☆** [सु. १. दसमुद्देसयस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वदासि-[सु. २-३. असिधारा-खुरधाराइओगाहणाईसु अणगारस्स छेदणभेदणाइनिसेहनिरूवणं] २. (१) अणगारे णं भंते! भावियप्पा असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा? हंता, ओगाहेज्जा। (२) से णं तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा? णो इणट्ठे समट्ठे। णो खलु तत्थ सत्थं कमति। ३. एवं जहा पंचमसते (स०५ उ०७ सु० ६-८) परमाणुपोग्गलवत्तव्वता जाव अणगारे णं भंते! भावियप्पा उदावत्तं वा जाव नो खलु तत्थ सत्थं कमति। [सु.४-७. परमाणु-दुपदेसियाइखंध-वाउकाएसु पराप्परं फासअफासनिरूवणं] ४. परमाणुपोग्गले णं भंते! वाउयाएणं फुडे, वाउयाए वा परमाणुपोग्गलेणं फुडे? गोयमा! परमाणुपोग्गले वाउयाएणं फुडे, नो वाउयाए परमाणुपोग्लेणं फुडे। ५. दुपएसिए णं भंते! खंधे वाउयाएणं०? एवं चेव। ६. एवं जाव असंखेज्जपएसिए। ७. अणंतपएसिए णं भंते! खंधे वाउ० पुच्छा। गोयमा! अणंत पएसिए खंधे वाउयाएणं फुडे, वाउयाए अणंतपएसिएणं खधेणं सिय फुडे, सिय नो फुडे। [सु. ८. बत्थि-वाउकाएसु परोप्परं फास-अफासनिरूवणं] ८. बत्थी भंते! वाउयाएणं फुडे, वाउयाए बत्थिणा फुडे? गोयमा! बत्थी वाउयाएणं फुडे, नो वाउयाए बत्थिणा फुडे। [सु. ९-१२. सत्तनरयपुढवि-सोहम्मकप्पाइ-ईसिपबभाराणं अहे वट्टमाणेसु दव्वेसु वण्णादिनिरूवणं] ९. अत्थि णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे दव्वाइं वण्णओ काल-नील-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलाइं, गंधओ सुब्भिगंध-दुब्भिगंधाइं, रसओ तित्त-कडु-कसाय-अंबिल-महुराइं, फासतो कक्खड-मउय-गरुय-लहुय-सीय-उसुण-निद्ध-लुक्खाइं अन्नमन्नबद्धाइं अन्नमन्नपुट्ठाइं जाव अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठंति? हंता, अत्थि। १०. एवं जाव अहेसत्तमाए। ११. अत्थि णं भंते! सोहम्मस्स कप्पस्स अहे०? एवं चेव। १२. एवं जाव ईसिपब्भाराए पुडवीए। सेवं भंते! सेवं भंते! जाव विहरइ। [सु. १३-१७. वाणियगामे सोमिलमाहणपुच्छाए भगवंतकयं अप्पणो जत्ता-जवणिज्ज-अव्वाबाह-फासुयविहारनिरूवणं] १३. तए णं समणे भगवं महावीरे जाव बहिया जणवयविहारं विहरइ। १४. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे नामं नगरे होत्था। वण्णओ। दूतिपलासए चेतिए। वण्णओ। १५. तत्थ णं वारियग्गामे नगरे सोमिले नामं माहणे परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूए रिव्वेद जाव सुपरिनिट्ठिए पंचण्हं खंडियसयाणं सायस्स य कुडुंबस्स आहेवच्चं जाव विहरइ। १६. तए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे। जाव परिसा पज्जुवासइ। १७. तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था-'एवं खलु समणे णायपुत्ते पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं जाव इहमागए जाव दूतिपलासए चेतिए अहापडिरूवं जाव विहरति। तं गच्छामि णं समणस्स नायपुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामि, इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं पुच्छिस्सामि, तं जइ मे से इमाइं एयारूवाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं वागरेहिति तो णं वंदीहामि नमंसीहामि जाव पज्जुवासीहामि। अह मे से इमाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं नो वागरेहिति तो णं एतेहिं चेव अट्ठेहि य जाव वागरणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करिस्सेमि' त्ति कट्ठ एवं संपेहेइ, ए० सं० २ ण्हाए जाव सरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडि०२ पादविहारचारेणं एगेणं खंडियसएणं सद्धिं संपरिवुडे वाणियग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, नि०२ जेणेव दूतिपलासए चेतिए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवा०२ समणस्स भगवतो महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वदासि-जत्ता ते भंते! जणिज्जं अव्वाबाहं फासुयविहारं? सोमिला! जत्ता वि मे, जवणिज्जं पि मे, अव्वाबाहं पि मे, फासुयविहारं पि मे। [सु. १८-२३. सोमिलपण्हुत्तरे भगवंतपरूवियं जत्ता-जवणिज्ज-अव्वाबाहफासुयविहारसरूवं]१८. किं ते भंते! जत्ता? सोमिला! जं मे तव-नियम-संजम-सज्झाय-झाणावस्सगमादीएसु जोएसु जयणा से त्तं जत्ता। १९. किं ते भंते! जवणिज्जं? सोमिला! जवणिज्जे दुविहे पन्नते, तं जहा-इंदियजवणिज्जे य नोइंदियजवणिज्जे य। २०. से किं तं इंदियजवणिज्जे? इंदियजवणिज्जे-जं मे सोतिंदियचक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं निरूवहयाइं वसे वट्टंति, से त्तं इंदियजवणिज्जे। २१. से किं तं नोइंदियजवणिज्जे? नोइंदियजवणिज्जे-जं मे कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिन्ना, नो उदरेंति, से त्तं नोइंदियजवणिज्जे। से त्तं जवणिज्जे। २२. किं ते भंते! अव्वाबाहं? सोमिला! जं मे वातिय-पित्तिय-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेंभिय-सन्निवातिया विविहा रागायंका सरीरगया दोसा उवसंता, नो उदीरेंति, से त्तं अव्वाबाहं। २३. किं ते भंते ! फासुयविहारं ? सोमिला ! जं णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सभासु पवासु इत्थी-पसु-पंडगविवज्जियासु वसहीसु फासुएसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, से त्तं फासुयविहारं। [सु. २४-२६. सोमिलपण्हुत्तरे भगवंतपरूवियं सरिसव-मास-कुलत्थाभक्खेय-अभक्खेयनिरूवणं] २४. (१) सरिसवा ते भंते ! भक्खेया, अभक्खेया ? सोमिला ! सरिसवा मे भक्खेया वि, अभक्खेया वि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सरिसवा भक्खेया वि, अभक्खेया वि ? से नूणं सोमिला ! बंभण्णएसु नएसु दुविहा सरिसवा पण्णत्ता, तं जहा-मित्तसरिसवा य धन्नसरिसवा य। तत्थ णं जे ते मित्तसरिसवा ते तिविहा पन्नता, तं जहा-सहजायए सहवड्ढियए सहपंसुकीलियए; ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। त्तथ णं जे ते धन्नसरिसवा ते दुविहा पन्नता, तं जहा- सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य। तत्थ णं जे ते असत्थपरिणया ते णं समणाणं निग्थाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य तत्थ णं जे ते अणेसणिज्जा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-जाइता य अजाइया य। तत्थ णं जे ते अजाइता ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते जायिया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-लद्धा य अलद्धा य। तत्थ णं जे ते अलद्धा ते णं समयाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते लद्धा ते णं समयाणं निग्गंथाणं भक्खेया। से तेणट्ठेणं सोमिला ! एवं वुच्चइ जाव अभक्खेया वि। २५. (१) मासा ते भंते ! किं भक्खेया, अभक्खेया ? सोमिला ! मासा मे भक्खेया वि, अभक्खेया वि। (२) से केणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि ? से नूणं सोमिला ! बंभण्णएसु नएसु दुविहा मासा पन्नत्ता, तं जहा-दव्वमासा य कालमासा य। तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं सावणादीया आसाढपज्जवसाणा दुवालस, तं जहा- सावणे भद्दवए आसोए कत्तिए मग्गसिरे पोसे माहे फग्गुणे चेत्ते वइसाहे जेट्ठामूले आसाढे, ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते दव्वमासा ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा- अत्थमासा य धण्णमासा य। तत्थ णं जे ते अत्थमासा ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-सुवण्णमासा य रूप्पमासा य; ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते धन्नमासा ते दुविहा पन्नता, तं जहा-सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य। एवं जहा धन्नसरिसवा जाव से तेणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि। २६. (१) कुलत्था ते भंते ! किं भक्खेया, अभक्खेया ? सोमिला ! कुलत्था मे भक्खेया वि, अभक्खेया वि। (२) से केणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि ? से नूणं सोमिला ! बंभण्णएसु नएसु दुविहा कुलत्था पन्नत्ता, तं जहा- इत्थिकुलत्था य धन्नकुलत्था य। तत्थ णं जे ते इत्थिकुलत्था ते तिविहा पन्नता, तं जहा-कुलवधू ति वा कुलमाउया ति वा कुलधूया ति वा; ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते धन्नकुलत्था एवं जहा धन्नसरिसवा जाव से तेणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि। [सु. २७. सोमिलपण्हुत्तरे भगवंतपरूवणाए अप्पाणमुद्दिस्स एग-दुय-अक्खय-अव्वय-अवट्ठिय-अणेगभूयभावभवितत्तनिरूवणं]२७. (१) एगे भवं, दुवे भवं, अक्खए भवं, अव्वए भवं, अवट्ठिए भवं, अणेगभूयभावभविए भवं ? सोमिला ! एगे वि अहं जाव अणेगभूयभावभविए वि अहं। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव भविए वि अहं ? सोमिला ! दव्वट्ठयाए एगे अहं, नाण-दंसणट्ठयाए दुविहे अहं, पएसट्ठयाए अक्खए वि अहं, अव्वए वि अहं, अवट्ठिए वि अहं; उवयोगट्ठयाए अणेगभूयभावभविए वि अहं। से तेणट्ठेणं जाव भविए वि अहं। [सु. २८. सोमिलस्स सावगधम्मपडिवत्ती] २८. एत्थ णं से सोमिले माहणे संबुद्धे समणं भगवं महावीरं जहा खंदओ (स०२ उ०१ सु०३२-३४) जाव से जहेयं तुब्भे वदह जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतियं बहवे राईसर एवं जहा रायप्पसेणइज्जे चित्तो जाव दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ, प० २ समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वं०२ जाव पडिगए। तए णं से सोमिले माहणे समणोवासए जाए अभिगय० जाव विहरइ। [सु. २९. गोयमपण्हुत्तरे भगवंतपरूवणाए सोमिलस्स कमेणं सिद्धिगमणनिरूवणं] २९. 'भंते !' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वं०२ एवं वदासि-पभू णं भंते ! सोमिले माहणे देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता जहेव संखे [(स० १२ उ०१ सु०३१) तहेव निरवसेसं जाव अंतं काहिति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति। ॥१८.१०॥卐卐卐॥ **अट्ठारसमं सयं समत्तं ॥१८॥**

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगूणवीसइमं सयं 卐卐卐 [सु. १. एगूणवीसइमसयस्स उद्देसनामाइं]१. लेस्सा य १ गब्भ २ पुढवी ३ महासवा ४ चरम ५ दीव ६ भवणा ७ य। निव्वत्ति ८ करण ९ वणचरसुरा १० य एगूणवीसइमे ॥१॥ **☆☆☆पढमो उद्देसओ 'लेस्सा'☆☆☆**[सु. २. पढमुद्देसयस्सुवुग्घाओ] २. रायगिहे जाव एवं वदासि- सु. ३. लेस्सावत्तव्वयाजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो ३. कति णं भंते ! लेस्साओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! छल्लेस्साओ पन्नत्ताओ, तं जहा, एवं पन्नवणाए चउत्थो लेसुद्देसओ भाणियव्वो निरवसेसो। सेवं भंते ! सेवं भंते !०।॥१९.१॥ **☆☆☆बीओ उद्देसओ 'गब्भ'☆☆☆**[सु. १. लेस्सं पडुच्च गब्भप्पत्तिजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] १. कति णं भंते ! लेस्साओ पन्नत्ताओ ? एवं जहा पन्नवणाए गब्भुद्देसो सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१९.२॥ **☆☆☆ तइओ उद्देसओ 'पुढवी'☆☆☆** [सु. १. तइउद्देसयस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासि- [सु. २-१७. सिय-लेस्सा-दिट्ठि-नाण-जोग-उवओग-आहार-पाणातिवाय-उप्पाय-ठिइ-समुग्घाय-उव्वट्टणादाराणं पुढविकाइएसु निरूवणं]२. सिय भंते! जाव चत्तारि पंच पुढविकाइया एगयओ साधारणसरीरं बंधंति, एग० बं० २ ततो पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति? नो तिणट्ठे समट्ठे, पुढविकाइया णं पत्तेयाहारा, पत्तेयपरिणामा, पत्तेयं सरीरं बंधंति प० बं०२ ततो पच्छा आहारेंति वा, परिणामेंति वा, सरीरं वा बंधंति। ३. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति लेस्साओ पन्नत्ताओ गोयमा! चत्तारि लेस्साओ पन्नत्ताओ? तं जहा-कण्ह० नील० काउ० तेउ०। ४. ते णं भंते ! जीवा किं सम्मद्दिट्ठी, मिच्छाद्दिट्ठी, सम्मामिच्छाद्दिट्ठी? गोयमा ! नो सम्मद्दिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। ५. ते णं भंते ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? गोयमा ! नो नाणी; अन्नाणी, नियमा दुअन्नाणी, तं जहा-मतिअन्नाणी य सुयअन्नाणी य। ६. ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी ? गोयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी। ७. ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता, अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि। ८. ते णं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणंतपएसियाइं दव्वाइं एवं जहा पन्नवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति। ९. ते णं भंते ! जीवा जमाहारेंति तं चिज्जति, जं नो आहारेंति तं नो चिज्जइ, चिण्णे वा से उद्दाति पलिसप्पति वा ? हंता, गोयमा ! ते णं जीवा जमाहारेंति तं चिज्जति, जं नो जाव पलिसप्पति वा। १०. तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सन्ना ति वा पन्ना ति वा मणो ति वा वई ति वा 'अम्हे णं आहारमाहारेमो'? णो तिणट्ठे समट्ठे, आहारेंति पुण ते। ११. तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सन्ना ति वा जाव वयी ति वा अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो? नो तिणट्ठे समट्ठे, पडिसंवेदेंति पुण ते। १२. ते णं भंते ! जीवा किं पाणातिवाए उवक्खाइज्जंति, मुसावाए अदिण्णा० जाव मिच्छादंसणसल्ले उवक्खाइज्जंति ? गोयमा ! पाणातिवाए वि उवक्खाइज्जंति जाव मिच्छादंसणसल्ले वि उवक्खाइज्जंति, जेसिं पि णं जीवाणं ते जीवा 'एवमाहिज्जंति' तेसिं पि णं जीवाणं नो विण्णाए नाणत्ते। १३. ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? एवं जहा वक्कंतीए पुढविकाइयाणं उववातो तहा भाणितव्वो। १४. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं। १५. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति समुग्घाया पन्नत्ता ? गोयमा ! तओ समुग्घाया पन्नत्ता, तं जहा-वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए। १६. ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति, असमोहया मरंति ? गोयमा ! समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति। १७. ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ? एवं उव्वट्टणा जहा वक्कंतीए। [सु. १८-२१. सिय-लेस्साआईणं दुवालसण्हं दाराणं आउ-तेउ-वाउ-वणस्सइकाएसु निरूवणं]१८. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच आउक्काइया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति, एग० बं० २ ततो पच्छा आहारेंति ? एवं जो पुढविकाइयाणं गमो सो चेव भाणियव्वो जाव उव्वट्टंति, नवरं ठिती सत्तवाससहस्साइं उक्कोसेणं, सेसं तं चेव। १९. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच तेउक्काइया०? एवं चेव, नवरं उववाओ ठिती उव्वट्टणा य जहा पन्नवणाए, सेसं तं चेव। २० वाउकाइयाणं एवं चेव, नाणत्तं-नवरं चत्तारि समुग्घाया। २१. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच वणस्सतिकाइया० पुच्छा। गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे। अणंता वणस्सतिकाइया

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगयओ साधारणसरीरं बंधंति, एग० बं० २ ततो पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा, आ० प० २ सेसं जहा तेउक्काइयाणं जाव उव्वट्टंति । नवरं आहारो नियमं छद्दिसिं; ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव । [सु. २२. एगिंदिएसु ओगाहणं पडुच्च अप्पाबहुयं] २२. एएसि णं भंते! पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउका० वाउका० वणस्सतिकाइयाणं सुहुमाणं बादराणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणं जाव जहन्नुक्कोसियाए ओगाहणाए कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमनिओयस्स अपज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा १ । सुहुमयाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असंखेज्जगुणा २ । सुहुमतेउकाइयस्स अपज्जत्तस्स जहन्निया ओगाहणा असंखेज्जगुणां ३ । सुहुमआउकाइयस्स अपज्जत्तस्स जहन्निया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४ । सुहुमपुढविका० अपज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ५ । बादरवाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ६ । बादरतेउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असखेज्जगुणा ७ । बादरआउ० अपज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ८ । बादरपुढविइयस्स अपज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयस्स बादरनिओयस्स य, एएसि णं अपज्जत्तगाणं जहन्निया ओगाहणा दोण्ह वि तुल्ला असंखेज्जगुणा १०-११ । सुहुमनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १२ । तस्सेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १३ । तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १४ । सुहुमवाउकाइयस्स पज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १५ । तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १६ । तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया० विसेसाहिया १७ । एवं सुहुमतेउकाइयस्स वि १८-१९-२० । एवं सुहुमआउकाइयस्स वि २१-२२-२३ । एवं सुहुमपुढविकाइयस्स वि २४-२५-२६ । एवं बादरवाउकाइयस्स वि २७-२८-२९ । एवं बायरतेउकाइयस्स वि ३०-३१-३२ । एवं बादरआउकाइंस्स वि ३३-३४-३५ । एवं बादरपुढविकाइयस्स वि ३६-३७-३८ । सव्वेसिं तिविहेणं गमेणं भाणितव्वं । बादरनिगोदस्स पज्जत्तगस्स जहन्निया आगाहणा असंखेज्जगुणा ३९ । तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४० । तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४१ । पत्तेयसरीरबादरवणस्सतिकाइयस्स पज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४२ । तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४३ । तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४४ । [सु. २३. एगंदिएसु सुहुम-सुहुमतरत्तनिरूवणं] २३. एयस्स णं भंते ! पुडविकाइयस्स आउकाइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स वणस्सतिकाइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे?, कयरे काये सव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! वणस्सतिकाए सव्वसुहुमे, वणस्सतिकाए सव्वसुहुमतराए । [सु. २४. पुढवि-आउ-तेउ-वाउकाइएसु सव्वसुहुम-सव्वसुहुमतरत्तनिरूवणं]२४. एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउकाइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ?, कयरे काये सव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! वाउकाये सव्वसुहुमे, वाउकाये सव्वसुहुमतराए । [सु. २५. पुढवि-आउ-तेउकाइएसु सव्वसुहुम-सव्वसुहुमतरत्तनिरूवणं] २५. एतस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउकाइयस्स तेउकाइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ?, कयरे काये सव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! तेउकाये सव्वसुहुमे, तेउकाये सव्वसुहुमतराए ॥[सु. २६. पुढवि-आउकाइएसु सव्वसुहुम-सव्वसुहुमतरत्तनिरूवणं] २६. एतस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे?, कयरे काये सव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! आउकाये सव्वसुहुमे, आउकाए सव्वसुहुमतराए । [सु. २७. एगिंदिएसु सव्वबादर-सव्वबादरतरत्तनिरूवणं] २७. एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउ० तेउ० वाउ० वणस्सतिकाइयस्स य कयरे काये सव्वबादरे? कयरे काये सव्वबादरतराए ? गोयमा ! वणस्सतिकाये सव्वबादरे, वणस्सतिकाये सव्वबादरतराए । [सु. २८. पुढवि-आउ-तेउ-वाउकाइएसु सव्वबादर-सव्वबादरतरत्तनिरूवणं] २८. एयस्स णं भंते ! पुढविकायस्स आउक्का० तेउक्का० वाउकायस्स य कयरे काये सव्वबायरे ?, कयरे काये सव्वबादरतराए ? गोयमा ! पुढविकाए सव्वबादरे, पुढविकाए सव्वबादरतराए । [सु. २९. आउ-तेउ-वाउकाइएसु सव्वबादर-सव्वबादरतरत्तनिरूवणं] २९. एयस्स णं भंते ! आउकायस्स तेउकायस्स वाउकायस्स य कयरे काये सव्वबायरे ?, कयरे काये सव्वबादरतराए ? गोयमा ! आउकाये सव्वबायरे, आउकाए सव्वबादरतराए । [सु. ३०. तेउ-वाउकाएसु सव्वबादर-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वबादरतरत्तनिरूवणं]३०. एयस्स णं भंते ! तेउकायस्स वाउकास्स य कयरे काये सव्वबादरे ?, कयरे काये सव्वबादरतराए ? गोयमा ! तेउकाए सव्वबादरे, तेउकाए सव्वबादरतराए। [सु. ३१. पुढविसरीरोगाहणानिरूवणं] ३१. केमहालए णं भंते ! पुढविसरीरे पन्नत्ते ? गोयमा ! अणंताणं सुहुमवणस्सतिकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमवाउसरीरे। असंखेज्जाणं सुहुमवाउसरीराणं जावतिया सरीरा से एगे सुहुमतेउसरीरे। असंखेज्जाणं सुहुमतेउकाइयसरीराणं जावतिया सरीरा से एगे सुहुमे आउसरीरे। असंखेज्जाणं सुहुमआउकाइयसरीराणं जावतिया सरीरा से एगे सुहुमे पुढविसरीरे। असंखेज्जाणं सुहुहमपुढविकाइयाणं जावतिया सरीरा से एगे बायरवाउसरीरे। असंखेज्जाणं बादरवाउकाइयाणं जावतिया सरीरा से एगे बादरतेउसरीरे। असंखेज्जाणं बादरतेउकाइयाणं जावतिया सरीरा से एगे बायरआउसरीरे। असंखेज्जाणं बादरआउकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे बादरपुढविसरीरे, एमहालए णं गोयमा ! पुढविसरीरे पन्नत्ते। [सु. ३२. पुढविकायसरीरोगाहणानिरूवणं] ३२. पुढविकायस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहाननामए रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स वण्णगपेसिया सिया तरूणी बलवं जुगवं जुवाणी अप्पातंका, वण्णओ, जाव निउणसिप्पोवगया, नवरं 'चम्मेट्ठदुहणमुट्ठियसमाहयणिचितगत्तकाया' न भण्णति, सेसं तं चेव जाव निउणसिप्पोवगया, तिक्खाए वइरामईए सण्हकरणीए तिक्खेणं वइरामएणं वट्टावरएणं एगं महं पुढविकायं जउगोलासमाणं गहाय पडिसाहरिय पडिसाहरिय पडिसंखिविय पडिसंखिविय जाव 'इणामेव' त्ति कट्टु तिसत्तखुत्तो ओपीसेज्जा। तत्थ णं गोयमा ! अत्थेगइया पुढविकाइया आलिद्धा, अत्थेगइया नो आलिद्धा, अत्तेगइया संघट्टिया, अत्थेगइया नो संघट्टिया,अत्थेगइया परियाविया, अत्थेगइया नो परियाविया, अत्थेगइया उद्दविया, अत्थेगइया नो उद्दविया, अत्थेगइया पिट्ठा, अत्थेगइया नो पिट्ठा; पुढविकाइयस्स णं गोयमा ! एमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता। [सु. ३३-३७. एगिंदिएसु वेदणाणुभवनिरूवणं] ३३. पुढविकाइए णं भंते ! अक्कंते समाणे केरिसियं वेयणं पच्चणुभवमाणे विहरति ? 'गोयमा ! से जहानामए केयि पुरिसे तरूणे बलवं जाव निउणसिप्पोवगए एगं पुरिसं जुण्णं जराजज्जरियदेहं जाव दुब्बलं किलंतं जमलपाणिणा मुद्धाणंसि अभिहणिज्जा, से णं गोयमा! पुरिसे तेणं पुरिसेणं जमलपाणिणा मुद्धाणंसि अभिहए समाणे केरिसियं वेयणं पच्चणुभवमाणे विहरइ ?' 'अणिट्ठं समणाउसो !' तस्स णं गोयमा ! पुरिसस्स वेदणाहिंतो पुढविकाए अक्कंते समाणे एत्तो अणिट्ठतरियं चेव अकंततरियं जाव अमणामतरियं चेव वेयणं पच्चणुभवमाणे विहरइ। ३४. आउयाए णं भंते ! संघट्टिए समाणे केरसियं वेयणं पच्चणुभवमाणे विहरइ ? गोयमा ! जहा पुढविकाए एवं चेव। ३५. एवं तेउयाए वि। ३६. एवं वाउकाए वि। ३७. एवं वणस्सतिकाए वि जाव विहरइ। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।॥१९.३॥ **☆☆☆ चउत्थो उद्देसओ 'महासवा' ☆☆☆** [सु. १-१६. नेरइएसु महासवाइपयाइं पडुच्च निरूवणं] १. सिय भंते ! नेरइया महस्सवा, महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे १। २. सिय भंते ! नेरइया महस्सवा महाकिरिया महावेदणा अप्पनिज्जरा ? हंता, सिया २। ३. सिय भंते ! नेरइया महस्सवा महाकिरिया अप्पेवयणा महानिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ३। ४. सिय भंते ! नेरइया महस्सवा महाकिरिया अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ४। ५. सिय भंते ! नेरइया महस्सवा अप्पकिरिया महावेदणा महानिज्जरा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ५। ६. सिय भंते ! नेरइया महस्सवा अप्पकिरिया महावेदणा अप्पनिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे ६। ७. सिय भंते ! नेरतिया महस्सवा अप्पकिरिया अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा? नो इणट्ठे समट्ठे ७। ८. सिय भंते ! नेरतिया महस्सवा अप्पकिरिया अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे ८। ९. सिय भंते ! नेरइया अप्पस्सवा महाकिरिया महावेदणा महानिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे ९। १०. सिय भंते! नेरइया अप्पस्सवा महाकिरिया महावेदणा अप्पनिज्जरा? नो इणट्ठे समट्ठे १०। ११. सिय भंते! नेरइया अप्पस्सवा महाकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे ११। १२. सिय भंते! नेरइया अप्पस्सवा महाकिरिया अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे १२। १३. सिय भंते ! नेरइया अप्पस्सवा अप्पकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे १३। १४. सिय भंते ! नेरतिया अप्पस्सवा अप्पकिरिया महावेदणा अप्पनिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे १४। १५. सिय भंते ! नेरतिया अप्पस्सवा अप्पकिरिया अप्पवेदणा महानिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे १५। १६. सिय भंते ! नेरतिया अप्पस्सवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा? णो इणट्ठे समट्ठे १६। एते सोलस भंगा ।[सु. १७-२२.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असुरकुमाराइवेमाणियपज्जंतेसु दंडएसु महासवाइपयाइं पडुच्च निरूवणं] १७. सिय भंते ! असुरकुमारा महस्सवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे । एवं चउत्थो भंगो भाणियव्वो । सेसा पण्णरस भंगा खोडेयव्वा । १८. एवं जाव थणियकुमारा । १९. सिय भंते ! पुढविकाइया महस्सवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा? हंता, सिया। २०. एवं जाव सिय भंते! पुढविकाइया अप्पस्सवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा? हंता, सिया १६ । २१. एवं जाव मणुस्सा । २२. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥१९.४॥ ☆☆☆पंचमो उद्देसओ 'चरम'☆☆☆ [सु. १-५. अप्पट्ठिइय-महाठिइएसु चउवीसइदंडएसु महाकम्मतर-महाकिरियतराइपयाइं पडुच्च निरूवणं] १. अत्थि णं भंते ! चरमा वि नेरतिया, परमा वि नेरतिया ? हंता, अत्थि । २. (१) से नूणं भंते ! चरमेहिंतो नेरइएहिंतो परमा नेरतिया महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महस्सवतरा चेव, महावेयणतरा चेव; परमेहिंतो वा नेरइएहिंतो चरमा नेरतिया अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पस्सवतरा चेव, अप्पवेयणतरा चेव ? हंता, गोयमा ! चरमेहिंतो नेरइएहिंतो परमा जाव महावेयणतरा चेव; परमेहिंतो वा नेरइएहिंतो चरमा नेरइया जाव अप्पवेयणतरा चेव । (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव अप्पवेयणतरा चेव ? गोयमा ! ठितिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव अप्पवेयणतरा चेव । ३. अत्थि णं भंते ! चरमा वि असुरकुमारा, परमा वि असुरकुमारा ? एवं चेव, नवरं विवरीयं भाणियव्वं-परमा अप्पकम्मा, सेसं तं चेव । जाव थणियकुमारा ताव एमेव । ४. पुढविकाइया जाव मणुस्सा एए जहा नेरइया । ५. वाणमंतर-जोतिस-वेमाणिया जहा असुरकुमारा । [सु. ६-७. वेयणाभेयाइजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] ६. कतिविधा णं भंते ! वेयणा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा वेयणा पन्नत्ता, तं जहा-निदा य अनिदा य । ७. नेरइया णं भंते ! किं निदायं वेयणं वेएंति, अनिदायं ? जहा पन्नवणाए जाव वेमाणिय त्ति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥१९.५॥ ☆☆☆ छट्ठो उद्देसओ 'दीव'☆☆☆[सु. दीव-समुद्दवत्तव्वयाजाणणत्थं जीवाभिगमसुत्तावलोयणनिद्देसो] १. कहि णं भंते! दीव-समुद्दा?, केवतिया णं भंते ! दीव-समुद्दा ?, किंसंठिया णं भंते ! दीव-समुद्दा ? एवं जहा जीवाभिगमे दीव-समुद्दुद्देसो सो चेव इह वि जोतिसमंडिउद्देसगवज्जो भाणियव्वो जाव परिणामो जीवउववाओ जाव अणंतखुत्तो । सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ॥१९.६॥ ☆☆☆ सत्तमो उद्देसओ 'भवणा' ☆☆☆[सु. १-१०. चउव्विहाणं देवाणं भवणावास-विमाणावाससंखंइपरूवणं] १. केवतिया णं भंते ! असुरकुमारभवणावाससयहस्सा पन्नत्ता ? गोयमा ! चोयट्ठिं असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा पन्नत्ता । २. ते णं भंते ! किं मया पन्नत्ता? गोयमा! सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा । तत्थ णं बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति, सासया णं ते भवणा दव्वट्ठयाए, वण्णपज्जवेहिं जाव फासपज्जवेहिं असासया । ३. एवं जाव थणियकुमारावासा । ४. केवतिया णं भंते ! वाणमंतरभोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा वाणमंतरभोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पन्नत्ता । ५. ते णं भंते ! किं मया पन्नत्ता ? सेसं तं चेव । ६. केवतिया णं भंते ! जोतिसियविमाणावाससयसहस्सा० पुच्छा । गोयमा ! असंखेज्जा जोतिसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता । ७. ते णं भंते ! किं मया पन्नत्ता ? गोयमा ! सव्वफालिहामया अच्छा, सेसं तं चेव । ८. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा० । ९. ते णं भंते ! किं मया पन्नत्ता ? गोयमा ! सव्वरयणामया अच्छा, सेसं तं चेव । १०. एवं जाव अणुत्तरविमाणा, नवरं जाणियव्वा जत्तिया भवणा विमाणा वा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥१९.७॥ ☆☆☆ अट्ठमो उद्देसओ 'निव्वत्ति'☆☆☆ [सु. १-४. जीवनिव्वत्तीए भेय-पभेया] १. कतिविधा णं भंते ! जीवनिव्वती पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा जीवनिव्वती पन्नत्ता, तं जहा-एगिंदियजीवनिव्वत्ती जाव पंचिंदियजीवनिव्वत्ती । २. एगिंदियजीवनिव्वत्ती णं भंते ! कतिविधा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविधा पन्नत्ता, तं जहा-पुढविकाइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती जाव वणस्सइकाइयएगिंनियजीवनिव्वत्ती । ३. पुढविकाइवएगिंदियजीवनिव्वत्ती णं भंते ! कतिविधा पन्नता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-सुहुमपुढविकाइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती य बायरपुढवि० । ४. एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा वड्डगबंधे (स० ८ उ० ९ सु०

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९०-९१) तेयगसरीरस्स जाव-सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियकप्पातीतवेमाणियदेवपंचेंदियजीवणिव्वत्ती णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-पज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातिय जाव देवपंचेंदियजीवनिव्वत्ती य अपज्जगसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरावचाइय जाव देवपंचेंदियजीवनिव्वत्ती य। सु. ५-७. कम्मनिव्वत्तिभेया, चउवीसइदंडएसु कम्मनिव्वत्तिभेयपरूवणं च ५. कतिविधा णं भंते ! कम्मनिव्वत्ती पन्नत्ता? गोयमा ! अट्ठविहा कम्मनिव्वत्ती पन्नत्ता, तं जहा-नाणावरणिज्जकम्मनिव्वत्ती जाव अंतराइयकम्मनिव्वत्ती। ६. नेरतियाणं भंते ! कतिविधा कम्मनिव्वत्ती पन्नत्ता ? गोयमा ! अट्ठविहा कम्मनिव्वत्ती पन्नत्ता, तं जहा-नाणावरणिज्जकम्मनिव्वत्ती जाव अंतराइयकम्मनिव्वत्ती। ७. एवं जाव वेमाणियाणं। [सु. ८-१०. सरीरनिव्वत्तिभेया, चउवीसइदंडएसु य सरीरनिव्वत्तिभेयपरूवणं] ८. कतिविधा णं भंते ! सरीरनिव्वत्ती पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविधा सरीरनिव्वत्ती पन्नत्ता, तं जहा-ओरालियसरीरनिव्वत्ती जाव कम्मगसरीरनिव्वत्ती। ९. नेरतियाणं भंते !० एवं चेव। १०. एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं नायव्वं जस्स जति सरीराणि। [सु. ११-१४. इंदियनिव्वत्तिभेया, चउवीसइदंडएसु य इंदियनिव्वत्तिभेयपरूवणं] ११. कतिविधा णं भंते ! सव्विंदियनिव्वत्ती पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा सव्विंदियनिव्वत्ती पन्नत्ता, तं जहा-सोतिंदियनिव्वत्ती जाव फासिंदियनिव्वत्ती। १२. एवं जाव नेरइया जाव थणियकुमाराणं। १३. पुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा! एगा फासिंदियसव्विंदियनिव्वत्ती पन्नत्ता। १४. एवं जस्स जति इंदियाणि जाव वेमाणियाणं। [सु. १५-१६.भासानिव्वत्तिभेया, चउवीसइदंडएसु य भासानिव्वत्तिभेयपरूवणं] १५. कतिविधा णं भंते ! भासानिव्वत्ती, पन्नत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा भासानिव्वत्ती पन्नत्ता, जहा-सच्चभासानिव्वत्ती, मोसभासानिव्वत्ती, सच्चामोसभासानिव्वत्ती, असच्चामोसभासानिव्वत्ती। १६. एवं एगिंनियवज्जं जस्स जा भासा जाव वेमाणियाणं। [सु. १७-१८. मणनिव्वत्तिभेया, चउवीसइदंडएसु य मणनिव्वत्तिभेयपरूवणं] १७ कतिविहा णं भंते ! मणनिव्वत्ती पन्नत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा मणनिव्वत्ती पन्नत्ता, तं जहा-सच्चमणनिव्वत्ती जाव असच्चामोसमणनिव्वत्ती। १८. एवं एगिंदिय-विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं। [सु. १९-२०.कसायनिव्वत्तिभेया, चउवीसइदंडएसु य कसायनिव्वत्तिभेयपरूवणं] १९. कतिविहा णं भंते ! कसायनिव्वत्ती पन्नत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा कसायनिव्वत्ती पन्नत्ता, तं जहा-कोहकसायनिव्वत्ती जाव लोभकसायनिव्वत्ती। २०. एवं जाव वेमाणियाणं। [सु. २१-२५. वण्ण-गंध-रस-फासनिव्वत्तिभेया, तेसिं च चउवीसइदंडएसु निरूवणं] २१. कतिविहा णं भंते ! वण्णनिव्वत्ती पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा वण्णनिव्वत्ती पन्न्त्ता, तं जहा-कालावण्णनिव्वत्ती जाव सुक्किलावण्णनिव्वत्ती २२. एवं निरवसेसं जाव वेमाणियाणं। २३. एवं गंधनिव्वत्ती दुविहा जाव वेमाणियाणं। २४. रसनिव्वत्ती पंचविहा जाव वेमाणियाणं। २५. फासनिव्वत्ती अट्ठविहा जाव वेमाणियाणं। [सु. २६-३१. संठाणनिव्वत्तिभेया, चउवीसइदंडएसु य संठाणनिव्वत्तिभेयनिरूवणं] २६. कतिविहा णं भंते ! संठाणनिव्वत्ती पन्नत्ता ? गोयमा ! छव्विहा संठाणनिव्वत्ती पन्नत्ता, तं जहा-समचउरंससंठाणनिव्वत्ती जाव हुंडसंठाणनिव्वत्ती। २७. नेरतियाणं पुच्छा। गोयमा ! एगा हुंडसंठाणनिव्वत्ती पन्नत्ता। २८. असुरकुमाराणं पुच्छा। गोयमा ! एगा समचउरंससंठाणनिव्वत्ती पन्नत्ता। २९. एवं जाव थणियकुमाराणं। ३०. पुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! एगा मसूरचंदासंठाणनिव्वत्ती पन्नत्ता। ३१. एवं जस्स जं संठाणं जाव वेमाणियाणं। [सु. ३२-३३. सन्नानिव्वत्तिभेया, चउवीसइदंडएसु य सन्नानिव्वत्तिभेयनिरूवणं] ३२. कतिविधा णं भंते ! सन्नानिव्वत्ती पन्नत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा सन्नाणिव्वत्ती पन्नत्ता, तं जहा-आहारसन्नानिव्वत्ती जाव परिग्गहसन्नानिव्वत्ती। ३३. एवं जाव वेमाणियाणं। [सु. ३४-३५. लेस्सानिव्वत्तिभेया, चउवीसइदंडएसु य लेस्सानिव्वत्तिभेयनिरूवणं] ३४. कतिविधा णं भंते ! लेस्सानिव्वत्ती पन्नत्ता ? गोयमा ! छव्विहा लेस्सानिव्वत्ती पन्नत्ता, तं जहा-कण्हलेस्सानिव्वत्ती जाव सुक्कलेस्सानिव्वत्ती। ३५. एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति लेस्साओ। [सु. ३६-३७. दिट्ठिनिव्वत्तिभेया, चउवीसइदंडएसु य दिट्ठिनिव्वत्तिभेयानिरूवणं] ३६. कतिविधा णं भंते ! दिट्ठिनिव्वत्ती पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा दिट्ठिनिव्वत्तती पन्नत्ता, तं जहा-सम्मद्दिट्ठिनिव्वत्ती, मिच्छानिट्ठिनिव्वत्ती, सम्मामिच्छादिट्ठिनिव्वत्ती। ३७. एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जतिविधा दिट्ठि। [सु. ३८-४१. नाण-अन्नाणनिव्वत्तिभेया, तेसिं च चउवीसइदंडएसु निरूवणं]३८. कतिविहा णं भंते ! नाणनिव्वत्ती पन्नत्ता? गोयमा ! पंचविहा नाणनिव्वत्ती पन्नत्ता, तं जहा-आभिणिबोहियनाणनिव्वत्ती जाव केवलनाणनिव्वत्ती। ३९. एवं एगिंदियवज्जं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव वेमाणियाणं, जस्स जति नाणा। ४०. कतिविधा णं भंते ! अन्नाणनिव्वत्ती पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा अन्नाणनिव्वत्ती पन्नत्ता, तं जहा-मइअन्नाणनिव्वत्ती सुयअन्नाणनिव्वत्ती विभंगनाणनिव्वत्ती। ४१. एवं जस्स जति अन्नाणा जाव वेमाणियाणं। [सु. ४२-४५. जोग-उवओगनिव्वत्तिभेया, तेसिं च चउवीसइदंडएसु निरूवणं] ४२. कतिविधा णं भंते ! जोगनिव्वत्ती पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोगनिव्वत्ती पन्नत्ता, तं जहा-मणजोगनिव्वत्ती, वइजोगनिव्वत्ती, कायजोगनिव्वत्ती। ४३. एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जतिविधो जोगो। ४४. कतिविधा णं भंते ! उवयोगनिव्वत्ती पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा उवयोगनिव्वत्ती पन्नत्ता, तं जहा-सागारोवयोगनिव्वत्ती, अणागारोवयोगनिव्वत्ती। ४५. एवं जाव वेमाणियाणं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥१९.८॥ **☆☆☆नवमो उद्देसओ 'करण'☆☆☆** [सु. १. करणस्स दव्वादीया पंच भेया] १. कतिविधे णं भंते ! करणे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे करणे पन्नत्ते, तं जहा-दव्वकरणे खेत्तकरणे कालकरणे भवकरणे भावकरणे। [सु. २-३. चउवीसइदंडएसु दव्वादिपंचकरणनिरूवणं] २. नेरतियाणं भंते ! कतिविधे करणे पन्नत्ते? गोयमा ! पंचविहे करणे पन्नत्ते, तं जहा-दव्वकरणे जाव भावकरणे। ३. एवं जाव वेमाणियाणं। [सु. ४-८. सरीर-इंदिय-भासाइकरणाणं भेया, तेसिं च चउवीसइदंडएसु निरूवणं] ४. कतिविधे णं भंते ! सरीरकरणे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे सरीरकरणे पन्नत्ते, तं जहा- ओरालियसरीरकरणे जाव कम्मगसरीरकरणे। ५. एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति सरीराणि। ६. कतिविधे णं भंते ! इंदियकरणे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे इंदियकरणे पन्नत्ते, तं जहा-सोतिंदियकरणे जाव फासिंदियकरणे। ७. एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति इंदियाइं। ८. एवं एएणं कमेणं भासाकरणे चउव्विहे। मणकरणे चउव्विहे। कसायकरणे चउव्विहे। समुग्घायकरणे सत्तविधे। सण्णाकरणे चउव्विहे। लेस्साकरणे छव्विहे। दिट्ठिकरणे तिविधे। वेदकरणे तिविहे पन्नत्ते, तं जहा-इत्थिवेदकरणे पुरिसवेयकरणे नपुंसगवेयकरणे। एए सव्वे नेरइयाई दंडगा जाव वेमाणियाणं। जस्स जं अत्थि तं तस्स सव्वं भाणियव्वं। [सु. ९-१०. पाणातिवायकरणभेया, तेसिं च चउवीसइदंडएसु निरूवणं] ९. कतिविधे णं भंते ! पाणातिवायकरणे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पाणातिवायकरणे पन्नत्ते, तं जहा-एगिंदियपाणातिवायकरणे जाव पंचेंदियपाणातिवायकरणे। १०. एवं निरवसेसं जाव वेमाणियाणं। [सु. ११-१४. पुग्गलकरणभेय-पभेयनिरूवणं] ११. कइविधे णं भंते ! पोग्गलकरणे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पोग्गलकरणे पन्नत्ते, तं जहा-वण्णकरणे गंधकरणे रसकरणे फासकरणे संठाणकरणे। १२. वण्णकरणे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तं जहा-कालवण्णकरणे जाव सुक्किलवण्णकरणे। १३. एवं भेदो-गंधकरणे दुविधे, रसकरणे पंचविधे, फासरकणे अट्ठविधे। १४. संठाणकरणे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तं जहा-परिमंडलसंठाणकरणे जाव आयतसंठाणकरणे। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति॥ ॥१९.९॥ **☆☆☆ दसमो उद्देसओ 'वणचरसुरा' ☆☆☆** [सु. १. वाणमंतरेसु समाहारादिदारनिरूवणं]१. वाणमंतरा णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? एवं जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्देसओ (स० १६ उ० ११) जाव अप्पिड्ढीय त्ति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति। ॥१९.१०॥ 卐卐卐

॥एक्कूणवीसतिमं सयं समत्तं॥१९॥ वीसइमं सयं 卐卐卐 [सु. १. वीसइमसयस्स उद्देसनामनिरूवणं] १. बेइंदिय १ मागासे २ पाणवहे ३ उवचए ४ य परमाणू ५। अंतर ६ बंधे ७ भूमी ८ चारण ९ सोवक्कमा जीवा १०॥१॥ **☆☆☆ पढमो उद्देसओ 'बेइंदिय' ☆☆☆** [सु. २. पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ] २. रायगिहे जाव एवं वयासि- [सु. ३-५. बेइंदिएसु सिय-लेस्साइदाराणं परूवणं]३. सिय भंते! जाव चत्तारि पंच बेंदिया एगयओ साधारणसरीरं बंधंति, एग० बं० २ ततो पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं बंधंति ? नो तिणट्ठे समट्ठे, बेंदिया णं पत्तेयाहारा य पत्तेयपरिणामा पत्तेयसरीरं बंधंति, प० बं० २ ततो पच्छा आहारेंति वा परिणामंति वा सरीरं वा बंधंति। ४. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति लेस्साओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! तयो लेस्साओ पन्नत्ताओ, तं जहा-कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा, एवं जहा एगूणवीसतिमे सए तेउकाइयाणं (स० १९ उ० ३ सु० १९) जाव उव्वट्टंति, नवरं सम्मदिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी; दो नाणा, दो अन्नाणा नियमं; नो मणजोगी, वयजोगी वि, कायजोगी वि;आहारो नियमं छद्दिसिं। ५. तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सन्ना ति वा पन्ना

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ति वा मणे ति वा वयी ति वा 'अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे रसे इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो'? णो तिणट्ठे समट्ठे, पडिसंवेदेंति पुण ते। ठिती जहन्नेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं। सेसं तं चेव। [सु. ६. तेइंदिय-चउरिंदिएसु सिय-लेस्साइदाराणं परूवणं] ६. एवं तेइंदिया वि। एवं चउरिंदिया वि। नाणत्तं इंदिएसु ठितीए य, सेसं तं चेव, ठिती जहा पन्नवणाए। [सु. ७-१०. पंचेंदिएसु सिय-लेस्साइदाराणं परूवणं]७. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच पंचेदिया एगयओ साहारण० एवं जहा बिंदियाणं (सु० ३-५), नवरं छ लेसाओ, दिट्ठी तिविहा वि; चत्तारिनाणा, तिण्णि अण्णाणा भयणाए; तिविहो जोगो। ८. तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सन्ना ति वा पण्णा ति वा जाव वती ति वा 'अम्हे णं आहारमाहारेमो'? गोयमा ! अत्थेगइयाणं एवं सण्णा ति वा पण्णा ति वा मणो ति वा वती ति वा 'अम्हे णं आहारमाहारेमो', अत्थेगइयाणं नो एवं सन्ना ति वा जाव वती ति वा 'अम्हे णं आहारमाहारेमो', आहारेंति पुण ते। ९. तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सन्ना ति वा जाव वती ति वा 'अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे सद्दे, इट्ठाणिट्ठे रूवे, इट्ठाणिट्ठे गंधे, इट्ठाणिट्ठे रसे, इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो'? गोयमा ! अत्थेगइयाणं एवं सन्ना ति वा जाव वयी ति वा 'अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो', अत्थेगइयाणं नो एवं सण्णा ति वा जाव वती इ वा 'अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो', पडिसंवेदेंति पुण ते। १०. ते णं भंते ! जीवा किं पाणातिवाए उवक्खाइज्जंति० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिया पाणातिवाए वि उवक्खाइज्जंति जाव मिच्छादंसणसल्ले वि उवक्खाइज्जंति; अत्थेगतिया नो पाणातिवाए उवक्खाइज्जंति, नो मुसावादे जाव नो मिच्छादंसणसल्ले उवक्खाइज्जंति। जेसिं पि णं जीवाणं ते जीवा एवमाहिज्जंति तेसिं पि णं जीवाणं अत्थेगइयाणं विन्नाए नाणत्ते, अत्थेगइयाणं नो विन्नाए नाणत्ते। उववातो सव्वतो जाव सव्वट्ठसिद्धाओ। ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। छस्समुग्घाया केवलिवज्जा। उव्वट्टणा सव्वत्थ गच्छंति जाव सव्वट्ठसिद्धं ति। सेसं जहा बेंदियाणं।

[सु. ११. विगलिंदिय-पंचेंदियाणं अप्पाबहुयं] ११. एएसि णं भंते ! बेइंदियाणं जाव पंचेंदियाण य कयरे जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचेंदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, बेइंदिया विसेसाहिया। सेव भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरति। ॥२०.१॥ ☆☆☆ **बीओ उद्देसओ 'आगासे'** ☆☆☆

[सु. १-२. आगासत्थिकायस्स भेया सरूवं, पंचत्थिकायाणं पमाणं च] १. कतिविधे णं भंते ! आगासे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविधे आगासे पन्नत्ते, तं जहा-लोयागासे य अलोयागासे य। २. लोयागासे णं भंते ! किं जीवा, जीवदेसा ? एवं जहा बितियसए अत्थिउद्देसे (स० २ उ० १० सु० ११-१३) तह चेव इह वि भाणियव्वं, नवरं अभिलावो जाव धम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पन्नत्ते ? गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयपमाणे लोयफुडे लोयं चेव ओगाहित्ताणं चिट्ठइ। एवं जाव पोग्गलत्थिकाए। [सु. ३. अहोलोयाईसु धम्मत्थिकायाइओगाहणावत्तव्वया] ३. अहेलोए णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवतियं ओगाढे ? गोयमा ! सातिरेगं अद्धं ओगाढे। एवं एएणं अभिलावेणं जहा बितियसए (स० २ उ० १० सु० १५-२१) जाव ईसिपब्भारा णं भंते ! पुढवी लोयागासस्स किं संखेज्जइभागं ओगाढा ?० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जतिभागं ओगाढा; असंखेज्जतिभागं ओगाढा; नो संखेज्जे भागे, नो असंखेज्जे भागे, नो सव्वलोयं ओगाढा। सेसं तं चेव। [सु. ४. धम्मत्थिकास्स पज्जायसद्दा] ४. धम्मत्थिकायस्स णं भंते ! केवतिया अभिवयणा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पन्नत्ता, तं जहा-धम्मे ति वा, धम्मत्थिकाये ति वा, पाणातिवायवेरमणे ति वा, मुसावायवेरमणे ति वा एवं जाव परिग्गहवेरमणे ति वा, कोहविवेगे ति वा जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे ति वा, इरियासमिती ति वा, भासास० एसणास० आदाणभंडमत्तनिक्खेवणस० उच्चार-पासवणखेल-सिंघाण-पारिट्ठावणियासमिती ति वा, मणगुत्ती ति वा, वइगुत्ती ति वा, कायगुत्ती ति वा, जे यावऽन्ने तहप्पगारा सव्वे ते धम्मत्थिकायस्स अभिवयणा। [सु. ५. अधम्मत्थिकायस्स पज्जायसद्दा] ५. अधम्मत्थिकायस्स णं भंते! केवइया अभिवयणा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पन्नत्ता, तं जहा-अधम्मे ति वा, अधम्मत्थिकाये ति वा, पाणातिवाए ति वा जाव मिच्छादंसणसल्ले ति वा, इरियाअस्समिती ति वा जाव उच्चार-पासवण जाव पारिट्ठावणियाअस्समिती ति वा, मणअगुत्ती ति वा, वइअगुत्ती ति वा, कायअगुत्ती ति वा, जे यावऽन्ने तहप्पगारा सव्वे ते अधम्मत्थिकायस्स अभिवयणा। [सु. ६. आगासत्थिकायस्स पज्जायसद्दा] ६. आगासत्थिकायस्स णं० पुच्छा। गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पन्नत्ता, तं जहा-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगासे ति वा, आगासत्थिकाये ति वा, गगणे ति वा, नभे ति वा, समे ति वा, विसमे ति वा, खहे ति वा, विहे ति वा, वीयी ति वा, विवरे ति वा, अंबरे ति वा, अंबरसे ति वा, छिड्डे ति वा, झुसिरे ति वा, मग्गे ति वा, विमुहे ति वा, अद्दे ति वा, वियद्दे ति वा, आधारे ति वा, वोमे ति वा, भायणे ति वा, अंतरिक्खेति वा, सामे ति वा, ओवासंतरे ति वा, अगमे ति वा, फलिहे ति वा, अणंते ति वा, जे यावऽन्ने तहप्पगारा सव्वे ते आगासत्थिकायस्स अभिवयणा।

[सु. ७. जीवत्थिकायस्स पज्जायसद्दा] ७. जीवत्थिकायस्स णं भंते ! केवतिया अभिवयणा० पुच्छा। गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पन्नत्ता, तं जहा-जीवे ति वा, जीवत्थिकाये ति वा, पाणे ति वा, भूते ति वा, सत्ते ति वा, विण्णू ति वा, चेया ति वा, जेया ति वा, आया ति वा, रंगणे ति वा, हिंडुए ति वा, पोग्गले ति वा, माणवे ति वा, कत्ता ति वा, विकत्ता ति वा, जए ति वा, जंतू ति वा, जोणी ति वा, सयंभू ति वा, ससरीरी ति वा, नायये ति वा, अंतरप्पा ति वा, जे यावऽन्ने तहप्पगारा सव्वे ते जीवअभिवयणा। [सु. ८. पोग्गलत्थिकायस्स पज्जायसद्दा] ८. पोग्गलत्थिकायस्स णं भंते !० पुच्छा। गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पन्नत्ता, तं जहा-पोग्गले ति वा, पोग्गलत्थिकाये ति वा, परमाणुपोग्गले ति वा, दुपदेसिए ति वा, तिपदेसिए ति वा जाव असंखेज्जपदेसिए ति वा अणंतपदेसिए ति वा खंधे, जे यावऽन्ने तहप्पकारा सव्वे ते पोग्गलत्थिकायस्स अभिवयणा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥२०.२॥ ☆☆☆ **तइओ उद्देसओ 'पाणवहे'** ☆☆☆ [सु. १. पाणाइवायाइ-पाणाइवायवेरमणाईणं आयपरिणामित्तं] १. अह भंते ! पाणातिवाए मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पाणातिवायवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, उप्पत्तिया जाव पारिणामिया, उग्गहे जाव धारणा, उट्ठाणे, कम्मे, बले, वीरिए, पुरिसक्कारपरक्कमे, नेरइयत्ते, असुरकुमारत्ते जाव वेमाणियत्ते, नाणावरणिज्जे जाव अंतराइए, कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा, सम्मदिट्ठी ३, चक्खुदंसणे ४, आभिणिबोहियणाणे जाव विभंगनाणे, आहारन्ना ४ ओरालियसरीरे ५, मणोजोए ३, सागारोवयोगे अणागारोवयोगे, जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते णऽन्नत्थ आयाए परिणमंति ? हंता, गोयमा ! पाणातिवाए जाव ते णऽन्नत्थ आताए परिणमंति। [सु. २. गब्भं वक्कममाणम्मि जीवम्मि वण्णादिपरूवणाइ] २. जीवे णं भंते! गब्भं वक्कममाणे कतिवण्णं कतिगंधं एवं जहा बारसमसए पंचमुद्देसे (स० १२ उ० ५ सु० ३६-३७) जाव कम्मओ णं जए, णो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति। ॥२०.३॥ ☆☆☆ **चउत्थो उद्देसओ 'उवचए'** ☆☆☆

[सु. १. इंदियोवचयभेयाइजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] १. कतिविधे णं भंते! इंदियोवचये पन्नत्ते ? गोतमा ! पंचविहे इंदियोवचये पन्नत्ते, तं जहा-सोतिंदियउवचए एवं बितियो इंदियउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो जहा पन्नवणाए। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव विहरइ। ॥२०.४॥ ☆☆☆ **पंचमो उद्देसओ 'परमाणू'** ☆☆☆ [सु. १. परमाणुपोग्गलम्मि वण्ण-गंध-रस-फासपरूवणं] १. परमाणुपोग्गले णं भंते! कतिवण्णे कतिगंधे कतिरसे कतिफासे पन्नत्ते? गोयमा! एगवण्णे एगगंधे एगरसे दुफासे पन्नत्ते। जति एगवण्णे-सिय कालए, सिय नीलए, सिय हालिद्दए, सिय सुक्किलए। जति एगगंधे-सिय सुब्भिगंधे, सिय दुब्भिगंधे। जति एगरसे-सिय तित्ते, सिय कडुए, सिय कसाए, सिय अंबिले, सिय महुरे। जति दुफासे-सिय सीए य निद्धे य १, सिय सीते य लुक्खे य २, सिय उसिणे य निद्धे य ३; सिय उसुणे य लुक्खे य ४। [सु. २-१३. दुपएसियाइसुहुमपरिणयअणंतपएसियपज्जंतेसु खंधेसु वण्ण-गंध-रस-फासपरूवणं] २. दुपएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे०। एवं जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसए (स०१८ उ० ६ सु० ७) जाव सिय चउफासे पन्नत्ते। जति एगवण्णे-सिय कालए जाव सिय सुक्किलए। जति दुवण्णे-सिय कालए य नीलए य १, सिय कालए य लोहियए य २, सिय कालए य हालिद्दए य ३, सिय कालए य सुक्किलए य ४, सिय नीलए य लोहियए य ५, सिय नीलए य हालिद्दए य ६, सिय नीलए य सुक्किलए य ७, सि लोहियए य हालिद्दए य ८, सिय लोहियए य सुक्किलए य ९, सिय हालिद्दए य, सुक्किलए य १०- एवं एए दुयासंजोगे दस भंगा। जति एगगंधे-सिय सुब्भिगंधे १, सिय दुब्भिगंधे २। जति दुगंधे-सुब्भिगंधे य दुब्भिगंधे य। रसेसु जहा वण्णेसु। जति दुफासे-सिय सीए य निद्धे य-एवं जहेव परमाणुपोग्गले ४। जति तिफासे-सव्वे सीए, देसे निद्धे, देसे लुक्खे १; सव्वे उसुणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे २; सव्वे निद्धे,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देसे सीए, देसे उसुणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे १ । ४+४+१=९ । एते नव भंगा फासेसु । ३. तिपएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे० ? जहा अट्ठारसमसए (स० १८ उ०६ सु० ८) जाव चउफासे पन्नत्ते । जति एगवण्णे-सिय कालए जाव सुक्किलए ५ । जति दुवण्णे-सिय कालए नीलए य १, सिय कालए य नीलगा य २, सिय कालगा य नीलए य ३; सिय कालए य लोहियए य १, सिय कालए य लोहियगा य २, सिय कालगा य लोहियए य ३; एवं हालिद्दएण वि समं ३; एवं सुक्किलएण वि समं ३; सिय नीलए य, लोहियए य एत्थ वि भंगा ३; एवं हालिद्दएण वि भंगा ३; एवं सुक्किलएण वि समं भंगा ३; सिय लोहियए य हालिद्दए य, भंगा ३; एवं सुक्किलएण वि समं ३; सिय हालिद्दए य सुक्किलए य भंगा ३ । एवं सव्वेते दस दुयासंजोगा भंगा तीसं भवंति। जति तिवण्णे-सिय कालए य नीलए य लोहियए य १, सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य २, सिय कालए य नीलए य सुक्किलए य ३, सिय कालए य लोहियए य हालिद्दए य ४, सिय कालए य लोहियए य सुक्किलए ५, सिय कालए य हालिद्दए य सुक्किलए य ६, सिय नीलए य लोहियए य हालिद्दए य ७, सिय नीलए य लोहियए य सुक्किलए य ८, सिय नीलए य हालिद्दए य सुक्किलए य ९, सिय लोयए हालिद्दए य सुक्किलए य १०, एवं एए दस तिया संजोगे भंगा । जति एगगंधे-सिय सुब्भिगंधे १, सिय दुब्भिगंधे २; जति दुगंधे-सिय सुब्भिगंधे य, दुब्भिगंधे य, भंगा ३ । रसा जहा वण्णा । जदि दुफासे-सिय सीए य निद्धे य । एवं जहेव दुपएसियस्स तहेव चत्तारि भंगा ४ । जति तिफासे-सव्वे सीए, देसे निद्धे, देसे लुक्खे १; सव्वे सीए, देसे निद्धे, देसा लुक्खा २; सव्वे सीते, देसा निद्धा, देसे लुक्खे ३; सव्वे उसुणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे, एत्थ वि भंगा तिन्नि ३; सव्वे निद्धे, देसे सीते, देसे उसुणे-भंगा तिन्नि ३; सव्वे लुक्खे, देसे सीए, देसे उसिणे-भंगा तिन्नि, १२ । जति चउफासे-देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसेलुक्खे १; देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसा लुक्खा २; देसे सीए, देसे उसिणे, देसा निद्धा, देसे लुक्खे ३; देसे सीए, देसा उसिणा, देसे निद्धे, देसे लुक्खे ४; देसे सीए, देसा उसिणा, देसे निद्धे, देसा लुक्खा ५, देसे सीए, देसा उसिणा, देसा निद्धा, देसे लुक्खे ६, देसा सीता, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे ७; देसा सीया, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसा लुक्खा ८; देसा सीया, देसे उसिणे, देसा निद्धा, देसे लुक्खे ९। एवं एए तिपदेसिए फासेसु पणवीसं भंगा । ४. चउपएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे०? जहा अट्ठारसमसए (स० ८ उ० ६ सु० ९) जाव सिय चउफासे पन्नत्ते । जति एगवण्णे-सियकालए य जाव सुक्किलए ५ । जति दुवण्णे-सिय कालए य, नीलए य १; सिय कालए य, नीलगा य २; सिए कालगा य, नीलए य ३; सिय कालगा य, नीलगा य ४; सिय कालए य, लोहियए य, एत्थ वि चत्तारि भंगा ४; सिय कालए य, हालिद्दए य ४; सिय कालए य, सुक्किलए य ४; सिय नीलए य, लोहियए य ४; सिय नीलए य, हालिद्दए य ४; सिय नीलए य, सुक्किलए य ४; सिय लोहियए य, हालिद्दए य ४; सिय लोहियए य, सुक्किलए य ४; सिय हालिद्दए य, सुक्किलए य ४; एवं एए दस दुयासंजोगा, भंगा पुण चत्तालीसं ४०। जति तिवण्णे-सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य १; सिय कालए य, नीलए य, लोहियगा य २; सिय कालए य, नीलगा य लोहियए य, ३; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियए य ४; एए भंगा ४ । एवं काल-नील-हालिद्दएहिं भंगा ४; काल-नील-सुक्किल० ४; काल-लोहिय-हालिद्द० ४; काल-लोहिय-सुक्किल० ४; काल-हालिद्द-सुक्किल० ४; नील-लोहिय-हालिद्दगाणं भंगा ४; नील-लोहिय-सुक्किल० ४; नील-हालिद्द-सुक्किल० ४; लोहिय-हालिद्द-सुक्किलगाणं भंगा ४; एवं एए दस तियगसंजोगा, एक्केक्के संजोए चत्तारि भंगा, सव्वेते चत्तालीसं भंगा ४० । जति चउवण्णे-सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य १; सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, सुक्किलए य २; सिय कालए य, नीलए य, हालिद्दए य, सुक्किलए य, ३; सिय कालए य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलए य ४; सिय नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलए य; एवमेते चउक्कगसंजोए पंच भंगा । एए सव्वे नउइभंगा । जदि एगगंधे-सिय सुब्भिगंधे १, सिय दुब्भिगंधे २। जदि दुगंधे-सिय सुब्भिगंधे य, सिय दुब्भिगंधे य । रसा जहा वण्णा । जइ दुफासे-जहेव परमाणुपोग्गले ४। जइ तिफासे-सव्वे सीते, देसे निद्धे, देसे लुक्खे १; सव्वे सीए, देसे निद्धे, देसा लुक्खा २; सव्वे सीए, देसा निद्धा, देसे लुक्खे ३; सव्वे सीए, देसा निद्धा, देसा लुक्खा ४ । सव्वे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे, एवं भंगा ४ । सव्वे निद्धे, देसे सीए, देसे उसिणे ४ । सव्वे लुक्खे, देसे सीए, देसे उसिणे ४ । एए तिफासे सोलसभंगा। जति चउफासे- देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे १; देसे सीए,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसा लुक्खा २; देसे सीए, देसे उसिणे, देसा निद्धा, देसे लुक्खे ३; देसे सीए, देसे उसिणे, देसा निद्धा, देसा लुक्खा ४; देसे सीए, देसा उसिणा, देसे निद्धे, देसे लुक्खे ५; देसे सीए, देसा उसिणा, देसे निद्धे, देसा लुक्खा ६; देसे सीए, देसा उसिणा, देसा निद्धा, देसे लुक्खे ७; देसे सीए, देसा उसिणा, देसा निद्धा, देसा लुक्खा ८। देसा सीया, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे ९-एवं एए चउफासे सोलस भंगा भाणियव्वा जाव देसा सीया, देसा उसिणा, देसा निद्धा, देसा लुक्खा। सव्वेते फासेसु छत्तीसं भंगा। ५. पंचपदेसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे० ? जहा अट्ठारसमसए (स० १८ उ० ६ सु० १०) जाव सिय चउफासे पन्नत्ते। जति एगवण्णे, एगवण्णदुवण्णा जहेव चउपदेसिए। जति तिवण्णे-सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य १; सिय कालए य, नीलए य, लोहियगा य २; सिय कालए य, नीलगा य, लोहियए य ३; सिय कालए य; नीलगा य, लोहियगा य ४; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियए य ५; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियगा य ६; सिय कालगा य, नीलगा य, लोहियए य ७। सिय कालए य, नीलए य, हालिद्दए य, एत्थ वि सत्त भंगा ७। एवं कालग-नीलग-सुक्किलएसु सत्त भंगा ७; कालग-लोहिय-हालिद्देसु ७; कालग-लोहिय-सुक्किलेसु ७; कालग-हालिद्द-सुक्किलेसु ७; नीलग-लोहिय-हालिद्देसु ७; नीलग-लोहिय-सुक्किलेसु सत्त भंगा ७; नीलग-हालिद्द-सुक्किलेसु ७; लोहिय-हालिद्द-सुक्किलेसु वि सत्त भंगा ७; एवमेते तियासंजोएण सत्तरि भंगा। जति चउवण्णे-सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य १; सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दगा य २; सिय कालए य, नीलए य, लोहियगा य, हालिद्दगे य ३; सिय कालए य, नीलगा य, लोहियगे य, हालिद्दए य ४; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियगे य, हालिद्दए य ५-एए पंच भंगा; सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, सुक्किलए य-एत्थ वि पंच भंगा; एवं कालग-नीलग-हालिद्द-सुक्किलेसु वि पंच भंगा; कालग-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलएसु वि पंच भंगा ५; नीलग-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलेसु वि पंच भंगा; एवमेते चउक्कगसंजोएणं पणुवीसं भंगा। जति पंचवण्णे-कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किल्लए य-सव्वमेते एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोएणं ईयालं भंगसयं भवति। गंधा जहा चउपएसियस्स। रसा जहा वण्णा। फासा जहा चउपदेसियस्स। ६. छप्पएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे० ? एवं जहा पंचपएसिए जाव सिय चउफासे पन्नत्ते। जदि एगवण्णे, एगवण्ण-दुवण्णा जहा पंचपदेसियस्स। जति तिवण्णे-सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य-एवं जहेव पंच, पएसियस्स सत्त भंगा जाव सिय कालगा य, नीलगा य, लोहियए य ७; सिय कालगा य, नीलगा य, लोहियगा य ८, एए अट्ठ भंगा; एवमेते दस तियासंजोगा, एक्केक्के संजोगे अट्ठ भंगा; एवं सव्वे वि तियगसंजोगे असीतिभंगा। जति चउवण्णे- सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य, १; सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दगा य २; सिय कालए य, नीलए य, लोहियगा य, हालिद्दए य ३; सिय कालए य, नीलए य, लोहियगा य, हालिद्दगा य ४; सिय कालए य नीलगा य, लोहियए य, हालिद्दए य ५; सिय कालए य, नीलगा य, लोहियए य, हालिद्दगा य ६; सिय कालए य, नीलगा य, लोहियगा य, हालिद्दए य ७; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य ८; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दगा य ९; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियगा य, हालिद्दए य १०; सिय कालगा य, नीलगा य, लोहियए य, हालिद्दए य ११; एए एक्कारस भंगा। एवमेए पंच चउक्का संजोगा कायव्वा, एक्केक्के संजोए एक्कारस भंगा, सव्वेते चउक्कगसंजोएणं पणपन्नं भंगा। जति पंचवण्णे--सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलए य १; सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलगा य २; सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलए य ३; सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य ४; सिय कालए य, नीलगा य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलए य ५; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियगे य, हालिद्दए य, सुक्किलए य ६; एवं एए छब्भंगा भाणियव्वा। एवमेते सव्वे वि एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचग-संजोएसु छासीयं भंगसयं भवति। गंधा जहा पंचपएसियस्स। रसा जहा एयस्सेव वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स। ७. सत्तपएतिए णं भंते ! खधे कतिवण्णे० ? जहा पंचपएसिए जाव सिय चउफासे पन्नत्ते। जति एगवण्णे, एवं एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्णा जहा छप्पएसियस्स। जइ चउवण्णे-सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य १; सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दगा य २; सिय कालए य, नीलए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य, लोहियगा य, हालिद्दए य ३; एवमेते चउक्कगसंजोएणं पन्नरस भंगा भाणियव्वा जाव सिय कालगा य, नीलगा य, लोहियगा य, हालिद्दए य १५। एवमेते पंच चउक्का संजोगा नेयव्वा; एक्केक्के संजोए पन्नरस भंगा- सव्वमेते पंचसत्तरि भंगा भवंति। जति पंचवण्णे-सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलए य, १; सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलगा य २; सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दगा य, सुक्किलए य ३; सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दगा य, सुक्किल्लगा य ४; सिय कालए य, नीलए य, लोहियगा य, हालिद्दए य, सुक्किलए य ५; सिय कालए य, नीलए य, लोहियगा य, हालिद्दए य, सुक्किलगा य ६; सिय कालए य, नीलए य, लोहियगा य,हालिद्दगा य, सुक्किलए य ७; सिय कालए य, नीलगा य, लोहियगे य, हालिद्दए य, सुक्किलए य ८; सिय कालए य, नीलगा य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलगा य ९; सिय कालए य, नीलगा य, लोहियए य, हालिद्दगा य, सुक्किलए य १०; सिय कालए य, नीलगा य, लोहियगा य, हालिद्दए य, सुक्किलए य ११; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलए य १२; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलगा य १३; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दगा य, सुक्किलए य १४; सिय कालगा य, नीलगे य, लोहियगा य, हालिद्दए य, सुक्किलए य, १५; सिय कालगा य, नीलगा य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलए य १६; एए सोलस भंगा। एवं सव्वमेते एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचग-संजोगेणं दो सोला भंगसता भवंति। गंधा जहा चउप्पएसियस्स। रसा जहा एयस्स चेव वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स। ८. अट्ठपदेसियस्स णं भंते ! खंधे० पुच्छा। गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा सत्तपदेसियस्स जाव सिय चतुफासे पन्नत्ता जति एगवण्णे, एवं एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्णा जहेव सत्तपएसिए। जति चउवण्णे-सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य १; सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दगा य २; एवं जहेव सत्तपदेसिए जाव सिय कालगा य, नीलगा य, लोहियगा य, हालिद्दगे य १५, सिय कालगा य, नीलगा य, लोहियगा य, हालिद्दगा य १६; एए सोलस भंगा। एवमेते पंच चउक्कगसंजोगा; सव्वमेते असीति भंगा ८०। जति पंचवण्णे-सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलए य १; सिय कालगे य, नीलगे य, लोहियगे य, हालिद्दए य, सुक्किलगा य २; एवं एएणं कमेणं भंगा चारेयव्वा जाव सिय कालए य, नीलगा य, लोहियगा य, हालिद्दगा य, सुक्किलगे य १५- एसो पन्नरसमो भंगो; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलए य १६, सिय कालगा य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलगा य १७; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियए य हालिद्दगा य, सुक्किलए य १८; सिय कालगा य, नीलगे य, लोहियए य, हालिद्दगा य, सुक्किलगा य १९; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियगा य, हालिद्दए य, सुक्किलए य २०; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियगा य, हालिद्दए य, सुक्किलगा २१; सिय कालगा य, नीलए य, लोहियगा य, हालिद्दगा य, सुक्किलए य २२; सिय कालगा य, नीलगा य, लोहियगे य, हालिद्दए य, सुक्किलगे य २३; सिय कालगा य, नीलगा य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलगा य २४; सिय कालगा य, नीलगा य, लोहियए य, हालिद्दगा य, सुक्किलए य २५; सिय कालगा य, नीलगा य, लोहियगा य, हालिद्दए य, सुक्किलए य २६; एए पंचगसंजोएणं छव्वीसं भंगा भवंति। एवंमेव सपुव्वावरेणं एक्कग-दुयग-तियग-चछक्कग-पंचगसंजोएहिं दो एक्कतीसं भंगसया भवंति। गंधा जहा सत्तपएसियस्स। रसा जहा एयस्स चेव वण्णा। फासा जहा चछप्पएसियस्स। ९. नवपदेसियस्स० पुच्छा। गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा अट्ठपएसिए जाव सिय चउफासे पन्नत्त। जति एगवण्णे, एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्ण-चउवण्णा जहेव अट्ठपएसियस्स। जति पंचवण्णे-सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलए य १; सिय कालए य, नीलए य, लोहियए य, हालिद्दए य, सुक्किलगा य २; एवं परिवाडीए एक्कतीसं भंगा भाणियव्वा जाव सिय कालगा य, नीलगा य, लोहियगा य, हालिद्दगा य, सुक्किलए य; एए एक्कत्तीसं भंगा। एवं एक्कग-दुयग-तियग-चछक्कग-पंचगसंजोएहिं दो छत्तीसा भंगसया भवंति। गंधा जहा अट्ठपएसियस्स। रसा जहा चेव वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स। १०. दसपदेसिए णं भंते ! खंधे० पुच्छा। गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा नवपदेसिए जाव सिय चउफासे पन्नत्ता। जति एगवण्णे, एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्ण-चउवण्णा जहेव नवपएसियस्स। पंचवण्णे वि तहेव, नवरं बत्तीसतिमो वि भंगो भण्णति। एवमेते एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोएसु दोन्नि सत्तत्तीसा भंगसया भवंति। गंधा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा नवपएसियस्स। रसा जहा एयस्स चेव वण्णा। फासा जहा चउपएसियस्स। ११. जहा दसपएसिओ एवं संखेज्जपएसिओ वि। १२. एवं असंखेज्जपएसिओ वि। १३. सुहुमपरिणओ अणंतपएसिओ वि एवं चेव। [सु. १४. बादरपरिणयअणंतपएसियखंधम्मि वण्ण-गंध-रस-फासपरूवणं]१४. बादरपरिणए णं भंते ! अणंतपएसिए खंधे कतिवण्णे०? एवं जहा अट्ठरसमसए जाव सिय अट्ठफासे पन्नत्ते। वण्ण-गंध-रसा जहा दसपएसियस्स। जति चउफासे -सव्वे कक्खडे, सव्वे गरुए, सव्वे सीए सव्वे निद्धे १; सव्वे कक्खडे, सव्वे गरुए, सव्वे सीए, सव्वे लुक्खे २; सव्वे कक्खडे, सव्वे गरुए, सव्वे उसिणे, सव्वे निद्धे ३; सव्वे कक्खडे, सव्वे गरुए, सव्वे उसिणे, सव्वे लुक्खे ४; सव्वे कक्खडे, सव्व लहुए, सव्वे सीए, सव्वे निद्धे ५; सव्वे कक्खडे, सव्वे लहुए, सव्वे सीए, सव्वे लुक्खे ६; सव्वे कक्खडे, सव्वे लहुए, सव्व उसिणे, सव्वे निद्धे ७; सव्वे कक्खडे. सव्वे लहुए, सव्वे उसिणे, सव्वे लुक्खे ८; सव्वे मउए, सव्वे गरुए, सव्वे सीए, सव्वे निद्धे ९; सव्वे मउए, सव्वे गरुए, सव्वे सीए, सव्वे लुक्खे १०; सव्वे मउए, सव्वे गरुए, सव्वे उसिणे, सव्वे निद्धे ११; सव्वे मउए, सव्वे गरुए, सव्वे उसिणे, सव्वे लुक्खे १२; सव्वे मउए, सव्वे लहुए, सव्वे सीए, सव्वे निद्धे १३; सव्वे मउए, सव्वे लहुए, सव्वे सीए, सव्वे लुक्खे १४; सव्वे मउए, सव्वे लहुए, सव्वे उसिणे, सव्वे निद्धे १५; सव्वे मउए, सव्वे लहुए, सव्वे उसिणे, सव्वे लुक्खे १६; एए सोलस भंगा। जइ पंचफासे-सव्वे कक्खडे, सव्वे गरुए, सव्वे सीए, देसे निद्धे, देसे लुक्खे १; सव्वे कक्खडे, सव्वे गरुए, सव्वे सीए, देसे निद्धे, देसा लुक्खा २; सव्वे कक्खडे, सव्वे गरुए, सव्वे सीए, देसा निद्दा, देसे लुक्खे ३; सव्वे कक्खडे, सव्वे गरुए, सव्वे सीए, देसा निद्धा, देसालुक्खा ४। सव्वे कक्खडे, सव्वे गरुए, सव्वे उसिणे, देस निद्धे, देसे लुक्खे० ४; सव्वे कक्खडे, सव्वे लहुए, सव्वे सीए, देसे निद्धे, देसे लुक्खे० ४; सव्वे कक्खडे, सव्वे लहुए, सव्वे उसिणे, देसे निद्ध, देसे लुक्खे० ४; एवं एए कक्खडेणं सोलस भंगा। सव्वे मउए, सव्वे गरूए, सव्वे सीए, देसे निद्धे, देसे लुक्खे० ४; एवं मउएण वि सोलस भंगा। एवं बत्तीसं भंगा। सव्वे कक्खडे, सव्वे गरुए, सव्वे निद्धे, देसे सीए, देसे उसिणे० ४; सव्वे कक्खडे, सव्वे गरुए, सव्वे लुक्खे, देसे सीए, देसे उसिणे ४; ०एए बत्तीसं भंगा। सव्वे कक्खडे, सव्वे सीए, सव्वे निद्धे, देसे गरुए, देसे लहुए ४; ० एत्थ वि बत्तीसं भंगा। सव्वे गरुए, सव्वे सीए, सव्वे निद्धे, देसे कक्खडे, देसे मउए ४; ० एत्थ वि बत्तीसं भंगा। एवं सव्वे ते पंचफासे अट्ठावीसं भंगसयं भवति। जदि छफासे-सव्वे कक्खडे, सव्वे गरुए, देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे देसे लुक्खे १; सव्वे; कक्खडे, सव्वे गरुए, देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसा लुक्खा २; एवं जाव सव्वे कक्खडे, सव्वे गरुए, देसा सीता, देसा उसिणा, देसा निद्धा, देसा लुक्खा १६; एए सोलस भंगा। सव्वे कक्खडे, सव्वे लहुए, देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे; एत्थ वि सोलस भंगा। सव्वे मउए, सव्वे गरुए, देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे; एत्थ वि सोलस भंगा। सव्वे मउए, सव्वे लहुए, देसे सीए देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे; एत्थ वि सोलस भंगा १६। एए चउसट्ठिं भंगा। सव्वे कक्खडे, सव्वे सीए, देसे गरुए, देसे लहुए, देसे निद्धे, देसे लुक्खे; एत्थ वि चउसट्ठिं भंगा। सव्वे कक्खडे, सव्वे निद्धे, देसे गरुए, देसे लहुए, देसे सीए, देसे उसिणे जाव सव्वे मउए, सव्वे लुक्खे, देसा गरुया, देसा लहुया, देसा सीया, देसा उसिणा १६; एए चउसट्ठिं भंगा। सव्वे गरुए, सव्वे सीए, देसे कक्खडे. देसे मउए, देसे निद्धे, देसे लुक्खे; एवं जाव सव्वे लहुए, सव्वे उसिणे देसा कक्खडा, देसा मउया, देसा निद्धा, देसा लुक्खा; एए चउसट्ठिं भंगा। सव्वे गरुए, सव्वे निद्धे, देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे सीए, देसे उसिणे; जाव सव्वे लहुए, सव्वे लुक्खे. देसा कक्खडा, देसा मउया, देसा सीता, देसा उसिणा; एए चउसट्ठिं भंगा। सव्वे सीए, सव्वे निद्धे, देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे गरुए, देसे लहुए; जाव सव्वे उसिणे, सव्वे लुक्खे, देसा कक्खडा, देसा मउया, देसा गरुया, देसा लहुया; एए चउसट्ठिं भंगा। सव्वेते छफासे तिन्नि चउरासीया भंगसता भवंति ३८४। जति सत्तफासे -सव्वे कक्खडे, देसे गरुए, देसे लहुए, देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे १; सव्वे कक्खडे, देसे गरुए, देस लहुए, देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसा लुक्खा ४; सव्वे कक्खडे, देसे गरुए, देसे लहुए, देसे सीए, देसा उसिणा, देसे निद्धे, देसे लुक्खे ४; सव्वे कक्खडे, देसे गरुए, देसे लहुए, देसा सीता, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे ४; सव्वे कक्खडे, देसे गरुए, देसे लहुए, देसा सीता, देसा उसिणा, देसे निद्धे, देसे लुक्खे ४; सव्वे ते सोलस भंगा।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वे कक्खडे, देसे गरुए, देसा लहुया, देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं गरुएणं एगत्तएणं, लहुएणं पुहत्तएणं एए वि सोलस भंगा। सव्वे कक्खडे, देसा गरुया, देसे लहुए, देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे; एए वि सोलस भंगा भाणियव्वा। सव्वे कक्खडे, देसा गरुया, देसा लहुया, देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे; एए वि सोलस भंगा भाणियव्वा। एवमेए चउसट्ठिं भंगा कक्खडेण समं। सव्वे मउए, देसे गरुए, देसे लहुए, देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे; एवं मउएण वि समं चउसट्ठिं भंगा भाणियव्वा। सव्वे गरुए, देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे; एवं गरुएण वि समं चउसट्ठिं भगा कायव्वा। सव्वे लहुए, देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे; एवं लहुएण वि समं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। सव्वे सीए, देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे गरुए, देसे लहुए, देसे निद्धे, देसे लुक्खे; एवं सीएण वि समं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। सव्वे उसिणे, देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे गरुए, देसे लहुए, देसे निद्धे, देसे लुक्खे; एवं उसिणेण वि समं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। सव्वे निद्धे, देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे गरुए, देसे लहुए, देसे सीए, देसे उसिणे; एवं निद्धेण वि समं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। सव्वे लुक्खे, देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे गरुए, देसे लहुए, देसे सीए, देसे उसिणे; एवं लुक्खेण वि समं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा जाव सव्वे लुक्खे, देसा कक्खडा, देसा मउया, देसा गरुया, देसा लहुया, देसा सीया, देसा उसिणा। एवं सत्तफासे पंच बारसुत्तरा भगसता भवंति। जति अट्ठफासे-देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे गरुए, देसे लहुए, देसे सीते, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे ४; देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे गरुए, देसे लहुए, देसे सीते, देसा उसिणा, देसे निद्धे, देसे लुक्खे, ४; देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे गरुए, देसे लहुए, देसा सीता, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे ४; देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे गरुए, देसे लहुए, देसा सीता, देसा उसिणा, देसे निद्धे, देसे लुक्खे, ४; एए चत्तारि चउक्का सोलस भंगा। देसे कक्खडे, देसे भउए, देसे गरुए, देसा लहुया, देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे; एवं एए गरुएणं एगत्तएणं, लहुएणं पोहत्तएणं सोलस भंगा कायव्वा। देसे कक्खडे, देसे मउए, देसा गरुया, देसे लहुए, देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे ४; एए वि सोलस भंगा कायव्वा। देस कक्खडे, देसे मउए, देसा गरुया, देसा लहुया, देसे सीए, देसे उसिणे, देसे निद्धे, देसे लुक्खे; एए वि सोलस भंगा कायव्वा। सव्वेते चउसट्ठिं भंगा कक्खड-मउएहिं एगत्तएहिं। ताहे कक्खडेणं एगत्तएणं, मउएणं पुहत्तएणं एए चेव चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। ताहे कक्खडेणं पुहत्तएणं, मउएणं एगत्तएणं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। ताहे एतेहिं चेव दोहि वि पुहत्तएहिं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा जाव देसा कक्खडा, देसा मउया, देसा गरुया, देसा लहुया, देसा सीता, देसा उसिणा, देसा निद्धा, देसा लुक्खा-एसो अपच्छिमो भंगो। सव्वेते अट्ठफासे दो छप्पण्णा भंगसया भवंति। एवं एए बादरपरिणए अणंतपएसिए खंधे सव्वेसु संजोएसु बारस छण्णउया भंगसया भवंति। [सु. १५-१९. परमाणुभेय-पभेयनिरूवणं]१५. कतिविधे णं भंते! परमाणू पन्नत्ते? गोयमा! चउव्विहे परमाणू पन्नत्ते, तं जहा-दव्वपरमाणू खेत्तपरमाणू कालपरमाणू भावपरमाण। १६. दव्वपरमाणू णं भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा-अच्छज्जे अभेज्जे अडज्झे अगेज्झे। १७. खेत्तपरमाणू णं भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा-अणद्धे अमज्झे अपएसे अविभाइमे। १८. कालपरमाणू० पुच्छा। गोयमा! चेउव्विधे पन्नते, तं जहा -अवण्णे अगंधे अरसे अफासे। १९. भावपरमाणू णं भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! चउव्विधे पन्नत्ते, तं जहा-वण्णमंते गंधमंते रसमंते फासमंते। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरति। ॥२०.५॥☆☆☆ **छट्ठो उद्देसओ 'अंतर'** ☆☆☆ [सु. १-५. पढमाइसत्तमनरयपुढवीअंतरसमोहयस्स पुढविकाइयस्स सोहम्मा-इकप्प-गेवेज्ज-अणुत्तरविमाण-ईसिपब्भारपुढववीसु पुढविकाइयत्ताए उववज्ज-माणस्स पुव्वं पच्छा वा आहारगहणनिरूवणं] १. पुढविकाइए णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पमाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहण्णित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! किं पुव्विं उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा, पुव्विं आहारेत्ता पच्छा उववज्जेज्जा? गोयमा! पुव्विं वा उववज्जित्ता० एवं जहा सत्तरसमसए छट्ठद्देसे (स० १७ उ० ६ सु० १) जाव से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुच्चइ पुव्विं वा जाव उववज्जेज्जा, नवरं तहिं संपाउणणा, इमेहिं आहारो भण्णइ, सेसं तं चेव। २. पुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए० जे भविए ईसाणे कप्पे पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं चेव। ३. एवं जाव ईसिपब्भाराए उववातेयव्वो। ४. पुढविकाइए णं भंते ! सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए समो० २ जे भविए सोहम्मे कप्पे जाव ईसिपब्भाराए०। ५. एवं एएणं कमेणं जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अंतरा समोहए समाणे जे भविए सोहम्मे जाव ईसिपब्भाराए उववाएयव्वो। [सु. ६-१७. सोहम्मकप्पाईईसिपब्भारपुढविअंतरसमोहयस्स पुढविकाइयस्स पढमाइसत्तमनरयपुढविअंतरेसु पुढविकाइयत्ताए उववज्जमाणस्स पुव्वं पच्छा वा आहारगहणनिरूवणं] ६. पुढविकाइए णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं सणंकुमार-माहिंदाण य कप्पाणं अंतरा समोहए, समो० २ जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! किं पुव्विं उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा? सेसं तं चेव जाव से तेणट्ठेणं जाव णिक्खेवओ। ७. पुढविकाइए णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं सणंकुमार-माहिंदाण य कप्पाणं अंतरा समोहए, स० २ जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए? एवं चेव। ८. एवं जाव अहेसत्तमाए उववातेतव्वो। ९. एवं सणंकुमार-माहिंदाणं बंभलोगस्स य कप्पस्स अंतरा समोहए, सह० २ पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो। १०. एवं बंभलोगस्स लंतगस्स य कप्पस्स अंतरा समोहए० पुणरवि जाव अहेसत्तमाए०। ११. एवं लंतगस्स महासुक्कस्स य कप्पस्स अंतरा समोहए, समोहणित्ता पुणरवि जाव अहेसत्तमाए०। १२. एवं महासुक्कस्स सहस्सारस्स य कप्पस्स अंतरा० पुणरवि जाव अहेसत्तमाए०। १३. एवं सहस्सारस्स आणय-पाणयाण य कप्पाणं अंतरा० पुणरवि जाव अहेसत्तमाए०। १४. एवं आणय-पाणयाणं आरणऽच्चुयाण य कप्पाणं अंतरा० पुणरवि जाव अहेसत्तमाए०। १५. एवं आरणऽच्चुताणं गेवेज्जविमाणाण य अंतरा० जाव अहेसत्तमाए०। १६. एवं गेवेज्जविमाणाण अणुत्तरविमाणाण य अंतरा० पुणरवि जाव अहेसत्तमाए०। १७. एवं अणुत्तरविमाणाणं ईसिपब्भाराए य अंतरा० पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो। [सु. १८-२०. पढमाइपंचमसुत्तवण्णियपुढविकायवत्तव्वयाणुसारेण आउकायस्स निरूवणं]१८. आउकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समो० २ जे भविए सोहम्मे कप्पे आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? सेसं जहा पुढविकाइयस्स जाव सेतेणट्ठेणं०। १९. एवं पढम-दोच्चाणं अंतरा समोहयओ जाव ईसिपब्भाराए य उववातेयव्वो। २०. एवं एएणं कमेणं जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अंतरा० समोहए, समो० २ जाव इसिपब्भाराए उववातेयव्वो आउक्काइयत्ताए। [सु.२१-२३. छट्ठाइसत्तरसमसुत्तवण्णियपुढविकायवत्तव्वयाणुसारेण आउकायस्स निरूवणं]२१. आउयाए णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं सणंकुमार-माहिंददाण य कप्पाणं अंतरा समोहते, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलएसु आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? सेसं तं चेव। २२. एवं एएहिं चेव अंतरा समोहयओ जाव अहेसत्तमाए पुढवीए घणोदधिवलएसु आउकाइयत्ताए उववाएयव्वो। २३. एवं जाव अणुत्तरविमाणाणं ईसिपब्भाराए य पुढवीए अंतरा समोहए जाव अहेसत्तमाए घणोदधिवलएसु उववातेयव्वो।[सु. २४. पढमाइसत्तरसमसुत्तवण्णियपुढविकायवत्तव्वयाणुसारेण वाउकायस्स निरूवणं]२४. वाउकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउकाइयत्ताए उववज्जित्तए०? एवं जहा सत्तसमसए वाउकाइयउद्देसए (स० १७ उ० १० सु० १) तहा इह वि, नवरं अंतरेसु समोहणावेयव्वो, सेसं तं चेव जाव अणुत्तरविमाणाणं ईसिपब्भाराए य पुढवीए अंतरा समोहए, समो० २ जे भविए अहेसत्तमाए घणवात-तणुवाते घणवातवलएसु तणुवायवलएसु वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, सेसं तं चेव, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।॥२०.६॥ **☆☆☆ सत्तमो उद्देसओ 'बंधे' ☆☆☆** [सु. १. बंधस्स भेदतिगं] १. कतिविधे णं भंते ! बंधे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविधे बंधे पन्नत्ते, तं जहा-जीवप्पयोगबंधे अणंतरबंधे परंपरबंधे। [सु. २-३. चउवीसइदंडएसु बंधभेयतिगपरूवणा] २. नेरतियाणं भंते ! कतिविधे बंधे पन्नत्ते ? एवं चेव। ३. एवं जाव वेमाणियाणं। [सु. ४-७. अट्ठण्हं मूलकम्मपगडीणं भेयतिगं, तस्स य चउवीसइदंडएसु परूवणं]४. नाणावरणिज्जस्स णं भंते! कम्मस्स कतिविधे बंधे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविधे बंधे पन्नत्ते, तं जहा-जीवप्पयोगबंधे अणंतरबंधे परंपरबंधे। ५. नेरइयाणं भंते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कतिविधे बंधे पन्नत्ते ? एवं चेव। ६. एवं जाव वेमाणियाणं। ७. एवं जाव अंतराइयस्स। [सु. ८-११. अट्ठण्हं मुलकम्मपगडीणं उदए बंधभेयतिगं, तस्स य चउवीसइदंडएसु परूवणं] ८. णाणावरणिज्जोदयस्स णं भंते ! कम्मस्स कतिविधे बंधे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविहे बंधे पन्नत्ते। एवं चेव। ९. एवं नेरइयाण वि। १०. एवं जाव वेमाणियाणं। ११. एवं जाव अंतराइओदयस्स। [सु. १२-१८. वेदतिग-दंसणमोहणिज्ज-चरित्तमोहणिज्जाणं बंधभेयतिगं, तस्स य चउवीसइदंडएसु परूवणं] १२. इत्थिवेदस्स णं भंते ! कतिविधे बंधे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविधे बंधे पन्नत्ते। एवं चेव। १३. असुरकुमाराणं भंते ! इत्थिवेदस्स कतिविधे बंधे पन्नत्ते ? एवं चेव। १४. एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं जस्स इत्थिवेदो अत्थि। १५. एवं पुरिसवेदस्स वि; एवं नपुंसगवेदस्स वि; जाव वेमाणियाणं, नवरं जस्स जो अत्थि वेदो। १६. दंसणमोहणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स कतिविधे बंधे पन्नत्ते ? एवं चेव। १७. एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं। १८. एवं चरित्तमोहणिज्जस्स वि जाव वेमाणियाणं। [सु. १९-२१. ओरालियसरीराइपदेसु बंधभेयतिगाइपरूवणं] १९. एवं एएणं कमेणं ओरालियसरीरस्स जाव कम्मगसरीरस्स, आहारसण्णाए जाव परिग्गहसण्णाए, कण्हलेसाए जाव सुक्कलेसाए, सम्मद्दिट्ठीए मिच्छादिट्ठीए सम्मामिच्छादिट्ठीए, आभिणिबोहियणाणस्स जाव केवलनाणस्स, मतिअन्नाणस्स सुयअन्नाणस्स विभंगनाणस्स। २०. एवं आभिनिबोहियनाणविसयस्स णं भंते ! कतिविधे बंधे पन्नत्ते ? जाव केवलनाणविसयस्स, मतिअन्नाणविसयस्स, सुयअन्नाणविसयस्स, विभंगनाणविसयस्स; एएसिं सव्वेसिं पयाणं तिविहे बंधे पन्नत्ते। २१. सव्वेते चउवीसं दंडगा भाणियव्वा, नवरं जाणियव्वं जस्स जं अत्थि; जाव वेमाणियाणं भंते ! विभंगणाणविसयस्स कतिविधे बंधे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविहे बंधे पन्नत्ते, तं जहा-जीवप्पयोगबंधे अणंतरबंधे परंपरबंधे। सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरति। ॥२०.७॥ ☆☆☆ **अट्ठमो उद्देसओ 'भूमी'** ☆☆☆ [सु. १. कम्मभूमिसंखानिरूवणं] १. कति णं भंते ! कम्मभूमीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! पन्नरस कम्मभूमीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-पंच भरहाइं, पंच एरवताइं, पंच महाविदेहाइं। [सु. २. अकम्मभूमिसंखानिरूवणं]२. कति णं भंते ! अकम्मभूमीओ पन्नत्ताओ? गोयमा! तीसं अकम्मभूमीओ पन्नत्ताओ, तं जहा -पंच हेमवयाइं, पंच हेरण्णवयाइं, पंच हरिवासाइं, पंच रम्मगवासाइं, पंच देवकुरूओ, पंच उत्तरकुरूओ। [सु. ३-५. अकम्मभुमि-महाविदेहेसु भरहेरवएसु य ओसप्पिणि उस्सप्पिणीणं अभाव-सब्भावनिरूवणं]३. एयासु णं भंते ! तीसासु अकम्मभूमीसु अत्थि ओसप्पिणी ति वा, उस्सप्पिणी ति वा? णो तिणट्ठे समट्ठे। ४. एएसु णं भंते ! पंचसु भरहेसु, पंचसु एरवएसु अत्थि ओसप्पिणी ति वा, उस्सप्पिणी ति वा? हंता, अत्थि। ५. एएसु णं भंते ! पंचसु महाविदेहेसु०? णेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए णं तत्थ काले पन्नत्ते समणाउसो !। [सु. ६. महाविदेहे भरहेरवएसु य कमेणं चाउज्जाम-पंचमहव्वइयधम्मनिरूवणं] ६. एएसु णं भंते ! पंचसु महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो पंचमहव्वतियं सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवयंति? णो तिणट्ठे समट्ठे। एएसु णं पंचसु भरहेसु, पंचसु एरवएसु पुरिम-पच्छिमगा दुवे अरहंता भगवंतो पंचमहव्वतियं सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवयंति, अवसेसा णं अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति। एएसु णं पंचसु महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति। [सु. ७. भरहखेत्तवट्ठमाणओसप्पिणीए चउवीसइतित्थयरनामाइं] ७. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए कति तित्थयरा पन्नत्ता ? गोयमा ! चउवीसं तित्थयरा पन्नत्ता, तं जहा-उसभ-अजिय-संभव-अभिनंदण-सुमति-सुप्पभ-सुपास-ससि-पुप्फदंत-सीयल-वासुपुज्ज-विमल-अणंतइ-धम्म-संति-कुंथु-अर-मल्लि-मुणिसुव्वय-नमि-पास-वद्धमाणा। [सु. ८-९. चउवीसइतित्थयराणं अंतराणि, जिणंतरेसु य कालियसुयवोच्छेयअवोच्छेयनिरूयणं] ८. एएसि णं भंते ! चउवीसाए तित्थयराणं कति जिणंतरा पन्नत्ता ? गोयमा ! तेवीसं जिणंतरा पन्नत्ता। ९. एएसु णं भंते ! तेवीसाए जिणंतरेसु कस्स कहिं कालियसुयस्स वोच्छेदे पन्नत्ते ? गोयमा ! एएसु णं तेवीसाए जिणंतरेसु पुरिम-पच्छिमएसु अट्ठसु अट्ठसु जिणंतरेसु, एत्थ णं कालियसुयस्स अवोच्छेदे पन्नत्ते, मज्झिमएसु सत्तसु जिणंतरेसु एत्थ णं कालियसुयस्स वोच्छेदे पन्नत्ते, सव्वत्थ वि णं वोच्छिन्ने दिट्ठिवाए। [सु. १०-११. भगवंतं सेसतित्थयरे य पडुच्च पुव्वगयसुय-अणुसज्जाणासमयनिरूवणं] १०. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुपियाणं केवितियं कालं पुव्वगए अणुसज्जिस्सति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए ममं एगं वाससहस्सं

अणुसज्जिस्सति। ११. जहा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुपियाणं एगं वाससहस्सं पुव्वगए अणुसज्जिस्सति तहा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए अवसेसाणं तित्थगराणं केवतियं कालं पुव्वगए अणुसज्जित्था ? गोयमा ! अत्थेगइयाणं संखेज्जं कालं, अत्थेगइयाणं असंखेज्जं कालं। [सु. १२-१३. भगवंतं आगमेस्सचरमतित्थगरे य पडुच्च तित्थाणुसज्जणा-समयनिरूवणं] १२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुपियाणं केवतियं कालं तित्थे अणुसज्जिस्सति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए ममं एक्कवीसं वाससहस्साइं तित्थे अणुसज्जिस्सति। १३. जहा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुपियाणं एक्कवीसं वाससहस्साइं तित्थे अणुसज्जिस्सति तहा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेस्साणं चरिमतित्थगरस्स केवतियं कालं तित्थे अणुसज्जिस्सति ? गोयमा ! जावतिए णं उसभस्स अरहओ कोसलियस्स जिणपरियाए तावतियाइं संखेज्जाइं आगमेस्साणं चरिमतित्थगरस्स तित्थे अणुसज्जिस्सति। [सु. १४. चाउव्वण्णस्स समणसंघस्स तित्थत्तं] १४. तित्थं भंते ! तित्थं, तित्थगरे तित्थं ? गोयमा ! अरहा ताव नियमं तित्थगरे, तित्थं पुण चाउव्वण्णाइण्णो समणसंघो, तं जहा-समणा समणीओ सावगा साविगाओ। [सु. १५. दुवालसंगगणिपिडगस्स पवयणत्तं] १५. पवयणं भंते ! पवयणं, पावयणी पवयणं ? गोयमा ! अरहा ताव नियमं पावयणी, पवयणं पुण दुवालसंगे गणिपिडगे, तं जहा-आयारो जाव दिट्ठिवाओ। [सु. १६. उग्ग-भोग-राइण्ण-इक्खाग-नाय-कोरव्वेसु धम्मपालण-देवलोग-सिद्धिगमणनिरूवणं]१६. जे इमे भंते ! उग्गा भोगा राइण्णा इक्खागा नाया कोरव्वा, एए णं अस्सिं धम्मे ओगाहंति, अस्सिं अट्ठविहं कम्मरयमलं पवाहेंति, अट्ठ० पवा० २ ततो पच्छा सिज्झंति जाव अंतं करेंति ? हंता, गोयमा ! जे इमे उग्गा भोगा० तं चेव जाव अंतं करेंति। अत्थेगइया अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। [सु. १७. चउव्विहदेवलोयनिरूवणं] १७. कतिविधा णं भंते ! देवलोया पन्नत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पन्नत्त, तं जहा-भवणवासी वाणमंतरा जोतिसिया वेमाणिया। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥२०.८॥ **☆☆☆ नवमो उद्देसओ 'चारण' ☆☆☆** [सु.१.विज्जाचारण-जंघाचारणरूवं चारणभेयदुगं] १. कतिविधा णं भंते ! चारणा पन्नत्ता? गोयमा ! दुविहा चारणा पन्नत्ता, तं जहा-विज्जाचारणा जंघाचारणा य। [सु. २. विज्जाचारणसरूवं]२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति-विज्जाचारणे विज्जाचारणे ? गोयमा ! तस्स णं छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं विज्जाए उत्तारगुणलद्धिं खममाणस्स विज्जाचारणलद्धी नामं लद्धी समुप्पज्जति, से तेणट्ठेणं जाव विज्जाचारणे विज्जाचारणे। [सु. ३-५. विज्जचारणसंबंधियसिग्घ-तिरिय-उड्ढगतिविसयनिरूवणाइ] ३. विज्जाचारणस्स णं भंते ! कहं सीहा गती ? कहं सीहे गतिविसए पन्नत्ते ? गोयमा ! अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव० जाव किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं, देवे णं महिड्ढीए जाव महेसक्खे जाव 'इणामेव इणामेव' त्ति कट्टु केवलकप्पं जबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा, विज्जाचारणस्स णं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पन्नत्ते। ४. विज्जाचारणस्स णं भंते ! तिरियं केवतिए गतिविसए पन्नत्ते ? गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं माणुसुत्तरे पव्वए समोसरणं करेति, माणु० क० २ तहिं चेतियाइं वंदति, तहिं० वं० २ बितिएणं उप्पाएणं नंदिस्सरवरे दीवे समोसरणं करेति, नंदि० क० २ तहिं चेतियाइं वंदति, तहिं० वं० २ तओ पडिनियत्तति, त० प० २ इहमागच्छति, इहमा० २ इहं चेतियाइं वंदइ। विज्जाचारणस्स णं गोयमा ! तिरिय एवतिए गतिविसए पन्नत्ते। ५. विज्जाचारणस्स णं भंते ! उड्ढं केवतिए गतिविसए पन्नत्ते ? गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेति, नं० क० २ तहिं चेतियाइं वंदइ, तहिं० वं २ बितिएणं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेइ, पं० क० २ तहिं चेतियाइं वंदति, तहिं० वं० २ तओ पडिनियत्तति, तओ० प० २ इहमागच्छति, इहमा० २ इहं चेतियाइं वंदइ। विज्जाचारणस्स णं गोयमा ! उड्ढं एवतिए गतिविसए पन्नत्ते। से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेति, नत्थि तस्स आराहणा; से णं तस्स ठाणस्स आलोयपडिक्कंते कालं करेति, अत्थि तस्स आराहणा। [सु. ६. जंघाचारणसरूवं] ६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-जंघाचारणे जंघाचारणे ? गोयमा ! तस्स णं अट्ठमंअट्ठमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स जंघाचारणलद्धी नामं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लद्धी समुप्पज्जइ। से तेणट्ठेणं जाव जंघाचारणे जंघाचारणे। [सु. ७-९. जंघाचारणसंबंधियसिग्घ-तिरिय-उड्ढगतिविसयनिरूवणाइ] ७. जंघाचारणस्स णं भंते! कहं सीहा गति? कहं सीहे गतिविसए पन्नत्ते? गोयमा! अयं णं जंबुद्दीवे दीवे एवं जहेव विज्जाचारणस्स, नवरं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा। जंघाचारणस्स णं गोयमा! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसहे पन्नत्ते। सेसं तं चेव। ८. जंघाचारणस्स णं भंते! तिरियं केवतिए गतिविसए पन्नत्ते? गोयमा! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं रुयगवरे दीवे समोसरणं करेति, रूय० क० २ तहिं चेतियाइं वंदति, तहिं० वं० २ ततो पडिनियत्तमाणे बितिएणं उप्पाएणं नंदीसरवरदीवे समोसरणं करेति, नं० क० २ तहिं चेतियाइं वंदति, तहिं० वं० २ इहमागच्छति, इहमा० २ इह चेतियाइं वंदति। जंघाचारणस्स णं गोयमा! तिरियं एवतिए गतिविसए पन्नत्ते। ९. जंघाचारणस्स णं भंते! उड्ढं केवतिए गतिविसए पन्नत्ते? गोयमा! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेति, स० क० २ तहिं चेतियाइं वंदति, तहिं वं० २ ततो पडिनियत्तमाणे बितिएणं उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेति, नं० क० २ तहिं चेतियाइं वंदति, तहिं० वं० २ इहमागच्छति, इहमा० २ इहं चेतियाइं वंदइ। जंघाचारणस्स णं गोयमा! उड्ढं एवतिए गतिविसए पन्नत्ते। से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेति, नत्थि तस्स आराहणा; से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेति, अत्थि तस्स आराहणा। सेवं भंते! जाव विहरति। ॥२०.९॥ ☆☆☆ **दसमो उद्देसओ 'सोवक्कमा जीवा'** ☆☆☆ [सु. १-६. जीव-चउवीसइदंडएसु जहाजोगं सोवक्कम-निरुवक्कमआउयत्तं] १. जीवा णं भंते! किं सोवक्कमाउया, निरुवक्कमाउया? गोयमा! जीवा सोवक्कमाउया वि निरूवक्कमाउया वि। २. नेरतिया णं० पुच्छा। गोयमा! नेरतिया नो सोवक्कमाउया, निरूवक्कमाउया। ३. एवं जाव थणियकुमारा। ४. पुढविकाइया जहा जीवा। ५. एवं जाव मणुस्सा। ६. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा नेरतिया। [सु. ७-८. चउवीसइदंडएसु आय-परोवक्कमेणं निरूवक्कमेणं च उववायनिरूवणं] ७. नेरतिया णं भंते! किं आओवक्कमेणं उववज्जंति, परोवक्कमेणं उववज्जंति, निरुवक्कमेणं उववज्जंति? गोयमा! आतोवक्कमेण वि उववज्जंति, परोवक्कमेण वि उववज्जंति, निरूवक्कमेण वि उववज्जंति। ८. एवं जाव वेमाणिया। [सु. ९-१२. चउवीसइदंडएसु आय-परोवक्कमेणं निरुवक्कमेणं च जहाजोगं उव्वट्टणानिरूवणं] ९. नेरतिया णं भंते! किं आओवक्कमेणं उव्वट्टंति, परोवक्कमेणं उव्वट्टंति, निरूवक्कमेणं उव्वट्टंति? गोयमा! नो आओवक्कमेणं उव्वट्टंति, नो परोवक्कमेणं उव्वट्टंति, निरुवक्कमेणं उव्वट्टंति। १०. एवं जाव थणियकुमारा। ११. पुढविकाइया जाव मणुस्सा तिसु उव्वट्टंति। १२. सेसा जहा नेरइया, नवरं जोतिसिय-वेमाणिया चयंति। [सु. १३-१६. चउवीसइदंडएसु आइड्ढिउववाय-उव्वट्टणानिरूवणं] १३. नेरतिया णं भंते! किं आतिड्ढीए उववज्जंति, परिड्ढीए उववज्जंति? गोयमा! आतिड्ढीए उववज्जंति, नो परिडीए उववज्जंति। १४. एवं जाव वेमाणिया। १५. नेरतिया णं भंते! किं आतिड्ढीए उव्वट्टंति, परिड्ढीए उव्वट्टंति? गोयमा! आतिड्ढीए उव्वट्टंति, नो परिड्ढीए उव्वट्टंति। १६. एवं जाव वेमाणिया, नवरं जोतिसिय-वेमाणिया चयंतीति अभिलावो। [सु. १७-२२. चउवीसइदंडएसु आयकम्मुणा आयप्पओगेणं च उववाय-उव्वट्टणानिरूवणं] १७. नेरइया णं भंते! किं आयकम्मुणा उववज्जंति, परकम्मुणा उववज्जंति? गोयमा! आयकम्मुणा उववज्जंति, नो परकम्मुणा उववज्जंति। १८. एवं जाव वेमाणिया। १९. एवं उव्वट्टणादंडओ वि। २०. नेरइया णं भंते! किं आयप्पयोगेणं उववज्जंति, परप्पयोगेणं उववज्जंति? गोयमा! आयप्पयोगेणं उववज्जंति, नो परप्पयोगेणं उववज्जंति। २१. एवं जाव वेमाणिया। २२. एवं उव्वट्टणादंडओ वि। [सु. २३-२८. चउवीसइदंडएसु सिद्धेसु य कति-अकति-अवत्तव्वगसंचिय-पदाणं जहाजोगं निरूवणं] २३. (१) नेरइया णं भंते! किं कतिसंचिता, अकतिसंचिता, अव्वत्तव्वगसंचिता? गोयमा! नेरइया कतिसंचिया वि, अकतिसंचिता वि, अवत्तव्वगसंचिता वि। (२) से केणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसंचिता वि? गोयमा! जे णं नेरइया संखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया कतिसंचिता, जे णं नेरइया असंखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया अकतिसंचिया, जे णं नेरइया एक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया अवत्तव्वगसंचिता; से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव अवत्तव्वगसंचिता वि। २४. एवं जाव थणियकुमारा। २५.(१) पुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा! पुढविकाइया

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नो कतिसंचिता, अकतिसंचिता, नो अवत्तव्वगसंचिता। (२) से केणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसचिता ? गोयमा ! पुढविकाइया असंखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति; से तेणट्ठेणं जाव नो अवत्तव्वगसचिता। २६. एवं जाव वणस्सतिकाइया। २७. बेंदिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया। २८. (१) सिद्धाणं पुच्छा। गोयमा ! सिद्धा कतिसचिता, नो अकतिसचिता, अवत्तव्वगसचिता वि। (२) से केणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसंचिता वि ? गोयमा ! जे णं सिद्धा संखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा कतिसंचिता, जे णं सिद्धा एक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा अवत्तव्वगसंचिता; से तेणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसंचिता वि।

[सु. २९-३०. कति-अकति-अवत्तव्वगसंचिएसु चउवीसइदंडएसु अप्पाबहुयं]२९. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं कतिसंचिताणं अकतिसंचियाणं अवत्तव्वगसंचिताण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया अवत्तव्वगसंचिता, कतिसंचिता संखेज्जगुणा, अकतिसंचिता असंखेज्जगुणा। ३०. एवं एगिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं अप्पबहुगं, एगिंदियाणं नत्थि अप्पाबहुगं। [सु. ३१. कति -अव्वत्तव्वगसंचिएसु सिद्धेसु अप्पाबहुयं] ३१. एएसि णं भंते ! सिद्धाणं कतिसंचियाणं, अवत्तव्वगसंचिताण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा कतिसंचिता, अवत्तव्वगसंचिता संखेज्जगुणा। [सु: ३२-३६. चउवीसइदंडएसु सिद्धेसु य छक्कपिंडिय-नोछक्कपिडियाइ-पयाणं जहाजोगं निरूवणं] ३२. (१) नेरइया णं भंते ! किं छक्कसमज्जिया, नोछक्कसमज्जिया, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया, छक्केहिं समज्जिया, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया? गोयमा ! नेरइया छक्कसमज्जिया वि, नोछक्कसमज्जिया वि, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया वि, छक्केहिं समज्जिया वि, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-नेरइया छक्कसमज्जिया वि जाव छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि ? गोयमा ! जे णं नेरइया छक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया छक्कसमज्जिता। जे णं नेरइया जहन्नेणं एक्केणं वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेण पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया नोछक्कसमज्जिया। जे णं नेरइया एगेणं छक्कएणं; अन्नेण य जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया। जे णं नेरइया णेगेहिं छक्कएहिं पवेसणगं पविसंति ते णं नेरइया छक्केहिं समज्जिया। जे णं नेरइया णेगेहिं छक्कएहिं; अन्नेण य जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया। से तेणट्ठेणं तं चेव जाव समज्जिया वि। ३३. एवं जाव थणियकुमारा। ३४. (१) पुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! पुढविकाइया नो छक्कसमज्जिया, नो नोछक्कसमज्जिया, नो छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया, छक्केहिं समज्जिया वि, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि। (२) से केणट्ठेणं जाव समज्जिता वि ? गोयमा ! जे णं पुढविकाइया णेगेहिं छक्कएहिं पवेसणगं पविसंति ते णं पुढविकाइया छक्केहिं समज्जिया। जे णं पुढविकाइया णेगेहिं छक्कएहि; अन्नेण य जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तिहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं पुढविकाइया छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया। से तेणट्ठेणं जाव समज्जिया वि। ३५. एवं जाव वणस्सइकाइया, बेइंदिया जाव वेमाणिया। ३६. सिद्धा जहा नेरइया। [सु. ३७-४२. छक्कपिंडिय-नोछक्कपिंडियाईणं चउवीसइदंडयाणं सिद्धाणं च अप्पाबहुयं] ३७. एएसि णं भंते ! नेरतियाणं छक्कसमज्जियाणं, नोछक्कसमज्जिताणं, छक्केण य नोछक्केण य समज्जियाणं, छक्केहिं समज्जियाणं, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियाणं कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया छक्कसमज्जिया, नोछक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केहिं समज्जिया असंखेज्जगुणा, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा। ३८. एवं जाव थणियकुमारा। ३९. एएसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं छक्केहिं समज्जिताणं, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियाणं कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया छक्केहिं समज्जिया, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा। ४०. एवं जाव वणस्सइकाइयाणं। ४१. बेइंदियाणं जाव वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं। ४२. एएसि णं भंते ! सिद्धाणं छक्कसमज्जियाणं, नोछक्कसमज्जियाणं जाव छक्केहि नोछक्केण य समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया, छक्केहिं समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा, नोछक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा।[सु. ४३-४७. चउवीसइदंडएसु सिद्धेसु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य बारसयपिंडिय-नोबारसयपिंडियाइपयाणं जहाजोगं निरूवणं] ४३.(१) नेरइया णं भंते ! किं बारससमज्जिता, नोबारससमज्जिया, बारसएण य नोबारसएण य समज्जिया, बारसएहिं समज्जिया, बारसएहि य नोबारसएण य समज्जिया? गोयमा ! नेरइया बारससमज्जिया वि जाव बारसएहि य नोबारसएण य समज्जिया वि। (२) से केणट्ठेणं जाव समज्जिया वि ? गोयमा ! जे णं नेरइया बारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया बारससमज्जिया। जे णं नेरइया जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया नोबारससमज्जिया। जे णं नेरइया बारसएणं; अन्नेण य जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया बारसएण य नोबारसएण य समज्जिया। जे णं नेरइया णेगेहिं बारसएहिं; अन्नेण य जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया बारसएहि य नोबारसएण य स ग्रं० १२००० मज्जिया। से तेणट्ठेणं जाव समज्जिया वि। ४४. एवं जाव थणियकुमारा। ४५.(१) पुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! पुढविकाइया नो बारसयसमज्जिया, नो नोबारसयसमज्जिया, नो बारसएण य नोबारसएण य समज्जिया, बारसएहिं समज्जिया वि, बारसएहिं य नोबारसएण य समज्जिया वि।(२) से केणट्ठेणं जाव समज्जिया वि ? गोयमा ! जे णं पुढविकाइया णेगेहिं बारसएहिं पवेसणगं पविसंति ते णं पुढविकाइया बारसएहिं समज्जिया। जे णं पुढविकाइया णेगेहिं बारसएहिं; अन्नेण य जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं पुढविकाइया बारसएहिं य नोबारसएण य समज्जिया। से तेणट्ठेणं जाव समज्जिया वि। ४६. एवं जाव वणस्सइकाइया। ४७. बेइंदिया जाव सिद्धा जहा नेरइया। [सु. ४८. बारसयपिंडिय-नोबारसयपिंडियाईणं चउवीसइदंडयाणं सिद्धाणं च अप्पाबहुयं] ४८. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं बारससमज्जियाणं० सव्वेसिं अप्पबहुगं जहा छक्कसमज्जियाणं, नवरं बारसाभिलावो, सेसं तं चेव। [सु. ४९-५४. चउवीसइदंडएसु सिद्धेसु य चुलसीतिपिंडिय-नोचुलसीति-पिंडियाइपयाणं जहाजोगं निरूवणं] ४९. (१) नेरतिया णं भंते ! किं चुलसीतिसमज्जिया, नोचुलसीतिसमज्जिया, चुलसीतीए य नोचुलसीतीते य समज्जिया, चुलसीतीहिं समज्जिया, चुलसीतीहि य नो चुलसीतीहि य नो चुलसीतीए य समज्जिया ? गोयमा ! नेरतिया चुलसीतिसमज्जिया वि जाव चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया वि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव समज्जिया वि ? गोयमा ! जे णं नेरइया चुलसीतीएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया चुलसीतिसमज्जिया। जे णं नेरइया जहन्नेणं एक्केणं वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं तेसीतिपवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया नोचुलसीतिसमज्जिया। जे णं नेरइया चुलसीतीएणं; अन्नेण य जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं तेसीतीएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरतिया चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया। जे णं नेरइया णेगेहिं चुलसीतीएहिं पवेसणगं पविसंति ते णं नेरतिया चुलसीतीहिं समज्जिया। जे णं नेरइया णेगेहिं चुलसीतीएहिं, अन्नेण य जहन्नेणं एक्केण वा जाव उक्कोसेणं तेसीयएणं जाव पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरतिया चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया। से तेणट्ठेणं जाव समज्जिया वि। ५०. एवं जाव थणियकुमारा। ५१. पुढविकाइया तहेव पच्छिल्लएहिं दोहिं, नवरं अभिलावो चुलसीतिगओ। ५२. एवं जाव वणस्सतिकाइया। ५३. बेइंदिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया। ५४. (१) सिद्धाणं पुच्छा। गोयमा ! सिद्धा चुलसीतिसमज्जिता वि, नोचुलसीतिसमज्जिया वि, चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया वि, नो चुलसीतीहिं समज्जिया, नो चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया। (२) से केणट्ठेणं जाव समज्जिया ? गोयमा ! जे णं सिद्धा चुलसीतीएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा चुलसीतिसमज्जिता। जे णं सिद्धा जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं तेसीतीएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा नोचुलसीतिसमज्जिया। जे णं सिद्धा चुलसीतएणं; अन्नेण य जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं तेसीतएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया। से तेणट्ठेणं जाव समज्जिता। [सु. ५५-५६. चुलसीतिपिंडिय-नोचुलसीतिपिंडियाईणं चउवीसइदंडयाणं सिद्धाणं च अप्पाबहुयं] ५५. एएसि णं भंते ! नेरतियाणं चुलसीतिसमज्जियाणं नोचुलसीतिसमज्जियाणं० सव्वेसिं अप्पाबहुगं जहा छक्कसमज्जियाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं अभिलावो चुलसीतओ। ५६. एएसि णं भंते ! सिद्धाणं चुलसीतिसमज्जियाणं, नोचुलसीतिसमज्जियाणं, चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जियाणं कयरे कयरेहिंतो जाव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया, चुलसीतिसमज्जिया अणंतगुणा, नोचुलसीतिसमज्जिया अणंतगुणा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ। ।।२०.१०।। **卐卐卐।। वीसतिमं सयं समत्तं ।।२०।। एगवीसतिमं सयं 卐卐卐** [सु. १. एगवीसतिमसयस्स अट्ठण्हं वग्गाणं नामाइं, असीइउद्देसयसंखा-निरूवणं च] १. सालि १ कल २ अयसि ३ वंसे ४ उक्खू ५ दब्भे ६ य अब्भ ७ तुलसी ८ य। अट्ठेते दसवग्गा असीति पुण होंति उद्देसा ।।१।। **☆☆☆ पढमे 'सालि' वग्गे पढमो उद्देसओ 'मूल' ☆☆☆** [सु. २. पढमवग्गस्सुवुग्घाओ] २. रायगिहे जाव एवं वयासि- [सु. ३-१६. मूलत्ताए वक्कंतेसु सालि-वीहिआदिजीवेसु उववाय-संखासरीरोगाहणा -कम्मबंध-वेद-उदय-उदीरणा-लेसा-दिट्ठिआइपयाणं निरूवणं] ३. अह भंते ! साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवाणं, एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरि० मणु० देव० जहा वक्कंतीए तहेव उववातो, नवरं देववज्जं। ४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति। अवहारो जहा उप्पलुद्देसे (स० ११ उ० १ सु० ७)। ५. एतेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं। ६. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा, अबंधगा? तहेव जहा उप्पलुद्देसे (स० ११ उ० १ सु० ९)। ७. एवं वेदे वि, उदए वि, उदीरणाए वि। ८. ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा नील० काउ० ? छव्वीसं भंगा। ९. दिट्ठी जाव इंदिया जहा उप्पलुद्देसे (स०११ उ० १ सु० १५-३०)। १०. से णं भंते ! साली-वीही-गोधूम- ? जव- जवजवगमूलगजीवे कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। ११. से णं भंते ! साली-वीही-गोधूम- ?जव- जवजवगमूलगजीवे पुढविजीवे पुणरवि साली-वीहही जाव जवजवगमूलगजीवे केवतियं कालं सेवेज्जा?, केवतियं कालं गतिरागतिं करिज्जा? एवं जहा उप्पलुद्देसे (स० ११ उ० १ सु० ३२) १२. एएणं अभिलावेणं जाव मणुस्सजीवे। १३. आहारो जहा उप्पलुद्देसे (स० ११ उ०१ सु० २१)। १४. ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहत्तं। १५. समुग्घायसमोहया य उव्वट्टणा य जहा उप्पलुद्देसे (स० ११ उ० १ सु० ४२-४४)। १६. अह भंते! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता साली वीही जाव जवजवगमूलगजीवत्ताए उववन्नपुव्वा ? हंता, गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ।।२१-१.१।। **☆☆☆ पढमे 'सालि' वग्गे बीओ उद्देसओ 'कंदे' ☆☆☆** [सु. १. कंदत्ताए वक्कंतेसु सालि-वीहिआदिजीवेसु पढमुद्देसगाणुसारेणं निरूवणं] १. अह भंते! साली वीही जाव जवजवाणं, एएसि णं जे जीवा कंदत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ? एवं कंदाहिगारेण सो चेव मूलुद्देसो अपरिसेसो भाणियव्वो जाव असतिं अदुवा अणंतखुत्तो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ।।२१-१.२।। **☆☆☆ पढमे 'सालि' वग्गे तइओ उद्देसओ 'खंधे' ☆☆☆** [सु.१. खंधत्ताए वक्कंतेसु सालि०वीहिआदिजीवेसु पढमुद्देसगाणुसारेणं निरूवणं] १. एवं खंधे वि उद्देसओ नेतव्वो। ।।२१-१.३।। **☆☆☆ पढमे 'सालि' वग्गे चउत्थो उद्देसओ 'तया' ☆☆☆** सु. १. तयत्ताए वक्कतेसु सालि-वीहिआदिजीवेसु पढमुद्देसगाणुसारेणं निरूवणं १. एवं तयाए वि उद्देसो। ।।२१-१.४।। **☆☆☆ पढमे 'सालि' वग्गे पंचमो उद्देसओ 'साले' ☆☆☆** [सु.१. सालत्ताए वक्कंतेसु सालि-वीहिआदिजीवेसु पढमुद्देसगाणुसारेणं निरूवणं]१. साले वि उद्देसो भाणियव्वो। ।।२१-१.५।। **☆☆☆ पढमे 'सालि' वग्गे छट्ठो उद्देसओ 'पवाल' ☆☆☆** [सु. १. पवालत्ताए वक्कंतेसु सालि-वीहिआदिजीवेसु पढमुद्देसगाणुसारेणं निरूवणं १. पवाले वि उद्देसो भाणियव्वो। ।।२१-१.६।। **☆☆☆ पढमे 'सालि' वग्गे सत्तमो उद्देसओ 'पत्ते' ☆☆☆** [सु. १. पत्तत्ताए वक्कंतेसु सालि-वीहिआदिजीवेसु पढमुद्देसगाणुसारेणं निरूवणं]१. पत्ते वि उद्देसो भाणियव्वो। एए सत्त वि उद्देसगा अपरिसेसं जहा मूले तहा नेयव्वा। ।।२१-१.७।। **☆☆☆ पढमे 'सालि' वग्गे अट्ठमो उद्देसओ 'पुप्फे' ☆☆☆** [सु. १. पुप्फत्ताए वक्कंतेसु सालि-वीहिआदिजीवेसु पढमुद्देसगाणुसारेणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निरूवणं] १. एवं पुप्फे वि उद्देसओ, नवरं देवो उववज्जति जहा उप्पलुद्देसे (स०११ उ० १ सु० ५)। चत्तारि लेस्साओ, असीति भंगा। ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलसस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं अंगुलपुहत्तं। सेसं तं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते !०। ॥२१-१.८॥ ☆☆☆ **पढमे 'सालि' वग्गे नवमो उद्देसओ 'फल'** ☆☆☆[सु. १. फलत्ताए वक्कंतेसु सालि-वीहिआदिजीवेसु पढमुद्देसगाणुसारेणं निरूवणं] १. जहा पुप्फे एवं फले वि उद्देसओ अपरिसेसो भाणियव्वो। ॥२१-१.९॥ ☆☆☆**पढमे 'सालि' वग्गे दसमो उद्दसओ 'बीए'**☆☆☆ [सु. १. बीयत्ताए वक्कंतेसु सालि-वीहिआदिजीवेसु पढमुद्देसगाणुसारेणं निरूवणं] १. एवं बीए वि उद्देसओ। ॥२१-१.१०॥ ☆☆☆**एए दस उद्देसगा। ॥पढमो वग्गो समत्तो॥**☆☆☆ ॥२१.१॥ बितिए 'कल' वग्गे दस उद्देसगा [सु. १. पढम 'सालि' वग्गाणुसारेणं बिइयस्स कलवग्गस्स निरूवणं] १. अह भंते ! कल-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-निप्फाव-कुलत्थ-आलिसंदग-सडिण-पलिमंथगाणं, एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति? एवं मुलाईया दस उद्देसगा भाणियव्वा जहेव सालीणं निरवसेसं तहेव। ॥२१-२.१-१०॥ ☆☆☆**॥बितिओ वग्गो समत्तो ॥२१.२॥ ततिए 'अयसि' वग्गे दस उद्देसगा** ☆☆☆ [सु.१. पढमसालिवग्गाणुसारेणं तइयस्स अयसिवग्गस्स निरूवणं]१. अह भंते ! अयसि-कुसुंभ-कोद्दव-कंगु-रालग-वरा-कोदूसा-सण-सरिसव -मूलगबीयाणं, एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ? एवं एत्थ वि मूलाईया दस उद्देसगा जहेव सालीणं निरवसेसं तहेव भाणियव्वं। ॥२१-३.१-१०॥ ☆☆☆**॥तइओ वग्गो समत्तो ॥२१.३॥ चउत्थे 'वंस' वग्गे दस उद्देसगा** ☆☆☆[सु. १. पढमसालिवग्गाणुसारेणं चउत्थस्स वंसवग्गस्स निरूवणं]१. अह भंते ! वंस-वेणु-कणगकक्कावंस-चारूवंस-उडाकुडा-विमा-कंडा-वेणुया -कल्लाणीणं, एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलाईया दस उद्देसगा जहेव सालीणं, नवरं देवो सव्वत्थ वि न उववज्जति। तिन्नि लेसाओ। सव्वत्थ वि छव्वीसं भंगा। सेसं तं चेव। ॥२१-४.१-१०॥☆☆☆ **॥चउत्थो वग्गो समत्तो ॥२१.४॥ पचमे 'उक्खु' वग्गे दस उद्देसगा** ☆☆☆ [सु. १. चउत्थवंसवग्गाणुसारेणं पंचमस्स उक्खुवग्गस्स निरूवणं] १. अह भंते ! उक्खु-दक्खुवाडिया-वीरण-इक्कड-भमास-सुंठि-सर-वेत्त-तिमिरसतबोरग-नलाणं, एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति०? एवं जहेव वंसवग्गो तहेव एत्थ वि मूलाईया दस उद्देसगा नवरं खंधुद्देसे देवो उववज्जति। चत्तारि लेसाओ। सेसं तं चेव। ॥२१-५.१-१०॥ ☆☆☆**॥पंचमो वग्गो समत्तो॥२१.५॥ छट्ठे 'दब्भ'**☆☆☆ वग्गे दस उद्देसगा [सु. १. चउत्थवंसवग्गाणुसारेणं छट्ठस्स दब्भवग्गस्स निरूवणं] १. अह भंते ! सेडिय-भंतिय-कोतिय-दब्भ-कुस-पव्वग-पोदइल-अज्जुण-आसाढग-रोहियंस-मुतव-खीर-भुस-एरंड-कुरु-कुंद-करकर-सुंठ-विभंगु-महुरयण-थुरग-सिप्पिय-सुकलितणाणं, एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति०? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहेव वंसवग्गो। ॥२१-६.१-१०॥ ☆☆☆**॥छट्ठो वग्गो समत्तो॥२१.६॥**☆☆☆ सत्तमे 'अब्भ'वग्गे दस उद्देसगा [सु. १. चउत्थवंसवग्गाणुसारेणं सत्तमस्स अब्भवग्गस्स निरूवणं] १. अह भंते ! अब्भरूह-वायाण-हरितग-तंदुलेज्जग-तण-वत्थुल-बोरग-मज्जार-पाइ-विल्लि-पालक्क-दगपिप्पलिय-दव्वि-सोत्थि-कसाय-मंडुक्कि-मूलग-सरिसव-अंबिल-साग-जियंतगाणं, एएसि णं जे जीवा मूल०? एवं एत्थ वि दस उद्दसगा जहेव वंसवग्गो ॥ ॥२१-७.१-१०॥ ॥सत्तमो वग्गो समत्तो॥२१.७॥ अट्ठमे 'तुलसी' वग्गे दस उद्देसगा [सु. १. चउत्थवंसवग्गाणुसारेणं अट्ठमस्स तुलसीवग्गस्स निरूवणं]१. अह भंते! तुलसी-कण्हदराल-फणेज्जा-अज्जा-भूयणा-चोरा-जीरा-दमणा-मरुया-इंदीवर-सयपुप्फाणं, एतेसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहा वंसाणं। ॥२१-८.१-१०॥☆☆☆ **॥अट्ठमो वग्गो समत्तो ॥२१.८॥** ☆☆☆ एवं एएसु अट्ठसु वग्गेसु असीतिं उद्देसगा भवंति। **॥एगवीसतिमं सयं समत्तं॥२१॥ बावीसइमं सयं** [सु. १. बावीसइमसयस्स छण्हं वग्गाणं नामाइं, सट्ठिउद्दसयसंखानिरूवणं च] १. तालेगट्ठिय १-२ बहुबीयगा ३ य गुच्छा ४ य

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुम्म५ वल्ली ६ य। छ दसवग्गा एए सट्ठिं पुण होंति उद्देसा ॥१॥ **☆☆☆ पढमे 'ताल' वग्गे दस उद्देसगा ☆☆☆** [सु. २. पढमवग्गस्सुवुग्घाओ] २. रायगिहे जाव एवं वयासि- [सु. ३. एगवीसतिमसतपढमवग्गणुसारेणं पढमस्स तालवग्गस्स निरूवणं] ३. अह भंते ! ताल-तमाल-तक्कलि-तेतलि-साल-सरलासारगल्लाणं जाव केयति-कयलि-कंदलि-चम्मरुक्ख-गुंतरुक्ख-हिंगरुक्ख-लवंगरुक्ख-पूयफलि-खज्जूरि-नालिएरीणं, एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ?० एवं एत्थ वि मूलाईया दस उद्देसगा कायव्वा जहेव सालीणं (स० २१ व० १ उ० १ -१०), नवरं इमं नाणत्तं-मूले कंदे कंधे तयाए साले य, एएसु पंचसु उद्देसगेसु देवो न उववज्जति; तिण्णि लेसाओ; ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं; उवरिल्लेसु पंचसु उद्देसएसु देवो उववज्जति; चत्तारि लेसाओ; ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहत्तं; ओगाहणा मूले कंदे धणुपुहत्तं, खंधे तयाए साले य गाउयपुहत्तं, पवाले पत्ते य धणुपुहत्तं, पुप्फे हत्थपुहत्तं, फले बीए य अंगुलपुहत्तं; सव्वेसिं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं। सेसं जहा सालीणं। एवं एए दस उद्देसगा। ॥२११.११०॥ **☆☆☆ ॥पढमो वग्गो समत्तो॥ ☆☆☆** २२.१॥ **बीए 'एगट्ठिय' वग्गे दस उद्देसगा ☆☆☆** [सु. १. पढमतालवग्गाणुसारेणं बिइयस्स एगट्ठियवग्गस्स निरूवणं] १. अह भंते ! निंबंब-जंबु-कोसंब-ताल-अंकोल्ल-पीलु-सेलु-सल्लइ-मोयइ-मालुय-बउल-पलास-करंज-पुत्तंजीवग-ऽरिट्ठ-विहेलग-हरियग-भल्लाय-उंबरिय-खीरणि-धायइ-पियाल-पूइय-णिवाग-सेण्हण-पासिय-सीसव-अयसि-पुन्नाग-नागरुक्ख-सीवण्णि-असोगाणं, एएसि णं जे जीवा मुलत्ताए वक्कमंति०? एवं मूलाईया दस उद्देसगा कायव्वा निरवसेसं जहा तालवग्गे। ॥२२-२.१-१०॥ ॥बितिओ वग्गो समत्तो ॥२२.२॥ **☆☆☆ तइए 'बहुबीयग' वग्गे दस उद्देसगा ☆☆☆** [सु. १. पढमतालवग्गाणुसारेणं तइयस्स बहुबीयगवग्गस्स निरूवणं] १. अह भंते! अत्थिय-तेंदुय-बोर-कविट्ठ-अंबाडग-माउलुंग-बिल्ल-आ-मलग-फणस-दाडिम-आसोट्ठ-उंबर-वड-णग्गोह-नंदिरुक्ख-पिप्पलि-सत्तर-पिलक्खु-रुक्ख-काउंबरिय-कुत्थुंभरिय-देवदालि-तिलग-लउय-छत्तोह-सिरीस-सत्तिवण्ण-दधि-वण्ण-लोद्ध-धव-चंदण-अज्जुण-णीव-कुडग-कलंबाणं, एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति ते णं भंते !० ? एवं एत्थ वि ममूलाईया दस उद्देसगा तालवग्गसरिसा नेयव्वा जाव बीयं। ॥२२-३.१-१०॥ ॥तइओ वग्गो समत्तो॥२२.३॥ **☆☆☆ चउत्थे 'गुच्छ' वग्गे दस उद्देसगा ☆☆☆** [सु. १. एगवीसतिमससतचउत्थवग्गाणुसारेणं चउत्थस्स गुच्छवग्गस्स निरूवणं]१. अह भंते ! वाइंगणि-अल्लइ-बोंडइ० एवं जहा पण्णवण्णाए गाहाणुसारेणं णेयव्वं जाव गंजपाडला-दासि-अंकोल्लाणं, एएसि णं जे जीवा मूलताए वक्कमंति०? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा जाव बीयं ति निरवसेसं जहा वंसवग्गो (स० २१ व० ४)। ॥२-४.१-१०॥ ॥चउत्थो वग्गो समत्तो ॥२२.४॥ **☆☆☆ पंचमे 'गुम्म' वग्गे दस उद्देसगा ☆☆☆** [सु. १. एगवीसतिमसयपढवग्गाणुसारेणं पंचमस्स गुम्मवग्गस्स निरूवणं]१. अह भंते ! सिरियक-णवमालिय-कोरंटग-बंधुजीवग-मणोज्जा, जहा पण्णवणाए पढमपए, गाहाणुसारेणं जाव नवणीय-कुंद-महाजातीणं, एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति०? एवं एत्थ वि मूलाईया दस उद्देसगा निरवसेसं जहा सालीणं (स० २१ व० १ उ० १-१०)। ॥२२५.१-१०॥ ॥पंचमो वग्गो समत्तो ॥२२.५॥ **☆☆☆ छट्ठे 'वल्ली' वग्गे दस उद्देसगा ☆☆☆** [सु. १. पढमतालवग्गाणुसारेणं छट्ठस्स वल्लिवग्गस्स निरूवणं] १. अह भंते! पूसफलि-कालिंगी-तुंबी-तउसी-एला-वालुंकी एवं पदाणि छिंदियव्वाणि पण्णवणागाहाणुसारेणं जहा तालवग्गे जाव दधिफोल्लइ-काकलि-मोक्कलि-अक्कबोंदीणं, एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति०? एवं मूलाईया दस उद्दसगा कायव्वा जहा तालवग्गे। नवरं फलउद्देसओ, ओगाहणाए जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं; ठिती सव्वत्थ जहन्नेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं वासपुहत्तं। सेसं तं चेव। ॥२२-६.१-१०॥ **☆☆☆ ॥छट्ठो वग्गो समत्तो ॥☆☆☆** २२.६॥ एवं छसु वि वग्गेसु सट्ठिं उद्देसगा भवंति। **卐卐卐 ॥वावीसतिमं सयं समत्तं॥२२॥ 卐卐卐 तेवीसइमं सयं 卐卐卐** [सु. १. तेवीसइमसयस्स मंगलं] १. नमो सुयदेवताए भगवतीए। [सु. २. तेवीसइमसयस्स पंचण्हं वग्गाणं नामाइं, पण्णासउद्देसयसंखानिरूवणं च]२. आलुय १ लोही

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२ अवए ३ पाढा ४ तह मासवण्णि वल्ली य ५। पंचेते दसवग्गा पण्णासं होंति उद्देसा ॥१॥ ☆☆☆ **पढमे 'आलुय' वग्गे दस उद्देसगा** ☆☆☆[सु. ३. पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ]३. रायगिहे जाव एवं वयासि- [सु. ४. एगवीसतिमसतचउत्थवग्गाणुसारेणं पढमस्स आलुयवग्गस्स निरूवणं] ४. अह भंते ! आलुय-मूलग-सिंगबेर-हलिद्द-रूरू-कंडरिय-जारू-छीरबिरालि-किट्टि-कुंथु-कण्हकडभु-मधुपुयलइ-मधुसिंगि-णेरुहा-सप्पसुगंधा-छिन्नरुहा-बीयरुहाणं, एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं मूलाईया दस उद्देसगा कायव्वा वंसवग्ग (स० २१ व० ४) सरिसा, नवरं परिमाणं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति; अवहारो-गोयमा ! ते णं अणंता समये अवहीरमाणा अवहीरमाणा अणंताहिं ओसप्पिणि-स्सप्पिणीहिं एवतिकालेणं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया सिया; ठिती जहन्नेण वि उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं। सेसं तं चेव। ॥२३-१.१-१०॥ ॥पढमो वग्गो समत्तो॥२३.१॥ ☆☆☆ **बिइए 'लोही' वग्गे दस उद्देसगा** ☆☆☆ [सु. १. पढमवग्गणुसारेणं बिइयस्स लोहिवग्गस्स निरूवणं]१. अह भंते ! लोही-णीहू-थीहू-थीभगा-अस्सकण्णी-सीहकण्णी-सीउंठी-मुसुंठीणं, एएसि णं जे जीवा मूल०? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा जहेव आलुवग्गे, णवरं ओगाहणा तालवग्गसरिसा, सेसं तं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥२३-२.१-१०॥ ॥बितियो वग्गो समत्तो ॥२३.२॥ ☆☆☆**तइए 'अवय' वग्गे दस उद्देसगा** ☆☆☆ [सु. १. पढमवग्गाणुसारेणं तइयस्स अवयवग्गस्स निरूवणं] १. अह भंते ! आय-काय-कुहुण-कुंदुक्क-उव्वेहलिय-सफा-सज्झा-छत्ता-वंसाणिय-कुराणं, एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए०? एवं एत्थ वि मूलाईया दस उद्देसगा निरवसेसं जहा आलुवग्गे। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥२३-३.१-१०॥ ॥ततिओ वग्गो समत्तो ॥२३.३॥☆☆☆**चउत्थे 'पाढा' वग्गे दस उद्देसगा** ☆☆☆ [सु. १. पढमवग्गाणुसारेणं चउत्थस्स पाढावग्गस्स निरूवणं] १. अह भंते! पाडा-मिय-वालुंकि-मधुररस-रायवल्लि-पउम-मोढरि-दंति चंडीणं, एएसि णं जे जीवा मूल०? एवं एत्थ वि मूलाईया दस उद्देसगा आलुयवग्गसरिसा, नवरं ओगाहणा जहा वल्लीण, सेसं तं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥२३-४.१-१०॥ ॥चउत्थो वग्गो समत्तो ॥२३.४॥ ☆☆☆ **पंचमे 'मासवण्णी' वग्गे दस उद्देसगा** ☆☆☆ [सु. १. पढमवग्गाणुसारेणं पंचमस्स मासवण्णिवग्गस्स निरूवणं] १. अह भंते ! मासपण्णी-मुग्गपण्णी-जीवग-सरिसव-करेणुया-काओलि-खीरकाओलि-भंगि-णहि-किमिरासि-भद्दमुत्थ-णंगलइ-पयुयकिण्णा-पयोयलया-ढेहरेणु-या-लोहीणं, एएसि णं जे जीवा मूल०? एवं एत्थ वि दस उद्दसगा निरवसेसं आलुयवग्गसरिसा। ॥२३-५.१-१०॥ ॥पंचमो वग्गो समत्तो ॥२३.५॥ एवं एएसु पंचसु वि वग्गेसु पण्णासं उद्देसगा भाणियव्व त्ति। सव्वत्थ देवा ण उववज्जंति। तिन्नि लेसाओ। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ।卐卐卐 **॥तेवीसतिमं सयं समत्तं ॥२३॥** 卐卐卐 **चउवीसतिमं सयं** 卐卐卐 [सु. १. चउवीसइमसयस्स चउवीसइदंडगाभिधेएसु चउवीसइउद्देसएसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारनिरूवणं] १. उवाय १ परीमाणं २ संघयणुच्चत्तमेव ३-४ संठाणं ५। लेस्सा ६ दिट्ठी ७ णाणे अण्णाणे ८ जोग ९ उवओगे १० ॥१॥ सण्णा ११ कसाय १२ इंदिय १३ समुग्घाए १४ वेदणा १५ य वेदे १६ य। आउं १७ अज्झवसाणा १८ अणुबंधो १९ कायसंवेहो २० ॥२॥ जीवपए जीवपए जीवाणं दंडगम्मि उद्देसो। चउवीसतिमम्मि सए चउवीसं होंति उद्देसा ॥३॥ **पढमो नेरइयउद्देसओ** सु. २. पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ २. रायगिहे जाव एवं वदासि- सु. ३. गइं पडुच्च नरयोववायनिरूवणं ३. १ नेरइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति। २ जति तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदियतिरिक्खजोणिए-हिंतो उववज्जंति, बेइंदियतिरिक्ख०, तेइंदियतिरिक्ख०, चउरिंदियतिरिक्ख०, पंचेदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा ! नो एगिंदियतिरिक्खाजेणिएहिंतो उववज्जंति, नो बेइंदिय०, नो तेइंदिय०, नो चउरिंदिय०,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति। ३ जति पंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, असन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा ! सन्निपंचेंदियतितरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति, असन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति। (४) जति सन्निपंचेदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं जलचरेहिंतो उववज्जंति, थलचरेहिंतो उववज्जंति, खहचरेहिंतो उववज्जंति? गोयमा ! जलचरेहिंतो वि उववज्जंति, थलचरेहिंतो वि उववज्जंति, खहचरेहिंतो वि उववज्जंति। (५) जति जलचर-थलचर-खहचरेहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति। [सु. ४-५०. नरयउववज्जंतम्मि पज्जत्तअसन्निपंचेंदियतितरिक्खजोणियम्मि उववाय -परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ४. पज्जत्ताअसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगाए रयणप्पभाए पुढवीए उववज्जेज्जा। ५. पज्जत्ताअसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा? गोयमा ! जहन्नेणं दसवीससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ६. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति। ७. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंघयणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सेवट्टसंघयणा पन्नत्ता। ८. तेसिं णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। ९. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंठिया पन्नत्ता? गोयमा ! हुंडसंठाणसंठिया पन्नत्ता। १०. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति लेस्साओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! तिन्नि लेस्साओ पन्नत्ताओ, तं जहा-कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा। ११. ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी? गोयमा ! नो सम्मद्दिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छदिट्ठी। १२. ते णं भंते ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? गोयमा ! नो नाणी, अन्नाणी, नियमं दुअन्नाणी, तं जहा-मतिअन्नाणी य सुयअन्नाणी य। १३. ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी ? गोयमा ! नो मणजोगी, वइजोगी वि, कायजोगी वि। १४. ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि। १५. तेसिं णं भंते ! जीवाणं कति सन्नाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि सन्नाओ पन्नत्ताओ, तं जहा-आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा। १६. तेसिं णं भंते ! जीवाणं कति कसाया पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पन्नत्ता, तं जहा-कोहकसाये माणकसाये मायाकसाये लोभकसाये। १७. तेसिं णं भंते ! जीवाणं कति इंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच इंदिया पन्नत्ता, तं जहा-सोतिंदिए चक्खिंदिए जाव फासिंदिए। १८. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति समुग्घाया पन्नत्ता ? गोयमा ! तओ समुग्घाया पन्नत्ता, तं जहा-वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए। १९. ते णं भंते ! जीवा किं सायावेदगा, असायावेदगा ? गोयमा ! सायावेदगा वि, असातावेदगा वि। २०. ते णं भंते ! जीवा किं इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा ? गोयमा ! नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा। २१. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी। २२. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतिया अज्झवसाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पन्नत्ता। २३. ते णं भंते ! किं पसत्था, अप्पसत्था ? गोयमा ! पसत्था वि, अप्पसत्था वि। २४. से णं भंते ! 'पज्जत्ताअसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिये' इति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी। २५. से णं भंते ! 'पज्जत्ताअसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए रयणप्पभापुढविनेरइए पुणरवि 'पज्जत्ताअसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए' त्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ?, केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं; कालाएसेणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं पुव्वकाडिअब्भहियं; एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। सु. ५-२५ पढमो गमओ। २६. पज्जत्ताअसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहन्नकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीयेसु उववज्जेज्जा। २७. ते णं भंते ! जीवा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं स च्चेव वत्तव्वता निरवसेसा भाणियव्वा जाव अणुबंधो त्ति। २८. से णं भंते ! पज्जत्ताअसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए जहन्नकालट्ठितीयरयणप्पभापुढविणेरइए जहनन्नकाल० पुणरवि पज्जत्तअसण्णि जाव गतिरागतिं करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं; कालाएसेणं जहन्नेणं दसवीससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी दसहिं वीससहस्सेहिं अब्भहिया, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। सु० २६-२८ बीओ गमओ । २९. पज्जत्ताअसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीयेसु रतणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ३०. ते णं भंते ! जीवा० ? अवसेसं तं चेव जाव अणुबंधो। ३१. से णं भंते ! पज्जत्ताअसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्ठितीरयणप्पभापुढविनेरइए उक्कोस० पुणरवि पज्जत्ता जाव करेज्जा ? गोयमा ! भवाएसेणं दो भवग्गहणाइं; कालादेसेणं जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं पुव्वकोडिअब्भहियं; एवतियं कालं सेवेज्जा, एवइयं कालं गतिरागतिं करेज्जा। सु० २९-३१ तइओ गमओ । ३२. जहन्नकालट्ठितीयपज्जत्ताअसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ३३. (१) ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केव०? अवसेसं तं चेव, णवरं इमाइं तिन्नि णाणत्ताइं-आउं अज्झवसाणा अणुबंधो य। ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। (२) तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतिया अज्झवसाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पन्नत्ता। (३) ते णं भंते ! किं पसत्था, अप्पसत्था ? गोयमा ! नो पसत्था, अप्पसत्था। (४) अणुबंधो अंतोमुहुत्तं। सेसं तं चेव। ३४. से णं भंते ! जहन्नकालट्ठितीयपज्जत्तअसन्निपंचेंदियरयणप्पभा जाव करेज्जा ? गोयमा ! भवाएसेणं दो भवग्गहणाइं; कालादेसेणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तअब्भहियाइं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, एवतियं कालं सेविज्जा जाव करेज्जा। सु० ३२-३४ चउत्थो गमओ । ३५. जहन्नकालट्ठितीयपज्जत्ताअसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहन्नकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु उवज्जेज्जा, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ३६. ते णं भंते ! जीवा०। सेसं तं चेव। ताइं चेव तिन्नि णाणत्ताइं जाव- ३७. से णं भंते ! जहन्नकालट्ठितीयपज्जत्ता जाव जोणिए जहन्नकालट्ठितीयरयणप्पभापुढवि० पुणरवि जाव भवाएसेणं दो भवग्गहणाइं; कालाएसेणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण वि दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं; एवइयं कालं सेवेज्जा जाव करेज्जा। सु० ३५-३७ पंचमो गमओ । ३८. जहन्नकालट्ठितीयपज्जत्ता जाव तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागट्ठितीएसु उवज्जेज्जा। ३९. ते णं भंते ! जीवा० ? अवसेसं तं चेव। ताइं चेव तिन्नि नाणत्ताइं जाव- ४०. से णं भंते ! जहन्नकालट्ठितीयपज्जत्ता जाव तिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्ठितीयरयण जाव करेज्जा ? गोयमा ! भवाएसेणं दो भवग्गहणाइं; कालाएसेणं जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं अंतोमुहुत्तमब्भहियं; एवतियं कालं जाव करेज्जा। सु० ३८-४० छट्ठो गमओ । ४१. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकाल जाव उववज्जेज्जा? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभाग जाव उववज्जेज्जा। ४२. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं० ? अवसेसं जहेव ओहियगमए तहेव अणुगंतव्वं, नवरं इमाइं दोन्नि नाणत्ताइं-ठिती जहन्नेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। एवं अणुबंधो वि। अवसेसं तं चेव। ४३. से णं भंते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसन्नि जाव तिरिक्खजोणिए रतणप्पभा० भवाएसेणं दो भवग्गहणाइं; कालाएसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडीए अब्भहियं; एवतियं जाव करेज्जा। सु० ४१-४३ सत्तमो गमओ। ४४. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्तातिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहन्नकालट्ठितीएसु रयण जाव उववज्जित्तए से णं भंते ! केवति० जाव उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ४५. ते णं भंते !० ? सेसं तं चेव जहा सत्तमगमे जाव- ४६. से णं भंते ! उक्कोसकालट्ठिती० जाव तिरिक्खजोणिए जहन्नकालट्ठितीयरयणप्पभा० जाव करेज्जा ? गोयमा ! भवाएसेणं दो भवग्गहणाइं; कालाएसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया; एवतियं जाव करेज्जा। सु० ४४-४६ अट्ठमो गमओ। ४७. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ता० जाव तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु रयण० जाव उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकाल० जाव उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखज्जतिभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ४८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं०? सेसं जहा सत्तमगमए जाव- ४९. से णं भंते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ता० जाव तिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्ठितीयरयणप्पभ० जाव करेज्जा ? गोयमा ! भवाएसेणं दो भवग्गहणाइं; कालाएसेणं जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं पुव्वकाडीए अब्भहियं, उक्कोसेणं वि पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं पुव्वकोडिमब्भहियं; एवतियं कालं सेवेज्जा जाव करेज्जा। सु० ४७-४९ नवमो गमओ। ५०. एवं एए ओहिया तिण्णि गमगा, जहन्नकालट्ठितीएसु तिन्नि गमगा, उक्कोसकालट्ठितीएसु तिन्नि गमगा; सव्वते नव गमा भवंति। [सु. ५१-९१. नरयउववज्जंतम्मि पज्जत्तसन्निसंखेज्जवासाउयपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ५१. जदि सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, असंखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्ख० जाव उववज्जंति? गोयमा ! संखेज्जवाससाउयसण्णिपंचेंदिय० जाव उववज्जंति, नो असंखेज्जवासाउय० जाव उववज्जंति। ५२. जदि संखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदिय जाव उववज्जंति किं जलचरेहिंतो उववज्जंति?० पुच्छा। गोयमा ! जलचरेहिंतो उववज्जंति जहा असन्नी जाव पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति। ५३. पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा? गोयमा ! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, तं जहा-रयणप्पभाए जाव अहेसत्तमाए। [सु. ५४-७६. रयणप्पभानरयउववज्जंतम्मि पज्जत्तसन्निसंखेज्जवासाउयपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ५४. पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभपुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ५५. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? जहेव असन्नी। ५६. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंघयणी पन्नत्ता ? गोयमा ! छव्विहसंघयणी पन्नत्ता, तं जहा-वइरोसभनारायसंघयणी उसभनारायसंघयणी जाव सेवट्टसंघयणी। ५७. सरीरोगाहणा जहेव असन्नीणं। ५८. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंठिया पन्नत्ता ? गोयमा ! छव्विहसंठिया पन्नत्ता, तं जहा-समचतुरंस० नग्गोह० जाव हुंडा०। ५९. (१) तेसि णं भंते ! जीवाणं कति लेस्साओ पन्नत्ताओ? गोयमा ! छल्लेसाओ पन्नत्ताओ, तं जहा- कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा। (२) दिट्ठी तिविहा वि। तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा भयणाए। जोगो तिविहो वि। सेसं जहा असण्णीणं जाव अणुबंधो। नवरं पंच समुग्घाया आदिल्लगा। वेदो तिविहो वि, अवसेसं तं चेव जाव- ६०. से णं भंते ! पज्जत्तासंखेज्जवासाउय जाव तिरिक्खजोणिए रयणप्पभ० जाव करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेणं चत्तारि सागारोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। एवतियं कालं सेवेज्जा जाव करेज्जा। सु० ५४-६० पढमो गमओ। ६१. पज्जत्तसंखेज्ज जाव जे भविए जहन्नकाल जाव से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु जाव उववज्जेज्जा। ६२. ते णं भंते ! जीवा० एवं सो पढमगमओ निरवसेसो नेयव्वो जाव कालादेसेणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब्भहियाओ; एवतियं कालं सेवेज्जा० । सु० ६१-६२ बीओ गमओ । ६३. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं सगरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि सागारोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। अवसेसो परिमाणादीओ भवादेसपज्जवसाणो सो चेव पढमगमो नेयव्वो जाव कालाएसेणं जहन्नेणं सागारोवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागारोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीडिं अब्भहियाइं; एवतियं कालं सेविज्जा० । सु. ६३ तइओ गमओ । ६४. जहन्नकालट्ठितीयपज्जत्तासंखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभपुढवि जाव उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सागारोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ६५. ते णं भंते ! जीवा०? अवसेसो सो चेव गमओ। नवरं इमाइं अट्ठ णाणत्ताइं-सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं १। लेस्साओ तिण्णि आदिल्लाओ २। नो सम्मद्दिट्ठी, मिच्छद्दिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी ३। दो अन्नाणा णियमं ४। समुग्घाया आदिल्ला तिन्नि ५। आउं ६, अज्झवसाणा ७, अणुबंधो ८ य जहेव असन्नीणं। अयसेसं जहा पढमे गमए जाव कालादेसेणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं; उक्कोसेणं चत्तारि सागारोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं; एवतियं कालं जाव करेज्जा। सु० ६४-६५ चउत्थो गमओ । ६६. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ६७. ते णं भंते !०? एवं सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव कालाएसेणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोममुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तालीसं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं; एवतियं जाव करेज्जा। सु० ६६-६७ पंचमो गमओ । ६८. सो च्चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं सागारोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा, उक्कोसेण वि सागारोवट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ६९. ते णं भंते !० एवं सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव कालादेसेणं जहन्नेणं सागारोवमं अंतोमुहुत्तमब्भहिंय, उक्कोसेणं चत्तारि सागारोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं; एवतियं जाव करेज्जा। सु० ६८-६९ छट्ठो गमओ । ७०. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्तासंखेज्जवासा० जाव तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जाव रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सागारोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ७१. ते णं भंते ! जीवा०? अवसेसो परिमाणादीओ भवादेसपज्जवसाणो एतेसिं चेव पढमगमओ णेतव्वो, नवरं ठिती जहन्नेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। एवं अणुबंधो वि। सेसं तं चेव। कालादेसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि सागारोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भयाहिइं; एवतियं कालं जाव करेज्जा। सु० ७०-७१ सत्तमो गमओ । ७२. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ७३. ते णं भंते ! जीवा०? सो चेव सत्तमो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहिआओ; एवतियं जाव करेज्जा। सु० ७२-७३ अट्ठमो गमओ । ७४. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ता जाव तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीय जाव उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा? गोयमा ! जहन्नेणं सागारोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि सागारोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ७५. ते णं भंते ! जीवा० ? सो चेव सत्तमगमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहन्नेणं सागारोवमं पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागारोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं; एवइयं जाव करेज्जा। सु० ७४-७५ नवमो गमओ । ७६. एवं एते नव गमगा उक्खेवनिक्खेवओ नवसु वि जहेव असन्नीणं।[सु. ७७-८०. सक्करप्पमाइतमापुढविनरयउववज्जंतम्मि पज्जत्तसन्निसंखेज्जवासाउयपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ७७. पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं सागारोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ७८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं०? एवं जं च्चेव रयणप्पभाए उववज्जंतगस्स लद्धी स च्चेव निरवसेसा भाणियव्वा जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहन्नेणं सागारोवमं अंतोमुहुत्तमब्भहिंय, उक्कोसेणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बारस सागारोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं; एवतियं जाव करेज्जा। ७९. एवं रयणप्पभपुढविगमगसरीसा नव वि गमगा भाणियव्वा, नवरं सव्वगमएसु वि नेरइयट्ठिती-संवेहेसु सागरोवमा भाणितव्वा। ८०. एवं जाव छट्ठपुढवि त्ति, णवरं नेरइयठिती जा जत्थ पुढवीए जहन्नुक्कोसिया सा तेणं चेव कमेणं चउग्गुणा कायव्वा, वालुयप्पभाए अट्ठावीसं सागारोवमा चउग्गुणिया भवंति, पंकप्पभाए चत्तालीसं, धूमप्पभाए अट्ठसट्ठिं, तमाए अट्ठासीतिं। संघयणाइं वालुयप्पभाए पंचविहसंघयणी, तं जहा-वइरोसभनाराय जाव खीलियासंघयणी। पंकप्पभाए चउव्विहसंघयणी। धूमप्पभाए तिविहसंघयणी। तमाए दुविहसंघयणी, तं जहा-वइरोसभनारायसंघयणी य उसभनारायसंघयणी य सेसं तं चेव।[सु. ८१-९१. अहेसत्तमनरयउववज्जंतम्मि पज्जत्तसन्निसंखेज्जवासाउयपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ८१. पज्जत्तासंखेज्जवासाउय जाव तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए अहेसत्तमपुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं बावीससागारोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तेत्तीससागारोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ८२. ते णं भंते ! जीवा०? एवं जहेव रयणप्पभाए णव गमका, लद्धी वि स च्चेव; णवरं वइरोसभनारायसंघयणी, इत्थिवेदगा न उववज्जंति। सेसं तं चेव जाव अणुबंधो त्ति। संवेहो भवाएसेणं जहन्नेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं; कालाएसेणं जहन्नेणं बावीसं सागारोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं; उक्कोसेणं छावट्ठिं सागारोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं; एवतियं जाव करेज्जा १। सु० ८१-८२ पढमो गमओ। ८३. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, स च्चेव वत्तव्वया जाव भवादेसो त्ति। कालाएसेणं जहन्नेणं, कालादेसो वि तहेव जाव चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं; एवतियं जाव करेज्जा। सु० ८३ बीओ गमओ। ८४. सो चेव उक्कोस्सकालट्ठितीएसु उववन्नो, स च्चेव लद्धी जाव अणुबंधो त्ति, भवाएसेणं जहन्नेणं तिन्नि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं; कालाएसेणं जहन्नेणं तेत्तीसं सागारोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागारोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं; एवतियं जाव करेज्जा। सु० ८४ तइओ गमओ। ८५. सो चेव जहन्नकालट्ठितीओ जाओ, स च्चेव रयणप्पभपुढविजहन्नकालट्ठितीयवत्तव्वता भाणियव्वा जाव भवादेसो त्ति। नवरं पढमं संघयणं; नो इत्थिवेदगा; भवाएसेणं जहन्नेणं तिन्नि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं; कालाएसेणं जहन्नेणं बावीसं सागारोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागारोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं; एवतियं जाव करेज्जा। सु० ८५ चउत्थो गमओ। ८६. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एवं सो चेव चउगमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव कालादेसो त्ति। सु० ८६ पंचमो गमओ। ८७. सो चेव उउक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, स च्चेव लद्धी जाव अणुबंधो त्ति। भवाएसेणं जहन्नेणं तिन्नि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं तेत्तीसं सागारोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागारोवमाइं तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं जाव करेज्जा। सु० ८७ छट्ठो गमओ। ८८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, जहन्नेणं बावीससागारोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तात्तीससागारोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ८९. ते णं भंते !०? अवसेसा स च्चेव सत्तमपुढविपढमगमगवत्तव्वया भाणियव्वा जाव भवादेसो त्ति, नवरं ठिती अणुबंधो य जहन्नेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेसं तं चेव। कालाएसेणं जहन्नेणं बवीसं सागारोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागगारोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं जाव करेज्जा। सु० ८८-८९ सत्तमो गमओ। ९०. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, स च्चेव लद्धी, संवेहो वि तहेव सत्तमगमगसरिसो। सु० ९० अट्ठमो गमओ। ९१. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, एसा चेव लद्धी जाव अणुबंधो त्ति। भवाएसेणं जहन्नेणं तिन्नि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं तेत्तीसं सागारोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागारोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा जाव करेज्जा। सु० ९१ नवमो गमओ। [सु. ९२-११७. नरयउववज्जंतम्मि पज्जत्तसन्निसंखेज्जवासाउयमणुस्सम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ९२. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सन्निमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, असन्निमणुस्सेहिंतो उववज्जंति? गोयमा ! सन्निमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो असन्निमणुस्सेहिंतो उववज्जंति। ९३. जति सन्निमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउयसन्निमणुस्सेहिंतो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उववज्जंति, असंखेज्जवा० जाव उववज्जंति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउयसेन्निमणु०, नो असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति । ९४. जदि संखेज्जवासा० जाव उववज्जंति किं पज्जत्तासंखेज्जवासाउय०, अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय०? गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउय०, नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय० जाव उववज्जंति । ९५. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, तं जहा-रयणप्पभाए जाव अहेसत्तमाए । [सु. ९६ -१०५. रयणप्पभानरयउववज्जंतम्मि पज्जत्तसन्निसंखेज्जवासाउयमणुस्सम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]९६. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्स णं भंते ! जे भविए रतणप्पभपुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवासहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सागारोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा । ९७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । संघयणा छ । सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलपुत्तं, उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं । एवं सेसं जहा सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं जाव भवादेसो त्ति, नवरं चत्तरि नाणा, तिन्नि अन्नाणा भयणाए, छ समुग्घाया केवलिज्जा; ठिती अणुबंधो य जहन्नेणं मासपुहत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । सेसं तं चेव । कालाएसेणं जहन्नेणं दस वाससहस्सइं मासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागारोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं जाव करेज्जा । सु० ९६-९७ पढमो गमओ । ९८. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एसा चेव वत्तव्वया, नवरं कालादेसेणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं मासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं० । सु० ९८ बीओ गमओ । ९९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, एसा चेव वत्तव्वत्ता, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं सागारोवमं मासपुहत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागारोवमासं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं जाव करेज्जा । सु० ९९ तइओ गमओ । १००. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ जाओ, एसा चेव वत्तव्वता, नवरं इमाइं पंच नाणत्ताइं-सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलपुहत्तं, उक्कोसेण वि अंगुलपुहत्तं १, तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा भयणाए २, पंच समुग्घाया आदिल्ला ३, ठिती ४ अणुबंधो ५ य जहन्नेणं मासपुहत्तं, उक्कोसेण वि मासपुहुत्तं । सेसं तं चेव जाव भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं मासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागारोवमाइं चउहिं मासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं जाव करेज्जा । सु० १०० चउत्थो गमओ । १०१. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एसा चेव वत्तव्वया चउत्थगमगसरिसा, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं मासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तालीसं वाससहस्साइं चउहिं मासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं जाव करेज्जा । सु० १०१ पंचमो गमओ । १०२. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, एस चेव गमगो, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं सागारावमं मासपुहत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागारोवमाइं चउहिं मासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं जाव करेज्जा । सु० १०२ छट्ठो गमओ । १०३. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जातो, सो चेव पढमगमओ नेतव्वो, नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं पंच धणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंच धणुसयाइं; ठिती जहन्नेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी; एवं अणुबंधो वि, कालाएसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि सागारोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं जाव करेज्जा । सु० १०३ सत्तमो गमओ । १०४. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, स च्चेव सत्तमगमगवत्तव्वया, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं जाव करेज्जा । सु० १०४ अट्ठमो गमओ । १०५. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, सा चेव सत्तमगमगवत्तव्वया, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं सागारोवमं पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागारोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा जाव करेज्जा । सु० १०५ नवमो गमओ । [सु. १०६-१०. सक्करप्पभानरयउववज्जंतम्मि पज्जत्तसन्निसंखेज्जवासाउयमणुस्सम्मि उववाय -परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]१०६. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेरइएसु जाव उववज्जित्तए से णं भंते ! केवति जाव उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं सागारोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिसागारोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। १०७. ते णं भंते !० ? एवं सो चेव रयणप्पभपुढविगमओ नेयव्वो, नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं; ठिती जहन्नेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी; एवं अणुबंधो वि। सेसं तं चेव जाव भवादेसो त्ति; कालाएसेणं जहन्नेणं सागारोवमं वासपुहत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं बारस सागारोवमाइं चउहिं पुव्वाकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं जाव करेज्जा। १०८. एवं एसा ओहिएसु तिसु गमएसु मणूसस्स लद्धी, नाणत्तं नेरइयट्ठितिं कालाएसेणं संवेहं च जाणेज्जा। सु० १०६-८ पढम-बीय-तइयगमा । १०९. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु गमएसु एसा चेव लद्धी; नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेण वि रयणिपुहत्तं; ठिती जहन्नेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेण वि वासपुहत्तं; एवं अणुबंधो वि। सेसं जहा ओहियाणं। संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो। सु० १०९ चउत्थ-पंचम-छट्ठगमा । ११०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु इमं णाणत्तं-सरीरोगाहणा जहन्नेणं पंच धणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंच धणुसयाइं; ठिती जहन्नेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी; एवं अणुबंधो वि। सेसं जहा पढमगमए, नवरं नेरइयठिती कायसंवेहं च जाणेज्जा। सु० ११० सत्तम-अट्ठम-नवमगमा । [सु. १११. वालुया-पंक-धूम-तमानरयउववज्जंतम्मि पज्जत्तसन्निसंखेज्जवासाउयमणुस्सम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] १११. एवं जाव छट्ठपुढवी, नवरं तच्चाए आढवेत्ता एक्केक्कं संघयणं परिहायति जहेव तिरिक्खजोणियाणं; कालादेसो वि तहेव, नवरं मणुस्सट्ठिती जाणियव्वा। [सु. ११२-१७. अहेसत्तमनरयउववज्जंतम्मि पज्जत्तसन्निसंखेज्जवासाउयमणुस्सम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ११२. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए अहेसत्तमपुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं बावीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ११३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं० ? अवसेसो सो चेव सक्करप्पभापुढविगमओ नेयव्वो, नवरं पढमं संघयणं, इत्थिवेदगा न उववज्जंति। सेसं तं चेव जाव अणुबंधो त्ति। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं; कालादेसेणं जहन्नेणं बावीसं सागारोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागारोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, एवतियं जाव करेज्जा। सु० ११२-१३ पढमो गमओ । ११४. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एसा चेव वत्तव्वया, नवरं नेरइयट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सु० ११४ बीओ गमओ । ११५. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, एसा चेव वत्तव्वया, नवरं संवेहं जाणेज्जा। सु० ११५ तइओ गमओ । ११६. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एसा चेव वत्तव्वया, नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेण वि रयणिपुहत्तं, ठिती जहन्नेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेण वि वासपुहत्तं; एवं अणुबंधो वि; संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो। सु० ११६ चउत्थ-पंचम-छट्ठगमा । ११७. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एसा चेव वत्तव्वया, नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं पंच धणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंच धणुवयाइं; ठिती जहन्नेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी; एवं अणुबंधो वि। नवसु वि एएसु गमएसु नेरइयट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सव्वत्थ भवग्गहणाइं दोन्नि जाव नवमगमए कालादेसेणं जहन्नेणं तेत्तीसं सागारोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागारोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। सु० ११७ सत्तम-अट्ठम-नवमगमा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति ☆☆☆ **॥ चउवीसरमसते पढमो ॥२४.१॥**☆☆☆ [सु. १. बिइउद्देसगस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासि- [सु. २. गइं पडुच्च असुरकुमारोववायनिरूवणं] २. असुरकुमारा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरि-मणु-देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! णो णेरतिएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति । [सु. ३-४. असुरकुमारोववज्जंतम्मि पज्जत्तअसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ३. एवं जहेव नेरइयउद्देसए जाव पज्जत्ताअसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते !

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीयेसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा । ४. ते णं भंते ! जीवा० ? एवं रयणप्पभागमगसरिसा नव वि गमा भाणियव्वा, नवरं जाहे अप्पणा जहन्नकालट्ठितीयो भवंति ताहे अज्झवसाणापसत्था, नो अप्पसत्था तिसु वि गमएसु । अवसेसं तं चेव । गमा १-९ ।[सु. ५. संखेज्जवासाउय-असंखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं असुरकुमारोववायनिरूवणं] ५. जदि सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउयसन्नि जाव उववज्जंति, असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति, असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति । [सु. ६-१६. असुरकुमारोववज्जंतम्मि असंखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ६. असंखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा । ७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं० पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । वयरोसभनारायसंघयणी । ओगाहणा जहन्नेणं धणुपुहुत्तं, उक्कोसेणं छग्गाउयाइं । समचउरंससंठाणसंठिया पन्नत्ता । चत्तारि लेस्साओ आदिल्लाओ । नो सम्मद्दिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अन्नाणी, नियमं दुअण्णाणी, तं जहा-मतिअन्नाणी, सुयअन्नाणी य । जोगो तिविहो वि । उवयोगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । पंच इंदिया । तिन्नि समुग्घाया आदिल्लगा । समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति । वेयणा दुविहा वि । इत्थिवेदगा वि, पुरिसवेदगा वि, नो नपुंसगवेदगा । ठिती जहन्नेणं सातिरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं । अज्झवसाणा पसत्था वि अप्पसत्था वि । अणुबंधो जहेव ठिती । कायसंवेहो भवाएसेणं दो भवग्गहणाइं; कालाएसेणं जहन्नेणं सातिरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं छप्पलिओवमाइं, एवतियं जाव करेज्जा । पढमो गमओ । ८. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एसा चेव वत्तव्वया, नवरं असुरकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा । बीओ गमओ । ९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एसा चेव वत्तव्वया, नवरं ठिती से जहन्नेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिन्नि पलिओवमाइं । एवं अणुबंधो वि, कालाएसेणं जहन्नेणं छप्पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइं, एवतियं सेसं तं चेव । तइओ गमओ । १०. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ जाओ, जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सातिरेगपुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा । ११. ते णं भंते !० ? अवसेसं तं जाव भवाएसो त्ति, नवरं ओगाहणा जहन्नेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेणं सातिरेगं धणुसहस्सं । ठिती जहन्नेणं सातिरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि सातिरेगा पुव्वकोडी, एवं अणुबंधो वि । कालाएसेणं जहन्नेणं सातिरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, एवतियं० । चउत्थो गमओ । १२. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एसा चेव वत्तव्वया, नवरं असुरकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा । पंचमो गमओ । १३. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं सातिरेगपुव्वकोडिआउएसु, उक्कोसेण वि सातिरेगपुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा । सेसं तं चेव, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, उक्कोसेण वि सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, एवतियं कालं सेवेज्जा० । छट्ठो गमओ । १४. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ; सो चेव पढमगमओ भाणियव्वो, नवरं ठिती जहन्नेणं तिन्नि पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिन्नि पलिओवमाइं । एवं अणुबंधो वि । कालाएसेणं जहन्नेणं तिन्नि पलिओवमाइं दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छ पलितोवमाइं, एवतियं० सत्तमो गमओ । १५. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एसा चेव वत्तव्वया, नवरं असुरकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणिज्जा । अट्ठमो गमओ । १६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं तिपलिओवमं, उक्कोसेण वि तिपलिओवमं । एसा चेव वत्तव्वया, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं छप्पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइं, एवतियं० । नवमो गमओ । [सु. १७-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८. असुरकुमारोववज्जंतम्मि संखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] १७. जति संखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदिय० जाव उववज्जंति किं जलचर एवं जाव पज्जतासंखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सातिरेगसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। १८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं० ? एवं एएसिं रयणप्पभपुढविगमगसरिसा नव गमगा नेयव्वा, नवरं जाहे अप्पणा जहन्नकालट्ठितीयो भवति ताहे तिसु वि गमएसु इमं नाणत्तं-चत्तारि लेस्साओ; अज्झवसाणा पसत्था, नो अप्पसत्था। सेसं तं जेव। संवेहो सातिरेगेण सागारोवमेण कायव्वो। १-९ गमगा। [सु. १९- २०. संखेज्जवासाउय-असंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्साणं असुरकुमारोववायनिरूवणं] १९. जदि मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सन्निमणुस्सेहिंतो, असन्निमणुस्सहिंतो ? गोयमा ! सन्निमणुस्सहिंतो, नो असन्निमणुस्सेहिंतो उववज्जंति। २०. जदि सन्निमणुस्सेहिंतो, उववज्जंति किं संखेज्जवासाउयसन्निमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, असंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्सहिंतो उववज्जंति? गोयमा ! संखेज्जवासाउय० जाव असंखेज्जवासाउय० जाव उववज्जंति। [सु. २१-२४. असुरकुमारोववज्जतम्मि असंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्सम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]२१. असंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। २२. एवं असंखेज्जवासाउयतिरिक्खजोणियसरिसा आदिल्ला तिन्नि गमगा नेयव्वा, नवरं सरीरोगाहणा पढम-बितिएसु गमएसु जहन्नेणं सातिरेगाइं पंच धणुसयाइं, उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं। सेसं तं चेव। ततियगमे ओगाहणा जहन्नेणं तिन्नि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं। सेसं जहेव तिरिक्खजोणियाणं। १-३ गमगा । २३. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि जहन्नकालट्ठितीयतिरिक्खजोणियसरिसा तिन्नि गमगा भाणियव्वा, नवरं सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहन्नेणं सातिरेगाइं पंच धणुसयाइं, उक्कोसेण वि सातिरेगाइं पंच धणुसयाइं। सेसं तं चेव। ४-६ गमगा । २४. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि चेव पच्छिल्लगा तिन्नि गमगा भाणियव्वा, नवरं सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहन्नेणं तिन्नि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिन्नि गाउयाइं। अवसेसं तं चेव। ७-९ गमगा ।[सु. २५-२७. असुरकुमारोववज्जंतम्मि पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्सम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] २५. जइ संखेज्जवासाउयसन्निमणुस्सेहिंतो उववज्जइ किं पज्जत्तासंखेज्जवासाउय० अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय०? गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्ज०, नो अपज्जत्तासंखेज्ज०। २६. पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववेज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सातिरेगसागारोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। २७. ते णं भंते ! जीवा० ? एवं जहेव एएसिं रयणप्पभाए उववज्जमाणाणं नव गमका तहेव इह वि गमगा भाणियव्वा, णवरं संवेहो सातिरेगेण सागरोवमेण कायव्वो, सेसं तं चेव। १-९ गमगा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆ **तइओ नागकुमारुद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. तइउद्देसगस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासि-[सु. २. गइं पडुच्च नागकुमारोववायनिरूवणं]२. नागकुमारा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरि-मणु-देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिय-मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति। [सु. ३. नागकुमारोववज्जंतम्मि पज्जत्तअसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ३. जदि तिरिक्ख०? एवं जहा असुरकुमाराणं वत्तव्वया (उ०२ सु०३) तहा एतेसिं पि असण्णि त्ति। [सु.४. संखेज्जवासाउय-असंखेज्जवासाउयसन्निपंचेदियतिरिक्खजोणियाणं नागकुमारोववायनिरूवणं] ४. जदि सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो० किं संखेज्जवासाउय०, असंखेज्जवासाउय० ? गोयमा ! संखेज्जवासाउय०, असंखेज्जवासाउय० जाव उववज्जंति। [सु. ५-१०. नागकुमारोववज्जंतम्मि असंखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]५. असंखिज्जवासाउयसन्निपंचेदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठिती०? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं देसूणदुपलिओवट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ६. ते णं भंते ! जीवा० ? अवसेसो सो चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स गमगो

भाणियव्वो जाव भवाएसो त्ति; कालादेसेणं जहन्नेणं सातिरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं देसूणाइं पंच पलिओवमाइं, एवतियं जाव करेज्जा। पढमो गमओ ।७. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एसा चेव वत्तव्वया, नवरं नागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। बीओ गमओ ।८. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया, नवरं ठिती जहन्नेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं। सेसं तं चेव जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहन्नेणं देसूणाइं चत्तारि पलिओवमाइं, उक्कोसेणं देसूणाइं पंच पलिओवमाइं, एवतियं कालं०। तइओ गमओ ।९. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमणस्स जहन्नकालट्ठितीयस्स तहेव निरवसेसं। ४-६ गमगा ।१०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीयो जाओ, तस्स वि तहेव तिन्नि गमका जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स, नवरं नागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स। ७-९गमगा । [सु. ११-१२. नागकुमारोववज्जंतम्मि पज्जत्तसंखेज्जवेसाउयपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ११. जदि संखेज्जवासाउयसन्निपंचिंदिय० जाव किं पज्जत्तासंखेज्जवासाउय०, अपज्जत्तासंखे०? गोयमा ! पज्जत्तासंखेज्जवासाउय०, नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय०। जाव- १२. पज्जत्तासंखेज्जवासाउय० जाव जे भविए णागकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलितोवमाइं। एवं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स वत्तव्वया तहेव इह वि गमएसु, णवरं नागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव। १-९गमगा। [सु. १३-१६. नागकुमारोववज्जंतम्मि असंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्सम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] १३. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सन्निमणु०, असण्णिमणु०? गोयमा ! सन्निमणु०, नो असन्निमणु० जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स जाव- १४. असंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जइ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्स०, उक्कोसेणं देसूणदुपलिओवम०। एवं जहेव असंखेज्जवासाउयाणं तिरिक्खजोणियाणं नागकुमारेसु आदिल्ला तिण्णि गमका तहेव इमस्स वि, नवरं पढम-बितिएसु गमएसु सरीरोगाहणा जहन्नेणं सातिरेगाइं पंच धणुसयाइं, उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं, ततियगमे ओगाहणा जहन्नेणं देसूणाइं दो गाउयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। सेसं तं चेव। १-३ गमगा ।१५. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीयो जाओ, तस्स तिसु वि गमएसु जहा तस्स चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव निरवसेसं। ४-६ गमगा ।१६. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीयो जाओ तस्स तिसु वि गमएसु जहा तस्स चेव उक्कोसकालट्ठितीयस्स असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स, नवरं नागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव। ७-९ गमगा । [सु. १७-१८. नागकुमारोववज्जंतम्मि पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्सम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] १७. जदि संखेज्जवासाउयसन्निमणु० किं पज्जत्तासंखेज्ज०, अपज्जत्तासं०? गोयमा ! पज्जत्तसंखे०, नो अपज्जत्तासंखे०। १८. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवति०? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्स०, उक्कोसेणं देसूणदोपलिओवमट्ठिती०। एवं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स स च्चेव लद्धी निरवसेसा नवसु गमएसु, नवरं नागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। १-९ गमगा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆**॥चउवीसतिमे सए ततिओ॥२४.३॥**☆☆☆ चउत्थाइएगारसपज्जंता सुवण्णकुमाराइथणियकुमारपज्जंता उद्देसगा [सु. १. तइयनागकुमारुद्देसाणुसारेणं चउत्थाइएगारसमपज्जंतुद्देसगवत्तव्वयानिद्देसो] १. अवसेसा सुवण्णकुमारादी जाव थणियकुमारा, एए अट्ठ वि उद्देसगा जहेव नागकुमाराणं तहेव निरवसेसा भाणियव्वा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆**॥चउवीसतिमे सए एक्कारसमो उद्देसो समत्तो॥**☆☆☆ २४.४-११॥ ☆☆☆ **बारसमो पुढविकाइयउद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. गइं पडुच्च पुढविकाइयउववायपरूवणं]१. (१) पुढविकाइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववजज्जंति, तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति। (२) जदि तिरिक्खजोणि० किं एगिंदियतिरिक्खजोणि० एवं जहा वक्कंतीए उववातो जाव- (३) जदि बादरपुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्ताबायर० जाव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उववज्जंति, अपज्जत्तबादरपुढवि०? गोयमा ! पज्जत्तबायरपुढवि०, अपज्जत्ताबादरपुढवि जाव उववज्जंति। [सु. २-१२. पुढविकाइयउववज्जंतम्मि पुढविकाइयम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]

२. पुढविकाइए णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं० पुच्छा। गोयमा ! अणुसमयं अविरहिया असंखेज्जा उववज्जंति। सेवट्टसंघयणी, सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं। मसूराचंदासंठिया। चत्तारि लेस्साओ। नो सम्मद्दिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। दो अन्नाणा नियमं। नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी। उवयोगो दुविहो वि। चत्तारि सण्णाओ। चत्तारि कसाया। एगे फासिंदिए पन्नत्ते। तिण्णि समुग्घाया। वेयणा दुविहा। नो इत्थिवेयगा, नो पुरिसवेयगा, नपुंसगवेयगा। ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं। अज्झवसाणा पसत्था वि, अपसत्था वि। अणुबंधो जहा ठिती। ४. से णं भंते ! पुढविकाइए पुणरवि 'पुढविकाइए' त्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ? गोयमा ! भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, एवतियं जाव करेज्जा। पढमो गमओ। ५. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो जहन्नेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अंतोमुहुहत्तट्ठितीएसु। एवं चेव वत्तव्वया निरवसेसा। बीओ गमओ। ६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु। सेसं तं चेव जाव अणुबंधो त्ति, णवरं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा। भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं बावीसं वाससहस्सइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं कालं जाव करेज्जा। तइओ गमओ। ७. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ जाओ, सो चेव पढमिल्लओ गमओ भाणियव्वो, नवरं लेस्साओ तिन्नि; ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं; अप्पसत्था अज्झवसाणा; अणुबंधो जहा ठिती। सेसं तं चेव। चउत्थो गमओ। ८. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, स च्चेव चतुत्थगमकवत्तव्वता भाणियव्वा। पंचमो गमओ। ९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, एस चेव वत्तव्वता, नवरं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा जाव भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं०। छट्ठो गमओ। १०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जातो, एवं तइयगमगसरिसो निरवसेसो भाणियव्वो, नवरं अप्पणा से ठिती जहन्नेणं बावीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेण वि बावीसं वाससहस्साइं। सत्तमो गमओ। ११. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। एवं जहा सत्तमगमगो जाव भवादेसो। कालाएसेणं जहन्नेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं०। अट्ठमो गमओ। १२. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो जहन्नेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु। एस चेव सत्तमगमकवत्तव्वया जाव भवादेसो त्ति। कालाएसेणं जहन्नेणं चोयालीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेणं छावत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं०। नवमो गमओ। [सु. १३-१४. पुढविकाइयउववज्जंतेसु आउकाइएसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] १३. जति आउकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सुहुमआउ० बादरआउ० एवं चउक्कओ भेदो भाणियव्वो जहा पुढविकाइयाणं। १४. आउकाइए णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जिज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु। एवं पुढविकाइयगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा। नवरं थिबुगाबिंदुसंठिते। ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त वाससहस्ससाइं। एवं अणुबंधो वि। एवं तिसु गमएसु। ठिती संवेहो तइय-छट्ठ-सत्तमऽट्ठम-नवमेसु गमएसु भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं सेसेसु चउसु गमएसु जहन्नेणं दो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं। तइयगमए कालाएसेणं जहन्नेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं०। छट्ठे गमए कालाएसेणं जहन्नेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तममब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तहिं अब्भहियाइं, एवतियं०। सत्तमगमए कालाएसेणं जहन्नेणं सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं० । अट्ठमे गमए कालाएसेणं जहन्नेणं सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठावीसं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं,एवतियं० । नवमे गमए भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं; कालाएसेणं जहन्नेणं एकूणतीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं० । एवं नवसु वि गमएसु आउकाइयठिई जाणियव्वा । १-९ गमगा । [सु. १५. पुढविकाइयउववज्जंतेसु तेउकाइएसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] १५. जति तेउक्काइएहिंतो उवव०? तेउक्काइयाण वि एस चेव वत्तव्वया, नवरं नवसु वि गमएसु तिन्नि लेस्साओ । ठिती जाणियव्वा । तइयगमए कालादेसेणं जहन्नेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं बारसहिं रातिंदिएहिं अब्भहियाइं, एवतियं० । एवं संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो । १-९ गमगा ।[सु. १६. पुढविकाइयउववज्जंतेसु वाउकाइएसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]१६. जति वाउकाइएहिंतो०? वाउकाइयाण वि एवं चेव नव गमगा जहेव तेउकाइयाणं, नवरं पडागासंठिया पन्नत्ता, तेउकाइया णं सूयीकलावसंठिया । संवेहो वाससहस्सेहिं कायव्वो, तइयगमए कालादेसेणं जहन्नेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं एगं वाससयसहस्स, एवतियं० । एवं संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो । १-९ गमगा । [सु. १७. पुढविकाइयउववज्जंतेसु वणस्सइकाइएसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]१७. जति वणस्सतिकाइएहिंतो०? वणस्सइकाइयाणं आउकाइयगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा, नवरं नाणासंठिया सरीरोगाहणा पन्नत्तापढमएसु पच्छिल्लएसु य तिसु गमएसु जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं, मज्झिल्लएसु तिसु तहेव जहा पुढविकाइयाणं । संवेहो ठिती य जाणितव्वा । ततिए गमए कालाएसेणं जहन्नेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठावीसुत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं० । एवं संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो । [सु. १८-२४. पुढविकाइयउववज्जंतेसु बेइंदिएसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]१८. जदि बेइंदिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्ताबेइंदिएहिंतो उववज्जंति, अपज्जत्ताबेइंदिएहिंतो० ? गोयमा ! पज्जात्ताबेइंदिएहिंतो उवव०, अपज्जत्ताबेइंदिएहिंतो वि उववज्जंति । १९. बेइंदिए णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकाल०? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु । २०. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं०? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति। सेवट्ठसंघयणी । ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं बारस जोयणाइं । हुंडसंठिता । तिन्नि लेस्साओ । सम्मद्दिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । दो णाणा, दो अन्नाणा नियमं । नो मणजोगी, वइजोगी वि, कायजोगी वि । उवयोगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । दो इंदिया पन्नत्ता, तं जहा-जिब्भिंदिए य फासिंदिए य । तिन्नि समुग्घाया । सेसं जहा पुढविकाइयाणं, नवरं ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं । एवं अणुबंधो वि । सेसं तं चेव । भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं भवग्गहणाइं । कालाएसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं, एवतियं०। पढमो गमओ । २१. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एस चेव वत्तव्वया सव्वा । बीओ गमओ । २२. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, एस चेव बेंदियस्स लद्धी, नवरं भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं । कालाएसेणं जहन्नेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं अडयालीसाए संवच्छरेहिं अब्भहियाइं, एवतियं०। तइओ गमओ । २३. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि एस चेव वत्तव्वता तिसु वि गमएसु, नवरं इमाइं सत्त णाणत्ताइं-सरीरोगाहणा जहा पुढविकाइयाणं; नो सम्मद्दिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी; दो अन्नाणा णियमं; नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी; ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं; अज्झवसाणा अप्पसत्था; अणुबंधो जहा ठिती । संवेहो तहेव आदिल्लेसु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोसु गमएसु, ततियगमए भवादेसो तहेव अट्ठ भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं। ४-६ गमगा । २४. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एयस्स वि ओहियगमगसरिसा तिन्नि गमगा भाणियव्वा, नवरं तिसु वि गमएसु ठिती जहन्नेणं बारस संवच्छराइं, उक्कोसेण वि बारस संवच्छराइं। एवं अणुबंधो वि। भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालाएसेणं उवयुज्जिऊण भाणियव्वं जाव नवमे गमए जहन्नेणं बावीसं वाससहस्साइं बारसहिं संवच्छरेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं अडयालीसाए संवच्छरेहिं अब्भहियाइं, एवतियं०। ७-९ गमगा । [सु. २५. पुढविकाइयउववज्जंतम्मि तेइंदियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] २५. जति तेइंदिएहिंतो उववज्जइ० ? एवं चेव नव गमका भाणियव्वा। नवरं आदिल्लेसु तिसु वि गमएसु सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं। तिन्नि इंदियाइं। ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं एकूणपण्णं रातिंदियाइं। ततियगमए कालाएसेणं जहन्नेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं छण्णउयरातिंदियसतमब्भहियाइं, एवतियं०। मज्झिमा तिन्नि गमगा तहेव। पच्छिमा वि तिण्णि गमगा तहेव, नवरं ठिती जहन्नेणं एकूणपण्णं राइंदियाइं, उक्कोसेण वि एकूणपण्णं राइंदियाइं। संवेहो उवजुंजिऊण भाणितव्वो। १-९ गमगा । [सु. २६. पुढविकाइयउववज्जंतम्मि चउरिंदियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवण] २६. जति चउरिंदिएहिंतो उववव०? चेव चउरिंदियाण वि नव गमगा भाणियव्वा, नवरं एएसु चेव ठाणेसु नाणत्ता भाणितव्वा-सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं। ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छम्मासा। एवं अणुबंधो वि। चत्तारि गाउयाइं। ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छम्मासा। एवं अणुबंधो वि। चत्तारि इंदिया। सेसं तहेव जाव नवमगमए कालाएसेणं जहन्नेणं बावीस वाससहस्साइं छहिं मासेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं चउवीसाए मासेहिं अब्भहियाइं, एवतियं०। १-९ गमगा । [सु. २७-२८. पंचेंदियतिरिक्खजोणिए पडुच्च पुढविकाइयउववायनिरूवणं] २७. जइ पंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति असन्निपंचेदियतिरिक्खजो०? गोयमा ! सन्निपंचेंदिय०, असन्निपंचेदिय०। २८. जइ असण्णिपंचिंदिय० किं जलचरेहिंतो उववव० जाव किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, अपज्जत्तएहिंतो एव०? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो वि उववव०, अपज्जत्तएहिंतो वि उववज्जंति। [सु. २९-३०. पुढविकाइयउववज्जंतम्मि असन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]

२९. असन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवति०? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त० उक्कोसेणं बावीसवाससह०। ३०. ते णं भंते ! जीवा० ? जहेव बेइंदियस्स ओहियगमए लद्धी तहेव, नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति०, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। पंच इंदिया। ठिती अणुबंधो य जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी। सेसं तं चेव। भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं०। नवसु वि गमएसु कायसंवेहो भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालाएसेणं उवजुज्जिऊण भाणितव्वं, नवरं मज्झिमएसु तिसु गमएसु -जहेव बेइंदियस्स मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु। पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहा एयस्स चेव पढमगमए, नवरं ठिती अणुबंधो जहन्नेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेसं तहेव जाव नवगमए जहन्नेणं पुव्वकोडी बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेविज्जा०। १-९ गमगा [सु. ३१-३३. पुढविकाइयउववज्जंतम्मि सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]३१. जदि सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए० किं संखेज्जवासाउय०, असंखेज्जवासाउय०? गोयमा ! संखेज्जवासाउय०, नो असंखेज्जवासाउय०। ३२. जदि संखेज्जवासाउय० किं जलचरेहिंतो० ? सेसं जहा असण्णीणं जाव- ३३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति०? एवं जहा रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स सन्निस्स तहेव इह वि, नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। सेसं तहेव जाव कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं०। एवं संवेहो णवसु वि गमएसु जहा असण्णीणं तहेव निरवसेसं। लद्धी से आदिल्लएसु तिसु वि गमएसु एस चेव, मज्झिल्लएसु वि तिसु गमएसु एस चेव। नवरं इमाइं नव नाणत्ताइं-ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति०, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जति०। तिन्नि लेस्साओ, मिच्छादिट्ठी, दो अन्नाणा, कायजोगी, तिन्नि समुग्घाया; ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं; अप्पसत्था अज्झवसाणा, अणुबंधो जहा ठिती। सेसं तं चेव। पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहेव पढमगमए, नवरं ठिती अणुबंधो जहन्नेणं पुव्वकोडी। सेसं तं चेव। १-९ गमगा। [सु. ३४. मणुस्से पडुच्च पुढविकाइयउववायनिरूवणं]३४. जदि मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सन्निमणुस्सेहिंतो उवव०, असन्निमणुस्सेहिंतो० ? गोयमा ! सन्निमणुस्सेहिंतो०, असण्णिमणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति। [सु. ३५. पुढविकाइयउववज्जंतम्मि असन्निमणुस्सम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]३५. असन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु० से णं भंते ! केवतिकाल०? एवं जहा असन्निपंचेंदियतिरिक्खस्स जहन्नकालट्ठितीयस्स तिन्नि गमगा तहा एतस्स वि ओहिया तिन्नि गमगा भाणियव्वा तहेव निरवसेसं। सेसा छ न भण्णंति। १-३ गमगा [सु. ३६-३९. पुढविकाइयउववज्जंतम्मि सन्निमणुस्सम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ३६. जइ सन्निमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउय०, असंखेज्जवासाउय०? गोयमा ! संखेज्जवासाउय०, णो असंखेज्जवासाउय०। ३७. जदि संखेज्जवासाउय० किं पज्जत्ता०, अपज्जत्ता०? गोयमा ! पज्जत्तासंखे०, अपज्जत्तासंखेज्जवासा०। ३८. सन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उवव० से णं भंते ! केवतिकाल०? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त०, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु। ३९. ते णं भंते ! जीवा० ? एवं जहेव रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स तहेव तिसु वि गमएसु लद्धी। नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं पंच धणुसताइं; ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी। एवं अणुबंधो। संवेहो नवसु गमएसु जहेव सन्निपंचेंदियस्स। मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु लद्धी-जहेव सन्निपंचेंदियस्स मज्झिल्लएसु तिसु। सेसं तं चेव निरवसेसं। पच्छिल्ला तिन्नि गमगा जहा एयस्स चेव ओहिया गमगा, नवरं ओगाहणा जहन्नेणं पंच धणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंच धणुसयाइं; ठिती अणुबंधो जहन्नेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेसं तहेव, नवरं पच्छिल्लएसु गमएसु संखेज्जा उववज्जंति, नो असंखेज्जा उवव०। १-९ गमगा। [सु. ४०. देवे पडुच्च पुढविकाइयउववायनिरूवणं] ४०. जति देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति, वाणमंतर०, जोतिसियदेवेहिंतो उवव०, वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति? गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जंति जाव वेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जंति। [सु. ४१. भवणवासिदेवे पडुच्च पुढविकाइयउववायनिरूवणं] ४१. जइ भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति किं असुरकुमारभवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहिंतो०? गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जंति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जंति। [सु. ४२-४६. पुढविकाइयउववज्जंतम्मि असुरकुमारम्मि उववाय -परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]४२. असुरकुमारे णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवति०? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त०, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठिती०। ४३. ते णं भंते ! जीवा० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उवव०। ४४. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंघयणी पन्नत्ता ? गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी जाव परिणमंति। ४५. तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा०? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-भवधारणिज्जा य, उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं सत्त रयणीओ। तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं जोयणसयसहस्सं। ४६. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंठिता पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-भवधारणिज्जा य, उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते समचतुरंससंठिया पन्नत्ता। तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते नाणासंठिया पन्नत्ता। लेस्साओ चत्तारि। दिट्ठी तिविहा वि। तिण्णि णाणा नियमं, तिण्णि अण्णाणा भयणाए। जोगो तिविहो वि। उवयोगो दुविहो वि। चत्तारि सण्णाओ। चत्तारि कसाया। पंच इंदिया। पंच

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुग्घाया। वेयणा दुविहा वि। इत्थिवेदगा वि, पुरिसवेदगा वि, नो नपुंसगवेयगा। ठिती जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सातिरेगं सागारोवमं। अज्झवसाणा असंखेज्जा, पसत्था वि अप्पसत्था वि। अणुबंधो जहा ठिती। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं सातिरेगं सागारोवमं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं, एवतियं०। एवं णव वि गमा नेयव्वा, नवरं मज्झिल्लएसु पच्छिल्लएसु य तिसु गमएसु असुरकुमाराणं ठितिविसेसो जाणियव्वो। सेसा ओहिया चेव लद्धी कायसंवेहं च जाणेज्जा। सव्वत्थ दो भवग्गहणा जाव णवमगमए कालादेसेणं जहन्नेणं सातिरेगं सागारोवमं बावीसाए वाससहस्सेहिमब्भहियं, उक्कोसेण वि सातिरेगं सागारोवमं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं, एवतियं०। १-९ गमगा। [सु. ४७. पुढविकाइयउववज्जंतेसु नागकुमाराइथणियकुमारपज्जंतेसु उववाय -परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]४७. नागकुमारे णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु० ? एस चेव वत्तव्वया जाव भवादेसो त्ति। णवरं ठिती जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलितोवमाइं। एवं अणुपंधो वि, कालादेसेणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाइं। एवं णव वि गमगा असुरकुमारगमगसरिसा, नवरं ठितिं कालाएसं च जाणेज्जा। एवं जाव थणियकुमाराणं। [सु. ४८-४९. पुढविकाइयउववज्जंतेसु वाणमंतरेसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ४८. जति वाणमंतरेहिंतो उववज्जंति किं पिसायवाणमंतर० जाव गंधव्ववाणमंतर० ? गोयमा ! पिसायवाणमंतर० जाव गंधव्ववाणमंतर०। ४९. वाणमंतरदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविकाइए०? एएसिं पि असुरकुमारगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा। नवरं ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा। ठिती जहन्नेणं दस वाससससहस्साइं, उक्कोसेणं पलिओवमं। सेसं तहेव। [सु. ५०-५१. पुढविकाइयउववज्जंतेसु जोइसिएसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ५०. जति जोतिसियदेवेहिंतो उवव० किं चंदविमाणजोतिसियदेवेहिंतो उववज्जंति जाव ताराविमाणजोतिसियदेवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! चंदविमाण० जाव ताराविमाण०। ५१. जोतिसियदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविकाइए०। लद्धी जहा असुरकुमाराणं। णवरं एगा तेउलेस्सा पन्नत्ता। तिन्नि नाणा, तिन्निअन्नाणा नियमं। ठिती जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं। एवं अणुबंधो वि कालाएसेणं जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्सेणं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं, एवतियं०। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं ठितिं कालाएसं च जाणेज्जा। [सु. ५२-५३. वेमाणियदेवे पडुच्च पुढविकाइयउववायनिरूवणं]५२. जइ वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति किं कप्पोवगवेमाणिय० कप्पातीयवेमाणिय०? गोयमा ! कप्पोवगवेमाणिय०, नो कप्पातीयवेमाणिय०। ५३. जदि कप्पोवगवेमाणिय० किं सोहम्मकप्पोवगवेमाणिय० जाव अच्चुयकप्पोवगवेमा०? गोयमा ! सोहम्मकप्पोवगवेमाणिय०, ईसाणकप्पोवगवेमाणिय०, नो सणंकुमारकप्पोवगवेमाणिय० जाव नो अच्चुयकप्पोवगवेमाणिय०। [सु. ५४ -५५. पुढविकाइयउववज्जंतेसु सोहम्मीसाणदेवेसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]५४. सोहम्मदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उवव० से णं भंते ! केवति० ? एवं जहा जोतियस्स गमगो। णवरं ठिती अणुबंधो य जहन्नेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं दो सागारोवमाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं दो सागारोवमाइं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं०। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, णवरं ठितिं कालाएसं च जाणेज्जा। १-९ गमगा। ५५. ईसाणदेवे णं भंते ! जे भविए० ? एवं ईसाणदेवेण वि नव गमगा भाणियव्वा, नवरं ठिती अणुबंधो जहन्नेणं सातिरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागारोवमाइं। सेसं तं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरति। ॥२४ सते १२ उद्देसो समत्तो॥ **☆☆☆ तेरसमो आउकाइयउद्देसओ ☆☆☆** [सु. १. तेरसमुद्देसगस्स मंगलं] १. नमो सुयदेवयाए। [सु.२-३. आउकाइयउववज्जंतेसु चउवीसइदंडएसु बारसमुद्देसगाणुसारेणं वत्तव्वयानिद्देसो] २. आउकाइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?० एवं जहेव पुढविकाइयउद्देसए जाव पुढविकाइये णं भंते ! जे भविए आउकाइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवति०? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त०, उक्कोसेणं सत्तवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। ३.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं पुढविकाइयउद्देसगसरिसो भाणियव्वो, णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तहेव। सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति। ॥२४ सते तेरसमो॥ ☆☆☆ **चउद्दसमो तेउक्काइयउद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. तेउक्काइयउववज्जंतेसु दंडएसु बारसमुद्देसगाणुसारेणं वत्तव्वयानिद्देसो] १. तेउक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?० एवं पुढविकाइयउद्देसगसरिसो उद्देसो भाणितव्वो, नवरं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। देवेहिंतो न उववज्जंति। सेसं तं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति। ॥२४ सते चतुद्दसमो॥ ☆☆☆ **पण्णरसमो वाउकाइयउद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. वाउकाइयउववज्जंतेसु दंडएसु चोद्दसमउद्देसाणुसारेणं वत्तव्वयानिद्देसो] १. वाउकाइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?० एवं जहेव तेउक्काइयउद्देसओ तहेव, नवरं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥२४ सते पनरसमो॥ ☆☆☆ **सोलसमो वणस्सइकाइयउद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. वणस्सइकायउववज्जंतेसु चउवीसइदंडएसु बारसमुद्देसगाणुसारेणं वत्तव्वयानिद्देसो] १. वणस्सतिकाइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?० एवं पुढविकाइयसरिसो उद्देसो, नवरं जाहे वणस्सतिकाइओ वणस्सतिकाइएसु उववज्जति ताहे पढम-बितिय-चतुत्थ-पंचमेसु गमएसु परिमाणं अणुसमयं अविरहियं अणंता उववज्जंति; भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अणंताइं भवग्गहणाइं; कालाएसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंतं कालं; एवतियं०। सेसा पंच गमा अट्ठभवग्गहणिया तहेव; नवरं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆ **सत्तरमो बेइंदियउद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १-२. बेइंदियउववज्जंतेसु दंडएसु उववाय परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] १. बेइंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?० जाव पुढविकाइए णं भंते ! जे भविए बेइंदिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवति०? स च्चेव पुढविकाइयस्स लद्धी जाव कालाएसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं संखेज्जाइं भवग्गहणाइं; एवतियं०। २. एवं तेसु चेव चउसु गमएसु संवेहो, सेसेसु पंचसु तहेव अट्ठ भवा। एवं जाव चतुरिंदिएणं समं चउसु संखेज्जा भवा, पंचसु अट्ठ भवा, पंचेंदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्सेसु समं तहेव अट्ठ भवा। देवेसु न चेव उववज्जंति, ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥२४ सते सत्तरसमो॥ ☆☆☆ **अट्ठारसमो तेइंदियउद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. तेइंदियउववज्जंतेसु दंडएसु सत्तरसमुद्देसाणुसारेणं वत्तव्वयानिद्देसो] १. तेइंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?० एवं तेइंदियाणं जहेव बेंदियाणं उद्देसो, नवरं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। तेउकाइएसु समं ततियगमे उक्कोसेणं अट्ठुत्तराइं बे राइंदियसयाइं। बेइंदिएहिं समं ततियगमे उक्कोसेणं अडयालीसं संवच्छराइं छण्णउयराइंदियसयमब्भहियाइं। तेइंदिएहिं समं ततियगमे उक्कोसेणं बाणउयाइं तिन्नि राइंदियसयाइं। एवं सव्वत्थ जाणेज्जा जाव सन्निमणुस्स त्ति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥२४.१८॥ ☆☆☆ **एगूणवीसमो चउरिंदियउद्देसओ** ☆☆☆[सु. १. चउरिंदियउववज्जंतेसु दंडएसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] १. चउरिंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?० जहा तेइंदियाणं उद्देसओ तहा चउरिंदियाण वि, नवरं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥२४.१९॥ ☆☆☆ **वीसइमो पंचेंदियतिरिक्खजोणियउद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. गइं पडुच्च पंचेंदियतिरिक्खजोणियउववायनिरूवणं] १. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरतिएहिंतो उवव०, तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नेरइएहिंतो वि उवव०, तिरिक्खमणुएहिंतो वि उववज्जंति, देवेहिंतो वि उववज्जंति। [सु. २. नरयपुढवीओ पडुच्च पंचेंदियतिरिक्खजोणियउववायनिरूवणं]२. जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! रयणप्पभपुढविनेरइएहिंतो वि उवव० जाव अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो वि०। [सु. ३-१० पंचेंदियतिरिक्खजोणियउववज्जंतम्मि रयणप्पभाइअहेसत्तमपुढविनेरइयम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]३. रयणप्पपुढविनेरइए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उवव० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा। ४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उवव०? एवं जहा असुरकुमाराणं वत्तव्वया। नवरं संघयणे पोग्गला अणिट्ठा अकंता जाव परिणमंति। ओगाहणा दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया

य। तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं सत्त धणूइं तिन्नि रयणीओ उच्च अंगुलाइं। तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं पन्नरस धणूइं अड्ढातिज्जाओ य रयणीओ। ५. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंठिया पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया पन्नत्ता। तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते वि हुंडसंठिया पन्नत्ता। एगा काउलेस्सा पन्नत्ता। समुग्घाया चत्तारि नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा; नपुंसगवेदगा। ठिती जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सागरोवमं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तहेव। भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं कालाएसेणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं०। पढमो गमओ। ६. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु उववन्नो, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु उववन्नो। अवसेसं तहेव, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं तहेव, उक्कोसेणं चत्तरि सागरोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं; एवतियं कालं०। बीओ गमओ। ७. एवं सेसा वि सत्त गमगा भाणियव्वा जहेव नेरइयउद्देसए। सन्निपंचेंदिएहिं समं णेरइयाणं मज्झिमएसु य तिसु गमएसु पच्छिमएसु य तिसु गमएसु ठितिनाणत्तं भवति। सेसं तं चेव। सव्वत्थ ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। ३-९ गमगा। ८. सक्करप्पभाएपुढविनेरइए णं भंते ! जे भविए० ? एवं जहा रयणप्पभाए नव गमगा तहेव सक्करप्पभाए वि, नवरं सरीरोगाहणा जहा ओगाहणसंठाणे; तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा नियमं। ठिति-अणुबंधा पुव्वभाणिया। एवं नव वि गमगा उवजुंजिऊण भाणियव्वा। ९. एवं जाव छट्ठपुढवी, नवरं ओगाहणा-लेस्सा-ठिति-अणुबंधा संवेहा य जाणियव्वा। १०. अहेसत्तमपुढविनेरइए णं भंते ! जे भविए०? एवं चेव णव गमगा, नवरं ओगाहणा-लेस्सा-ठिति-अणुबंधा जाणियव्वा। संवेहे भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छ भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं बावीसं सागारोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागारोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं; एवतियं०। आदिल्लएसु छसु गमएसु जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छ भवग्गहणाइं। पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं चत्तारि भवग्गहणाइं। लद्धी नवसु वि गमएसु जहा पढमगमए, नवरं ठितिविसेसो कालाएसो य-बितियगमए जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं; एवतियं कालं०। ततियगमए जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। चउत्थगमे जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। पंचमगमए जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं। छट्ठगमए जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। सत्तमगमए जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। अट्ठमगमए जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छाट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं। णवमगमए जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं०। १-९ गमगा। [सु. ११-१५. पंचेंदियतिरिक्खजोणियउववज्जंतेसु एगिंदिय-विगलिंदिएसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ११. जति तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो०? एवं उववाओ जहा पुढविकाइयउद्देसए जाव- १२. पुढविकाइए णं भंते ! जे भविए पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवति०? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जति। १३. ते णं भंते ! जीवा० ? एवं परिमाणाईया अणुबंधपज्जवसाणा जा चेव अप्पणो सट्ठाणे वत्तव्वया सा चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स भाणियव्वा, नवरं नवसु वि गमएसु परिमाणे जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति। भवादेसेण वि नवसु वि गमएसु-भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। सेसं तं चेव।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालाएसेणं उभओ ठितिं करेज्जा। १४. जदि आउकाइएहिंतो उवव०? एवं आउकाइयाण वि। १५. एवं जाव चउरिंदिया उववाएयव्वा, नवरं सव्वत्थ अप्पणो लद्धी भाणियव्वा। नवसु वि गमएसु भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालाएसेणं उभओ ठितिं करेज्जा सव्वेसिं सव्वगमएसु। जहेव पुढविकाइएसु उववज्जमाणाणं लद्धी तहेव। सव्वत्थ ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। [सु. १६-२८. पंचेदियतिरिक्खजोणियउववज्जंतम्मि असन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] १६. जदि पंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, असन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणि०? गोयमा! सन्निपंचेंदिय०, असन्निपंचेदिय०। भेदो जहेव पुढविकाइएसु उववज्जमाणस्स जाव- १७. असन्निपंचेदियतिरिक्खजोणिए णं भंते! जे भविए पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते! केवतिकाल०? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त०, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागट्ठितीएसु उवव०। १८. ते णं भंते!० ? अवसेसं जहेव पुढविकाइएसु उववज्जमाणस्स असन्निस्स तहेव निरवसेसं जाव भवाएसो त्ति। कालाएसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियं; एवतियं०। पढमो गमओ। १९. बितियगमए एस चेव लद्धी, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ; एवतियं०। बीओ गमओ। २०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागट्ठितीएसु उवव०। २१. ते णं भंते! जीवा०? एवं जहा रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स असन्निस्स तहेव निरवसेसं जाव कालादेसो त्ति, नवरं परिमाणे-जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति। सेसं तं चेव। तइओ गमओ। २२. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ जाओ, अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उवव० २३. ते णं भंते!० ? अवसेसं जहा एयस्स पुढविकाइएसु उववज्जमाणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु तहा इह वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु जाव अणुबंधो त्ति। भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ। चउत्थो गमओ। २४. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमहुत्ता, उक्कोसेणं अट्ठ अंतोमुहुत्ता; एवतियं०। पंचमो गमओ। २५. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं पुव्वकोडिआउएसु, उक्कोसेण वि पुव्वकोडिआउएसु उवव०। एस चेव वत्तव्वया, नवरं कालाएसेणं जाणेज्जा। छट्ठो गमओ। २६. सो चेव अप्पणा उक्कोसकमालट्ठितीओ जाओ, सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया, नवरं ठिती से जहन्नेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेसं तं चेव। कालाएसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियं; एवतियं०। सत्तमो गमओ। २७. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एस चेव वत्तव्वया जहा सत्तमगमे, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ; एवतियं०। अट्ठमो गमओ। २८. सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववन्नो, जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखेज्जजइभागं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं। एवं जहा रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स असन्निस्स नवमगमए तहेव निरवसेसं जाव कालादेसो त्ति, नवरं परिमाणं जहा एयस्सेव ततियगमे। सेसं तं चेव। नवमो गमओ। [सु. २९-३८. पंचेंदियतिरिक्खजोणियउववज्जंतम्मि सन्निपंचेदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] २९. जदि सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासा०, असंखेज्ज०? गोयमा! संखेज्ज०, नो असंखेज्ज०। ३०. जदि संखेज्ज० जाव किं पज्जत्तासंखेज्ज०, अपज्जत्तासंखेज्जज० ? दोसु वि। ३१. संखेज्जवाससाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए जे भविए पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते! केवति०? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जिज्जा। ३२. ते णं भंते!० अवसेसं जहा एयस्स चेव सन्निस्स रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स पढमगमए, नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, सेसं तं जाव भवादेसो त्ति। कालदेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं

पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं; एवतियं०। पढमो गमओ । ३३. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ। बीओ गमओ । ३४. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहन्नेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु उवव० । एस चेव वत्तव्वया, नवरं परिमाणं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं । सेसं तं चेव जाव अणुबंधो त्ति । भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहन्नेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं। तइओ गमओ । ३५. सो चेव जहन्नकालट्ठितीओ जाओ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उवव०। लद्धी से जहा एयस्स चेव सन्निपंचेंदियस्स पुढविकाइएसु उववज्जमाणस्स मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु सच्चेव इह वि मज्झिमएसु तिसु गमएसु कायव्वा । संवेहो जहेव एत्थ चेव असन्निस्स मज्झिमएसु तिसु गमएसु। ४-६ गमगा । ३६. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, जहा पढमगमओ, णवरं ठिती अणुबंधो जहन्नेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । कालाएसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं। सत्तमो गमओ । सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ। अट्ठमो गमओ । ३८. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु । अवसेसं तं चेव, नवरं परिमाणं ओगाहणा य जहा एयस्सेव ततियगमए । भवाएसेणं दो भवग्गहणाइं । कालाएसेणं जहन्नेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं; एवतियं० । नवमो गमओ । [सु. ३९. मणुस्से पडुच्च पंचेदियतिरिक्खजोणियउववायनिरूवणं] ३९. जदि मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सण्णिमणु०, असण्णिमणु० ? गोयमा ! सण्णिमणु०, असण्णिमणु० । [सु. ४०. पंचेदियतिरिक्खजोणियउववज्जंतम्मि असण्णिमणुस्सम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ४०. असन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए पंचेदियतिरिक्ख० उवव० से णं भंते ! केवतिकाल०? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जति । लद्धी से तिसु वि गमएसु जहेव पुढविकाइएसु उववज्जमाणस्स, संवेहो जहा एत्थ चेव असन्निस्स पंचेंदियस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु तहेव निरवसेसो भाणियव्वो । [सु. ४१-५०. पंचेदियतिरिक्खजोणियउववज्जतम्मि सन्निमणुस्सम्मि उवाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ४१. जइ सण्णिमणुस्स० किं संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्स०, असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्स०? गोयमा ! संखेज्जवासाउय०, नो असंखेज्जवासाउय०। ४२. जदि संखेज्ज० किं पज्जत्ता०, अपज्जत्ता०? गोयमा ! पज्जत्ता०, अपज्जत्ता० । ४३. असंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्ख० उववज्जित्तए से णं भंते ! केवति०? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त०, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उवव० । ४४. ते णं भंते !० ? लद्धी से जहा एयस्सेव सन्निमणुस्सस्स पुढविकाइएसु उववज्जमणस्स पढमगमए जाव भवादेसो त्ति । कालाएसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं। पढमो गमओ । ४५. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तरि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ। बीओ गमओ । ४६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं तिपलिओवमट्ठिईएसु, उक्कोसण वि तिपलिओवमट्ठिईएसु । एसा चेव वत्तव्वया, नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलपुहुत्तं, उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं । ठिती जहन्नेणं मासपुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । एवं अणुबंधो वि । भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहन्नेणं तिण्णि पलिओवमाइं मासपुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं; एवतियं०। तइओ गमओ । ४७. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ जाओ, जहा सन्निस्स पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु वत्तव्वया भणिया सच्चेव एतस्स वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु निरवसेसा भाणियव्वा, नवरं परिमाणं उक्कोसेणं संखेज्जा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उववज्जंति। सेसं तं चेव ४-६ गमगा । ४८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया, नवरं ओगाहणा जहन्नेणं पंच धणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंच धणुसयाइं । ठिती अणुबंधो जहन्नेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । सेसं तहेव जाव भवाएसो त्ति । कालादेसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं; एवतियं० । सत्तमो गमओ । ४९. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एसा चेव वत्तव्वया, नवरं कालएसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ। अट्ठमो गमओ । ५०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं तिपलिओवमा, उक्कोसेणं वि तिपलिओवमा। एस चेव लद्धी जहेव सत्तमगमे। भवाएसेणं दो भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं; एवतियं०। नवमो गमओ । [सु. ५१. देवे पडुच्च पंचेंदियतिरिक्खजोणियउववायनिरूवणं] ५१. जदि देवेहिंतो उवव० किं भवणवासिदेवेहिंतो उवव०, वाणमंतर०, जोतिसिय०, वेमाणियदेवेहिंतो०? गोयमा ! भवणवासिदेवे० जाव वेमाणियदेवे० । [सु. ५२-५५. पंचेंदियतिरिक्खजोणियउववज्जंतेसु भवणवासिदेवेसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ५२. जदि भवणवासि० किं असुरकुमारभवण० जाव थणियकुमारभवण०? गोयमा ! असुरकुमार० जाव थणियकुमारभवण०। ५३. असुरकुमारे णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवति०? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उवव० । असुरकुमाराणं लद्धी नवसु वि गमएसु जहा पुढविकाइएसु उववज्जमाणस्स एवं जाव ईसाणदेवस्स तहेव लद्धी। भवाएसेणं सव्वत्थ अट्ठ भवग्गहणाइं उक्कोसेणं, जहन्नेणं दोन्नि भव०। ठितिं संवेहं च सव्वत्थ जाणेज्जा। ५४. नागकुमारे णं भंते ! जे भविए०? एस चेव वत्तव्वया, नवरं ठितिं संवेधं च जाणेज्जा। ५५. एवं जाव थणियकुमारे ।[सु. ५६-५७. पंचेंदियतिरिक्खजोणियउववज्जंतेसु वाणमंतरदेवेसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं]५६. जदि वाणमंतरे० किं पिसाय०? तहेव जाव- ५७. वाणमंतरे णं भंते ! जे भविए पंचेंदियतिरिक्ख०? एवं चेव, नवरं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा । [सु. ५८-६०. पंचेंदियतिरिक्खजोणियउववज्जंतेसु जोतिसियदेवेसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ५८. जदि जोतिसिय० उववातो तहेव जाव- ५९. जोतिसिए णं भंते ! जे भविए पंचेंदियतिरिक्ख० एस चेव वत्तव्वया जहा पुढविकाइयउद्देसए। भवग्गहणाइं नवसु वि गमएसु अट्ठ जाव कालाएसेणं जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं चउहि य वाससयसहस्सेहिं अब्भहियाइं; एवतियं० । ६०. एवं नवसु वि गमएसु नवरं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। [सु. ६१-६२. वेमाणियदेवे पडुच्च पंचेंदियतिरिक्खजोणियउववायनिरूवणं] ६१. जदि वेमाणियदेवे० किं कप्पोवग०, कप्पातीतवेमाणिय०? गोयमा ! कप्पोवगवेमाणिय०, नो कप्पातीतवेमा०। ६२. जदि कप्पोवग० जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जंति नो आणय जाव नो अच्चुयकप्पोवगवेमा०। [सु.६३-६५. पंचेंदियतिरिक्खजोणियउववज्जंतेसु सोहम्माइसहस्सारदेवपज्जंतेसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ६३. सोहम्मदेवे णं भंते ! ग्रं० १३००० जे भविए पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवति०? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त०, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु। सेसं जहेव पुढविकाइयउद्देसए नवसु वि गमएसु, नवरं नवसु वि गमएसु जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा। ६४. एवं ईसाणदेवे वि। ६५. एवं एएणं कमेणं अवसेसा वि जाव सहस्सारदेवेसु उववातेयव्वा, नवरं ओगाहणा जहा ओगाहणसंठाणे । लेस्सा-सणंकुमार-माहिंद-बंभलोएसु एगा पम्हलेस्सा, सेसाणं एगा सुक्कलेस्सा। वेदे-नो इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नो नपुंसगवेदगा। आउ-अणुबंधा जहा ठितिपदे। सेसं जहेव ईसाणगाणं। कायसंवेहं च जाणेज्जा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆ **॥२४ सते वीसतिमो उद्देसओ॥ एक्कवीसइमो मणुस्सउद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. गइं पडुच्च मणुस्सउववायनिरूवणं] १. मणुस्स णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति जाव देवेहिंतो उवव०? गोयमा ! नेरइएहिंतो वि उववज्जंति, एवं उववाओ जहा पंचेंदियतिरिक्खजोणिउद्देसए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उ० २० सु० १-२) जाव तमापुढविनेरइएहिंतो वि उववज्जंति, नो अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो उवव०। [सु. २-४ मणुस्सउववज्जंतम्मि रयणप्पभारइतमापज्जंतपुढविनेरइयम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] २. रयणप्पभपुढविनेरइए णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उवव० से णं भंते ! केवतिकाल०? गोयमा ! जहन्नेणं मासपुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु। ३. अवसेसा वत्तव्वया जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंतस्स तहेव, नवरं परिमाणे जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति, जहा तहिं अंतोमुहुत्तेहिं तहा इहं मासपुहुत्तेहिं संवेहं करेज्जा। सेसं तं चेव। ४. जहा रयणप्पभाए तहा सक्करप्पभाए वि वत्तव्वया, नवरं जहन्नेणं वासपुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकाडि०। ओगाहणा-लेस्सा-नाण-ट्ठिति-अणुबंध-संवेहनाणत्तं च जाणेज्जा जहेव तिरिक्खजोणियउद्देसए (उ० २० सु० ८-९) एवं जाव तमापुढविनेरइए। [सु. ५-१२. मणुस्सउववज्जंतेसु तेउ-वाउवज्जएगिंदिय-विगलिंदिय-पंचेंदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्सेसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ५. जति तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उवव० ? गोयमा ! एगिंदियतिरिक्ख० भेदो जहा पंचेंदियतिरिक्खजोणिउद्देसए (उ० २० सु० ११) नवरं तेउ-वाऊ पडिसेहेयव्वा। सेसं तं चेव जाव- ६. पुढविकाइए णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवति०? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उवव०। ७. ते णं भंते ! जीवा०? एवं जा चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स पुढविकाइयस्स वत्तव्वया सा चेव इह वि उववज्जमाणस्स भाणियव्वा नवसु वि गमएसु, नवरं ततिय-छट्ठ-णवमेसु गमएसु परिमाणं जहन्नेणं एक्को वा दो तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति। ८. जाहे अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ भवति ताहे पढमगमए अज्झवसाणा पसत्था वि अप्पसत्था वि, बितियगमए अप्पसत्था, ततियगमए पवत्था भवंति। सेसं तं चेव निरवसेसं। ९. जति आउकाइए० एवं आउकाइयाण वि। १०. एवं वणस्सतिकाइयाण वि। ११. एवं जाव चउरिंदियाणं। १२. असन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिया सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिया असन्निमणुस्सा सन्निमणुस्सा य, एए सव्वे वि जहा पंचेंदियतिरिक्खजोणिउद्देसए तहेव भाणितव्वा, नवरं एताणि चेव परिमाण-अज्झवसाणणाणत्ताणि जाणिज्जा पुढविकाइयस्स एत्थ चेव उद्देसए भाणियाणि। सेसं तहेव निरवसेसं। [सु. १३. देवे पडुच्च मणुस्सउववायपरूवणं] १३. जदि देवेहिंतो उवव० किं भवणवासिदेवेहिंतो उवव०, वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियदेवेहिंतो उवव०? गोयमा ! भवणवासि० जाव वेमाणिय०। [सु. १४-२७. मणुस्सउववज्जंतेसु भवणवासि-वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियदेवेसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] १४. जदि भवण० किं असुर० जाव थणिय०? गोयमा ! असुर० जाव थणिय०। १५. असुरकुमारे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उवव० से णं भंते ! केवति०? गोयमा ! जहन्नेणं मासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा। एवं जच्चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणिउद्देसवत्तव्वया सा चेव एत्थ वि भाणियव्वा, नवरं जहा तहिं जहन्नगं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु तहा इहं मासपुहत्तट्ठिईएसु, परिमाणं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति। सेसं तं चेव जाव ईसाणदेवो त्ति। एयाणि चेव णाणत्ताणि। सणंकुमारादीया जाव सहस्सारो त्ति, जहेव पंचेंदियतिरिक्खजोणिउद्देसए नवरं परिमाणे जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति। उववाओ जहन्नेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उवव०। सेसं तं चेव। संवेहं वासपुहत्तपुव्वकोडीसु करेज्जा। १६. सणंकुमारे ठिती चउग्गुणिया अट्ठावीसं सागरोवमा भवंति। माहिंदे ताणि चेव सातिरेगाणि। बंभलोए चत्तालीसं। लंतए छप्पण्णं। महासुक्के अट्ठसट्ठिं। सहस्सारे बावत्तरिं सागरोवमाइं। एसा उक्कोसा ठिती भणिया, जहन्नट्ठितिं पि चउगुणेज्जा। १७. आणयदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवति०? गोयमा ! जहन्नेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु उवव०, उक्कोसेणं पुव्वकोडिट्ठितीएसु। १८. ते णं भंते !० ? एवं जहेव सहस्सारदेवाणं वत्तव्वया, नवरं ओगाहणा-ठिति-अणुबंधे य जाणेज्जा। सेसं तं चेव। भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छ भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं अट्ठारस सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं सत्तावण्णं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं; एवतियं कालं०। एवं नव वि गमा, नवरं ठितिं अणुबंधं संवेहं च जाणेज्जा। १९. एवं जाव अच्चुयदेवो, नवरं ठितिं अणुबंधं संवेहं च जाणेज्जा। पाणयदेवस्स ठिती तिउणा-सट्ठिं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सागरोवमाइं, आरणगस्स तेवट्ठिं सागरोवमाइं, अच्चुयदेवस्स छावट्ठिं सागरोवमाइं। २०. जदि कप्पातीतवेमाणियदेवेहिंतो उववo किं गेवेज्जकप्पातीतo, अणुत्तरोववातियकप्पातीतo? गोयमा ! गेवेज्जo अणुत्तरोववाo। २१. जइ गेवेज्जo किं हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जकप्पातीतo जाव उवरिम-उवरिमगेवेजo? गोयमा ! हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जo जाव उवरिमउवरिमo। २२. गेवेज्जगदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकाo? गोयमा ! जहन्नेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिo। अवसेसं जहा आणयदेवस्स वत्तव्वया, नवरं ओगाहणा, गोयमा ! एगे भवधारणिज्जे सरीरए से जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं दो रयणीओ। संठाणं गोयमा ! एगे भवधारणिज्जे सरीरए से समचउरंससंठिते पन्नत्ते। पंच समुग्घाया पन्नत्ता, तं जहा-वेयणासमुग्घाए जाव तेयगसमुo, नो चेव णं वेउव्विय-तेयगसमुग्घाएहिं समोहन्निंसु वा, समोहन्नंति वा, समोहण्णिस्संति वा, ठिति-अणुबंधा जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं। सेसं तं चेव। कालाएसेणं जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तेणउतिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं; एवतियंo। एवं सेसेसु वि अट्ठगमएसु, नवरं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। २३. जदि अणुत्तरोववातियकप्पातीतवेमाणिo किं विजयअणुत्तरोववातियo वेजयंतअणुत्तरोववातियo जाव सव्वट्ठसिद्धo? गोयमा ! विजयअणुत्तरोववातियo जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियo। २४. विजय-वेजयंत-जयंत- अपराजितदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववo से णं भंते ! केवतिo? एवं जहेव गेवेज्जगदेवाणं, नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं एगा रयणी। सम्मद्दिट्ठी, नो मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, णाणी, णो अण्णाणी, नियमं तिनाणी, तं जहा-आभिणिबाहियo सुयo ओहिणाणी। ठिती जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। सेसं तं चेव। भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं चत्तारि भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं एक्कत्तीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं; एवतियंo। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं ठितिं अणुबंधं संवेधं च जाणेज्जा। सेसं एवं चेव। २५. सव्वट्ठसिद्धगदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तएo? सा चेव विजयादिदेववत्तव्वया भाणियव्वा, णवरं ठिती अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तं चेव। भवाएसेणं दो भवग्गहणाइं, कालाएसेणं जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं; एवतियंo। पढमो गमओ। २६. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं; एवतियंo। बीओ गमओ। २७. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं; एवतियंo। तइओ गमओ। एए चेव तिण्णि गमगा, सेसा न भण्णंति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्तिo। ☆☆☆॥२४ सते २१ उद्देसो॥ **बावीसइमो वाणमंतरुद्देसओ** ☆☆☆

[सु. १. वाणमंतरउववज्जंतम्मि असन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि नागकुमारुद्देसाणुसारेण उववाय-परिमाणाइवीसइदारावगमनिद्देसो] १. वाणमंतरा णं भंते कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंतिo? एवं जहेव णागकुमारुद्देसए असण्णी तहेव निरवसेसं। [सु. २-७. वाणमंतरउववज्जंतम्मि सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] २. जदि सन्निपंचेंदियo जाव असंखेज्जवासायसन्निपंचेंदियo जे भविए वाणमंतरo से णं भंते ! केवतिo? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठितीएसु। सेसं तं चेव जहा नागकुमारउद्देसए जाव कालएसेणं जहन्नेणं सातिरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं; एवतियंo। पढमो गमओ। ३. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहेव णागकुमाराणं बितियगमे वत्तव्वया। बीओ गमओ। ४. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं पलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं वि पलिओवमट्ठितीएसु। एस चेव वत्तव्वया, नवरं ठिती जहन्नेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं तिन्न पलिओवमाइं; एवतियंo। तइओ गमओ। ५. मज्झिमगमगा तिन्नि वि जहेव नागकुमारेसु। ४-६ गमगा। ६. पच्छिमेसु तिसु गमएसु तं चेव जहा नागकुमारुद्देसए, नवरं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। ७-९ गमगा। ७. संखेज्जवासाउयo

तहेव, नवरं ठिती अणुबंधो संवेहं च उभओ ठितीए जाणेज्जा। १-९ गमगा । [सु. ८-९. वाणमंतरउववज्जंतम्मि मणुस्सम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ८. जदि मणुस्स० असंखेज्जवासाउयाणं जहेव नागकुमाराणं उद्देसे तहेव वत्तव्वया, नवरं ततियगमए ठिती जहन्नेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं। ओगाहणा जहन्नेणं गाउयं उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं। सेसं तहेव। संवेहो से जहा एत्थ चेव उद्देसए असंखेज्जवासाउयसन्निपंचिंदियाणं। ९. संखेज्जवासाउयसन्निमणुस्सा जहेव नागकुमारुद्देसए, नवरं वाणमंतरठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆॥२४ सते २२॥ **तेवीसइमो जोतिसियउद्देसओ**☆☆☆

[सु. १-२. गइं पडुच्च जोतिसियदेवउववायपरूवणं] १. जोतिसिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइए० भेदो जाव सन्निपंचेदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, नो असन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उवव०। २. जदि सन्नि० किं सखंज्जे०, असखंज्जे०? गोयमा ! संखेज्जवासाउय०, असंखेज्जवासाउय०। [सु. ३-८. जोतिसियउववज्जंतम्मि असंखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ३. असंखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जोतिसिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवति०? गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमवाससयसहस्सट्ठितीएसु उवव०। अवसेसं जहा असुरकुमारुद्देसए, नवरं ठिती जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तहेव, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं दो अट्ठभागपलिओवमाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं वाससयसहस्समब्भहियाइं; एवतियं०। पढमो गमओ । ४. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु। एस चेव वत्तव्वया, नवरं कालाएसं जाणेज्जा। बीओ गमओ। ५. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं ठिती जहन्नेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि। कालाएसेणं जहन्नेणं दो पलिओवमाइं दोहिं वाससयसहस्सेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं वाससयसहस्समब्भहियाइं। तइओ गमओ । ६. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ जाओ, जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु उवव०। ७. ते णं भंते ! जीवा एग०? एस चेव वत्तव्वया, नवरं ओगाहणा जहन्नेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं अट्ठारस धणुसयाइं। ठिती जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तहेव। कालाएसेणं जहन्नेणं दो अट्ठभागपलिओवमाइं, उक्कोसेण वि दो अट्ठभागपलिओवमाइं, एवतियं०। जहन्नकालट्ठितीयस्स एस चेव एक्को गमगो। चउत्थो गमओ । ८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, सा चेव ओहिया वत्तव्वया, नवरं ठिती जहन्नेणं तिन्नि पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिन्नि पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तं चेव। एवं पच्छिमा तिण्णि गमगा नेयव्वा, नवरं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। एते सत्त गमगा। ५-७ गमगा । [सु. ९. जोतिसियउववज्जंतम्मि संखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ९. जइ संखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदिय० संखेज्जवासाउयाणं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव वि गमगा भाणियव्वा, नवरं जोतिसियठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तहेव निरवसेसं। [सु. १०-१२. जोतिसियउववज्जंतम्मि मणुस्सम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] १०. जदि मणुस्सेहिंतो उववज्जंति०? भेदो तहेव जाव- ११. असंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए जोतिसिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! ०? एवं जहा असंखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियस्स जोतिसिएसु चेव उववज्जमाणस्स सत्त गमगा तहेव मणुस्साण वि, नवरं ओगाहणाविसेसो-पढमेसु तिसु गमएसु ओगाहणा जहन्नेणं सातिरेगाइं नव धणुसयाइं उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं। मज्झिमगमए जहन्नेणं सातिरेगाइं नव धणुसयाइं, उक्कोसेण वि सातिरेगाइं नव धणुसयाइं। पच्छिमेसु तिसु गमएसु जहन्नेणं तिन्नि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिन्नि गाउयाइं। सेसं तहेव निरवसेसं जाव संवेहो त्ति। १२. जदि संखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से० संखेज्जवासाउयाणं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं जोतिसियठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तहेव निरवसेसं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

☆☆☆॥२४ सते २३ उद्देसओ॥ चउवीसइमो वेमाणियउद्देसओ ☆☆☆ [सु. १. गइं पडुच्च सोहम्मगदेवउववायनिरूवणं] १. सोहम्मगदेवा णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति०? भेदो जहा जोतिसियउद्देसए। [सु. २-८. सोहम्मगदेवउववज्जंतेसु असंखेज्ज-संखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववाय-परिमाणाइवीसदारपरूवणं] २. असंखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते! जे भविए सोहम्मगदेवेसु उववज्जित्तए से णं भंते! केवतिकाल०? गोयमा! जहन्नेणं पलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उवव०। ३. ते णं भंते!०, अवसेसं जहा जोतिसिएसु उववज्जमाणस्स, नवरं सम्मद्दिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्ममिच्छादिट्ठी; नाणी वि, अन्नाणी वि, दो नाणा, दो अन्नाणा नियमं; ठिती जहन्नेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तहेव। कालाएसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं छ पलिओवमाइं; एवतियं०। पढमो गमओ। ४. सो चेव जहन्नकालट्ठितीएसु उववन्नो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं कालाएसेणं जहन्नेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं; एवतियं०। बीओ गमओ। ५. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववन्नो, जहन्नेणं तिपलिओवम०, उक्कोसेण वि तिपलिओवम०। एस चेव वत्तव्वया, नवरं ठिती जहन्नेणं तिन्निपलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिन्नि पलिओवमाइं। सेसं तहेव। कालाएसेणं जहन्नेणं छ पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइं०। तइओ गमओ। ६. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ जाओ, जहन्नेणं पलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमट्ठितीएसु। एस चेव वत्तव्वया, नवरं ओगाहणा जहन्नेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेणं दो गाउयाइं। ठिती जहन्नेणं पलिओवमं, उक्कोसेण वि पलिओवमं। सेसं तहेव। कालाएसेणं जहन्नेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि दो पलिओवमाइं; एवतियं०। ४-६ गमगा। ७. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, आदिल्लगमगसरिसा तिन्नि गमगा नेयव्वा, नवरं ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा। ७-९ गमगा। ८. जदि संखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदिय० संखेज्जवासाउयस्स जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव नव वि गमा, नवरं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। जाहे य अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ भवति ताहे तिसु वि गमएसु समद्दिट्ठी वि, मिच्छाद्दिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। दो नाणा, दो अन्नाणा नियमं। सेसं तं चेव। [सु. ९-११. सोहम्मगदेवउववज्जंतेसु असंखेज्ज-संखेज्जवासाउयमणुस्सेसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] ९. जदि मणुस्सेहिंतो उववज्जंति भेदो जहेव जोतिसिएसु उववज्जमाणस्स जाव- १०. असंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से णं भंते! जे भविए सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जित्तए०? एवं जहेव असंखेज्जवासाउयस्स सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स सोहम्मे कप्पे उववज्जमाणस्स तहेव सत्त गमगा, नवरं आदिल्लएसु दोसु गमएसु ओगाहणा जहन्नेणं गाउयं, उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं। ततियगमे जहन्नेणं तिन्नि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिन्नि गाउयाइं। चउत्थगमए जहन्नेणं गाउयं, उक्कोसेण वि गाउयं। पच्छिमेसु गमएसु जहन्नेणं तिन्नि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिन्नि गाउउयाइं। सेसं तहेव निरवसेसं। १-९ गमगा। ११. जदि संखेज्जवासाउयसन्निमणुस्सेहिंतो०, एवं संखेज्जवासाउयसन्निमणुस्साणं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं सोहम्मदेवट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव। [सु. १२-२०. ईसाणइसहस्सारपज्जंतदेवउववज्जंतेसु तिरिक्खजोणियमणुस्सेसु उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] १२. इसाणा देवा णं भंते! कओ० उववज्जंति?० ईसाणदेवाणं एस चेव सोहम्मदेवसरिसा वत्तव्वया, नवरं असंखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स जेसु ठाणेसु सोहम्मे उववज्जमाणस्स, पलिओवमठितीएसु ठाणेसु इहं सातिरेगं पलिओवमं कायव्वं। चउत्थगमे ओगाहणा जहन्नेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो गाउयाइं। सेसं तहेव। १३. असंखेज्जवासाउयसन्निमणूसस्स वि तहेव ठिती जहा पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स असंखेज्जवासाउयस्स, ओगाहणा वि जेसु ठाणेसु गाउयं तेसु ठाणेसु इहं सातिरेगं गाउयं। सेसं तहेव। १४. संखेज्जवासाउयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणूसाण य जहेव सोहम्मे उववज्जमाणाणं तहेव निरवसेसं णव वि गमगा, नवरं ईसाणे ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। १५. सणंकुमारदेवा णं भंते! कतोहिंतो उवव०? उववातो जहा सक्करप्पभपुढविनेरइयाणं जाव- १६. पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते! जे भविए सणंकुमारदेवेसु उववज्जित्तए०? अवसेसा परिमाणादीया भवाएसपज्जवसाणा सच्चेव वत्तव्वया

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाणियव्वा जहा सोहम्मे उववज्जमाणस्स, नवरं सणंकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। जाहे य अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ भवति ताहे तिसु वि गमएसु पंच लेस्साओ आदिल्लाओ कायव्वाओ। सेसं तं चेव। १७. जदि मणुस्सेहिंतो उवव०? मणुस्साणं जहेव सक्करप्पभाए उववज्जमाणाणं तहेव णव वि गमगा भाणियव्वा, नवरं सणंकुममारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। १८. माहिंदगदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति?० जहा सणंकुमारगदेवाणं वत्तव्वया तहा माहिंदगदेवाण वि भाणियव्वा, नवरं माहिंदगदेवाणं ठिती सातिरेगा भाणियव्वा सा चेव। १९. एवं बंभलोगदेवाण वि वत्तव्वया, नवरं बंभलोगट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। एवं जाव सहस्सारो, नवरं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। २०. लंतगाईणं जहन्नकालट्ठितीयस्स तिरिक्खजोणियस्स तिसु वि गमएसु छप्पि लेस्साओ कायव्वाओ। संघयणाइं बंभलोग-लंतएसु पंच आदिल्लगाणि, महासुक्क-सहस्सारेसु चत्तारि, तिरिक्खजोणियाण वि मणुस्साण वि। सेसं तं चेव। [सु. २१-२९. आणयाइसव्वट्ठसिद्धपज्जंतदेवउववज्जंतम्मि मणुस्सम्मि उववाय-परिमाणाइवीसइदारपरूवणं] २१. आणयदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?० उववाओ जहा सहस्सारदेवाणं, णवरं तिरिक्खजोणिया खोडेयव्वा जाव- २२. पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए आणयदेवेसु उववज्जित्तए०? मणुस्साण य वत्तव्वया जहेव सहस्सारे उववज्जमाणाणं, णवरं तिन्नि संघयणाणि। सेसं तहेव जाव अणुबंधो भवाएसेणं जहन्नेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं अट्ठारस सागरोवमाइं दोहिं वासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं सत्तावण्णं सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं; एवतियं०। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा, सेसं तहेव। २३. एवं जाव अच्चुयदेवा, नवरं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। चउसु वि संघयणा तिन्नि आणयादीसु। २४. गेवेज्जदेवा णं भंते ! कओ० उववज्जंति ? एस चेव वत्तव्वया, नवरं संघयणा दो। ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। २५. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति?० एस चेव वत्तव्वया निरवसेसा जाव अणुबंधो त्ति, नवरं पढमं संघयणं, सेसं तहेव। भवाएसेणं जहन्नेणं तिन्नि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं एक्कत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं वासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं; एवतियं०। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। मणूसलद्धी नवसु वि गमएसु जहा गेवेज्जेसु उववज्जमाणस्स, नवरं पढमसंघयणं। २६. सव्वट्ठसिद्धगदेवा णं भंते ! कओ० उववज्जंति ?० उववातो जहेव विजयाईणं जाव- २७. से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं तेत्तीससागरोवमट्ठिति०, उक्कोसेण वि तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उवव०। अवसेसा जहा विजयादीसु उववज्जंताणं, नवरं भवाएसेणं तिन्नि भवग्गहणाइं; कालाएसेणं जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं वासपुहत्तेहिं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं; एवतियं०। पढमो गमओ। २८. सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवरं ओगाहणा-ठितीओ रयणिपुहत्त-वासपुहत्ताणि। सेसं तहेव। संवेहं च जाणेज्जा। बीओ गमओ। २९. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवरं ओगाहणा जहन्नेणं पंच धणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंच धणुसयाइं। ठिती जहन्नेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेसं तहेव जाव भवाएसो त्ति। कालाएसेणं जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं; एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। तइओ गमओ। एते तिन्नि गमगा सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं। से एवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव विहरइ। ॥२४ सते २४ उद्दे०॥ 卐卐卐 ॥समत्तं च चउवीसतिमं सयं॥२४॥ 卐卐卐 पंचवीसइमं सयं 卐卐卐 [सु. १. पंचवीसइमसयस्स उद्देसनामनिरूवणं] १. लेसा य १ दव्व २ संठाण ३ जुम्म ४ पज्जव ५ नियंठ ६ समणा य ७। ओहे ८ भवियाऽभविए ९-१० सम्मा ११ मिच्छे य १२ उद्देसा ॥१॥ ☆☆☆ **पढमो उद्देसओ 'लेसा'** ☆☆☆ [सु. २. पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ] २. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवं वयासी-[सु. ३. लेसाभेयनिरूवणाइ] ३. कति णं भंते ! लेस्साओ पन्नत्ताओ? गोयमा ! छ ल्लेसाओ, पन्नत्ताओ, तं जहा-कण्हलेस्सा जहा पढमसए बितिउद्देसए (स० १ उ० २ सु० १३) तहेव लेस्साविभागो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पाबहुगं च जाव चउव्विहाणं देवाणं चउव्विहाणं देवीणं मीसगं अप्पाबहुगं ति। [सु. ४. संसारसमावन्नगाणं जीवाणं चउद्दस भेया] ४. कतिविधा णं भंते ! संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता ? गोयमा ! चोद्दसविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता, तं जहा-सुहुमा अपज्जत्तगा१ सुहुमा पज्जत्तगा २ बायरा अपज्जत्तगा ३ बादरा पज्जत्तगा ४ बेइंदिया अपज्जत्तगा ५ बेइंदिया पज्जत्तगा ६ एवं तेइंदिया ७-८ एवं चउरिंदिया ९-१० असन्निपंचेंदिया अपज्जत्तगा ११ असन्निपंचेंदिया पज्जत्तगा १२ सन्निपंचेदिया अपज्जत्तगा १३ सन्निपंचिदिया पज्जत्तगा १४। [सु. ५. जहन्नुक्कोसजोगं पडुच्च संसारसमावन्नजीवाणं अप्पाबहुयं] ५. एतेसि णं भंते ! चोद्दसविहाणं संसारसमावन्नगाणं जीवाणं जहन्नुक्कोसगस्स जोगस्स कयरे कयरेहिंतों जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स जहन्नए जोए १, बादरस्स अपज्जगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे २, बेंदियस्स अपज्जत्तगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे ३, एवं तेइंदियस्स ४, एवं चउरिंदियस्स ५, असन्निस्स पंचेंदियस्स अपज्जत्तगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे ६, सन्निस्स पंचेंदियस्स अपज्जत्तगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे ७, सुहुमस्स पज्जत्तगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे ८, बादरस्स पज्जत्तगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे ९, सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसेए जोए असंखेज्जगुणे १०, बायरस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ११, सुहुमस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे १२, बादरस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे १३, बेइंदियस्स पज्जत्तगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे १४, एवं तेंदियस्स १५, एवं जाव सन्निस्स पंचेंदियस्स पज्जत्तगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे १६-१८, बेइंदियस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे १९, एवं तेंदियस्स वि २०, एवं जाव सण्णिपंचेंदियस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २१-२३, बेइंदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २४, एवं तेइंदियस्स वि पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २५, चउरिंदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २६, असन्निपंचिंदियपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २७, एवं सण्णिस्स पंचिंदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २८। [सु. ६-७. पढमसमयोववन्ननगाणं चउवीसइदंडगगयाणं दोण्हं जीवाणं समजोगित्त-विसमजोगित्तपरूवणं] ६. (१) दो भंते ! नेरतिया पढमसमयोववन्नगा किं समजोगी, विसमजोगी? गोयमा ! सिय समजोगी, सिय विसमजोगी। (२) से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति-सिय समजोगी, सिय विसमजोगी ? गोयमा ! आहारयाओ वा से अणाहारए, अणाहारयाओ वा से आहारए सियहीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए। जदि हीणे असंखेज्जतिभागहीणे वा संखेज्जतिभागहीणे वा, संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असंखेज्जतिभागमब्भहिए वा संखेज्जतिभागमब्भहिए वा, संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखेज्जतिगुणमब्भहिए वा। से तेणट्ठेणं जाव सिय विसमजोगी। ७. एवं जाव वेमाणियाणं। [सु. ८. जोगस्स पन्नरस भेया] ८. कतिविधे णं भंते ! जोए पन्नत्ते ? गोयमा ! पन्नरसविधे जोए पन्नत्ते तं जहा-सच्चमणजोए मोसमणजोए सच्चामोसमणजोए असच्चामोसमणजोए, सच्चवइजोए मोसवइजोए सच्चामोसवइजोए असच्चामोसवइजोए, ओरालियसरीरकायजोए ओरालियमीसासरीरकायजोए वेउव्वियसरीरकायजोए वेउव्वियमीसासरीरकायजोए आहारगसरीरकायजोए आहारगमीसासरीरकायजोगे, कम्मासरीरकायजोए १५। [सु. ९. पन्नरसविहस्स जहन्नुक्कोसगस्स जोगस्स अप्पाबहुयं]९. एयस्स णं भंते ! पन्नरसविहस्स जहन्नुक्कोसगस्स जोगस्स कयरे कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे कम्मगसरीरस्स जहन्नए जोए १, ओरालियमीसगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे २, वेउव्वियमीसगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे ३, ओरालियसरीरस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे ४, वेउव्वियसरीरस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे ५, कम्मगसरीरस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ६, आहारगमीसगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे ७, तस्स चेव उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ८, ओरालियमीसगस्स वेउव्वियमीसगस्स य एएसि णं उक्कोसए जोए दोण्ह वि तुल्ले असंखेज्जगुणे ९-१०, असच्चामोसमणजोगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे ११, आहारगसरीरस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे १२; तिविहस्स मणजोगस्स, चउव्विहस्स वइजोगस्स, एएसि णं सत्तण्ह वि तुल्ले जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे १३-१९; आहारगसरीरस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २०; ओरालियसरीरस्स वेउव्वियसरीरस्स चउव्विहस्स य मणजोगस्स, चउव्विहस्स य वइजोगस्स, एएसि णं दसण्ह वि तुल्ले उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २१-३०। सेवं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भंते! सेवं भंते! त्ति०।☆☆☆॥२५ सते पढमो उद्देसो॥२५.१॥ **बीओ उद्देसओ 'दव्व'** ☆☆☆[सु. १. दव्वाणं भेयदुगं] १. कतिविधा णं भंते! दव्वा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा दव्वा पन्नत्ता, तं जहा-जीवदव्वा य अजीवदव्वा य। [सु. २. अजीवदव्वाणं भेयदुगं, विसेसावगमत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो य] २. अजीवदव्वा णं भंते! कतिविहा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-रूविअजीवदव्वा य, अरूविअजीवदव्वा य। एवं एएणं अभिलावेणं जहा अजीवपज्जवा जाव से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति-ते णं नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता। [सु. ३. जीवदव्वाणं अणंतत्तं] ३. (१) जीवदव्वा णं भंते! किं संखेज्जा, असंखेज्जा, अणंता? गोयमा! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता। (२) से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-जीवदव्वा णं नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता? गोयमा! असंखेज्जा नेरइया जाव असंखेज्जा वाउकाइया, अणंता वणस्सतिकाइया, असंखिज्जा बेंदिया, एवं जाव वेमाणिया, अणंता सिद्धा, से तेणट्ठेणं जाव अणंता। [सु. ४-६. जीव-चउवीसइदंडएसु अजीवदव्वपरिभोगपरूवणं] ४. (१) जीवदव्वाणं भंते! अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, अजीवदव्वाणं जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति? गोयमा! जीवदव्वाणं अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, नो अजीवदव्वाणं जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति। (२) से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति-जाव हव्वमागच्छंति? गोयमा! जीवदव्वा णं अजीवदव्वे परियादियंति, अजीवदव्वे परियादिइत्ता ओरालियं वेउव्वियं आहारगं तेयगं कम्मगं सोतिंदिय जाव फासिंदिय मणजोग वइजोग कायजोग आणापाणुत्तं च निव्वत्तयंति, से तेणट्ठेणं जाव हव्वमागच्छंति। ५. (१) नेरतियाणं भंते! अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, अजीवदव्वाणं नेरतिया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति? गोयमा! नेरतियाणं अजीवदव्वा जाव हव्वमागच्छंति, नो अजीवदव्वाणं नेरतिया जाव हव्वमागच्छंति। (२) से केणट्ठेणं०? गोयमा! नेरतिया अजीवदव्वे परियादियंति, अजीवदव्वे परियादिइत्ता वेउव्विय-तेयग-कम्मग-सोतिंदिय जाव फासिंदिय जाव आणापाणुत्तं च निव्वत्तयंति। से तेणट्ठेणं गोतमा! एवं वुच्चइ०। ६. एवं जाव वेमाणिया, नवरं सरीर-इंदिय-जोगा भाणियव्वा जस्स जे अत्थि। [सु. ७. असंखेज्जे लोए अणंतदव्वपरूवणं] ७. से नूण भंते! असंखेज्जे लोए अणंताइं दव्वाइं आगासे भइयव्वाइं? हंता, गोयमा! असंखेज्जे लोए जाव भइयव्वाइं। [सु. ८-१०. दिसिं पडुच्च लोगेगपदेसम्मि पोग्गलाणं चयण-छेयण-उवचयण-अवचयणपरूवणं] ८. लोगस्स णं भंते! एगम्मि आगासपएसे कतिदिसिं पोग्गला चिज्जंति? गोयमा! निव्वाघातेणं छद्दिसिं; वाघातं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं सिय पंचदिसिं। ९. लोगस्स णं भंते! एगम्मि आगासपएसे कतिदिसिं पोग्गला छिज्जंति? एवं चेव। १०. एवं उववचिज्जंति, एवं अवचिज्जंति। [सु. ११-२५. सरीरपंचगत्त-इंदियपंचगत्त-जोगतियत्त-आणापाणत्तेण गहिएसु दव्वेसु ठिय-अठियाइपरूवणा] ११. जीवे णं भंते! जाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गेण्हइ ताइं किं ठियाइं गेण्हइ, अठियाइं गेण्हति? गोयमा! ठियाइं पि गेण्हइ, अठियाइं पि गेण्हइ। १२. ताइं भंते! किं दव्वओ गेण्हइ, खेत्तओ गेण्हइ, कालओ गेण्हइ, भावतो गेण्हइ? गोयमा! दव्वओ वि गेण्हति, खेत्तओ वि गेण्हइ, कालओ वि गेण्हइ, भावतो वि गेण्हइ। ताइं दव्वतो अणंतपएसियाइं दव्वाइं, खेत्ततो असंखेज्जपएसोगाढाइं, एवं जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं। १३. जीवे णं भंते! जाइं दव्वाइं वेउव्वियसरीरत्ताए गेण्हइ ताइं किं ठियाइं गेण्हति, अठियाइं गेण्हति? एवं चेव, नवरं नियमं छद्दिसिं। १४. एवं आहारगसरीरत्ताए वि। १५. जीवे णं भंते! जाइं दव्वाइं तेयगसरीरत्ताए गिण्हति० पुच्छा। गोयमा! ठियाइं गेण्हइ, नो अठियाइं गेण्हइ। सेसं जहा ओरालियसरीरस्स। १६. कम्मगसरीरे एवं चेव जाव भावओ वि गिण्हति। १७. जाइं दव्वतो गेण्हति ताइं किं एगपएसियाइं गेण्हति, दुपएसियाइं गेण्हइ०? एवं जहा भासापदे जाव आणुपुव्विं गेण्हइ, नो अणाणुपुव्विं गेण्हति। १८. ताइं भंते! कतिदिसिं गेण्हति? गोयमा! निव्वाघातेणं० जहा ओरालियस्स। १९. जीवे णं भंते! जाइं दव्वाइं सोइंदियत्ताए गेण्हइ० जहा वेउव्वियसरीरं। २०. एवं जाव जिब्भिंदियत्ताए। २१. फासिंदियत्ताए जहा ओरालियसरीरं। २२. मणजोगत्ताए जहा कम्मगसरीरं, नवरं नियमं छद्दिसिं। २३. एवं वइजोगत्ताए वि। २४. कायजोगत्ताए जहा ओरालियसरीरस्स। २५. जीवे णं भंते! जाइं दव्वाइं आणापाणुत्ताए गेण्हइ? जहेव ओरालियसरीरत्ताए जाव सिय पंचदिसिं। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। २६. केयि चउवीसदंडएणं एयाणि

For Private & Personal Use Only

पयाणि भणंति जस्स जं अत्थि। ☆☆☆ ॥२५ सते बितिओ॥२५.२॥ ततीओ उद्देसओ 'संठाण' ☆☆☆ [सु. १. संठाणभेयछक्कं]१. कति णं भंते! संठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! छ संठाणा पन्नत्ता, तं जहा-परिमंडले वट्टे तंसे चउरंसे आयते अणित्थंथे। [सु. २-५. छण्हं संठाणाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए य अणंतत्तं] २. परिमंडला णं भंते ! संठाणा दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा, असंखेज्जा, अणंता ? गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता। ३. वट्टा णं भंते ! संठाणा०? एवं चेव। ४. एवं जाव अणित्थंथा। ५. एवं पदेसट्ठताए वि। [सु. ६. छण्हं संठाणाणं दव्वट्ठयाईहिं अप्पाबहुयं] ६. एएसि णं भंते ! परिमंडल-वट्ट-तंस-चतुरंस-आयत-अणित्थंथाणं संठाणाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठताए दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा परिमंडला संठाणा दव्वट्ठयाए, वट्टा संठाणा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, चउरंसा संठाणा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, तंसा संठाणा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, आयता संठाणा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, अणित्थंथा संठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा। पएसट्ठताए-सव्वत्थोवा परिमंडला संठाणा पएसट्ठयाए, वट्टा संठाणा पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, जहा दव्वट्ठयाए तहा पएसट्ठताए वि जाव अणित्थंथा संठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। दव्वट्ठपएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा परिमंडला संठाणा दव्वट्ठयाए, सो चेव दव्वट्ठतागमओ भाणियव्वो जाव अणित्थंथा संठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा। अणित्थंथेहिंतो संठाणेहिंतो दव्वट्ठवाए, परिमंडला संठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा; वट्टा संठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सो चेव पएसट्ठयाए गमओ भाणियव्वो जाव अणित्थंथा संठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। [सु. ७-१० संठाणाणं भेयपणगं अणंतत्तं च]७. कति णं भंते ! संठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच संठाणा पन्नत्ता, तंजहा-परिमंडले जाव आयते। ८. परिमंडला णं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा, असंखेज्जा, अणंता ? गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता। ९. वट्टा णं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा०? एवं चेव। १०. एवं जाव आयता। [सु. ११-२१. सत्तसु नरयपुढवीसु सोहम्माइकप्पेसु गेवेज्ज-अणुत्तरविमाणेसु ईसिपब्भाराए य पुढवीए पंचण्हं संठाणाणं अणंतत्तं] ११. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए परिमंडला संठाणा किं संखेज्जा, असंखेज्जा, अणंता ? गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता। १२. वट्टा णं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा० ? एवं चेव। १३. एवं जाव आयता। १४. सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए परिमंडला संठाणा०? एवं चेव। १५. एवं जाव आयता। १६. एवं जाव अहेसत्तमाए। १७. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे परिमंडला संठाणा०? एवं चेव। १८. एवं जाव अच्चुते। १९. गेविज्जविमाणाणं भंते ! परिमंडला संठाणा०? एवं चेव। २०. एवं अणुत्तरविमाणेसु। २१. एवं ईसिपब्भाराए वि। [सु. २२-२७. पंचसु परिमंडलाईसु जवमज्झेसु संठाणेसु परोप्परं अणंतत्तपरूवणं]२२. जत्थ णं भंते ! एगे परिमंडले संठाणे जवमज्झे तत्थ परिमंडला संठाणा किं संखेज्जा, असंखेज्जा, अणंता ? गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता। २३. वट्टा णं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा, असंखेज्जा०? एवं चेव। २४. एवं जाव आयता। २५. जत्थ णं भंते ! एगे वट्टे संठाणे जवमज्झे तत्थ परिमंडला संठाणा०? एवं चेव; वट्टा संठाणा०? एवं चेव। २६. एवं जाव आयता। २७. एवं एक्केक्केणं संठाणेणं पंच वि चारेयव्वा। [सु. २८-३६. सत्तनरयपुढवि-सोहम्माइकप्प-गेवेज्ज-अणुत्तरविमाण-इसीपब्भारपुढविगएसु पंचसु जवमज्झेसु संठाणेसु परोप्परं अणंतत्तपरूवणं] २८. जत्थ णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एगे परिमंडले संठाणे जवमज्झे तत्थ परिमंडला संठाणा किं संखेज्जा० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता। २९. वट्टा णं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा०? एवं चेव। ३०. एवं जाव आयता। ३१. जत्थ णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एगे वट्टे संठाणे जवमज्झे तत्थ णं परिमंडला संठाणा किं संखेज्जा० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जजा, अणंता। ३२. वट्टा संठाणा एवं चेव। ३३. एवं जाव आयता। ३४. एवं पुणरवि एक्केक्केणं संठाणेणं पंच वि चारेतव्वा जहेव हेट्ठिल्ला जाव आयतेणं। ३५. एवं जाव अहेसत्तमाए। ३६. एवं कप्पेसु वि जाव ईसीपब्भाराए पुढवीए। [सु. ३७-४१. पंचसु संठाणेसु पएसओ ओगाहओ य निरूवणं] ३७. वट्टे णं भंते ! संठाणे कतिपएसिए, कतिपएसोगाढे पन्नत्ते? गोयमा ! वट्टे संठाणे दुविहे पन्नते तं जहा-घणवट्टे य, पयरवट्टे य। तत्थ णं जे से पयरवट्टे से दुविधे पन्नत्ते, तं जहा-ओयपएसिए य, जुम्मपएसिए य। तत्थ णं जे से ओयपएसिए से जहन्नेणं पंचपएसिए, पंचपएसोगाढे;

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोसेणं अणंतपएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे। तत्थ णं जे से जुम्मपएसिए से जहन्नेणं बारसपएसिए, बारसपएसोगाढे; उक्कोसेणं अणंतपएसिए, असंखेज्जपदेसोगाढे। तत्थ णं जे से घणवट्टे से दुविहे पन्नत्ते, तं जहा- ओयपएसिए य जुम्मपएसिए य। तत्थ णं जे से ओयपएसिए से जहन्नेणं सत्तपएसिए, सत्तपएसोगाढे पन्नत्ते; उक्कोसेणं अणंतपएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे पन्नत्ते। तत्थ णं जे से जुम्मपएसिए से जहन्नेणं बत्तीसपएसिए, बत्तीसपएसोगाढे पन्नते; उक्कोसेणं अणंतपएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे पन्नत्ते। ३८. तंसे णं भंते ! संठाणे कतिपएसिए कतिपएसोगाढे पन्नत्ते ? गोयमा ! तंसे णं संठाणे दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-घणतंसे य पयरतंसे य। तत्थ णं जे से पयरतंसे से दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-ओयपएसिए य, जुम्मपएसिए य। तत्थ णं जे से ओयपएसिए से जहन्नेणं तिपएसिए, तिपएसोगाढे पन्नत्ते; उक्कोसेणं अणंतपएसिए असंखेज्जपएसोगाढे पन्नत्ते। तत्थ णं जे से जुम्मपएसिए से जहन्नेणं छप्पएसिए, छप्पएसोगाढे पन्नत्ते; उक्कोसेणं अणंतपएसिए असंखेज्जपएसोगाढे पन्नत्ते। तत्थ णं जे से घणतंसे से दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-ओयपदेसिए य, जुम्मपएसिए य। तत्थ णं जे से ओयपएसिए से जहन्नेणं पणतीसपएसिए पणतीसपएसोगाढे; उक्कोसेणं अणंतपएसिए, तं चेव। तत्थ णं जे से जुम्मपएसिए से जहन्नेणं चउप्पएसिए चउप्पदेसोगाढे पन्नत्ते; उक्कोसेणं अणंतपएसिए, तं चेव। ३९. चउरंसे णं भंते ! संठाणे कतिपदेसिए० पुच्छा। गोयमा ! चउरंसे संठाणे दुविहे पन्नत्ते, भेदो जहेव वट्टस्स जाव तत्थ णं जे से ओयपएसिए से जहन्नेणं नवपएसिए, नवपएसोगाढे पन्नत्ते; उक्कोसेणं अणंतपएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे पन्नत्ते। तत्थ णं जे से जुम्मपएसिए से जहन्नेणं चउपएसिए, चउपएसोगाढे पन्नत्ते; उक्कोसेणं अणंतपएसिए, तं चेव। तत्थ णं जे से घणचउरंसे से दुविहे पन्नते, तंजहा-ओयपएसिए य, जुम्मपएसिए य। तत्थ णं जे से ओयपएसिए से जहन्नेणं सत्तावीसतिपएसिए, सत्तावीसतिपएसोगाढे; उक्कोसेणं अणंतपएसिए, तहेव। तत्थ णं जे से जुम्मपएसिए से जहन्नेणं अट्ठपएसिए, अट्ठपएसोगाढे पन्नत्ते; उक्कोसेणं अणंतपएसिए, तहेव। ४०. आयते णं भंते ! संठाणे कतिपएसिए कतिपदेसोगाढे पन्नत्ते ? गोयमा ! आयते णं संठाणे तिविधे पन्नत्ते, तं जहा-सेढिआयते, पयरायते घणायते। तत्थ णं जे से सेढिआयते से दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-ओयपदेसिए य जुम्मपएसिए य। तत्थ णं जे से ओयपएसिए से जहन्नेणं तिपएसिए, तिपएसोगाढे; उक्कोसेणं अणंतपएसिए, तं चेव। तत्थ णं जे से जुम्मपएसिए से जहन्नेणं दुपएसिए दुपएसोगाढे; उक्कोसेणं अणंत० तहेव। तत्थ णं जे से पयरायते से दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-ओयपएसिए य, जुम्मपएसिए य। तत्थ णं जे से ओयपएसिए से जहन्नेणं पन्नरसपएसिए, पन्नरसपएसोगाढे; उक्कोसेणं अणंत० तहेव। तत्थ णं जे से जुम्मपएसिए से जहन्नेणं छप्पएसिए, छप्पएसोगाढे; उक्कोसेणं अणंत० तहेव। तत्थ णं जे से घणायते से दुविधे पन्नत्ते, तं जहा-ओयपएसिए य, जुम्मपएसिए य। तत्थ णं जे से ओयपएसिए से जहन्नेणं पणयालीसपदेसिए पणयालीसपदेसोगाढे पन्नत्ते; उक्कोसेणं अणंत० तहेव। तत्थ णं जे से जुम्मपएसिए से जहन्नेणं बारसपएसिए बारसपएसोगाढे; उक्कोसेणं अणंत० तहेव। ४१. परिमंडले णं भंते ! संठाणे कतिपएसिए० पुच्छा। गोयमा ! परिमंडले णं संठाणे दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-घणपरिमंडले य पयरपरिमंडले य। तत्थ णं जे से पयरपरिमंडले से जहन्नेणं वीसतिपएसिए वीसतिपएसोगाढे; उक्कोसेणं अणंतपए० तहेव। तत्थ णं जे से घणपरिमंडले से जहन्नेणं चत्तालीसतिपएसिए, चत्तालीसतिपएसोगाढे पन्नत्ते; उक्कोसेणं अणंतपएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे, पन्नत्ते। [सु. ४२-५०. पंचसु संठाणेसु एगत्त-पुहत्तेहिं दव्वट्ठयं पएसट्ठयं च पडुच्च कडजुम्मइनिरूवणं] ४२. परिमंडले णं भंते ! संठाणे दव्वट्ठताए किं कडजुम्मे, तेयोए, दावरजुम्मे, कलियोए? गोयमा ! नो कडजुम्मे, तेयोए, णो दावरजुम्मे, कलियोए। ४३. वट्टे णं भंते ! संठाणे दव्वट्ठताए०? एवं चेव। ४४. एवं जाव आयते। ४५. परिमंडला णं भंते ! संठाणा दव्वट्ठताए किं कडजुम्मा, तेयोगा० पुच्छा। गोयमा ! ओघाएसेणं सिय कडजुम्मा, सिय तेयोगा, सिय दावरजुम्मा, सिय कलियोगा। विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलिओगा। ४६. एवं जाव आयता। ४७. परिमंडले णं भंते ! संठाणे पदेसट्ठताए किं कडजुम्मे० पुच्छा। गोयमा ! सिय कडजुम्मे, सिय तेयोगे, सिय दावरजुम्मे, सिय कलियोगे। ४८. एवं जाव आयते। ४९. परिमंडला णं भंते ! संठाणा पदेसट्ठताए किं कडजुम्मा० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा। विहाणादेसेणं कडजुम्मा वि, तेयोगा वि, दावरजुम्मा वि, कलियोगा वि। ५०. एवं जाव आयता। [सु. ५१-६०. एगत्त-पुहत्तेहिं पंचसु संठाणेसु जहाजोगं कडजुम्माइपएसोगाढत्तपरूवणं] ५१. परिमंडले

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं भंते ! संठाणे किं कडजुम्मपएसोगाढे जाव कलियोगपएसोगाढे? गोयमा ! कडजुम्मपएसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपएसोगाढे, नो कलियोगपएसोगाढे। ५२. वट्टे णं भंते ! संठाणे किं कडजुम्म० पुच्छा। गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपएसोगाढे, नो दावरपदेसोगाढे, सिय कलियोगपएसोगाढे। ५३. तंसे णं भंते ! संठाणे० पुच्छा। गोयमा ! सिय कडजुम्मपएसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपएसोगाढे, नो कलियोगपएसोगाढे। ५४. चउरंसे णं भंते ! संठाणे०, जहा वट्टे तहा चतुरंसे वि। ५५. आयते णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! सिय कडजुम्मपएसोगाढे जाव सिय कलियोगपएसोगाढे। ५६. परिमंडला णं भंते ! संठाणा किं कडजुम्मपएसोगाढा, तेयोगपएसोगाढा० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मपएसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा। ५७. वट्टा णं भंते ! संठाणा किं कडजुम्मपएसोगाढा० पुच्छा। गोयमा ! ओघाएसेणं कडजुम्मपएसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा वि तेयोगपएसोगाढा वि, नो दावरजुम्मपएसोगाढा, कलियोगपएसोगाढा वि। ५८. तंसा णं भंते ! संठाणा किं कडजुम्म० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढा, नो तेयोपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपएसोगाढा; विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा वि, तेयोगपएसोगाढा वि, नो दावरजुम्मपएसोगाढा, कलियोगपएसोगाढा वि। ५९. चउरंसा जहा वट्टा। ६०. आयता णं भंते ! संठाणा० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलिओगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपएसोगाढा वि। [सु. ६१-६४. एगत्त-पहत्तेहिं पंचसु संठाणेसु कडजुम्माइसमयट्ठितियत्तपरूवणं] ६१. परिमंडले णं भंते ! संठाणे किं कडजुम्मसमयट्ठितीए, तेयोगसमयट्ठितीए, दावरजुम्मसमयट्ठितीए, कलियोगसमयट्ठितीए ? गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयट्ठितीए जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीए। ६२. एवं जाव आयते। ६३. परिमंडला णं भंते ! संठाणा किं कडजुम्मसमयट्ठितीया० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मसमयट्ठितीया जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीया; विहाणादेसेणं कडजुम्मसमयट्ठितीया वि जाव कलियोगसमयट्ठितीया वि। ६४. एवं जाव आयता। [सु. ६५-६७. एगत्त-पुहत्तेहिं पंचसु संठाणेसु वण्णपंचग-गंधदुग-रसपंचग-फासऽट्ठगं पडुच्च कडजुम्माइपरूवणं] ६५. परिमंडले णं भंते ! संठाणे कालवण्णपज्जवेहिं किं कडजुम्मे जाव कलियोगे ? गोयमा ! सिय कडजुम्मे, एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ठितीए। ६६. एवं नीलवण्णपज्जवेहि वि। ६७. एवं पंचहिं वण्णेहिं, दोहिं गंधेहिं, पंचहिं रसेहिं, अट्ठहिं फासेहिं जाव लुक्खफासपज्जवेहिं। [सु. ६८-७९. सेढीसु ओघेणं लोय-अलोयसेढीसु य दव्वट्ठयाए जहाजोगं संखेज्ज-असंखेज्ज-अणंतपरूवणं] ६८. सेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं संखेज्जाओ, असंखेज्जाओ, अणंताओ ? गोयमा ! नो संखेज्जाओ, नो असंखेज्जाओ, अणंताओ। ६९. पाईणपडीणायताओ णं भंते ! सेढीओ दव्वट्ठयाए०? एवं चेव। ७०. एवं दाहिणुत्तरायताओ वि। ७१. एवं उड्ढमहायताओ वि। ७२. लोयागाससेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठताए किं संखेज्जाओ, असंखेज्जाओ, अणंताओ ? गोयमा ! नो संखेज्जाओ, असंखेज्जाओ, नो अणंताओ। ७३. पाईणपडीणायताओ णं भंते ! लोयागाससेढीओ दव्वट्ठताए किं संखेज्जाओ०? एवं चेव। ७४. एवं दाहिणुत्तरायताओ वि। ७५. एवं उड्ढमहायताओ वि। ७६. अलोयागाससेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठताए किं संखेज्जाओ, असंखेज्जाओ० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जाओ, नो असंखेज्जाओ, अणंताओ। ७७. एवं पाईणपडीणायताओ वि। ७८. एवं दाहिणुत्तरायताओ वि। ७९. एवं उड्ढमहायताओ वि। [सु. ८०-८७. सेढीसु लोय-अलोयसेढीसु य पएसट्ठयाए जहाजोगं संखेज्ज-असंखेज्ज-अणंतत्तपरूवणं] ८०. सेढीओ णं भंते ! पएसट्ठयाए किं संखेज्जाओ०? जहा दव्वट्ठयाए तहा पदेसट्ठयाए वि जाव उड्ढमहायताओ, सव्वाओ अणंताओ। ८१. लोयागासेढीओ णं भंते ! पदेसट्ठयाए किं संखेज्जाओ० पुच्छा। गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, नो अणंताओ। ८२. एवं पादीणपडीणायताओ वि, दाहिणुत्तरायताओ वि। ८३. उड्ढमहायताओ नो संखेज्जाओ, असंखेज्जाओ, नो अणंताओ। ८४. अलोयागाससेढीओ णं भंते ! पएसट्ठताए० पुच्छा। गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, सिय अणंताओ। ८५. पाईणपडीणायताओ णं भंते ! अलोयागाससेढीओ० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जाओ,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नो असंखेज्जाओ, अणंताओ। ८६. एवं दाहिणुत्तरायताओ वि। ८७. उड्ढमहायताओ० पुच्छा। गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, सिय अणंताओ। [सु. ८८-९४ सेढीसु ओघेणं लोय-अलोयसेढीसु य जहाजोगं सादीयसपज्जवसियाइपरूवणं] ८८. सेढीओ णं भंते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ, सादीयाओ अपज्जवसिताओ, अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, अणादीयाओ अपज्जवसियाओ ? गोयमा ! नो सादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो सादीयाओ अपज्जवसियाओ, नो अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, अणादीयाओ अपज्जवसियाओ। ८९. एवं जाव उड्ढमहायताओ। ९०. लोयागाससेढीओ णं भंते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ० पुच्छा। गोयमा ! सादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो सादीयाओ अपज्जवसियाओ, नो अणादीयाओ सपज्जावसियाओ, नो अणादीयाओ अपज्जवसियाओ। ९१. एवं जाव उड्ढमहायताओ। ९२. अलोयागाससेढीओ णं भंते ! किं सादीयाओ० पुच्छा। गोयमा ! सिय सादीयाओ सपज्जवसियाओ, सिय सादीयाओ अपज्जवसियाओ, सिय अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, सिय अणादीयाओ अपज्जवसियाओ। ९३. पाईणपडीणायताओ दाहिणुत्तरायताओ य एवं चेव, नवरं नो सादीयाओ सपज्जवसियाओ, सिय सादीयाओ अपज्जवसियाओ, सेसं तं चेव। ९४. उड्ढमहायताओ जहा ओहियाओ तहेव चउभंगो। [सु. ९५-१०७. सेढीसु ओघेणं लोय-अलोयसेढीसु य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए य कडजुम्माइपरूवणं] ९५. सेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्माओ, तेओयाओ० पुच्छा। गोयमा ! कडजुम्माओ, नो तेयोयाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ। ९६. एवं जाव उड्ढमहायताओ। ९७. लोयागाससेढीओ एवं चेव। ९८. एवं अलोयागाससेढीओ वि। ९९. सेढीओ णं भंते ! पएसट्ठयाए किं कडजुम्माओ०? एवं चेव। १००. एवं जाव उड्ढमहायताओ। १०१. लोयागाससेढीओ णं भंते ! पएसट्ठताए० पुच्छा। गोयमा ! सिय कडजुम्माओ, नो तेयोयाओ, सिय दावरजुम्माओ, नो कलिओयाओ। १०२. एवं पादीणपडीणायताओ वि, दाहिणुत्तरायताओ वि। १०३. उड्ढमहायताओ णं० पुच्छा। गोयमा ! कडजुम्माओ, नो तेयोगाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ। १०४. अलोयागाससेढीओ णं भंते ! पदेसट्ठताए० पुच्छा। गोयमा ! सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलियोयाओ। १०५. एवं पाईणपडीणायताओ वि। १०६. एवं दाहिणुत्तरायताओ वि। १०७. उड्ढमहायताओ वि एवं चेव, नवरं नो कलियोयाओ, सेसं तं चेव। [सु. १०८. सेढीणं सत्त भेया] १०८. कति णं भंते ! सेढीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-उज्जुआयता, एगतोवंका, दुहतोवंका, एगओखहा, दुहतोखहा, चक्कवाला, अद्धचक्कवाला। [सु. १०९-१३. परमाणुपोग्गल-दुपदेसियाइखंधेसु चउवीसइदंडएसु य अणुसेढिगतिपरूवणं]१०९. परमाणुपोग्गलाणं भंते ! किं अणुसेढिं गती पवत्तति, विसेढिं गती पवत्तति ? गोयमा ! अणुसेढिं गती पवत्तति, नो विसेढिं गती पवत्तति। ११०. दुपएसियाणं भंते ! खंधाणं किं अणुसेढिं गती पवत्तति, विसेढिं गती पवत्तति? एवं चेव। १११. एवं जाव अणंतपएसियाणं खंधाणं। ११२. नेरइयाणं भंते ! किं अणुसेढिं गती पवत्तति, विसेढिं गती पवत्तति ? एवं चेव। ११३. एवं जाव वेमाणियाणं। सु. ११४. चउवीसइदंडयआवाससंखापरूवणं] ११४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता? गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता। एवं जहा पढमसते पंचमुद्देसए (स० १ उ० ५ सु० २-५) जाव अणुत्तरविमाण त्ति। [सु. ११५-१६. दुवालसविहगणिपिडगसरूवजाणणत्थं नंदिसुत्तावलोयणनिद्देसो] ११५. कतिविधे णं भंते ! गणिपिडए पन्नत्ते? गोयमा ! दुवालसंगे गणिपिडए पन्नत्ते, तं जहा-आयारो जाव दिट्ठिवाओ। ११६. से किं तं आयारो ? आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयारगो० एवं अंगपरूवणा भाणियव्वा जहा नंदीए। जाव- सुत्तत्थो खलु पढमो बीओ निजुत्तिमीसओ भणिओ। तइओ य निरवसेसो एस विही होइ अणुयोगे॥१॥ [सु. ११७-२१. नेरइयाईणं सइंदियाईणं सकाइयाईणं जीव-पोग्गलाईणं आउयकम्मबंधग-अबंधगाणं च अप्पाबहुयजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो]११७. एएसि णं भंते ! नेरतियाणं जाव देवाणं सिद्धाण य पंचगतिसमासेणं कयरे कतरेहिंतो० पुच्छा। गोयमा ! अप्पाबहुयं जहा बहुवत्तव्वताए अट्ठगइसमासऽप्पाबहुगं च। ११८. एएसि णं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं जाव अणिंदियाण य कतरे कतरेहिंतो०? एयं पि जहा बहुवत्तव्वयाए तहेव ओहियं पयं भाणितव्वं। ११९. सकाइयअप्पाबहुगं तहेव ओहियं भाणितव्वं। १२०. एएसि णं भंते ! जीवाणं पोग्गलाणं जाव सव्वपज्जवाण य कतरे कतरेहिंतो०? जहा बहुवत्तव्वयाए। १२१. एएसि णं भंते ! जीवाणं आउयस्स

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्मगस्स बंधगाणं अबंधगाणं०? जहा बहुवत्तव्वयाए जाव आउयस्स जाव कम्मस्स अबंधगा विसेसाहिया। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०।☆☆☆॥२५ सते उद्दे० ३॥ चउत्थो उद्देसओ 'जुम्म'☆☆☆ [सु. १. जुम्मस्स चउरो भेया] १. (१) कति णं भंते! जुम्मा पन्नत्ता? गोयमा! चत्तारि जुम्मा पन्नत्ता, तंजहा-कडजुम्मे जाव कलियोए। (२) से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-चत्तारि जुम्मा पन्नत्ता तं जहा कडजुम्मे०? जहा अट्ठारसमसते चउत्थे उद्देसए (स०१८ उ०४ सु०४ २) तहेव जाव से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ०। [सु. २-७. चउवीसइदंडय-सिद्धेसु जुम्मभेयपरूवणं] २. (१) नेरतियाणं भंते! कति जुम्मा०? गोयमा! चत्तारि जुम्मा पन्नत्ता, तं जहा-कडजुम्मे जाव कलियोए। (२) से केणणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-नेरतियाणं चत्तारि जुम्मा पन्नत्ता तं जहा कडजुम्मे०? अट्ठो तहेव। ३. एवं जाव वाउकाइयाणं। ४. (१) वणस्सतिकाइयाणं भंते!० पुच्छा। गोयमा! वणस्सतिकाइया सिय कडजुम्मा, सिय तेयोया, सिय दावरजुम्मा, सिय कलियोया। (२) से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-वणस्सकाइया जाव कलियोगा? गोयमा! उववायं पडुच्च, से तेणट्ठेणं०, तं चेव। ५. बेंदियाणं जहा नेरतियाणं। ६. एवं जाव वेमाणियाणं। ७. सिद्धाणं जहा वणस्सतिकाइयाणं। [सु. ८. सव्वदव्वाणं धम्मत्थिकायाइया छ भेया] ८. कतिविधा णं भंते! सव्वदव्वा पन्नत्ता? गोयमा! छव्विहा सव्वदव्वा पन्नत्ता, तं जहा-धम्मत्थिकाये अधम्मत्थिकाये जाव अद्धासमये। [सु. ९-१६. धम्मत्थिकायाईसु छसु दव्वेसु दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए य जुम्मभेयपरूवणं] ९. धम्मत्थिकाये णं भंते! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे जाव कलियोगे? गोयमा! नो कडजुम्मे, नो तेयोए, नो दावरजुम्मे, कलियोए। १०. एवं अधम्मत्थिकाये वि। ११. एवं आगासत्थिकाये वि। १२. जीवत्थिकाए णं० पुच्छा। गोयमा! कडजुम्मे, नो तेयोए, नो दावरजुम्मे, नो कलियोए। १३. पोग्गलत्थिकाये णं भंते! पुच्छा। गोयमा! सिय कडजुम्मे, जाव सिय कलियोए। १४. अद्धासमये जहा जीवत्थिकाये। १५. धम्मत्थिकाये णं भंते! पएसट्ठताए किं कडजुम्मे० पुच्छा। गोयमा! कडजुम्मे, नो तेयोए, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे। १६. एवं जाव अद्धासमये। [सु. १७. धम्मत्थिकायाईसु छसु दव्वेसु अप्पाबहुयजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] १७. एएसि णं भंते! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय जाव अद्धासमयाणं दव्वट्ठयाए०? एएसिं अप्पाबहुगं जहा बहुवत्तव्वयाए तहेव निरवसेसं। [सु. १८-२७. धम्मत्थिकायाईसु छसु दव्वेसु सत्तनरयपुढवि-देवलोय-ईसीपब्भारपुढवीसु य जहाजोगं वित्थरओ ओगाढ-अणोगाढपरूवणं] १८. धम्मत्थिकाये णं भंते! किं ओगाढे, अणोगाढे? गोयमा! ओगाढे, नो अणोगाढे। १९. जदि ओगाढे किं संखेज्जपएसोगाढे, असंखेज्जपएसोगाढे, अणंतपएसोगाढे? गोयमा! नो संखेज्जपएसोसाढे, असंखेज्जपएसोगाढे, नो अणंतपएसोगाढे। २०. जदि असंखेज्जपएसोगाढे किं कडजुम्मपदेसोगाढे० पुच्छा। गोयमा! कडजुम्मपएसोगाढे, नो तेयोग०, नो दावरजुम्म०, नो कलियोगपएसोगाढे। २१. एवं अधम्मत्थिकाये वि। २२. एवं आगासत्थिकाये वि। २३. जीवत्थिकाये पोग्गलत्थिकाये अद्धासमये एवं चेव। २४. इमा णं भंते! रयणप्पभापुढवी किं ओगाढा, अणोगाढा? जहेव धम्मत्थिकाये। २५. एवं जाव अहेसत्तमा। २६. सोहम्मे एवं चेव। २७. एवं जाव ईसिपब्भारा पुढवी। [सु. २८-४०. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेहिं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए य जुम्मभेयपरूवणं] २८. जीवे णं भंते! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे० पुच्छा। गोयमा! नो कडजुम्मे, नो तेयोए, नो दावरजुम्मे, कलियोए। २९. एवं नेरइए वि। ३०. एवं जाव सिद्धे। ३१. जीवा णं भंते! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मा० पुच्छा। गोयमा! ओघादेसेणं कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावर०, नो कलियोगा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा। ३२. नेरइया णं भंते! दव्वट्ठताए० पुच्छा। गोयमा! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा, जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा। ३३. एवं जाव सिद्धा। ३४. जीवे णं भंते! पएसट्ठताए किं कड० पुच्छा। गोयमा! जीवपएसे पडुच्च कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावर०, नो कलियोगे; सरीरपएसे पडुच्च सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। ३५. एवं जाव वेमाणिए। ३६. सिद्धे णं भंते! पएसट्ठताए किं कडजुम्मे० पुच्छा। गोयमा! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे। ३७. जीवा णं भंते! पदेसट्ठताए किं कडजुम्मा० पुच्छा। गोयमा! जीवपएसे पडुच्च ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दावरजुम्मा, नो कलियोगा; सरीरपएसे पडुच्च ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेणं कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। ३८. एवं नेरइया वि। ३९. एवं जाव वेमाणिया। ४०. सिद्धा णं भंते !० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा। [सु. ४१-४६. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेहिं खेत्तं पडुच्च जुम्मभेयपरूवणं] ४१. जीवे णं भंते ! किं कडजुम्मपएसोगाढे० पुच्छा। गोयमा ! सिय कडजुम्मपएसोगाढे जाव सिय कलियोगपएसोगाढे। ४२. एवं जाव सिद्धे। ४३. जीवा णं भंते ! किं कडजुम्मपएसोगाढा० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढा, नो तेयोग०, नो दावर०, नो कलियोग०; विहाणादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढा वि कलियोगपएसोगाढा वि। ४४. नेरतिया णं० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मपएसोगाढा जाव सिय कलियोगपएसोगाढा; विहाणादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढा वि जाव कलियोगपएसोगाढा वि। ४५. एवं एगिंदिय-सिद्धवज्जा सव्वे वि। ४६. सिद्धा एगिंदिया य जहा जीवा। [सु. ४७-५४. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु एगत्त-पुहत्तेहिं ठिइं पहुच्च जुम्मभेयपरूवणं] ४७. जीवे णं भंते ! किं कडजुम्मसमयट्ठितीए० पुच्छा। गोयमा ! कडजुम्मसमयट्ठितीए, नो तेयोग०, नो दावर०, नो कलियोगसमयट्ठितीये। ४८. नेरइए णं भंते !० पुच्छा। गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयट्ठितीये जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीए। ४९. एवं जाव वेमाणिए। ५०. सिद्धे जहा जीवे। ५१. जीवा णं भंते !० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मसमयट्ठितीया, नो तेयोग०, नो दावर०, नो कलिओग०। ५२. नेरइया णं० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मसमयट्ठितीया जाव सियकलियोगसमयट्ठितीया; विहाणादेसेणं कडजुम्मसमयट्ठितीया वि जाव कलियोगसमयट्ठितीया वि। ५३. एवं जाव वेमाणिया। ५४. सिद्धा जहा जीवा। [सु. ५५-६१. जीव-चउवीसइदंडएससु एगत्त-पुहत्तेहिं वण्णाइभावं पडुच्च जुम्मभेयपरूवणं] ५५. जीवे णं भंते ! कालवण्णपज्जवेहिं किं कडजुम्मे० पुच्छा। गोयमा ! जीवपएसे पडुच्च नो कडजुम्मे जाव नो कलियोगे; सरीरपएसे पडुच्च सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। एवं जाव वेमाणिए। ५७. सिद्धो ण चेव पुच्छिज्जति। ५८. जीवा णं भंते ! कालवण्णपज्जवेहिं० पुच्छा। गोयमा ! जीवपएसे पडुच्च ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि नो कडजुम्मा जाव नो कलियोगा; सरीरपएसे पडुच्च ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेणं कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। ५९. एवं जाव वेमाणिया। ६०. एवं नीलवण्णपज्जवेहि वि दंडओ भाणियव्वो एगत्त-पुहत्तेणं। ६१. एवं जाव लुक्खफासपज्जवेहिं। [सु. ६२-७९. जीव-चउवीसइदंडय-सिद्धेसु जहाजोगं एगत्त-पुहत्तेहिं नाण-अन्नाण-दंसणपज्जवे पडुच्च जुम्मभेयपरूवणं] ६२. जीवे णं भंते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं किं कडजुम्मे० पुच्छा। गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। ६३. एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिए। ६४. जीवा णं भंते ! आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेणं कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। ६५. एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिया। ६६. एवं सुयनाणपज्जवेहि वि। ६७, ओहिनाणपज्जवेहि वि एवं चेव, नवरं विगलिंदियाणं नत्थि ओहिनाणं। ६८. मणपज्जवनाणं पि एवं चेव, नवरं जीवाणं मणुस्साण य, सेसाणं नत्थि। ६९. जीवे णं भंते ! केवलनाणपज्जवेहिं किं कडजुम्मे० पुच्छा। गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोए, नो दावरजुम्मे, णो कलियोए। ७०. एवं मणुस्से वि। ७१. एवं सिद्धे वि। ७२. जीवा णं भंते ! केवलनाण० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावर०, नो कलियोगा। ७३. एवं मणुस्सा वि। ७४. एवं सिद्धा वि। ७५. जीवे णं भंते ! मतिअन्नाणपज्जवेहिं किं कडजुम्मे०? जहा आभिणिबोहियनारपज्जवेहिं तहेव दो दंडगा। ७६. एवं सुयअन्नाणपज्जवेहि वि। ७७. एवं विभंगनाणपज्जवेहि वि। ८७. चक्खुदंसण-अचक्खुदंसण-ओहिदंसणपज्जवेहि वि एवं चेव, नवरं जस्स जं अत्थि तं भाणियव्वं। ७९. केवलदंसणपज्जवेहिं जहा केवलनाणपज्जवेहिं। [सु. ८०. सरीरभेयाइजाणणत्थं पण्णवणासुत्तालोयणनिद्देसो] ८०. कति णं भंते ! सरीरगा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरगा पन्नत्ता, तं जहा-ओरालिय जाव कम्मए। एत्थ सरीरगपदं निरवसेसं भाणियव्वं जहा पण्णवणाए। [सु. ८१-८६. जीव-चउवीसइदंडएसु सेय-निरेय-देसेय-सव्वेए पडुच्च परूवणं] ८१. (१) जीवा णं भंते ! किं सेया, निरेया ? गोयमा ! जीवा सेया वि, निरेया वि। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-जीवा सेया वि, निरेया वि ? गोयमा ! जीवा दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-

संसारसमावन्नगा य, असंसारसमावन्नगा य। तत्थ णं जे से असंसारसमावन्नगा ते णं सिद्धा, सिद्धा णं दुविहा पन्नत्ता, तं जहा- अणंतरसिद्धा य, परंपरसिद्धा य। तत्थ णं जे ते परंपरसिद्धा ते णं निरेया। तत्थ णं जे ते अणंतरसिद्धा ते णं सेया। ८२. ते णं भंते ! किं देसेया, सव्वेया? गोयमा ! नो देसेया, सव्वेया। ८३. तत्थ णं जे ते संसारसमावन्नगा ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-सेले-सिपडिवन्नगा य, असेलेसिपडिवन्नगा य। तत्थ णं जे ते सेलेसिपडिवन्नगा ते णं निरेया। तत्थ णं जे ते असेलेसिपडिवन्नगा ते णं सेया। ८४. ते णं भंते ! किं देसेया, सव्वेया ? गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि। से तेणट्ठेणं जाव निरेया वि। ८५. (१) नेरइया णं भंते ! किं देसेया, सव्वेया ? गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि। (२) से केणट्ठेणं जाव सव्वेया वि ? नेरइया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-विग्गहतिसमावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य। तत्थ णं जे ते विग्गहगतिसमावन्नगा ते णं सव्वेया, तत्थ णं जे ते अविग्गहगतिसमावन्नगा ते णं देसेया, से तेणट्ठेणं जाव सव्वेया वि। ८६. एवं जाव वेमाणिया। [सु. ८७-८८. परमाणुपोग्गलाइअणंतपएसियखंधाणं अणंतत्तं] ८७. परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं संखेज्जा, असंखेज्जा, अणंता ? गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता। ८८. एवं जाव अणंतपदेसिया खंधा। [सु. ८९-९०. एगपएसोगाढाइअसंखेज्जपएसोगाढाणं पोग्गलाणं अणंतत्तं]८९. एगपएसोगाढा णं भंते ! पोग्गला किं संखेज्ज, असंखेज्जा, अणंता ? एवं चेव। ९०. एवं जाव असंखेज्जपदेसोगाढा। [सु. ९१-९२. एगसमयट्ठितियाइअसंखेज्जसमयट्ठितियाणं पोग्गलाणं अणंतत्तं] ९१. एगसमयट्ठितीया णं भंते ! पोग्गला किं संखेज्जा, असंखेज्जा०? एवं चेव। ९२. एवं जाव असंखेज्जसमयट्ठितीया। [सु. ९३-९५. एगगुणकालवण्ण-गंधाइअसंखेज्जगुणकालगवण्ण-गंधाईणं पोग्गलाणं अणंतत्तं] ९३. एगगुणकालगा णं भंते ! पोग्गला किं संखेज्जा०? एवं चेव। ९४. एवं जाव अणंतगुणकालगा। ९५. एवं अवसेसावि वण्ण-गंध-रस-फासा नेयव्वा जाव अणंतगुणलुक्ख त्ति। [सु. ९६-१०५. परमाणुपोग्गल-दुपएसियाइअणंतपएसियाणं खंधाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए य कमेणं जहाजोगं बहुयत्तपरूवणं]९६. एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं दुपएसियाण य खंधाणं दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो बहुया ? गोयमा ! दुपएसिएहिंतो खंधेहिंतो परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए बहुगा। ९७. एएसि णं भंते ! दुपएसियाणं तिपएसियाण य खंधाणं दव्वट्ठताए कयरे कयरेहिंतो बहुगा ? गोयमा ! तिपएसिएहिंतो खंधेहिंतो दुपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए बहुगा। ९८. एवं एएणं गमएणं जाव दसपएसिएहिंतो खंधेहिंतो नवपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए बहुया। ९९. एएसि णं भंते ! दसपदे० पुच्छा। गोयमा ! दसपएसिएहिंतो खंधेहिंतो संखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए बहुया। १००. एएसि णं संखेज्ज० पुच्छा। गोयमा ! संखेज्जपएहिंतो खंधेहिंतो असंखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए बहुया १०१. एएसि णं भंते ! असंखेज्ज० पुच्छा। गोयमा ! अणंतपएसिएहिंतो खंधेहिंतो असंखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए बहुया। १०२. एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं दुपएसियाण य खंधाणं पएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो बहुया? गोयमा ! परमाणुपोग्गलेहिंतो दुपएसिया खंधा पएसट्ठयाए बहुया। १०३. एवं एएणं गमएणं जाव नवपएसिएहिंतो खंधेहिंतो दसपएसिया खंधा पएसट्ठयाए बहुया। १०४. एवं सव्वत्थ पुच्छियव्वं। दसपएसिएहिंतो खंधेहिंतो संखेज्जपएसिया खंधा पदेसट्ठयाए बहुया। संखेज्जपएसिएहिंतो असंखेज्जपएसिया खंधा पदेसट्ठयाए बहुया। १०५. एएसि णं भंते असंखषज्जपएसियाणं० पुच्छा। गोयमा ! अणंतपएसिएहिंतो खंधेहिंतो असंखेज्जपएसिया खंधा पदेसट्ठयाए बहुया। [सु. १०६-११०. परमाणुपोग्गल-दुपएसियाअणंतपएसियाणं खंधाणं ओगाहणं ठिइं च पडुच्च दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए य विसेसाहियत्ताइपरूवणं]१०६. एएसि णं भंते ! एगपएसोगाढाणं दुपएसोगाढाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो विसेसाहिया? गोयमा ! दुपएसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो एगपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। १०७. एवं एएणं गमएणं तिपएसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो दुपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया जाव दसपएसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो नवपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। दसपएसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो संखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया। संखेज्जपएसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो असंखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया। पुच्छा सव्वत्थ भाणियव्वा। १०८. एएसि णं भंते ! एगपएसोगाढाणं दुपएसोगाढाण य पोग्गलाणं पएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो विसेसाहिया? गोयमा ! एगपएसोगाढेति पोग्गलेहिंतो दुपएसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए विसेसाहिया। १०९. एवं जाव नवपएसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो

दसपएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठताए विसेसाहिया। दसपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो संखेज्जपएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठयाए बहुया। संखषज्जपएसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो असंखेज्जपएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठयाए बहुया। ११०. एएसि णं भंते ! एगसमयट्ठितीयाणं दुसमयट्ठितीयाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठताए०? जहा ओगाहणाए वत्तव्वया एवं ठितीए वि। [सु. १११-११२. सुत्त ९६-११०. गयवत्तव्वयाणुसारेण एगाइगुणवण्ण-गंध-रसे-पडुच्च पोग्गलाणं वत्तव्वयानिद्देसो] १११. एएसि णं भंते ! एगगुणकालगाणं दुगुणकालगाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठताए०? एएसिं जहा परमाणुपोग्गलादीणं तहेव वत्तव्वया निरवसेसा। ११२. एवं सव्वेसिं वण्ण-गंध-रसाणं। [सु. ११३-११७. एगाइगुणकक्खडाइफासाणं पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए य विसेसाहियत्ताइपरूवणं] ११३. एएसि णं भंते ! एगगुणकक्खडाणं दुगुणकक्खडाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो विसेसाहिया ? गोयमा ! एगगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो दुगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। ११४. एवं जाव नवगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो दसगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। दसगुणकक्खडेहिंतो संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया। संखेज्जगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो असंखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया। असंखेज्जगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो अणंतगुणकक्खडा पोग्गला दवट्ठयाए बहुया। ११५. एवं पएसट्ठताए वि सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा। ११६. जहा कक्खडा एवं मउय-गरुय-लहुया वि। ११७. सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खा जहा वण्णा। [सु. ११८. परमाणुपोग्गलाणं, संखेज्ज-असंखेज्ज-अणंतपदेसियाण य खंधाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए य अप्पाबहुयं] ११८. एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं, संखेज्जपदेसियाणं असंखेज्जपएसियाणं अणंतपएसियाण य खंधाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा। पएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा पएसट्ठताए, परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपएसिया खंधा पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसिया खंधा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। दव्वट्ठपएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए, ते चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणा, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठअपएसट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, ते चेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। [सु. ११९-२०. एग-संखेज्ज-असंखेज्जपएसियाणं पोग्गलाणं ओगाहणं ठिइं च पडुच्च दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए य अप्पाबहुयं] ११९. एएसि णं भंते ! एगपएसोगाढाणं संखेज्जपएसोगाढाणं असंखेज्जपएसोगाढाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वपदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए, संखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा। पएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला अपएसट्ठयाए, संखेज्जपएसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। दव्वट्ठपएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठअपेदसट्ठयाए, संखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, ते चेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। १२०. एएसि णं भंते ! एगसमयट्ठितीयाणं संखेज्जसमयट्ठितीयाणं असंखेज्जसमयट्ठितीयाण य पोग्गलाणं०? जहा ओगाहणाए तहा ठितीए वि भाणियव्वं अप्पाबहुगं। [सु. १२१-१२५. एग-संखेज्ज-असंखेज्ज-अणंतगुणवण्ण-गंध-रस-फासाणं पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए य अप्पाबहुयं]१२१. एएसि णं भंते ! एगगुणकालगाणं संखेज्जगुणकालाणं असंखेज्जगुणकालगाणं अणंतगुणकालगाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए०? एएसिं जहा परमाणुपोग्गलाणं अप्पाबहुगं तहा एतेसिं पि अप्पाबहुगं। १२२. एवं सेसाण वि वण्ण-गंध-रसाणं। १२३. एएसि णं भंते ! एगगुणकक्खडाणं संखेज्जगुणकक्खडाणं असंखेज्जगुणकक्खडाणं अणंतगुणकक्खडाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगगुणकक्खडा पोग्गला

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दव्वट्टयाए, संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए असंखेज्जगुणा, अणंतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए अणंतगुणा। पएसट्टयाए एवं चेव, नवरं संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला पएसट्टयाए असंखेज्जगुणा, सेसं तं चेव। दव्वट्टपएसट्टयाए-सव्वत्थोवा एगगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टपएसट्टयाए, संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए संखेज्जगुणा, ते चेव पएसट्टयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जगुणकक्खडा दव्वट्टयाए असंखेज्जगुणा ते चेव पएसट्टयाए असंखेज्जगुणा। अणंतगुणकक्खडा दव्वट्टयाए अणंतगुणा, ते चेव पएसट्टयाए अणंतगुणा। १२४. एवं मउय-गरुय-लहुयाण वि अप्पाबहुयं। १२५. सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खाणं जहा वण्णाणं तहेव। [सु. १२६-५३. परमाणुपोग्गलाइअणंतपएसियखंधपज्जंतेसु एगत्त-पुहत्तेणं दव्वट्टयाए पएसट्टयाए य जुम्मभेयपरूवणं]१२६. परमाणुपोग्गले णं भंते! दव्वट्टताए किं कडजुम्मे, तेयोए, दावर, कलियोगे ? गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोए, नो दावर०, कलियोए। १२७. एवं जाव अणंतपएसिए खंधे। १२८. परमाणुपोग्गला णं भंते ! दव्वट्टयाए किं कडजुम्मा० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा। विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावर०, कलियोगा। १२९. एवं जाव अणंतपएसिया खंधा। १३०. परमाणुपोग्गले णं भंते ! पदेसट्टयाए किं कडजुम्मे० पुच्छा। गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावर०, कलियोए। १३१. दुपएसिए पुच्छा। गोयमा ! नो कड०, नो तेयोए, दावर०, नो कलियोगे। १३२. तिपएसिए पुच्छा। गोयमा ! नो कडजुम्मे, तेयोए, नो दावर०, नो कलियोए। १३३. चउप्पएसिए पुच्छा। गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोए, नो दावर०, नो कलियोए। १३४. पंचपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले। १३५. छप्पदेसिए जहा दुपदेसिए। १३६. सत्तपदेसिए जहा तिपदेसिए। १३७. अट्ठपएसिए जहा चउपदेसिए। १३८. नवपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले। १३९. दसपदेसिए जहा दुपदेसिए। १४०. संखेज्जपएसिए णं भंते ! पोग्गले० पुच्छा। गोयमा ! सिय कडजुम्मे, जाव सिय कलियोगे। १४१. एवं असंखेज्जपदेसिए वि, अणंतपदेसिए वि। १४२. परमाणुपोग्गला णं भंते ! पएसट्टताए किं कड० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेयोया, नो दावर०, कलियोगा। १४३. दुप्पएसिया णं० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा, नो तेयोया, सिय दावरजुम्मा, नो कलियोगा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेयोया, दावरजुम्मा, नो कलियोगा। १४४. तिपएसिया णं० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा। १४५. चउप्पएसिया णं० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावर०, नो कलियोगा। १४६. पंचपएसिया जहा परमाणुपोग्गला। १४७. छप्पएसिया जहा दुपएसिया। १४८. सत्तपएसिया जहा तिपएसिया। १४९. अट्ठपएसिया जहा चउपएसिया। १५०. नवपएसिया जहा परमाणुपोग्गला। १५१. दसपएसिया जहा दुपएसिया। १५२. संखेज्जपएसिया णं० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। १५३. एवं असंखेज्जपएसिया वि, अणंतपएसिया वि। [सु. १५४-७३. परमाणुपोग्गाइअणंतपएसियखंधपज्जतेसु एगत्त-पुहत्तेणं ओगाहणं ठिइं वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवे य पडुच्च जुम्मभेयपरूवणं] १५४. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं कडजुम्मपएसोगाढे० पुच्छा। गोयमा ! नो कडजुम्मपएसोगाढे, नो तेयोय०, नो दावरजुम्म०, कलियोगपएसोगाढे। १५५. दुपएसिए णं० पुच्छा। गोयमा ! नो कडजुम्मपएसोगाढे, णो तेयोग०, सिय दावरजुम्मसोगाढे, सिय कलियोगपएसोगाढे। १५६. तिपएसिए णं० पुच्छा। गोयमा ! नो कडजुम्मपएसोगाढे, सिय तेयोगपएसोगाढे, सिय दावरजुम्मपएसोगाढे, सिय कलियोगपएसोगाढे। १५७. चउपएसिए णं० पुच्छा। गोयमा ! सिय कडजुम्मपएसोगाढे जाव सिय कलियोगपएसोगाढे। १५८. एवं जाव अणंतपएसिए। १५९. परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं कड० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढा, नो तेयोय०, नो दावर०, नो कलियोग; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मपएसोगाढा, णो तेयोग०, नो दावर०, कलियोगपएसोगाढा। १६०. दुपएसिया णं० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढा, नो तेयोग०, नो दावर०, नो कलियोग०; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मपएसोगाढा, नो तेयोगपएसोगाढा, दावरजुम्मपएसोगाढा वि कलियोगपएसोगाढा वि। १६१. तिपएसिया णं० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढा, नो तेयोय० नो दावर०, नो कलि०; विहाणादेसेणं नो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कडजुम्मपएसोगाढा, तेयोगपएसोगाढा वि, दावरजुम्मपएसोगाढा वि, कलियोगपएसोगाढा वि। १६२. चउपएसिया णं० पुच्छा। गोयमा ! ओघोदेसेणं कडजुम्मपएसोगाढा, नो तेयोग०, नो दावर०, नो कलिओग०; विहाणादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढा वि जाव कलियोगपएसोगाढा वि। १६३. एवं जाव अणंतपएसिया। १६४. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं कडजुम्मसमयट्ठितीए० पुच्छा। गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयट्ठितीए जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीए। १६५. एवं जाव अणंतपएसिए। १६६. परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं कडजुम्मसमयट्ठितीया० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मसमयट्ठितीया जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीया; विहाणादेसेणं कडजुम्मसमयट्ठितीया वि जाव कलियोगसमयट्ठितीया वि। १६७. एवं जाव अणंतपएसिया। १६८. परमाणुपोग्गले णं भंते ! कालवण्णपज्जवेहिं किं कडजुम्मे, तेयोगे०? जहा ठितीए वत्तव्वया एवं वण्णेसु वि सव्वेसु, गंधेसु वि। १६९. एवं चेव रसेसु वि जाव महुरो रसो त्ति। १७०. अणंतपएसिए णं भंते ! खंधे कक्खडफासपज्जवेहिं किं कडजुम्मे० पुच्छा। गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। १७१. अणंतपएसिया णं भंते ! खंधा कक्खडफासपज्जवेहिं किं कडजुम्मा० पुच्छा। गोयमा ! ओघादेसेणं सिया कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। १७२. एवं मउय-गरुय-लहुया वि भाणियव्वा। १७३. सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खा जहा वण्णा। [सु. १७४-८८. परमाणुपोग्गलाइअणंतपएसियखंधपज्जंतेसु जहाजोगं सड्ढ-अणड्ढपरूवणं] १७४. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं सड्ढे अणड्ढे ? गोयमा ! नो सड्ढे, अणड्ढे। १७५. दुपएसिए० पुच्छा। गोयमा ! सड्ढे, नो अणड्ढे। १७६. तिपएसिए जहा परमाणुपोग्गले। १७७. चउपएसिए जहा दुपएसिए। १७८. पंचपएसिए जहा तिपएसिए। १७९. छप्पएसिए जहा दुपएसिए। १८०. सत्तपएसिए जहा तिपएसिए। १८१. अट्ठपएसिए जहा दुपएसिए। १८२. नवपएसिए जहा तिपएसिए। १८३. दसपएसिए जहा दुपएसिए। १८४. संखेज्जपएसिए णं भंते ! खंधे० पुच्छा। गोयमा ! सिय सड्ढे, सिय अणड्ढे। १८५. एवं असंखेज्जपएसिए वि। १८६. एवं अणंतपएसिए वि। १८७. परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं सड्ढा, अणड्ढा ? गोयमा ! सड्ढा वा अणड्ढा वा। १८८. एवं जाव अणंतपएसिया। [सु. १८९-९२. परमाणुपोग्गलाइअणंतपदेसियखंधपज्जंतेसु एगत्त-पुहत्तेणं सेय-निरेयपरूवणं] १८९. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं सेए, निरेए ? गोयमा ! सिय सेए, सिय निरेए। १९०. एवं जाव अणंतपएसिए। १९१. परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं सेया, निरेया ? गोयमा ! सेया वि, निरेया वि। १९२. एवं जाव अणंतपएसिया। [सु. १९३-२०६. सेय-निरेएसु परमाणुपोग्गलाइअणंतपदेसियखंधपज्जंतेसु एगत्त-पुहत्तेणं ठिईए कालंतरस्स य परूवणं]१९३. परमाणपुग्गले णं भंते ! सेए कालतो केवचिरं होति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं। १९४. परमाणुपोग्गले णं भंते ! निरेए कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। १९५. एवं जाव अणंतपएसिए। १९६. परमाणुपोग्गला णं भंते ! सेया कालओ केवचिरं होंति ? गोयमा ! सव्वद्धं। १९७. परमाणुपोग्गला णं भंते ! निरेया कालओ केवचिरं होंति ? गोयमा ! सव्वद्धं। १९८. एवं जाव अणंतपएसिया। १९९. परमाणुपोग्गलस्स णं भंते ! सेयस्स केवतियं कालं अंतरं होंति ? गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं; परट्ठाणंतरं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। २००. निरेयस्स केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! सट्ठाणंतरंपडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जतिभागं; परट्ठाणंतरं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। २०१. दुपएसियस्स णं भंते ! खंधस्स सेयस्स० पुच्छा। गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं; परट्ठाणंतरं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं। २०२. निरेयस्स केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जतिभागं; परट्ठाणंतरं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं। २०३. एवं जाव अणंतपएसियस्स। २०४. परमाणुपोग्गलाणं भंते ! सेयाणं केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! नत्थंतरं। २०५. निरेयाणं केवतियं कालं अंतरं होइ ? नत्थंतरं। २०६. एवं जाव अणंतपएसियाणं खंधाणं। [सु. २०७-८. सेय-निरेयाणं परमाणुपोग्गलाइअसंखेज्जपदेसियखंधपज्जंताणं खंधाणं अप्पाबहुयं] २०७. एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं सेयाणं निरेयाणं य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा परमाणुपोग्गला सेया, निरेया

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंखेज्जगुणा। २०८. एवं जाव असंखिज्जपएसियाणं खंधाणं। [सु. २०९. सेय-निरेयाणं अणंतपदेसियखंधाणं अप्पाबहुयं] २०९. एएसि णं भंते! अणंतपएसियाणं खंधाणं सेयाणं निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा निरेया, सेया अणंतगुणा। [सु. २१०. सेय-निरेयाणं परमाणुपोग्गलाणं संखेज्ज-असंखेज्ज-अणंतपदेसियाण य खंधाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए य अप्पाबहुयं] २१०. एएसि णं भंते! परमाणुपोग्गलाणं, संखेज्जपएसियाणं असंखेज्जपएसियाणं अणंतपएसियाण य खंधाणं सेयाणं निरेयाणं य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए १, अणंतपएसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा २, परमाणुपोग्गला सेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ३, संखेज्जपएसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ४, असंखेज्जपएसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ५, परमाणुपोग्गला निरेया दवट्ठयाए असंखेज्जगुणा ६, संखेज्जपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा ७, असंखेज्जपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ८। पएसट्ठयाए एवं चेव, नवरं परमाणुपोग्गला अपएसट्ठयाए भाणियव्वा। संखेज्जपएसिया खंधा निरेया पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सेसं तं चेव। दव्वट्ठपएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए १, ते चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणा २, अणंतपएसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ३, ते चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणा ४, परमाणुपोग्गला सेया दव्वट्ठअपएसट्ठयाए अणंतगुणा ५, संखेज्जपएसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ६, ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ७ असंखेज्जपएसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ८, ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ९, परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठअपएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १०, संखेज्जपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ११, ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १२, असंखेज्जपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १३, ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १४। [सु. २११-१६. परमाणुपोग्गलाइअणंतपएसियखंधपज्जंतेसु खंधेसु एगत्त-पुहत्तेणं जहाजोगं देसेय-सव्वेय-निरेयपरूवणं] २११. परमाणुपोग्गले णं भंते! किं देसेए, सव्वेए, निरेए? गोयमा! नो देसेए, सिय सव्वेए, सिय निरेये। २१२. दुपदेसिए णं भंते! खंधे० पुच्छा। गोयमा! सिय देसेए, सिय सव्वेए, सिय निरेये। २१३. एवं जाव अणंतपदेसिए। २१४. परमाणुपोग्गला णं भंते! किं देसेया, सव्वेया, निरेया? गोयमा! नो देसेया, सव्वेया वि, निरेया वि। २१५. दुपदेसिया णं भंते! खंधा० पुच्छा। गोयमा! देसेया वि, सव्वेया वि, निरेया वि। २१६. एवं जाव अणंतपएसिया। [सु. २१७-४०. सव्वेय-निरेएसु परमाणुपोग्गलेसु देसेय-सव्वेय-निरेएसु य दुपएसियाइअणंतपएसियपज्जंतेसु खंधेसु एगत्त-पुहत्तेणं ठिईए कालंतरस्स य परूवणं] २१७. परमाणुपोग्गले णं भंते! सव्वेए कालतो केवचिरं होति? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जतिभागं। २१८. निरेये कालतो केवचिरं होति? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। २१९. दुपएसिए णं भंते! खंधे देसेए कालतो केवचिरं होति? गोयमा! जहन्नेणं एक्कह समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जतिभागं। २२०. सव्वेए कालतो केवचिरं होति? जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं। २२१. निरेए कालतो केवचिरं होति? जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। २२२. एवं जाव अणंतपदेसिए। २२३. परमाणुपोग्गला णं भंते! सव्वेया कालतो केवचिरं होंति? गोयमा! सव्वद्धं। २२४. निरेया कालतो केवचिरं? सव्वद्धं। २२५. दुप्पदेसिया णं भंते! खंधा देसेया कालतो केवचिरं होंति? सव्वद्धं। २२६. सव्वेया कालतो केवचिरं? सव्वद्धं। २२७. निरेया कालओ केवच्चिरं? सव्वद्धं। २२८. एवं जाव अणंतपदेसिया। २२९. परमाणुपोग्गलस्स णं भंते! सव्वेयस्स केवतियं कालं अंतरं होति? सट्ठाणंतरं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं; परट्ठाणंतरं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं एवं चेव। २३०. निरेयस्स केवतियं अंतरं होइ? सट्ठाणंतरं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जतिभागं; परट्ठाणंतरं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। २३१. दुपएसियस्स णं भंते! खंधस्स देसेयस्स केवतियं कालं अंतरं होइ? सट्ठाणंतरं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं; परट्ठाणतरं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं। २३२. सव्वेयस्स केवतियं कालं- ? एवं चेव जहा देसेयस्स। २३३. निरेयस्स केवतियं० ? सट्ठाणंतरं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोसणं आवलियाए असंखेज्जतिभागं; परट्ठाणंतरं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं। २३४. एवं जाव अणंतपएसियस्स। २३५. परमाणुपोग्गलाणं भंते ! सव्वेयाणं केवतियं कालं अंतरं होइ ?, नत्थंतरं। २३६. निरेयाणं केवतियं०? नत्थंतरं। २३७. दुपएसियाणं भंते ! खंधाणं देसेयाणं केवतियं कालं०? नत्थंतरं। २३८. सव्वेयाणं केवतियं कालं०? नत्थंतरं। २३९. निरेयाणं केवतियं कालं०? नत्थंतरं। २४०. एवं ताव अणंतपएसियाणं। [सु. २४१. सव्वेय-निरेयाणं परमाणुपोग्गलाणं अप्पाबहुयं] २४१. एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं सव्वेयाणं निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? सव्वत्थोवा परमाणुपोग्गला सव्वेया, निरेया असंखेज्जगुणा। [सु. २४२-४४. देसेय-सव्वेय-निरेयाणं दुपएसियाईणं अणंतपएसियपज्जंताणं खंधाणं अप्पाबहुयं] २४२. एएसि णं भंते ! दुपएसियाणं खंधाणं देसेयाणं सव्वेयाणं निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा दुपएसिया खंधा सव्वेया, देसेया असंखेज्जगुणा, निरेया असंखेज्जगुणा। २४३. एवं जाव असंखेज्जपएसियाणं खंधाणं। २४४. एएसि णं भंते ! अणंतपएसियाणं खंधाणं देसेयाणं सव्वेयाणं निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा सव्वेया, निरेया अणंतगुणा, देसेया अणंतगुणा। [सु. २४५. सव्वेय-निरेयाणं परमाणुपोग्गलाणं देसेय-सव्वेय-निरेयाण य संखेज्ज-असंखेज्ज-अणंतपएसियाणं खंधाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए य अप्पाबहुयं]२४५. एएणि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं, संखेज्जपएसियाणं असंखेज्जएसियाणं अणंतपएसियाण य खंधाणं देसेयाणं सव्वेयाणं निरेयाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए १, अणंतपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा २, अणंतपएसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ३, असंखेज्जपएसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ४, संखेज्जपएसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ५, परमाणुपोग्गला सव्वेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ६, संखेज्जपएसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ७, असंखेज्जपएसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ८, परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ९, संखेज्जपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा १०, असंखेज्जपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ११। पदेसट्ठयाए-सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया। एवं पएसट्ठयाए वि, नवरं परमाणुपोग्गला अपएसट्ठयाए भाणियव्वा। संखिज्जपएसिया खंधा निरेया पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सेसं तं चेव। दव्वट्ठपएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए १, ते चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणा २, अणंतपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ३, ते चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणा ४, अणंतपएसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ५, ते चेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा ६, असंखेज्जपएसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ७, ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ८, संखेज्जपएसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ९, ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १०, परमाणुपोग्गला सव्वेया दव्वट्ठअपएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ११, संखेज्जपएसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १२, ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १३, असंखेज्जपएसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १४, ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १५, परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठअपएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १६, संखेज्जपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा १७, ते चेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा १८, असंखेज्जपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १९, ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा २०। [सु. २४६-४९. धम्मत्थिकायाईसु अत्थिकाएसु मज्झपदेससंखापरूवणं] २४६. कति णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स मज्झपएसा पन्नत्ता ? गोयमा ! अट्ठ धम्मत्थिकायस्स मज्झपएसा पन्नत्ता। २४७. कति णं भंते ! अधम्मत्थिकायस्स मज्झपएसा पन्नत्ता ? एवं चेव। २४८. कति णं भंते ! आगासत्थिकायस्स मज्झपएसा पन्नत्ता ? एवं चेव। २४९. कति णं भंते ! जीवत्थिकायस्स मज्झपएसा पन्नत्ता ? गोयमा ! अट्ठ जीवत्थिकायस्स मज्झपएसा पन्नत्ता। [सु. २५०. जीवत्थिकायमज्झपएसाणं आगासत्थिकायपदेसोगाहणं पडुच्च परूवणं] २५०. एए णं भंते ! अट्ठ जीवत्थिकायस्स मज्झपएसा कतिसु आगासपएसेसु ओगाहंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कंसि वा दोहि वा तीहि वा चउहिं वा पंचहिं वा छहिं वा, उक्कोसेणं अट्ठसु, नो चेव णं सत्तसु। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ☆☆☆॥२५ सते ४ उद्देसओ॥ **पंचमो उद्देसओ 'पज्जव'** ☆☆☆

[सु. १. पज्जवभेयाइजाणणत्थं पण्णवणासुत्तावलोयणनिद्देसो] १. कतिविहा णं भंते ! पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पज्जवा पन्नत्ता, तं जहा-जीवपज्जवा य अजीवपज्जवा य। पज्जवपयं निरवसेसं भाणितव्वं जहा पण्णवणाए। [सु. २-१२. आवलियापभिइसव्वद्धापज्जंतेसु कालभेएसु एगत्त-पुहत्तेणं समयसंखापरूवणं] २. आवलिया णं भंते ! किं संखेज्जा समया, असंखेज्जा समया, अणंता समया ? गोयमा ! नो संखेज्जा समया, असंखेज्जा समया, नो अणंता समया। ३. आणापाणू णं भंते ! किं संखेज्जा० ? एवं चेव। ४. थोवे णं भंते ! किं संखेज्जा० ? एवं चेव। ५. एवं लवे वि, मुहुत्ते वि। एवं अहोरत्ते। एवं पक्खे मासे उडू अयणे संवच्छरे जुगे वाससते वाससहस्से वाससयसहस्से पुव्वंगे पुव्वे, तुडियंगे तुडिए, अडडंगे अडडे, अववंगे अववे, हूहुयंगे हूहुए, उप्पलंगे उप्पले, पउमंगे पउमे, नलिणंगे नलिणे, अत्थनिऊरंगे अत्थनिऊरे, अउयंगे अउये, नउयंगे नउए, पउयंगे पउए, चूलियंगे, चूलिए, सीसपहेलियंगे, सीसपहेलिया, पलिओवमे, सागरोवमे, ओसप्पिणी, एवं उस्सप्पिणी वि। ६. पोग्गलपरियट्टे णं भंते ! किं संखेज्जा समया, असंखेज्जा समया० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जा समया, नो असंखेज्जा समया, अणंता समया। ७. एवं तीतद्ध-अणागयद्ध-सव्वद्धा। ८. आवलियाओ णं भंते ! किं संखेज्जा समया० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जा समया, सिय असंखेज्जा समया, सिय अणंता समया। ९. आणापाणू णं भंते ! किं संखेज्जा समया० ? एवं चेव। १०. थोवा णं भंते ! किं संखेज्जा समया० ? एवं चेव। ११. एवं जाव उस्सप्पिणीओ त्ति। १२. पोग्गलपरियट्टा णं भंते ! किं संखेज्जा समया० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जा समया, नो असंखेज्जा समया, अणंता समया। [सु. १३-२५. आणापाणुपभिइसव्वद्धापज्जंतेसु कालभेएसु एगत्तपुहत्तेणं आवलियासंखापरूवणं]१३. आणापाणू णं भंते ! किं संखेज्जाओ आवलियाओ० पुच्छा। गोयमा ! संखेज्जाओ आवलियाओ, नो असंखेज्जाओ आवलियाओ, नो अणंताओ आवलियाओ। १४. एवं थोवे वि। १५. एवं जाव सीसपहेलिय त्ति। १६. पलिओवमे णं भंते ! किं संखेज्जाओ० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जाओ आवलियाओ, असंखेज्जाओ आवलियाओ, नो अणंताओ आवलियाओ। १७. एवं सागरोवमे वि। १८. एवं ओसप्पिणीए वि, उस्सप्पिणीए वि। १९. पोग्गलपरियट्टे पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जाओ आवलियो, नो असंखेज्जाओ आवलियाओ, अणंताओ आवलियाओ। २०. एवं जाव सव्वद्धा। २१. आणापाणू ? ओ णं भंते ! किं संखेज्जाओ आवलियाओ० पुच्छा। गोयमा ! सिय संखेज्जाओ आवलियाओ, सिय असंखेज्जाओ, सिय अणंताओ। २२. एवं जाव सीसपहेलियाओ। २३. पलिओवमा णं० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जाओ आवलियाओ, सिय असंखेज्जाओ आवलियाओ, सिय अणंताओ आवलियाओ। २४. एवं जाव उस्सप्पिणीओ। २५. पोग्गलपरियट्टा णं० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जाओ आवलियाओ, नो असंखेज्जाओ आवलियाओ, अणंताओ आवलियाओ। [सु. २६-२७. थोवपभिइसव्वद्धापज्जंतेसु कालभेएसु एगत्त-पुहत्तेणं आणापाणुपभिइसीसपहेलियापज्जंताणं संखापरूवणं] २६. थोवे णं भंते ! किं संखेज्जाओ आणापाणूओ, असंखेज्जाओ० ? जहा आवलियाए वत्तव्वया एवं आणापाणूओ वि निरवसेसा। २७. एवं एएणं गमएणं जाव सीसपहेलिया भाणियव्वा। [सु. २८-३४. सागरोवमपभिइसव्वद्धापज्जंतेसु कालभेएसु एगत्त-पुहत्तेणं पलिओवमसंखापरूवणं]२८. सागरोवमे णं भंते ! किं संखेज्जा पलिओवमा० पुच्छा। गोयमा ! संखेज्जा पलिओवमा, नो असंखेज्जा पलिओवमा, नो अणंता पलिओवमा। २९. एवं ओसप्पिणी वि, उस्सप्पिणी वि। ३०. पोग्गलपरियट्टे णं० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जा पलिओवमा, नो असंखेज्जा पलिओवमा, अणंता पलिओवमा। ३१. एवं जाव सव्वद्धा। ३२. सागरोवमा णं भंते ! किं संखेज्जा पलिओवमा० पुच्छा। गोयमा ! सिय संखेज्जा पलिओवमा, सिय असंखेज्जा पलिओवमा, सिय अणंता पलिओवमा। ३३. एवं जाव ओसप्पिणी वि, उस्सप्पिणी वि। ३४. पोग्गलपरियट्टा णं० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जा पलिओवमा, नो असंखेज्जा पलिओवमा, अणंता पलिओवमा। [सु. ३५. ओसप्पिणिपभिइसव्वद्धापज्जंतेसु कालभेएसु एगत्त-पुहत्तेणं सागरोवमसंखापरूवणं]३५. ओसप्पिणी णं भंते ! किं संखेज्जा सागरोवमा० ? जहा पलिओवमस्स वत्तव्वया तहा सागरोवमस्स वि। [सु. ३६-३८. पोग्गलपरियट्टपभिइसव्वद्धापज्जंतेसु कालभेएसु एगत्त-पुहत्तेणं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिसंखापरूवणं] ३६. पोग्गलपरियट्टे णं भंते ! किं संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, नो असंखिज्जाओ, अणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ। ३७. एवं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव सव्वद्धा। ३८. पोग्गलपरियट्टा णं भंते ! किं संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, नो असंखेज्जाओ, अणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ। [सु. ३९-४१. तीतद्धा-अणागतद्धा-सव्वद्धासु पोग्गलपरियट्टाणं अणंतत्तं] ३९. तीतद्धा णं भंते ! किं संखेज्जा पोग्गलपरियट्टा० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, नो असंखेज्जा, अणंता पोग्गलपरियट्टा। ४०. एवं अणागतद्धा वि। ४१. एवं सव्वद्धा वि। [सु. ४२. अणागतकालस्स अतीतकालओ समयाधिकत्तं] ४२. अणागतद्धा णं भंते ! किं संखेज्जाओ तीतद्धाओ, असंखेज्जाओ, अणंताओ ? गोयमा ! नो संखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो असंखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो अणंताओ तीतद्धाओ, अणागयद्धा णं तीतद्धाओ समयाहिया; तीतद्धा णं अणागयद्धाओ समयूणा। [सु. ४३. सव्वद्धाए अतीतकालओ साइरेगदुगुणत्तं] ४३. सव्वद्धा णं भंते ! किं संखेज्जाओ तीतद्धाओ० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो असंखेज्जाओ, णो अणंताओ तीतद्धाओ, सव्वद्धा णं तीयद्धाओ सातिरेगदुगुणा, तीतद्धा णं सव्वद्धाओ थोवूणए अद्धे। [सु. ४४. सव्वद्धाए अणागतकालओ थोवूणदुगुणत्तं] ४४. सव्वद्धा णं भंते ! किं संखेज्जाओ अणागयद्धाओ० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जाओ अणागयद्धाओ, नो असंखेज्जाओ अणागयद्धाओ, नो अणंताओ अणागयद्धाओ, सव्वद्धा णं अणागयद्धाओ थोवूणगदुगुणा, अणागयद्धा णं सव्वद्धातो सातिरेगे अद्धे। [सु. ४५-४६. निगोदभेय-पभेयजाणणत्थं जीवाभिगमसुत्तावलोयणनिद्देसो] ४५. कतिविधा णं भंते ! णिओदा पन्नत्ता? गोयमा ! दुविहा णिओदा पन्नत्ता, तं जहा-णिओया य णिओयजीवा य। ४६. णिओदा णं भंते ! कतिविधा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-सुहुमनिगोदा य, बायरनियोया य। एवं नियोया भाणियव्वा जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं। [सु. ४७-४८. छव्विहपरिणामभेयपरूवणं] ४७. कतिविधे णं भंते ! णामे पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहे नामे पन्नत्ते, तं जहा-उदइए जाव सन्निवातिए। ४८. से किं तं उदइए नामे ? उदइए णामे दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-उदए य, उदयनिप्फन्ने य। एवं जहा सत्तरसमसते पढमे उद्देसए (स० १७ उ० १ सु० २९) भावो तहेव इह वि, नवरं इमं नामनाणं। सेसं तहेव जाव सन्निवातिए। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। **☆☆☆॥२५ सते ५ उद्देसो॥ छट्ठो उद्देसओ 'नियंठ'☆☆☆** [सु. १. छट्ठुद्देसस्स दारगाहा] १. पण्णवण १ वेद २ रागे ३ कप्प ४ चरित्त ५ पडिसेवणा ६ णाणे ७। तित्थे ८ लिंग ९ सरीरे १० खेत्ते ११ काल १२ गति १३ संजम १४ निकासे १५ ॥१॥ जोगुवओग १६-१७ कसाए १८ लेस्सा १९ परिणाम २० बंध २१ वेए य २२। कम्मोदीरण २३ उवसंपजहण २४ सन्ना य २५ आहारे २६ ॥२॥ भव २७ आगरिसे २८ कालंतरे य २९-३० समुघाय ३१ खेत्त ३२ फुसणा य ३३। भावे ३४ परिणामे ३५ खलु अप्पाबहुयं ३६ नियंठाणं ॥३॥ [सु. २ छट्ठुद्देसस्सुवुग्घाओ] २. रायगिहे जाव एवं वयासी- [सु. ३-१०. पढमं पण्णवणदारं-पंचभेया नियंठा, तब्भेय-प्पभेया य] ३. कति णं भंते ! नियंठा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच नियंठा पन्नत्ता, तं जहा-पुलाए बउसे कुसीले नियंठे सिणाए। ४. पुलाए णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नइ, तं जहा-नाणपुलाए दंसणपुलाए चरित्तपुलाए लिंगपुलाए अहासुहुमपुलाए नामं पंचमे। ५. बउसे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तं जहा- आभोगबउसे, अणाभोगबउसे संवुडबउसे असंवुडबउसे अहासुहुमबउसे नामं पंचमे। ६. कुसीले णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविधे पन्नत्ते, तं जहा- पडिसेवणाकुसीले य, कसायकुसीले य। ७. पडिसेवणाकुसीले णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तं जहा-नाणपडिसेवणाकुसीले, दंसणपडिसेवणाकुसीले चरित्तपडिसेवणाकुसीले लिंगपडिसेवणाकुसीले अहासुहुमपडिसेवणाकुसीले णामं पंचमे। ८. कसायकुसीले णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तं जहा-नाणकसायकुसीले दंसणकसायकुसीले चरित्तकसायकुसीले लिंगकसायकुसीले, अहासुहुमकसायकुसीले णामं पंचमे। ९. नियंठे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तं जहा-पढमसमयनियंठे अपढमसमयनियंठे चरिमसमयनियंठे अचरिमसमयनियंठे अहासुहुमनियंठे णामं पंचमे। १०. सिणाए णं भंते ! कविविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तं जहा-अच्छवी १ असबले २ अकम्मंसे ३ संसुद्धनाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली ४ अपरिस्सावी ५। दारं १। [११-१६. बिइयं वेददारं-पंचविहनियंठेसु इत्थिवेदाइवेदपरूवणं] ११. (१) पुलाए णं भंते ! किं सवेयए होज्जा, अवेयए होज्जा ? गोयमा ! सवेयए होज्जा, नो अवेयए होज्जा। (२) जइ सवेयए होज्जा किं इत्थिवेयए होज्जा, पुरिसवेयए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होज्जा, पुरिसनपुंसगवेयए होज्जा ? । गोयमा ! नो इत्थिवेयए होज्जा, पुरिसवेयए होज्जा, पुरिसनपुंसगवेयए वा होज्जा। १२. (१) बउसे णं भंते ! किं सवेयए होज्जा, अवेयए होज्जा ? गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा। (२) जइ सवेयए होज्जा किं इत्थिवेयए होज्जा, पुरिसवेयए होज्जा, पुरिसनपुंसगवेयए होज्जा ? गोयमा ! इत्थिवेदए वा होज्जा, पुरिसवेयए वा होज्जा, पुरिसनपुंसगवेयए वा होज्जा। १३. एवं पडिसेवणाकुसीले वि। १४. (१) कसायकुसीले णं भंते ! किं सवेयए० पुच्छा। गोयमा ! सवेयए वा होज्जा, अवेयए वा होज्जा। (२) जइ अवेयए किं उवसंतवेयए, खीणवेयए होज्जा ? गोयमा ! उवसंतवेयए वा, खीणवेयए वा होज्जा। (३) जति सवेयए होज्जा किं इत्थिवेदए होज्जा० पुच्छा। गोयमा ! तिसु वि जहा बउसो। १५. (१) णियंठे णं भंते ! किं सवेयए० पुच्छा। गोयमा ! नो सवेयए होज्जा, अवेदए होज्जा। (२) जइ अवेयए होज्जा किं उवसंत० पुच्छा। गोयमा ! उवसंतवेयए वा होज्जा, खीणवेयए वा होज्जा। १६. सिणाए णं भंते ! किं सवेयए होज्जा० ? जहा नियंठे तहा सिणाए वि, नवरं नो उवसंतवेयए होज्जा, खीणवेयए होज्जा। दारं २ । [सु. १७-२०. तइयं रागदारं-पंचविहनियंठेसु सरागत्त-वीयरागत्तपरूवणं] १७. पुलाए णं भंते ! किं सरागे होज्जा, वीयरागे होज्जा ? गोयमा ! सरागे होज्जा, नो वीयरागे होज्जा। १८. एवं जाव कसायकुसीले। १९. (१) णियंठे णं भंते ! किं सरागे होज्जा० पुच्छा। गोयमा ! नो सरागे होज्जा, वीयरागे होज्जा। (२) जइ वीयरागे होज्जा किं उवसंतकसायवीयरागे होज्जा, खीणकसायवीयरागे० ? गोयमा उवसंतकसायवीतरागे वा होज्जा, खीणकसायवीतरागे वा होज्जा। २०. सिणाए एवं चेव, नवरं नो उवसंतकसायवीयरागे होज्जा, खीणकसायवीयरागे होज्जा। दारं ३ । [सु. २१-२८. चउत्थं कप्पदारं-पंचविहनियंठेसु ठियकप्पाइ-जिणकप्पाइपरूवणं] २१. पुलाए णं भंते ! किं ठियकप्पे होज्जा, अठियकप्पे होज्जा ? गोयमा ! ठियकप्पे वा होज्जा, अठियकप्पे वा होज्जा। २२. एवं जाव सिणाए। २३. पुलाए णं भंते ! किं जिणकप्पे होज्जा, थेरकप्पे होज्जा, कप्पातीते होज्जा ? गोयमा ! नो जिणकप्पे होज्जा, थेरकप्पे होज्जा, नो कप्पातीते होज्जा। २४. बउवे णं० पुच्छा। गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, थेरकप्पे वा होज्जा, नो कप्पतीते होज्जा। २५. एवं पडिसेवणाकुसीले वि। २६. कसायकुसीले णं० पुच्छा। गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, थेरकप्पे वा होज्जा, कप्पातीते वा होज्जा। २७. नियंठे णं० पुच्छा। गोयमा ! नो जिणकप्पे होज्जा, नो थेरकप्पे होज्जा, कप्पातीते होज्जा। २८. एवं सिणाए वि। दारं ४ । [सु. २९-३४. पंचमं चरित्तदारं-पंचविहनियंठेसु सामाइयाइसंजमपरूवणं]२९. पुलाए णं भंते ! किं सामाइयसंजमे होज्ज, छेदोवट्ठावणियसंजमे होज्जा, परिहारविसुद्धियसंजमे होज्जा, सुहुमसंपरायसंजमे होज्जा, अहक्खायसंजमे होज्जा ? गोयमा ! सामाइयसंजमे वा होज्जा, छेदोवट्ठावणियसंजमे वा होज्जा, नो परिहारविसुद्धियसंजमे होज्जा, नो सुहुमसंपरायसंजमे होज्जा, नो अहक्खायसंजमे होज्जा। ३०. एवं बउसे वि। ३१. एवं पडिसेवणाकुसीले वि। ३२. कसायकुसीले णं० पुच्छा। गोयमा ! सामासयसंजमे वा होज्जा जाव सुहुमसंपरासंजमे वा होज्जा, नो अहक्खायसंजमे होज्जा। ३३. नियंठे णं० पुच्छा। गोयमा ! णो सामाइयसंजमे होज्जा जाव णो सुहुमसंपरायसंजमे होज्जा, अहक्खायसंजमे होज्जा। ३४. एवं सिणाए वि। दारं ५ । [सु. ३५-४०. छट्ठं पडिसेवणादारं-पंचविहनियंठेसु मूलुत्तरगुणपडिसेवण-अपडिसेवणपरूवणं] ३५. (१) पुलाए णं भंते ! किं पडिसेवए होज्जा, अपडिसेवए होज्जा ? गोयमा ! पडिसेवए होज्जा, नो अपडिसेवए होज्जा। (२) जदि पडिसेवए होज्जा किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा, उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा ? गोयमा ! मूलगुणपडिसेवए वा होज्जा, उत्तरगुणपडिसेवए वा होज्जा। मूलगुणपडिसेवमाणे पंचण्हं आसवाणं अन्नयरं पडिसेवेज्जा, उत्तरगुणपडिसेवमाणे दसविहस्स पच्चक्खाणस्स अन्नयरं पडिसेवेज्जा। ३६. (१) बउसे णं० पुच्छा। गोयमा ! पडिसेवए होज्जा, नो अपडिसेवए होज्जा। (२) जइ पडिसेवए होज्जा किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा, उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा ? गोयमा ! नो मूलगुणपडिसेवए होज्जा, उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा। उत्तरगुणपडिसेवमाणे दसविहस्स पच्चक्खाणस्स अन्नयरं पडिसेवेज्जा। ३७. पडिसेवणाकुसीले जहा पुलाए। ३८. कसायकुसीले० पुच्छा। गोयमा ! नो पडिसेवए होज्ज, अपडिसेवए होज्जा। ३९. एवं नियंठे वि। ४०. एवं सिणाए वि। दारं ६ [सु. ४१-५२. सत्तमं नाणदारं-पंचविहनियंठेसु नाण-सुयऽज्झयणपरूवणं] ४१. पुलाए णं भंते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ? गोयमा ! दोसु वा तिसु वा होज्जा। दोसु होमाणे दोसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाणेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु आभिनिबोहियनाण-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा। ४२. एवं बउसे वि। ४३. एवं पडिसेवणाकुसीले वि। ४४. कसायकुसीले णं० पुच्छा। गोयमा! दोसु वा तिसु वा चउसु वा होज्जा। दोस होमाणे दोसु आभिनिबोहियनाण-सुयनाणेसु होज्जा। तिसु होमाणे तिसु आभिनिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु अहवा तिसु आभिनिबोहियनाण-सुयनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा। चउसु होमाणे चउसु आभिनिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा। ४५. एवं नियंठे वि। ४६. सिणाए णं० पुच्छा। गोयमा! एगम्मि केवलनाणे होज्जा। ४७. पुलाए णं भंते! केवतियं सुयं अहिज्जेज्जा? गोयमा! जहन्नेणं नवमस्स पुव्वस्स ततियं आयारवत्थुं, उक्कोसेणं नव पुव्वाइं अहिज्जेज्जा। ४८. बउसे० पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा। ४९. एवं पडिसेवणाकुसीले वि। ५०. कसायकुसीले० पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा। ५१. एवं नियंठे वि। ५२. सिणाये० पुच्छा। गोयमा! सुयवतिरित्ते होज्जा। दारं ७। [सु. ५३-५७. अट्ठमं तित्थदारं-पंचविहनियंठेसु तित्थ-अतित्थपरूवणं]५३. पुलाए णं भंते! किं तित्थे होज्जा, अतित्थे होज्जा? गोयमा! तित्थे होज्जा, नो अतित्थे होज्जा। ५४. एवं बउसे वि, पडिसेवणाकुसीले वि। ५५. (१) कसायकुसीले० पुच्छा। गोयमा! तित्थे वा होज्जा, अतित्थे वा होज्जा। (२) जति अतित्थे होज्जा किं तित्थयरे होज्जा, पत्तेयबुद्धे होज्जा? गोयमा! तित्थगरे वा होज्जा, पत्तेयबुद्धे वा होज्जा। ५६. एवं नियंठे वि। ५७. एवं सिणाए वि। दारं ८। [सु. ५८-५९. नवमं लिंगदारं-पंचविहनियंठेसु सलिंग-अन्नलिंग-गिहिलिंगपरूवणं]५८. पुलाए णं भंते! किं सलिंगे होज्जा, अन्नलिंगे होज्जा, गिहिलिंगे होज्जा? गोयमा! दव्वलिंगं पडुच्च सलिंगे वा होज्जा, अन्नलिंगे वा होज्जा, गिहिलिंगे वा होज्जा। भावलिंगं पडुच्च नियमं सलिंगे होज्जा। ५९. एवं जाव सिणाए। दारं ९। [सु. ६०-६४. दसमं सरीरदारं-पंचविहनियंठेसु सरीरभेयपरूवणं] ६०. पुलाए णं भंते! कतिसु सरीरेसु होज्जा? गोयमा! तिसु ओरालिय-तेया-कम्मएसु होज्जा। ६१. बउसे णं भंते!० पुच्छा। गोयमा! तिसु वा चतुसु वा होज्जा। तिसु होमाणे तिसु ओरालिय-तेया-कम्मएसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मएसु होज्जा। ६२. एवं पडिसेवणाकुसीले वि। ६३. कसायकुसीले० पुच्छा। गोयमा! तिसु वा चतुसु वा पंचसु वा होज्जा। तिसु होमाणे तिसु ओरालिय-तेया-कम्मएसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मएसु होज्जा, पंचसु होमाणे पंचसु ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयग-कम्मएसु होज्जा। ६४. णियंठे सिणाते य जहा पुलाओ। दारं १० [सु. ६५-६७. एक्कारसमं खेत्तदारं-पंचविहनियंठेसु कम्म-अकम्मभूमिपरूवणं] ६५. पुलाए णं भंते! किं कम्मभूमीए होज्जा, अकम्मभूमीए होज्जा? गोयमा! जम्मण-संतिभावं पडुच्च कम्मभूमीए होज्जा, नो अकम्मभूमीए होज्जा। ६६. बउसे णं० पुच्छा। गोयमा! जम्मण-संतिभावं पडुच्च कम्मभूमीए होज्जा, नो अकम्मभूमीए होज्जा। साहारणं पडुच्च कम्मभूमीए वा होज्जा, अकम्मभूमीए वा होज्जा। ६७. एवं जाव सिणाए। दारं ११। [सु. ६८-७२. बारसमं कालदारं-पंचविहनियंठेसु ओसप्पिणि-उस्सप्पिणि-कालाइपरूवणं] ६८. (१) पुलाए णं भंते! किं ओसप्पिणिकाले होज्जा, उस्सप्पिणिकाले होज्जा, नोओसप्पिणिनोउस्सप्पिणिकाले होज्जा? गोयमा! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उसस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओसप्पिणिनोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा। (२) जदि ओसप्पिणिकाले होज्जा किं सुसमसुसमाकाले होज्जा, सुसमाकाले होज्जा, सुसमदुस्समाकाले होज्जा, दुस्समसुसमाकाले होज्जा, दुस्समाकाले होज्जा, दुस्समदुस्समाकाले होज्जा? गोयमा! जम्मणं पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा। संतिभावं पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, नो दूसमदूसमाकाले होज्जा। (३) जदि उस्सप्पिणिकाले होज्जा किं दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, दुस्समाकाले होज्जा, दुस्समसुसमाकाले होज्जा, सुसमदुस्समाकाले होज्जा, सुसमाकाले होज्जा, सुसमसुसमाकाले होज्जा? गोयमा! जम्मणं पडुच्च णो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, नो सुसमसुसमाकाले होज्जा। संतिभावं पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, नो सुसमसुसमाकाले होज्जा। (४) जति नो ओसप्पिणिनोउस्सप्पिणिकाले होज्जा किं सुसमसुसमापलिभागे होज्जा, सुसमापलिभागे होज्जा, सुसमदुस्समापलिभागे होज्जा, दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा ? गोयमा ! जम्मण-संतिभावं पडुच्च नो सुसमसुसमापलिभागे होज्जा, नो सुसमापलिभागे होज्जा, नो सुसमदुस्समापलिभागे होज्जा, दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा। ६९. (१) बउसे णं० पुच्छा। गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उसप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओसप्पिणिनोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा। (२) जति ओसप्पिणिकाले होज्जा, किं सुसमसुसमाकाले होज्जा० पुच्छा। गोयमा ! जम्मण-संतिभावं पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा। साहरणं पडुच्च अन्नयरे समाकाले होज्जा। (३) जति उस्सप्पिणिकाले होज्जा किं दुस्समदुस्समाकाले होज्जा० पुच्छा। गोयमा ! जम्मणं पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा जहेव पुलाए। संतिभावं पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा०; एवं संतिभावेण वि जहा पुलाए जाव नो सुसमसुसमाकाले होज्जा। साहारणं पडुच्च अन्नयरे समाकाले होज्जा। (४) जदि नोओसप्पिणिनोउस्सप्पिणिकाले होज्जा० पुच्छा। गोयमा ! जम्मण-संतिभावं पडुच्च नो सुसमसुसमापलिभागे होज्जा, जहेव पुलाए जाव दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा। साहारणं पडुच्च अन्नयरे पलिभागे होज्जा जहा बउसे। ७०. एवं पडिसेवणाकुसीले वि। ७१. एवं कसायकुसीले वि। ७२. नियंठो सिणातो य जहा पुलाए, नवरं एएसिं अब्भहियं साहरणं भाणियव्वं। सेसं तं चेव। दारं १२। [सु. ७३-८८. तेरसमं गतिदारं-पंचविहानियंठेसु गतिपरूणाइ] ७३. (१) पुलाए णं भंते ! कालगए समाणे कं गतिं गच्छति ? गोयमा ! देवगतिं गच्छति। (२) देवगतिं गच्छमाणे किं भवणवासीसु उववज्जेज्जा, वाणमंतरेसु उववज्जेज्जा, जोतिस-वेमाणिएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! नो भवणवासीसु, नो वाणमंतरेसु, नो जोतिसेसु, वेमाणिएसु उववज्जेज्जा। वेमाणिएसु उववज्जमाणे जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे उववज्जेज्जा। ७४. बउसे णं० ? एवं चेव, नवरं उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे। ७५. पडिसेवणाकुसीले जहा बउसे। ७६. कसायकुसीले जहा पुलाए, नवरं उक्कोसेणं अणुत्तरविमाणेसु। ७७. णियंठे णं भंते !०? एवं चेव जाव वेमाणिएसु उववज्जमाणे अजहन्नमणुक्कोसेणं अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा। ७८. सिणाए णं भंते ! कालगते समाणे कं गतिं गच्छति ? गोयमा ! सिद्धिगतिं गच्छइ। ७९. पुलाए णं भंते ! देवेसु उववज्जमाणे किं इंदत्ताए उववज्जेज्जा, सामाणियत्ताए उववज्जेज्जा, तावत्तीसगत्ताए उववज्जेज्जा, लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा, अहमिंदत्ताए उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अविराहणं पडुच्च इंदत्ताए उववज्जेज्जा, सामाणियत्ताए उववज्जेज्जा, तावत्तीसगत्ताए उववज्जेज्जा, लोगपालगत्ताए उववज्जेज्जा, नो अहमिंदत्ताए उववज्जेज्जा। विराहणं पडुच्च अन्नयरेसु उववज्जेज्जा। ८०. एवं बउसे वि। ८१. एवं पडिसेवणाकुसीले वि। ८२. कसायकुसीले० पुच्छा। गोयमा ! अविराहणं पडुच्च इंदत्ताए वा उववज्जेज्जा जाव अहमिंदत्ताए वा उववज्जेज्जा। विराहणं पडुच्च अन्नयरेसु उववज्जेज्जा। ८३. नियंठे० पुच्छा। गोयमा ! अविराहणं पडुच्च नो इंदत्ताए उववज्जेज्जा जाव नो लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा, अहमिंदत्ताए उववज्जेज्जा। विराहणं पडुच्च अन्नयरेसु उववज्जेज्जा। ८४. पुलायस्स णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणस्स केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं पलियोवमपुहत्तं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं। ८५. बउसस्स० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं पलियोवमपुहत्तं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं। ८६. एवं पडिसेवणाकुसीलस्स वि। ८७. कसायकुसीलस्स० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं पलियोवमपुहत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। ८८. णियंठस्स० पुच्छा। गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। दारं १३। [सु. ८९-९३. चोद्दसमं संजमदारं-पंचविहनियंठेसु अप्पाबहुयसहियं संजमट्ठाणपरूवणं] ८९. पुलागस्स णं भंते ! केवतिया संजमठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा संजमठाणा पन्नत्ता। ९०. एवं जाव कसायकुसीलस्स। ९१. नियंठस्स णं भंते ! केवतिया संजमठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! एगे अजहन्नमणुक्कोसए संजमठाणे पन्नते। ९२. एवं सिणायस्स वि। ९३. एएसि णं भंते ! पुलाग-बउस-पडिसेवणा-कसायकुसील-नियंठ-सिणायाणं संजमठाणाणं कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे नियंठस्स सिणायस्स य एगे अजहन्नमणुक्कोसए संजमठाणे। पुलागस्स संजमठाणा असंखेज्जगुणा। बउसस्स संजमठाणा असंखेज्जगुणा। पडिसेवणाकुसीलस्स संजमठाणा असंखेज्जगुणा। कसायकुसीलस्स संजमठाणा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंखेज्जगुणा। दारं १४ । [सु. ९४-११६. पणरसमं निकासदारं-पंचविहनियंठेसु चरित्तपज्जव-परूवणाइ सु. ९४-९५. पंचविहनियंठेसु अणंतचरित्तपज्जवपरूवणं] ९४. पुलागस्स णं भंते ! केवतिया चरित्तपज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता चरित्तपज्जवा पन्नत्ता। ९५. एवं जाव सिणायस्स। [सु. ९६-११५. पंचविहनियंठेसु सट्ठाण-परट्ठाणचरित्तपज्जवेहिं हीण-तुल्ल-अब्भहियपरूवणं] ९६. पुलाए णं भंते ! पुलागस्स सट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे, तुल्ले, अब्भहिए ? गोयमा ! सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए। जदि हीणे अणंतभागहीणे वा असंखेज्जतिभागहीणे वा संखेज्जइभागहीणे वा, संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा, अणंतगुणहीणे वा । अह अब्भहिए अणंतभागमब्भहिए वा, असंखेज्जतिभागमब्भहिए वा, संखेज्जतिभागमब्भहिए वा, संखेज्जगुणमब्भहिए वा, असंखेज्जतिगुणमब्भहिए वा अणंतगुणमब्भहिए वा। ९७. पुलाए णं भंते ! बउसस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे, तुल्ले, अब्भहिए ? गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए; अणंतगुणहीणे । ९८. एवं पडिसेवणाकुसीलस्स वि । ९९. कसायकुसीलेण समं छट्ठाणपडिए जहेव सट्ठाणे । १००. नियंठस्स जहा बउसस्स। १०१. एवं सिणायस्स वि । १०२. बउसे णं भंते ! पुलागस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे, तुल्ले, अब्भहिए ? गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए; अणंतगुणमब्भहिए । १०३. बउसे णं भंते ! बउसस्स सट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं० पुच्छा । गोयमा ! सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए। जदि हीणे छट्ठाणवडिए। १०४. बउसे णं भंते ! पडिसेवणाकुसीलस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे० ? छट्ठाणवडिए। १०५. एवं कसायकुसीलस्स वि । १०६. बउसे णं भंते ! नियंठस्स परट्ठाणसन्निकासेणं चरित्तपज्जवेहिं० पुच्छा। गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए; अणंतगुणहीणे। १०७. एवं सिणायस्स वि। १०८. पडिसेवणाकुसीलस्स एवं चेव बउसवत्तव्वया भाणियव्वा। १०९. कसायकुसीलस्स एस चेव बउसवत्तव्वया, नवरं पुलाएण वि समं छट्ठाणपडिते। ११०. णियंठे णं भंते ! पुलागस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं० पुच्छा। गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए; अणंतगुणमब्भहिए। १११. एवं जाव कसायकुसीलस्स। ११२. नियंठे णं भंते ! नियंठस्स सट्ठाणसन्निगासेणं० पुच्छा। गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए। ११३. एवं सिणायस्स वि। ११४. सिणाए णं भंते ! पुलागस्स परट्ठाणसन्नि० ? एवं जहा नियंठस्स वत्तव्वया तहा सिणायस्स वि भाणियव्वा जाव- ११५. सिणाए णं भंते ! सिणायस्स सट्ठाणसन्निगासेणं० पुच्छा। गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए।[सु. ११६ जहन्नुक्कोसाणं पंचविहनियंठचरित्तपज्जवाणं अप्पाबहुयं] ११६. एएसि णं भंते ! पुलाग-बकुस-पडिसेवणाकुसील-कसायकुसील-नियंठ-सिणायाणं जहन्नुक्कोसगाणं चरित्तपज्जवाणं कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! पुलागस्स कसायकुसीलस्स य एएसि णं जहन्नगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला सव्वत्थोवा। पुलागस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा। बउसस्स पडिसेवणाकुसीलस्स य एएसिं णं जहन्नगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणंतगुणा। बउसस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा। पडिसेवणाकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा। कसायकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा। नियंठस्स सिणायस्स य एएसि णं अजहन्नमणुक्कोसगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणंतगुणा। दारं १५ । [सु. ११७-२१. सोलसमं जोगदारं-पंचविहनियंठेसु जोगपरूवणं]११७. पुलाए णं भंते ! किं सजोगी होज्जा, अजोगी होज्जा ? गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा। ११८. जति सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा, वइजोगी होज्जा, कायजोगी होज्जा ? गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा। ११९. एवं जाव नियंठे। १२०. सिणाए णं० पुच्छा। गोयमा ! सजोगी वा होज्जा, अजोगी वा होज्जा। १२१. जदि सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा० ? सेसं जहा पुलागस्स। दारं १६ [सु. १२२-२३. सत्तरसमं उवओगदारं-पंचविहनियंठेसु उवओगपरूवणं]१२२. पुलाए णं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा, अणागारोवउत्ते होज्जा ? गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा। १२३. एवं जाव सिणाए। दारं १७ ।[सु. १२४--३२. अट्ठारसमं कसायदारं-पंचविहनियंठेसु कसायपरूवणं] १२४. पुलाए णं भंते ! किं सकसायी होज्जा, अकसायी होज्जा ? गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा। १२५. जइ सकसायी से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ? गोयमा ! चउसु, कोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा। १२६. एवं बउसे वि। १२७. एवं पडिसेवणाकुसीले

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि। १२८. कसायकुसीले णं० पुच्छा। गोयमा! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा। १२९. जति सकसायी होज्जा से णं भंते! कतिसु कसाएसु होज्जा? गोयमा! चउसु वा, तिसु वा, दोसु वा, एगम्मि वा होज्जा। चउसु होमाणे चउसु संजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु संजलणमाण-माया-लोभेसु होज्जा, दोसु होमाणे संजलणमाया-लोभेसु होज्जा, एगम्मि होमाणे एगम्मि संजलणे लोभे होज्जा। १३०. नियंठे णं० पुच्छा। गोयमा! नो सकसायी होज्जा, अकसायी होज्जा। १३१. जदि अकसायी होज्जा किं उवसंतकसायी होज्जा, खीणकसायी होज्जा? गोयमा! उवसंतकसायी वा होज्जा, खीणकसायी वा होज्जा। १३२. सिणाए एवं चेव, नवरं नो उवसंतकसायी होज्जा, खीणकसायी होज्जा। दारं १८। [सु. १३३-४२. एगूणवीसइमं लेसादारं-पंचविहनियंठेसु लेसापरूवणं] १३३. पुलाए णं भंते! किं सलेस्से होज्जा, अलेस्से होज्जा? गोयमा! सलेस्से होज्जा, नो अलेस्से होज्जा। १३४. जदि सलेस्से होज्जा से णं भंते! कतिसु लेसासु होज्जा? गोयमा! तिसु विसुद्धलेसासु होज्जा, तं जहा-तेउलेसाए, पम्हलेसाए, सुक्कलेसाए। १३५. एवं बउसस्स वि। १३६. एवं पडिसेवणाकुसीले वि। १३७. कसायकुसीले० पुच्छा। गोयमा! सलेस्से होज्जा, नो अलेस्से होज्जा। १३८. जति सलेस्से होज्जा से णं भंते! कतिसु लेसासु होज्जा? गोयमा! छसु लेसासु होज्जा, तं जहा-कण्हलेसाए जाव सुक्कलेसाए। १३९. नियंठे णं भंते!० पुच्छा। गोयमा! सलेस्से होज्जा, नो अलेस्से होज्जा। १४०. जदि सलेस्से होज्जा से णं भंते! कतिसु लेसासु होज्जा? गोयमा! एक्काए सुक्कलेसाए होज्जा। १४१. सिणाए० पुच्छा। गोयमा! सलेस्से वा होज्जा, अलेस्से वा होज्जा। १४२. जति सलेस्से होज्जा से णं भंते! कतिसु लेसासु होज्जा? गोयमा! एगाए परमसुक्काए लेसाए होज्जा। दारं १९। [सु. १४३-५०. वीसइमं परिणामदारं-पंचविहनियंठेसु वड्ढमाणाइपरिणामपरूवणं]१४३. पुलाए णं भंते! किं वड्ढमाणपरिमाणे होज्जा, हायमाणपरिमाणे होज्जा, अवट्ठियपरिमाणे होज्जा? गोयमा! वड्ढमाणपरिमाणे वा होज्जा, हायमाणपारिणामे वा होज्जा, अवट्ठियपरिमाणे वा होज्जा। १४४. एवं जाव कसायकुसीले। १४५. नियंठे० पुच्छा। गोयमा! वड्ढमाणपरिमाणे होज्जा, नो हायमाणपरिणामे होज्जा, अवट्ठियपरिणामे वा होज्जा। १४६. एवं सिणाए वि। १४७. (१) पुलाए णं भंते! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। (२) केवतियं कालं हायमाणपरिणामे होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। (३) केवइयं कालं हायमाणपरिणामे होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं सत्त समया। १४८. एवं जाव कसायकुसीले। १४९. (१) नियंठे णं भंते! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं। (२) केवतियं कालं अवट्ठियपरिणामे होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। १५०. (१) सिणाए णं भंते! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं। २ केवतियं कालं अवट्ठियपरिणामे होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। दारं २०।[सु. १५१-५६. इगवीसइमं बंधदारं-पंचविहनियंठेसु कम्मपगडिबंधपरूवणं]१५१. पुलाए णं भंते! कति कम्मपगडीओ बंधति? गोयमा! आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधति। १५२. बउसे० पुच्छा। गोयमा! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा। सत्त बंधमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधति, अट्ठ बंधमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ बंधति। १५३. एवं पडिसेवणाकुसीले वि। १५४. कसायकुसीले० पुच्छा। गोयमा! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा, छव्विहबंधए वा। सत्त बंधमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधति, अट्ठ बंधमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ बंधति, छ बंधमाणे आउय-मोहणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ बंधति। १५५. नियंठे० पुच्छा। गोयमा! एगं वेदणिज्जं कम्मं बंधति। १५६. सिणाए० पुच्छा। गोयमा! एगविहबंधए वा, अबंधए वा। एगं बंधमाणे एगं वेदणिज्जं कम्मं बंधति। दारं २१ [सु. १५७-६०. बावीसइमं वेददारं-पंचविहनियंठेसु कम्मपगडिवेदपरूवणं]१५७. पुलाए णं भंते! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति? गोयमा! नियमं अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदेति। १५८. एवं जाव कसायकुसीले। १५९. नियंठे० पुच्छा। गोयमा! मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वेदेति। १६०. सिणाएणं भंते!० पुच्छा। गोयमा! वेदणिज्जाऽऽउय-नाम-गोयाओ चत्तारि कम्मप्पगडीओ वेदेति। दारं २२। [सु.१६१-६६. तेवीसइमं कम्मोदीरणदारं-पंचविहनियंठेसु कम्मपगडिउदी-

रणपरूवणं]१६१. पुलाए णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ उदीरेइ ? गोयमा ! आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ।१६२. बउसे ० पुच्छा। गोयमा ! सत्तविधउदीरए वा, अट्ठविहउदीरए वा, छव्विहउदीरए वा। सत्त उदीरेमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, अट्ठ उदीरेमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मपगडीओ उदीरेति। १६३. पडिसेवणाकुसीले एवं चेव। १६४. कसायकुसीले० पुच्छा। गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा, अट्ठविहउदीरए वा छव्विहउदीरए वा, पंचविहउदीरए वा। सत्त उदीरेमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, अट्ठ उदीरेमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पंच कम्मप्पगडीओ उदीरेइ। १६५. नियंठे० पुच्छा। गोयमा ! पंचविहउदीरए वा, दुविहउदीरए वा। पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पंच कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, दो उदीरेमाणे नामं च गोयं च उदीरेइ। १६६. सिणाए० पुच्छा। गोयमा ! दुविहउदीरए वा, अणुदीरए वा। दो उदीरेमाणे नामं च गोयं च उदीरेइ। दारं २३ ।[सु. १६७-७२. चउवीसइमं उवसंपजहणदारं-पंचविहनियंठेसु सट्ठाणचागाणंतरं परट्ठाणसंपत्तिपरूवणं] १६७. पुलाए णं भंते ! पुलायत्तं जहमाणे किं जहति ?, किं उवसंपज्जइ ? गोयमा ! पुलायत्तं जहति; कसायकुसीलं वा असंजमं वा उवसंपज्जइ। १६८. बउसे णं भंते ! बउसत्तं जहमाणे किं जहति ?, किं उवसंपज्जइ ? गोयमा ! बउसत्तं जहति; पडिसेवणाकुसीलं वा, कसायकुसीलं वा, असंजमं वा, संजमासंजमं वा उवसंपज्जइ। १६९. पडिसेवणाकुसीले णं भंते ! पडिसेवणाकुसीलत्तं जहमाणे० पुच्छा। गोयमा ! पडिसेवणाकुसीलत्तं जहति; बउसं वा, कसायकुसीलं वा, असंजमं वा, संजमासंजमं वा उवसंपज्जइ। १७०. कसायकुसीले० पुच्छा। गोयमा ! कसायकुसीलत्तं जहइ; पुलायं वा, बउसं वा, पडिसेवणाकुसीलं वा, नियंठ वा, अस्संजमं वा, संजमासंजमं वा उवसंपज्जइ। १७१. णियंठे० पुच्छा। गोयमा ! नियंठत्तं जहति; कसायकुसीलं वा, सिणायं वा, अस्संजमं वा, उवसंपज्जइ। १७२. सिणाए० पुच्छा। गोयमा ! सिणायत्तं जहति; सिद्धिगतिं उवसंपज्जइ। दारं २४ ।[सु. १७३-७७. पंचवीसइमं सन्नादारं-पंचविहनियंठेसु सन्नापरूवणं] १७३. पुलाए णं भंते ! किं सण्णोवउत्ते होज्जा, नोसण्णोवउत्ते होज्जा ? गोयमा ! णोसण्णोवउत्ते होज्जा। १७४. बउसे णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! सन्नोवउत्ते वा होज्जा, नोसण्णोवउत्ते वा होज्जा। १७५. एवं पडिससेवणाकुसीले वि। १७६. एवं कसायकुसीले वि। १७७. नियंठे सिणाए य जहा पुलाए। दारं २५ ।[सु. १७८-८०. छव्वीसइमं आहारदारं-पंचविहनियंठेसु आहारगत्त-आणाहारगत्तपरूवणं]१७८. पुलाए णं भंते ! किं आहारए होज्जा, अणाहारए होज्जा ? गोयमा ! आहारए होज्जा, नो अणाहारए होज्जा। १७९. एवं जाव नियंठे। १८०. सिणाए० पुच्छा। गोयमा ! आहारए वा होज्जा, अणाहारए वा होज्जा। दारं २६ । [सु. १८१-८६. सत्तावीसइमं भवदारं-पंचविहनियंठेसु भवग्गहणपरूवणं] १८१. पुलाए णं भंते ! कति भवग्गहणाइं होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं, उक्कोसेणं तिन्नि। १८२. बउसे० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं, उक्कोसेणं अट्ठ। १८३. एवं पडिसेवणाकुसीले वि। १८४. एवं कसायकुसीले वि। १८५. नियंठे जहा पुलाए। १८६. सिणाए० पुच्छा। गोयमा ! एक्कं। दारं २७ । [सु. १८७-९६. अट्ठावीसइमं आगरिसदारं-पंचविहनियंठेसु एगभवग्गहणिय-नाणभवग्गहणियआगरिसपरूवणं] १८७. पुलागस्स णं भंते ! एगभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को, उक्कोसेणं तिण्णि। १८८. बउसस्स णं० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं एक्को, उक्कोसेणं सयग्गसो। १८९. एवं पडिसेवणाकुसीले वि, कसायकुसीले वि। १९०. णियंठस्स णं० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं एक्को, उक्कोसेणं दोन्नि। १९१. सिणायस्स णं० पुच्छा। गोयमा ! एक्को। १९२. पुलागस्स णं भंते ! नाणाभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दोण्णि, उक्कोसेणं सत्त। १९३. बउसस्स० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं दोन्नि, उक्कोसेणं सहस्ससो। १९४. एवं जाव कसायकुसीलस्स। १९५. नियंठस्स णं० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं दोन्नि, उक्कोसेणं पंच। १९६. सिणायस्स० पुच्छा। गोयमा ! नत्थि एक्को वि। दारं २८ ।[सु. १९७-२०६. एगूणतीसइमं कालदारं-पंचविहनियंठेसु एगत्त-पुहत्तेणं ठिइकालपरूवणं] १९७. पुलाए णं भंते ! कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं। १९८. बउसे० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। १९९. एवं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिसेवणाकुसीले वि, कसायकुसीले वि। २००. नियंठे० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। २०१. सिणाए० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। २०२. पुलाया णं भंते ! कालओ केवचिरं होंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। २०३. बउसा णं भंते !० पुच्छा। गोयमा ! सव्वद्धं। २०४. एवं जाव कसायकुसीला। २०५. नियंठा जहा पुलागा। २०६. सिणाया जहा बउसा। दारं २९ । [सु. २०७-१४. तीसइमं अंतरदारं-पंचविहनियंठेसु, एगत्त-पुहत्तेणं कालंतरपरूवणं] २०७. पुलागस्स णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-अणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं। २०८. एवं जाव नियंठस्स। २०९. सिणायस्स० पुच्छा। गोयमा ! नत्थंतरं। २१०. पुलागाणं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वासाइं। २११. बउसाणं भंते !० पुच्छा। गोयमा ! नत्थंतरं। २१२. एवं जाव कसायकुसीलाणं। २१३. नियंठाणं० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा। २१४. सिणायाणं जहा बउसाणं। दारं ३० । [सु. २१५-२०. इगतीसइमं समुग्घायदारं-पंचविहनियंठेसु समुग्घायपरूवणं]२१५. पुलागस्स णं भंते ! कति समुग्घाया पन्नत्ता ? गोयमा ! तिन्नि समुग्घाया पन्नत्ता, तं जहा-वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए। २१६. बउसस्स णं भंते !० पुच्छा। गोयमा ! पंच समुग्घाता पन्नत्ता, तं जहा-वेयणासमुग्घाए जाव तेयासमुग्घाए। २१७. एवं पडिसेवणाकुसीले वि। २१८. कसायकुसीलस्स० पुच्छा। गोयमा ! छ समुग्घाता पन्नत्ता, तं जहा-वेयणासमुग्घाए जाव आहारसमुग्घाए! २१९. नियंठस्स णं० पुच्छा। गोयमा ! नत्थि एक्को वि। २२०. सिणायस्स० पुच्छा। गोयमा ! एगे केवलिसमुग्घाते पन्नत्ते। दारं ३१ । [सु. २२१-२३. बत्तीसइमं खेत्तदारं-पंचविहनियंठेसु ओगाहणाखेत्तपरूवणं] २२१. पुलाए णं भंते ! लोगस्स किं संखेज्जतिभागे होज्जा, असंखेज्जतिभागे होज्जा, संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, सव्वलोए होज्जा ? गोयमा ! नो संखेज्जतिभागे होज्जा, असंखेज्जइभागे होज्जा, नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नो सव्वलोए होज्जा। २२२. एवं जाव नियंठे। २२३. सिणाए णं भंते !० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जतिभागे होज्जा, असंखेज्जतिभागे होज्जा, नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, सव्वलोए वा होज्जा। दारं ३२ ।[सु. २२४. तेत्तीसइमं फुसणादारं-पंचविहनियंठेसु खेत्तफुसणापरूवणं] २२४. पुलाए णं भंते ! लोगस्स किं संखेज्जतिमागं फुसति, असंखेज्जतिमागं फुसइ०? एवं जहा ओगाहणा भणिया तहा फुसणा वि भाणियव्वा जाव सिणाये। दारं ३३ [सु. २२५-२८. चोतीसइमं भावदारं-पंचविहनियंठेसु ओवसमियाइभावपरूवणं] २२५. पुलाए णं भंते ! कयरम्मि भावे होज्जा ? गोयमा ! खयोवसमिए भावे होज्जा। २२६. एवं जाव कसायकुसीले। २२७. नियंठे० पुच्छा। गोयमा ! ओवसमिए वा खइए वा भावे होज्जा। २२८. सिणाये० पुच्छा। गोयमा ! खइए भावे होज्जा। दारं ३४ ।[सु. २२९-३४. पंचतीसइमं परिमाणदारं-पंचविहनियंठेसु एगसमय-परिमाणपरूवणं] २२९. पुलाया णं भंते ! एगसमएणं केवतिया होज्जा ? गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जति अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं। पुव्वपडिवन्नए पडुच्च सिय अत्थि, सिय णत्थि। जति अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं सहस्सपुहत्तं। २३०. बउसा णं भंते ! एगसमएणं० पुच्छा। गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जदि अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं। पुव्वपडिवन्नए पडुच्च जहन्नेणं कोडिसयपुहत्तं, उक्कोसेणं वि कोडिसयपुहत्तं। २३१. एवं पडिसेवणाकुसीला वि। २३२. कसायकुसीला णं० पुच्छा। गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जदि अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं सहस्सपुहत्तं। पुव्वपडिवन्नए पडुच्च जहन्नेणं कोडिसहस्सपुहत्तं, उक्कोसेणं वि कोडिसहस्सपुहत्तं। २३३. नियंठा णं० पुच्छा। गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जदि अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं बावट्ठं सयं-अट्ठसतं खवगाणं, चउप्पण्णं उवसामगाणं। पुव्वपडिवन्नए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जति अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं। २३४. सिणाया णं० पुच्छा। गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जदि अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं अट्ठसयं। पुव्वपडिवन्नए पडुच्च

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहन्नेणं कोडिपुहत्तं, उक्कोसेण वि कोडिपुहत्तं। दारं ३५ । [सु. २३५. छत्तीसइमं अप्पाबहुयदारं-पंचविहनियंठेसु अप्पाबहुयपरूवणं] २३५. एएसि णं भंते ! पुलाग-बउस-पडिसेवणाकुसील-नियंठ-सिणायाणं कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा नियंठा, पुलागा संखेज्जगुणा, बउसा संखेज्जगुणा, पडिसेवणाकुसीला संखेज्जगुणा, कसायकुसीला संखेज्जगुणा। दारं ३६ । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ। ☆☆☆॥२५ सते ६ उद्दे०॥ **सत्तमो उद्देसओ 'समणा'** ☆☆☆[सु. १-११. पढमं पण्णवणदारं-संजयभेयपरूवणं सु. १-६. पंचभेया संजयातब्भेया य] १. कति णं भंते ! संजया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच संजया पन्नत्ता तं जहा-सामाइयसंजए छेदोवट्ठावणियसंजए परिहारविसुद्धियसंजए सुहुमसंपरायसंजए अहक्खायसंजए। २. सामाइयसंजए णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-इत्तिरिए य, आवकहिए य। ३. छेदोवट्ठावणियसंजए णं० पुच्छा। गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-सातियारे य, निरतियारे य। ४. परिहारविसुद्धियसंजए० पुच्छा। गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-णिव्विसमाणए य, निव्विट्ठकाइए य। ५. सुहुमसंपराग० पुच्छा। गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-संकिलिस्समाणए य, विसुज्झमाणए य। ६. अहक्खायसंजए० पुच्छा। गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-छउमत्थे य, केवली य। [सु. ७-११. पंचविहसंजयसरूवपरूवणं] ७. सामाइयम्मि उ कए चाउज्जामं अणुत्तरं धम्मं। तिविहेण फासयंतो सामाइयसंजयो स खलु॥ १ ॥ ८. छेत्तूण य परियागं पोराणं जो ठवेइ अप्पाणं। धम्मम्मि पंचजामे छेदोवट्ठावणो स खलु॥ २ ॥ ९. परिहरति जो विसुद्धं तु पंचजामं अणुत्तरं धम्मं। तिविहेण फासयंतो परिहारियसंजयो स खलु ॥ ३ ॥ १०. लोभाणुं वेदेंतो जो खलु उवसामओ व खवओ वा। सो सुहुमसंपराओ अहखाया ऊणओ किंचि॥ ४ ॥ ११. उवसंते खीणम्मि व जो खलु कम्मम्मि मोहणिज्जम्मि। छउमत्थो व जिणो वा अहखाओ संजओ स खलु॥ ५ ॥ दारं १ । [सु. १२-१५. बिइयं वेददारं-पंचविहसंजएसु इत्थिवेदाइवेदपरूवणं] १२. सामाइयसंजये णं भंते ! किं सवेयए होज्जा, अवेयए होज्जा ? गोयमा ! सवेयए वा होज्जा, अवेयए वा होज्जा। जति सवेयए एवं जहा कसायकुसीले (उ० ६ सु० १४) तहेव निरवसेसं। १३. एवं छेदोवट्ठावणियसंजए वि। १४. परिहारविसुद्धियसंजओ जहा पुलाओ (उ० ६ सु० ११)। १५. सुहुमसंपरायसंजओ अहक्खायसंजओ य जहा नियंठो (उ०६ सु० १५)। दारं २ ।[सु. १६-१८. तइयं रागदारं-पंचविहसंजएसु सरागत्त-वीवरागत्तपरूवणं] १६. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सरागे होज्जा, वीयरागे होज्जा ? गोयमा ! सरागे होज्जा, नो वीयरागे होज्जा। १७. एवं जाव सुहमसंपरायसंजए। १८. अहक्खायसंजए जहा नियंठे (उ० ६ सु० १९)। दारं ३ । [सु. १९-२५. चउत्थं कप्पदारं-पंचविहसंजएसु ठिइकप्पाइ-जिणकप्पाइपरूवणं]१९. सामाइयसंजए णं भंते ! किं ठियकप्पे होज्जा, अठियकप्पे होज्जा ? गोयमा ! ठियकप्पे वा होज्जा, अठियकप्पे वा होज्जा। २०. छेदोवट्ठावणियसंजए० पुच्छा। गोयमा ! ठियकप्पे होज्जा, नो अठियकप्पे होज्जा। २१. एवं परिहारविसुद्धियसंजए वि। २२.सेसा जहा सामाइयसंजए। २३. सामाइयसंजए णं भंते ! किं जिणकप्पे होज्जा, थेरकप्पे होज्जा, कप्पातीते होज्जा ? गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा जहा कसायकुसीले (उ० ६ सु० २६) तहेव निरवसेसं। २४. छेदोवट्ठावणिओ परिहारविसुद्धिओ य जहा बउसो (उ० ६ सु० २४)। २५. सेसा जहा नियंठे (उ० ६ सु० २७)। दारं ४ ।[सु. २६-३०. पंचमं चरित्तदारं-पंचविहसंजएसु पुलायाइपरूवणं] २६. सामाइयसंजए णं भंते ! किं पुलाए होज्जा, बउसे जाव सिणाए होज्जा ? गोयमा ! पुलाए वा होज्जा, बउसे जाव कसायकुसीले वा होज्जा, नो नियंठे होज्जा, नो सिणाए होज्जा। २७. एवं छेदोवट्ठावणिए वि। २८. परिहारविसुद्धियसंजते णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! नो पुलाए, नो बउसे, नो पडिसेवणाकुसीले होज्जा, कसायकुसीले होज्जा, नो नियंठे होज्जा, नो सिणाए होज्जा। २९. एवं सुहुमसंपराए वि। ३०. अहक्खायसंजए० पुच्छा। गोयमा ! नो पुलाए होज्जा, जाव नो कसायकुसीले होज्जा, नियंठे वा होज्जा, सिणाए वा होज्जा। दारं ५ ।[सु. ३१-३४. छट्ठं पडिसेवणादारं-पंचविहसंजएसु मूलुत्तरगुणपडिसेवण-अपडिसेवणपरूवणं] ३१. (१) सामाइयसंजए णं भंते ! किं पडिसेवए होज्जा, अपडिसेवए होज्जा ? गोयमा ! पडिसेवए वा होज्जा, अपडिसेवए वा होज्जा। (२) जइ पडिसेवए होज्जा किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा० ? सेसं जहा पुलागस्स (उ०

Jain Education International 2010_03

For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६ सु० ३५ २)। ३२. जहा सामाइयसंजए एवं छेदोवट्ठावणिए वि। ३३. परिहारविसुद्धियसंजए० पुच्छा। गोयमा! नो पडिसेवए होज्जा, अपडिसेवए होज्जा। ३४. एवं जाव अहक्खायसंजए। दारं ६ । [सु. ३५-४२. सत्तमं नाणदारं-पंचविहसंजएसु नाण-सुयज्झयणपरूवणं]३५. सामाइयसंजए णं भंते! कतिसु नाणेसु होज्जा? गोयमा! दोसु वा, तिसु वा, चतुसु वा नाणेसु होज्जा। एवं जहा कसायकुसीलस्स (उ० ६ सु० ४४) तहेव जत्तारि नाणाइं भयणाए। ३६. एवं जाव सुहुमसंपराए। ३७. अहक्खायसंजतस्स पंच नाणाइं भयणाए जहा नाणुद्देसए (स० ८ उ० २ सु० १०६)। ३८. सामाइयसंजते णं भंते! केवतियं सुयं अहिज्जेज्जा? गोयमा! जहन्नेणं अट्ठ पवयणमायाओ जहा कसायकुसीले (उ० ६ सु० ५०)। ३९. एवं छेदोवट्ठावणिए वि। ४०. परिहारविसुद्धियसंजए० पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं नवमस्स पुव्वस्स तइयं आयारवत्थुं, उक्कोसेणं असंपुण्णाइं दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा। ४१. सुहुमसंपरायसंजए जहा सामाइयसंजए। ४२. अहक्खायसंजए० पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जेज्जा, सुतवतिरित्ते वा होज्जा। दारं ७ । [सु. ४३-४५. अट्ठमं तित्थदारं-पंचविहसंजएसु तित्थ-अतित्थपरूवणं] ४३. सामाइयसंजए णं भंते! किं तित्थे होज्जा, अतित्थे होज्जा? गोयमा! तित्थे वा होज्जा, अतित्थे वा होज्जा जहा कसायकुसीले (उ० ६ सु० ५५)। ४४. छेदोवट्ठावणिए परिहारविसुद्धिए य जहा पुलाए (उ० ६ सु० ५३)। ४५. सेसा जहा सामाइयसंजए। दारं ८ ।[सु. ४६-४९. नवमं लिंगदारं-पंचविहसंजएसु सलिंग-अन्नलिंग-गिहिलिंगपरूवणं] ४६. सामाइयसंजए णं भंते! किं सलिंगे होज्जा, अन्नलिंगे होज्जा, गिहिलिंगे होज्जा? जहा पुलाए (उ० ६ सु० ५८)। ४७. एवं छेदोवट्ठावणिए वि। ४८. परिहारविसुद्धियसंजए णं भंते! किं० पुच्छा। गोयमा! दव्वलिंगं पि भावलिंगं पि पडुच्च सलिंगे होज्जा, नो अन्नलिंगे होज्जा, नो गिहिलिंगे होज्जा। ४९. सेसा जहा सामाइयसंजए। दारं ९ । [सु. ५०-५२. दसमं सरीरदारं-पंचविहसंजएसु सरीरभेयपरूवणं]५०. सामाइयसंजए णं भंते! कतिसु सरीरेसु होज्जा? गोयमा! तिसु वा चतुसु वा पंचसु वा जहा कसायकुसीले (उ० ६ सु० ६३)। ५१. एवं छेदोवट्ठावणिए वि। ५२. सेसा जहा पुलाए (उ० ६ सु० ६०)। दारं १० ।[सु. ५३-५६. एक्कारसमं खेत्तदारं-पंचविहसंजएसु कम्मअकम्मभूमिपरूवणं] ५३. सामाइयसंजए णं भंते! किं कम्मभूमीए होज्जा, अकम्मभूमीए होज्जा? गोयमा! जम्मणं संतिभावं च पडुच्च जहा बउसे (उ० ६ सु० ६६)। ५४. एवं छेदोवट्ठावणिए वि। ५५. परिहारविसुद्धिए य जहा पुलाए (उ० ६ सु० ६५)। ५६. सेसा जहा सामाइयसंजए। दारं ११ ।[सु. ५७-६१. बारसमं कालदारं-पंचविहसंजएसु ओसप्पिणिउस्सप्पिणिकालाइपरूवणं]५७. सामाइयसंजए णं भंते! किं ओसप्पिणिकाले होज्जा, उस्सप्पिणिकाले होज्जा, नोओसप्पिणिनोउस्सप्पिणिकाले होज्जा? गोयमा! ओसप्पिणिकाले जहा बउसे (उ०६ सु० ६९)। ५८. एवं छेदोवट्ठावणिए वि, नवरं जम्मण-संतिभावं पडुच्च चउसु वि पलिभागेसु नत्थि, साहरणं पडुच्च अन्नयरे पलिभागे होज्जा। सेसं तं चेव। ५९. (१) परिहारविसुद्धिए० पुच्छा। गोयमा! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नो ओसप्पिणिनोउस्सप्पिणिकाले नो होज्जा। (२) जदि ओसप्पिणिकाले होज्जा जहा पुलाओ (उ० ६ सु० ६८ २)। (३) उस्सप्पिणिकाले वि जहा पुलाओ (उ० ६ सु० ६८ ३)। ६०. सुहुमसंपराओ जहा नियंठो (उ० ६ सु० ७२)। ६१. एवं अहक्खाओ वि दारं १२) [सु. ६२-७४. तेरसमं गतिदारं-पंचविहसंजएसु गतिपरूवणाइ] ६२. (१) सामाइयसंजए णं भंते! कालगते समाणे कं गतिं गच्छति? गोयमा! देवगतिं गच्छति। (२) देवगतिं गच्छमाणे किं भवणवासीसु उववज्जेज्जा जाव वेमाणिएसु उववज्जेज्जा? गोयमा! नो भवणवासीसु उववज्जेज्जा जहा कसायकुसीले (उ० ६ सु० ७६)। ६३. एवं छेदोवट्ठावणिए वि। ६४. परिहारविसुद्धिए जहा पुलाए (उ०६ सु० ७३)। ६५. सुहुमसंपराए जहा नियंठे (उ० ६ सु० ७७)। ६६. अहक्खाते० पुच्छा। गोयमा! एवं अहक्खायसंजए वि जाव अजहन्नमणुक्कोसेणं अणुततरविमाणेसु उववज्जेज्जा, अत्थेगइए सिज्झति जाव अंतं करेति। ६७. सामाइयसंजए णं भंते! देवलोगेसु उववज्जमाणे किं इंदत्ताए उववज्जति० पुच्छा। गोयमा! अविराहणं पडुच्च एवं जहा कसायकुसीले (उ० ६ सु० ८२)। ६८. एवं छेदोवट्ठावणिए वि। ६९. परिहारविसुद्धिए जहा पुलाए (उ० ६ सु० ७९)। ७०. सेसा जहा नियंठे (उ० ६ सु० ८३)। ७१. सामाइयसंजयस्स णं भंते! देवलोगेसु उववज्जमाणस्स केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं दो पलियोवमाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। ७२. एवं

For Private & Personal Use Only

छेदोवट्ठावणिए वि। ७३. परिहारविसुद्धियस्स पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं। ७४. सेसाणं जहा नियंठस्स (उ० ६ सु० ८८)। दारं १३ । [सु. ७५-७९. चोद्दसमं संजमदारं-पंचविहसंजएसु अप्पाबहुयसहियं संजमट्ठाणपरूवणं] ७५. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवतिया संजमठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा संजमठाणा पन्नत्ता। ७६. एवं जाव परिहारविसुद्धियस्स। ७७. सुहुमसंपरायसंजयस्स० पुच्छा। गोयमा ! असंखेज्जा अंतोमुहुत्तिया संजमठाणा पन्नत्ता। ७८. अहक्खायसंजयस्स० पुच्छा। गोयमा ! एगे अजहन्नमणुक्कोसए संजमठाणे। ७९. एएसि णं भंते ! सामाइय-छेदोवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराय-अहक्खायसंजयाणं संजमठाणाणं कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थावे अहक्खायसंजयस्स एगे अजहन्नमणुक्कोसए संजमट्ठाणे, सुहुमसंपरागसंजयस्स अंतोमुहुत्तिया संजमठाणा असंखेज्जगुणा, परिहारविसुद्धिय-संजयस्स संजमठाणा असंखेज्जगुणा, सामाइयसंजयस्स छेदावट्ठावणिसंजयस्स य एएसि णं संजमठाणा दोण्ह वि तुल्ला असंखेज्जगुणा। दारं १४ ।[सु. ८०-९३. पणरसमं निकासदारं-पंचविहसंजएसु चरित्तपज्जवपरूवणाइ सु. ८०-८१. पंचविहसंजएसु अणंतचरित्तपज्जवपरूवणं] ८०. सामाइयसंजतस्स णं भंते ! केवतिया चरित्तपज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता चरित्तपज्जवा पन्नत्ता। ८१. एवं जाव अहक्खायसंजयस्स। [सु. ८२-९२. पंचविहसंजएसु सट्ठाण-परट्ठाणचरित्तपज्जवेहिं हीण-तुल्ल-अब्भहियपरूवणं] ८२. सामाइयसंजए णं भंते ! सामाइयसंजयस्स सट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे, तुल्ले, अब्भहिए ? गोयमा ! सिय हीणे०, छट्ठाणवडिए। ८३. सामाइयसंजए णं भंते ! छेदोवट्ठावणियसंजयस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं० पुच्छा। गोयमा ! सिय हीणे०, छट्ठाणवडिए। ८४. एवं परिहारविसुद्धियस्स वि। ८५. सामाइयसंजए णं भंते ! सुहुमसंपरायसंजयस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवे० पुच्छा। गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए; अणंतगुणहीणे। ८६. एवं अहक्खायसंजयस्स वि। ८७. एवं छेदोवट्ठावणिए वि। हेट्ठिल्लेसु तिसु वि समं छट्ठाणपडिए, उवरिल्लेसु दोसु तहेव हीणे। ८८. जहा छेदोवट्ठावणिए तहा परिहारविसुद्धिए वि। ८९. सुहुमसंपरागसंजए णं भंते ! सामाइयसंजयस्स परट्ठाण० पुच्छा। गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए-अणंतगुणमब्भहिए। ९०. एवं छेदोवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिएसु वि समं सट्ठाणे सिय हीणे, नो तुल्ले, सिय अब्भहिए। जदि हीणे अणंतगुणहीणे। अह अब्भहिए अणंतगुणमब्भहिए। ९१. सुहुमसंपरायसंजयस्स अहक्खायसंजयस्स य परट्ठाण० पुच्छा। गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए; अणंतगुणहीणे। ९२. अहक्खाते हेट्ठिल्लाणं चउण्ह वि नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए-अणंतगुणमब्भहिए। सट्ठाणे नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए। ९३. एएसि णं भंते ! सामाइय-छेदोवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराय-अहक्खायसंजयाणं जहन्नुक्कोसगाणं चरित्तपज्जवाणं कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सामाइयसंजयस्स छेदोवट्ठावणियसंजयस्स य एएसि णं जहन्नगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला सव्वत्थोवा, परिहारविसुद्धियसंजयस्स जहन्नगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, तस्स चेव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा। सामाइयसंजयस्स छओवट्ठावणियसंजयस्स य, एएसि णं उक्कोसगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणंतगुणा। सुहुमसंपरायसंजयस्स जहन्नगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, तस्स चेव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा। अहक्खायसंजयस्स अजहन्नमणुक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा। दारं १५ । [सु. ९४-९६. सोलसमं जोगदारं-पंचविहसंजएसु जोगपरूवणं] ९४. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सजोगी होज्जा, अजोगी होज्जा ? गोयमा ! सजोगी जहा पुलाए (उ० ६ सु० ११७)। ९५. एवं जाव सुहुमसंपरायसंजए। ९६. अहक्खाए जहा सिणाए। (उ० ६ सु० १२०) दारं १६ । [सु. ९७-९८. सत्तरसमं उवओगदारं-पंचविहसंजएसु उवओगपरूवणं] ९७. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा, अणागारोवउत्ते होज्ज ? गोयमा ! सागारोवउत्ते जहा पुलाए (उ० ६ सु० १२२)। ९८. एवं जाव अहक्खाए, नवरं सुहुमसंपराए सागारोवउत्ते होज्जा, नो अणागारोवउत्ते होज्जा। दारं १७ । [सु. ९९-१०४. अट्ठारसमं कसायदारं-पंचविहसंजएसु कसायपरूवणं]९९. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सकसायी होज्जा, अकसायी होज्जा ? गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा, जहा कसायकुसीले (उ० ६ सु० १२९)। १००. एवं छेदोवट्ठावणिये वि। १०१. परिहारविसुद्धिए जहा पुलाए (उ० ६ सु० १२४)। १०२. सुहुमसंपरागसंजए० पुच्छा।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा। १०३. जदि सकसायी होज्जा, से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ? गोयमा ! एगंसि संजलणे लोभे होज्जा। १०४. अहक्खायसंजए जहा नियंठे (उ० ६ सु० १३०)। दारं १८ । [सु. १०५-९. एगूणवीसइमं लेसादारं-पंचविहसंजएसु लेसापरूवणं] १०५. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सलेस्से होज्जा, अलेस्से होज्जा ? गोयमा ! सलेस्से होज्जा, जहा कसायकुसीले (उ० ६ सु० १३७)। १०६. एवं छेदोवट्ठावणिए वि। १०७. परिहारविसुद्धिए जहा पुलाए (उ०६ सु० १३३)। १०८. सुहुमसंपराए जहा नियंठे (उ० ६ सु० १३९)। १०९. अहक्खाए जहा सिणाए (उ० ६ सु० १४१), नवरं जइ सलेस्से होज्जा एगाए सुक्कलेसाए होज्जा। दारं १९ । [सु. ११०-१७, वीसइमं परिणामदारं-पंचविहसंजएसु वड्ढमाणाइपरिणामपरूवणं] ११०. सामाइयसंजए णं भंते ! किं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा, हायमाणपरिणामे, अवट्ठियपरिणामे ? गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे, जहा पुलाए (उ० ६ सु० १४३)। १११. एवं जाव परिहारविसुद्धिए। ११२. सुहुमसंपराय० पुच्छा। गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे वा होज्जा, हायमाणपरिणामे वा होज्जा, नो अवट्ठियपरिणामे होज्जा। ११३. अहक्खाते जहा नियंठे (उ० ६ सु० १४५)। ११४. सामाइयसंजए णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, जहा पुलाए (उ० ६ सु० १४७)। ११५. एवं जाव परिहारविसुद्धिए। ११६. (१) सुहुमसंपरागसंजए णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। (२) केवतियं कालं हायमाणपरिणामे ? एवं चेव। ११७. (१) अहक्खातसंजए णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं। (२) केवतियं कालं अवट्ठियपरिणामे होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। दारं २० । [सु. ११८-२१. इगवीसइमं बंधदारं-पंचविहसंजएसु कम्मपगडिबंधपरूवणं] ११८. सामाइयसंजए णं भंते ! कति कम्मपगडिओ बंधइ ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा, एवं बउसे (उ० ६ सु० १५२)। ११९. एवं जाव परिहारविसुद्धिए। १२०. सुहुमसंपरागसंजए० पुच्छा। गोयमा ! आउय-मोहणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ बंधइ। १२१. अहक्खायसंजए जहा सिणाए (उ० ६ सु० १५६)। दारं २१ ।[सु. १२२-२४. बावीसइमं वेददारं-पंचविहसंजएसु कम्मपगडिवेदपरूवणं]१२२. सामाइयसंजए णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ? गोयमा ! नियमं अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदेति। १२३. एवं जाव सुहुमसंपरागे। १२४. अहक्खाए० पुच्छा। गोयमा ! सत्तविहवेदए वा, चउव्विहवेदए वा। सत्त वेदेमाणे मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वेदेति। चत्तारि वेदेमाणे वेदणिज्जाऽऽउय-नाम-गोयाओ चत्तारि कम्मप्पगडीओ वेदेति। दारं २२ । [सु. १२५-२८. तेवीसइमं कम्मोदीरणदारं-पंचविहसंजएसु कम्मोदीरणपरूवणं]१२५. सामाइयसंजए णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ उदीरेति ? गोयमा ! सत्तविह० जहा बउसो (उ० ६ सु० १६२)। १२६. एवं जाव परिहारविसुद्धिए। १२७. सुहुमसंपराए० पुच्छा। गोयमा ! छव्विहउदीरए वा, पंचविहउदीरए वा। छ उदीरेमाणे आउय-वेदणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ। पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पंच कम्मप्पगडीओ उदीरेति। १२८. अहक्खातसंजए० पुच्छा। गोयमा ! पंचविहउदीरए वा, दुविहउदीरए वा, अणुदीरए वा। पंच उदीरेमाणे आउय-वेदणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पंच उदीरेति। सेसं जहा नियंठस्स (उ० ६ सु० १६५)। दारं २३ ।[सु. १२९-३३. चउवीसइमं उवसंपजहणदारं-पंचविहसंजएसु सट्ठाण-चागाणंतरं परट्ठाणसंपत्तिपरूवणं] १२९. सामाइयससंजए णं भंते ! सामाइयसंजयत्तं जहमाणे किं जहति ?, कि उवसंपज्जइ ? गोयमा ! सामाइयसंजयत्तं जहति; छेदोवट्ठावणियसंजयं वा सुहुमसंपरायसंजयं वा असंजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपज्जति। १३०. छेदोवट्ठावणिए० पुच्छा। गोयमा ! छेदोवट्ठावणियसंजयत्तं जहति; सामाइयसंजयं वा परिहारविसुद्धियसंजयं वा सुहुमसंपरागसंजयं वा असंजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपज्जति। १३१. परिहारविसुद्धिए० पुच्छा। गोयमा ! परिहारविसुद्धियसंजयत्तं जहति; छेदोवट्ठावणियसंजयं वा असंजमं वा उपसंपज्जइ। १३२. सुहुमसंपराए० पुच्छा। गोयमा ! सुहुमसंपरागसंजयत्तं जहति; सामाइयसंजयं वा छेदोवट्ठाणियसंजयं वा अहक्खायसंजयं वा असंजमं वा उवसंपज्जइ। १३३. अहक्खायसंजए० पुच्छा। गोयमा ! अहक्खायसंजयत्तं जहति; सुहुमसंपरागसंजयं वा अस्संजमं वा सिद्धिगतिं वा उवसंपज्जति। दारं २४ ।[सु. १३४-३६. पंचवीसइमं सन्नादारं-पंचविहसंजएसु सन्नापरूवणं] १३४. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सण्णोवउत्ते होज्जा, नोसण्णोवउत्ते होज्जा ?

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! सण्णोवउत्ते जहा बउसो (उ० ६ सु० १७४)। १३५. एवं जाव परिहारविसुद्धिए। १३६. सुहुमसंपराए अहक्खाए य जहा पुलाए (उ० ६ सु० १७३)। दारं २५ । [सु. १३७-३९. छव्वीसइमं आहारदारं-पंचविहसंजएसु आहारगत्त-अणाहारगत्तपरूवणं] १३७. सामाइयसंजए णं भंते ! किं आहारए होज्जा, अणाहारए होज्जा ? जहा पुलाए (उ० ६ सु० १७८)। १३८. एवं जाव सुहुमसंपराए। १३९. अहक्खाए जहा सिणाए (उ० ६ सु० १८०)। दारं २६ । [सु. १४०-४३. सत्तावीसइमं भवदारं-पंचविहसंजएसु भवग्गहणपरूवणं]१४०. सामाइयसंजए णं भंते ! कति भवग्गहणाइं होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं, उक्कोसेणं अट्ठ। १४१. एवं छेदोवट्ठावणिए वि। १४२. परिहारविसुद्धिए० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं, उक्कोसेणं तिन्नि। १४३. एवं जाव अहक्खाते। दारं २७ । [सु. १४४-५३. अट्ठावीसइमं आगरिसदारं-पंचविहसंजएसु एगभवग्गहणिय-नाणाभवग्गहणियआगरिसपरूवणं] १४४. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! एगभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं० जहा बउसस्स (उ०६ सु० १८८)। १४५. छेदोवट्ठावणियस्स० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं एक्को, उक्कोसेणं वीसपुहत्तं। १४६. परिहारविसुद्धियस्स० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं एक्को, उक्कोसेणं तिन्नि। १४७. सुहुमसंपरायस्स० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं एक्को, उक्कोसेणं चत्तारि। १४८. अहक्खायस्स० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं एक्को, उक्कोसेणं दोन्नि। १४९. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! नाणाभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहा बउसे (उ० ६ सु० १९३)। १५०. छेदोवट्ठावणियस्स० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं दोन्नि, उक्कोसेणं उवरिं नवण्हं सयाणं अंतोसहस्सस्स। १५१. परिहारविसुद्धियस्स जहन्नेणं दोन्नि, उक्कोसेणं सत्त। १५२. सुहुमसंपरागस्स जहन्नेणं दोन्नि, उक्कोसेणं नव। १५३. अहक्खायस्स जहन्नेणं दोन्नि, उक्कोसेणं पंच। दारं २८ । [सु. १५४-६३. एगूणतीसइमं कालदारं-पंचविहसंजएसु एगत्त-पुहत्तेणं ठिइकालपरूवणं] १५४. सामाइयसंजए णं भंते ! कालतो केवचिरं होति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणएहिं नवहिं वासेहिं ऊणिया पुव्वकोडी। १५५. एवं छेदोवट्ठावणिए वि। १५६. परिहारविसुद्धिए जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणएहिं एक्कूणतीसाए वासेहिं ऊणिया पुव्वकोडी। १५७. सुहुमसंपराए जहा नियंठे (उ० ६ सु० २००)। १५८. अहक्खाए जहा सामाइयसंजए। १५९. सामाइयसंजया णं भंते ! कालतो केवचिरं होंति ? गोयमा ! सव्वद्धं। १६०. छेदोवट्ठावणिएसु पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं अड्ढाइज्जाइं वाससयाइं, उक्कोसेणं पन्नासं सागरोवमकोडिसयसहस्साइं। १६१. परिहारविसुद्धिए पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं देसूणाइं दो वाससयाइं, उक्कोसेणं देसूणाओ दो पुव्वकोडीओ। १६२. सुहुमसंपरागसंजया० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। १६३. अहक्खायसंजया जहा सामाइयसंजया। दारं २९ । [सु. १६४-७०. तीसइमं अंतदारं-पंचविहसंजएसु एगत्त-पुहत्तेणं कालंतरपरूवणं] १६४. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं० जहा पुलागस्स (उ० ६ सु० २०७)। १६५. एवं जाव अहक्खायसंजयस्स। १६६. सामाइयसंजयाणं भंते !० पुच्छा। गोयमा ! नत्थंतरं। १६७. छेदोवट्ठावणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं तेवट्ठिं वाससहस्साइं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीओ। १६८. परिहारविसुद्धियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं चउरासीतिं वाससहस्साइं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीओ। १६९. सुहुमसंपरागाणं जहा नियंठाणं (उ० ६ सु० २१३)। १७०. अहक्खायाणं जहा सामाइयसंजयाणं। दारं ३० । [सु. १७१-७५. इगतीसइमं समुग्घायदारं-पंचविहसंजएसु समुग्घायपरूवणं] १७१. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! कति समुग्घाया पन्नत्ता ? गोयमा ! छ समुग्घाया पन्नत्ता, जहा कसायकुसीलस्स (उ०६ सु० २१८)। १७२. एवं छेदोवट्ठावणियस्स वि। १७३. परिहारविसुद्धियस्स जहा पुलागस्स (उ० ६ सु० २१५)। १७४. सुहुमसंपरायस्स जहा नियंठस्स (उ० ६ सु० २१९)। १७५. अहक्खातस्स जहा सिणायस्स (उ० ६ सु. २२०)। दारं ३१ । [सु. १७६-७८. बत्तीसइमं खेत्तदारं-पंचविहसंजएसु ओगाहणाखेत्तपरूवणं] १७६. सामाइयसंजए णं भंते ! लोगस्स किं संखेज्जतिभागे होज्जा, असंखेज्जइभागे० पुच्छा। गोयमा ! नो संखेज्जति० जहा पुलाए (उ० ६ सु० २२१)। १७७. एवं जाव सुहुमसंपराए। १७८. अहक्खायसंजते जहा सिणाए (उ० ६ सु० २२३)। दारं ३२ । [सु. १७९. तेत्तीसइमं फुसणादारं-पंचविहसंजएसु खेत्तफुसणापरूवणं]१७९. सामाइयसंजए णं भंते ! लोगस्स किं संखेज्जतिभागं फुसति ? जहेव होज्जा तहेव फुसति वि। दारं ३३ ।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[सु. १८०-८२. चोत्तीसइमं भावदारं-पंचविहसंजएसु ओवसमियाइभावपरूवणं] १८०. सामाइयसंजए णं भंते! कयरम्मि भावे होज्जा? गोयमा! खओवसमिए भावे होज्जा। १८१. एवं जाव सुहुमसंपराए। १८२. अहक्खायसंजए० पुच्छा। गोयमा! ओवसमिए वा खइए वा भावे होज्जा। दारं ३४। [सु. १८३-८७. पंचतीसइमं परिमाणदारं-पंचविहसंजएसु एगसमयपरिमाणपरूवणं] १८३. सामाइयसंजया णं भंते! एगसमएणं केवतिया होज्जा? गोयमा! पडिवज्जमाणए पडुच्च जहा कसायकुसीला (उ०६ सु० २३२) तहेव निरवसेसं। १८४. छेदोवट्ठावणिया० पुच्छा। गोयमा! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं सयपुहत्तं। पुव्वपडिवन्नए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जदि अत्थि जहन्नेणं कोडिसयपुहत्तं, उक्कोसेणं वि कोडिसयपुहत्तं। १८५. परिहारविसुद्धिया जहा पुलागा (उ० ६ सु० २२९)। १८६. सुहुमसंपरागा जहा नियंठा (उ० ६ सु० २३३)। १८७. अहक्खायसंजता णं० पुच्छा। गोयमा! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जदि अत्थि, जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं बावट्ठं सयं-अट्ठत्तरसयं खवगाणं, चउप्पन्नं उवसामगाणं। पुव्वपडिवन्नए पडुच्च जहन्नेणं कोडिपुहत्तं, उक्कोसेणं वि कोडिपुहत्तं। दारं ३५। [सु. १८८. छत्तीसइमं अप्पाबहुयदारं-पंचविहसंजएसु अप्पाबहुयपरूवणं] १८८. एएसि णं भंते! सामाइय-छेओवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराय-अहक्खायसंजयाणं कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमसंपरायसंजया, परिहारविसुद्धियसंजया संखेज्जगुणा, अहक्खायसंजया संखेज्जगुणा, छेओवट्ठावणियसंजया संखेज्जगुणा, सामाइयसंजया संखेज्जगुणा। दारं ३६। [सु. १८९. पडिसेवणा-ओलोयणादोसआईणि छ दाराइं] १८९. पडिसेवण १ दोसालोयणा य २ आलोयणारिहे ३ चेव। तत्तो सामायारी ४ पायच्छिते ५ तवे ६ चेव॥ ६॥ [सु. १९०. पढमं पडिसेवणादारं-पडिसेवणाए दस भेया] १९०. दसविहा पडिसेवणा पन्नत्ता, तं जहा- दप्प १ प्पमाद-ऽणाभोगे २-३ आउरे ४ आवती ५ ति य। संकिण्णे ६ सहसक्कारे ७ भय ८ प्पदोसा ९ य वीमंसा १०॥ ७॥ दारं १। [सु. १९१. बिइयं आलोयणदोसदारं-आलोयणाए दस दोसा] १९१. दस आलोयणादोसा पन्नत्ता, तं जहा- आकंपइत्ता १ अणुमाणइत्ता २ जं दिट्ठं ३ बायरं व ४ सुहुमं वा ५। छन्नं ६ सद्दाउलयं ७ बहुजण ८ अव्वत्त ९ तस्सेवी १०॥ ८॥ दारं २ [सु. १९२-९३. तइयं आलोयणारिहदारं-आलोयणारिहस्स आलोयणायरियस्स य सरूवपरूवणं] १९२. दसहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति अत्तदोसं आलोएत्तए, तं जहा-जातिसंपन्ने १ कुलसंपन्ने २ विणयसंपन्ने ३ णाणसंपन्ने ४ दंसणसंपन्ने ५ चरित्तसंपन्ने ६ खंते ७ दंते ८ अमायी ९ अपच्छाणुतावी १०। १९३. अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति आलोयणं पडिच्छित्तए, तं जहा-आयारवं १ आहारवं २ ववहारवं ३ उव्वीलए ४ पकुव्वए ५ अपरिस्सावी ६ निज्जवए ७ अवायदंसी ८। दारं ३। [सु. १९४. चउत्थं सामायारीदारं-सामायारीए दस भेया] १९४. दसविहा सामायारी पन्नत्ता, तं जहा- इच्छा १ मिच्छा २ तहक्कारो ३ आवस्सिया य ४ निसीहिया ५। आउच्छणा य ६ पडिपुच्छा ७ छंदणा य ८ निमंतणा ९। उपसंपया य काले १०, सामायारी भवे दसहा॥ ९॥ दारं ४। [सु. १९५. पंचमं पायच्छित्तदारं-पायच्छित्तस्स दस भेया] १९५. दसविहे पायच्छित्ते पन्नत्ते, तं जहा-आलोयणारिहे १ पडिक्कमणारिहे २ तदुभयारिहे ३ विवेगारिहे ४ विउसग्गारिहे ५ तवारिहे ६ छेदारिहे ७ मूलारिहे ८ अणवट्ठप्पारिहे ९ पारंचियारिहे १०। दारं ५। [सु. १९६-२५५. छट्ठं तवदारं-तवस्स भेयदूयं तप्पभेया य] १९६. दुविहे तवे पन्नत्ते, तं जहा-बाहिरए य, अब्भिंतरए य। १९७. से किं तं बाहिरए तवे? बाहिरए तवे छव्विघे पन्नत्ते, तं जहा-अणसणमोमोयरिया १-२ भिक्खायरिया ३ य रसपरिच्चाओ ४। कायकिलेसो ५ पडिसंलीणया ६।[सु. १९८-२१६. छव्विहबाहियतवस्स परूवणं सु. १९८-२०२. अणसणबाहिरयतवभेय-पभेयपरूवणं] १९८. से किं तं इत्तरिए? इत्तरिए अणेगविधे पन्नत्ते, तं जहा-इत्तरिए य आवकहिए य। १९९. से किं तं इत्तरिए? इत्तरिए अणेगविधे पन्नत्ते, तं जहा-चउत्थे भत्ते, छट्ठे भत्ते, अट्ठमे भत्ते, दसमे भत्ते, दुवालसमे भत्ते, चोद्दसमे भत्ते, अद्धमासिए भत्ते, मासिए भत्ते दोमासिए भत्ते। जाव छम्मसिए भत्ते। से तं इत्तरिए। २००. से किं तं आवकहिए? आवकहिए दुविहे पन्नत्ते तं जहा-पाओवगमणे य भत्तपच्चक्खाणे य। २०१. से किं तं पाओवगमणे? दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-नीहारिमे य, अनीहारिमे य, नियमं अपडिकम्मे। से त्तं पाओवगमणे। २०२. से किं तं भत्तपच्चक्खाणे? भत्तपच्चक्खाणे दुविधे पन्नत्ते, तं जहा- नीहारिमे य, अनीहारिमे य, नियमं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सपडिकम्मे। से त्तं भत्तपच्चक्खाणे। से त्तं आवकहिए। से त्तं अणसणे। [सु. २०३-७. ओमोयरियबाहिरयतवभेय-पभेयपरूवणं] २०३. से किं तं ओमोदरिया ? ओमोदरिया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-दव्वोमोदरिया य। २०४. से किं तं दव्वोमोदरिया ? दव्वोमोदरिया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-उवगरणदव्वोमोदरिया य, भत्त-पाणदव्वोमोयरिया य। २०५. से किं तं उवगरणददव्वोमोदरिया ? उवगरणदव्वोमोरिया-एगे वत्थे एगे पादे चियत्तोवगरणसातिज्जणया। से त्तं उवगरणदव्वोमोरिया। २०६. से किं तं भत्त-पाणदव्वोमोदरिया ? भत्त-पाणदव्वोमोदरिया अट्ठकुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणस्स अप्पाहारे, दुवालस० जहा सत्तमसए पढमुद्देसए (स० ७ उ० १ सु० १९) जाव नो पकामरसभोती ति वत्तव्वं सिया। से त्तं भत्त-पाणदव्वोमोदरिया। से त्तं दव्वोमोदरिया। २०७. से किं तं भावोमोदरिया ? भावोमोदरिया अणेगविहा पन्नत्ता, तं जहा-अप्पकोहे, जाव अप्पलोभे, अप्पसद्दे, अप्पझंझे, अप्पतुमंतुमे, से त्तं भावोमोदरिया। से त्तं ओमोयरिया। [सु. २०८-१०. भिक्खायरिया-रसपरिच्चाय-कायकिलेसबाहिरयतवपरूवणं]२०८. से किं तं भिक्खायरिया ? भिक्खायरिया अणेगविहा पन्नत्ता, तं जहा-दव्वभिग्गहचरए, खेत्ताभिग्गहचरए, जहा उववातिए जाव सुद्धेसणिए, संखादत्तिए। से त्तं भिक्खायरिया। २०९. से किं तं रसपरिच्चाए ? अणेगविधे पन्नत्ते, तं जहा-निव्वितिए, पणीतरसविवज्जए जहा उववाइए जाव लूहाहारे। से त्तं रसपरिच्चाए। २१०. से किं तं कायकिलेसे ? कायकिलेसे अणेगविधे पन्नत्ते, तं जहा-ठाणादीए, उक्कुडुयासणिए, जहा उववातिए जाव सव्वगायपडिकम्मविप्पमुक्के। से त्तं कायकिलेसे। [सु. २११-१६. पडिसंलीणयाबाहिरयतवस्स भेया, तस्सरूवपरूवणं च] २११. से किं तं पडिसंलीणया ? पडिसंलीणया चउव्विहा पन्नत्ता, तं जहा-इंदियपडिसंलीणया कसायपडिसंलीणया जोगपडिसंलीणया विवित्तसयणासणसेवणया। २१२. से किं तं इंदियपडिसंलीणया ? इंदियपडिसंलीणया पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा-सोइंदियविसयपयारणिरोहो वा, सोतिंदियविसयप्पत्तेसु वा अत्थेसु राग-द्दोसविणिग्गहो; चक्खिंदियविससय०, एवं जाव फासिंदियविसयपयारणिरोहो वा, फासिंदियविसयप्पत्तेसु वा अत्थेसु राग-द्दोसविणिग्गहो। से त्तं इंदियपडिसंलीणया। २१३. से किं तं कसायपडिसंलीणया ? कसायपडिसंलीणया चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा-कोहोदयनिरोहो वा, उदयप्पत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरणं; एवं जाव लोभोदयनिरोहो वा उदयपत्तस्स वा, लोभस्स विफलीकरणं। से त्तं कसायपडिसंलीरया। २१४. से किं तं जोगपडिसंलीणया ? जोगपडिसंलीणया तिविहा पन्नत्ता, तं जहा-अकुसलमणनिरोहो वा, कुसलमणउदीरणं वा, मणस्स वा एगत्तीभावकरणं; अकुसलवइनिरोहो वा, कुसलवइउदीरणं वा, वईए वा एगत्तीभावकरणं। २१५. से किं तं कायपडिसंलीणया ? कायपडिसंलीणया जं णं सुसमाहियपसंतसाहरियपाणि-पाए कुम्मो इव गुत्तिंदिए अल्लीणे पल्लीणे चिट्ठइ। से त्तं कायपडिसंलीणया। से त्तं जोगपडिसंलीणया। २१६. से किं तं विवित्तसयणासणसेवणता ? विवित्तसयणासणसेवणया जं णं आरामेसु वा उज्जाणेसु वा जहा सोमिलुद्देसए (स० १८ उ० १० सु० २३) जाव सेज्जासंथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरति। से त्तं विवित्तसयणासणसेवणया। से त्तं पडिसंलीणया। से त्तं बाहिरए तवे। [सु. २१७-५५. छव्विहअब्भिंतरतवस्स परूवणं]२१७. से किं तं अब्भिंतरए तवे ? अब्भिंतरए तवे छव्विहे पन्नत्ते, तं जहा-पायच्छित्तं १ विणओ २ वेयावच्चं ३ सज्झायो ४, झाणं ५, विओसग्गो ६।

[सु. २१८. पायच्छित्तअब्भिंतरतवस्स दस भेया]२१८. से किं तं पायच्छित्ते ? पायच्छित्ते दसविधे पन्नत्ते, तं जहा- आलोयणारिहे जाव पारंचियारिहे। से त्तं पायच्छित्ते। [सु. २१९-३४. विणयअब्भिंतरतवभेय-पभेयपरूवणं]२१९. से किं तं विणए ? विणए सत्तविधे पन्नत्ते, तं जहा-नाण-विणए १ दंसणविणए २ चरित्तविणए ३ मणविणए ४ वइविणए ५ कायविणए ६ लोगोवयारविणए ७। २२०. से किं तं नाणविणए ? नाणविणए पंचविधे पन्नत्ते, तं जहा-आभिनिबोहियनाणविणए जाव केवलनाणविणए। से त्तं नाणविणए। २२१. से किं तं दंसणविणए ? दंसणविणए दुविधे पन्नत्ते, तं जहा-सुस्सूसणाविणए य अणच्चसायणाविणए य। २२२. से किं तं सुस्सूसणाविणए ? सुस्सूसणाविणए अणेगविधे पन्नत्ते, तं जहा-सक्कारेति वा सम्माणेति वा जहा चोद्दसमसए ततिए उद्देसए (स० १४ उ० ३ सु० ४) जाव पडिसंसाहणया। से त्तं सुस्सूसणाविणए। २२३. से किं तं अणच्चासादणाविणए ? अणच्चासादणाविणए पणयाली-सतिविधे पन्नत्ते, तं जहा-अरहंताणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणच्चासादणया, अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अणच्चासायणया २ आयरियाणं अणच्चासादणया ३ उवज्झायाणं अणच्चासायणया ४ थेराणं अणच्चासायणया ५ कुलस्स अणच्चासायणसा ६ गणस्स अणच्चासायणया ७ संघस्स अणच्चासादणया ८ किरियाए अणच्चासायणया ९ संभोगस्स अणच्चासायणया १० आभिणिबोहियनाणस्स अणच्चासायणया ११ जाव केवलनाणस्स अणच्चासायणया १२-१३-१४-१५, एएसिं चेव भत्तिबहुमाणे णं १५, एएसिं चेव वण्णसंजलणया १५,=४५। से त्तं अणच्चासायणाविणए। से त्तं दंसणविणए। २२४. से किं तं चरित्तविणए ? चरित्तविणए पंचविधे पन्नत्ते, तं जहा-सामाइयचरित्तविणए जाव अहक्खायचरित्तविणए। से त्तं चरित्तविणए। २२५. से किं तं मणविणए ? मणविणए दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-पसत्थमणविणए य अप्पसत्थमणविणए य। २२६. से किं तं पसत्थमणविणए ? पसत्थमणविणए सत्तविधे पन्नत्ते, तं जहा-अपावए, असावज्जे, अकिरिए, निरूवक्केसे, अणण्हयकरे, अच्छविकरे, अभूयाभिसंकणे। से त्तं पसत्थमणविणए। २२७. से किं तं अप्पसत्थमणविणए ? अप्पसत्थमणविणए सत्तविधे पन्नत्ते, तं जहा-पावए सावज्जे सकिरिए सउवक्केसे अण्हयकरे छविकरे भूयाभिसंकणे। से त्तं अप्पसत्तमणविणए। से त्तं मणविणए। २२८. से किं तं वइविणए ? वइविणए दुविधे पन्नत्ते, तं जहा-पसत्थवइविणए य अप्पसत्थमणविणए य। २२९. से किं तं पसत्थवइविणए ? पसत्थवइविणए सत्तविधे पन्नत्ते, तं जहा-अपावए जाव अभूयाभिसंकणे। से त्तं पसत्थवइविणए। २३०. से किं तं अप्पसत्थवइविणए ? अप्पसत्थवइविणए सत्तविधे पन्नत्ते, तं जहा-पावए सावज्जे जाव भूयाभिसंकणे। से त्तं अप्पसत्थवइविणए। से त्तं वइविणए। २३१. से किं तं कायविणए ? कायविणए दुविधे पन्नत्ते, तं जहा-पसत्थकायविणए य अप्पसत्थकायविणए य। २३२. से किं तं पसत्थकायविणए ? पसत्थकायविणए सत्तविधे पन्नत्ते, तं जहा-आउत्तं गमणं, आउत्तं ठाणं, आउत्तं निसीयणं, आउत्तं तुयट्टणं, आउत्तं उल्लंघणं, आउत्तं पल्लंघणं, आउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणया। से त्तं पसत्थकायविणए। २३३. से किं तं अप्पसत्थकायविणए ? अप्पसत्थकायविणए सत्तविधे पन्नत्ते, तं जहा-अणाउत्तं गमणं जाव अणाउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणया। से त्तं अप्पसत्थकायविणए। से त्तं कायविणए। २३४. से किं तं लोगोवयारविणए ? लोगोवयारविणए सत्तविधे पन्नत्ते, तं जहा-अब्भासवत्तियं, परछंदाणुवत्तियं, कज्जहेतुं, कयपडिकतया, अत्तगवेसणया, देसकालण्णया, सव्वत्थेसु अपडिलोमया। से त्तं लोगोवयारविणए। से त्तं विणए। [सु. २३५-३६. वेयावच्च-सज्झायअब्भिंतरतवभेयपरूवणं] २३५. से किं तं वेचावच्चे ? वेचावच्चे दसविधे पन्नत्ते, तंजहा-आयरियवेचावच्चे उवज्झायवेयावच्चे थेरवेयावच्चे तवस्सिवेयावच्चे गिलाणवेयावच्चे सेहवेयावच्चे कुलवेयावच्चे गणवेयावच्चे संघवेयावच्चे साहम्मियवेयावच्चे। से त्तं वेयावच्चे। २३६. से किं तं सज्झाए ? सज्झाए पंचविधे पन्नत्ते, तंजहा-वायणा पडिपुच्छणा परिवट्टणा अणुप्पेहा धम्मकहा। से त्तं सज्झाए। [सु. २३७-४९. झाणअब्भिंतरतवभेय-पभेयाइपरूवणं] २३७. से किं तं झाणे ? झाणे चउव्विधे पन्नत्ते, तं जहा-अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे। २३८. अट्टे झाणे चउव्विहे पण्णते, तं जहा-अमणुण्णसंपयोगसंपउत्ते तस्स विप्पयोगसतिसमन्नागते यावि भवति १, मणुण्णससंपयोगसंपउत्ते तस्स अविप्पयोगसतिसमन्नागते यावि भवति २, आयंकसंपयोगसंपउत्ते तस्स विप्पयोगसतिसमन्नागते यावि भवति ३ परिझुसियकामभोगसंपउत्ते तस्स अविप्पयोगसतिसमन्नागते यावि भवति ४। २३९. अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पन्नत्ता, तं जहा-कंदणया सोयणया तिप्पणया परिदेवणया। २४०. रोद्दे झाणे चउव्विधे पन्नत्ते, तं जहा-हिंसाणुबंधी मोसाणुबंधी, तेयाणुबंधी, सारक्खणाणुबंधी। २४१. रोद्दस्स झाणस्स चत्तारि लक्खणा पन्नत्ता, तं जहा-उस्सन्नदोसे-बहुदोसे अण्णाणदोसे आमरणंतदोसे। २४२. धम्मे झाणे चउव्विहे चउपडोयारे पन्नत्ते, तं जहा-आणाविजये, अवायविजये विवागविजये संठाणाविजये। २४३. धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पन्नत्ता, तं जहा-आणारुयी निसग्गरुयी सुत्तरुयी ओगाढरुयी। २४४. धमस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पन्नत्ता, तं जहा-पडिपुच्छणा परियट्टणा धम्मकहा। २४५. धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुपेहाओ पन्नत्ताओ, तं जहा-एगत्ताणुपेहा अणिच्चाणुपेहा असरणाणुपेहा संसाराणुपेहा। २४६. सुक्के झाणे चउव्विधे चउपडोयारे पन्नत्ते, तं जहा-पुहत्तवियक्के सवियारी, एगत्तवियक्के अवियारी, सुहुमकिरिए अनियट्टी, समोछिन्नकिरिए अप्पडिवाई। २४७. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पन्नत्ता, तं जहा-खंती मुत्ती अज्जवे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मद्दवे। २४८. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पन्नत्ता, तं जहा-अव्वहे असम्मोहे विवेगे विओसग्गे। २४९. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुपेहाओ पन्नत्ताओ, तं जहा-अणंतवत्तियाणुप्पेहा विप्परिणामाणुप्पेहा असुभाणुपेहा अवायाणुपेहा। से त्तं झाणे। [सु. २५०-५५. विओसग्गअब्भिंतरतवभेय-पभेयपरूवणं] २५०. से किं तं विओसग्गे? विओसग्गे दुविधे पन्नत्ते, तं जहा-दव्वविओसग्गे य भावविओसग्गे य। २५१. से किं तं दव्वविओसग्गे? दव्वविओसग्गे चउव्विधे पन्नत्ते, तं जहा-गणविओसग्गे सरीरविओसग्गे उवधिविओसग्गे भत्त-पाणविओसग्गे। से त्तं दव्वविओसग्गे। २५२. से किं तं भावविओसग्गे? भावविओसग्गे तिविहे पन्नत्ते, तं जहा-कसायविओसग्गे संसारविओसग्गे कम्मविओसग्गे। २५३. से किं तं कसायविओसग्गे? कसायविओसग्गे चउव्विधे पन्नत्ते, तं जहा-कोहविओसग्गे माणविओसग्गे मायाविओसग्गे लोभविओसग्गे। से त्तं कसायविओसग्गे। २५४. से किं तं संसारविओसग्गे? संसारविओसग्गे चउव्विधे पन्नत्ते, तं जहा-नेरइयसंसारविओसग्गे जाव देवसंसारविओसग्गे। से त्तं संसारविओसग्गे। २५५. से किं तं कम्मविओसग्गे? कम्मविओसग्गे अट्ठविधे पन्नत्ते, तं जहा-णाणावरणिज्जविओसग्गे जाव अंतराइयकम्मविओसग्गे। से त्तं कम्मविओसग्गे। से त्तं भावविओसग्गे। से त्तं अब्भिंतरए तवे। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। **☆☆☆॥२५ सते ७ उद्दे०॥ अट्ठमो उद्देसओ 'ओहे' ☆☆☆** [सु. १. अट्ठमुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासी- [सु. २-१०. चउवीसइदंडएसु दिट्ठंतपुरस्सरं गइ-गइविसय-परभवियाउय-करण-गइपवत्तण-आयपरिड्ढि-आयपरकम्म-आयपरप्पाओगे पडुच्च उववत्तिविहा-णपरूवणं] २. नेरतिया णं भंते! कहं उववज्जंति? गोयमा! से जहाणामए पवए पवमाणे अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं सेयकाले तं ठाणं विप्पजहित्ता पुरिमं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, एवामेव ते वि जीवा पवओ विव पवमाणा अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं सेयकाले तं भवं विप्पजहिता पुरिमं भवं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति। ३. तेसि णं भंते! जीवाणं कहं सीहा गती? कहं सीहे गतिविसए पन्नत्ते? गोयमा! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे बलवं एवं जहा चोद्दसमसए पढमुद्देसए (स० १४ उ० १ सु० ६) जाव तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जंति। तेसि णं जीवाणठ तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पन्नत्ते। ४. ते णं भंते! जीवा कहं परभवियाउयं पकरेंति? गोयमा! अज्झवसाणजोगनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं, एवं खलु ते जीवा परभवियाउयं पकरेंति। ५. तेसि णं भंते! जीवाणं कहं गती पवत्तइ? गोयमा! आउक्खएणं भवक्खएणं ठितिक्खएणं; एवं खलु तेसिं जीवाणं गती पवत्तति। ६. ते णं भंते! जीवा किं आतिड्ढीए उववज्जंति, परिड्ढीए उववज्जंति? गोयमा! आतिड्ढीए उववज्जंति, नो परिड्ढीए उववज्जंति। ७. ते णं भंते! जीवा किं आयकम्मुणा उववज्जंति, परकम्मुणाउववज्जंति? गोयमा! आयकम्मुणा उववज्जंति, नो परकम्मुणा उववज्जंति। ८. ते णं भंते! जीवा किं आयप्पयोगेणं उववज्जंति, परप्पयोगेणं उववज्जंति? गोयमा! आयप्पयोगेणं उववज्जंति, नो परप्पयोगेणं उववज्जंति। ९. असुरकुमारा णं भंते! कहं उववज्जंति? जहा नेरतिया तहेव निरवसेसं जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जंति। १०. एवं एगिंदियवज्जा जाव वेमाणिया। एगिंदिया एवं चेव, नवं चउसमइओ विग्गहो। सेसं तं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरति। **☆☆☆॥पंचवीइमे सए अट्ठमो॥ नवमो उद्देसओ 'भविए' ☆☆☆** [सु. १. भवसिद्धिएसु चउवीसइदंडएसु अट्ठमुद्देसवत्तव्वयापरूवणं] १. भवसिद्धियनेरइया णं भंते! कहं उववज्जंति? गोयमा! से जहा-नामए पवए पवमाणे०, अवसेसं तं चेव जाव वेमाणिए। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। **☆☆☆ ॥२५ सते ९ उद्देसओ॥ दसमो उद्दसओ 'अभविए' ☆☆☆** [सु. १. अभवसिद्धिएसु चउवीसइदंडएसु अट्ठमुद्देसवत्तव्वयापरूवणं] १. अभवसिद्धियनेरइया णं भंते! कहं उववज्जंति? गोयमा! से जहा-नामए पवए पवमाणे०, अवसेसं तं चेव एवं जाव वेमाणिए। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति। ॥२५.१०॥ **☆☆☆एगारसमो उद्देसओ 'सम्म' ☆☆☆** [सु. १-२. सम्मद्दिट्ठिएसु चउवीसइदंडएसु अट्ठमुद्देसवत्तव्वयापरूवणं] १. सम्मदिट्ठिनेरइया णं भंते! कहं उववज्जंति? गोयमा! से जहानामए पवए पवमाणे०, अवसेसं तं चेव। २. एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिया। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ॥२५.११॥ **☆☆☆ बारसमो उद्देसओ 'मिच्छे' ☆☆☆ [सु. १-२. मिच्छदिट्ठिएसु चउवीसइदंडएसु**

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठमुद्देसवत्तव्वयापरूवणं] १. मिच्छादिट्ठिनेरइया णं भंते ! कहं उववज्जंति ? गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे०, अवसेसं तं चेव। २. एवं जाव वेमाणिए। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति। ॥२५ सते १२॥ **卐卐卐 ॥पंचवीसतिमं सतं समत्तं॥२५॥ 卐卐卐 छव्वीसइमं सयं 卐卐卐**-बंधिसयं [सु. १. छव्वीसइमसयस्स मंगलं] १. नमो सुयदेवयाए भगवतीए। [सु. २. छव्वीसइमसयगयएक्कारसुद्देसगाणं एक्कारसठाणपरूवणं]२. जीवा १ य लेस २ पक्खिय ३ दिट्ठी ४ अन्नाण ५ नाण ६ सन्नाओ ७। वेय ८ कसाए ९ उवयोग १० योग ११ एक्कारस वि ठाणा ॥१॥ **☆☆☆पढमो उद्देसओ☆☆☆** [सु. ३. पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ]३. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवं वयासी- [सु. ४. पढमं ठाणं-जीवं पडुच्च पावकम्मबंधपरूवणं] ४. जीवे णं भंते ! पावं कम्मं किं बंधी, बंधति, बंधिस्सति; बंधी, बंधति, न बंधिस्सति; बंधी, न बंधति, बंधिस्सति; बंधी, न बंधति, न बंधिस्सति ? गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, बंधति, बंधिस्सति; अत्थेगतिए बंधी, बंधति, न बंधिस्सति; अत्थेगतिए बंधी, न बंधति, बंधिस्सइ; अत्थेगतिए बंधी, न बंधति, न बंधिस्सति। [सु. ५-९. बिइयं ठाणं-सलेस्समलेस्सं जीवं पडुच्च पावकम्मबंधपरूवणं] ५. सलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी, बंधति, बंधिस्सति; बंधी, बंधति, न बंधिस्सति० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, बंधति, बंधिस्सति; अत्थेगतिए०, चउभंगो। ६. कण्हलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी,० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, बंधति, बंधिस्सति; अत्थेगतिए बंधी, बंधति, न बंधिस्सति। ७. एवं जाव पम्हलेस्से। सव्वत्थ पढम-बितिया भंगा। ८. सुक्कलेस्से जहा सलेस्से तहेव चउभंगो। ९. अलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! बंधी, न बंधति, न बंधिस्सति। [सु. १०-११. तइयं ठाणं-कण्ह-सुक्कपक्खियजीवं पडुच्च पावकम्मबंधपरूवणं] १०. कण्हपक्खिए णं भंते ! जीवे पावं कम्मं० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी,० पढम-बितिया भंगा। ११. सुक्कपक्खिए णं भंते ! जीवे० पुच्छा। गोयमा ! चउभंगो भाणियव्वो। [सु. १२-१४. चउत्थं ठाणं-सम्मद्दिट्ठि-मिच्छद्दिट्ठि-सम्मामिच्छद्दिट्ठिजीवं पडुच्च पावकम्मबंधपरूवणं] १२. सम्माद्दिट्ठीणं चत्तारि भंगा। १३. मिच्छाद्दिट्ठीणं पढम-बितिया। १४. सम्मामिच्छद्दिट्ठीणं एवं चेव। [सु. १५-१७. छट्ठं ठाणं-नाणिणं जीवं पडुच्च पावकम्मबंधपरूवणं]१५. नाणीणं चत्तारि भंगा। १६. आभिणिबोहियनाणीणं जाव मणपज्जवणाणीणं चत्तारि भंगा। १७. केवलनाणीणं चरिमो भंगो जहा अलेस्साणं। [सु. १८-१९. पंचमं ठाणं-अन्नाणिणं जीवं पडुच्च पावकम्मबंधपरूवणं] १८. अन्नाणीणं पढम-बितिया। १९. एवं मतिअन्नाणीणं, सुयअन्नाणीणं, विभंगनाणीण वि। [सु. २०-२१. सत्तमं ठाणं-आहाराइसन्नोवउत्तं जीवं पडुच्च पावकम्मबंधपरूवणं] २०. आहारसन्नोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणं पढम-बितिया। २१. नोसण्णोवउत्ताणं चत्तारि। [सु. २२-२३. अट्ठमं ठाणं-सवेयग-अवेयगजीवं पडुच्च पावकम्मबंधपरूवणं] २२. सवेयगाणं पढम-बितिया। एवं इत्थिवेयग-पुरिसवेयग-नपुंसगवेद-गाण वि। २३. अवेयगाणं चत्तारि। [सु. २४-२८. पवमं ठाणं-सकसायि-अकसायिजीवं पडुच्च पावकम्मबंधपरूवणं] २४. सकसाईणं चत्तारि। २५. कोहकसायीणं पढम-बितिया। २६. एवं माणकसायिस्स वि, मायाकसायिस्स वि। २७. लोभकसायिस्स चत्तारि भंगा। २८. अकसायी णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, न बंधति, बंधिस्सति। अत्थेगतिए बंधी, न बंधति, न बंधिस्सति। [सु. २९-३१. एक्कारसमं ठाणं-सजोगि-अजोगिजीवं पडुच्च पावकम्मबंधपरूवणं] २९. सजोगिस्स चउभंगो। ३०. एवं मणजोगिस्स वि, वइजोगिस्स वि, कायजोगिस्स वि। ३१. अजोगिस्स चरिमो। [सु. ३२-३३. दसमं ठाणं-सागार-आणागारोवउत्तं जीवं पडुच्च पावकम्मबंधपरूवणं] ३२. सागारोवउत्ते चत्तारि। ३३. अणागारोवउत्ते वि चत्तारि भंगा। [सु. ३४-४३. चउवीसइदंडएसु चउत्थाइतेत्तीसइमसुत्ततग्गय-एक्कारसठाणपरूवणं] ३४. नेरतिए णं भंते ! पावं कम्मं किं बंधी, बंधति, बंधिस्सति० ? गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी ? पढम-बितिया। ३५. सलेस्से णं भंते ! नेरतिए पावं कम्मं ? एवं चेव। ३६.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं कण्हलेस्से वि, नीललेस्से वि, काउलेस्से वि। ३७. एवं कण्हपक्खिए, सुक्कपक्खिए; सम्मद्दिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी; नाणी, आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी; अन्नाणी, मतिअन्नाणी, सुयअन्नाणी, विभंगनाणी; आहारसन्नोवउत्ते जाव परिग्गहसन्नोवउत्ते; सवेयए, नपुंसकवेयए; सकसायी जाव लोभकसायी; सजोगी, मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी; सागारोवउत्ते अणागारोवउत्ते। एएसु सव्वेसु पएसु पढम-बितिया भंगा भाणियव्वा। ३८. एवं असुरकुमारस्स वि वत्तव्वया भाणियव्वा, नवरं तेउलेस्सा, इत्थिवेयग-पुरिसवेयगा य अब्भहिया, नपुंसगवेयगा न भण्णंति। सेसं तं चेव सव्वत्थ पढम-बितिया भंगा। ३९. एवं जाव थणियकुमारस्स। ४०. एवं पुढविकाइयस्स वि आउकाइयस्स वि जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स वि, सव्वत्थ वि पढम-बितिया भंगा। नवरं जस्स जा लेस्सा, दिट्ठी, नाणं, अन्नाणं, वेदो, जोगो य, जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं। सेसं तहेव। ४१. मणूसस्स जच्चेव जीवपए वत्तव्वया सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा। ४२. वाणमंतरस्स जहा असुरकुमारस्स। ४३. जोतिसिय-वेमाणियस्स एवं चेव, नवरं लेस्साओ जाणियव्वाओ, सेसं तहेव भाणियव्वं। [सु. ४४-४५. जीव-चउवीसइदंडएसु नाणावरणिज्ज-दंसणावरणाइं पडुच्च चउत्थाइतेत्तीसइमसुत्तंतग्गयएक्कारसठाणपरूवणं] ४४. जीवे णं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं किं बंधी, बंधति, बंधिस्सति० ? एवं जहेव पावस्स कम्मस्स वत्तव्वया भणिया तहेव नाणावरणिज्जस्स वि भाणियव्वा, नवरं जीवपए मणुस्सपए य सकसायिम्मि जाव लोभकसाइम्मि य पढम-बितिया भंगा। अवसेसं तं चेव जाव वेमाणिए। ४५. एवं दरिसणावरणिज्जेण वि दंडगो भाणियव्वो निरवसेसं।[सु. ४६-६१. जीव-चउवीसइदंडएसु वेदणिज्जं पडुच्च चउत्थाइतेत्तीसइमसुत्तंतग्गयएक्कारसठाणपरूवणं] ४६. जीवे णं भंते ! वेयणिज्जं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, बंधति, बंधिस्सति; अत्थेगतिए बंधी, बंधति, न बंधिस्सति; अत्थेगतिए बंधी, न बंधति, न बंधिस्सति। ४७. सलेस्से वि एवं चेव ततियविहूणा भंगा। ४८. कण्हलेस्से जाव पम्हलेस्से पढम-बितिया भंगा। ४९. सुक्कलेस्से ततियविहूणा भंगा। ५०. अलेस्से चरिमो। ५१. कण्हपक्खिए पढम-बितिया। ५२. सुक्कपक्खिए ततियविहूणा। ५३. एवं सम्मद्दिट्ठिस्स वि। ५४. मिच्छद्दिट्ठिस्स सम्मामिच्छादिट्ठिस्स य पढम-बितिया। ५५. णाणिस्स ततियविहूणा।५६. आभिनिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी पढम-बितिया। ५७. केवलनाणी ततियविहूणा। ५८. एवं नोसन्नोवउत्ते, अवेदए, अकसायी, सागरोवउत्ते, अणागारोवउत्ते, एएसु ततियविहूणा। ५९. अजोगिम्मि य चरिमो। ६०. सेसेसु पढम-बितिया। ६१. नेरइए णं भंते ! वेयणिज्जं कम्मं किं बंधी, बंधइ० ? एवं नेरइयाइया जाव वेमाणिय त्ति, जस्स जं अत्थि। सव्वत्थ वि पढम-बितिया, नवरं मणुस्से जहा जीवे। [सु. ६२. जीव-चउवीसइदंडएसु मोहणिज्जं पडुच्च चउत्थाइतेत्तीसइमसुत्तंतग्गयएक्कारसठाणपरूवणं] ६२. जीवे णं भंते ! मोहणिज्जं कम्मं किं बंधी, बंधति० ? जहेव पावं कम्मं तहेव मोहणिज्जं पि निरवसेसं जाव वेमाणिए। [सु. ६३-८७. जीव-चउवीसइदंडएसु आउयकम्मं पडुच्च चउत्थाइतेत्तीसइमसुत्तंतग्गयएक्कारसठाणपरूवणं] ६३. जीवे णं भंते ! आउयं कम्मं किं बंधी बंधति० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी० चउभंगो। ६४. सलेस्से जाव सुक्कलेस्से चत्तारि भंगा। ६५. अलेस्से चरिमो। ६६. कण्हपक्खिए णं० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, बंधति, बंधिस्सति। अत्थेगतिए बंधी, न बंधति, बंधिस्सति। ६७. सुक्कपक्खिए सम्मद्दिट्ठी मिच्छादिट्ठी चत्तारि भंगा। ६८. सम्ममिच्छादिट्ठी० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, न बंधति, बंधिस्सति; अत्थेगतिए बंधी, न बंधति, न बंधिस्सति। ६९. नाणी जाव ओहिनाणी चत्तारि भंगा। ७०. मणपज्जवनाणी० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, बंधति, बंधिस्सति; अत्थेगतिए बंधी, न बंधति, बंधिस्सति; अत्थेगतिए बंधी, न बंधति, न बंधिस्सति। ७१. केवलनाणे चरिमो भंगो। ७२. एवं एएणं कमेणं नोसन्नोवउत्ते बितियविहूणा जहेव मणपज्जवनाणे। ७३. अवेयए अकसाई य ततिय-चउत्था जहेव सम्मामिच्छत्ते। ७४. अजोगिम्मि चरिमो। ७५. सेसेसु पएसु चत्तारि भंगा जाव अणागारोवउत्ते। ७६. नेरतिए णं भंते ! आउयं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिए० चत्तारि भंगा। एवं सव्वत्थ वि नेरइयाणं चत्तारि भंगा, नवरं कण्हलेस्से कण्हपक्खिए य पढम-ततिया भंगा, सम्मामिच्छत्ते ततिय-चउत्था। ७७. असुरकुमारे एवं चेव, नवरं कण्हलेस्से वि चत्तारि भंगा भाणियव्वा। सेसं जहा नेरतियाणं। ७८. एवं जाव थरियकुमाराणं। ७९. पुढविकाइयाणं सव्वत्थ वि चत्तारि भंगा, नवरं कण्हपक्खिए पढम-ततिया भंगा। ८०.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेउलेस्स० पुच्छा। गोयमा ! बंधी, न बंधति, बंधिस्सति। ८१. सेसेसु सव्वेसु चत्तारि भंगा। ८२. एवं आउकाइय-वणस्सइकाइयाण वि निरवसेसं। ८३. तेउकाइय-वाउकाइयाणं सव्वत्थ वि पढम-ततिया भंगा। ८४. बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं पि सव्वत्थ वि पढम-ततिया भंगा, नवरं सम्मत्ते नाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे ततियो भंगो। ८५. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं कण्हपक्खिए पढम-ततिया भंगा। सम्मामिच्छत्ते ततिय-चउत्था भंगा। सम्मत्ते नाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे ओहिनाणे, एएसु पंचसु वि पएसु बितियविहूणा भंगा। सेसेसु चत्तारि भंगा। ८६. मणुस्साणं जहा जीवाणं, नवरं सम्मत्ते, ओहिए नाणे, आभिनिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे, एएसु बितियविहूणा भंगा; सेसं तं चेव। ८७. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा। [सु. ८८. जीव-चउवीसइदंडएसु नाम-गोय-अंतराइयकम्माइं पडुच्च चउत्थाइतेत्तीसइमसुत्तंतग्गयएक्कारसठाणपरूवणं] ८८. नामं गोयं अंतरायं च एयाणि जहा नाणावरणिज्जं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति।☆☆☆ ॥बंधिसयस्स पढमो उद्देसओ॥ २६.१॥ **बीओ उद्देसओ☆☆☆** [सु. १-९ अणंतरोववन्नएसु चउवीसइदंडएसु पावकम्मबंधं पडुच्च पढमुद्देसनिद्दिट्ठएक्कारसठाणपरूवणं] १. अणंतरोववन्नए णं भंते ! नेरतिए पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा तहेव। गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी,० पढम-बितिया भंगा। २. सलेस्से णं भंते ! अणंतरोववन्नए नेरतिए पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! पढम-बितिया भंगा, नवरं कण्हपक्खिए ततिओ। ३. एवं सव्वत्थ पढम-बितिया भंगा, नवरं सम्मामिच्छत्तं मणजोगो वइजोगो य न पुच्छिज्जइ। ४. एवं जाव थणियकुमाराणं। ५. बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं वइजोगो न भण्णति। ६. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पि सम्मामिच्छत्तं ओहिनाणं विभंगनाणं मणजोगो वइजोगो, एयाणि पंच ण भण्णंति। ७. मणुस्साणं अलेस्स-सम्मामिच्छत्त-मणपज्जवनाण-केवलनाण-विभंगनाण-नोसण्णोवउत्त-अवेयग-अकसायि-मणजोग-वइजोग-अजोगि, एयाणि एक्कारस पयाणि ण भण्णंति। ८. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियाणं जहा नेरतियाणं तहेव तिण्णि न भण्णंति। सव्वेसिं जाणि सेसाणि ठाणाणि सव्वत्थ पढम-बितिया भंगा। ९. एगिंदियाणं सव्वत्थ पढम-बितिया भंगा। [सु. १०-१६. अणंतरोववन्नएसु चउवीसइदंडएसु नाणावरणाइकम्मट्ठगबंधं पडुच्च पढमुद्देसनिद्दिट्ठएक्कारसठाणपरूवणं] १०. जहा पावे एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ। ११. एवं आउयवज्जेसु जाव अंतराइए दंडओ। १२. अणंतरोववन्नए णं भंते ! नेरतिए आउयं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! बंधी, न बंधति, बंधिस्सति। १३. सलेस्से णं भंते ! अणंतरोववन्नए नेरतिए आउयं कम्मं किं बंधी० ? एवं चेव ततिओ भंगो। १४. एवं जाव अणागारोवउत्ते। सव्वत्थ वि ततिओ भंगो। १५. एवं मणुस्सवज्जं जाव वेमाणियाणं। १६. मणुस्साणं सव्वत्थ ततिय-चउत्था भंगा, नवरं कण्हपक्खिएसु ततिओ भंगो। सव्वेसिं नाणत्ताइं ताइं चेव। सेवं भंते। सेवं भंते। त्ति०।॥ बंधिसयस्स बितिओ ॥२६.२॥ **☆☆☆ ततिओ उद्देसओ ☆☆☆** [सु. १-२. परंपरोववन्नएसु चउवीसइदंडएसु पावकम्मबंधं नाणावरणिज्जाइकम्मट्ठगबंधं च पडुच्च पढमुद्देसनिद्दिट्ठएक्कारसठाणपरूवणं] १. परंपरोववन्नए णं भंते ! नेरतिए पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिए०, पढम-बितिया। २. एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव परंपरोववन्नएहि वि उद्देसओ भाणियव्वो नेरइयाइओ तहेव नवदंडसंगहितो। अट्ठण्ह वि कम्मपगडीणं जा जस्स कम्मस्स वत्तव्वया सा तस्स अहीणमतिरित्ता नेयव्वा जाव वेमाणिया अणागारोवउत्ता। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥२६.३॥ **☆☆☆चउत्थो उद्देसओ☆☆☆** [सु. १. अणंतरोगाढएसु चउवीसइदंडएसु पावकम्माइबंधं पडुच्च पढमुद्देसनिद्दिट्ठएक्कारसठाणपरूवणं] १. अणंतरोगाढए णं भंते ! नेरतिए पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिए०, एवं जहेव अणंतरोववन्नएहिं नवदंडसंगहितो उद्देसो भणितो तहेव अणंतरोगाढएहि वि अहीणमतिरित्तो भाणियव्वो नेरइयाईए जाव वेमाणिए। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥२६.४॥ **☆☆☆पंचमो उद्देसओ ☆☆☆**[सु. १. परंपरोगाढएसु चउविसइदंडएसु पावकम्माइबंधं पडुच्च पढमुद्देसनिद्दिट्ठएक्कारसठाणपरूवणं] १. परंपरोगाढए णं भंते ! नेरतिए पावं कम्मं किं बंधी० ? जहेव परंपरोववन्नएहिं उद्देसो सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥२६ सते ५ उद्दे०॥ **☆☆☆ छट्ठो उद्देसओ ☆☆☆**[सु. १. अणंतराहारएसु चउवीसइदंडएसु

For Private & Personal Use Only

पावकम्माइबंधं पडुच्च पढमुद्देसनिद्दिट्ठएक्कारसठाणपरूवणं] १. अणंतराहारए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। एवं जहेव अणंतरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव निरवसेसं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥२६.६॥ ☆☆☆ **सत्तमो उद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. परंपराहारएसु चउवीसइदंडएसु पावकम्माइबंधं पडुच्च पढमुद्देसनिद्दिट्ठएक्कारसठाणपरूवणं] १. परंपराहारए णं भंते ! नेरतिए पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! एवं जहेव परंपरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥२६.७॥ ☆☆☆ **अट्ठमो उद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. अणंतरपज्जत्तएसु चउवीसइदंडएसु पावकम्माइबंधं पडुच्च पढमुद्देसनिद्दिट्ठएक्कारसठाणपरूवणं] १. अणंतरपज्जत्तए णं भंते ! नेरतिए पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! एवं जहेव अणंतरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव निरवसेसं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥२६.८॥ ☆☆☆ **नवमो उद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. परंपरपज्जत्तएसु चउवीसइदंडएसु पावकम्माइबंधं पडुच्च पढमुद्देसनिद्दिट्ठएक्कारसठाणपरूवणं] १. परंपरपज्जत्तए णं भंते ! नेरतिए पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! एवं जहेव परंपरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरइ। ॥२६.९॥ ☆☆☆ **दसमो उद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. चरिमेसु चउवीसइदंडएसु पावकम्माइबंधं पडुच्च पढमुद्देसनिद्दिट्ठएक्कारसठाणपरूवणं] १. चरिमे णं भंते ! नेरतिए पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! एवं जहेव परंपरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव चरिमेहि वि निरवसेसं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरति। ॥२६.१०॥ ☆☆☆ **एगारसमो उद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १-४. अचरिमेसु चउवीसइदंडएसु पावकम्मबंधं पडुच्च पढमुद्देसनिद्दिट्ठएक्कारसठाणपरूवणं] १. अचरिमे णं भंते ! नेरतिए पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगइए०, एवं जहेव पढमुद्देसए तहेव पढम-बितिया भंगा भाणियव्वा सव्वत्थ जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं। २. अचरिमे णं भंते ! मणुस्से पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, बंधति, बंधिस्सति; अत्थेगतिए बंधी, बंधति, न बंधिस्सति; अत्थेगतिए बंधी, न बंधति, बंधिस्सति। ३. सलेस्से णं भंते ! अचरिमे मणुस्से पावं कम्मं किं बंधी० ? एवं चेव तिन्नि भंगा चरिमविहूणा भाणियव्वा एवं जहेव पढमुद्देसए, नवरं जेसु तत्थ वीससु पदेसु चत्तारि भंगा तेसु इहं आदिल्ला तिन्नि भंगा भाणियव्वा चरिमभंगवज्जा; अलेस्से केवलनाणी य अजोगी य, एए तिन्नि वि न पुच्छिज्जंति। सेसं तहेव। ४. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा नेरतिए। [सु. ५-१९. अचरिमेसु चउवीसइदंडएसु नाणावरणाइकम्मट्ठगबंधं पडुच्च पढमुद्देसनिद्दिट्ठएक्कारसठाणपरूवणं] ५. अचरिमे णं भंते ! नेरइए नाणावरणिज्जं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! एवं जहेव पावं, नवरं मणुस्सेसु सकसाईसु लोभकसायीसु य पढम-बितिया भंगा, सेसा अट्ठारस चरिमविहूणा। ६. सेसं तहेव जाव वेमाणियाणं। ७. दरिसणावरणिज्जं पि एवं चेव निरवसेसं। ८. वेदणिज्जे सव्वत्थ वि पढम-बितिया भंगा जाव वेमाणियाणं, नवरं मणुस्सेसु अलेस्से केवली अजोगी य नत्थि। ९. अचरिमे णं भंते ! नेरइए मोहणिज्जं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! जहेव पावं तहेव निरवसेसं जाव वेमाणिए। १०. अचरिमे णं भंते ! नेरतिए आउयं कम्मं किं बंधी० पुच्छा। गोयमा ! पढम-ततिया भंगा ! ११. एवं सव्वपएसु वि नेरइयाणं पढम-ततिया भंगा, नवरं सम्मामिच्छत्ते तइयो भंगो। १२. एवं जाव थणियकुमाराणं। १३. पुढविकाइय-आउकाइय-वणस्सइकाइयाणं तेउलेसाए ततियो भंगो। सेसपएसु सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। १४. तेउकाइय-वाउकाइयाणं सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। १५. बेइंदिय-तेइंदिय-चतुरिंदियाणं एवं चेव, नवरं सम्मत्ते ओहिनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे, एएसु चउसु वि ठाणेसु ततियो भंगो ! १६. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं सम्मामिच्छत्ते ततियो भंगो। सेसपएसु सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा ! १७. मणुस्साणं सम्मामिच्छत्ते अवेयए अकसायिम्मि य ततियो भंगो, अलेस्स केवलनाण अजोगी य न पुच्छिज्जंति, सेसपएसु सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। १८. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा नेरतिया। १९. नामं गोयं अंतराइयं च जहेव नाणावरणिज्जं तहेव निरवसेसं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरति। ॥२६.११ उद्दे०॥ 卐卐卐॥**बंधिसयं समत्तं ॥ २६ ॥ सत्तावीसइमं सयं** 卐卐卐 - करिंसगसयं पढमादिएक्कारसउद्देसगा [सु. १-२. छव्वीसइमसयवत्तव्वयाणुसारेण पावकम्म-नाणावरणिज्जइकम्मट्ठगकरणपरूवणं] १. जीवे णं भंते ! पावं कम्मं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किं करिंसु, करेति, करिस्सति; करिंसु, करेति, न करेस्सति; करिंसु, न करेइ, करिस्सति; करिंसु, न करेइ, न करेस्सइ ? गोयमा ! अत्थेगतिए करिंसु, करेति, करिस्सति; अत्थेगतिए करिंसु, करेति, न करिस्सति; अत्थेगतिए करिंसु, न करेति, करेस्सति; अत्थेगतिए करिंसु, न करेति, न करेस्सति। २. सलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं० ? एवं एएणं अभिलावेणं जच्चेव बंधिसते वत्तव्वया सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा, तह चेव नवदंडगसंगहिया एक्कारस उद्देसगा भाणितव्वा। ॥२७.१-११॥卐卐卐 **॥करिंसगसयं समत्तं॥ २७ ॥ अट्ठावीसइमं सयं** 卐卐卐-कम्मसमज्जिणणसयं पढमो उद्देसओ [सु. १-१०. छव्वीसइमसयनिद्दिट्ठएक्कारसठाणेहिं जीव-चउवीसइदंडएसु पावकम्म-कम्मट्ठगसमज्जिणणं पडुच्च परूवणं] १. जीवा णं भंते ! पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु ?, कहिं समायरिंसु ? गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा १, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य होज्जा २, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य होज्जा ३, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य देवेसु य होज्जा ४, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य होज्जा ५, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य देवेसु य होज्जा ६, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा ७, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा ८। २. सलेस्सा णं भंते ! जीवा पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु ?, कहिं समायरिंसु ? एवं चेव। ३. कण्हलेस्सा जाव अलेस्सा। ४. कण्हपक्खिया, सुक्कपक्खिया एवं जाव अणागारोवउत्ता। ५. नेरतिया णं भंते ! पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु ?, कहिं समायरिंसु ? गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा, एवं चेव अट्ठ भंगा भाणियव्वा। ६. एवं सव्वत्थ अट्ठ भंगा जाव अणागारोवउत्ता ! ७. एवं जाव वेमाणियाणं ! ८. एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ। ९. एवं जाव अंतराइएणं। १०. एवं एते जीवाईया वेमाणियपज्जवसाणा नव दंडगा भवंति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ। ॥२८.१॥☆☆☆ **बीओ उद्देसओ** ☆☆☆[सु. १-४. अणंतरोववन्नएसु चउवीसइदंडएसु छव्वीसइमसयबिइयउद्देसाणुसारेण पावकम्म-कम्मट्ठगसमज्जिणणं पडुच्च परूवणं] १. अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु ?, कहिं समायरिंसु ? गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा। एवं एत्थ वि अट्ठ भंगा। २. एवं अणंतरोववन्नगाणं नेरइयाईणं जस्स जं अत्थि लेस्साईयं अणागारोवयोगपज्जवसाणं तं सव्वं एयाए भयणाए भाणियव्वं जाव वेमाणियाणं। नवरं अणंतरेसु जे परिहरियव्वा ते जहा बंधिसते तहा इहं पि। ३. एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ। ४. एवं जाव अंतराइएणं निरवसेसं। एस वि नवदंडगसंगहिओ उद्देसओ भाणियव्वो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥२८.२॥ ☆☆☆ **तइयादिएगारसमपज्जंता उद्देसगा** ☆☆☆ [सु. १. छव्वीसइमसयतइयाइएक्कारसमुद्देसाणुसारेणं पावकम्म-कम्मट्ठगसमज्जिणणं पडुच्च परूवणं] १. एवं एएणं कमेणं जहेव बंधिसते उद्देसगाणं परिवाडी तहेव इहं पि अट्ठसु भंगेसु नेयव्वा। नवरं जाणियव्वं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं जाव अचरिमुद्देसो। सव्वे वि एए एक्कारस उद्देसगा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ। ॥२८.३-११॥卐卐卐 **॥कमसमज्जिणणसयं समत्तं॥२८॥ एगूणतीसइमं सयं** 卐卐卐-**कम्मपट्ठवणसयं पढमो उद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १-६. जीव-चउवीसइदंडएसु छव्वीसइमसयनिद्दिट्ठएक्कारसठाणेहिं पावकम्म-कम्मट्ठगाणं सम-विसमपट्ठवण-निट्ठवणाइं पडुच्च परूवणं] १. (१) जीवा णं भंते ! पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु, समायं निट्ठविंसु; समायं पट्ठविंसु, विसमायं निट्ठविंसु; विसमायं पट्ठविंसु, समायं निट्ठविंसु; विसमायं पट्ठविंसु, विसमायं निट्ठविंसु ? गोयमा ! अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु, समायं निट्ठविंसु; जाव अत्थेगतिया विसमायं पट्ठविंसु, विसमायं निट्ठविंसु। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-अत्थेगइया समायं०, तं चेव। गोयमा ! जीवा चउव्विहा पन्नत्ता, तं जहा-अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा, अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु, समायं निट्ठविंसु। तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु, विसमायं निट्ठविंसु। तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु, समायं निट्ठविंसु। तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते णं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु, विसमायं निट्ठविंसु। सेतेणट्ठेणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा !०, तं चेव। २. सलेस्सा णं भंते ! जीवा पावं कम्मं० ? एवं चेव। ३. एवं सव्वट्ठाणेसु वि जाव अणागारोवउत्ता, एते सव्वे वि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणितव्वा। ४. नेरइया णं भंते ! पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु, समायं निट्ठविंसु० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु०, एवं जहेव जीवाणं तहेव भाणितव्वं जाव अणागारोवउत्ता। ५. एवं जाव वेमाणियाणं। जस्स जं अत्थि तं एएणं चेव कमेणं भाणियव्वं। ६. जहा पावेण दंडओ, एएणं कमेणं अट्ठसु वि कम्मप्पगडीसु अट्ठ दंडगा भाणियव्वा जीवाइया वेमाणियपज्जवसाणा। एसो नवदंडगसंगहिओ पढमो उद्देसओ भाणियव्वो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥२९.१॥ **☆☆☆ बीओ उद्देसओ ☆☆☆** [सु. १-७. अणंतरोववन्नएसु चउवीसइदंडएसु छव्वीसइमसयनिद्दिट्ठ-एक्कारसठाणेहिं पावकम्म-कम्मट्ठगाणं सम-विसमपट्ठवण-निट्ठवणाइं पडुच्च परूवणं]१. (१) अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरतिया पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु, समायं निट्ठविंसु० पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु, समायं निट्ठविंसु; अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु, विसमायं निट्ठविंसु। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु० तं चेव। गोयमा ! अणंतरोववन्नगा नेरतिया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु, समायं निट्ठविंसु। तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु, विसमायं निट्ठविंसु। सेतेणट्ठेण० तं चेव। २. सलेस्सा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरतिया पावं० ? एवं चेव। ३. एवं जाव अणागारोवयुत्ता। ४. एवं असुरकुमारा वि। ५. एवं जाव वेमाणिया। नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणितव्वं। ६. एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ। ७. एवं निरवसेसं जाव अंतराइएणं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ। **☆☆☆ तइयाइएक्कारसमपज्जंता उद्देसगा ☆☆☆** [सु. १. छव्वीसइमसयतइयाइएक्कारसमुद्देसाणुसारेणं सम-विसमपट्ठवण-निट्ठवणाइं पडुच्च परूवणं] १. एवं एतेणं गमएणं जच्चेव पंधिसए उद्देसगपरिवाडी सच्चेव इह वि भाणियव्वा जाव अचरिमो त्ति। अणंतरउद्देसगाणं चउण्ह वि एक्का वत्तव्वया। सेसाणं सत्तण्हं एक्का। ॥२९.३-११॥卐卐卐॥**कम्मपट्ठवणसयं समत्तं**॥२९॥ **तीसइमं सयं** 卐卐卐 -समवसरणसयं **☆☆☆ पढमो उद्देसओ ☆☆☆** [सु. १. समोसरणस्स किरियावाइयाआइभेयचउक्कं] १. कति णं भंते ! समोसरणा पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि समोसरणा पन्नत्ता, तं जहा-किरियावादी अकिरियावादी अन्नाणियवादी वेणइयवादी। [सु. २-२१. जीवेसु एक्कारसठाणेहिं किरियावाइआइसमोसरणपरूवणं] २. जीवा णं भंते ! किं किरियावादी, अकिरियावादी, अन्नणियवादी, वेणइयवादी ? गोयमा ! जीवा किरियावादी वि, अकिरियावादी वि, अन्नाणियवादी वि, वेणइयवादी वि। ३. सलेस्सा णं भंते ! जीवा किं किरियावादी० पुच्छा। गोयमा ! किरियावादी वि जाव वेणइयवादी वि। ४. एवं जाव सुक्कलेस्सा। ५. अलेस्सा णं भंते ! जीवा० पुच्छा। गोयमा ! किरियावादी, नो अकिरियावादी, नो अन्नाणियवादी, नो वेणइयवादी। ६. कण्हपक्खिया णं भंते ! जीवा किं किरियावादी० पुच्छा। गोयमा ! नो किरियावादी, अकिरियावादी वि, अन्नाणियवादी वि, वेणइयवादी वि। ७. सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा। ८. सम्मद्दिट्ठी जहा अलेस्सा। ९. मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया। १०. सम्मामिच्छाद्दिट्ठी णं० पुच्छा। गोयमा ! नो किरियावादी, नो अकिरियावादी, अन्नाणियवादी वि, वेणइयवादी वि। ११. णाणी जाव केवलनाणी जहा अलेस्सा। १२. अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। १३. आहारसन्नोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता जहा सलेस्सा। १४. नोसण्णोवउत्ता जहा अलेस्सा। १५. सवेयगा जाव नपुंसगवेयगा जहा सलेस्सा। १६. अवेयगा जहा अलेस्सा। १७. सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। १८. अकसायी जहा अलेस्सा। १९. सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। २०. अजोगी जहा अलेस्सा। २१. सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता य जहा सलेस्सा। [सु. २२-३२. चउवीसइदंडएसु एक्कारसठाणेहिं किरियावाइआइसमोसरणपरूवणं] २२. नेरइया णं भंते ! किं किरियावादी० पुच्छा। गोयमा ! किरियावादी वि जाव वेणइयवादी वि। २३. सलेस्सा णं भंते ! नेरइया किं किरियावादी० ? एवं चेव। २४४. एवं जाव काउलेस्सा। २५. कण्हपक्खिया किरियाविवज्जिया। २६. एवं एएणं कमेणं जहेव जच्चेव जीवाणं वत्तव्वया सच्चेव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेरइयाण वि जाव अणागारोवउत्ता, नवरं जं अत्थि तं भाणियव्वं, सेसं न भण्णति। २७. जहा नेरतिया एवं जाव थणियकुमारा। २८. पुढविकाइया णं भंते! किं किरियवादी० पुच्छा। गोयमा! नो किरियावादी, अकिरियावादी वि, अन्नाणियवादी वि, नो वेणइयवादी। एवं पुढविकाइयाणं जं अत्थि तत्थ **सव्वत्थ वि एयाइं दो** मज्झिल्लाइं समोसरणाइं जाव अणागारोवउत्त त्ति। २९. एवं जाव चउरिंदियाणं, सव्वट्ठाणेसु एयाइं चेव मज्झिल्लगाइं दो समोसरणाइं। सम्मत्त-नाणेहि वि एयाणि चेव मज्झिल्लगाइं दो समोसरणाइं। ३०. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया जहा जीवा, नवं जं अत्थि तं भाणियव्वं। ३१. मणुस्स जहा जीवा तहेव निरवसेसं। ३२. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा। [सु. ३३-६४. किरियावाइआइचउव्विहसमोसरणगएसु जीवेसु एक्कारसठाणेहिं आउयबंधपरूवणं] ३३. (१) किरियावादी णं भंते! जीवा किं नेरतियाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति, देवाउयं पकरेंति? गोयमा! नो नेरतियाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति। (२) जति देवाउयं पकरेंतिं किं भवणवासिदेवाउयं पकरेंति, जाव वेमाणियदेवाउयं पकरेंति? गोयमा! नो भवणवासिदेवाउयं पकरेंति, नो वाणमंतरदेवाउयं पकरेंति, नो जोतिसियदेवाउयं पकरेंति, वेमाणियदेवाउयं पकरेंति। ३४. अकिरियावाई णं भंते! जीवा किं नेरतियाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं० पुच्छा। गोयमा! नेरइयाउयं पि पकरेंति, जाव देवाउयं पि पकरेंति। ३५. एवं अन्नाणियवादी वि, वेणइयवादी वि। ३६. सलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावादी किं नेरतियाउयं पकरेंति० पुच्छा। गोयमा! नो नेरइयाउयं०, एवं जहेव जीवा सलेस्सा वि चउहि वि समोसरणेहिं भाणियव्वा। ३७. कण्हलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेंति० पुच्छा। गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति। ३८. अकिरिया-अन्नाणिय-वेणइयवादी चत्तारि वि आउयाइं पकरेंति। ३९. एवं नीललेस्सा काउलेस्सा वि। ४०. (१) तेउलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेंति० पुच्छा। गोयमा! नो नेरतियाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणि०, मणुस्सउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति। (२) जइ देवाउयं पकरेंति०, तहेव। ४१. तेउलेस्सा णं भंते! जीवा अकिरियावादी किं नेरइयाउयं० पुच्छा। गोयमा! नो नेरतियाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति। ४२. एवं अन्नाणियवाई वि, वेणइयवादी वि। ४३. जहा तेउलेस्सा एवं पम्हलेस्सा वि, सुक्कलेस्सा नेयव्वा। ४४. अलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावादी किं णेरतियाउयं० पुच्छा। गोयमा! नो नेरतियाउयं पकरेंति, नोतिरि०, नो मणु० नो देवाउयं पकरेंति। ४५. कण्हपक्खिया णं भंते! जीवा अकिरियावाई किं नेरतियाउयं० पुच्छा। गोयमा! नेरइयाउयं पि पकरेंति, एवं चउव्विहं पि। ४६. एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि। ४७. सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा। ४८. सम्मद्दिट्ठी णं भंते! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं० पुच्छा। गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं, मणुस्साउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति। ४९. मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया। ५०. सम्मामिच्छादिट्ठी णं भंते! जीवा अन्नाणियवादी किं नेरइयाउयं०? जहा अलेस्सा। ५१. एवं वेणइयवादी वि। ५२. णाणी, आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य ओहिनाणी य जहा सम्मद्दिट्ठी। ५३. (१) मणपज्जवनाणी णं भंते!० पुच्छा। गोयमा! नो नेरतियाउयं पकरेंति, नो तिरिक्ख०, नो मणुस्स०, देवाउयं पकरेंति। (२) जदि देवाउयं पकरेंति किं भवणवासि० पुच्छा। गोयमा! नो भवणवासिदेवाउयं पकरेंति, नो वाणमंतर०, नो जोतिसिय०, वेमाणियदेवाउयं०। ५४. केवलनाणी जहा अलेस्सा। ५५. अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। ५६. सन्नासु चउसु वि जहा सलेस्सा। ५७. नोसन्नोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणी। ५८. सवेयगा जाव नपुंसगवेयगा जहा सलेस्सा। ५९. अवेयगा जहा अलेस्सा। ६०. सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। ६१. अकसायी जहा अलेस्सा। ६२. सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। ६३. अजोगी जहा अलेस्सा। ६४. सागारोवउत्ता य अणागारोवउत्ता य जहा सलेस्सा। [सु. ६५-९३. किरियावाइआइचउव्विहसमोसरणगयचउवीसइदंडएसु एक्कारसठाणेहिं आउयबंधपरूवणं] ६५. किरियावाई णं भंते! नेरइयाउयं० पुच्छा। गोयमा! नो नेरइयाउयं०, नो तिरिक्ख०, मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति। ६६. अकिरियावाई णं भंते! नेरइया० पुच्छा। गोयमा! नो नेरतियाउयं, तिरिक्खजोणियाउयं पि

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति। ६७. एवं अन्नाणियवादी वि, वेणइयवादी वि। ६८. सलेस्सा णं भंते ! नेरतिया किरियावादी किं नेरइयाउयं० ? एवं सव्वे वि नेरइया जे किरियावादी ते मणुस्साउयं एगं पकरेंति, जे अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी ते सव्वट्ठाणेसु नि नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति; नवरं सम्मामिच्छत्ते उवरिल्लहिं दोहि वि समोसरणेहिं न किंचि वि पकरेंति जहेव जीवपदे। ६९. एवं जाव थणियकुमारा जहेव नेरतिया। ७०. अकिरियावाई णं भंते ! पुढविकाइया० पुच्छा। गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं०, मणुस्साउयं०, नो देवाउयं पकरेंति। ७१. एवं अन्नाणियवादी वि। ७२. सलेस्सा णं भंते !०, एवं जं जं पयं अत्थि पुडविकाइयाणं तहिं तहिं मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु एवं चेव दुविहं आउयं पकरेंति, नवरं तेउलेस्साए न किं पि पकरेंति। ७३. १ एवं आउक्काइयाण वि, वणस्सतिकाइयाण वि। २ तेउकाइया०, वाउकाइया०, सव्वट्ठाणेसु मज्झिकेसु दोसु समोसरणेसु नो नेरइयाउयं पक०, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, नो मणुयाउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति। ७४. बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं जहा पुढविकाइयाणं, नवरं सम्मत्तनाणेसु न एक्कं पि आउयं पकरेंति। ७५. किरियावाई णं भंते ! पंचेदियतिरिक्खजोणिया किं नेरइयाउयं पकरेंति० पुच्छा। गोयमा ! जहा मणपज्जवनाणी। ७६. अकिरियावादी अन्नाणियवादी वेणइयवादी य चउव्विंह पि पकरेंति। ७७. जहा ओहिया तहा सलेस्सा वि। ७८. कण्हलेस्सा णं भंते ! किरियावादी पंचिदियतिरिक्खजोणिया किं नेरइयाउयं० पुच्छा। गोयमा ! नो नेरतियाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं०, नो मणुस्साउयं०, नो देवाउयं पकरेंति। ७९. अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई चउव्विहं पि पकरेंति। ८०. जहा कण्हलेस्सा एवं नीललेस्सा वि, काउलेस्सा वि। ८१. तेउलेस्सा जहा सलेस्सा, नवरं अकिरियावादी अन्नाणियवादी वेणइयवादी य नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति। ८२. एवं पम्हलेस्सा वि, एवं सुक्कलेस्सा वि भाणियव्वा। ८३. कण्हपक्खिया तिहिं समोसरणेहिं चउव्विहं पि आउयं पकरेंति। ८४. सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा। ८५. सम्मद्दिट्ठी जहा मणपज्जवनाणी तहेव वेमाणियाउयं पकरेंति। ८६. मिच्छद्दिट्ठी जहा कण्हपक्खिया। ८७. सम्मामिच्छद्दिट्ठी ण एक्कं पि पकरेंति जहेव नेरतिया। ८८. नाणी जाव ओहिनाणी जहा सम्मद्दिट्ठी। ८९. अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। ९०. सेसा जाव अणागारोवउत्ता सव्वे जहा सलेस्सा तहेव भाणियव्वा। ९१. जहा पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया भणिया एवं मणुस्साण वि भाणियव्वा, नवरं मणपज्जवनाणी नोसन्नोवउत्ता य जहा सम्मद्दिट्ठी तिरिक्खजोणिया तहेव भाणियव्वा। ९२. अलेस्सा, केवलनाणी, अवेदका, अकसायी, अजोगी य, एए न एगं पि आउयं पकारेंति जहा ओहिया जीवा, सेसं तहेव। ९३. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा। [सु. ९४-१२५. किरियासाइआइचउव्विहसमोसरणगएसु जीव-चउवीसइदंडएसु एक्कारसठाणेहिं भवसिद्धियत्त-अभवसिद्धियत्तपरूवणं] ९४. किरियावादी णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया ? गोयमा ! भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया। ९५. अकिरियावादी णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धिया० पुच्छा। गोयमा ! भवसिद्धिया वि, अभवसिद्धिया वि। ९६. एवं अन्नाणियवादी वि, वेणइयवादी वि। ९७. सलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं भव० पुच्छा। गोयमा ! भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया। ९८. सलेस्सा णं भंते ! जीवा अकिरियावादी किं भव० पुच्छा। गोयमा ! भवसिद्धिया वि, अभवसिद्धिया वि। ९९. एवं अन्नाणियवादी वि, वेणइयवादी वि, जहा सलेस्सा। १००. एवं जाव सुक्कलेस्सा। १०१. अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं भव० पुच्छा। गोयमा ! भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया। १०२. एवं एएणं अभिलावेणं कण्हपक्खिया तिसु वि समोसरणेसु भयणाए। १०३. सुक्कपक्खिया चतुसु वि समोसरणेसु भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया। १०४. सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा। १०५. मिच्छदिट्ठी जहा कण्हपक्खिया। १०६. सम्मामिच्छद्दिट्ठी दोसु वि समोसरणेसु जहा अलेस्सा। १०७. नाणी जाव केवलनाणी भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया। १०८. अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। १०९. सण्णासु चउसु वि जहा सलेस्सा। ११०. नोसण्णोवउत्ता जहा सम्मद्दिट्ठी। १११. सवेयगा जाव नपुंसगवेयगा जहा सलेस्सा। ११२. अवेयगा जहा सम्मद्दिट्ठी। ११३. सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। ११४. अकसायी जहा सम्मद्दिट्ठी। ११५. सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। ११६.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अजोगी जहा सम्मद्दिट्ठी। ११७. सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा। ११८. एवं नेरतिया वि भाणियव्वा, नवरं नायव्वं जं अत्थि। ११९. एवं असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा। १२०. पुढविकाइया सव्वट्ठाणेसु वि मज्झिल्लेसु दोसु वि समोसरणेसु भवसिद्धिया वि, अभवसिद्धिया वि। १२१. एवं जाव वणस्सतिकाइय त्ति। १२२. बेइंदिय-तेइंदिय-चतुरिंदिया एवं चेव, नवरं सम्मत्ते, ओहिए नाणे, आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, एएसु चेव दोसु मज्झिमेसु समोसरणेसु भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया, सेसं तं चेव। १२३. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया, नवरं जं अत्थि। १२४. मणुस्सा जहा ओहिया जीवा। १२५. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ॥३०.१॥ ☆☆☆ **बीओ उद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १-४. अणंतरोववन्नयचउवीसइदंडएसु एक्कारसठाणेहिं किरियावाइआइसमोसरणपरूवणं] १. अणंतरोववन्नगा णं भंते! नेरइया किं किरियावादी० पुच्छा। गोयमा! किरियावाई वि जाव वेणइयवाई वि। २. सलेस्सा णं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरतिया किं किरियावादी० ? एवं चेव। ३. एवं जहेव पढमुद्देसे नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा, नवरं जं जस्स अत्थि अणंतरोववन्नगाणं नेरइयाणं तं तस्स भाणियव्वं। ४. एवं सव्वजीवाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं अणंतरोववन्नगाणं जहिं जं अत्थि जहिं तं भाणियव्वं।[सु. ५-१०. किरियावाइआइचउव्विहसमोसरणगएसु अणंतरोववन्नयचउवीसइदंडएसु एक्कारसठाणेहिं आउयबंधनिसेहपरूवणं] ५. किरियावाई णं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति० पुच्छा। गोयमा! नो नेरतियाउयं पकरेंति, नो तिरि०, नो मणु०, नो देवाउयं पकरेंति। ६. एवं अकिरियावाई वि, अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाई वि। ७. सलेस्सा णं भंते! किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं० पुच्छा। गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, जाव नो देवाउयं पकरेंति। ८. एवं जाव वेमाणिया। ९. एवं सव्वट्ठाणेसु वि अणंतरोववन्नगा नेरइया न किंचि वि आउयं पकरेंति जाव अणागारोवउत्त त्ति। १०. एवं जाव वेमाणिया, नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं। [सु. ११-१६. किरियावाइआइचउव्विहसमोसरणगएससु अणंतरोववन्नयचउवीसइदंडएसु एक्कारसठाणेहिं भवसिद्धियत्त-अभवसिद्धियत्तपरूवणं] ११. किरियावाई णं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ? गोयमा! भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया। १२. अकिरियावाई णं० पुच्छा। गोयमा! भवसिद्धिया वि, अभवसिद्धिया वि। १३. एवं अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाई वि। १४. सलेस्सा णं भंते! किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया ? गोयमा! भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया। १५. एवं एएणं अभिलावेणं, नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणितव्वं। इमं से लक्खणं-जे किरियावादी सुक्कपक्खिया सम्मामिच्छद्दिट्ठी य एए सव्वे भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया। सेसा सव्वे भवसिद्धिया वि, अभवसिद्धिया वि। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ॥३०.२ उद्दे०॥ ☆☆☆ **तइओ उद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. परंपरोववन्नयचउवीसइदंडएसु एक्कारसठाणेहिं पढमुद्देसाणुसारेण परूवणनिद्देसो] १. परंपरोववन्नगा णं भंते! नेरइया किरियावादी० ? एवं जहेव ओहिओ उद्देसओ तहेव परंपरोववन्नएसु वि नेरइवाईओ, तहेव निरवसेसं भारियव्वं, तहेव तियदंडसंगहिओ। सेवं भंते! सेवं भंते! जाव विहरइ। ॥३०.३॥ ☆☆☆ **चउत्थाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा** ☆☆☆ [सु. १. छव्वीदइमसयकमेण चउत्थाइएक्कारसमउद्देसाणं पढमुद्देसाणुसारेण परूवणनिद्देसो] १. एवं एएणं कमेणं जच्चेव बंधिसए उद्देसगाणं परिवाडी सच्चेव इहं पि जाव अचरिमो उद्देसो, नवरं अणंतरा चत्तारि वि एक्कगमगा। परंपरा चत्तारि वि एक्कगमएणं। एवं चरिमा वि, अचरिमा वि एवं चेव, नवरं अलेस्सो केवली अजोगी य न भण्णति। सेसं तहेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। एते एक्कारस उद्देसगा। ॥३०.४-११॥ **॥समवसरणसयं समत्तं॥३०॥ एगतीसइमं सयं**-उववायसयं ☆☆☆ **पढमो उद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. पढमुद्देसस्सुवुग्घाओ] १. रायगिहे जाव एवं वयासी-- [सु. २. खुड्डजुम्मस्स भेयचउक्कं] २. (१) कति णं भंते! खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता ? गोयमा! चत्तारि खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता तं जहा-कडजुम्मे, तेयोए, दावरजुम्मे, कलियोए। (२) से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-चत्तारि खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता, तं जहा कडजुम्मे जाव कतियोगे ? गोयमा! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए से त्तं खुड्डागकडजुम्मे। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से त्तं खुड्डागतेयोगे। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए से त्तं खुड्डागदावरजुम्मे। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जसिए से त्तं खुड्डागलियोगे। सितेणट्ठेणं जाव कलियोगे।[सु. ३-१४. चउव्विहखुड्डगजुम्मनेरइयाणं उववायं पडुच्च विविहा परूवणा] ३. खुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख० पुच्छा। गोयमा! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, एवं नेरतियाणं उववातो जहा वक्कंतीए तहा भाणितव्वो। ४. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? गोयमा! चत्तारि वा, अट्ठ वा, बारस वा, सोलस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति। ५. ते णं भंते! जीवा कहं उववज्जंति ? गोयमा! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाण० एवं जहा पंचवीसतिमे सते अट्ठमुद्देसए नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा (स० २५ उ० ८ सु० २-८) जाव आयप्पयोगेण उववज्जंति, नो परप्पयोगेण उववज्जंति। ६. रतणप्पभपुढविखुड्डाकडजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति ? एवं जहा ओहियनेरइयाणं वत्तव्वया सच्चेव रयणप्पभाए वि भाणियव्वा जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जंति। ७. एवं सक्करप्पभाए वि। ८. एवं जाव अहेसत्तमाए। एवं उववाओ जहा वक्कंतीए। असण्णी खलु पढमं दोच्चं च सरीरसवा ततिय पक्खी।० गाहा (पण्णवणासुत्तं सु. ६४७-४८, गा० १८३-८४) ।एवं उववातेयव्वा। सेसं तहेव। ९. खुड्डातेयोगनेरतिया णं भंते! कओ उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो० ? उववातो जहा वक्कंतीए। १०. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? गोयमा! तिन्नि वा, सत्त वा, एक्करस वा, पन्नरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति। सेसं जहा कडजुम्मस्स। ११. एवं जाव अहेसत्तमाए। १२. खुड्डागदावरजुम्मनेरतिया णं भंते! कओ उववज्जंति ? एवं जहेव खुड्डाकडजुम्मे, नवरं परिमाणं दो वा, छ वा, दस वा, चोद्दस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा। सेसं तं चेव जाव अहेसत्तमाए। १३. खुड्डाकलियोगनेरतिया णं भंते! कतो उववज्जंति० ? एवं जहेव खुड्डाकडजुम्मे,नवरं परिमाणं एक्को वा, पंच वा, नव वा, तेरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति। सेसं तं चेव। १४. एवं जाव अहेसत्तमाए। सेवं भंते! सेवं भंते! जाव विहरति। ।।३१ सते १ उद्दे०।।☆☆☆ **बिइओ उद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १-९. चउव्विहखुड्डगजुम्मकण्हलेस्सनेरइयाणं उववायं पडुच्च विविहा परूवणा] १. कण्हलेस्सखुड्डाकडजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति ?० एवं चेव जहा ओहियगमो जाव नो परप्पयोगेण उववज्जंति, नवरं उववातो जहा वक्कंतीए धूमप्पभापुढविनेरइयाणं। सेसं तं चेव। २. धूमप्पभपुढविकण्हलेस्सखुड्डाकडजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति ? एवं चेव निरवसेसं। ३. एवं तमाए वि, अहेसत्तमाए वि, नवरं उववातो सव्वत्थ जहा वक्कंतीए। ४. कण्हलेस्सखुड्डागतेयागनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति ?० एवं चेव, नवरं तिन्नि वा, सत्त वा, एक्कारस वा, पण्णरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा। सेसं तं चेव। ५. एवं जाव अहेसत्तमाए वि। ६. कण्हलेस्सखुड्डागदावरजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति ?० एवं चेव, नवरं दो वा, छ वा, दस वा, चोद्दस वा। सेसं तं चेव। ७. एवं धूमप्पभाए वि जाव अहेसत्तमाए। ८. कण्हलेस्सखुड्डाकलियोगनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति ?० एवं चेव, नवरं एक्को वा, पंच वा, नव वा, तेरस वा,संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा। सेसं तं चेव। ९. एवं धूमप्पभाए वि, तमाए वि, अहेसत्तमाए वि। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ।।३१. बितिओ।।☆☆☆**तइओ उद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १-४. चउव्विहखुड्डगजुम्मनीललेस्सनेरइयाणं उववायं पडुच्च विविहा परूवणा] १. नीललेस्सखुड्डाकडजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति ?० एवं जहेव कण्हलेस्सखुड्डाकडजुम्मा, नवरं उववातो जो वालुयप्पभाए। सेसं तं चेव। २. वालुयप्पभपुढविनीललेस्सखुड्डाकडजुम्मनेरइया० ? एवं चेव। ३. एवं पंकप्पभाए वि, एवं धूमप्पभाए वि। ४. एवं चउसु वि जुम्मेसु, नवरं परिमारं जाणियव्वं, परिमाणं जहा कण्हलेस्सउद्देसए। सेसं तहेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ।।३१. ततिओ।। ☆☆☆**चउत्थो उद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १-४. चउव्विहखुड्डगजुम्मकाउलेस्सनेरइयाणं उववायं पडुच्च विविहा परूवणा] १. काउलेस्सखुड्डाकडजुम्मनेरतिया णं भंते! कओ उववज्जंति ?० एवं जहेव कण्हलेस्सखुडाकडजुम्म०, नवरं उववातो जो रयणप्पभाए। सेसं तं चेव। २. रयणप्पभपुढविकाउलेस्सखुड्डाकडजुम्मनेरतिया णं भंते! कओ उववज्जंति ? एवं चेव। ३. एवं सक्करप्पभाए वि, एवं वालुयप्पभाए वि। ४. एवं चउसु वि जुम्मेसु,

नवरं परिमाणं जाणियव्वं, परिमाणं जहा कण्हलेस्सउद्देसए। सेसं एवं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०।॥ ३१.४॥ ☆☆☆ **पंचमो उद्देसओ** ☆☆☆[सु. १-४. चउव्विहखुड्डगजुम्मभवसिद्धियनेरइयाणं उववायं पडुच्च विविहा परूवणा] १. भवसिद्धीखुड्डाकडजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति ? किं नेरइए० ? एवं जहेव ओहिओ गमओ तहेव निरवसेसं जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जंति। २. रतणप्पभपुढविभवसिद्धीयखुड्डाकडजुम्मनेरतिया णं० ? एवं चेव निरवसेसं। ३. एवं जाव अहेसत्तमाए। ४. एवं भवसिद्धीयखुड्डातेयोगनेरइया वि, एवं जाव कलियोगो त्ति, नवरं परिमाणं जाणियव्वं, परिमाणं पुव्वभणियं जहा पढमुद्देसए। सेवं भंते! सेवं भंते।॥ ३१.५॥☆☆☆ **छट्ठो उद्देसओ** ☆☆☆[सु. १-२. चउव्विहखुड्डगजुम्मकण्हलेस्सभवसिद्धियनेरइयाणं उववायं पडुच्च परूवणा] १. कण्हलेस्सभवसिद्धीयखुड्डाकडजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति ?० एवं जहेव ओहिओ कण्हलेस्सउद्देसओ तहेव निरवसेसं। चउसु वि जुम्मेसु भाणियव्वो जाव २. अहेसत्तमपुढविकण्हलेस्सखुड्डाकलियोगनेरइया णं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ३१. ६ ॥☆☆☆ **सत्तमो उद्देसओ**☆☆☆[सु. १ चउव्विहखुड्डगजुम्मनीललेस्सभवसिद्धियनेरइयाणं उववायं पडुच्च परूवणा] १. नीललेस्सभवसिद्धीय० चउसु वि जुम्मेसु तहेव भाणियव्वा जहा आहियनीललेस्सउद्देसए। सेवं भंते! सेवं भंते! जाव विहरति।॥ ३१.७ ॥☆☆☆ **अट्ठमो उद्देसओ** ☆☆☆[सु. १. चउव्विहखुड्डगजुम्मकाउलेस्सभवसिद्धियनेरइयाणं उववायं पडुच्च परूवणा] १. काउलेस्सभवसिद्धीय० चउसु वि जुम्मेसु तहेव उववातेयव्वा जहेव ओहिए काउलेस्सउद्देसए। सेवं भंते! सेवं भंते! जाव विहरति।॥ ३१.८॥ ☆☆☆ **नवमाइबारसमपज्जंता उद्देसओ** ☆☆☆[सु. १. पंचमाइअट्ठमउद्देसाणुसारेण अभवसिद्धियनेरइवत्तव्वयानिद्देसो]१. जहा भवसिसिद्धएहिं चत्तारि उद्देसगा भणिया एवं अभवसिद्धीएहिं वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव काउलेस्सउद्देसओ त्ति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०।॥ ३१.९-१२॥☆☆☆ **तेरसमाइसोलसमपज्जंता उद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. पंचमाइअट्ठमउद्देसाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं सम्मद्दिट्ठिनेरइयवत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं सम्मदिट्ठीहि वि लेस्सासंजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं सम्मद्दिट्ठी पढम - बितिएसु दोसु वि उद्देसएसु दोसु वि उद्देसएसु अहेसत्तमपुढवीए न उववातेयव्वो। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०।॥ ३१.१३ -१६ ॥ ☆☆☆**सत्तरमाइवीसमपज्जंता उद्देसओ**☆☆☆ [सु. १. पंचमाइअट्ठमउद्देसाणुसारेणं मिच्छादिट्ठिनेरइयवत्तव्वयानिद्देसो] १. मिच्छादिट्ठी वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहा भवसिद्धीयाणं। सेवं भंते! सेवं भंते!०॥ ३१.१७ - २० ॥॥ ☆☆☆ **एगवीसइमाइचउव्वीसइमपज्जंता उद्देसओ** ☆☆☆ सु. १. एवं कण्हपपक्खिएहि वि लेस्सासंजुत्ता चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहेव भवसिद्धीएहिं। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०।॥ ३१.२१ - २४ ॥☆☆☆ **पंचवीसमाइअट्ठावीसइमपज्जंता उद्देसओ**☆☆☆[सु. १. पंचमाइअट्ठमउद्देसाणुसारेणं सुक्कपक्खियनेरइयवत्तव्वयानिद्देसो] १. सुक्कपक्खिएहिं एवं चेव चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव - वालुयभपुढविकाउलेस्ससुक्कपक्खियखुड्डाकलियोगनेरतिया णं भंते! कतो उववज्जंति ?० तहेव जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जंति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। सव्वे वि एए अट्ठावीसं उद्देसगा।॥ ३१.२५ - २८ ॥॥ 卐卐卐**उववायसयं समत्तं ॥३१॥**卐卐卐 **बत्तीसइमं सयं** 卐卐卐- उव्वट्टणासयं ☆☆☆**पढमो उद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १-६. चउव्विहखुड्डगजुम्मनेरइयाणं उव्वट्टणं पडुच्च विविहा परूवणा] १. खुड्डाकडजुम्मनेरइया णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ?, किं नेरइएसु उववज्जंति ? किं तिरिक्खजोणिएसु उवव० ? उव्वट्टणा जहा वक्कंतीए। २. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उव्वट्टंति ? गोयमा! चत्तारि वा, अट्ठ वा, बारस वा, सोलस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उव्वट्टंति। ३. ते णं भंते! जीवा कहं उव्वट्टंति ? गोयमा! से जहानामए पवए०, एवं तहेव(स० २५ उ० ८ सु० २ -८)। एवं सो चेव गमओ जाव आयप्पयोगेणं उव्वट्टंति, नो परप्पयोगेणं उव्वट्टंति। ४. रयप्पभापुढविखुड्डाकड० ? एवं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रयणप्पभा वि । ५. एवं अहेसत्तमाए । ६. एवं खुड्डातेयोग - खुड्डावाद(दाव)रजुम्म-खुड्डाकलियोग०, नवरं परिमाणं जाणियव्वं । सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ।। ३२.१ ।।☆☆☆ **बिइयाइअट्ठावीसइमपज्जंता उद्देसगा**☆☆☆ [सु. १. चउव्विहखुड्डगजुम्मकण्हलेस्सनेरइयाणं उव्वट्टणं पपडुच्च विविहा पपरूवणाइ] १. कण्हलेस्सखुड्डाकडजुम्मनेरइया० ? एवं एएणं कमेणं जहेव उववायसए (स० ३१) अट्ठावीसं उद्देसगा भणिया तहेव उव्वट्टणासए अिट्ठरवीसं उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा, नवरं 'उव्वट्टंति' त्ति अभिलावो भाणियव्वो । सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ।।। ३२.२ - २८ ।। 卐卐卐 ।।**उव्वट्टणासयं समत्तं** ।।३२।। **तेत्तीसइमं सयं** 卐卐卐- बारस एगिंदियसयाणि ☆☆☆**पढमे एगिंदियसए पढमो उद्देसओ** ☆☆☆[सु. १-१६. एगिंदियभेय - पभेया, तेसु य कम्मपगडिबंध - वेदणपरूवणं] १. कतिविधा णं भंते ! एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया पन्नत्ता, तंजहा - पुढविकाइया जाव वणस्सतिकाइया । २. पुढविकाइया णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा - पज्जत्ता सुहुमपुढविकाइया य । ३. सुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा !दुविहा पन्नत्ता, तं जहा पज्जत्ता सुहुमपुढविकाइया य, अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइया य । ४. बायरपुढविकाइया णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता ? एवं चेव । ५. एवं आउकाइया वि चउक्कएणं भेएणं णेतव्वा । ६. एवं जाव वणस्सतिकाइया । ७. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ, तं जहा - नाणावरणिज्जं जाव अंतरायियं । ९. अपज्जत्ताबायरपुढविकायियाणं भंते ! कति कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? एवं चेव । १०. पज्जत्ताबायरपुढविवकायियाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ० ? एवं चेव । ११. एवं एएणं कमेणं जाव बायरवणस्सइयाणं पज्जत्तगाणं ति । १२. अपज्जत्तासुहुमपुढविकायिया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ? गोयमा !सत्तविहबंधगा वि, अट्ठविहबंधगा वि । सत्त बंधमाणा आउयवज्वत्त कम्मपगडीओ बंधंति । अट्ठ बंधमाणा पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ बंधंति । १३. पज्जत्तासुहुमपुढविकायिया णं भंते ! कति कम ? एवं चेव । १४. एवं सव्वे जाव - पज्जत्ताबायरवणस्सतिकायिया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ? एवं चेव । १५. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेंति ? गोयमा !चोस्सस कम्मप्पगडीओ वेदेंति, तं जहा - नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं, सोतिंदियवज्झं चक्खिंदियवज्झं घाणिंदियवज्झं जिब्भिंदियवज्झं इत्थिवेदवज्झं पुरिसवेदवज्झं । १६. एवं चउक्कएणं भेएणं जाव - पज्जत्ताबायरवणस्सतिकाइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेंति ? एवं चेव चोद्दस । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ३३-१.१ ।।

☆☆☆ **पढमे एगिंदियसए बिइओ उद्दसओ** ☆☆☆ [सु. १-१०. अणंतरोववन्नगएगिंदियभेय-पभेया, तेसु य कम्मपगडिबंध - वेयणपरूवणं]१. कतिविधा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता, तं जहा - पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया । २. अणंतरोववन्नगा णं भंते ! पुढविकाइया कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा !दुविहा पन्नत्ता, तं जहा सुहुमपुढविकायिया य बादरपुढविकायिया य । ३. एवं दुपएणं भेएणं जाव वणस्सतिकाइया । ४. अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ, तं जहा नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । ५. अणंतरोववन्नगबादरपुढविकायियाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पयडीओ पन्नत्ताओ, तं जहा नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । ६. एवं जाव अणंतरोववन्नगबादरवणस्सइकायियाणं ति । ७. अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविकायिया णं भंते ! कति कम्मगडीओ बंधंति ? गोयमा ! आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधंति । ८. एवं जाव अणंतरोववन्नगसुमपुढविकायिया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेंति ? गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेंति, तं जहा नाणावरणिज्जं तहेव जाव पुरिववेदवज्झं । १०. एवं जाव अणंतरोववन्नगबायरवणस्सतिकाइय त्ति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ।। ३३-१.२ ।।☆☆☆**पढमे एगिंदियसए तइओ उद्देसओ** ☆☆☆[सु. १-२. परंपरोववन्नगएगिंदियभेय-पभेया, तेसु य कम्मपगडिबंध वेयणपरूवणं] १. कतिविधा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता? गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगअपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ ? एवं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एतेणं अभिलावेणं जहा ओहिउद्देसए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव चोद्दस वेदेंति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥ ३३-१.३ ॥☆☆☆ **पढमे एगिंदियसए चउत्थो उद्देसओ** ☆☆☆ [सु. १. बिइउद्देसाणुसारेणं अणंतरोगाढएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. अणंतरोगाढा जहा अणंतरोववन्नगा। ॥ ३३ - १.४ ॥ **पढमे एगिंदियसए पंचमो उद्देसओ** [सु. १. तइउद्देसाणुसारेणं परंपरोगाढएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. परंपरोगाढा जहा परंपरोववन्नगा। ॥ ३३-१.५ ॥ **पढमे एगिंदियसए छट्ठो उद्देसओ** [सु. १. बिइउद्देसाणुसारेणं अणंतराहारगएगिंदियवत्तयानिद्देसो] १. अणंतराहारगा जहा अणंतरोववन्नगा। ॥ ३३-१.६ ॥ **पढमे एगिंदियसए सत्तमो उद्देसओ** [सु. १. तइउद्देसाणुसारेणं परंपराहारगएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. परंपराहारगा जहा परंपरोववन्नगा। ॥ ३३-१.७ ॥ **पढमे एगिंदियसए अट्ठमो उद्देसओ** [सु. १. बिइउद्देसाणुसारेणं अणंतरपज्जत्तगएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. अणंतरपज्जत्तगा जहा अणंतरोववन्नगा। ॥ ३३-१.८ ॥ **पढमे एगिंदियसए नवमो उद्देसओ** [सु. १. तइउद्देसाणुसारेणं चरिमएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. चरिमा वि जहा परंपरोववन्नगा। ॥ ३३-१.९ ॥ **पढमे एगिंदियसए दसमो उद्देसओ** [सु. १. तइउद्देसाणुसारेणं चरिमएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. चरिमा वि जहा परंपरोववन्नगा। ॥ ३३-१.१० ॥ **पढमे एगिंदियसए एक्कारसमो उद्देसओ** [सु. १. तइउद्देसाणुसारेणं अचरिमएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं अचरिमा वि। ॥ ३३-१.११ ॥ एवं एते एक्कारस उद्देसगा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरति। ॥ पढमं एगिंदियसयं समत्तं ॥३३-१ ॥ **बिइए एगिंदियसए पढमो उद्देसओ** [सु. १-६. कण्हलेस्सएगिंदियभेय-पभेया, तेसु य कम्मपगडिबंधवेयणपरूवणं] १. कतिविधा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता, तं जहा पुढविकाइया जाव वणस्सतिकाइया। २. कण्हलेस्सा णं भंते ! पुढविकाइया कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा सुहुमपुढविकाइया य बादरपुढविकाइया य। ३. कण्हलेस्सा णं भंते ! सुहुमपुढविकायिया कतिविहा पन्नत्ता ? एवं एएणं अभिलावेणं चउक्कओ भेदो जहेव ओहिउद्देसए। ४. कण्हलेस्सअपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव पन्नत्ताओ। ५. तहेव बंधंति। ६. तहेव वेदेंति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥ ३३-२.१ ॥ **बिइए एगिंदियसए बिइओ उद्देसओ** [सु. १-२. अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सएगिंदियभेय-पभेया, तेसु य कम्मपगडिबंध - वेयणपरूवणं]१. कतिविधा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया०। एवं एएणं अभिलावेणं तहेव दुपओ भेदो जाव वणस्सतिकाइय त्ति। २. अणंतरोववन्नगकणकहलेस्ससुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिओ अणंतरोववन्नगाणं उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥ ३३-२.२ ॥ **बिइए एगिंदियसए तइओ उद्देसओ** [सु. १-२. परंपरोववन्नगकण्हलेस्सएगिंदियभेय-पभेया, तेसु य कम्मपगडिबंध-वेदणपरूवणं] १. कतिविधा णं भंते ! परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा० एगिंदिया पन्नत्ता, तं जहा-पुढविकाइया०, एवं एएणं अभिलावेणं चउक्कओ भेदो जाव वणस्सतिकाइय त्ति। २. परंपरोववन्नगकण्हलेस्सअपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ परंपरोववन्नग-उद्देसओ तहेव वेदेंति। ॥ ३३-२.३ ॥ **बिइए एगिंदियसए चउत्थाइएगारसमपज्जंता उद्देसगा** [सु. १. पढमएगिंदियसयाणुसारेणं चउत्थाइएक्करसमपज्जंतउद्दसवत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिए एगिंदियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहेव कण्हलेस्ससते वि भाणियव्वा जाव अचरिमकण्हलेस्सा एगिंदिया। ॥ ३३-२.४-११ ॥ **॥बितियं एगिंदियसयं समत्तं॥ ३३-२॥ तइए एगिंदियसए पढमाइएक्करसपज्जंता उद्देसगा** सु. १. बिइयएगिंदियसयाणुसारेणं नीललेस्सएगिंदियवत्तव्वया निद्देसो १. जहा कण्हलेस्सहिं एवं नीललेस्सेहि वि सयं भाणितव्वं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|| ३३-३.१-११ || **|| ततियं एगिंदियसयं समत्तं || ३३-३ ||** **चउत्थे एगिंदियसए पढमाइएक्करसपज्जंता उद्देसगा** [सु. १. बिइयएगिंदियसयाणुसारेणं काउलेस्सएगिंदियत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं काउलेसस्सेहि वि सयं भाणितव्वं, नवरं 'काउलेस्स' त्ति अभिलावो। ३३-४.१-११ **|| चउत्थं एगिंदियसयं समत्तं ||३३-४||** **पंचमे एगिंदियसए पढमाइएक्करसपज्जंता उद्देसगा** [सु. १-२. पढमएगिंदियसयाणुसारेणठ भवसिद्धियएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो]१. कतिविहा णं भंते ! भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता, तं जहा-पुढविकाइया जाव वणस्संतिकाइया। भेदो चउक्कओ जाव वणस्सतिकाय त्ति। २. भवसिद्धियअपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? एवं एतेणं अभिलावेणं जहेव पढमिल्लं एगिंदियसयं तहेव भवसिद्धीयसयं पि भाणियव्वं। उद्देसगपरिवाडी तहेव जाव अचरिम त्ति। || ३३-५.१-११ || **|| पंचमं एगिंदियसयं समत्तं ||३३-५||** **छट्ठे एगिंदियसए पढमाइएक्करसपज्जंता उद्देसगा** [सु. १-११. पढमएगिंदियसयाणुसारेणं कण्हलेस्स-भवसिद्धियएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो]१. कतिविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पन्नत्ता, पुढविकाइया जाव वणस्सतिकाइया। २. कण्हलेस्सभवसिद्धीयपुढविकाइया णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-सुहुमपुढविकाइया य, बायरपुढविकाइया य। ३. कण्हलेस्सभवसिद्धीयसुहुमपुढविकायिया णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। ४. एवं बायरा वि। ५. एवं एतेणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेदो भाणियव्वो। ६. कण्हलेस्सभवसिद्धरयअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्पगडीओ पन्नत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव जाव वेदेंति त्ति। ७. कतिविधा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा जाव वणस्सतिकाइया। ८. अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धीयपुढविकाइया णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-सुहुमपुढविकाइया य, बायरपढविकाइया य। ९. एवं दुपओ भेदो। १०. अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धीयसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ अणंतरोववन्नो उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति। ११. एवं एतेणं अभिलावेणं एक्कारस वि उद्देसगा तहेव भाणियव्वा जहा ओहियसए जाव अचरिमो त्ति। || ३३-६.१-११ || **|| छट्ठं एगिंदियसतं समत्तं ||** ३६-६ || **सत्तमे एगिंदियसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा** [सु. १. छट्ठएगिंदियसयाणुसारेणं नीललेस्सभवसिद्धियएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. जहा कण्हलेस्सभवसिद्धीए सयं भणियं एवं नीललेस्सभवसिद्धीएहि वि सयं भाणियव्वं। || ३३-७.१-११ || || सत्तमं एगिंदियसतं समत्तं || ३३-७ || **अट्ठमे एगिंदियसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा** [सु. १. छट्ठएगिंदियसयाणुसारेणं काउलेस्सभवसिद्धियएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं काउलेस्सभवसिद्धीएहि वि सयं। || ३३-८.१-११ || **|| अट्ठमं एगिंदियसयं समत्तं ||**३३-८ || नवमे एगिंदियसए पढमाइनवमपज्जंता उद्देसगा [सु. १-२. पंचमएगिंदियसयउद्देसनवगाणुसारेणं अभवसिद्धियएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. कतिविधा णं भंते ! अभवसिद्धीया एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा अभवसिद्धीया० पन्नत्ता, तं जहा-पुढविकाइया जाव वणस्सतिकायिया। २. एवं जहेव भवसिद्धीयसयं, नवरं नव उद्देसगा, चरिम-अचरिम-उद्दसकवज्जं। सेसं तहेव। || ३३-९.१-९ || **|| नवमं एगिंदियसयं समत्तं** || ३३-९ || दसमे एगिंदियसए पढमाइनवमपज्जंता उद्देसगा [सु. १. छट्ठएगिंदियसयउद्देसनवगाणुसारेणं कण्हलेस्सअभवसिद्धियएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं कण्हलेस्सअभवसिद्धीयसयं पि। || ३३-१०.१-९ || **|| दसमं एगिंदियसयं समत्तं ||** ३३-१० || एक्कारसमे एगिंदियसए पढमाइनवमपज्जंता उद्देसगा [सु. १. सत्तमएगिंदियसयउद्देसनवगाणुसारेणं नीललेस्सअभवसिद्धियएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. नीललेस्सअभवसिद्धीयएगिंदिएहि वि सयं। || ३३-११.१-९ ||३३-११ || बारसमे एगिंदियसए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमाइनवमपज्जंता उद्देसगा [सु. १. अट्ठमएगिंदियसयउद्देसनवगाणुसारेणं काउलेस्सअभवसिद्धियएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] **१. काउलेस्सअभवसिद्धीएहि वि** सयं। २. एवं चत्तारि ९-१२ वि अभवसिद्धीयसताणि, नव नव उद्देसगा भवंति। ॥ ३३-१२.१-९ ॥ ३. एवं एयाणि **बारस एगिंदियसयाणि भवंति। 卐卐卐॥ तेत्तीसइमं सयं समत्तं ॥ ३३ ॥ चोत्तीसइमं सयं 卐卐卐**-बारस एगिंदियसेढिसयाइं पढमे एगिंदियसेढिसए पढमो उद्देसओ [सु. १. एगिंदियभेय-पभेयपरूवणं] १. कतिविहा णं भंते ! एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया पन्नत्ता, तं जहा-पुढविकाइया जाव वणस्सतिकाइया। एवमेते वि चउक्कएणं भेएणं भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइया। [सु. २-६८. नरयपुढविचरिमंत-मणुस्सखेत्ताइसमोहएसु एगिंदिएसु विग्गहसमयं पडुच्च वित्थरओ परूवणं] २. (१) अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कतिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-एगसमइएण वा दुसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा ? एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेडीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-उज्जुयायता सेढी १, एगओवंका २, दुहतोवंका ३, एगतोखहा ४, दुहओखहा ५, चक्कवाला ६, अद्धचक्कवाला ७। उज्जुयायताए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहे?णं उववज्जेज्जा, एगओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उवज्जेज्जा दुहओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। सेतेणट्ठेणं गोयमा ! जाव उववज्जेज्जा। १। ३. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए स णं भंते ! कतिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा, सेसं तं चेव जाव सेतेणट्ठेणं जाव विग्गहेणं उववज्जेज्जा। २। ४. एवं अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइओ पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहणावेत्ता पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते बायरपुढविकाइएसु अपज्जत्तएसु उववातेयव्वो। ३। ५. ताहे तेसु चेव पज्जत्तएसु। ४। ६. एवं आउकाइएसु वि चत्तारि आलावगा-सुहुमेहिं अपज्जत्तएहिं १, ताहे पज्जत्तएहिं २, बादरेहिं अपज्जत्तएहिं ३, ताहे पज्जत्तएहिं उववातेयव्वो ४। ७. एवं चेव सुहुमतेउकाइएहि वि अपज्जत्तएहिं १, ताहे पज्जत्तएहिं उववातेयव्वो २। ८. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्ताबायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! कतिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? सेसं तं चेव ३। ९. एवं पज्जत्ताबायरतेउकाइयत्ताए उववातेयव्वो ४। १०. वाउकाइए सुहुम-बायरेसु जहा आउकाइएसु उववातिओ तहा उववातेयव्वो ४। ११. एवं वणस्सतिकाइएसु वि ४,=२०। १२. पज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए०, एवं पज्जत्तासुहुमपुढविकाइओ वि पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहणावेत्ता एएणं चेव कमेणं एएसु चेव वीससु ठाणेसु उववातेयव्वो जाव बायरवणस्सतिकाइएसु पज्जत्तएसुं ति।४०। १३. एवं अपज्जत्तबायरपुढविकाइओ वि।६०। १४. एवं पज्जत्ताबबायरपुढविकाइओ वि।८०। १५. एवं आउकाइओ वि चउसु वि गमएसु पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए एयाए चेव वत्तव्वयाए एएसु चेव वीसाए ठाणेसु उववातेयव्वो।१६०। १६. सुहुमतेउकाइओ वि अपज्जत्तओ पज्जत्तओ य एएसु चेव वीसाए ठाणेसु उववातेयव्वो ४० = २००। १७. अपज्जत्ताबयरतेउकाइए णं भंते ! मणुस्सखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! कतिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? सेसं तहेव जाव सेतेणट्ठेणं०। १ = २०१। १८. एवं पुढविकाइएसु चउव्विहेसु वि उववातेयव्वो। ३ = २०४। १९. एवं आउकाइएसु चउव्विहेसु वि। ४ = २०८। २०. तेउकाइएसु सुहुमेसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य एवं चेव उववातेयव्वो। २ =२१०। २१. अपज्जत्ताबादरतेउकाइए णं भंते ! मणुस्सखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्ताबायरतेउकायत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! कतिसस० ? सेसं तं चेव। १ = २११। २२. एवं पज्जत्ताबायरतेउकाइयत्ताए वि उववाएयव्वो। १ = २१२। २३. वाउकाइयत्ताए य, वणस्सतिकाइयत्ताए य जहा पुढविकाइएसु तहेव चउक्कएणं भेएणं उववाएयव्वो। ८ = २२०। २४. एवं पज्जत्ताबयरतेउकाइओ वि

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समयखेत्ते समोहणावेत्ता एएसु चेव वीसाए ठाणेसु उववातेयव्वो जहेव अपज्जत्तओ उववातिओ।२०। २५. एवं सव्वत्थ वि बायरतेउकाइया अपज्जत्तगा पज्जत्तगा य समयखेत्ते उववातेयव्वा, समोहणावेयव्वा वि=२४०। २६. वाउकाइया, वणस्सतिकाइया य जहा पुढविकाइया तहेव चउक्कएणं भएणं उववातेयव्वा जाव पज्जत्ताबायरवणस्सइमाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणेत्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए० पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते पज्जत्ताबायरवणस्सतिकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! कतिसम० ? सेसं तहेव जाव सेतेणट्ठेणं०। ८०+८०=४००। २७. अपज्जततासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! कइसमइएणं० ? सेसं तहेव निरवसेसं। २८. एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते सव्वपदेसु वि समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववातिया, एवं एएणं चेव कमेणं पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य समोहया पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववातेयव्वा तेणेव गमएणं। ४००=८००। २९. एवं एतेणं गमएणं दाहिणिल्ले चरिमंते समोहयाणं समयखेत्ते य, उत्तरिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाओ। ४००=१२००। ३०. एवं चेव उत्तरिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य समोहया, दाहिणिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववातेयव्वा तेणेव गमएणं। ४००=१६००। ३१. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उवव० ? एवं जहेव रयणप्पभाए जाव सेतेणट्ठेणं। ३२. एवं एएणं कमेणं जाव पज्जत्तएसु सुहुमतेउकाइएसु। ३३. (१) अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइए णं भंते ! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्ताबायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! कतिसमइ० पुच्छा। गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववज्जिज्जा। (२) से केणट्ठेणं० ? एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला। एगतोवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, दुहओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, सेतेणट्ठेणं०। ३४. एवं पज्जत्तएसु वि बायरतेउकाइएसु। सेसं जहा रतणप्पभाए। ३५. जे वि बायरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समयखेत्ते समोहया, समोहणित्ता दोच्चाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते पुढविकाइएसु चउव्विहेसु, आउकाइएसु चउव्विहेसु, तेउकाइएसु दुविहेसु, वाउकाइएसु चउव्विहेसु, वणस्सतिकाइएसु चउव्विधेसु उववज्जंति ते वि एवं चेव दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववातेयव्वा। ३६. बायरतेउकाइया अपज्जत्तगा पज्जत्तगा य जाहे तेसु चेव उववज्जंति ताहे जहेव रयणप्पभाए तहेव एगसमइय-दुसमइय-तिसमइया विग्गहा भाणियव्वा। सेसं जहेव रयणप्पभाए तहेव निरवसेसं। ३७. जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया एवं जाव अहेसत्तमाए भाणियव्वा। ३८. (१) अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइ, णं भंते ! अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! कतिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! तिसमइएण वा, चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति-तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं अहेलोयखेत्ततनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए एगपयरम्मि अणुसेढिं उववज्जित्तए से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, जे भविए विसेढिं उववज्जित्तए से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उवज्जेजा। सेतेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा। ३९. एवं पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए वि। ४०. एवं जाव पज्जत्तासुहुमतेउकाइयत्ताए। ४१.(१) अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! अहेलोग जाव समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्ताबायरतेउकाइयत्ताए उवज्जित्तए से णं भंते ! कतिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! दुसमइएण वा, तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा। (२) से केणट्ठेणं० ? एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-उज्जुआयता जाव अद्धचक्कवाला। एगतोवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, दुहतोवंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उवज्जेज्जा, सेतेणट्ठेण०। ४२. एवं पज्जत्तएसु वि, बायरतेउकाइएसु वि उववातेयव्वो। वाउकाइय-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वणस्सतिकाइयत्ताए चउक्कएणं भेएणं जहा आउकाइयत्ताए तहेव उववातेयव्वो। ४३. एवं जहा अज्जत्तासुहुमपुढविकाइयस्स गमओ भणिओ एवं पज्जत्तसुहुमपुढविकाइयस्स वि भाणियव्वो, तहेव बीसाए ठाणेसु उववातेयव्वो। ४४. अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहयओ एवं बायरपुढविकाइयस्स वि अपज्जत्तगस्स पज्जगसस्स य भाणियव्वं। ४५. एवं आउकाइयस्स चउव्विहस्स वि भाणियव्वं। ४६. सुहुमतेउकाइस्स दुविहस्स वि एवं चेव। ४७. (१) अपज्जत्ताबायरतेउकाइए णं भंते ! समयखेत्ते समोहते, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! दुसमइएण वा, तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा। (२) से केणट्ठेणं० ? अट्ठो तहेव सत्त सेढीओ। ४८. एवं जाव अपज्जत्तबायरतेउकाइए णं भंते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते पज्जत्तासुहुमतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते !० ? सेसं तं चेव। ४९. (१) अपज्जत्ताबायरतेउकाइए णं भंते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्ताबायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! कतिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा, दुसमइएण वा, तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा। (२) से केणट्ठेणं० ? अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ। ५०. एवं पज्जत्ताबादरतेउकाइयत्ताए वि। ५१. वाउकाइएसु, वणस्सतिकाइएसु य जहा पुढविकाइएसु उववातिओ तहेव चउक्कएणं भेएणं उववाएयव्वो। ५२. एवं पज्जत्ताबायरतेउकाइओ वि एएसु चेव ठाणेसु उववातेयव्वो। ५३. वाउकाइय-वणस्सतिकाइयाणं जहेव पुढविकाइयत्ते उववातिओ तहेव भाणियव्वो। से णं कतिस० ?। ५४. एवं उड्ढलोगखेत्तनालीए वि बाहिरिल्ले खेत्ते समोहयाणं अहेलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते उववज्जंताणं सो चेव गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव बायरवणस्सतिकाइओ पज्जत्तओ बादरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु उववातिओ। ५५. (१) अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहते, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा, दुसमइएण वा, तिसमइएण वा, चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति-एगसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा ? एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-उज्जुओयता जाव अद्धचक्कवाला। उज्जुआयताए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा; एगतोवंकाए सेडीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा; दुहओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंसि अणुसेढिं उववज्जित्तए से णं तिसमइएणं विग्गहेणठ उववज्जेज्जा, जे भविए विसेढिं उववज्जित्तए से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा; सेतेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा। ५६. एवं अपज्जतओ सुहुमपुढविकाइओ लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहंतो लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य सुहुमपुढविकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य सुहुमआउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य सुहुमतेउक्काइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य सुहुमवाउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य बायरवाउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य सुहुमवणस्सतिकाइएसु; अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य बारससु वि ठाणेसु एएणं चेव कमेणं भाणियव्वो। ५७. सुहुमपुढविकाइओ पज्जत्तओ एवं चेव निरवसेसो बारससु वि ठाणेसु उववातेयव्वो। ५८. एवं एएणं गमएणं जाव सुहुमवणस्सतिकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव भाणितव्वो। ५९. (१) अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! लोकस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! कतिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! दुसमइएण वा, तिसमइएण वा, चउसमइएण वा विग्गहेणठ उववज्जिज्जा। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति० ? एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-उज्जुआयता जाव अद्धचक्कवाला। एगतोवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा; दुहतोवंकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंसि अणुसेढिं उववज्जित्तए से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, जे भविए विसेढिं उववज्जित्तए से णं चउसमइएणं विग्गहेणठ उववज्जेज्जा; सेतेणट्ठेणं गोयमा !०। ६०. एवं एएणं गमएणं पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहतो दाहिणिल्ले चरिमंते उववातेयव्वो। जाव सुहुमवणस्सतिकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सतिकाइएसु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जतएसु चेव; सव्वेसिं दुसमइओ, तिसमइओ, चउसमइओ विग्गहो भाणियव्वो। ६१. (१) अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए,समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयत्ताए उवज्जित्तए से णं भंते ! कतिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएर वा, दुसमइएण वा, तिसमइएण वा, चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा। (२) से केणट्ठेणं० ? एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते उववातिता तहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववातेयव्वा सव्वे। ६२. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स उत्तरिल्ले चरिमंते अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते !० ? एवं जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहओ दाहिणिल्ले चरिमंते उववातिओ तहा पुरत्थिमिल्ले० समोहओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववातेयव्वो। ६३. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहा पुरत्थिमिल्ले समोहओ पुरत्थिमिल्ले चेव उववातिओ तहा दाहिणिल्ले समोहओ दाहिणिल्ले चेव उववातेयव्वो। तहेव निरवसेसं जाव सुहुमवणस्सतिकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु चेव पज्जत्तएसु दाहिणिल्ले चरिमंते उववातिओ। ६४. एवं दाहिणिल्ले समोहयओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववातेयव्वो, नवरं दुसमइय-तिसमइय-चउसमइओ विग्गहो। सेसं तहेव। ६५. एवं दाहिणिल्ले समोहयओ उत्तरिल्ले उववातेयव्वो जहेव सट्ठाणे तहेव एगसमइय-दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो। ६६. पुरत्थिमिल्ले जहा पच्चत्थिमिल्ले तहेव दुसमइय-तिसमइय-चउसमइय०। ६७. पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समोहताणं पच्चत्थिमिल्ले चेव चरिमंते उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे। उत्तरिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि,* सेसं तहेव। पुरत्थिमिल्ले जहा सट्ठाणे। दाहिणिल्ले एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेसं तं चेव। ६८. उत्तरिले समोहयाणं उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे। उत्तरिल्ले समोहयाणं पुरत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एवं चेव, नवरं एगसमइओ विग्गहो नत्थि। उत्तरिल्ले समोहताणं दाहिणिल्ले उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे। उत्तरिल्ले समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेसं तहेव जाव सुहुमवणस्सतिकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सतिकाइएसु पज्जत्तएसु चेव। [सु. ६९-७६. एगिंदिएसु ठाण-कम्मपगडिबंध-कम्मपगडिवेयण-उववाय-समुग्घायाइ पडुच्च परूवणं] ६९. कहिं णं भंते ! बायरपुढविकाइयाणं पज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु जहा ठाणपए जाव सुहुमवणस्सतिकाइया जे य पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोगपरियावन्ना पण्णत्ता समणाउसो !। ७०. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं। एवं चउक्कएणं भेएणं जहेव एगिंदियएसु (स० ३३-१.१ सु० ७-११) जाव बायरवणस्सतिकाइयाणं पज्जत्तगाणं। ७१. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कति कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सत्तविहबंधगा वि, अट्ठविहबंधगा वि जहा एगिंदियसएसु (स० ३३-१.१ सु० १२-१४) जाव पज्जत्ताबायरवणस्सतिकाइया। ७२. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कति कम्मपगडीओ वेएंति ? गोयमा ! चोद्दस कम्मपगडीओ वेएंति, तं जहा-नाणावरणिज्जं जहा एगिंदियसएसु (स० ३३-१.१ सु० १५) जाव पुरिसवेयवज्जं। ७३. एवं जाव बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं। ७४. एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो० ? जहा वक्कंतीए पुढविकाइयाणं उववातो। ७५. एगिंदियाणं भंते ! कति समुग्घाया पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि समुग्घाया पन्नत्ता, तं जहा-वेयणासमुग्घाए जाव वेउव्वियसमुग्घाए। ७६. (१) एगिंदिया णं भंते ! किं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, वेमायट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? गोयमा ! अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया वेमायट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति-अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? गोयमा ! एगिंदिया चउव्विहा पन्नत्ता, तं जहा-

Jain Education International 2010_03

For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा, अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते णं वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, तत्थ णं जे ते विसमाउया विसोववन्नगा ते णं वेमायट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। सेतेणट्ठेणं गोयमा ! जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ। ॥ ३४-१.१ ☆☆☆॥ **पढमे एगिंदियसेढिसए बिइओ उद्देसओ ☆☆☆** [सु. १. अणंतरोववन्नगएगिंदियभेय - पभेयपरूवणं]१. कतिविधा णं भंते !अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नणा एगिंदिया पन्नत्ता, तं जहा पुढविकाइया०, दुयाभेदो जहा एगिंदियसतेसु जाव बायरवणस्सइकाइया। [सु. २-७. अणंतरोववन्नयएगिंदिएसु ठाण - कम्मपगडिबंधाइ पडुच्च परूवणं] २. कहि णं भंते ! अणंतरोववन्नगाणं बायरपुढविकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु, तं जहा रयणप्पभा जहा ठाणपए जाव दीवेसु समुद्देसु, एत्थ णं अणंतरोववन्नगाणं बायरपुढविकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता, उववातेण सव्वलोए, समुग्घाणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविकाइया णं एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोगपरियावन्ना पन्नत्ता समणाउसो !। ३. एवं एतेणं कमेणं सव्वे एगिंदिया भाणियव्वा। सट्ठाणाइं सव्वेसिं जहा ठाणपए। एतेसिं पज्जत्तगाणं बायराणं उववाय- समुग्घाय- सट्ठाणाणि जहा तेसिं चेव अपज्जत्तगाणं बायराणं, सुहुमाणं सव्वेसिं जहा पुढविकाइयाणं भणिया तहेव भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइय त्ति। ४. अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ। एवं जहा एगिंदियसतेसु अणंतरोववन्नउद्देसए (स० ३३-१.२ सु० ४-६) तहेव पन्नत्ताओ, तहेव (स० ३३-१.२ सु० ७-८) बंधेंति, तहेव (स० ३३-१.२ सु० ९) वेदेंति जाव अणंतरोववन्नगा बायरवणस्सतिकाइया। ५. अणंतरोववन्नगएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहेव ओहिए उद्देसओ भणिओ। ६. अणंतरोववन्नगएगिंदियाणं भंते ! कति समुग्घाया पन्नत्ता ? गोयमा ! दोन्नि समुग्घाया पन्नत्ता, तं जहा वेयणासमुग्घाए य कसायसमुग्घाए य। ७. (१) अणंतरोववन्नगएगिंदिया णं भंते ! तुल्लट्ठितीया तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसायं कम्मं पकरेंति। (२) से केणट्ठेणं जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? गोयमा ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। सेतेणट्ठेणं जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति। ॥३४-१.२ ॥☆☆☆**पढमे एगिंदियसोढिसए तइओ उद्देसओ☆☆☆** [सु १-३. परंपरोपववन्नयएगिंदिएसु पढमुद्देसाणुरेणं वत्तव्वयानिद्देसो] १. कतिविधा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविया परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता, तं जहा पुढविकाइया० भेदो चउक्कओ जाव वणस्सतिकातिय त्ति। २. परंपरोववन्नगअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रतणप्पभाए पुढवीए जाव पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमो उद्देसओ जाव लोगचरिमंतो त्ति। ३. कहिं णं भंते ! परंपरोववन्नगपज्जत्तगबायरपुढविकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु वि पुढवीसु। एवं एएणं अभिलावेणं जहा पढमे उद्देसए जावं तुल्लट्ठितीय त्ति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥३४-१.३॥☆☆☆ **पढमे एगिंदियसेढिसए चउत्थाइएक्कारसमपंज्जता उद्देसगा ☆☆☆**[सु. १. चउत्थाइएक्कारसमपज्जंतउद्देससवत्तव्वयाजाणणत्थं जहाजोगं परूवणानिद्देसो] १. एवं सेसा वि अट्ठ उद्देसगा जाव अचरिमो त्ति। नवरं अणंतरा० अणंतरसरिसा, परंपरा० परंपरसरिसा। चरिमा य, अचरिमा य एवं चेव। ॥३४-१.४-११॥ एवं एते एक्कारस उद्देसगा।☆☆☆॥**पढमं एगिंदियसेढिसयं समत्तं**॥☆☆☆३४-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१ ।। बिइए एगिंदियसेढिसए पढमो उद्देसओ [सु. १. कण्हलेस्सएगिंदियभेय-पभेयपरूवणं] १. कतिविधा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता, भेदो चउक्कओ जहा कण्हलेस्सएगिंदियसए जाव वणस्सतिकाइय त्ति। [सु. २-३. पढमएगिंदियसेढिसयपढमुद्देसाणुससारेणं कण्हलेस्सएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] २. कण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले० ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसओ जाव लोगचरिमंते त्ति। सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु चेव उववातेयव्वो। ३. कहिं णं कण्हलेस्सअपज्जत्ताबायरपुढविकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिउद्देसओ जाव तुल्लट्ठितीय त्ति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।।३४-२.१।। बिइए एगिंदियसेढिसए बिइयाइएक्कारसमपज्जंता उद्देसगा [सु. १. बिइयाइएक्कारसमपज्जंतुद्देसाणं पढमएगिंदियसेढिसयाणुसारेणं वत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमं सेढिसयं तहेव एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा। ।। ३४-२.२-११ ।। ।।बितियं एगिंदियसेढिसयाणुसारेणं नीललेस्सएगिंदियवत्तव्वनिद्देसो १. एवं नीललेस्सेहि वि सयं। ।। ३४-३.१-११ ।। ।।ततियं० सयं० ।। ३४-३ ।। चउत्थे एगिंदियसेढिसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. पढमएगिंदियसेढिसयाणुसारेणं काउलेस्सएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. काउलेस्सेहि वि सयं एवं चेव। ।। ३४-४.१-११ ।। ।।चउत्थं० सयं० ।। पंचमे एगिंदियसेढिससए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. पढमएगिंदियसेढिसयाणुसारेणं भवसिद्धियएएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. भवसिद्धियएगिंदियेहिं सयं। ।। ३४-५.१-११ ।। ।।पंचमं० सयं० ।। छट्ठे एगिंदियसेढिसेढिसए पढमाइक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १-६. पढमएगिंदियसेढिसयाणुसारेणं कण्हलेस्सभवसिद्धियणगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. कतिविधा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पन्नत्ता ? जहेव ओहिउद्देसओ। २. कतिविधा णं भंते ! अणंतरोववन्नाकण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता ? जहेव अणंतरोववण्णाउद्देसओ ओहिओ तहेव। ३. कतिविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नाकण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता ? जहेव अणंतरोववण्णाउद्देसओ ओहिओ तहेव। ३. कतिविहा णं भंते ! परंपरोववन्नकमण्हलेस्सभवसिद्धिया एदिया पन्नत्ता गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नाकण्हलेस्सभवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता। भेदो चउक्कओ जाव वणस्सतिकाइय त्ति। ४. परंपरोववन्नकण्हलेस्सभवसिद्धीयअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए० ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव लोयचरमंते त्ति। सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु भवसिद्धिएसु उववातेयव्वो। ५. कहि णं भंते ! परंपरोववन्नकण्हलेस्सभवसिद्धियपज्जत्ताबायरपुढपिकाइयाणं ठाणां पन्नत्ता ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्लट्ठितीय त्ति। ६. एवं एएणं अभिलावेणं कण्हलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि तहेव। ।। ३४-६.१-११ ।। ।।एक्कारसउद्देसगसंजुत्तं छट्ठं सतं समत्तं ।। ३४-६ ।। सत्तमे एगिंदियसेढिसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. छट्ठएगिंदियसेढिसयाणुसारेणं नीललेस्सभवसिद्धियएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. नीललेस्सभवसिद्धियएगिंदिएसु सयं। ।।३४-७.१-११।। ।। सत्तमं० सयं समत्तं ।। ३४-७ ।। अट्ठमे एगिंदियसेढिसए पढमाइक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. छट्ठएगिंदियसेढिसयाणुसारेणं काउलेस्सभवसिद्धियएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं काउलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि सयं। ।।३४-८.१-११ ।। ।।अट्ठमं० सयं ।। ३४-८ ।। नवमाइबारसमपज्जंतेसु एगिंदियसेढिसएसु पढमाइनवमपज्जंता उद्देसगा [सु. १. पंचमं- छट्ठ- सत्तम- अट्ठमएगिंदियसेढिसयाणुसारेणं अभवसिद्धियएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सयाणि एवं अभवसिद्धीएहि वि चत्तारि सयाणि भाणियव्वाणि, नवरं चरिम-अचरिमवज्जा नवउद्देसगा भाणियव्वा। सेसं तं चेव। एवं एयाइं बारस एगिंदियसेढियसयाइं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरह। ।।३४-९-१२. १-९ ।। ।। एगिंदियसेढिसयाइं समत्ताइं ।।३४-१-१२ ।। 卐卐卐।। **एगिंदियसेढिसयं चउत्तीसइमं समत्तं ।।३४ ।।** 卐卐卐 **पंचतीसइमं सयं** 卐卐卐 बारस एगिंदियमहाजुम्मसयाणि पढमे एगिंदियमहाजुम्मसए पढमो उद्देदओ [सु. १. सोलस महाजुम्मा] १. (१) कति णं भंते ! महाजुम्मा पन्नत्ता ? गोयमा ! सोलस महाजुम्मा पन्नत्ता, तं जहा कडजुम्मकडजुम्मे १, कडजुम्मतेयोगे २, कडजुम्मदावरजुम्मे ३, कडजुम्मकलियोगे ४, तेयगकडजुम्मे ५, तेयोगतेयोए ६, तेओयदावरजुम्मे ७, तेयोगकलियोए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८, दावरजुम्मकडजुम्मे ९, दावरजुम्मेतेओए १०, दावरजुम्मदावरजुम्मे ११, दावरजुम्मकलियोगे १२, कलिओगकडजुम्मे १३, कलियोगतेओये १४, कलियोगदावरजुम्मे १५, कलियोगकलिओगे १६। (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सोलस महाजुम्मा पन्नत्ता, तं जहा कडजुम्मकडजुम्मे जाव कलियोगकलियोगे ? गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, से त्तं कडजुम्मकडजुम्मे १। जे णं रासी चउक्कळणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, से त्तं कडजुम्मतेयोए २। जे णं रासी चउक्कएणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे णं रासीस्स अवहारसमया कडजुम्मा, से त्तं कडजुम्मतेयोए २। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, से त्तं कडजुम्मदावरजुम्मे ३। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, से त्तं कडजुम्मकलियोगे ४। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेयोगा, से त्तं तेयोगकडजुम्मे ५। जे णं रासी चउक्कएणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेयोया से त्तं तेयोयतेयोगे ६। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेयोगा, से त्तं तेओयदावरजुम्मे ७। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेयोया, से त्तं तेयोयकलियोए ८। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्सस अवहारसमया दावरजुम्मा, से त्तं दावरजुम्मकडजुम्मे ९। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा, से त्तं दावरजुम्मतेयोए १०। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा, से त्तं दावरजुम्मदावरजुम्मे ११। जे णं रासी चउक्कएणं जुम्मा से त्तं दावरजुम्मकलियोए १२। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोया, से त्तं कलियोगा, से त्तं कलियोगकडजुम्मे १३। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोया, से त्तं कलियोयतेयोए १४। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, से त्तं कलियोगदावरजुम्मे १५। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, से त्तं कलियोयकलियोए १६। सेतेणट्ठेणं जाव कलियोगकलियोग। [सु. २-२३. सोलससु एगिंदियमहाजुम्मेसु उववायइबत्तीसइदारपरूवणं]२. कडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? किं नेरइय० जहा उप्पलुद्देसच्च (स० ११ उ० १ सु० ५) तहा उववातो। ३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? गोयमा ! सोलस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अरंता वा उववज्जंति। ४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? गोयमा ! सोलस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति। ५. उच्चत्तं जहा उप्पलुद्देसए (स० ११ उ० १ सु० ८)। ६. ते णं भंते ! जीव नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा, अबंधगा ? गोयमा ! बंधगा, नो अबंधगा। ७. एवं सव्वेसिं आउयवज्जाणं, आउयस्स बंधगा वा, अबंधगा वा। ८. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स० पुच्छा। गोयमा ! वेदगा, नो अवेदगा। ९. एवं सव्वेसिं। १०. ते णं भंते ! जीवा किं सातावेदगा० पुच्छा। गोयमा ! सातावेयगा वा असातावेयगा वा। एवं उप्पलुद्देसगपरिवाडी (स० ११ उ० १ सु० १२-१३) सव्वेसिं कम्माणं उदई, नो अणुदई। छण्हं कम्माणं उदीरगा, नो अणुदीरगा। वेयणिज्जा- ऽऽउयाणं उदीरगा वा, अणुदीरगा वा। ११. ते णं भंते ! जीवा किं कण्ह० पुच्छा गोयमा ! कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा। नो सम्मद्दिट्ठी, मिच्छद्दिट्ठी, नो सम्ममिच्छद्दिट्ठी। नो नाणी, अन्नाणी; नियमं दुअन्नाणी, तं जहा मतिअन्नाणी य, सुयअन्नाणी य। नो मणजोगी, नो मणजोगी, नो वइजोगी कायजोगी। सागारोवउत्ता वा, अणागारोवउत्ता वा। १२. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा कतिवण्णा० ? गहा उप्पलुद्देसए (स० ११ उ० १ सु० १९-३०) सव्वत्थ पुच्छा। गोयमा ! जहा उपलुद्देसए। ऊसासगा वा नीसासगा वा, नो ऊसासगनीसगनीसासगा। आहारगा वा, अणाहारगा वा। नो विरया, अवियरया, नो विरयाविरया। सकिरिया, नो अकिरिया। वा। नो विरया,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अविरया, नो विरयाविरया। सकिरिया, नो अकिरिया। सत्तीवहबंधगा वा, अट्ठविहबंधगा वा। आहारसन्न्वउत्ता वा जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता वा। कोहकसाई वा जाव लोभकसाई वा। नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा। इत्थिवेदबंधगा वा, पुरिसवेदबंधगा वा, नपुंसगवेदबंधगा वा। नो सण्णी, असण्णी। सइंदिया, नो अणिंदिया। १३. ते णं भंते ! 'कडजुम्मकडजुम्मएगिंदिय' त्ति कालओ केवचिरं होंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंतो वणस्सतिकालो। संवेहो न भण्णइ आहारो जहा उप्पलुद्देसए (स० ११ उ० १ सु० ४०), नवरं निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चतुदिसिं, सिय पंचदिसिं। सेसं तहेव ॥ ठिती जहन्नेणं एक्कं समयं (अंतोमुहुत्तं), उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं। समुग्घाया आइल्ला चत्तारि, मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति। उव्वट्टणा जहा उप्लुद्देसए (स० ११ उ० १ सु० ४४)। १४. अह भंते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता कडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा ? हंता, गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो। १७. कडजुम्मदारजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? उववातो तहेव। १८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं० पुच्छा। गोयमा ! अट्ठारस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति। सेसं तहेव (सु० ४-१४) जाव अणंतखुत्तो। १९. कडजुम्मकलियोगएगिंदिया णं भंते ! कओ उवव० ? उववातो तहेव। परिमाणं सत्तरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा अणंता वा। सेसं तहेव (सु० ४-१४) जाव अणंतखुत्तो। २०. तेयोगकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कतो उववज्जंति ? उववातो तहेव। परिमाणं बारस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति। सेसं तहेव (सु० ४-१४) जाव अणंतखुत्तो। २१. तेयोयतेयोयएगिंदिया णं भंते ! कतो उववज्जंति ? उववातो तहेव। परिमाणं पन्नरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा। सेसं तहेव (सु० ४-१४) जाव अणंतखुत्तो। २२. एवं एएसु सोलससु महाजुम्मेसु परिमाणं चोद्दस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति। तेयोगकलियोगेसु तेरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति। दावरजुम्मकडजुम्मेसु अट्ठ वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति। दावरजुम्मतेयोगेसु एक्कारस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा अणंता उववज्जंति। दावरजुम्मदावरजुम्मेसु दस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति। दावरजुम्मकलियोगेसु नव वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति। कलियोगकडजुम्मे ? सु चत्तारि वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति। कलियोगदावरजुम्मेसु छ वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति। २३. कलियोगकलियोगएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? उववातो तहेव। परिमाणं पंच वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति। सेसं तहेव (सु० ४-१४) जाव अणंतखुत्तो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥३५ सए १.१॥ **पढमे एगिंदियमहाजुम्मसए बिइओ उद्देसओ** [सु. १-४. सोलससु पढमसमयमहाजुम्मएएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? गोयमा ! तहेव।] २. एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव सोलसखुत्तो बितियो वि भाणियव्वो। तहेव सव्वं। नवरं इमाणि दस नाणात्ताणि - ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं। आउयकम्मस्स नो बंधगा, अबंधगा। आउयस्स नो उदीरगा, अणुदीरगा। नो उस्सासगा, नो निस्सासगा, नो उस्सासनिस्सासगा। सत्तविहबंधगा, नो अट्ठविहबंधगा। ३. ते णं भंते ! 'पढमसमयकडजुम्मएगिंदिय' त्ति कालतो केवचिरं० ? गोयमा ! एक्कं समयं। ४. एवं ठिती वि। समुग्घाया आइल्ला दोन्नि। समोहया न पुच्छिज्जंति। उव्वट्टणा न पुच्छज्जइ। सेसं तहेव सव्वं निरवसेसं सोलससु वि गमएसु जाव अणंतखुत्तो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥३५-१.२॥ पढमे एगिंदियमहाजुम्मसए तइओ उद्देसओ [सु. १. पढमुद्देसाणुसारेणं अपढमसमयमहाजुम्मएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. अपढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो १. अपढमसमयकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? एसो जहा पढमुद्देसो सोलसहि वि जुम्मेसु तहेव नेवव्वो जाव कलियोगकलियोगत्ताए जाव अरंतखुत्तो। सेवं भंते ! त्ति०। ॥३५ सते १.३॥ **पढमे एगिंदियमहाजुम्मसए चउत्थो उद्देसओ** [सु. १. बिइउद्देसाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं चरमसमयमहाजुम्मएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरिमसमयकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कतो उववज्जंति ? एवं जहेव पढमसमयउद्देसओ, नवरं देवा न उववज्जंति, तेउलेस्सा न पुच्छिज्जंति। सेसं तहेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ।॥३५-१.४॥ **पढमे एगिंदियमहाजुम्मसए पंचमो उद्देसओ** [सु. १. तइउद्देसाणुसारेणं अचरिमसमयमहाजुम्मएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. अचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्म,गिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा ?अ पढमसमयउद्देसओ तहेव भाणियव्वो निरवसेसं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! ॥३५-१. उ० ५ ॥ पढमे एगिंदियमहाजुम्मसए छट्ठो उद्देसओ [सु. १. बिइउद्देसाणुसारेणं पढमपढमसमयमहाजुम्मएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. पढमपढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेसं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरइ। ॥३५-१.६ ॥ पढमे एगिंदियमहाजुम्मसए सत्तमो उद्देसओ सु. १. बिइउद्देसाणुसारेणं पढम अपढमसमयमहाजुम्मएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो पढमपढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव भाणियव्वो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥३५-१.७॥ पढमे एगिंदियमहाजुम्मसए अट्ठमो उद्देसओ सु. १. चउत्थुद्देसाणुसारेणं पढमचरिमसमयमहाजुम्मएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो पढमचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा चरिमुद्देसओ तहेव निरवसेसं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति। ॥३५-१.८॥ पढमे एगिंदियमहाजुम्मसए नवमो उद्देसओ [सु. १. बिइउद्देसाणुसारेणं पढमचरिमसमयमहाजुम्मएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. पढमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा बीओ उद्देसओ तहेव निरवसेसं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरइ। ॥३५-१.९॥ पढमे एगिंदियमहाजुम्मसए दसमो उद्देसओ [सु. १. चउत्थुद्देसाणुसारेणं चरिमचरिमसमयमहाजुम्मएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. चरिमचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा चतुत्थो उद्देसओ तहेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥३५-१.१०॥ पढमे एगिंदियमहाजुम्मसए एक्कारसमो उद्देसओ [सु. १. बिइउद्देसाणुसारेणं चरिमअचरिमसमयमहाजुम्मएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. चरिमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेसं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरइ। ॥३५-१.११॥ एवं एए एक्कारस उद्देसगा। पढमो ततियो पंचमओ य सरिसगमगा, सेस अट्ठ सरिसगमगा, नवरं चउत्थे अट्ठमे दसमे य देवा न उववज्जंति, तेउलेसा नत्थि। ॥पढमं एगिंदियमहाजुम्मसयं समत्तं॥३५-१॥ बिइए एगिंदियमहाजुम्मसए पढमो उद्देसओ [सु. १-६. पढमएगिंदियमहाजुम्मसयपढमुद्देसाणुसारेणं कण्हलेस्समहाजुम्मएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? गोयमा ! उववातो तहेव। एवं जहा ओहिउद्देसए (स० ३५-१ उ० १), नवरं इमं नाणत्तं २. ते णं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ? हंता, कण्हलेस्सा। ३. ते णं भंते ! 'कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिय' त्ति कालओ केवचिरं होंति ? गोयमा !जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। ४. एवं ठिती वि। ५. सेसं तहेव- जाव अणंतखुत्तो। ६. एवं सोलसं वि जुम्मा भाणियव्वा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥३५-२.१॥ बिइए एगिंदियमहाजुम्मसए बिइओ उद्देसओ [सु. १-२. पढमएगिंदियमहाजुम्मसयबिइउद्देसाणुसारेणं कण्हलेस्समहाजुम्मएगिंदियवत्तव्वयानिद्देसो] १. पढमसमयकण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा पढमसमयउद्देसओ, नवरं २. ते णं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ? हंता, कण्हलेस्सा। सेसं तहेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥३५-२.२॥ बिइए एगिंदियमहाजुम्मसए तइयाइएक्कारसमपज्जंतउद्देसवत्तव्वयानिद्देसो [सु. १. पढमएगिंदियमहाजुम्मसयासाणुसारेणं तइयाइएक्कारसमपज्जंतउद्देसवत्तव्वयानिद्देसो]१. एवं जहा ओहियसते एक्कारस उद्देसगा भणिया तहा कण्हलेस्ससए वि एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा। पढमो, ततिओ, पंचमो य सरिसगमा। सेसा अट्ठ वि सरिसगमा, नवरं० चउत्थ-अट्ठम- दसमेसु उववातो नत्थि देवस्स। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥३५-२.३-११॥ ॥३५ सते बितियं एगिंदियमहाजुम्मसयं समत्तं॥ ३५-२॥ तइए एगिंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. बिइयएगिंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं तइयएगिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो]१. एवं नीललेस्सेहि वि सयं कण्हलेस्ससयसरिमं, एक्कारस उद्देसगा तहेव। सेवं भंते ! सेवं भंते !० । ॥३५-३.१-११

|| ||ततियं एगिंदियमहाजुम्मसयं समत्तं ||३५-३|| चउत्थे एगिंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा सु. बिइयएगिंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं चउत्थएगिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो १. एवं काउलेस्सेहि वि सयं कण्हलेस्ससयसरिसं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ||३५-४.१-११ || ||चउत्थं एगिंदियमहाजुम्मसयं० ||३५-४|| पंचमे एगिंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. पढमएगिंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं पंचमएगिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्व यानिद्देसो] १. भवसिद्धियकडजुम्मंएगिंदिया णं भंते ! कतो उववज्जंति ? जहा ओहियसयं तहेव, नवरं एक्कारससु वि उद्देसएसु 'अह भंते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता भवसिद्धियकडजुम्मकएगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे'। सेसं तहेव। ||३५-५.१-११ || || पंचमं एगिंदियमहाजुम्मसयं समत्तं ||३-५|| छट्ठे एगिंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. बिइयएगिंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं छट्ठएगिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. कण्हलेस्सभवसिद्धिकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं कण्हलेस्सभवसिद्धीयएगिंदिएहि वि सयं बितियसयकण्हलेस्ससरिसं भाणियव्वं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ||३५-६.१-११ || ||छट्ठं एगिंदियमहाजुम्मसयं समत्तं|| ३५-६|| सत्तमे एगिंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. बिइयएगिंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं सत्तमएगिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं नीललेस्सभवसिद्धियएगिंदियेहि वि सयं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ||३५-७.१-११ || || सत्तमं एगिंदियमहाजुम्मसयं समत्तं ||३५-७|| अट्ठमे एगिंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. बिइयएगिंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं अट्ठमएगिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं काउलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि तहेव एक्कारसउद्देसगसंजुत्तं सयं। [सु. २. पंचमाइअट्ठमएगिंदियमहाजुम्मसयाणं उवसंहारो] २. एवं एयाणि चत्तारि भवसिद्धिएसु सयाणि, चउसु वि सएसु 'सव्वपाणा जाव उववन्नपुव्वा ? नो इणट्ठे समट्ठे'। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ||३५-८.१-११ || ||अट्ठमं एगिंदियमहाजुम्मसतं समत्तं ||३५-८|| नवमाइबारसमपज्जंतेसु एगिंदियमहाजुम्मसएसु पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. पंचमाइट्ठमएगिंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं नवमाइबारसमएगिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सयाइं भणियाइं एवं अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि सयाणि लेसासंजुत्ताणि भाणियव्वाणि 'ससव्वपाणा० ? तहेव, नो इणट्ठे समट्ठे'। || ३५-९-१२. || एवं एयाइं बारस एगिंदियमहाजुम्मसयाइं भवंति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। 卐卐卐||**पंचत्तीसइमं सयं समत्तं ||३५|| छत्तीसइमं सयं**

卐卐卐-बारस बेइंदियमहाजुम्मसयाइं पढमे बेइंदियमहाजुम्मसए पढमो उद्देसओ [सु. १-४. सोलससु बेइंदियमहाजुम्मसएसु उववायआइबत्तीसइदारपरूवणं] १. कडजुम्मकडजुम्मबेंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ?० उववातो जहा वक्कंतीए। परिमाणं-सोलस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, उववज्जंति। अवहारो जहा उप्पलुद्देसए (स० ११ उ० १ सु० ७)। ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं बारस जोयणाइं। एवं जहा एगिंदियमहाजुम्माणं पढमुद्देसए तहेव; नवरं तिन्नि लेस्साओ; देवा न उववज्जंति; सम्मद्दिट्ठी वा, मिच्छद्दिट्ठी वा, नो सम्मामिच्छादिट्ठी; नाणी वा, अन्नाणी वा; नो मणजोगी, वइजोगी वा, कायजोगी वा। २. ते णं भंते ! कडजुम्मकडजुम्मबेदिया कालतो केवचिरं होंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। ३. ठिती जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारस संवच्छाइं। आहारो नियमं छद्दिसिं। तिन्नि समुग्घाया। सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो। ४. एवं सोलससु वि जुम्मेसु। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ||बेदियमहाजुम्मसते पढमो उद्देसओ समत्तो ||३६-१.१ || पढमे बेइंदियमहाजुम्मसए बिइओ उद्देसओ [सु. १. एगिंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं पढमसमयबेइंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मबेंदिया णं भंते ! कतो उववज्जंति ? एवं जहा एगिंदियमहाजुम्माणं पढमसमयुद्देसए दस नाणत्ताइं ताइं चेव दस इह वि। एक्कारसमं इमं नाणत्तं-नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी। सेसं जहा एगिंदियाणं चेव पढमुद्देसए। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ||३६-१.२ || पढमे बेइंदियमहाजुम्मसए तइयाइएक्कारसमपज्जंता उद्देसगा [सु. १. एगिंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमसमयबेइंदियमहाजुम्मसयतइयाइएक्कारसमपज्जंतउद्देसवत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं एए वि जहा **एगिंदियमहाजुम्मेसु एक्कारस उद्देसगा तहेव भाणियव्वा, नवरं** चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु सम्मत्त-नाणाणि न भण्णंति । जहेव एगिंदिएसु; पढमो ततिओ पंचमो य एक्कगमा, सेसा अट्ठ एक्कगमा । ॥३६-१.३-११ ॥ **॥पढमं** बेंदियमहाजुम्मसयं समत्तं ॥३६-१॥ बिइए बेइंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. पढमबेइंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं **विसेसनिरूवणंपुव्वं** कण्हलेस्सबेइंदियमहाजुम्मसयवत्तव्व यानिद्देसो] १. कण्हलेस्सकडजुम्मबेदिया णं भंते ! कतो उववज्जंति ? एवं चेव कण्हलेस्सेसु वि एक्कारस उद्दासगसंजुत्तं सयं, नवरं लेसा, संचिट्ठणा जहा एगिंदियकण्हलेस्साणं । ॥३६-२.१-११ ॥ ॥बितियं बेंदियसयं समत्तं ॥३६-२॥ तइए बेइंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा सु. बिइयबेइंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं नीललेस्सबेइंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो १. एवं नीललेस्सेहि वि सयं । ॥३६-३.१-११ ॥ ॥ततियं सतं समत्तं ॥३६-३॥ चउत्थे बेइंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. बिइयबेइंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं काउलेस्सबेइंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो]१. एवं काउलेस्सेहि वि सयं । ॥३६-४४.१-११ ॥ ॥३६-४॥ पंचमाइअट्ठमपज्जंतेसु बेइंदियमहाजुम्मसएसु पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. एगिंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं पंचमाइअट्ठमबेइंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मबेइंदिया णं भंते !० ? एवं भवसिद्धियसया वि चत्तारि तेणेव पुव्वगमएणं नेतव्वा, नवरं 'सव्वपाणा० ? णो इणट्ठे समट्ठे' । सेसं जहेव ओहियसयाणि चत्तारि । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥३६-५-८ ॥ ॥छत्तीसतिमसए अट्ठमं सयं समत्तं ॥३६-८॥ नवमाइबारसमपज्जंतेसु बेइंदियमहाजुम्मसएसु पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा[सु. १. पंचमाइअट्ठमबे इंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं नवमाइबारसमबेइंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो]१. जहा भवसिद्धियसया चत्तारि एवं अभवसिद्धियसया वि चत्तारि भाणियव्वा, नवरं सम्मत्त-नाणाणि सव्वेहिं नत्थि । सेसं तं चेव । [सु. २. बेइंदियमहाजुम्मसयाणं उवसंहारो] २. एवं एयाणि बारस बेइंदियमहाजुम्मसयाणि भवंति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥बेइंदियमहाजुम्मसया समत्ता ॥३६-१२ ॥**卐卐卐॥छत्तीसतिमं सयं समत्तं ॥३६॥ सत्ततीसइमं सयं-卐卐卐** बारस तेइंदियमहाजुम्मसयाइं [सु. १. बेइंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं तेइंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. कडजुम्मकडजुम्मतेंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं तेइंदिएसु वि बारस सया कायव्वा बेइंदियसयसरिसा, नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं; ठिती जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं एकूणवन्नरातिंदियाइं । सेसं तहेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥तेइंदियमहाजुम्मसया समत्ता ॥३७-१-१२ ॥ ॥सत्ततीसइमं सतं समत्तं ॥३७ ॥**卐卐卐अट्ठतीसइमं सयं 卐卐卐**-बारस चउरिंदियमहाजुम्मसयाइं [सु. १. बेइंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं चउरिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. चउरिंदिएहि वि एवं बारस सया कायव्वा, नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं; ठिती जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा । सेसं जहा बेंदियाणं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥चतुरिंदियमहाजुम्मसया समत्ता ॥३८-१-१२ ॥ ॥अट्ठत्तीसइमं सयं समत्तं ॥३८॥ **卐卐卐 एगूणयालीसइमं सयं 卐卐卐**-बारस असन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयाइं [सु. १. बेइंदियमहाजुम्मसयाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं असन्निपंचेंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. कडजुम्मकडजुम्मअसन्निपंचेंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ?० जहा बेंदियाणं तहेव असन्नीसु वि बारस सया कायव्वा, नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं; संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं पुव्वकोडीपुहत्तं; ठिती जहन्नेणं एक्कं समयं, पुव्वकोडी । सेसं जहा बेंदियाणं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ।**卐卐卐 ॥असण्णिपंचेंदियमहाजुम्मसया समत्ता ॥ ३९-१-१२ ॥ 卐卐卐॥एगूणयालीसइमं सयं समत्तं ॥ ३९ ॥ चत्तालीसइमं सयं 卐卐卐** एक्कवीसं सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयाइं पढमे सन्निपंजिंदियमहाजुम्मसए पढमो उद्देसओ [सु. १-६. सोलससु सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसएसु उववायआइबत्तीसइदारपरूवणं] १. कडजुम्मकडजुम्मसन्निपंचेंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ?०

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उववातो चउसु वि गतीसु। संखेज्जवासाउय-असंखेज्जवासाउय-पज्जत्ता-अपज्जत्तएसु य न कतो वि पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाण त्ति। परिमाणं, अवहारो, ओगाहणा य जहा असण्णिपंचेदियाणं। वेयणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं पगडीणं बंधगा वा अबंधगा वा वेयणिज्जस्स बंधगा, नो अबंधगा। मोहणिज्जस्स वेयगा वा, अवेयगा वा। सेसाणं सत्तण्ह वि वेयगा, नो अवेयगा। सायावेयगा असायावेयगा वा। मोहणिज्जस्स उदई वा, अणुदई वा; सेसाणं सत्तण्ह वि उदई, नो अणुदई। नामस्स गोयस्स य उदीरगा, नो अणुदीरगा; सेसाणं छण्ह वि उदीरगा वा, अणुदीरगा वा। कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा। सम्मद्दिट्ठी वा, मिच्छादिट्ठी वा, सम्मामिच्छद्दिट्ठी वा। णाणी वा अणाणी वा। णजोगी वा, वइजोगी वा, कायजोगी वा। उवयोगो, वन्नमाई, उस्सासगा आहारगा य जहा एगिंदियाणं। विरया वा अविरया वा, विरयाविरया वा। सकिरिया, नो अकिरिया। २. ते णं भंते! जीवा किं सत्तविहबंधगा, अट्ठविहबंधगा, छव्विहबंधगा एगविहबंधगा ? गोयमा! सत्तविहबंधगा वा जाव एगविहबंधगा वा। ३. ते णं भंते! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता, नोसण्णोवयुत्ता ? गोयमा! आहारसन्नोवउत्ता वा जाव नोसन्नोवउत्ता वा। ४. सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा। कोहकसाई वा जाव लोभकसाई वा, अकसायी वा। इत्थिवेयगा वा, पुरिसवेयगा वा, नपुंसगवेयगा वा, अवेदगा वा। इत्थिवेदबंधगा वा, पुरिसवेयबंधगा वा, नपुंसगवेदबंधगा वा, अबंधगा वा। सण्णी, नो असण्णी। सइंदिया, नो अणिंदिया। संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं। आहारो तहेव जाव नियमं छद्दिसिं। ठिती जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। छ समुग्घाता आदिल्लगा। मारणंतियसमुग्घातेणं समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति। उव्वट्टणा जहेव उववातो, न कत्थइ पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाण त्ति। ५. अह भंते! सव्वपाणा० ? जाव अणठतखुत्तो। ६. एवं सोलससु वि जुम्मेसु भाणियव्वं जाव अणंतखुत्तो, नवरं परिमाणं जहा बेइंदियाणं, सेसं तहेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ॥४० सते उद्दे० १॥ ४०-१.१॥ पढमे सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसए बिइओ उद्देसओ [सु. १. पढमुद्देसाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं पढमसमयसन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. पढमसमयकडजुम्मसन्निपंचेंदिया णं भंते! कतो उववज्जंति ?० उववातो, परिमाणं, अवहारो, जहा एतेसिं चेव पढमे उद्देसए। ओगाहणा, बंधो, वेदो, वेयणा, उदयी, उदीरगा य जहा बेंदियाणं पढमसमइयाणं तहेव। कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा। सेसं जहा बेंदियाणं पढमसमइयाणं जाव अणंतखुत्तो, नवरं इत्थिवेदगा वा, पुरिसवेदगा वा, नपुंसगवेदगा वा; सण्णिणो, नो असण्णिणो। सेसं तहेव। एवं सोलससु वि जुम्मेसु परिमाणं तहेव सव्वं। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ॥४०-१.२॥ पढमे सन्निपंचिंदिदयमहाजुम्मसए तइयाइएक्कारसमपज्जंता उद्देसगा [सु.१ पुव्वाणुसारेणं सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयतइयाइएक्कारसमउद्देसवत्तव्वया निद्देसो] १. एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा तहेव। पढमो, ततिओ, पंचमो य सरिसगमा। सेसा अट्ठ वि सरिसगमा। चउत्थ-अट्ठम-नत्थि विसेसो कोयि वि। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ॥४०-१.३-११॥ ॥४० सते पढमं सन्निपंचेंदियमहाजुम्मसयं समत्तं ॥४०-१॥ बिइए सन्निपंचेंदियमहाजुम्मसए पढमो उद्देसओ [सु. १. सन्निपंचिंदियमहाजुम्मपढमसयपढेमुद्दसाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं कण्हलेस्ससन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. कण्हलेस्सकडजुम्मसन्निपंचेंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति ? तहेव जहा पढमुद्देसओ सन्नीणं, नवरं बंधो, वेओ, उदई, उदीरणा, लेस्सा, बंधगा, सण्णा, कसाय, वेदबंधगा य एयाणि जहा बेंदियाणं कण्हलेस्साणं। वेदो तिविहो, अवेयगा नत्थि। संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं। एवं ठिती वि, नवरं ठितीए 'अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं' न भण्णंति। सेसं जहा एएसिं चेव पढमे उद्देसए जाव अणंतखुत्तो। एवं सोलससु वि जुम्मेसु। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ॥४०-२.१॥ बिइए सन्निपंचेंदियमहाजुम्मसए बिइओ उद्देसओ [सु. १. सन्निपंचेंदियमहाजुम्मपढमसयबिइउद्देसाणुससारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं पढमसमयकण्हलेस्ससन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. पढमसमयकण्हलेस्सकडजुम्मसन्निपंचेंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति ?० जहा सन्निपंचेंदियपढमुद्देसए तहेव निरवसेसं। नवरं ते णं भंते! जीवा कण्हलेस्सा ?

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हंता, कण्हलेस्सा। सेसं तं चेव। एवं सोलससु वि जुम्मेसु। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ||४०-२.२|| बिइए सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसए तइयाइएक्कारसमपज्जंता उद्देसगा [सु. १. पुव्वाणुसारेणं कण्हलेस्ससन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयतइयाइएक्कारसमउद्देसवत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं एए वि एक्कारस उद्देसगा कण्हलेस्ससए। पढम-ततिय-पंचमा सरिसगमा। सेसा अट्ठ वि सरिसगमा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ||४०-२. ३११|| ||४० सते बितियं सयं समत्तं ||४०-२|| तइए सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. सन्निपंचिंदियमहाजुम्मबिइयसयाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं नीललेस्ससन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं नीललेस्सेसु वि सयं। नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं; एवं ठिती वि। एवं तिसु उद्देसएसु। सेसं तं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ||४०-३.१-११|| ||४० सते ततियं सयं समत्तं ||४०-३|| चउत्थे सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. सन्निपंचिंदियमहाजुम्मतइयसयाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं काउलेस्ससन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं काउलेस्ससयं पि, नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिन्नि सागरोवमाइं पलियोवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं; एवं ठिती वि। एवं तिसु वि उद्देसएसु। सेसं तं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ||४०-४.१-११|| ||४० सते चउत्थं सयं०||४०-४|| पंचमे सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा सु. १. सन्निपंचिंदियमहाजुम्मचउत्थसयाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं तेउलेस्ससन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो १. एवं तेउलेस्सेसु वि सयं। नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं पलियोवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं; एवं ठिती वि, नवरं नोसण्णोवउत्ता वा। एवं तिसु वि गम (? उद्देस) एसु। सेसं तं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ||४०-५.१-११|| ||४० सते पंचमं सयं ||४०-५|| छट्ठे सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. सन्निपसंचिंदियमहाजुम्मपंचमसयाणुसारेणं विसेसानिरूवणपुव्वं पम्हलेस्ससन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. जहा तेउलेसासयं तहा पम्हलेसासयं पि। नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं; एवं ठिती वि, नवरं अंतोमुहुत्तं न भण्णइ। सेसं तं चेव। एवं एएसु पंचसु सएसु जहा कण्हलेसासए गमओ तहा नेयव्वो जाव अणंतखुत्तो। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ||४०-६.१-११|| ||४० सते छट्ठं सयं समत्तं ||४०-६|| सत्तमे सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. सन्निपंचिंदियमहाजुम्मपढमसयाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं सुक्कलेस्ससन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. सुक्कलेस्ससयं जहा ओहियसयं, नवरं संचिट्ठणा ठिती य जहा कण्हलेस्ससते। सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ||४०-७.१-११|| ||४० सते सत्तमं सयं समत्तं ||४०-७|| अट्ठमे सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा सु.१ सन्निपंचिंदियमहाजुम्मपढमसयाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं भवसिद्धियसन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो १. भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मसन्निपंचेंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति ?० जहा पढमं सन्निसयं तहा नेयव्वं भवसिद्धियाभिलावेणं, नवरं 'सव्वपाणा० ? णो तिणट्ठे समट्ठे'। सेसं तं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ||४०-८.१-११|| ||४० सते अट्ठमं सयं ||४०-८|| नवमे सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु.१. सन्निपंचिंदियमहाजुम्मबिइयसयाणुसारेणं भवसिद्धियकण्हलेस्ससन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. कण्हलेस्सभवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मसन्निपंचेंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति ?० एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहियकण्हलेस्ससयं। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०। ||४०-९.१-११|| ||४० सते नवमं सयं ||४०-९|| दसमे सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. अणंतरगयनवमसयाणुसारेणं नीललेस्सभवसिद्धियसन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो]१. एवं नीललेस्सभवसिद्धिएहि वि सतं। सेवं भंते! सेवं भंते!०। ||४०-१०.१-११|| ||४० सते दसमं सयं ||४०-१०|| एक्कारसमाइचोद्दसमपज्जंतेसु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसएसु पत्तेयं एक्कारस एक्कारस उद्देसगा [सु. १. संन्निपंचिंदियमहाजुम्मचउत्थाइअट्ठमसयाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं काउलेस्साइसुक्कलेस्सासन्निपंचिंदियमहाजुम्मचउक्कवत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं जहा ओहियाणि सन्निपंचेंदियाणं सत्त सयाणि भणियाणि एवं भवसिद्धिएहि वि सत्त सयाणि कायव्वाणि, नवरं सत्तसु वि सएसु 'सव्वपाणा जाव णो इणट्ठे समट्ठे' । सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंत !० । ।।भवसिद्धियसया समत्ता ।।४०-८-१४ ।। ।।४० सते चोद्दसमं सयं समत्तं ।।४०-१४।। पन्नरसमे सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसए पढमो उद्देसओ [सु. १-२. पुव्वाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं अभवसिद्धियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. अभवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मसन्निपंचेंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ?० उववातो तहेव अणुत्तरविमाणवज्जो। परिमाणं, अवहारो, उच्चत्तं, बंधो, वेदो, वेयणं, उदयो, उदीरणा, य जहा कण्हलेस्ससते । कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा । नो सम्मद्दिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अन्नाणी । एवं जहा कण्हलेस्ससए, नवरं नो विरया, अविरया, नो विरयाविरया । संचिट्ठणा, ठिती य जहा ओहिउद्देसए । समुग्घाया आइल्लगा पंच । उव्वट्ठणा तहेव अणुत्तरविमाणवज्जं । 'सव्वपाणा० ? णो इणट्ठे समट्ठे' । सेसं जहा कण्हलेस्ससए जाव अणंतखुत्तो । २. एवं सोलससु वि जुम्मेसु । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ।।४०-१५.१ ।। पन्नरसमे सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसए बिइओ उद्देसओ] सु. १. सन्निपंचिंदियमहाजुम्मपढमसयबिइउद्देसाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं पढमसमयअभवसिद्धियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो १. पढमसमयअभवसिद्धियकडजुम्मकड जुम्मसन्निपंचेदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ?० जहा सन्नीणं पढमसमयुद्देसए तहेव, नवरं सम्मत्तं, सम्मामिच्छत्तं, नाणं च सव्वत्थ नत्थि । सेसं तहेव । सेवं भंते ! सेवं भंत ! त्ति० । ।।४०-१५.२।। पन्नरसमे सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसए तइयाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु.१. पुव्वाणुसारेणं अभवसिद्धियमहाजुम्मतइयाइएक्कारसमउद्देसवत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा कायव्वा, पढम-ततिय-पंचमा एक्कगमा । सेसा अट्ठ वि एक्कगमा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ।।४०-१५.३-११ ।। ।।पढमं अभवसिद्धियमहाजुम्मसयं समत्तं।। ।।४० सते पन्नरसमं सयं समत्तं ।।४०-१५।। सोलसमे सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसए पढमाइएक्कारसपज्जंता उद्देसगा [सु. १. सन्निपंचिंदियमहाजुम्मबिइयसयाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं कण्हलेस्सअभवसिद्धियमहाजुम्मसयवत्तव्वयानिद्देसो] १. कण्हलेस्सअभवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मसन्निपंचेंदिया णं भंते ! कतो उववज्जंति ?० जहा एएसिं चेव ओहियसतं तहा कण्हलेस्ससयं पि, नवरं 'ते णं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ? हंता, कण्हलेस्सा' । ठिती, संचिट्ठणा य जहा कण्हलेस्ससए । सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ।।४०-१६.१-११ ।। ।।बितियं अभवसिद्धियमहाजुम्मसयं।। ।।४० सते सोलसमं सतं समत्तं ।।४०-१६।। सत्तरसमाइएक्कवीसइमपज्जंतेसु सन्निपंचिदियमहाजुम्मसएसु पत्तेयं एक्कारस एक्कारस उद्देसगा [सु.१. अणंतरगयसोलसमसयाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं नीललेस्साइसुक्कलेस्सअभवसिद्धियमहाजुम्मसयपंचगवत्तव्वयानिद्देसो] १. एवं छहि वि लेसाहिं छ सया कायव्वा जहा कण्हलेस्ससयं, नवरं संचिट्ठणा, ठिती य जहेव ओहिएसु तहेव भाणियव्वा; नवरं सुक्कलेसाए उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं; ठिती एवं चेव, नवरं अंतोमुहुत्तो नत्थि, जहन्नगं तहेव; सव्वत्थ सम्मत्तं नाणणि नत्थि । विरती, विरयाविरई, अणुत्तरविमाणोववत्ती, एयाणि नत्थि । 'सव्वपाणा० ? णो इमट्ठे समट्ठे' । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ।[सु. २. अभवसिद्धियमहाजुम्मसयसंखानिरूवणं] २. एवं एताणि सत्त (४०-१५-२१) अभवसिद्धियमहाजुम्मसयाणि भवंति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ।।४०-१७-२१ ।।[सु. ३-४. सन्निमहाजुम्मसयाणं महाजुम्मसयाणं च संखानिरूवणं] ३. एवं एयाणि एक्कवीसं सन्निमहाजुम्मसयाणि । ४. सव्वाणि वि एक्कासीतिं महाजुम्मसताणि । ।।महाजुम्मसता समत्ता ।। 卐卐卐।।**चत्तालीसतिमं सयं समत्तं ।।४०।।**

एगचत्तालीसइमं सयं-卐卐卐 रासीजुम्मसयं पढमो उद्देसओ [सु. १. रासीजुम्मभेयचउक्कं] १. (१) कति णं भंते ! रासीजुम्मा पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि रासीजुम्मा पन्नत्ता, तं जहा-कडजुम्मे जाव कलियोगे । (२) से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-चत्तारि रासीजुम्मा पन्नत्ता तं जहा जाव कलियोगे ? गोयमा ! जे णं रासी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए से त्तं रासीजुम्मकडजुम्मे, एवं जाव जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं० एग पज्जवसिए से त्तं रासीजुम्मकलिगे, सेतेणट्ठेणं जाव कलियोगे। [सु. २-११. रासीजुम्मडकजुम्मेसु चउवीसइदंडएसु विविहा उववायाइवत्तव्वया] २. रासीजुम्मकडजुम्मनेरतिया णं भंते ! कतो उववज्जंति ? उववातो जहा वक्कंतीए। ३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? गोयमा ! चत्तारि वा, अट्ठ वा, बारस वा, सोलस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति। ४. ते णं भंते ! जीवा किं संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरं पि उववज्जंति, निरंतरं पि उववज्जंति। संतरं उववज्जमाणा जहन्नेण एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जे समये अंतरं कट्टु उववज्जंति; निरंतरं उववज्जमाणा जहन्नेणं दो समया, उक्कोसेणं असंखेज्जा समया अणुसमयं अविरहियं निरंतरं उववज्जंति। ५. (१) ते णं भंते ! जीवा जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेयोगा, जं समयं तेयोगा तं समयं कडजुम्मा ? णो इणट्ठे समट्ठे। (२) जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा, जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा ? नो इणट्ठे समट्ठे। (३) जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलियोगा, जं समयं कलियोगा तं समयं कडजुम्मा ? णो इणट्ठे समट्ठे। ६. ते णं भंते ! जीवा कहं उववज्जंति ? गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे एवं जहा उववायसए (स० २५ उ० ८ सु० २-८) जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जंति। ७. (१) ते णं भंते ! जीवा किं आयजसेणं उववज्जंति, आयअजसेणं उववज्जंति ? गोयमा ! नो आयजसेणं उववज्जंति, आयअजसेणं उववज्जंति। (२) जति आयअजसेणं उववज्जंति किं आयजसं उवजीवंति, आयअजसं उवजीवंति ? गोयमा ! नो आयजसं उवजीवंति, आयअजसं उवजीवंति। (३) जति आयअजसं उवजीवतिं किं सलेस्सा, अलेस्सा ? गोयमा ! सलेस्सा, नो अलेस्सा। (४) जति सलेस्सा किं सकिरिया, अकिरिया ? गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया। (५) जति सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति ? णो इणट्ठे समट्ठे। ८. रासीजुम्मकडजुम्मअसुरकुमारा णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहेव नेरतिया तहेव निरवसेसं। ९. एवं जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणिया, नवरं वणस्सतिकाइया जाव असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति। सेसं एवं चेव। १०. (१) मणुस्स वि एवं चेव जाव नो आयजसेणं उववज्जंति, आयअजसेणं उववज्जंति। (२) जति आयअजसेणं उववज्जंति किं आयजसं उवजीवंति, आयअजसं उवजीवति ? गोयमा ! आयजसं पि उवजीवंति, आयअजसं पि उवजीवंति। (३) जति आयजसं उवजीवंति किं सलेसा, अलेस्सा ? गोयमा ! सलेस्सा वि, अलेस्सा वि। (४) जति अलेस्सा किं सकिरिया,अकिरिया ? गोयमा ! नो सकिरिया, अकिरिया। (५) जति अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति ? हंता, सिज्झंति जाव अंतं करेंति। (६) अदि सलेस्सा किं सकिरिया, अकिरिया ? गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया। (७) अदि सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति ? गोयमा ! अत्थेगइया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति, अत्थेगइया नो तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति। (८) जति आयअजसं उवजीवंति किं सलेस्सा, अलेस्सा ? गोयमा ! सलेस्सा, नो अलेस्सा। (९) जदि सलेस्सा किं सकिरिया, अकिरिया ? गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया। (१०) जदि सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति ? नो इणट्ठे समट्ठे। (११) वाणमंतर - जोतिसय - वेमाणिया जहा नेरइया। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।॥ रासीजुम्मसते पढमो उद्देसओ ॥४१.१॥ बिइओ उद्देसओ [सु. १ - ३] रासीजुम्मतेयोयनेरयिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं चेव उद्देसओ भाणियव्वो, नवरं परिमाणं तिन्नि वा, सत्त त्ता, एक्कारस वा, पन्नरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति]। संतरं तहेव। २. (१) ते णं भंते ! जीवा जं समयं तेयोया तं समयं कडजुम्मा, जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेयोया ? णो इणट्ठे समट्ठे। (२) जं समयं तेयाया तं समयं दावरजुम्मा, जं समयं दावरजुम्मा तं समयं तेयोया ? णो इणट्ठे समट्ठे। (३) एवं कलियोगेण वि समं। ३. सेसं तं चेव जाव वेमाणिया, नवरं उववातो सव्वेसिं जहा वक्तीए। सेवं भंत ! सेवं भंते ! त्ति०।॥४१.२॥ तइओ उद्देसओ [सु. १-३. रासीजुम्मदावरजुम्मेसु चउवीसइदंडएसु विविहा उववायाइवत्तव्वया] १. रासीजुम्मदावरजुम्मनेरतिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं चेव उद्देसओ, नवरं परिमाणं दो वा, छ वा, दस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति। २. (१) ते णं भंते ! जीवा जं समयं दावर जुम्मा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं समयं कडजुम्मा, जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा ? णो इणट्ठे समट्ठे। (२) एवं तेयोएण वि समं। (३) एवं कलियोगेण वि समं। ३. सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥४१.३॥ चउत्थो उद्देसओ [सु. १-३. रासीजुम्मकलियोगेसु चउवीसदंडएसु विविहा उववायाइवत्तव्वया] १. रासीजुम्मकलियोगनेरतिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ?० एवं चेव, नवरं परिमाणं एक्को वा, पंच वा, नव वा, तेरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा०। २. (१) ते णं भंते ! जीवा जं समयं कलियोगा तं समयं कडजुम्मा, जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलियोगा ? नो इणट्ठे समट्ठे। (२) एवं तेयोयेण वि समं। ३ एवं दावरजुम्मेण वि समं। ३. सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया। सेवं भंते ! त्ति०। ४१.४॥ पंचमो उद्देसओ ९ [सु. १-३. कण्हलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मेसु चउवीसइदंडएसु विविहा उववायाइवत्तव्वया] १. कण्हलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कतो उववज्जंति ?० उववातो जहा धूमप्पभाए। सेसं जहा पढमुद्देसए। २. असुरकुमाराणं तहेव, एवं जाव वाणमंतराणं। ३. मणुस्साण वि जहेव नेरइयाणं। आय ?अ जसं उवजीवंति। अलेस्सा, अकिरिया, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति , एवं न भाणियव्वं। सेसं जहा पढमुद्देसए। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥४१.५ उद्दे०॥ **छट्ठो उद्देसओ** [सु. १. अणंतरगयउद्देसाणुसारेणं कण्हलेस्सरासीजुम्मतेओयचउवीसइदंडयवत्तव्वयानिद्देसो] १. कण्हलेस्सतेयोएहि वि एवं चेव उद्देसओ। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥४१.६॥ **सत्तमो उद्देसओ** [सु. १. अणंतरगयउद्देसाणुसारेणं कण्हलेस्सरासीजुम्मदावरजुम्मचउवीसइदंडयवत्तव्वयानिद्देसओ] १. कण्हलेस्सदावरजुम्मेहिं वि एवं चेव उद्देसओ। सेवं भंते ! ससेवं भंते ! त्ति०। ॥४१.७॥ **अट्ठमो उद्देसओ** [सु. १. अणंतरगयउद्देसाणुसारेणं कण्हलेस्सरासीजुम्मकलियचउवीसइदंडयवत्तव्वयानिद्देसो] १. कण्हलेस्सकलिओचहि वि एवं चेव उद्दसओ। परिमाणं संवेहो य जहा ओहिएसु उद्देसएसु। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥४१.८॥ **नवमाइबारसमपज्जंता उद्देसगा** [सु. १. पंचमाइअट्ठमउद्देसाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं नीललेस्सं पडुच्च परूवणानिद्देसो] १. जहा कण्हलेस्सेहिं एवं नीललेस्सेहि वि छत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा, नवरं नेरइयाणं उववातो जहा वालुयप्पभाए। सेसं तं चेव। सेवं भंते ! त्ति। ॥४१.९-१२॥ **तेरसमाइसोलसमपज्जंता उद्देसगा** [सु. १. पंचमाइअट्ठमउद्देसाणुसारेणं विससेसनिरूवणपुव्वं काउलेस्सं पडुच्च परूवणानिद्देसो] १. काउलेस्सेहि वि एवं चेव चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं नेरयियाणं उववातो जहा रयणप्पभाए। सेसं तं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥४१.१३-१६॥ **सत्तरसमाइवीसइपज्जंता उद्देसगा** [सु. १. पंचमाइअट्ठमउद्देसाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं तेउलेस्सं पडुच्च परूवणानिद्देसो] १. तेउलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मअसुरकुमारा णं भंते ! कतो उववज्जंति ?, वं चेव, नवरं जेसु तेउलेस्सा अत्थि तेसु भाणियव्वं। एवं एए वि कण्हलेस्ससरिसा चत्तारि उद्देसगा कायव्वा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! ॥४१.१७-२०॥ एगवीसइमाइचउव्वीसइमपज्जंता उद्देसगा [सु. १. पंचमाइअट्ठमउद्देसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं पम्हलेस्सं पडुच्च परूवणानिद्देसो] १. एवं पम्हलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा। पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वेमाणियाण य एतेसिं पम्हलेस्सा, सेसाणं नत्थि। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥४१.२१-२४॥ पणुवीसइमाइअट्ठावीसइमपज्जंता उद्देसगा [सु. १. पंचमाइअट्ठमउद्देसाणुसारेणं विसेसनिरूवणपुव्वं सुक्कलेस्सं पडुच्च परूवणानिद्देसो] १. जहा पम्हलेस्साए एवं सुक्कलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं मणुसस्साणं गमओ जहा ओहिउद्देसएसु। सेसं तं चेव। [सु. २. अट्ठावीसउद्देससंखानिरूवणरूवो उवसंहारो] २. एवं एए छसु लेस्सु चउवीसं उद्देसगा। ओहिया चत्तारि। सव्वेए अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०। ॥४१.२५-२८॥ एगूणतीसमाइछप्पन्नइमपज्जंता उद्देसगा [सु. १-८. आइल्लअट्ठावीसइउद्देसाणुसारेणं भवसिद्धिए पडुच्च अय्ठरवीसइउद्देसवत्तव्वयानिद्देसो] १. भवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा ओहिया पढमगा चत्तारि उद्देसगा तहेव निरवसेसं एए चत्तारि उद्देसगा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ।४१.२९-३२॥ २. कण्हलेस्सभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ?० जहा कण्हलेसाए चत्तारि उद्देसगा तहा इमे वि भवसिद्धियकण्हलेस्सेहि चत्तारि

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्देसगा कायव्वा ॥ ४१.३३-३६ ॥ ३. एवं नीललेस्सभवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥ ४१.३७-४० ॥ ४. एवं काउलेस्सेहि चत्तारि उद्देसगा ॥ ४१.४१-४४ ॥ ५. तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥ ४१.४५-४८ ॥ ६. पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥ ४१.४९-५२ ॥ ७. सुक्कलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा ॥४१.५३-५६ ॥ ८. एवं एए व भवसिद्धिएहिं अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥४१.२९-५६ ॥ सत्तावण्णइमाइचुलसीइमपज्जंता उद्देसगा [सु. १-९. आइल्लअट्ठावीसइउद्देसाणुसारेणं अभवसिद्धिए पडुच्च विसेसनिरूवणपुव्वं अट्ठावीसइउद्देसवत्तव्वयानिद्देसो] १. अभवसीद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा पढमो उद्देसगो, नवरं मणुस्सा नेरइया य सरिसा भाणियव्वा। सेसं तहेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । २. एवं चउसु वि जुम्मेसु चवारि उद्देसगा ॥ ४१.५७-६० ॥ ३. कण्हलेस्सअभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ?० एवं चेव चत्तारि उद्देसगा ॥ ४१.६१-६४ ॥ ४. एवं नीललेस्सअभवसिद्धीएहि वि चत्तारि उद्देसका ॥ ४१.६५-६८ ॥ ५. एवं काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥ ४१.६९-७२ ॥ ६. एवं तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥४१.७३-७६ ॥ ७. पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥४१.७७-८० ॥ ८. सुक्कलेस्सअभवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥४१.८१-८४ ॥ ९. एवं एएसु अट्ठावीसाए (५७-८४) वि अभवसिद्धियउद्देसएसु मणुस्सा नेरइगमेणं नेतव्वा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । एवं एए वि अट्ठावीसं उद्देसगा [सु. १-४. एगूणतीसमाइछप्पन्नइमउद्देसाणुसारेणं सम्मद्दिट्ठिए पडुच्च अट्ठावीसइउद्देसवत्तव्वयानिद्देसो] १. सम्मद्दिट्ठिरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ?० एवं जहा पढमो उद्देसओ। २. एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा भवसिद्धियसरिसा कायव्वा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० ॥४१.८५-८८ ॥ ३. कण्हलेस्ससम्मद्दिट्ठिरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ?० एए वि कण्हलेस्ससरिसा चत्तारि उद्देसगा कातव्वा ॥ ४१.८९-९२ ॥ ४. एवं सम्मद्दिट्ठीसु वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा ॥ ४१.९३-११२ ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ। ॥४१.८५-११२॥ तेरसुत्तरसयतमाइचत्तालीसुत्तरसयतमपज्जंता उद्देसगा [सु. १. सत्तावन्नइमाइचुलसीइमउद्देसाणुसारेणं मिच्छद्दिट्ठिए पडुच्च अट्ठावीसइउद्देसवत्तव्वयानिद्देसो] १. मिच्छद्दिट्ठिरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं एत्थ वि मिच्छादिट्ठिअभिलावेणं अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसका कायव्वा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥४१.११३-१४०॥ एगचत्तालीसुत्तरसयतमाइअडसट्ठिउत्तरसयतमपज्जंता उद्देसगा [सु. १. सत्तावन्नइमाइचुलसीइमउद्देसाणुसारेणं कण्हपक्खिए पडुच्च अट्ठावीसइउद्देसवत्तव्वयानिद्देसो] १. कण्हपक्खियरासीजुम्मकडजुम्मनरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं एत्थ वि अभवसिद्धियसरिसा अट्ठरवीसं उद्देसगा कायव्वा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति० । ॥४१.१४१-१६८॥ एगूणसत्तरिउत्तरसयतमाइछन्नउदइउत्तरसयतमपज्जंता उद्देसगा [सु. १-२. एगूणतीसइमाइछप्पन्नइमउद्देसाणुसारेणं सुक्कपक्खिए पडुच्च अट्ठावीसइउद्देसवत्तव्वयानिद्देसो] १. सुक्कपक्खियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं एत्थ वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति । २. एवं एए सव्वे वि छण्णउयं उद्देसगसयं भवति रासीजुम्मसतं । जाव सुक्कलेस्ससुक्कपक्खियरासीजुम्मकडजुम्मकलियोगवेमाणिया जाव-जति सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति ? नो इणट्ठे समट्ठे। 'सेवं भंते ! सेवं भंते।' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं भहावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासि-एवमेयं भंते !, तहमेयं भंते !, अवितहमेतं भंते !, असंदिद्धमेयं भंते !, इच्छियमेयं भंते !, पडिच्छियमेतं भंते !, इच्छियपडिच्छियमेयं भंते !, सच्चे णं एसमट्ठे जं णं तुब्भे वदह, त्ति कट्टु 'अपुव्ववयणा खलु अरहंता भगवंतो' समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। ॥४१.१६९-१९६॥ ॥ रासीजुम्मसतं समत्तं ॥ ४१ ॥ [सु. १-२. वियाहपन्नत्तिसुत्तस्स सयग-उद्देस-पयसंखानिरूवणं]१. सव्वाए भगवतीए अट्ठत्तीसं सयं सयाणं १३८। उद्देसगाणं १९२५ ॥ २. चुलसीतिसयसहस्सा पयाण पवरवरणार-दंसीहिं। भावाभावमणंता पण्णत्ता एत्थमंगम्मि ॥१॥ [सु. ३. अंतिममंगलं-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरिसंघजयवाओ] ३. तव-नियम-विणयवेलो जयति सया नाणविमलविपुलजलो। हेउसयविउलवेगो संघसमुद्दो गुणविसालो ॥२॥ ॥ रासीजुम्मसयं समत्तं ॥ ॥ समत्ता य भगवती ॥ ॥ वियाहपण्णत्तिसुत्तं समत्तं ॥ पुत्थयलेहगकया नमोक्कारा नमो गोयमादीण गणहराणं। नमो भगवतीए विवाहपन्नत्तीए। नमो दुवालसंगस्स गणिपिडगस्स। कुमुयसुसंठियचलणा, अमलियकोरेंटबिंटसंकासा। सुयदेवया भगवती मम मतितिमिरं पणासेउ ॥१॥ भगवईए वियाहपण्णत्तीए उद्देसविही पण्णत्तीए आदिमाणं अट्ठण्हं सयाणं दो दो उद्देसया उद्दिसिज्जंति, णवरं चउत्थसए पढमदिवसे अट्ठ, बितियदिवसे दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति। १-८ । नवमाओ सयाओ आरद्धं जावतियं ठाइ तावइयं उद्दिसिज्जइ; उक्कोसेणं सयं पि एगदिवसेणं उद्दिसिज्जइ, मज्झिमेणं दोहिं दिवसेहिं सयं, जहन्नेणं तिहिं दिवसेहिं सतं। एवं जाव वीसइमं सतं। णवरं गोसालो एगदिवसेणं उद्दिसिज्जइ; जति ठियो एगेण चेव आयंबिलेणं अणुण्णव्वइ, अह ण ठियो आयंबिलछट्ठेणं अणुण्णव्वति। ९-२० । एक्कवीस-बावीस-तेवीसतिमाइं सयाइं एक्केक्कदिवसेणं उद्दिसिज्जंति। २१-२३ । चउवीसतिमं चउहिं दिवसेहिं- छ छ उद्देसगा। २४ । पंचवीसतिमं दोहिं दिवसेहिं- छ छ उद्देसगा। २५ । गमियाणं आदिमाइं सत्त सयाइं एक्केक्कदिवसेण उद्दिसिज्जंति। २६-३२ । एगिंदियसतात्तं बारस एगेण दिवसेण। ३३ । सेढिसयाइं बारस एगेणं०। ३४ । एगिंदियमहाजुम्मसताइं बारस एगेणं० ३५ । एवं बेंदियाणं बारस ३६, तेंदियाणं बारस ३७, चउरिंदियाणं बारस ३८, असन्निपंचेदियाणं बारस ३९, संन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयाइं एक्कवीसं ४०, एगदिवसेणं उद्दिसिज्जंति। रासीजुम्मसयं एगदिवसेणं उद्दिसिज्जइ। ४१ । एवं सोलसहिं दिवसेहिं गमियाइं उद्दिसिज्जंति। एतेसिं पुण पढम(मं) सताइं उद्दिसिज्जंति। पच्छा अट्ठ उद्देसगा उद्दिसिज्जंति। ते चेव समुद्दिसिऊणं एवं अणुण्णविज्जंति। चउद्दसि-पण्ण-रसीसु णत्थि उद्देसो। पुव्वुद्दिट्ठं जं तंमि पक्खे तं पढिज्जं(?ज्ज)ति। पढमसते एगंतराइं आयंबिलाइं, ततो पच्छा सत्तमे दिवसे आयंबिलं ज़ाव गोसालो। ततो पच्छा नवमे नवमे दिवसे आयंबिलं। खंदय-चमरेसु पंच पंच दत्तीओ दोण्ह वि होऊण भोयण-पाणाणं। गोसाले तिण्णि दत्तीओ-दो भोयणस्स, एगा पाणगस्स; अहवा एगा भोयणस्स दो पाणगस्स। इच्छाए खंदय-चंमरेसु वि विभागो। चमरेऽहीते ओगाहिमट्ठितीए गोसकाउस्सगो कीरइ पडुप्पण्णाए वा अपडुप्पण्णाए वा सव्वकालस्स चेव पदे दिज्जइ। चरिमा एगलिहियस्स आयंबिलं पोरिसीए पढिज्जइ। उग्घाडतालियं परियट्टिज्जइ। जं पुण पोरिसीए दो तिण्णि दंडे अक्कंता उग्घाडतालियं पि पढिज्जइ, नवण्हं विगतीणं अवेयणा वि उवहम्मति। भत्त-पाण-लोहेण न उवहम्मइ, न पुण च्छिवियव्वं, छिक्के काउस्सगो कीरइ। चम्मअट्ठियसण्णाओ सुक्काइं ण उवहणंति, उल्लाइं उवहणंति। जं पुण जोगवाहिस्स असज्झाइयं सज्झाइयं वा सा न चेव उवहणति। तिरियाणं चउप्पयाणं पक्खीणं च आमिसासीण दव्वेण छिक्कं तं अण्णं दिवसं ण उवहणति। दीवओ वि ण उवहणति। चम्मट्ठियसण्णाओ सुक्काइं पि न छिवियव्वाइं, छिक्केण अणाभोगेण काउस्सग्गो। कासारसंजाओ पायसविसंदणाइं कप्पंति। अगारीए कप्पट्ठगरूयं थणपियंत मुंचति। ण त्थये य दंडी सतितो कप्पिया भवति। एवं गोणिमादीओ वि सव्वं च जं अकप्पियं तं दुपयं परं न उवहणति। जं च थिरं कवाडकट्ठमादी अकप्पितेर दव्वेण लित्तं न उवहणति। जति तं दव्वं ण छिवति। जोगवाहिणा हत्थसतबाहिं एगागिणा ण गंतव्वं। अध कहिंचि भत्त-पाणं उवहतं ताहे जजइ कप्पितेण पाणएणं भाणं हत्था वा कप्पियाओ उल्लेहिं वि हत्थेहिं तुल्ले वि पत्ते घेप्पति। अह अकप्पिएण पाणएण कप्पिया सते सते परियट्टिते परियट्टावणिकाउस्सग्गो कीरइ। खंदय-चमरेसु य गमियाणं सोलस काउस्सग्गो खंदय-चमर-गोसाला पढिज्जंति। काउस्सग्गेण परियट्टिज्जंति। काउस्स्गेण चेव जति पुण धम्मं कहेति। अब्भत्थेइ वा कोति ताहे ट्ठि काउस्सग्गेणं कड्ढति। पण्णत्ती पुण उद्दिसिज्जं (?ज्जं)ति। सुक्कपक्खे उस्सग्गेण कण्हपक्खे वा जाव पंचमी। जति साहगं अणुकूलं अत्थि। उद्देसणक्खत्तेसु दससु अणंतरे भणिता। सेसाइं थिराइं दिवड्ढखेत्ताइं रोहिणिमादीणि जोगो उच्चारिज्जति उद्दिसंतेहिं ॥ छ ॥ पण्णत्तीए उद्देसो सम्मत्तो ॥ छ ॥ मंगलं महाश्री ॥छ ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥ छ ॥ वियसियअरविंदकरा नासियतिमिरा सुयाहिया देवी। मज्झं पि देउ मेहं बुहविबुहणमंसिया णिच्चं ॥ १ ॥ सुयदेवयाण णमिमो जीए पसाएण सिक्खियं नाणं। अण्णं पवणदेवी संतिकरी तं नमंसामि ॥ २ ॥ सुयदवेया य जक्खो कुंभधरो बंभसंति वेरोट्टा। विज्जा य अंतहुंडी देउ अविग्घं लिहंतस्स ॥१॥

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org